



# भ्रम विध्वंसनम् ।

श्रीमत्तेरापन्थनायक भिन्नगणि चतुर्थ पट्ट स्थित मुनिराज

श्री “जयाचार्य” विरचितम्

तच्च

गङ्गाशहर ( वीकानेर ) स्थेन

“इसरचन्द” चौपड़ाभिधेन मुद्रापितम् ।

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिका न गजे गजे ।

साधवो नहि सर्वत्र चन्दनं न वने वने ॥

वीर निवार्णाञ्च

२४५०



कलकत्ता

विक्रमाञ्च

१६८०



द्वितीयावृत्ति २००० ]

[ मूल्य ५ ]

अति रमणीये काव्ये . पिशुनो दूषणं मन्वपयति

अति रमणीये वपुषि . व्रणमिव मक्षिका निकरः

अति सुन्दर काव्य में भी पिशुन ( धूर्त्तपुरुष ) दोषों को ही खोजता रहता है। जैसे कि अति सुन्दर शरीर में भी मक्षिकाएँ केवल व्रण ( ) को ही खोजती हैं।



ऐसा कोई भी बुद्धिमान् मनुष्य संसार में न होगा जिसने कि धर्म और अधर्म की विचारणा में अपना थोड़ा बहुत समय न लगाया हो। धर्म क्या है और अधर्म क्या है : इसी विवेचना में नाना सम्प्रदायों के नाना ही ग्रन्थ बन चुके हैं और २ पर भिन्न २ मतानुसंगियों के इसी विषय पर लग्ने २ व्याख्यान और चौड़े २ वादविवाद भी होते रहते हैं। एक समाज जिसको धर्म कहता है दूसरा समाज उसीको अधर्म कह कर पुकारता है। इस धर्माऽधर्म की ही सर्चा में स्वार्थ देवका साम्राज्य होने के कारण निर्णय के स्थान में वितण्डावाद हो जाता है और शाल्लार्थी श्रद्धार्थी बन जाते हैं। निर्मल हृदय वाले महात्माओं का अपमान होता है और पापपिण्डियों का जय २ कार होने लगता है। “धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः” धर्म के बिना मनुष्य पशु समान है, इस न्याय के आधार पर कोई भी पुरुष पशुओं की सङ्ख्या में सम्मिलित होना नहीं चाहता। किसी अज्ञानी से भी पशु कहना को चिढ़ाना है। परन्तु सुख भी भोगना और धर्म भी हो जाना ये दोनों बातें कैसे हो सकती हैं। धर्म २ कहना केवल जीभ हिलाना है और धर्म

। सांसारिक सुखों को जलाजलि देना है। धर्म कोई पैतृक (पिता सम्बन्धी) व्यवसाय नहीं है यदि कोई अनभिन्न पुरुष शुद्ध महात्माओं के उपदेश को यह कह कर कि “यह उपदेश हमारे पितृ से विपरीत है” नहीं मानता है वह केवल अन्ध का ही अनुयायी है “तातस्य कूपोऽय मिति ब्रुवाणाः चारं जलं का पुरुषाः पिबन्ति” यह कूआ हमारे पिता का है यह कहकर खारी होनेपर भी मूर्ख पुरुष ही उसका जल पीते हैं। शुद्ध साधुओं का उपदेश संसार से तारने का है के विषय में अपना एक बड़ी भूल है। यदि एक बड़ी नदी से पार होने के लिये किसी की दूटी हुई नहीं देती तो किसी दूसरे के जहाज़ से पार हो क्या बुद्धिमान् का नहीं है। कोप के अध्यक्ष शुद्ध साधु ही हैं धर्म की प्राप्ति करने के लिये साधुओं की ही शरण लेना अत्यावशकीय है। किन्तु



साधुओं के वैष धारण करने से ही साधु नहीं होता अथवा भगवान् की आज्ञानुसारही आचार विचार पालनेवाला साधु कहा जाता है। सिंह की चर्म पहिन कर गर्व तभीतक सिंह माना जाता है जब तक कि वह अपने मधुर स्वर से गाना नहीं आरम्भ करता है। वैषधारी तभीतक साधु प्रतीत होता है जबतक कि उसकी महाव्रत पालना में शिथिलता नहीं दीख पड़ती है।

जब कि आप एक छोटी सी भी नदी पार करने के लिये नाव को ठोक पीट कर उसकी दृढ़ता की परीक्षा करने के पश्चात् चढ़ने को उद्यत होते हैं तो क्या यह आवश्यक नहीं है कि संसार जैसे महासागर के पार करने के लिये पोत (जहाज़) रूपी साधुओं की भले प्रकार परीक्षा कर लें। मान लिया कि साधु-साधुओं का वैष बनाय हुआ है। और दूसरों के पराजय करने के लिये उसने क्रय-क्रिया भी बहुत सी पट्ट रखी हैं तथापि यदि भगवान् की आज्ञा के विरुद्ध चलता है और "इस समय में पूरा साधुपना नहीं पल सकता" ऐसी शास्त्र विरुद्ध बातें कह कर लोगों को भ्रमाता रहता है तो वह केवल पत्थर की नाव के समान है न खयं तर सकता है न दूसरों को तार सकता है।

साधुओं का आचार विचार भगवान् की वाणी से विदित होता है। सूत्र ही भगवान् की वाणी हैं। सूत्रों का विषय गम्भीर होने से तथा गृहस्थ समाज का सूत्र पढ़ने का अनधिकार होने से सर्व साधारण को भगवान् की वाणी विदित हो जावे और संसार सागर से पार होनेके लिये साधु असाधु की परीक्षा हो जावे यह विचार कर ही जैन श्वेताम्बर तैरापन्थ नायक पूज्य श्री १००८ जयाचार्य महाराज ने इस "भ्रम विध्वंसन" ग्रन्थ को बनाया है। इस ग्रन्थ में जो कुछ लिखा है वह सब सूत्रों का प्रमाण देकर ही लिखा गया है अतः यह ग्रन्थ कोई अन्य ग्रन्थ नहीं है किन्तु सर्व सूत्रों का ही सार है। भगवान् के वाक्यों के अर्थ का अनर्थ जहां कहीं जिस किसी स्वार्थ लोलुपी ने किया है उसके खंडन और सत्य अर्थ के मण्डन में जय महाराज ने जैसी कुशलता दिखलायी है वैसी सहस्र लेखनियों से भी वर्णन नहीं की जा सकती। यद्यपि आपके बनाये हुए अनेक ग्रन्थ हैं तथापि यह आपका ग्रन्थ मिथ्यात्व अन्धकार मिटाने के लिये साक्षात् सूर्यदेव के ही समान है। एकवार भी जो पुरुष इस ग्रन्थ का मनन कर लेगा उसको शीघ्र ही साधु असाधु की परीक्षा हो जावेगी और शुद्ध साधु की शरण में आकर इस असार संसार से अवश्य तर जावेगा।

यद्यपि यह ग्रन्थ पहिले भी किसी मुम्बई के प्राचीन ढङ्ग के यन्त्रालय में छप चुका है। तथापि वह किसी प्रयोजन का नहीं हुआ छपा न छपा एकसा ही रहा। एक तो टायप ऐसा कुरूप था, दीख पड़ता था कि मानों लिथो का ही छपा हुआ है। दूसरे प्रूफ संशोधन तो नाममात्र भी नहीं हुआ समस्त शब्द विपरीत दशा में ही छपे हुए थे। कई २ स्थान पर पंक्तियां ही छोड़ दी थीं दो एक स्थान पर एक-दो पृष्ठ भी छूटा हुआ मिला है। सारांश यह है कि एक पंक्ति भी शुद्ध नहीं छपी गई। ऐसी दशा में जयाचार्य का सिद्धान्त इस पूर्व छपे हुए पुस्तक से जानना दुर्लभ ही हो गया था। ऐसी व्यवस्था इस अपूर्व ग्रन्थ की देख कर तेरा-पन्थ समाज को इसके पुनरुद्धार करने की पूर्ण ही चिन्ता थी। परन्तु होता क्या मूल पुस्तक जो कि जयाचार्य की हस्तलिखित है साधुओं के पास थी बिना मूल पुस्तक से मिलाये संशोधन कैसे होता। शुद्ध साधुओं की यह रीति नहीं कि गृहस्थ समाज को अपनी पुस्तक छपाने को अथवा नक़ल करने को दें। ऐसी अवस्था में इस ग्रन्थ का संशोधन असम्भव सा ही प्रतीत होने लगा था। समय चलवान् है पूज्य श्री १००८ कालू गणिराज का चतुर्मास सं० १९७६ में बीकानेर हुआ। वहां पर साधुओं के समीप मूल पुस्तकमें से धार धार कर अपने स्थानमें आकर नुटियां शुद्ध कीं। ऐसे गमनाऽऽगमन में संशोधन कार्य के लिये जितना परिश्रम और समय लगा उसको धारनेवाले का ही आत्मा वर्णन कर सका है। इसमें कुछ संशोधक की प्रशंसा नहीं किन्तु यह प्रताप श्रीमान् कालू गणिराज का ही है जिन के कि शासन में ऐसे अनेक २ दुर्लभ कार्य सुलभता को पहुंचे हैं। कई भाइयों की ऐसी इच्छा थी कि इस ग्रन्थ को खड़ी बोली में अनुवादित किया जावे परन्तु जैसा रस असल में रहता है वह नक़ल में नहीं। इस ग्रन्थ की भाषा मारवाड़ी है थोड़े पढ़े लिखे भी अच्छी तरह समझ सकते हैं। यद्यपि इस ग्रन्थ के प्रूफ संशोधन में अधिक से अधिक भी परिश्रम किया गया है, तथापि संशोधक की अल्पज्ञता के कारण जहां कहीं कुछ भूलें रह गई हों तो विश्व जन सुधार कर पढ़ें। भूल होना मनुष्यों का स्वभाव है। टायप भी कलकत्ते का है छापते समय भी गात्राएँ टूट फूट जाती हैं कहीं २ अक्षर भी दबनेके कारण नहीं उबड़ते हैं अतः शुद्ध किया हुआ भी असंशोधित सा ही दीखने लगता है इतना होनेपर भी पाठकों को पढ़ने में कोई अड़चन नहीं होगी। इस में सब से मोटे २ अक्षरों में सूत्र पाठ दिया गया है और सवसे छोटे २ अक्षरों में टब्बा अर्थ है। मध्यस्थ अक्षरों में वास्तविक अर्थात् पाठ का न्याय

है। अर्थ में पाठके शब्द के ० ऐसा चिन्ह लगाया गया है जो कि शब्द का बोधक है। संस्कृत टीका इटालियन ( डेडे ) अक्षरों में छापी गई है। जैसा छांपने का है उसीके अनुसार ग्रन्थ के छपाने में पूरा ध्यान दिया है। तथापि कोई महोदय यदि दोष देंगे तो पारितोषिक समझ सहर्ष स्वीकार किया । वार की २००० प्रतियां छपाई गई हैं। लागत से भी मूल्य २ गया है। इस के नै का केवल उद्देश्य भगवान् के सिद्धान्त का घर २ प्रचार होना है। जैन समाजों का कर्त्तव्य है कि प रहित होकर ग्रन्थ का अवश्य करें। यह ग्रन्थ जैसा निष्पक्ष और वक्ता है दूसरा नहीं। तेरापन्थ समाज का तो ऐसा एक भी घर नहीं होना चाहिये जिसमें कि यह जयाचार्य का ग्रन्थ भ्रमविध्वं न विराजता हो। यह ग्रन्थ तेरापन्थ समाज का प्राण है विना इस ग्रन्थ के देखे कभी सूक्ष्म पाठों का नहीं लग ।। इस ग्रन्थ के संशोधन में जो आयुर्वेदाचार्य पं० रघुनन्दनजी ने सहायता दी है उसके लिये हम पूर्ण कृतज्ञ हैं। समस्त परिश्रम तभी सफल होगा कि आप ग्रन्थ के लेने में विलम्ब न लगायेंगे और अपने इष्ट मित्रों को लेने के लिये प्रेरित करेंगे। इसकी अनु-  
 णिका भी अधिकार, बोल, और की सङ्ख्या देकर के भूमिका के ही आगे लगाई गई है जो कि पाठकों को खोजने में अतीव सहायिका होगी।  
 छपे हुए भ्रम विध्वंसन में सूत्रों की साख देने में अतीव भूले हुई २ थीं अवके वार में यथाशक्ति सूत्र की ठीक २ साख देने में ध्यान दिया गया है तथापि यदि किसी-२ पुस्तक में इस साख के अनुसार न मिले तो उसीके आसपास में पाठक खोज लें। क्योंकि कई पुस्तकों में 'ों में' तो भेद देखा ही जाता है। विशेष करके निशीथ के बोलों की संख्या में तो अवश्य ही भेद पाया जावेगा क्योंकि उसकी संख्या हस्तलेखित प्रतियों में तो और-और छपी हुई पुस्तकों में कुछ और ही मिली है। पहिले छपे हुए " भ्रम विध्वंसन " में और इस में कुछ भी परिवर्तन नहीं है किन्तु २-४ स्थलों में नोट देकर संशोधक की ओर से जो खड़ी बोली में लिखा गया है वह पहले भ्रम विध्वं से अधिक है। का सौभाग्य दिवस समझते हैं जब कि इस अमूल्य ग्रन्थ की पूर्ति हमारे दृष्टि गोचर होती है। कई भ्रातृवर इस ग्रन्थकी, " मेघ प्रतीक्षा चतु " प्रतीक्षा कर रहे थे अब उनके कामलों में इसग्रन्थ को समर्पित कर हम भी कृत कृत्य होंगे।

कों को पहिले व या जा चुका है कि : के कर्ता र्थ  
 अर्थात् जीतमलजी महा हैं। परन्तु इतने ही विवरण से पाठकों  
 की अभिलाषा पूर्ण नहीं होगी। : श्रीजयाचार्य महाराज जिस श्वेताम्बर तेरा-  
 के चतुर्थ पूज्य रह चुके हैं उस की उत्पत्ति और  
 के श्री "मिश्र" गणिराज की संक्षेप जीवनी प्रकाश की  
 है।

नित्य-स्मरणीय पूज्य "मिश्र" स्वामी की जन्म भूमि ( )  
 देश में "कण्डालिया" ना ग्राम है। आपका अवतार पवित्र ओ वंश की  
 "सुखलेचा" जाति में पिता साह "धलुजी" के घर माता "दीपादे" की कुक्षि में  
 विक्रम सम्वत् १७८३ आषाढ शुक्ला सिद्धा त्रयोदशी के दिन हुआ। आपके  
 " वासी" सम्प्रदाय के थे : उनके ही पिप आपने  
 प आना जाना प्रारम्भ किया। परन्तु वहां केवल डम्बर ही देख  
 आपने "पोतिया बन्ध" किसी सम्प्रदाय का अनुसरण नि । वहां भी  
 उसी प्र भावका अभाव और दम्भ का ही देख कर आपकी  
 सिद्धि नहीं हुई। नि प्राप्ति की गवेषणामें वार्डस सम्प्रदाय के किसी विभाग  
 के पूज्य " " जी क साधु के पिप 5 न स्थिर हुआ।  
 की विषय में उत्कण्ठा होने लगी और इसी अ में आपने शील  
 शील का भी अनुशी कर लिया। और "मैं श्यही सं  
 'गा' ऐसे आपके भावी सं जगमगाने लगे। ही नहीं कि आपने नि  
 होने का अभि ही धार लिया। भावी चलवती है-इसी र में आपकी प्रिय  
 नि का आपसे सदा के लिये ही वियोग हो गया। यद्यपि सम्बन्धियों ने  
 द्वितीय विवाह करने के लिये अति ह किया पि मिश्र के ने अ-  
 संसार त्यागने का और ग्रहण करने का संकल्प ही कर लिया। मिश्र  
 दीक्षा के लिये पूर्ण उद्यत हो गये परन्तु माताजी की अनुमति नहीं मिली। रघु-  
 नाथजीने मिश्र की से दीक्षा देने के विषय में परा वि तो नि  
 रघुनाथजी से \* सिंह का विवरण सुनाया जो कि मिश्र की  
 स्थिति में देखा था। और कहा कि इस के अनुसार मेरा किसी राज्य विशेष  
 का अधिकारी होना चाहिए मिश्रार्थी बनने के लिये मैं अ हूँ। ७। ७। ७।

\* सिंहका मण्डलीक राजा की अथवा भावितारम की देखती है।

ने इस स्वप्न को सहर्ष स्वीकार किया और कहा कि यह स्वप्न चतुर्दश १४ स्वप्नों के अन्तर्गत है। अतः यह तुम्हारा पुत्र देश देशान्तरों में भ्रमण हुआ सिंह समान ही गजेंगा इसकी दीक्षा होने में विलम्ब मत करो। माता जीका विचार पवित्र हुआ और आत्मज्ञ ( भिक्षु ) के आत्मोद्धार के लिये आज्ञा दे दी।

उस समय भगवान् के निर्मल सिद्धान्तों को स्वार्थान्ध पुरुषों ने विगाड़ रक्खा था। भिक्षु कित् के समीप दीक्षा लेते निर्ग्रन्थ गुरु होनेका कोई भी अधिकारी नहीं था। तथापि अप्राप्ति में रघुनाथ जी के ही समीप भिक्षु द्रव्य दीक्षा लेकर अपने भावि कार्य में प्रवृत्त हुए। यह द्रव्यदीक्षा द्रव्यगुरु रघुनाथ जी से भिक्षु स्वामी ने सम्वत् १८०८ में ग्रहण की। आपकी बुद्धि भावित्वात्म होनेके कारण स्व. ही तीव्र थी अतः आपने अनायास ही समस्त सूत्र सिद्धान्तका अध्ययन कर लिया। केवल अध्ययन ही नहीं किया किन्तु सूत्रों के उन २ गम्भीर विषयों को खोज निकाला जिनको कि वेषधारी साधु में भी नहीं समझते थे। और विचारा कि ये सम्प्रदाय जिन में कि मैं भी सम्मिलित हूँ पूर्णतया ही जिन आज्ञा पर ध्यान नहीं देते और केवल अपने उदर की ही पूर्ति करने के लिये नाम दीक्षा धारण किये हुए हैं। ये लोक न स्वयं तर सक्ते हैं न दूसरों को ही तार सक्ते हैं। बना बनाया घर छोड़ दिया है और अब स्थान २ पर स्थानक बनवाते फिरते हैं। भगवान् की मर्यादा के उपरान्त उपधि बल, पात्र, आदिक अधिकतया रखते हैं। आधा कर्मी आहार भोगते और आज्ञा बिना ही दीक्षा देते दीख पड़ते हैं। एवं प्रकार के अनेक अनाचार देख करके भिक्षु का मन सम्प्रदाय से विचलित होने लगा। इसके अनन्तर-इसी अवसर में मेवाड़ के "राजनगर" नामक नगर में पठित महाजनों ने सूत्र सिद्धान्त पर विचार किया और वर्त्तमान गुरुओंके आचार विचार सूत्र विरुद्ध समझ कर उनकी वन्दना करनी छोड़ दी। मारवाड़ में जब यह बात रघुनाथजी को चिदित हुई तो सर्व साधुओंमें परम प्रवीण भिक्षु स्वामी को ही समझकर और उनके साथ टोकरजी, हरनाथजी, वीरभाणजी, और भारीमालजी, को करके भेजा। राजनगर में यह भिक्षु स्वामीका चौमासा सम्वत् १८१५ में हुआ। चर्चा हुई लोकों ने स्थानकवास, कपाट जड़ना खोलना, आदिक अनेक अनाचारों पर आक्षेप किया और यही कारण वन्दना न करने का बतलाया। भिक्षु स्वामी ने अपने द्रव्य गुरु रघुनाथजी के पक्ष को रखने के लिये अपनी बुद्धि चातुर्यता से लोगों को समझाया और वन्दना कराई। किन्तु लोगों ने

यही कहा कि महाराज ! यद्यपि हमारी शङ्काओं का पूर्ण समाधान नहीं हुआ है तथापि हम केवल आपके विलक्षण पाण्डित्य पर ही विश्वास रख कर आपके अनु-  
गामी बनते हैं। इसी अवसर में असाता वेदनीय कर्म के योग से भिक्षु स्वामी किसी ज्वर विशेष से पीड़ित हुए और ऐसी अस्वस्थ व्यवस्था में आपके शुद्ध अध्य-  
वसाय उत्पन्न होने लगे। भिक्षु स्वामी को महान् पश्चात्ताप हुआ और विचारा कि मैंने बहुत बुरा कान किया जो कि द्रव्यगुरु के कहने से श्रावकों के शुद्ध विचार को झूठा कर दिया। यदि मेरी मृत्यु हो जावे तो अन्तिम फल बहुत अनिष्ट होगा। द्रव्यगुरु परलोक में कदापि सहायक न होंगे। यदि मैं आरोग्य हो जाऊंगा तो अवश्य सत्य सिद्धान्त की स्थापना करूंगा। एवं आरोग्य होनेपर अपने विचार को पवित्र करते हुए भिक्षु स्वामी ने श्रावकों से स्पष्ट कह दिया कि भ्रातृवरो ! आप लोगों का विचार ठीक है और हमारे द्रव्यगुरु केवल दुराग्रह करते हुए अनाचार सेवन करते हैं। ऐसा भिक्षु मुख से अमूल्य निर्णय सुन कर श्रावक लोक प्रसन्न हुए। और कहने लगे कि महाराज ! जैसी सत्य की आशा आप से थी वैसी ही हुई।

अथ चतुर्मास समाप्त होने पर राजनगर से विहार किया और ' में छोटे २ ग्राम समझ कर दो साथ कर लिये और भिक्षु स्वामी ने वीरभाणजी से कहा कि यदि आप गुरु के समीप पहिले पहुंचे तो कोई इस विषय की बात नहीं करना नहीं तो गुरु एक साथ भड़क जावेंगे। मैं आकर विनय कला से स-  
ऊंगा और शुद्ध ध्रुवा धारण करानेका पूरा प्रयत्न करूंगा। वीरभाण जी ही आगे पहुंचे और रघुनाथ जी ने राज नगर के श्रावकों की शङ्का दूर होने के बारे में प्रश्न किया। वीरभाणजी ने वह सब वृत्तान्त कह सुनाया और कहा कि जो हम आश्रामों आहार स्थानकवास आदि अनाचार का सेवन करते हैं वह अशुद्ध ही है और श्रावकों की शङ्काएं सत्य ही थीं। रघुनाथजी बोले कि वीरभाण ! ऐसी क्या विपरीत बातें कहते हो तब वीरभाणजी ने कहा कि महाराज ! यह तो केवल बानगी ही है पूरा वर्णन तो भिक्षु स्वामी के पास है। इसी अन्तर में भिक्षु स्वामी का आगमन हुआ और गुरु को वन्दना की। गुरु की दृष्टि से ही भिक्षु समझ गये कि वीरभाणजी ने आगे से ही बात कर दी है। गुरु का पहिला सा-  
न देखकर भिक्षु ने गुरु से कहा, गुरुजी ! क्या बात है आपकी पहिले सी कृपा दृष्टि नहीं चिदित होती है।

रघुनाथजी बोले कि भाई ! तुम्हारी बातें सुन कर हमारा मन फट है और अब तुम्हारे आहार पानीको सम्मिलित नहीं रखना चाहते । यह सुन कर भिक्षु ने मन में विचार कि मैं तो इनमें साधुपने का कोई आचार विचार नहीं है तथापि इस तान करनी ठीक नहीं है पुनः इनको समझा लूंगा । यह विचार गुरु से कहा कि गुरुजी ! यदि आप को कोई सन्देह हो तो प्रायः दे दीजिये । इस युक्ति से आहार पानी सम्मिलित कर लिया । समय पाकर रघुनाथजी को बहुत समझाया और शुद्ध श्रद्धा धराने का पूरा किया और भी कहा कि का चतुर्मास ५२ ही होना चाहिये जिससे चर्वा की जावे और सत्य श्रद्धा की धारण हो । क्योंकि हमने घर केवल आत्मोद्धार के लिये ही छोड़ा है । रघुनाथजीने कहकर कि "तू और साधुओं को भी फटा लेगा" चौमासा २ नहीं किया । एवं पुनः द्वितीयवार भिक्षु स्वामी रघुनाथजी से बगड़ी नामक में गे और विचार शुद्ध करने के चारे में बहुत समझाया । परन्तु ब्रह्म गुरु ने भी नहीं मानी भिक्षु स्वामीने यह विचार कर कि अब ये विलकुल नहीं समझते हैं और केवल दम्भजाल में ही फंसे रहेंगे अपना आहार पृथक् कर लिया । और : के समय ए से बाहर नि पड़े । रघुनाथजी ने यह स कर के कि " भिक्षु को नगर में न ही नहीं मिलेगा तो विवश हो कर स्थानक में ही आजावेगा " क द्वारा न सियों को सङ्ग की थ देकर सूचना दे दी कि कोई भी भिक्षु के ठहरने के लिये नहीं देना । भिक्षु ने सब सुना तो मैं विचार कि मैं स्थान न मिलने पर यदि मैं : ही में तो फिर फन्दे में ही पड़ जाऊंगा । एवं अपने मन में निर्णय विहार किया और बगड़ी नगर के बाहर जैतसिंहजी की छत्रियों में स्थित हो गये । यह नगर में फैली और रघुनाथजी ने भी सुना कि भिक्षु स्वामी छत्रियों में ठहरे हुए हैं तो बहुत से मनुष्यों को साथ लेकर छत्रियों में गये । और भिक्षु स्वामी को टोला से बाहर न निकलने के लिये बहुत समझाया । परन्तु भिक्षु स्वामी ने भी नहीं सुनी और कहा कि मैं आपकी सूत्र विरुद्ध बातों को कैसे सक्ता हूं । मैं तो भगवान् की आज्ञानुसार शुद्ध संन्यास का ही पालन गा । ऐसी भिक्षु की बातें सुन कर रघुनाथजी की आशा टूट गई और मोहके वश होकर अश्रुधारा भी बहाने लगे । उदयभाणजी नामक साधु ने कहा कि आप टोला के धनी होकर कौं भी मोह में अलस हुए अश्रु बहाते हैं । तब रघुनाथजी

बोले कि भाई ! किसी का एक मनुष्य भी जावे तो भी वह अत्यन्त विलाप करता है मेरे तो पांच एक साथ जाते हैं और टोला म खलवली मचती है मैं कैसे न विलाप करूँ । ऐसा द्रव्यगुरु का मोह देखकर भिक्षु स्वामी का मन किञ्चिदपि विचलित नहीं हुआ और विचारा कि इसी तरह जब मैं घर से निकला था तब मेरी माता भी रोई थी । इन वेषधारियों में रहने से तो पर भव में अतीव दुःख उठाना पड़ेगा । अन्त्य में रघुनाथजी ने भिक्षु स्वामी से कहा कि तू जावेगा कहाँ तक तेरे पीछे- २ मनुष्य लगा दूँगा । और मैं भी पीछे २ ही विहार करूँगा । इत्यादिक भयावह बातोंपर कुछ भी ध्यान नहीं दिया और भिक्षु ने बगड़ी से विहार किया । द्रव्यगुरु को अपने पीछे २ ही आता देखकर के “बंरलू” नामक में चर्चा की । आदि में रघुनाथजी ने कहा कि भिक्षो ! आजकल पूरा साधुपना नहीं पल सकता है । यह सुनकर भिक्षु ने कहा कि-आचारांग सूत्र में कहा है कि “आजकल साधुपना नहीं पल सकता” ऐसी प्ररूपणा भागल साधु करेंगे इत्यादिक बातें भगवान् ने कई स्थलोंपर पहिले से ही कह दी हैं । ऐसा उत्तर सुनकर द्रव्यगुरु को उस समय अत्यन्त कष्ट हुआ और बोले कि यदि कोई दो घड़ी भी शुभ ध्यान धर कर शुद्ध आचार पाल लेगा वह केवल ज्ञान को प्राप्त कर सकता है । यह सुनकर भिक्षु ने कहा कि यदि दो घड़ी में ही केवलज्ञान मिले तो मैं श्वास रोक कर के भी दो घड़ी ध्यान धर । हूँ । परन्तु ये बात नहीं यदि दो घड़ी में ही केवलज्ञान मिल सकता तो क्या प्रभव आदिक ने दो घड़ी भी शुद्ध चारित्र्य नहीं पाला था किन्तु उनको तो केवलज्ञान नहीं हुआ । वीर भगवान् के १४ सहस्र शिष्यों में से केवलज्ञानी तो केवल ७ सौ ही हुए क्या शेष १३ सहस्र ३ सौ ने २ घड़ी भी शुद्ध संयम नहीं पाला जो कि छद्मस्थ ही रहे आये । और १२ वर्ष १३ पक्ष तक वीर भगवान् छद्मस्थ अवस्था में रहे तो क्या उस अवसर में वीर ने दो घड़ी भी शुद्ध संयम की पालना नहीं की । इत्यादिक अनेक सत्य प्रमाणों से भिक्षु ने रघुनाथजी को निरुत्तर करते हुए बहुत य पर्यन्त चर्चा की । तथापि दुराग्रह के कारण रघुनाथजी ने शुद्ध पथ का अवलम्बन नहीं किया । इसके अनन्तर वि ११ वाईस टोला के विभाग के पूज्य जयमलजी नामक साधु भिक्षु स्वामी से मिले । भिक्षु ने प्रमाणित युक्तियों से जयमलजी के हृदय में शुद्ध श्रद्धा बैठाल दी और जयमलजी भिक्ष के साथ जाने को तयार भी हो गये । यह रघुनाथजी ने सुनी कि जयमलजी भिक्ष के अनुयायी होना चाहते हैं म ११ से कहें कि जयमलजी ! आप एक टोला के धनी होकर यह क्या



काम करते हैं। आप यदि भिक्षु के साथ हो जावेंगे तो इसमें आपका कुछ भी नाम नहीं होवेगा केवल भिक्षु का ही सम्प्रदाय कहा जावेगा। इत्यादिक अनेक कुयुक्तियों से रघुनाथजी ने जयमलजी का परिणाम ढीला कर दिया। अथ जयमलजी ने भिक्षु से कह भी दिया कि भिक्षु स्वामिन् ! आप शुद्ध संयम पालिए हम तौ गले तक दवे हुए हैं हमारा तो उद्धार होना असम्भवसा ही है।

इस अवसर के पश्चात् भिक्षु ने भारीमालजी से कहा कि भारीमाल ! तेरा पिता कृष्णजी तो शुद्ध संयम पालने में असमर्थ सा प्रतीत होता है अतः उसका निर्वाह हमारे साथ नहीं हो सका। तू हमारे साथ रहेगा अथवा अपने पिता का सहगामी बनेगा। ऐसा सुनकर विनोत भाव से भारीमालजी ने उत्तर दिया कि महाराज ! मैं तो आपके चरण कमलों में निवास करता हुआ शुद्ध चारित्र्य पालूंगा मुझ को अपने पिता से क्या काम है। ऐसा सुन्दर उत्तर सुनकर भिक्षु प्रसन्न हुए पश्चात् भिक्षु ने कृष्णजीसे कहा कि आपका हमारे सम्प्रदाय में कुछ भी काम नहीं है। यह सुनकर कृष्णजी भिक्षु से बोले कि यदि आप मुझ को नहीं रखेंगे तो मैं अपने पुत्र भारीमालको आपके पास नहीं छोड़ूंगा अतः आप भारीमाल को मुझे सौंप दीजिए। यह सुनकर भिक्षु स्वामी ने कृष्णजी से कहा कि यदि तुम्हारे साथ भारीमाल जावे तो लेजावो मैं कब रोकता हूँ। कृष्णजी ने एकान्तमें लेजा कर अपने साथ चलने के लिये भारीमालजी को बहुत सयभाया साथ जाना तो दूर रहा किन्तु अपने पिता के हाथ का यावज्जीव पर्यन्त भारीमालजीने आहार करनेका त्याग और कर दिया। तत्पश्चात् विवश होकर कृष्णजी ने भिक्षु से कहा कि महाराज ! अपने शिष्य को लीजिए यह तो मेरे साथ चलने को तयार नहीं है कृपया मेरा भी कहीं ठिकाना लगा दीजिए। अथ भिक्षु ने कृष्णजी को जयमलजी के टोले में पहुँचा कर तीन स्थानों पर हर्ष कर दिया। जयमलजी तो प्रसन्न हुए कि हमको चेला मिला कृष्णजी समझे कि हम को ठिकाना मिला भिक्षु समझे कि हमारा उपद्रव गया। इसके पश्चात् भिक्षु ने भारीमालजी आदि साधुओं को साथ ले कर विहार किया और जोधपुर नगर में आ बिराजमान हुए। दीवान फतहचन्दजी सिंघीने बाज़ार में श्रावकों को पोषा करते देखा तब प्रश्न किया कि आज स्थानक में पोषा क्यों नहीं करते हो। तब श्रावकों ने वह सब कथा कह सुनायी जिस कारण से कि भिक्षु स्वामी रघुनाथजी के टोले से पृथक् हुए और स्थानक वास आदिक विविध अनाचारों को छोड़ कर शुद्ध श्रद्धा धारण की। सिंघोजी बहुत प्र हुए और भिक्षु के सदाचारकी बहुत प्रशंसा

की। उस समय १३ ही श्रावक पोषा कर रहे थे और १३ ही साधु थे अतः मिश्रु के सम्प्रदाय का “तेरापन्थ” नाम पड़ गया। अथवा मिश्रु ने भगवान् से यह प्रार्थना की कि प्रभो ! यह तेरा ही पन्थ है अतः “तेरापन्थ” नाम पड़ा। वास्तव में तो १३ बोल अर्थात् ५ सुमति ३ गुप्ति ५ महाव्रत पालने से ही “तेरापन्थ” नाम । इसके अनन्तर मिश्रु ने मेवाड़ देशस्थ “केलवा” नगर में संस्वत् १८१७ में आपाढ़ शुक्ला १५ के दिन भगवान् अरिहन्त का स्मरण कर भावदीक्षा ग्रहण की। और अन्य साधुओंको भी दीक्षा देकर शुद्ध पथ में प्रवर्तया। वैपधारियों की अधिकता होने से उस समय में मिश्रु को सत्य धर्मके प्रचार में यद्यपि अधिक परिश्रम सहना पड़ा तथापि निर्भीक सिंह के समान गर्जते हुए मिश्रु ने मिथ्यात्वका विनाश करके शुद्ध श्रद्धा की स्थापना की। एवं श्रीमिश्रु शुद्ध जिन धर्मका प्रचार करते हुए वि संस्वत् १८६० भाद्र शुक्ला १३ के दिन सप्त प्रहर का संन्यास करके स्वर्ग पन्था के पथिक बने।

यह “मिश्रु जीवनी” ग्रन्थ बढ़ जाने के भयसे संक्षिप्त शब्दों से ही लिखी गई है पूर्ण विस्तार श्री जयाचार्य कृत मिश्रुजसरसायन में ही मिलेगा। कई धूर्त पुरुषों ने ईर्ष्या के कारण जो “मिश्रु जीवनी” मन मानी लिखमारी है वह सर्वथा विरुद्ध समझनी चाहिये।

अथ श्री मिश्रुके अनन्तर द्वितीय पट्ट पर पूज्य श्री भारीमालजी विराज हुए आप साक्षात् शान्ति के ही मूर्ति थे। आपका अवतार मेवाड़ देशके “मुहों” नामक ग्राम में संस्वत् १८०३ में हुआ था। आपके पिताका नाम “कृष्ण” जी और माता का नाम “धारणी” जी था। आप ओश वंशस्थ “लोढा” जातीय थे। आपका स्वर्ग वास संस्वत् १८७८ माघ कृष्ण ८ को हुआ।

पूज्य श्रीभारीमालजी के अनन्तर तृतीय पट्टपर श्री ऋषिरायजी महाराज ( रायचन्द्रजी ) विराजमान हुए। आपका शुभ जन्म संस्वत् १८४७ में मेवाड़ देशके “वड़ी रावलियां” नामक ग्राम में हुआ था। आपकी ओशवंशस्थ “वंव” नामक जाति थी आपके पिता का नाम चतुरजी और माता का नाम कुसालांजी था आप सम्प्रदाय के कार्य की वृद्धि करते हुए संस्वत् १९०८ माघ कृष्ण १४ के दिन स्वर्ग स्थलको पधारे।

श्रीऋषिरायजी महाराज के अनन्तर चतुर्थ पट्ट पर इस ग्रन्थ के रचयिता श्रीजयाचार्यजी (जीतमलजी) महाराज विराज मान हुए। आपको कविता करने का

अद्वितीय अभ्यास था । आपने अपने नवीन रचित ग्रन्थों से जैसी जिन धर्म की महिमा बढ़ाई है उसका वर्णन नहीं हो सका । आपका शुभ जन्म मारवाड़ में “रोयट” नामक ग्राम में ओशवंशस्थ गोलछा जाति में सम्वत् १८६० आश्विन शुक्ला २ के दिन हुआ था । आपके पिता का नाम आईदानजी और माता का नाम कलुजी था । आपने कल्प कल्यान्तरों के लिये “श्रीभगवती की जोड़” आदि अनेक रचना द्वारा भूमिपर अपना यश छोड़ कर सम्वत् १९३८ भाद्रपद कृष्ण १२ के दिन स्वर्ग के लिये ।न किया ।

पूज्य श्रीजयाचार्य के अनन्तर पञ्चम पट्ट पर श्री मधवा गणी (मधराजजी) सुशोभित हुए । आपकी शान्ति मूर्ति और ब्रह्मचर्यका तेज देख कर कवियों ने आपको मधवा ( इन्द्र ) की ही रूपमा दी है । आप व्याकरण काव्य कोपादि शास्त्रों में प्रखर विद्वान् थे । आपका शुभ जन्म बीकानेर राज्यान्तर्गत बीदासर नामक नगर में ओशवंशस्थ वेगवानी नामक जाति में सम्वत् १८९७ चैत्र शुक्ला ११ के दिन हुआ । आपके पिताका नाम पूरणमलजी और माता का नाम वननाजी था । आप आनन्द पूर्वक जिन मार्गकी उन्नति करते हुए सम्वत् १९४९ चैत्र कृष्ण ५ के दिन स्वर्ग के लिए प्रस्थित हुए ।

पूज्य श्रीमधवा गणी के अनन्तर छठे पट्ट पर श्रीमाणिकचन्द्रजी महाराज विराजमान हुए । आपका शुभ जन्म जयपुर नामक प्रसिद्धनगर में संवत् १९१२ भाद्र कृष्ण ४ के दिन ओशवंशस्थ खारड श्रीमाल नामक जाति में हुआ । आपके पिता का नाम हुकुमचन्द्रजी और माता का नाम छोटांजी था । आप थोड़े ही समय में समा-गे अपने दिव्य गुणों से विकासित करते हुए संवत् १९५४ कार्तिक कृष्ण ३ के दिन स्वर्ग वासी हुए ।

पूज्य श्रीमाणिक गणी के अनन्तर पट्टपर श्री डालगणी महाराज विराजमान हुए आपका शुभ जन्म मालवा देशस्थ उज्जयिनी नगर में ओशवंशस्थ पीपाड़ा नामक जाति में संवत् १९०६ आपाढ़ शुक्ला ४ के दिन हुआ । आपके पिता का नाम कनीराजी और माता का नाम जडावांजी था जिनलोगोंने आपका दर्शन किया है वे समझते ही हैं कि आपका मुख मण्डल ब्रह्मचर्यके तेज के कारण मृगराज मुख सम जगमगाता था । आप जिनमार्ग की पूर्ण उन्नति करते हुए संवत् १९६६ भाद्र पद शुक्ला १२ के दिन स्वर्ग को पधार गये ।

पूज्य श्रीडाल गणीके अमन्तर अष्टम पट्ट पर वर्त्तमान म श्रीकालूगणी महाराज विराजते हैं। जिन मनुष्यों ने आपका दर्शन किया होगा वे अवश्य ही निष्पक्ष रूप से कहेंगे कि आपके समान बालब्रह्मचारी तेजस्वी और शान्ति मूर्ति इस समय में और दूसरा कोई नहीं है। आपकी मूर्ति मङ्गल मयी है अतः आपने जिस समय से शासन का भार उठाया है तभी से इस समाजकी दिन प्रति दिन उन्नति ही हो रही है। आपके अपूर्व पुण्य पुञ्ज को देख कर अनेक नर नारी "महाराज तारो-महाराज तारो" इत्यादि असङ्ख्य कारुण्य शब्दों से दीक्षा ग्रहण करने के लिए प्रार्थना कर रहे हैं तथापि आप उनकी विनय, क्षमा, पूर्ण वैराग्य, कुलीनता, आदि गुणों की जब तक भले प्रकार परीक्षा नहीं कर लेते हैं दीक्षा नहीं देते। आपकी सेवा में सर्वदा ही नाना देशों से आये हुए अनेक उच्च कोटि के मनुष्य उपस्थित रहते हैं। और आपके व्याख्यानानामृत का पान करके कृत कृत्य हो जाते हैं। आपने समस्त जिनागम का भले प्रकार अध्ययन किया है यह कहना अत्युक्ति नहीं होगा कि यदि ऐसा गुण वाला साधु चौथे आरे में होता तो अवश्य ही केवलज्ञान उत्पन्न हो जाता। आप संस्कृत व्याकरण काव्य कोष आदिक विविध विषयों में पूर्ण विद्वान् हैं। और व्याकरण में तो विशेष करके आपका ऐसा पूर्ण अनुभव हो गया है कि जैन व्याकरण और पाणिनि आदि व्याकरणों की समय २ पर आप विशेष समालोचना किया करते हैं। कई संस्कृत के कवीश्वर और पूर्ण विद्वान् आपकी बुद्धि विलक्षणता को देखकर आपकी कीर्ति ध्वजा को फहराते हैं। और दर्शन करके अतिशयः कृतार्थ होते हैं। यह ही नहीं आपने वैष्णव धर्मावलम्बी गीता आदि ग्रन्थों का भी अवलोकन किया हुआ है। और अन्य सम्प्रदायकी भी भली बातों को आप सहर्ष स्वीकार करते हैं। आप अपने शिष्य साधुओंको संस्कृत भी भले प्रकार पढ़ाते हैं। आपके कई साधु विद्वान् और संस्कृत के कवि हो गये हैं। आपके शासन में विद्या की अतीव उन्नति हुई है। आपका ऐसा क्षण मात्र भी समय नहीं। जिसमें कि विद्या संवन्धी कोई विषय न चलता हो।

आपकी पञ्च महाव्रत दृढता की प्रशंसा सुनकर जैन शास्त्रोंका धुरन्धर विज्ञाता जर्मन देश निवासी डाक्टर हर्मन जैकोबी आपके दर्शनार्थ लाइपून् ना नगर में आया और आपसे संस्कृत भाषा में वार्त्तालाप किया आपके मुखारविन्द से जिनोक्त सूत्रों के उन गम्भीर विषयों को सुनकर जिनमें कि को था अति प्रसन्न हुआ। और कहने लगा कि महाराज! मैंने आचारारङ्ग के अंग्रेजी

अनुवाद में किसी यति निर्मित संस्कृत टीका की छाया ले कर जो मांस विधान लिख दिया है उसका खण्डन कर दूंगा। आपके सत्य अर्थ को सुनकर डाक़ूर हमैन का आत्मा प्रसन्न हो गया। और वह कई दिन तक आपकी सेवाकर अपने यथा स्थान को चला गया।

लेजिस्लेटिव कौन्सिल के सभासद और मुजफ्फर नगर के रईस लाला सुखवीरसिंहजी भी आपके दर्शन दो बार कर चुके हैं और आपकी प्रशंसा में आपने कई लेख भी लिखे हैं। जो कोई भी योग्य विद्वान् और कुलीन पुरुष आपके दर्शन करते हैं सम्मत् जाते हैं कि आपके समान सच्चा त्याग मूर्ति आजकल और कोई भी शुद्ध साधु नहीं है। आपकी जन्म भूमि बीकानेर राज्यान्तर्गत छापरा नामक नगर है। आपका पवित्र जन्म ओशवंश के चौपड़ा कोठारी नामक जाति में श्रीमूलचन्द्रजी के गृह में सं० १६३३ फाल्गुण शुक्ला २ के दिन श्री श्री श्री १०८ महासती छोगांजी की पवित्र कुक्षि में हुआ था। आपकी माताजीने भी आपके साथ ही दीक्षा ली थी। उक्त आपकी माताजी अभी बीदासर नगर में विद्यमान हैं जोकि अति वृद्ध हो जाने के कारण विहार करने में असमर्थ हैं।

“नहि कस्तूरिका गन्धः शपथेनाऽनुभाव्यते” कस्तूरीके सुगन्धित्व सिद्ध करनेमें शपथ खानेकी कोई आवश्यकता नहीं है। उसका गन्ध ही उसकी सिद्धि का पर्याप्त प्रमाण है। यद्यपि श्री भिक्षुगणी से लेके श्रीकालू गणी तक का समय और उसका जाज्वल्यमान तेज स्वतः ही तेरापन्थ समाजके धर्माचार्यों को क्रमानुक्रम भगवान् का पञ्चधिकारी होना सिद्ध कर रहा है। तथापि उसकी सिद्धि की पुष्टि में शास्त्रोंका भी प्रमाण दिया जाता है। पाठक गण पक्षपात रहित हृदयसे इसका विचार करें।

भगवान् श्रीमहावीरजी स्वामीके मुक्ति पधारनेके पश्चात् १००० वर्ष पर्यन्त पूर्वका ज्ञान रहा। ऐसा “भगवती श० २० उ० ८” में कहा है।

तत्पश्चात् २००० वर्ष के मस्मग्रह उतरनेके उपरान्त श्रमण निर्ग्रन्थ की उदय २ पूजा होगी। ऐसा “कल्प सूत्र” में कहा है।

सारांश यह है कि—भगवान् के पश्चात् २६१ वर्ष पर्यन्त शुद्ध प्ररूपणा रही। और पश्चात् १६६६ वर्ष पर्यन्त अशुद्ध बाहुल्य प्ररूपणा रही। अर्थात् दोनोंको मिलाने से १६६० वर्ष हुआ। उस समय धूमकेतु ग्रह ३३३ वर्षके लिये लगा। वि सम्भत् १५३१ में “लूंका” मुहता प्रकट हुआ। २००० वर्ष पूर्ण हो जानेसे

भस्म ग्रह उतर गया । इसका मिलान इस प्रकार कीजिये कि ४७० वर्ष पर्यन्त नन्दी वर्द्धनका शाका और १५३० वर्ष पर्यन्त विक्रम सम्वत् एवं दोनोंको मिलानसे २००० वर्ष हो गए । उस समय भस्म ग्रह उतर जानेसे और धूम केतुके वाल्या-वस्थाके कारण बल प्रकट न होनेसे ही “लूँका” मुंहता प्रकट हो गया और शुद्ध प्ररूपणा होने लगी । तदपश्चात् क्रमानुक्रम धूम केतुके बलकी वृद्धि होनेसे शुद्ध प्ररूपणा शिथिल हो गई । जब धूमकेतुका बल क्षीण होने पर आया तब सम्वत् १८१७ में श्री भिक्षगणीका अवतार हुआ और शुद्ध प्ररूपणाका पुनः श्रीगणेश हुआ । परन्तु धूमकेतुके विलकुल न उतरनेसे जिन मार्ग की विशेष वृद्धि नहीं हुई । पश्चात् सम्वत् १८५३ में धूमकेतु ग्रहके उतर जानेके कारण श्रीस्वामी हेमराजजी की दीक्षा होने के अनन्तर क्रमानुक्रम जिन मार्गकी वृद्धि होने लगी ।

अस्तु आज कल जैसे कि साधुओं का सङ्गठन और एक ही गुरु की आज्ञा में सञ्चलन आदिक तैरापन्थ समाज में है स्पष्ट वक्ता अवश्य कह देंगे कि वैसा अन्यत्र नहीं । आज कल पूज्य कालू गणी की छत्रछाया में रहते हुए लगभग १०४ साधु और २४३ साध्वीयां शुद्ध चारित्र्य पाल रहे हैं । इस समाज का उद्देश्य वेप बढ़ाना नहीं किन्तु निष्कलङ्क साधुता का ही बढ़ाना है । यदि साधु समाज के

स्त आचार विचार वर्णन किये जावे तो एक इतनी ही बड़ी पुस्तक और बन जावेगी । हम पहिले भी लिख आये हैं कि इस ग्रन्थ के संशोधन कार्य में आधु-र्वेदाचार्य पं० रघुनन्दनजी ने विशेष सहायता की है अतः उनकी कृतज्ञता के रूप में हम इस पुस्तक के छपाने में नित्ती व्यय करते हुए भी पुस्तकों को समस्त रक्खे हुए मूल्य की आय को उनके लिये समर्पण करते हैं । यद्यपि “मिश्र-जीवनी” रि । जा चुकी है तथापि वही विद्वज्जनों के अनुमोदनार्थ संस्कृत कविता में परिणत की जाती है । परन्तु समस्त कथा का क्रम ग्रन्थ की वृद्धि के भय से नहीं लिया जाता है । किन्तु संक्षेपातिसंक्षेप भाव का ही आश्रय लेकर साहित्य का अनुशीलन किया गया है । प्रेमिजन अवगुणों को छोड़कर गुणों पर ध्यान दें ।

नाना काव्य रसाधारं भारतीन्ता मुपास्महे

द्विपदोऽपि कविर्यस्याः पादान्जे पट्पदायते ॥१॥

कूप मेकायितः काहं क भिच्छूणां यशोनिधिः  
तथापि मम मात्सर्यं विदुरैर्न विलोक्यताम् ॥२॥

अभक्तो भक्ततां याति यस्य भक्ति मुपाश्रयन्  
अकविर्न कविः किंस्यां तत्कीर्तिं कवयन्महम् ॥३॥

नाम्ना “कण्टालिया” ग्रामः कश्चिदस्ति मरुस्थले  
मिन्नु भानूदयाद्धेतो यो वाच्य उदयाचलः ॥४॥

“वल्लुजी” त्यभिधस्तत्र साहोपाधि विभूषितः  
“सुक्खलेचो” विशेषायाम् ओशं जाता बुपाजनि ॥५॥

“दीपादे” नामिका तेन पर्यङ्गादि प्रिया प्रिया  
यत्कुङ्किं कुहर स्थायी मृगेन्द्रो गर्जनांगतः ॥६॥

अन्ध ध्वान्त विनाशाय विकाशाय जिनोदितेः  
धर्मं संस्थापनार्थाय प्रेरितः पूर्व कर्मणा ॥७॥

तस्यां सत्त्व गुणो जीवः कोऽपि गर्भं म्रियं वहन्  
भावि संस्कारं संयोगा दिवि देव इवाऽविशत् ॥८॥

एकदाऽथ शयाना सा सिंह स्वप्न मवेक्षत  
पुष्पोपमं फलस्यादौ शोभनं शास्त्रं सम्मतम् ॥९॥

एतमालोकते माता मण्डलीकस्य भूपतेः  
अनागारस्य वा माता भावितात्मस्य पश्यति ॥१०॥

तत्रैव सत्सर्वस्थे आपादस्य सिते दले  
ततः सर्वत्र संसिद्धां सर्व सिद्धां त्रयोदशीम् ॥११॥

लक्ष्मीकृत्य लषत्कुक्षि माविधमोपदेशकम्

तेजः पुञ्जमिव प्राची चाल रत्न मजीजनत् ॥१२॥

वंशाऽऽकाशे चकाशेऽथ बर्द्धमानः शनैः शनैः

शुक्ल पक्ष द्वितीयास्थः शशीव शरदः शिशुः ॥१३॥

गद्गदै र्वचनै रेष चकर्प पथिकानपि

लालितो ललनाकेषु बालको ललितालकः ॥१४॥

असारेऽपि च संसारे भिक्षु नाम्नाऽवनामितः

सार धर्म मवेहिष्ट क्षार सिन्धा विवामृतम् ॥१५॥

ग्रहस्थ रीत्याऽथ विवाहितोऽपि संसार चक्रे न चकार बुद्धिम्

राशीविषाणां विषयेऽपि जातो न लिप्यते स्वच्छ मणि विषेण ॥१६॥

अभावेन सुसाधूनां केवलं वेषधारिषु

धर्म मन्वेषयामास पत्वत्वेऽपि व हीरकम् ॥१७॥

अनाथं जिन सिद्धान्ते सनाथं वेष धारणे

टोलाऽऽह्व जनता नाथं रघुनाथ मथो ययौ ॥१८॥

बन्धोऽपि निर्गुणः कापि बहिराडम्बरायितः

निर्विषोऽपि फणी मान्यः फणाऽऽटोपैर्हि केवलैः ॥१९॥

पतस्मिन्नन्तरे भिक्षो दीक्षा भिक्षार्थिन स्ततः

भावि संयोगतो लेभे वियोगं सहयोगिनी ॥२०॥

रघुनाथ समीपेऽयं दीक्षितो द्रव्य दीक्षाया

क्वचिद्भूगै र्मरन्दार्थं रोहीतोऽपि निषेव्यते ॥२१॥



अधीत्य सूत्रान् सु विचिन्त्य भावान् विलोक्य दोषांश्च बहून् समाजे  
कुशाग्रबुद्धे विचचाल चित्तं “न किंशुकेषु भ्रमरा रमन्ते” ॥२२॥

श्रावका “राजनगरे” तस्मिन्नवसरे ततः

सूत्र सिद्धान्त मालोक्य नावन्दन्त गुरू निमान् ॥२३॥

तच्छ्रावकाणां सुपदेशनाय सुवीरभाषादि जनेन साकम्  
दत्तं गुरुं प्रेपयतिस्म भिन्नं विचार्य हंसेष्विव राजहंसम् ॥२४॥

ततो जनैः स्तैः सह युक्तिवादं विधाय भिन्नं गुरुरपचापाती  
सन्देहं सत्तामपि तान्दधानान् चकार सर्वान् निज पाद नम्रान् ॥२५॥

अथोऽवदन्मुनिजनः नहि भ्रमोऽस्मिन्नं मनः

तथापि ते विचिन्तताः प्रकुर्वन्ते पवित्रताः ॥२६॥

तदैव भिक्षावे ज्वरः चुकोप कोऽपि गह्वरः

तदर्तिं पीडिते सति स्थिता शुभा मुने र्भूतिः ॥२७॥

मनस्य चिन्तयत्स्वयं मृषाऽवदाम हा वयम्

इमे जनाः सदाशया विरोधिता वृथा मया ॥२८॥

स्फुटं त्यदः क्षणा दुरो विलोकयन् छलं गुरोः

अरोगता महं यदा भजे, ब्रुवे स्फुटं तदा ॥२९॥

गुरुं विरुद्धं गायकः परत्र नो सहायकः

इति स्फुटं विचारयन् जगाद न्दन् निशामयन् ॥३०॥

अहो जना भवंन्मतं जिनोक्तं शास्त्रं सम्मतम्

असत्यं माश्रिता वयं विदन्तु सत्यं निर्णयम् ॥३१॥

मुने रिमां परां गिरं निशम्य ते जना श्रिरम्  
निपत्य पादयो स्तदा वभाषिरे प्रियम्बदाः ॥३२॥

अहो मुनीश ! तावकं विलोक्यं शुद्ध भावकम्  
वयं प्रसन्नतां गताः त्वयैव कुप्रथा हता ॥३३॥

ततः समागत्य तदीयं वृत्तं गुरुं वभाषे सकलं सशान्तिः  
परन्तु स स्वार्थं विलिप्तं चेता गुरुं विरुद्धं कथयाम्बभूव ॥३४॥

न पाल्यते सम्प्रति शुद्ध भावः केनापि कुत्रापि मुनीश्वरेण  
मित्रो ! रतस्त्वं किल कालं मेतं अवेक्ष्य तूष्णीं भव दूषणेषु ॥३५॥

यः पालयेत्कोऽपि घटी द्वयेऽपि शुद्धं चरितं यदि साधु वर्त्यः  
स केवलज्ञानं मुपैतु तर्हि त्वं तेन तूष्णीं भव दूषणेषु ॥३६॥

आकर्ण्य सूत्रैर्विपरीतं मेतत् मित्रं गुरुन्तं विशदं जगाद  
अहो गुरो नेति कुहापि दृष्टं शास्त्रान्तरे पद्मवताऽभ्यवादि ३७

एतत्तु सूत्रेषु मयाव्यलोकि एवं वचो वक्ष्याति वेपधारी  
“न पाल्यते सम्प्रति शुद्ध भावः केनापि कुत्रापि मुनीश्वरेण” ३८

स्यात् केवलत्वं घटिका द्वयेन यदा तदाहं श्वसनं निरुद्ध्य  
अपि क्षामः पालयितुं चरित्रं “परन्तु सूत्रैर्विहितं नहीदं ३९

वीरस्य पार्श्वेऽपि पुरा मुनीन्द्रा गृहीतवन्तो बहवः सुदीक्षाम्  
न केवलत्वं सकला अनैषुः नाऽपालि किन्तैर्घटिका द्वयेऽपि ४०

गुरो ! विमुच्येति वृथा प्रपञ्चं श्रद्धां सुशुद्धां तरसा गृहीष्व  
न शोभनः स्थानकवास एष त्वत्कं स्वकीयं गृहमेव यर्हि ४१

ज्ञात्वापि शुद्धां मुनिं भिक्षुं वार्यां तत्याज नैजं न दुरामहं सः

भिक्षुं स्तदैतं कुगुरुं विहाय यथोचितायां विजहार भूमौ ४२

स्वतः प्रवृत्तां शुभ भाव दीक्षां वीरं गुरुं चेतसि मन्यमानः

गृहीतवान् सूत्र विशिष्टं धनैः प्रवर्त्तयामास तथान्य साधून् ४३

विपक्षै रत्न संचेपे नाक्षेपः क्षिप्यतां क्षणं

एतं रघुः समुद्रं किं घटे पूरयितुं क्षमः ४४

जपतु जपतु लोकः-श्रील वीरं विशोकः

भवतु भवतु भिक्षुः-कीर्त्तिमान् सर्व दिक्षु ।

जयतु जयतु कालुः-कान्तिः कान्तः कृपालुः

मिलतु मिलतु योगः-सन्मुनीना मरोगः ४५

संशो :—

अलीगढ़ सुनामयीस्थ, आशुकरित्तल

पं० रघुनन्दन आयुर्वेदाचार्य ।

अस्तु—तेरापन्थ साधुओं के संक्षेपतया आचार विचार पढ़ कर पाठकों को यह अवश्य हुआ होगा कि जब साधु अपनी पुस्तक छपाने को करने को किसी को नहीं देते तो यह इतनी बड़ी पुस्तक कैसे छपी ।

पाठकों ! पहिला हुआ "भ्रमविध्वं" तो इस द्वितीय बार छपे हुए "भ्रमविध्वंसन" का आधार है । पहिली बार कैसे । इसको कथा सुनिये ।

देशस्थ बेला ग्राम निवासी मू. न्द्र कोलम्बी तेरापन्थी आचक था । साधुओं में उसकी अतुल भक्ति थी । और तपस्या करने में भी सामर्थ्यवान् था । साधुओं की सेवा भक्ति साधुओं के में आ आ कर यथा समय किया जाता था । स साधुओं के इस "भ्रम विध्वं" की प्रति को देखकर उ आया और की छपाने की उसने पूरी ही मन में ठान ली ।

स पाकर किसी साधु के पूठे में रखी हुई भ्रम विध्वंसन की प्रति को रात में चुरा ले गया और जैसे तैसे छपा डाला । पाठकों को यह भी ज्ञात होना चाहिये । कि वह विध्वंसन जिसको कि वह चुरा ले गया था खरड़ा मात्र ही था कहीं कटी हुई पंक्तियां थीं कहीं पृष्ठों के अङ्क भी पूर्वक नहीं थे । कहीं बीच का पत्रों के किनारों पर लिखा हुआ था । अतः उसने वह छपाया तो सही परन्तु अण्डवण्ड छपा डाला कई बोल आगे पीछे कर दिये कहीं किनारों पर लिखा हुआ छपाना ही छोड़ दिया । इतने पर भी फिर प्रूफ नाम मात्र भी नहीं देखा अतः ग्रन्थ एक विरूपना में परिणत हो गया । उस पहिले छपे हुए और इस द्वितीय बार छपे हुए विध्वंसन में जहां कहीं जो आपको परिवर्त्तन मालूम होगा वह परिवर्त्तन नहीं है किन्तु जयाचार्य की हस्तलिखित प्रति में से धार धार कर वह ठीक किया हुआ है ।

साखों में जो भूलें रह गई हैं उनको शुद्ध करने के लिये शुद्धाशुद्धि पत्र लगा दिया है । सो पाठकों का पुस्तक पढ़ने से पहिले यह व्य होगा कि साखों को शुद्ध कर लें । मैं भी नये टाइप के योग से कहीं २ अक्षर रह गये हैं उनको क मूल सूत्रों में देख सकते हैं ।

नोट—भूमिका में भगवान् से आदि ले श्री कालूगणी तक की जो पद परम्परा बांधी है उसमें वङ्ग चूलिया का भी प्रमाण समझना चाहिये ।

पाठकों को बस इतना ही सामाजिक दिग्दर्शन करा कर अपनी लेखनी को विश्राम में भेजा जाता है । और आशा की जाती है कि आवाल वृद्ध ही इस ग्रन्थ को पढ़ कर आशातीत फल को करेंगे । इति शम्

भवदीय

“ईसरचन्द्र” चौपड़ा ।

# शुद्धाशुद्धि पत्रम् ।

नीचे लिखे हुए पृष्ठ पंक्ति मिला कर अशुद्ध को शुद्ध कर लेना चाहिये ।  
केवल शुद्ध पत्र दिया जाता है ।

पृष्ठ	पंक्ति	
२०	१४	आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ६ उ० १ गा० ११
२३	११	आचाराङ्ग श्रु० २ अ० १५
२४	६	भगवती श० १५ उ० ७
३२	४	भगवती श० ६ उ० ३१
६४	८	सूयगडाङ्ग श्रु० २ अ० ५ गा० ३३
८३	६	उत्तराध्ययन अ० १२ गा० १५
६६	२३	भगवती श० ६ उ० ३१
१४२	५	सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० १० गा० ३
१४४	१०	सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० २ उ० १ गा० १
१४७	१४	ठाणाङ्ग ठा० ४ उ० ४
१४६	२०	ठाणाङ्ग ठा० ३ उ० ३
१६८	६	अन्तगड व० ३ अ० ८
१६५	१८	भगवती १५
२०७	१०	भगवती श० १८ उ० २
२४८	२२	पन्नवणा पद १७ उ० १
३०७	७	ठाणाङ्ग ठा० ५ उ० २ तथा सम० स० ५
३१३	७	ठाणाङ्ग ठा० १०
३२८	६	ठाणाङ्ग ठा० ५ उ० २ तथा सम० स० ५
३३८	१६	पन्नवणा पद ११
३४५	२०	भगवती श० १८ उ० ८
३५७	३	आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ६ उ० ४
३८०	१७	भगवती श० ७ उ० ६
४०८	२३	आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ३ उ० १
४२४	१५	सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ४ उ० १ गा० १
४२५	११	उत्तराध्ययन अ० १५ गा० १६
४५१	१६	उत्तराध्ययन अ० १ गा० ३५
४५६	२१	सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० २ उ० २ गा० १३

# अनुक्रमणिका ।

## मिथ्यात्विक्रियाधिकारः ।

१ बोल पृष्ठ १ से ६ तक ।

बोल तपस्वी पिण सुपालदान. दया. शीलादि करी मोक्ष मार्ग ना देश थकी  
भाराधिक है। ( भग० श० ८ उ० १० )

२ बोल पृष्ठ ६ से ८ तक ।

प्रथम गुणठाणा रो धणी ल गाथापतिई सुपाल दान देई परीत संसार  
करी मनुष्य नो आयुषो बांध्यो पाठ ( विपाक सु० वि० अ० १ )

३ बोल पृष्ठ ८ से ११ तक ।

मिथ्यात्वी थके हाथी सुसला री दया थी परीत संसार कियो पाठ ( हाता  
अ० १ )

४ बोल पृष्ठ ११ से १२ तक ।

डाल पुत्र भगवान् नै । पाठ ( उपा० अ० ७ )

५ बोल पृष्ठ १२ से १३ तक ।

मिथ्यात्वी ते भली कृत्णी रे लेले सुव्रती कह्यो छै पाठ ( उपा० अ० ७  
भा० २० )

६ बोल पृष्ठ १३ से १५ तक ।

संन्यगृह्णति मनुष्य तिर्यञ्च एक वैमानिक और आयुषो न बांधे  
( भग० श० ७ उ० १ )

७ वो पृष्ठ १५ से १७ तक ।

मिथ्यात्वी ने सोलमी कला पिण न आवे एहनों न्याय ( उ० म० १ गा० ४४ )

८ वो पृष्ठ १७ से १८ तक ।

प्रथम गुणठाणा ना धणी रो तप आन्ना बाहिरे थापवा सूयगडाङ्ग नो नाम लेवे ते छूठा छै । पाठ ( सूय० श्रु० १ अ० २ उ० १ गा० ६ )

९ वो पृष्ठ १८ से १९ तक ।

मिथ्यात्वी ना पचखाण किण न्याय दुपचखाण छै ( म० श० ७ उ० २ )

१० वो पृष्ठ २० से २० तक ।

गुणठाणे शील रे ऊपर महावीर स्वामी रो न्याय ( आ० श्रु० १ अ० ६ )

११ वो पृष्ठ २१ से २२ तक ।

मिथ्यात्वी रो अशुद्ध पराक्रम संसार नो कारण छै पिण शुद्ध पराक्रम संसार नो कारण न थी । पाठ ( सूय० श्रु० १ अ० ८ गा० २३ )

१२ वो पृष्ठ २३ से २३ तक ।

सम्यग्दृष्टि नै पिण पाप लागे । वीर भगवान् रो कथन पाठ ( भाचा० अ० १५ )

१३ वो पृष्ठ २४ से २४ तक ।

सम्यग्दृष्टि भे पाप लागे । ते बली ( म० श० १४ उ० १ )

❁ १५ वो पृष्ठ २५ से २७ तक ।

गुणठाणे शुद्ध करणी छै आत्माहि छै एहनों प्रमाण ।

❁ इस मिथ्यात्वक्रियाधिकार में प्रस के भूतों को रूपा से १४ बोल की संख्या के रूपान्तर १५ बोल हो गया है । अतः आगे सर्व संख्या ही इसी क्रम के अनुसार हो चुकी है अधिकार में २० बोल हो गये हैं वास्तव में २६ बोल ही हैं । उसी प्रकार यहां अनुक्रमशिका में भी १४ बोल की संख्या छोड़नी पड़ी है ।

१६ बो पृष्ठ २७ से २६ ।

गुणठाणो निरवद्य कर्म नो क्षयो पशम किदा कह्यो छै ( ० सं १४ )

१७ बोल पृष्ठ २६ से ३१ ।

अप्रमादी साधु ने अनारंभी छै ( ० श० १ उ० १ )

१८ बोल पृष्ठ ३१ से ३५ तक ।

असोक्षाधिकारि तपस्यादि थीं सम्यग्दृष्टि पावे पाठ ( भ० श० ६ उ० १ )

१९ बोल पृष्ठ ३५ से ३६ तक ।

सूर्याभ ना अभियोगिया देवता भगवान् ने बांधा (रापाप० दे० भ० )

२० बोल पृष्ठ ३६ से ३७ ।

स्कन्द ने भगवद्वन्दना री गोतम री आज्ञा ( भ० श० २ उ० २ )

२१ बो पृष्ठ ३८ से ३९ ।

स्कन्द ने आज्ञा री ( ० श० २ उ० १ )

२२ बोल पृष्ठ ३९ से ३९ ।

ली री शुद्धि वना ( भ० श० ३ उ० १ )

२३ बो पृष्ठ ३९ से ४० ।

सोमलक्ष्मि नी चिन्तावना ( पुष्पिय० भ० ३ )

२४ बो पृष्ठ ४० से ४१ तक ।

अनित्य चिन्तवना रे ऊपर सूत्र नों ( भ० श० १५ )

२५ बो पृष्ठ ४१ से ४१ तक ।

नी ४ चिन्तवना ( उवाह )

२६ बो पृष्ठ ४२ से ४३ तक ।

तप अ निर्जरा आज्ञामाही ( भ० श० ८ उ० ६ )

२७ बोल पृष्ठ ४३ से ४४ तक ।

गोशाला रे पिण तपना करणहार एविव ( डा० डा० ५ उ० २ )



( घ )

२८ बोल पृष्ठ ४४ से ४४ त ।

दर्शनी पिण व नें आदसो ( प्रश्न व्या० सं० २ )

२९ बो पृष्ठ ४४ से ४६ तक ।

घाणव्यन्तर ना भला म ना व पाठ ( जम्बू० प० )

३० बो पृष्ठ ४६ से ४६ तक ।

उवाई में माता पिता नो विनय नों न्याय ( उवाई प्रश्न ७ )

इति जयाचार्य कृते अमविध्वंसने मिथ्यात्विक्रियाऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

## दानाऽधिकारः ।

१ बो पृष्ठ ५० से ५२ त ।

असंयती ने दीर्घा पुण्य नो

२ बोल पृ ५२ से ५४ त ।

न्द भावक नो अभिग्रह ( उपा० ६० अ० १ )

३ बोल पृ ५४ से ५८ त ।

यती ने दियां पाप कस्यो छै ( भ० श० ८ उ० ६ ) सुखशय्या ( ठा० १० ४ )

४ बो पृष्ठ ५८ से ५९ तक ।

“परि । ने” पाठ नो न्याय ( भ० श० ५ उ० ६-ठा० ३ )

५ बो पृष्ठ ५९ से ६० क ।

“पड़िलाभमाणे” नो वली न्याय ( भग० श० ५ उ० ६ )

६ बोल पृष्ठ ६० से ६२ त ।

“पड़िलाभिता” पाठ नो न्याय ( काता अ० १४ )

७ बोल पृष्ठ ६१ से ६२ त ।

पड़िलाभेजा दलपजा, पाठ नों ( ० श्रु० २ अ० १ उ० ७ )

८ बो पृष्ठ ६१ से ६४ त ।

पड़िलाभेजा—पड़ि माणे पाठनो ( छा० अ० ५ )

९ बो पृष्ठ ६४ से ६५ त ।

“पड़िलाभ” नाम देवानों है गाथा ( सूय० श्रु० २ अ० ५ गा० ३३ )

१० बो पृष्ठ ६६ से ६७ त ।

आर्द्र कुमार विप्रां ने नि पाप तो ( सूय० श्रु० २ अ० ६ गा० ४३ )

११ बो पृष्ठ ६७ से ६८ तक ।

भगु ने पुत्रां कह्यो—विप्र जिमायां ( उत्त० अ० १४ गा० १२ )

१२ बोल पृष्ठ ६६ से ७० तक ।

आ पिण विप्र जि है पहनो न्याय ( भग० श० ८ उ० ६ )

१३ बो पृष्ठ ७० से ७३ त ।

व तन में मौन कही है । ( सूय० श्रु० १ अ० ११ गा० २०-२१ )

१४ बोल पृष्ठ ७३ से ७४ त ।

बली पूर्व नों इज न्याय ( सूय० श्रु० २ अ० ५ गा० ३३ )

१५ बोल पृष्ठ ७४ से ७५ त ।

मन्दन मणिहारा री दानशाला रो वर्णन ( छाता अ० १३ )

१६ बो पृष्ठ ७५ से ७६ त ।

सूत्र में दान ( ठा० ठा० १० )

१७ बोल पृष्ठ ७७ से ७८ त ।

रा धर्म ( ठा० ठा० १० ) दश स्थविर ( ठा० ठा० १० )

१८ बोल पृष्ठ ७८ से ७९ त ।

नघति पुण्य बन्ध ( ठा० ठा० ६६ )

( च )

१६ बोल पृष्ठ ७६ से ८० ।

कुपालां ने कुक्षेल । चार प्रकार रा मेह ( ठा० ठा० ४ उ० ४ )

२० बो पृष्ठ ८० ८१ तक ।

गोशाला ने पुत्र पीठ फलक भावि वियां धर्म तप नहीं ( उपा० ६० अ० ७ )

२१ बो पृष्ठ ८१ ८२ तक ।

असंयती नें वियां कडुआ फल ( विपा० अ० १ ) : प्रत्युत्तरदीपिका का विचार ( नोट )

२२ बो पृष्ठ ८२ से ८४ तक ।

ब्राह्मणा नें पापकारी क्षेत्त कहा ( उक्त० अ० १२ गा० २४ )

२३ बोल पृष्ठ ८४ ८५ तक ।

१५ कर्मादान ( उपा० ६० अ० १ )

२४ बोल पृष्ठ ८५ से ८७ तक ।

पाणी थी पोष्यां धर्माधर्म नो न्याय ( उपा० ६० अ० १ )

२५ बो पृष्ठ ८७ ८८ तक ।

तुंगिया नगरी ना भ्रां ना उघाड़ा वारणा ना न्याय टीका ( भ० श० ५ उ० ५ )

२६ बोल पृष्ठ ८८ से ९२ तक ।

रा त्याग व्रत आगार त ( उवाहं प्र० २० सूय० अ० १८ )

२७ बोल पृष्ठ ९२ से ९३ तक ।

अ ने भाव शस्त्र कह्यो—दशविध शस्त्र ( ठा० ठा० १० )

२८ बो पृष्ठ ९३ ९४ तक ।

त थी देवता न हुवे थी पुण्यपुण्य थी देवता हुवे ( भ० श० १ उ० ८ )

२९ बो पृष्ठ ९५ से ९६ तक ।

साधु नें सामायक में बहिरायां क न भांगे भ० श० ८ उ० ५ )

३० वो पृष्ठ ६८ से ६९ त ।

ने जिमायां ऊपर महावीर पार्श्व ना साधु नो न्याय मिले नहीं  
( अ० २३ गा० १७ )

३१ वो पृष्ठ ६९ से १०० त ।

गोष्ठा केवली नी रीति ( भग० श० ६ उ० ३१ )

३२ वो १०० से १०२ ।

अभिग्रहधारी परिहार विशुद्ध चारित्रिया ने अनेरा साधु नी रीति (   
त उ० ४ वो० २६ )

३३ वो पृष्ठ १०२ से १०२ ।

साधु ने देवो संसार नो हेतु छोड्यो ( स्य० श्रु० १ अ० ६  
गा० २३ )

३४ वो पृष्ठ १०२ से १०४ त ।

गृहस्थ ने दान देणा अनुमोधां चौमासी प्रायश्चित्त ( निशी० उ० १५  
वो० ७८-७९ )

३५ वो १०४ से १०६ त ।

सन्धारा में पिण आनन्द ने स्थ कहा छै ( उ० ६० अ० १ )

३६ वो पृष्ठ १०६ से १०८ ।

गृहस्थ नी व्यावृत्त क्रियां मनाचार ( दशा श्रु० अ० ६ )

३७ वो पृष्ठ १०८ से १०८ त ।

पड़िमाधारी रे प्रेमबन्धन बूड्यो न थी ( दशा श्रु० अ० ६ )

३८ वो पृष्ठ १०९ से १११ ।

अ सन्ध्यासी नो ( उवाई प्र० १४ ) अनेरा सन्ध्यासी नो.  
( उवाई प्र० १२ )

३९ वो पृष्ठ ११२ से ११३ ।

वर्णनाग आना अभिग्रह ( अ० श्रु० ७ उ० ६ )

४० बोल पृष्ठ ११३ से ११३ तक ।

सर्व भ धकी पिण साधु चरित करी प्रधान छै ( उक्त० अ० ५ गा० २० )

४१ बोल पृष्ठ ११४ से ११६ तक ।

श्रावक री आत्मा शस्त्र कही छै ( भग० श० ७ उ० १ )

४२ बोल पृष्ठ ११६ से ११८ तक ।

श्रावक रा उपकरण भला नहीं-साधु रा भला ( अ० अ० ४ उ० १ )

इति जयाचार्य हुते अमविष्वंसने दानाऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

## अनुकम्पाऽधिकारः ।

१ बो पृष्ठ ११६ से १२१ तक ।

भगवान् पोता ना कर्म वा मनुष्या नें तारिवा धर्म कहै पिण असंयती  
जीधाने वचावा अर्थे नहीं ( सूय० श्रु० २ अ० ६ गा० १७-१८ )

२ बोल पृष्ठ १२२ से १२४ तक ।

जीवितन्या नों न्याय ।

३ बोल पृष्ठ १२४ से १२७ तक ।

नेमिनाथ जीना जित्तवन ( उक्त० अ० २२ गा० १८ )

४ बोल पृष्ठ १२७ से १३० तक ।

मेघ कुमार रे जीव हाथी भवे सुसला री अनुकम्पा ( छाता० अ० १ )

५ बो पृष्ठ १३० से १३४ तक ।

पड़िमाधारी रो कल्प ( दशा० दशा० ७ )

६ बोल पृष्ठ १३४ से १३५ तक ।

साधु उपदेश देवे पिण जीधां रो राग आणी जीवन रे अर्थे नहीं ( सू० श्रु०  
२ अ० ५ गा० ३० )

७ बोल पृष्ठ १३५ से १३६ त ।

गृहस्थां ने लड़ता देखी साधु मार मार हम न चिन्तवै ( आ० श्रु०  
२ अ० २ उ० १ )

८ बोल पृष्ठ १३६ से १३७ त ।

साधु गृहस्थ नें अग्नि चुम्माव हम न कहै ( आ० श्रु० २ अ० २  
उ० १ )

९ बो पृष्ठ १३७ से १३८ त ।

जीवितव्य वज्यों है । ( आ० आ० १०

१० बो १३८ से १३९ त ।

असंयम जीवितव्य वांछणो नहीं ( सू० श्रु० १ अ० १ गा० २४ )

११ बोल पृष्ठ १३९ से १४० त ।

असंयम जीवणो मरणो वांछणो वज्यों ( सू० श्रु० १ अ० १३ गा० २३ )

१२ बो पृष्ठ १४० से १४० त ।

असंयम जीवितव्य वांछणो वज्यों ( सू० श्रु० १ अ० १५ गा० १० )

१३ बोल पृष्ठ १४० से १४१ त ।

यम जीवणो वांछणो वज्यों ( सू० श्रु० १ अ० ३ उ० ४ गा० १५ )

१४ बोल १४१ से १४१ त ।

जीवितव्य वांछणो वज्यों ( सू० श्रु० १ अ० ५ उ० १ गा० ३ )

१५ बोल १४१ से १४२ त ।

जीवितव्य वांछणो नहीं ( सू० श्रु० १ अ० १ गा० ३ )

१६ बो १४२ से १४३ त ।

यम जीवितव्य वांछणो वज्यों ( सू० श्रु० १ अ० २ उ० २ गा० १६ )

१७ बोल पृष्ठ १४३ से १४४ त ।

जीवि धारणो कष्टो ( उक्त० अ० ४ गा० ७ )

१८ बोल १४४ ~ १४४ ।  
सं जीवितव्य दुर्लभ तो ( सू० भू० १ अ० २ गा० १ )

१९ बोल १४४ ~ १४६ ।  
नमी राजर्षि मिथिला चलती देख साहमो जोयो नहीं ( ० भा० ६ गा०  
२१-१३-१४-१५ )

२० बोल १४६ ~ १४६ ।  
साधु न चाँछे । ( दशवै० अ० ७ गा० ५० )

२१ बोल पृष्ठ १४६ ~ १४७ ।  
७ बोल हुयो न चाँछे ( दशवै० अ० ७ गा० ५१ )

२२ बोल १४७ ~ १४८ तक ।  
घ्यार पुरुष जाति ( ठा० ठा० ४ )

२३ बोल पृष्ठ १४८ से १४८ तक ।  
समुद्रपाली चोरनें मारतो देखी छोडायो नहीं ( उक्त० अ० २१ गा० ६ )

२४ बो १४८ से १४९ ।  
गृहस्थ तो भूला ने मार्गवतायां साधु ने ध्वित ( निशी उ० १३ )

२५ बोल १४९ से १५० त ।  
तो उपदेश देइ समझायो कह्यो ( ठा० ठा० ३ उ० ४ )

२६ बोल पृष्ठ १५० ~ १५१ ।  
उ ध्वित ( निशीय उ० ११ बो० १७० )

२७ बोल पृष्ठ १५१ से १५२ ।  
गृहस्थनी रक्षा निमित्ते मन्त्रादिक वि प्रायश्चित् ( निशी० उ० १३ )

२८ बोल पृष्ठ १५२ ~ १५६ तक ।  
सा पोषा में पिण गृहस्थनी रक्षा करणी वज्रो ( उपास० अ० ३ )

२९ बोल पृष्ठ १५६ से १६१ तक ।  
साधु नें नाया में पाणी आवतो देखी ने वतावणो नहीं ( भा० भू० २ अ०  
३ उ० १ )

३० बो १६१ से १६३ त ।

निरवध अनुकम्पा न्याय ( नि० उ० १२ बो० १-२ )

३१ बोल पृष्ठ १६४ से १६५ त ।

“कोलुण वदियाए” रो ( नि० उ० १७ बो० १-२ )

३२ बोल पृ १६५ से १६७ ।

“कोलुण” शब्द रो ( आ० श्रु० २ अ० २ उ० १ )

३३ बोल पृष्ठ १६७ से १६८ त ।

ओ ( अन्तगड ३ वा ८ अ० )

३४ बोल १६८ से १६९ त ।

कृष्णजी डोक की अनुकम्पाकीधी ( ० व० ३ )

३५ बो पृष्ठ १६९ से १६९ त ।

यक्षे हरिकेशी मुनि नी अनुकम्पा कीधी ( ० अ० १३ गा० ८ )

३६ बोल १७० से १७० त ।

धारणी राणी गर्मनी कीधी ( १ अ० १ )

३७ बो १७० से १७१ त ।

अभय कुमार नी अनुकम्पा करी देवता मेहवरसायो ( हाता अ० १ )

३८ बोल १७१ से १७२ त ।

जिन ऋषि रयणा देवी री अनुकम्पा कीधी ( अ० ६ )

३९ बोल पृष्ठ १७२ से १७३ त ।

करुणानो न्याय- आश्रव द्वार ( प्रश्न० अ० १ )

४० बोल पृष्ठ १७३ से १७४ ।

देवी करुणा ६दित जि ऋषि ने हण्यो ( ० अ० ६ )

४१ बोल पृष्ठ १७५ से १७५ ।

सूर्या से क पाऊयो वै पिण मक्ति क है ( प्र० )



४२ वो पृष्ठ १७६ से १७७ तक ।

यक्षे ऽने ऊर्ध्वा ते पिण व्यावच ( उक्त० अ० १२ गा० ३२ )

४३ वो पृष्ठ १७७ से १७८ तक ।

गोशालाने भगवान् वचायो ते ऊपर न्याय ( भग० श० १५ )

इति जयाचार्य कृते अमविध्वंसने ऽनुकम्पाऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

## लब्धि-अधिकारः ।

१ बोल पृष्ठ १८० से १८२ तक ।

लब्धि फोड्यां. ( पन्न० प० ३६ )

२ बोल पृष्ठ १८२ से १८३ तक ।

आहारिक लब्धि फो ५ क्रिया लागे ( पन्न० प० ३६ )

३ वो पृष्ठ १८३ से १८४ तक ।

आहारिक लब्धि फोडवे ते प्रमाद आशी अधिकरण ( भ० श० १६ उ० १ )

४ बोल पृष्ठ १८४ से १८६ तक ।

लब्धि फोडे तिण ने मायी सकयायी कह्यो ( भग० श० ३ उ० ४ )

५ वो पृष्ठ १८६ से १८८ तक ।

अर्धा चारण. विद्या चारण लब्धि फोडे आलोयां विना मरे तो चिराघक .  
( भ० श० २० उ० ६ )

६ बोल पृष्ठ १८८ से १९० तक ।

छद्मस्थ तो सात प्रकारे चूके ( ठा० ठा० ७ )

७ बोल पृष्ठ १९० से १९३ तक ।

वैकिय लब्धि फोडी ( उवाह. प्र० १४ )

८ बोल पृष्ठ १६३ से १६४ तक ।

वि उपजायां चौमासिक प्रायश्चित्त ( नि० उ० ११ बो० १७२ )  
इति जयाचार्य कृते अमविध्वंसने लब्धधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

## प्रायश्चित्ताधिकार ।

१ बो पृष्ठ १६५ से १६६ त ।

सीहो अनगार मोटे मोटे शब्दे रोयो ( भ० श० ५१ )

२ बो पृष्ठ १६६ से १६७ त ।

अशुक्ते साधु पाणी में पात्री तराई ( भ० श० ५ उ० ४ )

३ बो पृष्ठ १६७ से १६८ तक ।

रहनेमी राजमती नें विषय रूप न बोल्यो ( ० अ० २२ गा० ३८ )

४ बोल पृष्ठ १६८ से १६९ त ।

घोष ना साधां नागश्री नें निन्दी ( १ अ० १६ )

५ बो पृष्ठ १६९ से २०२ तक ।

सेलक ऋषि ढोलो पड्यो ( ज्ञाता अ० ५ )

६ बोल पृष्ठ २०२ से २०४ त ।

सुमङ्गल अनगार मनुष्य मारसी ( भ० श० १५ )

७ बो पृष्ठ २०४ से २०५ त ।

“ गेइय पडिक्कन्ते ” पाठ नो न्याय ( भ० श० २ उ० १ )

८ बोल पृष्ठ २०५ से २०६ ।

ति क अनगार संघारो कियो तेहनें “आलोइय” । १० ( भ० श० ३ )

( ६ )

६ बोल २०६ ~ २०८ ।

कार्तिक सेठ संथारो कियो तेहने गोइय पाठ कंठो ( भ० श० १८  
उ० ३ )

१० बोल पृष्ठ २०८ से २१३ त ।

कुशील नि ( ० श० २५ उ० ६ )

११ बोल पृष्ठ २१३ ~ २१६ ।

पुलाक व स पड़िसेवणादि रो संभुडा संभुडरो वर्णन ( भ० श०  
१६ उ० ६ )

१२ बोल २१६ से २१७ ।

अनुत्तर विमाल ना दे उदीर्ण मोहन थी ( भ० श० ५ उ० ४ )

१३ बोल पृष्ठ २१७ ~ २१८ ।

हाथी-कुंथुआ रे नी क्रिया घरोवर कही ( ० श० ७ उ० ८ )

१४ बोल २१८ ~ २१९ ।

भवी जीव मोक्ष ये ( भ० श० १२ उ० २ )

१५ बोल २१९ ~ २२२ ।

पुण्डला में ८ । अङ्ग अनुक्रम ( भ० श० १२ उ० ५ ) ( उपा०  
अ० १ )

इति जयाचार्य कृते भ्रमविध्वंसने प्रायश्चित्ताधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

---

गोशा अधिकारः ।

---

१ बोल २२३ से २२५ ।

गोशाला नी दी ( भग० श० १५ )

( ण )

२ बो २२५ से २२७ ।

सर्वानुभूति गोशाला ने कह्यो ( ० श० १५ )

३ बो पृष्ठ २२७ से २२६ ।

भगवान् गोश ने कह्यो ( ० श० १५ )

४ बोले पृष्ठ २२६ से २३० त ।

गोशाला ने कुशिष्य कह्यो ( ० श० १५ )

इति श्री जयाचार्य कृते अमविध्वंसने गोशालाऽधिकाराऽनुक्रमणिका समाप्ता ।

## गुण वर्णनाऽधिकारः

१ बोले पृष्ठ २३१ से २३१ ।

गणधरां भगवान् रा गुण कीधा-मवगुण नहीं ( भा० श्रु० १  
अ० ६ उ० ४ गा० ८ )

२ बो २३१ से २३३ ।

१ गुण ( उवाई )

३ बोले पृष्ठ २३३ से २३३ ।

कोणक गुण ( उवाई )

४ बोले पृष्ठ २३४ से २३४ ।

आ ना गुण ( उवाई प्र० २० )

५ बो पृष्ठ २३५ से २३६ ।

गो रा गुण ( अग० श० १ उ० १ )

इति श्री जयाचार्य कृते अमविध्वंसने गुणवर्णनाऽधिकाराऽनुक्रमणिका समाप्ता ।

## श्याऽधिकारः ।

१ बो पृष्ठ २३७ से २३८ तक ।

भ न में कपाय कुशील नियण्डो कल्लो छै ( भग० श० २५ उ० ६ )

२ बोल पृष्ठ २३८ से २३९ तक ।

६ लेश्या ( आव० अ० ४ )

३ बोल पृष्ठ २३९ से २४१ तक ।

मनपर्यवधानी में ६ लेश्या ( पत्र० प० १७ उ० ३ )

४ बोल पृष्ठ २४१ से २४३ तक ।

लेश्या विशेष ( भग० श० १ उ० १ )

५ बोल पृष्ठ २४३ से २४८ तक ।

नारकी रा प्रश्न ( भग० श० १ उ० २ ) मनुष्य ना नव प्रश्न ( भ० श० १ उ० २ )

६ बोल पृष्ठ २४८ से २५० तक ।

कृष्ण लेशी मनुष्य रा ३ भेद ( पत्र० प० १७-२३० )

इति श्री जयाचार्य कृते अमविध्वंसने लेश्याऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

## वैयावृत्ति-अधिकारः ।

१ बोल पृष्ठ २५१ से २५२ तक ।

हरिकेशी मुनि ब्राह्मणा ने कल्लो ( ० अ० १२ गा० ३२ )

२ बो पृष्ठ २५२ से २५३ तक ।

सूर्याभ पाण्ड्यो ते पिण भक्ति ( प्र० )

३ बोल पृष्ठ २५३ से २५४ तक ।

ऋषभदेव निर्वाण पटुन्ता इन्द्र दाढ़ा लीधी देवता हाड़ लीघा (जम्बू० प०)

४ बोल पृष्ठ २५४ ~ २५६ तक ।

चौसां बोलां तीर्थङ्कर गोह ( ज्ञाता अ० ८ )

५ बोल पृष्ठ २५६ से २५७ तक ।

साधव सातां दीघां साता कहै तिणनें भगवान् निपेध्या (सू० अ० ३ उ० ४)

६ बोल पृष्ठ २५७ से २५८ तक ।

कुल गण. सङ्ग साधमीं. साधु नें इज कहा ( ठा० ठा० ५ : उ० १ )

७ बोल पृष्ठ २५८ से २६० तक ।

दश व्यावच साधुनीज कही ( ठा० ठा० १० )

८ बोल पृष्ठ २६० से २६२ तक ।

१० व्यावच ( उवाह )

९ बोल पृष्ठ २६२ से २६६ तक ।

भिक्षु मुनिराज कृत वार्त्तिक

१० बोल पृष्ठ २६७ से २६८ तक ।

साधुना वैद्य छेयां स्युं हुवे ( भग० श० १६ उ० ३ )

११ बोल पृष्ठ २६८ ~ २७० तक ।

साधुने अर्थ छेदान्यां अनुमोदां प्रायश्चित्त कह्यो । ( निशौ० उ० १५

बो० ३१ )

१२ बोल पृष्ठ २७० से २७२ तक ।

साधुरा व्रण छेदे तेहनें अनुमोदे नहीं ( आत्मा० अ० १३ श्रु० २ )

इति श्री जगन्नाथ कृते अमरविश्वंसे वैयावृत्ति-अधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

## विनयाऽधिकारः ।

१ बोल पृष्ठ २७३ से २७४ तक ।

साधय विनय नों निर्णय ( ज्ञाता अ० ५ )

२ बोल पृष्ठ २७४ से २७६ तक ।

पाण्डु पाण्डव नारद नों विनय कियो ( ज्ञाता अ० १६ )

३ वो पृष्ठ २७६ से २७७ तक ।

अम्बडनो चेलां विनय कियो ( उवाई प्र० १३ )

४ बोल पृष्ठ २७८ से २८० तक ।

धर्माचार्य साधु नें इज कह्यो ( राय प० )

५ बोल पृष्ठ २८० से २८१ तक ।

सूर्याभि प्रतिमा आगे नमोत्थुणं गुण्यो ( जम्बू द्वी० )

६ बोल पृष्ठ २८२ से २८४ तक ।

तीर्थङ्कर जन्म्यां इन्द्र वणो विनय करे ( ज० द्वी० )

७ वो पृष्ठ २८४ से २८५ तक ।

इन्द्र तीर्थङ्कर जन्म्यां विचार ( ज० द्वी० )

८ बोल पृष्ठ २८५ से २८६ तक ।

इन्द्र तीर्थङ्कर नी माता नें नमस्कार करै ( ज० द्वी० )

९ बोल पृष्ठ २८६ से २८७ तक ।

नवकार ना ५ पद ( चन्द्र० गा० २ )

१० बोल पृष्ठ २८७ से २८८ तक ।

सर्वानुभूति-सुनक्षल मुनि गोशाला नें कह्यो ( भग० श० १५ )

११ बोल पृष्ठ २८८ से २८९ तक ।

माहण साधु नें इज कह्यो ( सूर्य० श्रु० १ अ० १६ )

( अ )

१२ बोल पृष्ठ २८६ से २९० तक ।

साधु ने हज माहण कहा ( सय० श्रु० २ अ० १ )

१३ बोल पृष्ठ २९१ से २९४ तक ।

माहण ना लक्षण ( उत्त० अ० २५ गा० १६ से २६ )

१४ बो पृष्ठ २९४ से २९७ तक ।

श्रमण माहण अतिथि नो नाम कहा ( अनु० द्वा )

इति जयाचार्य कृते भ्रमविचित्रने विनयाऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

## पुण्याऽधिकारः ।

१ बोल पृष्ठ २९८ से ३०० तक ।

अर्थ भोगादिनी वांछा आह्वा में नहीं ( भग० श० १ उ० ७ )

२ बोल पृष्ठ ३०० से ३०१ तक ।

चित्त जी ब्रह्मदत्त ने कहा ( उत्त० अ० १३ गा० २१ )

३ बोल पृष्ठ ३०१ से ३०२ तक ।

पुण्य नो हेतु ते पुण्य पद ( उत्त० उ० १८ )

४ बो पृष्ठ ३०२ से ३०३ तक ।

अकृत पुण्य जीव संसार भमे ( प्रश्न व्या० ५ आश्र० )

५ बोल पृष्ठ ३०३ से ३०३ तक ।

यश नो हेतु संयम विनय, यश शब्दे करी ओलझायो ( उत्त० अ० ३ गा० १३ )

६ बोल पृष्ठ ३०४ से ३०४ तक ।

जीव नरके आत्म अयशो करी उपजे ( भग० श० ४१ उ० १ )



( न )

७ बोल पृष्ठ ३०४ से ३०५ तक ।

घन धान्यादिक नें आदरे नहीं ( ० अ० ६ गा० ८ )

८ बो पृष्ठ ३०५ से ३०६ तक ।

अविनीत नें मृग कह्यो ( ० अ० १ गा० ५ )

इति श्री जयाचार्य कृते अमविध्वंसने पुण्याऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

## आश्रवाऽधिकार ।

१ बोल पृष्ठ ३०७ से ३०८ तक ।

५ आश्रव ( ठा० ठा० ५ उ० १ ) ( ० स० ५ )

२ बो पृष्ठ ३०८ से ३०९ तक ।

५ आश्रवांनं कृष्ण लेश्या ना लक्षण कह्यो ( उक्त० अ० ३४ गा० २१-२२ )

३ बोल पृष्ठ ३०९ से ३११ तक ।

३ मेद ( ठा० ठा० २ उ० १ )

४ बो पृष्ठ ३११ से ३११ तक ।

मिथ्यात्व नों लक्षण ( ठा० ठा० १० )

५ बोल पृष्ठ ३१२ से ३१२ तक ।

प्राणतिपात नें विषे जीव ( ० श० १७ उ० २ )

६ बो पृष्ठ ३१२ से ३१४ तक ।

दश विध जीव परिणाम ( ठा० ठा० १२ )

७ बोल पृष्ठ ३१४ से ३१५ तक ।

आठ आत्मा ( ० श० १२ उ० १० )

८ बोल पृष्ठ ३१५ से ३१० तक ।

अर्ने योग नें जीव ( अनुयोग द्वार )

६ बोल ३१७ से ३१८ त ।

उत्थान, कर्म, वीर्य पुरुषाकार पर ॥ ( भ० १२ उ० ५ )

१० बोल पृष्ठ ३१८ से ३२० ।

१० नाम ( अनुयोग द्वार )

११ बोल पृष्ठ ३२० से ३२१ त ।

लाभ रा २ भेद ( अनुयो० द्वा० )

१२ बोल पृष्ठ ३२२ से ३२३ त ।

अकुशल मन रुंधवो कह्यो ( उवाहं )

१३ बोल पृष्ठ ३२३ से ३२५ त ।

भ्रवणा ते त्वावणा ( अनुयो० द्वा० )

१४ बोल पृष्ठ ३२५ से ३२७ तक ।

आश्रय, मिथ्या दर्शनादिक, जीव नां परिणाम ( डा० डा० ६ )

इति जयाचार्य कृते भ्रमविवर्तने आश्रयाऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

## सम्बन्धाधिकारः ।

१ बोल पृष्ठ ३२८ से ३२८ त ।

५ संवर द्वार ( डा० डा० ५ उ० २ )

२ बोल पृष्ठ ३२९ से ३२९ ।

ज्ञान, दर्शन, आदिक जीवना लक्षण ( ० अ० २८ गा० ११-१२ )

३ बोल पृष्ठ ३३० से ३३१ ।

गुण, जीव गुण, ण. ( अनुयो० द्वा० )

४ बोल पृष्ठ ३३१ से ३३३ त ।

संवर ने आत्मा कही ( भ० श० १ उ० ६ )

५ बो पृष्ठ ३३३ से ३३५ तक ।

प्राणातिपाताऽदिकना वेरमण अरूपी ( भग० श० १२ उ० ५ )

इति जयाचार्य कृते अमविध्वंसने संवराऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

## जीवभेदाऽधिकारः ।

१ बोल पृष्ठ ३३६ से ३३८ तक ।

मनुष्य ना भेद ( पन्न० प० १५ उ० १ )

२ बो पृष्ठ ३३८ से ३३९ तक ।

सन्नी असन्नी ( पन्न० पद १ )

३ बोल पृष्ठ ३३९ से ३४० तक ।

८ सूक्ष्म ( दशवै० अ० ८ गा० १५ )

४ बो पृष्ठ ३४० से ३४१ तक ।

३ त्रस ३ स्थावर ( जीवा० १ प्र० )

५ बोल पृष्ठ ३४१ से ३४२ तक ।

सम्मूर्च्छिम मनुष्य पर्याप्तो अपर्याप्तो विहूँ ( अनुयोग० )

६ बोल पृष्ठ ३४२ से ३४४ तक ।

देवता में वे वेद ( भग० श० १३ उ० २ )

इति श्रीजयाचार्य कृते अमविध्वंसने जीव भेदऽधिकारा अनुक्रमणिका समाप्ता ।

## आज्ञाऽधिकारः ।

१ बोल पृष्ठ ३४५ से ३४६ तक ।

वीतराग ना प्रग थी जीव मरे तेहने ईरियावहिया किया ( भ० श० १२ उ० ८ )

२ बोल पृष्ठ ३४६ से ३४६ तक ।

जिन आह्ना सहित आलोची करतां विपरीत थयो ते पिण शुद्ध छै ( आ० अ० ५ उ० ५ )

३ बोल पृष्ठ ३५० से ३५२ तक ।

नदी उतरवारी कल्प ( बृहत्कल्प उ० ४ )

४ बो पृष्ठ ३५२ से ३५३ तक ।

नदी उतरवारी आह्ना ( आ० श्रु० २ अ० ३ उ० ५ )

५ बो पृष्ठ ३५३ से ३५४ तक ।

साध्वी पाणी में डूवती नै साधु बाहिर काढे ( बृ० क० उ० ६ )

६ बोल पृष्ठ ३५४ से ३५५ तक ।

साधु रो दिशा अनै स्वाध्याय रो कल्प ( बृ० क० उ० १ )

इति श्रीजयाचार्य कृते अमविध्वंसने आह्नाऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

## शीतल-आहाराऽधिकारः ।

१ बो पृष्ठ ३५६ से ३५६ तक ।

ठण्डो आहार लेणो कह्यो ( उक्त० अ० ८ गा० १२ )

२ बोल पृष्ठ ३५६ से ३५७ तक ।

वली ठण्डो आहार लेणो कह्यो ( आचा० श्रु० १ अ० ६ उ० ४ )

३ बोल पृष्ठ ३५७ से ३५८ तक ।

घन्नो अनगार रो अभिग्रह ( अनु० उ० )

४ बोल पृष्ठ ३५८ से ३६० तक ।

शीतल आहार लेणो कह्यो ( प्र० व्या० अ० १० )

इति श्रीजयाचार्य कृते अमविध्वंसने शीतलाहाराऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

## सूत्र पठनाधिकारः ।

१ बो ३६१ से ३६१ तक ।

साधु ने इज सूत्र भणवारी आशा ( प्र० व्या० आ० ७ )

२ बो ३६२ से ३६३ तक ।

साधु सूत्र भणे तेहनी पिण मर्यादा ( व्य० १० उ० )

३ बोल ३६३ से ३६४ तक ।

साधु गृहस्थ ने सूत्र री वाचणी देवे तो प्रायश्चित्त ( नि० उ० १६ )

४ बो ३६४ से ३६४ तक ।

अणदीधी वाचणी आचरतां दण्ड ( नि० उ० १६ )

५ बोल ३६४ से ३६५ तक ।

३ वाचणी देवा योग्य नहीं ( ता० ता० ३ उ० ४ )

६ बोल ३६५ से ३६६ तक ।

अ ने अर्थों का ज्ञान ( उवा० प्र० २० )

७ बो पृष्ठ ३६६ से ३६७ तक ।

सिद्धान्त भणवारी आशा साधु ने है ( सू० अ० १८ )

८ बोल पृष्ठ ३६७ से ३६७ तक ।

आत्मगुप्त साधु इज धर्म नो परूपण हार है ( सू० श्रु० १ अ० १२ )

९ बोल पृष्ठ ३६७ से ३६८ तक ।

सूत्र अभाजन ने सिखावे ते सङ्ग बाहिर है ( सू० प्र० २० पा० )

१० बोल पृष्ठ ३६८ से ३६८ तक ।

सूत्र ना २ मेव ( ता० ता० २ उ० १ )

११ बोल पृष्ठ ३६८ से ३७० तक ।

सूत्र आश्री ३ प्रत्यनीक ( भ० श० ८ उ० १८ )

१२ बोल पृष्ठ ३७० से ३७१ तक ।

सूत्र ना० १० ( अनु० द्वा० )

१३ बोल पृष्ठ ३७१ से ३७३ तक ।

श्रुत सिद्धान्त नो छै ( पन्ना ५० २३ उ० २ )

इति श्रीजयाचार्य कृते प्रमविष्णंसने सूत्रपठनाऽधिकारानुक्रमणिका समाप्त ।

## निरवद्य क्रियाऽधिकारः ।

१ वो पृष्ठ ३७४ से ३७५ तक ।

पुण्य बंधे तिहां निर्जरा री नियमा छै ( भग० श० ७ उ० १० )

२ बोल पृष्ठ ३७६ से ३७६ तक ।

आज्ञा माहिली करणी सू पुण्य नो कह्यो ( उक्त० अ० २६ )

३ बोल पृष्ठ ३७६ से ३७७ तक ।

कथाई शुभ कर्म नो कह्यो ( उक्त० अ० २६ )

४ बोल पृष्ठ ३७७ से ३७७ ।

गुरु नी व्यावच क्रियां तीर्थङ्कर नाम गोत्र कर्म नो कह्यो ( उक्त० अ० २६ )

५ बोल पृष्ठ ३७७ से ३७८ तक ।

श्रामण माहण नें वन्दनादि करी शुभदीर्घ आयुषानो कह्यो ( भग० श० ५ उ० ६ )

६ बोल पृष्ठ ३७८ से ३७९ तक ।

१० प्रकारे कल्याण करी कर्मवन्त्र नो ( ठा० ठा० १० )

७ वो पृष्ठ ३७९ से ३८० ।

१८ पाप सेऽयां श वेदनी कर्म बन्धे ( ० श० ७ उ० ६ )

८ वो पृष्ठ ३८० से ३८१ तक ।

अरुर्केश वेदनी आज्ञा माहिली करणी थी बंधे ( ० श० ६ उ० ७ )

६ बोल पृष्ठ ३८१ से ३८२ तक ।

२० बोलां करी तीर्थङ्कर गोत्र धंघतो ते ( ज्ञाता अ० ८ )

१० बो पृष्ठ ३८२ से ३८४ तक ।

निरवद्य करणी सूं पुण्य नीपजे छे ( भ० श० ७ उ० ६ )

११ बो पृष्ठ ३८४ से ३८६ तक ।

आहुंइ <sup>०</sup> निपजवारी करणी ( ० श० ८ उ० ६ )

१२ बोल पृष्ठ ३८६ से ३८२ तक ।

धर्मखचि नो कहुवो तुम्हो परठणो ( ज्ञाता अ० १६ )

१३ बो पृष्ठ ३८२ से ३८४ त ।

भगवन्ते सर्वानुभूति नें <sup>०</sup> स्यो ( भ० श० १५ ) भगवान् साधानें कह्यो  
( भ० श० १५ )

१४ बो पृष्ठ ३८४ से ३८५ तक ।

आज्ञा प्रमाणे चाले ते विनीत ० अ० १ गा० २ )

इति जयाचार्य कृते अमविध्वंसने निरवद्य क्रियाऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

## निर्ग्रन्थाहाराऽधिकारः ।

१ बोल पृष्ठ ३८६ से ३८७ त ।

साधु-आहार, उपकरण आदिक भोगवे ते निर्ग्रा धर्म छै ( भ० श० १ उ० ६ )

२ बो पृष्ठ ३८७ से ३८७ तक ।

, दर्शन, चरित्र वहवाने अर्थे आहार करणो कह्यो ( ज्ञाता अ० २ )

३ बो ३८८ से ३८८ त ।

वर्ण . वि हेते आहार न करिवो ( ज्ञाता अ० १८ )

४ बोल ३६८ ~ ३६९ तक ।

साधु आहार कियों पाप न बंधे ( दशवै० अ० ४ गा० ८ )

५ बोल ३६९ से ३६९ त ।

साधु नो आहार मोक्ष नों सा ॥ ( दशवै० अ० ५ उ० १ गा० ६२ )

६ बोल पृष्ठ ४०० ~ ४०० तक ।

निर्दोष आहार ना लेणहार शुद्ध गति ने विषे जावे ( द० अ० ५ उ० १ गा० १०० )

७ बोल पृष्ठ ४०० से ४०२ त ।

६ स्थानके करी भ्रमण आहार करतो आक्षा अतिक्रमे नहीं ( ठा० ठा० ६ उ० १ )

इति श्रीजयाचार्य कृते भ्रमविध्वंसने निर्ग्रन्थाहाराऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

## निर्ग्रन्थ निद्राऽधिकारः ।

१ बो पृष्ठ ४०३ से ४०३ तक ।

जयणा धी सूतां पाप न बंधे ( दशवै० अ० ४ गा० ८ )

२ बोल पृष्ठ ४०३ से ४०४ त ।

सुप्ते नाम निद्रावन्तर्नो छै ( दश० अ० ४ )

३ बोल पृष्ठ ४०४ ~ ४०५ ।

द्रव्य निद्रा निद्रा कही ( म० श० १६ उ० ६ )

४ बोल पृष्ठ ४०५ से ४०७ त ।

तीजी पौरसी में निद्रा ( ० अ० २६ गा० १८ )

५ बोल पृष्ठ ४०६ से ४०६ त ।

निद्रा पाणी तीरे तें पिणं और जागां नहीं ( धृ० क० उ० १ )



६ बो पृष्ठ ४०७ से ४०८ तक ।

निद्रा ना कल्प ( वृ० क० ३ )

७ बोल पृष्ठ ४०८ से ४०९ तक ।

द्रव्य निद्रा ( आचा० अ० ३ उ० १ )

इति श्रीजयाचार्य कृते अमविध्वंसने निर्गन्ध निद्राऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

## एकाकि साधु-अधिकारः ।

१ बोल पृष्ठ ४१० से ४१० तक ।

एकाकी पणो न कल्पे ( व्यव० उ० ६ )

२ बोल पृष्ठ ४११ से ४११ तक ।

अगडसुया ना कल्प ( व्यव० उ० ६ )

३ बोल पृष्ठ ४११ से ४१२ तक ।

बली कल्प ( ० उ० १ बो० ११ )

४ बो पृष्ठ ४१२ से ४१४ तक ।

एकला में ८ अवगुण ( आचा० श्रु० १ अ० ५ उ० १ )

५ बोल पृष्ठ ४१४ से ४१६ तक ।

एकला नो कल्प ( अ० श्रु० १ अ० ५ उ० ४ )

६ बो पृष्ठ ४१७ से ४१८ तक ।

८ गुणा सहित नै प पडिमा योग्य कह्यो ( डा० डा० ८ )

७ बो पृष्ठ ४१८ से ४१९ तक ।

बहुत्सुप नो भावार्थ ( उवाह प्र० २०-२१ )

८ बो पृष्ठ ४१९ से ४२० तक ।

बली कल्प ( वृ० क० उ० १ बो० ४७ )

६ बो पृष्ठ ४२० से ४२३ त ।  
बेलो न मिले तो एकलो रहे नो निर्णय ( ० अ० ३२ )

१० बोल पृष्ठ ४२३ से ४२३ त ।  
राग द्वेष ने वि जे कह्यो ( ० अ० १ )

११ बो ४२४ से ४२४ ।  
राग द्वेष ने अभावे क्रमो रहे ( उक्त० अ० १ )

१२ बोल ४२४ से ४२५ ।  
राग द्वेष ने अभावे एकलो विचर स्युं ( सू० अ० ४ उ० १ गा० )

१३ बोल पृष्ठ ४२५ से ४२८ त ।  
राग द्वेष ने अभावे एकलो विचरणो ते ( ० अ० १५ )  
इति जयाचार्य कृते अमविध्वंसने एकाकि साधु-अधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

## उच्चारण वशाऽधिकारः ।

१ बोल पृष्ठ ४२६ से ४२६ ।  
पासवण, परठणो बज्यो ते आश्री बज्यो ( निशीथ उ० ४ )

२ बो पृष्ठ ४२६ से ४३० ।  
पूर्वलो न्याय ( निशीथ उ० ४ )

३ बो पृष्ठ ४३० से ४३१ ।  
पूर्वलो ( निशीथ उ० ४ )

४ बोल पृष्ठ ४३१ से ४३२ ।  
नो करवानो है ( निशीथ उ० ३ )

५ बोल पृष्ठ ४३२ से ४३३ ।

परठणो नाम करवानों छै ( ज्ञाता० अ० २ )

इति जयाचार्य कृते अमविध्वंसने उच्चारपासवणाऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

## कविताऽधिकारः ।

१ बोल पृष्ठ ४३४ से ४३५ तक ।

जे । साधु-४ बुद्धि तेतला पहना करे ( नन्दी प० छा० व० )

२ बोल पृष्ठ ४३५ से ४३६ तक ।

बली जोड़ करवानों न्याय ( नन्दी )

३ बोल पृष्ठ ४३६ से ४३७ त ।

३ जोड़ करवा नों न्याय ।

४ बो पृष्ठ ४३७ से ४३८ त ।

चतुर्विध ( डा० डा० ४ ड० ४ )

५ बो पृष्ठ ४३८ से ४४० तक ।

करी बाणी कथी ते गाथा छन्द जोड़ छै (उत्त० अ० १३ गा० १२)

६ बोल ४४० से ४४२ तक ।

रे लारे गावै तेहनों दोष कह्यो छै (निशीथ अ० १७ बो० १४०)

इति श्री जयाचार्य कृते अमविध्वंसने कविताऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

## अल्पपाप बहु निर्जराऽधिकारः ।

१ बो पृष्ठ ४४३ से ४४३ त ।

१५ बहु निर्जरा ( ० श० ८ ड० ६ )

२ बोल पृष्ठ ४४४ ~ ४४४ त ।

साधु नें शुक आहारादियां आयुषी बंधे ( भ० श० ५ उ० )

३ बो पृष्ठ ४४४ ~ ४४६ त ।

धान ना वे भेद ( भ० श० १८ उ० १० )

४ बो पृष्ठ ४४६ से ४४७ त ।

कां रा गुण ( उवाह २० )

५ बोल पृष्ठ ४४७ ~ ४४९ त ।

आनन्द रो अमिग्रह ( उपा० द० उ० १ )

६ बोल पृष्ठ ४४९ ~ ४५० त ।

बली पूर्वलो न्याय ( सू० श्रु० २ उ० ५ गा० ८-९ )

७ बोल पृष्ठ ४५० से ४५१ त ।

अल्प गि छै ( ० श० १५ )

८ बो पृष्ठ ४५१ से ४५२ तक ।

बली अल्प त्वी ( उक्त० अ० ६ गा० ३५ )

९ बो पृष्ठ ४५२ से ४५३ त ।

बली त्वी ( आ० श्रु० २ अ० १ उ० १ )

१० बोल पृष्ठ ४५३ ~ ४५५ त ।

बली एहनों न्याय ( आ० श्रु० २ अ० २ उ० २ )

इति श्री जयाचार्य कृते भ्रमविध्वंसने अल्पपाप बहु निर्जराऽधिकारानुक्रमशिका

समाप्ता ।

( स )

## पाटाधिकारः ।

१ बो ८ ४५६ से ४५६ तक ।

किमाड़ सहित स्थानक साधु नें करी पिण न बांछणो ( उ० अ० ३५ )

२ बोल पृष्ठ ४५७ से ४५७ तक ।

किमाड़ उघाड़यो ते अजयणा ( आ० आ० ४ )

३ बोल पृष्ठ ४५७ से ४५८ तक ।

सूने घर ॥ साधु पिण न जड़े न उघाड़े ( सू० ) टीका

४ बो पृष्ठ ४५६ से ४५६ तक ।

कण्टक बोदिया ते नी शाखा ना वारणा । आ० श्रु० २ अ० ५ उ० १)

५ बो ८ ४६० से ४६१ तक ।

वि . उघाड़यो पड़े पदवी जायगां में साधु नें रहिवो वज्यो छै । ( आ० श्रु० २ अ० २ उ० २ )

६ बो पृष्ठ ४६१ से ४६३ तक ।

साधवी नें अमङ्गदुवार रहिवो नहीं साधु नें कल्पे ( वृ० क० उ० १ )

इति श्री जयाचार्य कृते अमविध्वंसने कपाटाधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

इत्यनुक्रमणिका ।



ॐ

# अम विध्वंसनम्

## अथ मिथ्यात्वि क्रियाधिकारः ।

अम विध्वंसन कुमति कुहेतु खंडन सुमति सुहेतु मुखमंडन मिथ्यात्व-  
मत विहंडन. सिद्धान्त न्याय सहित. श्री मिश्र महा मुनिराज हज सिद्धान्त हुंडी  
तेहना सहाय्य थकी संक्षेप मात्र वली विशेषे करी परवादी ना कुहेतुनी शङ्का ते  
अम तेहनूं विध्वंसन ते नाश करीवूं ए ग्रन्थे करि ते माटे ए नूं नाम "   
विध्वंसन" छै । ते सूत्र न्याय करी लिखिये छै ।

भगवान् रो धर्म तो केवली रो आज्ञा माही छै । ते धर्मरा २ भेद  
संवर, निर्जरा. ए विहं भेदा में जिन आज्ञा छै । ए संवर निर्जरा वेहुं इ धर्म छै ।  
ए संवर निर्जरा टाल अनेरो धर्म नहीं छै । केह एक पाषण्डी संवर ने धर्म श्रद्धे  
पिण निर्जरा ने धर्म श्रद्धे नहीं । त्यांरे संवर निर्जरांरी ओलखणा नहीं । ते  
संवर निर्जरा रा अजाण । निर्जरा धर्म ने उथा अनेक कुहेतु लगावे ।  
जिम अनाण वादी ( अ. वादी ) पाषण्डी ज्ञान ने निषेधे तिम केह पाषण्डी  
साधु रा वेब माहि साधु रो धरावे छै । अने निर्जरा धर्म ने निषेध रखा  
छै । अने भगवान् तो ठाम २ सूत्र में संयम. तप. ए विहं धर्म कहा छै ।

ધમ્મો મં મુક્ષિદ્ધં અહિંસા સંજમો તવો ।

દેવા વિ તં નમસંતિ જસ્સ ધમ્મે સયા મણો ॥ ૧ ॥

( દશવૈકાલિક અધ્યયન ૧ ગાથા ૧ )

इहां धर्म मंगलीक उत्कृष्ट कह्यो, ते अहिंसा ने संयम ने अने तपने धर्म कह्यो छै । संयम ते संवर धर्म, अने तप ते निर्जटा धर्म छै । अने त्याग विना जीवरी दया पाले ते अहिंसा धर्म छै । अने जीव हणवारा त्याग ते संयम पिण कह्यो, अने अहिंसा पिण कह्यो । अहिंसा तिहां तो संयम नी भजना छै । अने संयम तिहां अहिंसा नी नियमा छै ।

ए अहिंसा धर्म अने तप धर्म तो पहिला चार गुण ठाणा ( गुणस्थान ) पिण पावे छै । पहिले गुणठाणे अनेक सुलभ बोधी जीवां सुपात्र दान देइ जीव-दया, तपस्या, शीलविक्रम, भली उत्तम करणी, शुभ योग, शुभ लेश्या निरवद्य व्यापार थी परीतसंसार कियो छै । ते करणी शुद्ध आज्ञा मांझिली छै । ते करणी रे लेखे देश थकी मोक्ष मार्ग नो अराधक कह्यो छै ते पाठ लिखिये छै ।

अहं पुण गोयमा ! एव माइक्खामि जाव परूवेमि.  
एवं खलु मए चत्तारि पुरिस जाया पणत्ता । तंजहा-सील  
संपणणे नामं एगे नो सुय संपणणे, सुयसंपणणे नामं एगे नो  
सील संपणणे, एगे सील संपणणेवि सुय संपणणे वि, एगे नो  
सील संपणणे नो सुय संपणणे ॥ १ ॥

तत्थणं जे से पढमे पुरिस जाए सेणं पुरिस सीलवं  
असुयवं उवरए अविरणायधम्मो एसणं गोयमा ! मए पुरिसे  
देसाराहए पणत्ते ॥ २ ॥

तत्थणं जे से दोच्चे पुरिस जाए सेणं पुरિसे असीलवं  
सुतवं अणवरए विणाय धम्मो एसणं गोयमा ! ए पुरિसे  
देसविराहए पणत्ते ॥ ૩ ॥

તત્થણં જે સે તત્ત્વે પુરિસ જાણ સેણં પુરિસે સીલવં  
સુતવં ઉવરણ વિણાય ધમ્મે ઇસણં ગોયમા ! મણ પુરિસે  
સન્બારાહણ પણાત્તે ॥ ૪ ॥

તત્થણં જે સે ચઉત્થે પુરિ જાણ સેણં પુરિસે સી-  
લવં અસુતવં અણુવરણ અવિણાય ધમ્મે ઇસણં ગોયમા ! મણ  
પુરિસે સન્બ વિરાહણ પણાત્તે ॥

( ભગવતી ૮ ઉદ્દેશ્ય ૧૦ )

અં હું પિણ હે ગૌતમ ! ૫૦ હમ કહે છું. જાં યાવત્ હમ પરૂપૂછું. ૫૦ હમ નિશ્ચય મ્હે  
ચં ચાર પુરુષ ના પ્રકાર પ્રરૂપ્યા. તેં તે કહે છે. સીં શીલતે ક્રિયા તે કરી સમ્પન્ન પિણ. છં  
જ્ઞાન સમ્પન્ન નથી. છં એક શ્રુત જ્ઞાને કરી સમ્પન્ન છે, પિણ શીલ કહિતાં ક્રિયા સમ્પન્ન નથી.  
૫૦ એક શીલે કરી સહિત અને જ્ઞાને કરી પિણ સહિત. એક એક નથી શીલે કરી સહિત અને  
નથી જ્ઞાને કરી સહિત ॥ ૧ ॥

તં તિહાં જે તે પ્રથમ પુરુષ નોં પ્રકાર. સેં તે પુરુષ. સીં શીલ કહિતાં ક્રિયા સહિત  
પિણ અં શ્રુત જ્ઞાન સહિત નથી. ડં પોતાનો બુદ્ધિ પાપ થી નિવર્ત્યો છે. અં ન જાણ્યો ધર્મ.  
૫૦ હે ગૌતમ ! મ્હે તે પુરુષ દેશ આરાધક પ્રરૂપ્યો પણ બાલ તપસ્વી. ॥ ૨ ॥

તં તિહાં જે તે બીજો પુરુષ પ્રકાર. સેં તે પુરુષ. અં ક્રિયારહિત છે વિણ. છં શ્રુત-  
વન્ત છે પાપ થી નિવર્ત્યો નથી. ઘિં અને જ્ઞાન ધર્મ ને જાણે છે. સમ્યક્ દષ્ટિ. ૫૦ હે ગૌતમ !  
મ્હે તે પુરુષ દેં દેશવિરાધક કહ્યો. ॥ સમ્યગ્ દષ્ટિ જાણ્યો ॥ ૩ ॥

તં તિહાં જે બીજો પુરુષ પ્રકાર. સેં તે પુરુષ. સીં શીલવંત ( ક્રિયાવંત ) છે. છં  
અને શ્રુતવંત તે જ્ઞાનવન્ત છે પાપ થી નિવર્ત્યો છે. ઘિં ધર્મ જાણે છે. ૫૦ હે ગૌતમ ! મ્હે તે  
પુરુષ સં સર્વારાધક કહ્યો. સર્વ પ્રકાર તે મોક્ષ નો સાધક જાણ્યો પણ ગીતાર્થ સાધુ ॥ ૪ ॥

તં તિહાં જે તે ચૌથા પ્રકાર નો પુરુષ. સેં તે પુરુષ અં ક્રિયા કરી ને રહિત. અં અને  
શ્રુતજ્ઞાન રહિત પાપ થી નિવર્ત્યો નથી. અં ધર્મ માર્ગ જાણ્યો નથી. ૫૦ હે ગૌતમ ! મ્હે તે પુરુષ.  
સં સર્વ વિરાધક કહ્યો. અમતી બાલ તપસ્વી ॥

અથ इहां भगवन्ते चार प्रकार ना पुरुष कहां । तिहां पहिला पुरुष नी  
जाति शील ते किया आचार सहित अने ज्ञान सम्यक्त्व रहित पाप थकी निवर्त्यो  
पिण धर्म जाण्यो नथी, ते पुरुष ने देश आराधक कहां, प्रथम भांगो ए बाल



तपस्वी नी आश्रय । वीजो भांगो शील किया .रहित अने ज्ञान शक्ति सहित ए अत्रती सम्यग्दृष्टि ते देश विराधक ते दूजो भांगो । ज्ञान अने शील किया सहित ते साधु सर्वत्रती सर्वआराधक ए तीजो भांगो । अने ज्ञान किया रहित अत्रती वाल पापी ए सर्वविराधक चौथो भांगो । इहां प्रथम भांगा में ज्ञान सम्यक्त्व रहित शील किया सहित ते वाल तपस्वी नें भगवन्ते देश अराधक कह्यो है । अने केतला एक अजाण मिथ्यात्वी नी शुद्ध करणी ने आज्ञा चाहिरे कहे हैं । ते करणी थी एकान्त संसार वयतो कहे है ते एकान्त झूठ रा बोलणहार हैं । जो मिथ्यात्वी रो शुद्ध भली निरवय करणी आज्ञा चाहिरे हुवे तो वीतराग देव मिथ्या दृष्टि वाल तपस्वी ने देश अराधक क्यूं कह्यो । ए तो प्रत्यक्ष पहिला गुणठाणा वाला नों प्रथम भांगो ते वाल तपस्वी ने देशअराधक कह्यो । ते लेखे तेहनी शुद्ध करणी आज्ञा मांहि है । ते करणी निरवय है । तिवारे कोई कहे ते मिथ्या दृष्टि वाल तपस्वी रे संवर वर्ततो तो किञ्चिन् मात्र नहीं तो व्रत विना देशआराधक किम हुवे ।

इम पूछे तेहनो उत्तर—व्रती ने तो सर्व आराधक कहीजे । अने ए वाल तपस्वी ने व्रत नहीं पिण निर्जरा रे लेखे देशआराधक कह्यो है । ए करणी थी घणो कर्मानो निर्जरा हुवे है । इम घणी २ कर्मा नी निर्जरा करतां घणा जीव सम्यग्दृष्टि पाय मुक्ति गामी थया है । तामलोतापस ६० हजार वर्ष ताईं वेले २ तपस्या कीथी तेहथी घणा कर्म क्षय किया । पूछे सम्यग्दृष्टि पाय मुक्तिगामी एकावतरी थयो । जो ए तपस्या न करतो तो कर्मक्षय न हुन्ता, ते कर्मानो निर्जरा विना सम्यग्दृष्टि किम पावतो । अने एकावतारी किम हुन्तो । बली पूरण तापस १२ वर्ष वेले २ तप करी घणा कर्म खपाया चमरेज्ज थयो सम्यग्दृष्टि पामी एकावतरी थयो । इत्यादिक घणा जीव मिथ्यात्वी थका शुद्ध करणी थकी कर्म खपाया ते करणी शुद्ध है । मोक्षनो मार्ग है । ते लेखे भगवन्त देव अराधक कह्यो है । तिवारे कोई अज्ञानी जीव इम कहे एतो देश आराधक कह्यो है । ते मिथ्यात्वी रो करणी रो देश आराधक कह्यो है, पिण मोक्ष मार्ग रो देश आराधक नहीं । तेहनो उत्तर—जो ए प्रथम भांगावाला वाल तपस्वी ने देश आराधक मुक्ति मार्ग नो न कइया तो चाकी तीन भांगा में अत्रती सम्यग्दृष्टि ने देश विराधक कह्यो, ते पिण तेहनी करणी रो कहिणो । मोक्ष मार्ग रो विराधक न कहिणो । अने तीजे भांगे साधु ने सर्व आराधक कह्यो ते पिण तिण रे लेखे मोक्ष मार्ग रो

आराधक न कहिणो । ए पिण तिण री करणी रो कहिणो । अने चौथे भांगे अनार्य ने सर्वविराधक कह्यो । ए पिण तिण रे लेखे अनार्य री करणी रो सर्वविराधक कहिणो । पिण मोक्ष मार्ग रो सर्वविराधक न कहिणो । अने जो यां तीना ने मोक्ष मार्ग रा आराधक तथा विराधक कहे, तो प्रथम भांगे वाल तपस्वी ने पिण मोक्ष मार्ग रो देशआराधक कहिणो । ए तो प्रत्यक्ष पाधरो भगवन्ते कह्यो । जे साधु ने तो सर्वआराधक मोक्ष मार्ग नो कह्यो, तिण रो देश मोक्ष रो मार्ग तपरूप वाल तपस्वी आराधे ते भणी वाल तपस्वी ने मोक्ष मार्ग रो देश आराधक कह्यो छै । अने जे अज्ञाण कहे--तेहनी करणी रो देश आराधक कह्यो छै । ते विरुद्ध कहै छै । जे तेहणी करणी रो तो सर्वआराधक छै । जे पोता नी करणी रो देश आराधक किम हुवे । जे पोतारी करणी रो देशआराधक कहे ते अण विमास्या ना बोलण हारा छै । मद् पीछा मतवालां नी परे बिना विचारों बोलै छै । ए तो प्रत्यक्ष मोक्ष रो मार्ग तपरूप आराधे ते भणी देश आराधक कह्यो छै । भगवती नी टीका में पिण ज्ञान तथा सम्यक्त्व रहित क्रिया सहित वाल तपस्वी ने मोक्षमार्ग नों देश आराधक कह्यो छै । ते टीका लिखिये छै ।

देसाराहएति—स्तोक मंशं मोक्ष मार्गस्याराधयतीत्यर्थः ।

सम्यग्बोध रहितत्वात् क्रिया परत्वात् ।

पहनो अर्थ—स्तोक कहतां थोड़ो अंश मोक्ष मार्ग रो आराधे ते सम्यग्बोध ते सम्यग्दृष्टि रहित छै । अने क्रिया करिवा तत्पर छै । ते भणी देश आराध्यो । वली टीका में “सुयसंपण्णे” कहितां श्रुत शब्दे ज्ञान दर्शन ने कह्यो छै । ते टीका लिखिये छै ।

श्रुत शब्देन ज्ञान दर्शनयोर्गृहीतत्वात् ।

पहनो अर्थ—श्रुत शब्दे करि ज्ञान दर्शन वेहनो ग्रहण करिये । इहां दर्शन ने कहा छै ते श्रुते करी रहित । माटे मिथ्याद्वष्टि, अने शील क्रिया सहित ते भणी देश आराधक कह्यो, एतो चौड़े मोक्ष मार्ग रो आराधक कटीका में बड़ा टक्का में पिण कह्यो । अने इण करणी ने आझां बाहिर कहे ते बीतराग

रा वचन रा उत्थापण हार छै । सृपावादो छै । एतला न्याय सूत्र वताया  
पिण न समझे तेहनै कुमार्ग रो पक्षपात ज्यादा दीसै छै । दर्शन मोहरो उदय विशेष  
छै । डाहा होय तो विचारि जोय जो ।

## इति १ बोल सम्पूर्ण ।

वलीप्रथम गुण ठाणा रो धणी सुपात्र दान देइ परीत संसार करि मनुष्य  
नो आयुपो बांध्यो सुबाहुकुमार ने पाछिले भवे सुमुख गाथापति इ । ते पाठ  
लिखिण छै ।

तेणं कालेणं. तेणं समणं. धम्म घोसाणं. थेराणं.  
अन्तेवासी. सुदत्तेनामं अणगारे. उराले जाव तेय लेसे.  
मासं मासेणं खममाणे विहरंति । ततेणं से सुदत्ते अणगारे.  
मास खमाण पारणगंसि. पढमाए पोरसीए सज्झायं करेति  
जहा गोयम सामी. तहेव सुधम्मो थेरे. आपुच्छति ।  
जाव अडमाणे सुमुहस्स. गाहावतिस्स. गिहं अणुपविट्ठे.  
ततेणं से सुमुहे गाहावती. सुदत्तं अणगारं एज्जमाणं. पास-  
तिपासित्ता. हट्ठु आसणाओ. अब्भुट्ठेति २. पादपीठाओ  
पच्चोरुहति । पाओयाओमुयइ. एग साडियं उत्तरा संगं करे  
ति २ । सुदत्तं अणगारं स ढु पयाइं पच्चू गच्छइ तिकखुत्तो  
आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ । वंदइ णमंसइ २ ता । जेणे-  
व भत्त घरे तेणे व उवागच्छइ २ ता । सय हत्थेणं विउलेणं  
असण पाण खाइम साइम पडिलाभे साभीत्ति । तुट्ठे ३ तत्तेणं  
तस्स सुमुहस्स तेणं दब्ब सुद्धेणं तिविहेणं. तिकरण सुद्धेणं

२। सुदत्ते अणगारे पड़िलाभए समागो संसारे परित्ति कए मनुस्साउए निवछे ।

( विपाक सुत्र छल विपाक अध्ययन १ )

ते० तेणें काले तेथे समथ. ध० धर्म घोषनामें. थे० ह्यविर नें. अ० समीप नों रहण् हार. छ० सुदत्तनामा अणगार. उ० उदार जा० यादव गोपवी राखी छे. तेजु लेख्या. मा० ते मास मास खमण करतो. पि० विचरै छे । त० तिवारे पड़े. से० ते सुदत्त नामे अणगार. मा० मास जमण ना पारणा ने विषय. प० पहिली पौरसीह. स० सञ्जाय करे. ज० जिम गोतम स्वामी. त० तिम. छ० धर्मघोष बीजो नाम सुधर्म. थे० ह्यविर ने पूछी ने जा यावत् वलि गोचरी करतां छ० सुमुख नामे. गा० गाथापति ने. गि० घर प्रवेश कीधो त० तिवारे ते. छ० सुमुख नामे गाथापति. छ० सुदत्त अणगार. साधुने. ए० झांवतां. पा० देखे. पा० देखी ने. ह० हृष्यो संतोष पान्यो शोघ पणे आसण थो. झ० उठै उठो नै पा० बाजोट थी हेठो उत्तरथो उत्तरी ने. पा० पगनी पानही मूकी ने. ए० एक शायिक उत्तरासंग कीधो करी ने. छ० सुदत्त अणगार. स० सात आठ सग साहसो आवै आवीने. ति० त्रिणवार आ० प्रदक्षिण पासा. थी आरभी ने प्रदक्षिण करै करीने. वं० वाँदै नमस्कार करै करीने. जे० जिहां, म० मातबर छै त० तिहां उ० आव्या आवीने. स० आपना हाथ थकी बहराव्या. अ० अशन पाण खादिम सादिम. प० बहराव्या बहिरावीनै हु० संतोषआख्यो. त० तिवारे सुमुख गाथापति. ते० ते. द० द्रव्य शुद्ध ते मनोश आहार १ दातारना शुद्ध भाव २ लेणहार पिण पात्र शुद्ध. ३ ति० तिहं प्रकार मन बचन काया करी ने. सुदत्त अणगार ने प० प्रतिज्ञाभ्या थके सुमुख स० संसार परीत कीधो. म० अने मनुष्य नो आयुषो बांध्यो. ।

अथ इहां सुवाहु ने पाड़िल भवे ख गाथापति सुदत्त अणगार ने आवतो देखी अत्यन्त हर्ष संतोष पायो । आसन छोड़ उत्तरासन करी सात आठ पाउण्डा सामो आवी त्रिण प्रदक्षिणा देइ वन्दना नमस्कार करी अनादिक बहिरावी ने घणो हृष्यो । तो एतलो चिन्त कियो वन्दना करी ए करणी आज्ञा बाहिरे किम कहिये । ए करणी अशुद्ध किम कहिये । ए तो प्रत्यक्ष भली शुद्ध निर्दोष आज्ञा माहिली करणी छै । वली अशनादिक देवे करी परीत संसार कियो । अनन्तो संसार छेदी मनुष्य नो आउषो बांध्यो, तो ए अनन्तो संसार छेद्यो ते निर्दोष सुपात्र दाने करि, ए करणी अत्यन्त विशुद्ध निर्मली ने अशुद्ध किम कहिये । आज्ञा बाहिरे किम कहिये । ए तो प्रत्यक्ष प्रथम गुण ठाणे थकां ए करणी सँ परीत संसार कियो मनुष्य नो आयुषो बांध्यो । जो सम्यग्दृष्टि हुवे तो देवता रो

આયુષો વાંધતો । સમ્યગ્દૃષ્ટિ હુવે તો મનુષ્ય મરી મનુષ્ય હુવે નહીં । ભગવતી શતક ૩ ઉદ્દેશ્ય ૧ કહ્યો—સમ્યગ્દૃષ્ટિ મનુષ્ય તિર્યચ્છ્વ એક વૈમાનિક ટાલ ઔર આયુષો વાંધે નહીં અને ઇણ સુમુખે મનુષ્ય નો આયુષો વાંધ્યો । તે મળી ૫ પ્રથમ ગુણ ઠાળે હુન્તો તે દાન ને-ભગવન્ત શુદ્ધ વહ્યો છે । દાતાર શુદ્ધ, તે સુમુખ ના ત્રીન કરણ અને મન વચન કાયાના ૩ યોગ શુદ્ધ કહ્યા તો તિણ ને અશુદ્ધ વિ કહીજે ૫ કરણી આજ્ઞા વાહિરે કિમ કહીજે । ૫ શુદ્ધ કરણી આજ્ઞા વાહિરે કહે તે આજ્ઞા વાહિરે જાણવા । કેડે એક અજ્ઞાની કહે સુમુખ ગાથાપતિ સાધુ ને દેવતર્ સમ્યગ્દૃષ્ટિ પામી । તે સમ્યગ્દૃષ્ટિ સૂં પરીત સંસાર કિયો । તે સમ્યગ્દૃષ્ટિ અન્તર્મુહર્ત મેં વમીને મનુષ્ય નો આયુષો વાંધ્યો । ઇમ અયુક્તિ લગાવે તે એકાન્ત મૂઠ રા બોલણ હાર છે । ઇહાં તો સમ્યગ્દૃષ્ટિ નો નામ કાંઈ ચાલ્યો નહિ । ઇહાં તો પાધરો કહ્યો । સુપાત દાને કરી પરીત સંસાર કરી, મનુષ્ય નો આયુષો વાંધ્યો । પિણ ઇમ ન કહ્યો સમ્યગ્દૃષ્ટિ કરી પરીત સંસાર કરિ પછે સમ્યગ્દૃષ્ટિ વમી ને મનુષ્ય નો આયુષો વાંધ્યો । પતો મન સૂં ગાલાં રા ગોલા ચલાવે છે । સૂત્ર મેં તો સમ્યગ્દૃષ્ટિ રો નામ પિણ ચાલ્યો નહિ તો પિણ ભારી કર્મા આપરા મન સૂં ઇજ જોડા મતરી ટેક સૂં સમ્યગ્દૃષ્ટિ પમાવે અને ઘલી વમાવે છે । તે ન્યાયવાદી હલુકકર્મી તો માને નહીં પતો પ્રત્યક્ષ ડઘાડો મૂઠ છે । તે ઉત્તમ તો ન માને । ૫ તો સુમુખે શુદ્ધ દાને કરિ પરીત સંસાર કરી મનુષ્ય નો આયુષો વાંધ્યો તે કરણી શુદ્ધ છે આજ્ઞા માહિ છે । અશુદ્ધ કરણી સૂં તો પરીત સંસાર હુવે નહીં । અશુદ્ધ કરણી સૂં તો સંસાર વધે છે । ઢાહા હુવે તો વિચારિ જોજો ।

## તિ ૨ બોલ સમ્પૂર્ણ ।

૧૧ મેઘકુમાર રો જીવ પાછિલે મવે હાથી, સૂસલા રી દયા પાલી પરીત-સંસાર મિથ્યાત્વી થકે. કિયો । તે પાઠ લિખિયે છે ।

તણં તુમં મેહા ! તાણ પાણાણુકંપયાણે ૪ સંસાર પરિ-ત્તીકણ મણુસાડણ નિવચ્છે ।

त० तिवारे तु० तुमे. मे० हे मेव ! ता० ते सुसला पा० प्राण भूत जीव सत्त्वनी अनु करी. सं० संसार थोडो वाको करणो रखो. म० मनुष्य नो आयुषो बांध्यो ।

अथ अठे ते सुसला प्राण. भूत. जीव. सत्त्व. री अनुकम्पा करी ने हाथी परीत संसार करी मनुष्य नो आयुषो बांध्यो । ए. ए. पिण मिथ्यादृष्टि थके परीत संसार कियो । ते शुद्ध करणी आशा में छै । सम्प्रगद्दृष्टि हुवे तो मनुष्य नो आयुषो बांधे नहीं । सम्प्रगद्दृष्टि तिर्यञ्च रे निश्चय एक वैमानिक रो आयुषो बांधे । इहां केइ एक पाषण्डी अयुक्ति लगावी कहै—तिण वेलं हाथी ने उपशम कत्व आव्या तिण सम्प्रगद्दृष्टि थी परीत संसार कियो । अन्तर्मुहूर्त में ते सम्प्रगद्दृष्टि वमी ने मनुष्य नो आयुषो बांध्यो, एहवो कूठ बोले । इहां तो सम्प्रगद्दृष्टि नो नाम चाल्यो नहीं । सूत में पाधरो । छै । जे सुसलारी दया थी परीत संसार करी मनुष्य नो आयुषो बांध्यो । पिण इम न कह्यो—जे सम्प्रगद्दृष्टि थी परीत संसार करी पछे सम्प्रगद्दृष्टि वमी ने मनुष्य नो आयुषो बांध्यो, एहवो बोल तो चाल्यो नहीं । बली मेघकुमार ने भगवन्ते कह्यो । हे मेघ ! ते तिर्यञ्च रा भव में तो सम्प्रगद्दृष्टि रत्न रो लाभ न पायो । जद पिण दया थी परीत संसार कियो तो द्विवडा नो स्मू कहियो एहवो कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

तंजड़ ताव तुमे मेहा ! तिरिक्ख जोणिय भाव सुवा-  
गएणं अपड़िलद्ध सम्मत्तरयण लंभेणं से पाए पाणणाणं कं-  
याए जाव अन्तरा चेव संधारिये णो चेवणं लिखित्ते कि मंग  
पुणं तुमे मेहा ! इयाणिं विपुल कुल समुद्भवेणं ।

( ज्ञाता अभ्ययन १ )

त० ते माटे ता० प्रथम. ज० जो. त० तुमे. मे० हे मेघ ! ति० तिर्यञ्चनी गति नो माव पाम्यौ तिहां अ० न लाध्यो न पाम्यो. सं० सम्प्रगद्दृष्टि रत्न नो लाभ. से. ते. पा. प्राणी नो अनुकम्पा करी जा० ज्यां लगे. अ० पगरे विचाले सुसला बैठो छै. णो० नहीं निश्चय ऊपर पग भूंक्यो सुसला ऊपर. कि० तो किस् कहियो. हे मेघ ! इ० द्विवडा. वि० विस्तीर्ण कु० कुलरे विषे सं० ऊपनों हे मेघ !

इहां श्री भगवन्तै इम कह्यो । हे मेघ ! ते तिर्यञ्च रे भवै तो “अपङ्गिलद” कहितां न लाध्यो “रयण” कहितां सम्यक्त्व रत्न नो “लंभेण” कहतां लाभ । यहां तो चौड़े सम्यक्त्व वर्ज्यो छै । ते माटे ते हाथी मिथ्यात्वी थके दया थो परीत संसार कियो । ते करणी शुद्ध छै । निरवद्य निर्दोष आज्ञा मांहिली छै । केइ एक अजाण “अपङ्गिलद समत्तरयण लंभेण” ए नो ऊंधो करे छै । ते पाठ ना मरोडण हार छै । वली त्यांमैं इज # दलपत रायजी पूछ्या तेहना उत्तर दौलतरामजी दीधा छै । ते प्रश्नोत्तर मध्ये पिण हाथी ने सुमुख गाथापति नें प्रथम गुण ठाणे कहा छै । वली ते प्रश्नोत्तर मध्ये दलपतराय जी पूछ्यो । “अपङ्गिलद समत्तरयण लंभेण” ए नो अर्थ स्यूं, तिवारे तेणे दौलतरामजी अर्थ इम कियो । “अपङ्गिलद” कहतां न लाध्यो “त्तरयण लंभेण” कहतां सम्यक्त्व रत्न रो लाभ, पहुवो अर्थ कियो छै । ते अर्थ शुद्ध छै । केई विपरीत अर्थ करे ते एकान्त भृशवादी छै । तिवारे कोई इम कहै तुमे ए दौलतराम जी रो शरणो किम लेवो छो । तुम्हें तों तिण दौलतरामजी ने मानो नहीं । ते माटे तेहनो नाम किम लेवो । तेहनो उत्तर—भगवती शतक १८ उ० १० कह्यो । जे सोमल ब्राह्मण श्री महावीर ने पूछ्यो, हे भगवन् ! सरिसव ( सर्प ) भक्ष्य अमक्ष्य तिवारे भगवान् बोल्या । “सेगूण मे सोमिला ब्रम्हण ! एंखु दुविहा सरिसवा प० त० मित्त सरिसवाय. धणण सरिसवाय” एहनो अर्थ—“सेगूण” कहितांते निश्चय करि “मे” कहतां तुम्हारा “ब्रम्हण” कहतां ब्राह्मण संबंधिया शास्त्र ने विषे सरिसवना वै भेद प्रक्य्या । इहां भगवान् कह्यो, हे सोमिल ! तुम्हारा ब्राह्मण संबन्धिया शास्त्र ने विषे सरिसवना दो भेद कहा । मित्त सरिसव—सरिसव पछे तेहना भेद कहा, इम मासा कुलथारा पिण भेद तेहना नो नाम लैइ वताया तो तेणे श्री महावीरे ते ब्राह्मण नो मत मान्यो नथी । पिण तेहना शास्त्र थी वताया, ते अनेरा नें समझावा मणी । तिम इहां दौलतरामजी रो लैइ पाठरो अर्थ वतायो । ते पिण तेहनी श्रद्धा वालांनें समझावा मणी । अनें जे

... ये दलपतरायजी. और दौलतरामजी. कौटावन्दीके आसपास विचरने वाले बाइस सम्प्रदायके साधु थे । इनकी वनाई हुई १ प्रश्नोत्तरी है । उसका ही यह १३८ वां प्रश्न है । पूर्ण क्या ये विदित नहीं है कि ये प्रश्नोत्तरी छपी हुई है वा नहीं ।

“संशोधक”

न्यायवादी होसी ते तो सूत्र नो न उथापे नहीं । अने अन्यायवादी सूत्र नो पिण उथापतो न शके अने तेहना बड़ेरां ने पिण उथापने हाथी ने सम्यक्त्व थापे छै । अनेक विरुद्ध अर्थ करतां शके नहीं । तेहने परलोक में पिण सम्प्रदृष्टि पामणी दुर्लभ छै । डाहा होवे तो बिचारि जोड़जो ।

## इति ३ बोल सम्पूर्णा ।

बली शरुडाल पुत्र भगवान् ने चांदा । ते पाउ करे छै ।

तएणं से सदांलपुत्ते आजीविय उवासय इमीसे कहाए लच्छट्टे समाणे एवं खलु समणे भगवं महावीरे जाव विहरंति तं गच्छामिणं समणं भगवं महावीरं वंदामी नमंसामी जाव पज्जुवासामि एव संपेहति २ ता एहाए जाव पायच्छित्त शुद्ध-प्पवेसाइ जाव अप्प महध्धा भराणालंकीय सरीरे मणस्स चगुरा परिगते सातो गिहातो पडिनिगच्छति २ ता पोलास-पुर नगरं मज्झं मज्झेणं निगच्छति २ ता जेणेव सहस्सं-चवणे अजाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवा-गच्छइ २ ता । तिकखुतो ।याहीणं पयाहीणं करेइ २ वंदइ २ णमंसइ २ जाव पज्जुवासइ ।

( उपासक दशा अध्याय ७ )

त० त्रिवारे, से० ते स० श पुत्र, आ० आजीविक, ए० एह ( या पधारनेरी ) कथा ( वार्ता ) स० सांमली में विचार करे छै, ए० ए ख० चिरचय, स० अमण, भगवान् महावीर पधारया छै, तं० ते माटे, ग० जावू, स० अमण भवतान् महावीर ने वांछ, न नमस्कार करूं, यावत्, ए० पयुपासना ( सेवा ) करूं, ए० इम, स० विचार करे, विचार करी ने, एहा० न्हांयो, यावत् शुद्ध हुनो, सुन्दर स्थान में विषे, प्रवेश करवा योग्य, यावत्, अल्प भारवन्त अने बहुमूल्य वन्त, बज्जालपुरे करी सुशोभित छै शरीर जेहनों, एहवो थके म०



मनुष्ये ना परिवार सहितः सा० आपने. गि० घरखं. निकले. नि० निकली नें. पो० पोलास-  
पुर नगरना. म० मध्यो मध्य थई. जावें. जावो नें. जि० जिहां स० सहस्राम्य उद्यान नें विपे.  
जे० जिहां. स० श्रमण भगवन्त ओ महावीर. ते० तिहां. उ० आन्या धात्रीने. ति० द्विषवार  
हावा पासा थकी लेइने. प० जीमण पासे प्रदक्षिणा. क० करै करी. ने०. व० वांदे. थ० नमस्कार  
करै वांदी ने नमस्कार करीने जा० यावत् सेवा भक्ति करतो हुवे ।

अथ अठे कह्यो, शकडाल पुत्र गोशाला रो श्रावक मिथ्यात्वी हुन्तो ।  
तिवारे भगवान ने द्विण प्रदक्षिणा देइ वंदणा नमस्कार कीधी । ए वंदणा री  
करणी शुद्ध के अशुद्ध । ये शुभ योग रूप करणी छै के अशुभ योग रूप करणी छै ।  
ए करणी आज्ञा मांही छै के बाहिरे छै । ए तो साम्प्रत निरवद्य छै, आज्ञा मांहि  
छै, शुद्ध छै, अशुद्ध कहै छै ते महा मूर्ख जाणवा । डाहा हुवे तो विचारि  
जोइजो ।

## इति ४ वोल सम्पूर्णा ।

वली मिथ्यात्वी ने भली करणी री लेखे सुब्रती कह्यो छै । ते पाठ  
लिखिये छै ।

वेमायाहिं सिक्काहिं जैनरा गिहि सुदवथा ।

उवेति माणसंजोणिं कश्मसच्चा हु पाणिणो ॥

( उत्तराध्ययन. अध्याय ७ गाथा २८ )

वे० जे मनुष्य योनि माहि अनेक प्रकारे. सि० भद्रपणादिक शिष्याह. जे० जे मनुष्य  
गि० ग्रहस्थ छता. स० सुब्रती. उ० पामै उपजे. मा० मनुष्यनी योनि. क० कर्म ते करणी.  
स० सत्य वचन. वोलै दयावन्त एहवा. पा० प्राणी हुइ ते मनुष्य पणु पामें ।

अथ इहां इम कह्यो । जे पुरुष गृहस्थ पणे प्रकृति भद्र परिणाम क्षमादि  
गुण सहित एहवा गुणा ने सुब्रती कहा । परं १२ व्रत धारी नथी । ते जाव  
मनुष्य मरि मनुष्य में उपजे । पतो मिथ्यात्वी अनेक भला गुणा सहित ने सुब्रती  
कह्यो । ते करणी भली आज्ञा मांही छै । अने जे क्षमादि गुण आज्ञा में नहीं हुवे  
तो सुब्रती क्यूं कह्यो । ते क्षमादिक गुणारी करणी अशुद्ध होवें तो कुब्रती कहता ।

ए तो सांप्रत भली करणी आश्रय मिध्यात्वी ने सुब्रती कह्यो छै । अने जो सम्यग्दृष्टि हुवे तो मरी नै मनुष्य हुवे नहीं । अने इहां कह्यो ते मनुष्य मरी मनुष्य में उपजे ते न्याय प्रथम गुण ठाणे छै । तेहने सुब्रती कह्यो । ते निर्जरा री शुद्ध करणी आश्रय कह्यो छै । तेहने अगुद्ध किम कहोजे । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ५ बोल सम्पूर्णा ।

कैतला एक एहवू कहै—जे सम्यग्दृष्टि मनुष्य तिर्यञ्च एक वैमानिक टाल और आयुषो न बांधे । ते पाठ किहां कह्यो छै । ते सूत्र पाठ लिखिये छै ।

मय पञ्चव श्लांणीणं भन्ते पुच्छा. गोयमा ! शो नेर-  
इयं उयं पकरेति शो तिरिक्ख जोणिया शोमणरस देवा  
उयं पकरेन्ति जइ देवा उयं पकरेन्ति किं भवन वासि पुच्छा  
गोयमा ! शो भवनवासि देवा उयं पकरेन्ति शो वाणमन्तर  
शो जोतिसिय. वेमाणिय देवा उयं पकरेन्ति ।

( भग० श० ३० उ० १ )

म० मन पर्यवज्ञानी नी. भ० हे भगवन्त ! पु० पृच्छा. हे गौतम ! शो० नारकी.जा  
आयुषा प्रते करे नहीं. शो० नहीं तिर्यचना आयु प्रते करे शो० नहीं मनुष्य नो आयु प्रते करे.  
दे० देवता आयु प्रते करे, तो किं. कि सू० भवनवासी देव आयुः प्रते करे ए प्रश्न. हे गौतम !  
शो० नहीं भवनवासी आयु प्रते करे. शो० नहीं व्यन्तर देव आयुः प्रते करे. शो० नहीं ज्योतिषी  
देव आयु प्रते करे. वे० वैमानिक देव आयु प्रते करे ।

इहां मन पर्यवज्ञानी एक वैमानिक नो आयुषो बांधे. ए तो मन पर्याय  
ज्ञानी नो कह्यो । हिवे सम्यग्दृष्टि तिर्यञ्च आयुषो बांधे. ते पाठ लिखिये छै ।

किरिया वादीणं भन्ते ! पंचिन्दिय तिरिक्ख जोणिया  
किं णोइया उयं पकरेन्ति पुच्छा गोयमा ! जहा णपज्ज-  
वणाणी ।

( भग० श० ३० उ० १ )

कि० क्रियावादी. भ० हे भगवन्त प० पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिया किं स्यूं नारकी  
ना आयुषो प्रते करे. हे गौतम ! ज० जिम. मनपर्यव ज्ञानी नो परे जायवा ।

इहां क्रियावादी ते सम्यग्दृष्टि ने कह्यो छै । ते माटे क्रियावादी ते  
सम्यग्दृष्टि रे आयुषा रो बंध मन पर्याय ज्ञानी ने कह्यो । ते इण रे पिण बंधे  
इम कह्यो ते भणी सम्यग्दृष्टि तिर्यञ्च पिण-वैमानिक रो आयुषो बांधे और न बांधे ।  
हिंवे सम्यग्दृष्टि मनुष्य कितो आयुषो बांधे ते पाठ लिखिये छै ।

जहा पंचिन्दिय तिरिक्ख जोणियाणं. वत्तव्वया  
भणिया. एवं मणस्साणवी वत्तव्वया भाणियव्वा. णवरं  
अणपज्जवणाणी. णो सण्णावउत्ताय. जहा सम्मदिट्ठी  
तिरिक्ख जोणिया तहेव भाणियव्वा ।

( भगवत्ती शतक ३० उद्दे० १ )

ज० जिम. प० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यच योनिया नो. व० वक्तव्यता. भ० भणी छै.  
प. इम म० मनुष्य नी पिण भणवो. ण० एतल्लो विशेष. म० मन पर्यव ज्ञानी. णो नहीं  
संज्ञोपयुक्त ज० जिम सम्यग्दृष्टि. तिर्यच योनियानीपरे. भ० कहिवा ।

अथ क्रियावादी सम्यग्दृष्टि मनुष्यः तिर्यञ्च रे एक वैमानिक रो बंध कह्यो  
और आयुषो बांधे नहीं इम कह्यो । ते माटे सुमुख गाथापति तथा हाथी तथा  
सुव्रती मनुष्य इहां कह्या ते सर्व नें मनुष्य ना आयुषा नो बंध कह्यो । ते भणी ए  
सर्व सम्यग्दृष्टि नहीं । ते माटे मनुष्य नो आयुषो बांधे छै । सम्यग्दृष्टि हुवे तो  
वैमानिक रो बंध कहता ।

केई अज्ञानी इम कहे । मिथ्यात्वी ने एकान्त कहाये । जो तेहनी करणी माही होवे तो तेहने एकान्त बाल कथूं कहाये । तत्रोत्तरं—जो एकान्त नी करणी आक्षा चाहिरे हुवे तो अत्रती द्रष्टि ने पिण एकान्त बाल कहीजे भगवती श० ८ उ० ८ एकान्त बाल एकान्त पंडित अने पंडित ए तीन भेद समचे छै । तिहां संसार रा 'जीव तेह तीन भेदां में बिचार लेवा । ए पंडित ते साधु गुण ठाणा थी चौदमा ताई 'व्रत माटे एकान्त पंडित । न्त बाल पहिला गुण ठाणा थी चौथा गुण ठाणा सुधी सर्वथा न्त बाल । बाल पण्डित ते अ पांचमे गुण ठाणे कांयतो व्रत त ते भणी बाल पण्डित । इहां बाल नाम मिथ्यात्व नो नहीं, बाल मिथ्यात्व नो हुवे तो श्रावकने पण्डित ां माटे श्रावकरे पिण मिथ्यात्व हुवे । अने श्रावक रे मिथ्यात्व रे किश भगवन्ते सर्वथा प्रकारे िं छै । ते भणी बाल नाम मिथ्यात्व नो नहीं । ए बाल नाम अत्रत नो छै । अने पण्डित नाम व्रत नो छै । ते न्त बाल तो चौथा गुण ठाणा सुधी छै । तिहां किञ्चिन्मात्र व्रत नहीं छै । ते भणी सम्यग्द्रष्टि चौथा गुण ठाणा रा धणी ने पिण ए बाल कहीजे । जो एकान्त बालनी करणी आक्षा चाहिरे कहे तिणरे लेखे अत्रती शीलादिक पाले सुपात्र दान तप साध्यां ने वन्दनादिक भली करणी करे, ते सर्व करणी अ चाहिरे कहिणी । एकान्त बाल कहाये ते तो किञ्चिन्मात्र व्रत नहीं ते आश्रय , पिण करणी आश्रय एकान्त बाल न छै । करणी आश्रय बाल कहें ते । मूर्ख जाणवा । डाहा हुवे तो बिचारि जोइजो ।

## इति ६ बोल सम्पूर्णा ।

केतला इम कहे—जे अन्य मती मास २ क्षमण तप करे, ते सम्यग्द्रष्टि रा धर्म रे सोलमी । पिण न आवे । श्री भगवन्ते इम कहाये छे । ते भणी ते मिथ्यात्वी नी करणी चाहिरे छै । ते गाथा न्याय सहित कहे ।

मासे मासे तुजो वालो कुसग्गेणं तु भुंजए ।  
न सो सुयक्खाय धम्मस्स कलं अग्घइ सोलसिं ॥

( उत्तराध्ययन. अध्ययन ६ गाथा ४४ )

मा० मासे मासे निश्चय निरन्तर. जो कोई बाल अविषेकी. कु० दास ने अग्गे अग्गे तैलोज अन्न नों पारणो. भु० भोगवै करे तोही पिण. न० नहीं. सो० ते अज्ञानी नो तप. सु० भल्लू तीर्थकरादिके—अ० आरज्यातो कह्यो सर्व व्रत रूप चारित्र. अ० जे धर्म ने पासे क० कलायें अर्घे नहीं सोलमी ए ।

अथ इहां तो मिथ्यात्वी नो मास २ क्षमण तप सम्यग्दृष्टि ना चारित्र धर्म ने सोलमी कला न आवे पहुवूं कह्यो छै । ते चारित्र धर्म तो संवर छै तेहने सोलमी कला इ न आवे कह्यो । ते सोलमी कला नो इज नाम लेइ बतायो । पिण हजारमें इ भाग न आवे । तेहने संवर धर्म छै इज नथी । पिण निर्जरा धर्म आश्रय कह्यो नथी । तिवारे कोई कहै ए मिथ्यात्वी नो मास क्षमण सम्यग्दृष्टि रा निर्जरा धर्म ने सोलमे भाग नथी । इम निर्जरा धर्म आश्रय कह्यो छै । तो तिण रे लेखे सम्यग्दृष्टि रा निर्जरा धर्म रे सोलमे भाग न आवे । तो सत्तरमे भाग तो आवे । जो सम्यग्दृष्टि रा धर्म रे सत्तरमे भाग तेहना मास क्षमण हुवे तो तिणरे लेखे पिण आज्ञा में ठहर गयो । पिण एतो संवर चारित्र धर्म आश्रय कह्यो छै । ते चारित्र धर्म रे कोडमें ही भाग न आवे । पिण सोलमा रो इज नाम लेइ बतायो छै । वली उत्तराध्ययन री अवचूरी में पिण चारित्र धर्म रे सोलमे भाग न आवे इम कह्यो । पिण निर्जरा धर्म आश्रय न कह्यो । ते अवचूरी लिखिये छै ।

“न इति निषेधे स एवाविध कष्टानुयायी । सुष्ठुः शोभनः सर्व सावद्य विगति रूपत्वा दाख्यातो जिनैः स्वाख्यातो धर्मो यस्य स तथा तस्य चारित्रिण इत्यर्थः कलां भागम् अर्धति अर्हति षोडशी ।”

इहां अवचूरी में पिण इम कह्यो । मिथ्यात्वी नो मास क्षमण तप चारित्र धर्म सर्व सावद्य ना त्याग रूप धर्म ने सोलमी कला पिण न आवे । पिण निर्जरा आश्रय न कह्यो । जे मिथ्यात्वी मास २ क्षमण करे । पिण तेहने चारित्र धर्म

न कहिये । निर्जरा धर्म निर्मल है । ते करणी तपस्या शुद्ध छै, आज्ञा माहि छै ।  
ए निर्जरा धर्म ने आज्ञा बाहिरे कहे ते आज्ञा बाहिरे जाणवा । डाहा हुवे सो  
विचारि जोइजो ।

## इति ७ बोल सम्पूर्णा ।

बली केइ पहिला गुण ठाणा धणी री करणी आज्ञा बाहिरे थापवां  
“सूयगडाङ्ग” रो नाम लेई कहै छै । जे गुण ठाणे मास २ क्षमण तप करे  
तिन सँ अनन्ता जन्म मरण बधावे, ते भणी तेहनो तप आज्ञा बाहिरे छै । इम  
कहे ते गाथा रो न्याय कहै छै ।

जइ विय णिगणे किसेचरे, जइ विय भुंजिय मासमंतसो ॥  
जे इह मायाइमिज्जइ, आगन्ता गबभायणंतसो ॥

(सूयगडाङ्ग. भुतल्लकं १ अ० २ वं १ गाथा ६.)

ज० यद्यपि पर तीर्थ तापसादिक तथा जैन लिंगी पास्त्यादिक. शि० लग्न सर्व दास्य परि-  
ग्रह रहित कि० दुर्बल ह्यतो. च० बिबे. ज० यद्यपि तप धर्माँ करे. सु. जीमे. मा.  
क्षमणने. मं० अन्ते पारणो करे छै जीवे त्याँ लगे. जे कोइ. इ० संसार ने विपे. मा० माया  
सहित. मि० संयोग करे दुगल ध्यानी. ने माया नो फल कहै छै आ० ते आगमीये काले  
गर्भादिक ना दुःख पामिल्ये. शा. अनन्त संसार परि व्रमण करे ।

अथ इहां केई कहै—ते बाल तपस्वी मास २ क्षमण तप करै तो रि-  
सनन्त जन्म मरण कहा। अने ए करणी आज्ञा में हुवे तो अनन्त जन्म मरण क्यू  
कहा। तेहनो उत्तर—इहां सूत्र में तो इम कहा। जे मास ने छेड़े भोगवे, तो  
पिण माया करे, ते माया थी अनन्त संसार भमे, ए तो माया ना फल कहा  
छै, पिण तपने खोटो कहा नथी। इहां तो अपूअो तपने विशिष्ट कहा छै। ते  
किम—जे मास ण करे तो पिण माया थी संसार भमे। ए मास क्षमण री  
करणी शुद्ध छै तिनसँ इम कहा छै अने तेहनो तप शुद्ध न होवे तो इम कहा ने

कहता "ए मास क्षमण इसी करणी करे तो पिण माया थी रहे" इहां माया में छोटी देखाइवा तेहनी शुद्ध करणी रो नाम कह्यो, अने माया थी गर्भा-  
दिकना दुःख कहा छै । अने तेहना तप थी तो दुःख हुवे नहीं । तेहना तप थी पुण्य तो ते पिण कहै छै । अने पुण्य थको तो दुःख पामे नहीं । इहां  
दुःख ते तो ना फल छै, परं तपस्या ना फल नहीं, तपस्या तो निरवध छै । तिवारे कोई कहै—ए आज्ञा माहिली करणी छै, तो मोक्ष तेहने उत्तर—पहने श्रद्धा ऊंघी ते माटे मोक्ष नहीं । परं मोक्ष नो मार्ग वज्यो नहीं । जे अग्रती सम्यग्दृष्टि ज्ञान सहित छै, तेहने पिण चारित विण मोक्ष नथो । परं मोक्ष नो मार्ग कहिये । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## ति ८ बोल सम्पूर्णा ।

केतला बक इम कहै । जे मिथ्यात्वी ना पचखाण (प्रत्या )  
दुपचखाण (दुष्प्रत्याख्यान ) कहा छै । तेहनी करणी जो आज्ञा में हुवे तो ते  
दुपचखाण क्यूं कहा । तेहने उत्तर—दुपचखाण कहा ते तो ठीक छै । जे जीव.  
अज्ञीव. तस. स्यावर. नें जाणे नहीं । अने सर्व जीव हणवारा त्याग किया, ते  
जीव जाण्यां विना किण नें न हणे, केइना त्याग पाले । जे जीव नें जाणे नहीं,  
जीव हणवारा त्याग करे ते किम पाले । ते न्याय दुपचखाण छै । ते पठ  
लिखिये छै ।

सेणूणं भंते ! सब्ब पाणेहिं. सब्ब भूएहिं सब्ब जीवेहिं.  
सब्बं सत्तेहिं. पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवइ  
तहा दुपच्चक्खायं गोयमा ! सब्ब पाणेहिं जाव सब्ब सत्तेहिं  
प च्छाण मि ति वदमाणस्स सिय सुप च्छायां भवइ. सि  
दुपच्चक्खायं भवइ । सेकेणद्वेणं भंते ! एवं वुच्चइ सब्ब पाणेहिं  
जाव सब्बसत्तेहिं । व सिय दुपच्चक्खायं भवइ । गोयमा !  
जस्सणं सब्ब पाणेहिं जाव सब्ब सत्तेहिं पच्चव । यगि ति वद-

माण नो एवं मि णागथं भवइ-इमे गीवा. इमे  
अजीवा. इमे तसा. इमे थावरा. तस्सणं व्वपाणेहिं  
ज सव्वसत्तेहिं पच्चक्खाय मिति वदमाणस्स नो पच्च-  
।यं दुपच्चक्खायं भवइ ।

( गी शं ७ उ० २ )

से० ते. भगवन् ! स० सर्व प्राण. स० सर्व भूत. स० सर्व जीव. सर्व नें विषे  
प० प्रत्याख्यात छै. मि० इम कहिय वाला नें. छ० छप्रत्याख्यान हुइ. त० दु० दुप्रत्या-  
ख्यान हुइ. गो० हे गौतम ! स० सर्व प्राण. भूत. जीव. सत्त्व. नें विषे. प०  
छै मि० इम कहिय वाला नें. सि० क्वचित्. छ० छप्रत हुइ. सि० क्वचित्. दु०  
दुप्रतिख्यान हुइ. से० ते के० कौण कारण. भ० हे भगवन् ! ए० इम कहिय. स० सर्व  
प्राण. भूत सत्त्व. नें विषे. ज्ञ० यावत् क्वचित् छप्रत्याख्यान. सि० क्वचित् दुप्र-  
त्याख्यान भ० हुइ. हे गौतम ! ज० जेहने. स० सर्व प्राण साथे. जा० यावत्. स०  
साथे प० पच्छाण मि० एहवू. व० कहते छते. न० नहीं. ए० एहवू. अ० हुइ  
जातें करीने. इ० ए जीव इ० ए अजीव. इ० ए तस. इ० ए . त० तेहने. स० सब  
प्राण साथे. जा० यावत् सर्व सत्त्व साथे. मि० इम. व० कहतावे. न० नहीं. छ  
पच्छाण हुइ. दु० दुपच्छाण हुइ ।

तो इम कह्यो—जे जीव. अजीव. स्थावर. तो जानै नहीं, अने  
कहै—म्हारे सर्थ जीव हणवारा त्याग छै । ते जीव जाण्यां वि किणने न हने,  
कैहना त्याग पाळे । ते न्दाय—मिथ्यात्वी ना दुपच्छाण छै । बली  
मिथ्यात्वी तस जाण ने हणवारा त्याग करे. तेहने संवर न हुवे, ते माटे दु-  
कहीजे । ण संवर मो छै । तेहने संवर नहीं । ते भणी  
तेहना दुप ण छै । पिण निर्जरा तो शुद्ध छै । ते निर्जरा रे लेखे  
निर्मल छै । मिथ्यात्वी शीलादिक आदरे, ते पिण निर्जरा रे लेखे  
निर्मल छै । तेहना शीलादिक माहीं । हाहा हुवे तो  
धिवारि ओईजो ।

इति ६ बोल सम्पूर्णा ।



वली कोइ ऊँधी तकं सूं पूछे । जे प्रथम गुणठाणे शील व्रत नोपजे के नहीं । तेहनें इम कहिणो—अव्रती सम्यग्दृष्टि त्याग विना शील पाले तेहने शीलव्रत निपजे कि नहीं । जव कहै—तेहनें तो व्रत निपजे नहीं, निर्जरा धर्म हुवे छै । तो जोवौनी जे अव्रती सम्यग्दृष्टिरे त्याग विना शीलादिक पाल्यां व्रत निपजे नहीं तो मिथ्यात्वी रे व्रत किम निपजे । जिम अव्रती सम्यग्दृष्टि रे शीलादिक थी घगी निर्जरा हुवे छै । तिम प्रथम गुण ठाणे पिण सुपात्र दान देवे, शील पाले, दयादिक भली करणी सूं निर्जरा हुवे छै । तिवारे कोइ कहै—जे चौथा गुणठाणा रोधणी शीलादिक पाले, प्राणाति पातादिक आश्रव डाले, पहवो किहां कह्यो छै । तेहनो उत्तर—श्री महावीर दोक्षा लियां पहिलां वे वर्ष भाभेरा ( अधिक ) घरमें रह्या । पिण विरक्त पणे रह्या, काचो पाणी न भोगव्यो । पहवूं कह्यो छै ते पाठ लिखिये छै ।

अवि ।हिये दुवेवासे सीतोदं अभोच्चा णिक्खन्ते  
एगन्तगएपिहि यच्चे से हिन्नाय दंसणे न्ते ।

( आचारांग श्रु० १ अ० ६ गा० ११ )

अ० भाभेरा. दु० वे वर्ष गृहवास नें विपे. सी० काचो पाणी न पीयो. णि० गृहवास छाँधी ने. ए० तथा गृहवास थकां एकत्व पणो आवतां. पि० क्रोधादिक थकी उपशान्त तथा. से० ते तोयंकर अ० जाग्यो छै. तं० ते ज्ञान स ते करी पोताना आत्माने भावे. इन्द्रिय नो इन्द्रिय करी प्रशान्त ।

अथ. कह्यो भगवान् श्री महावीर स्वामी दीक्षा लियां पहिलां (अधिक) दो वर्ष ताँइ विरक्त पणे रह्या । सचित्त पाणी भोगव्यो नहीं तो त्यारे व्रत तो हुवे नहीं । पिण निर्जरा शुद्ध निर्मल छै । तो जोवौनी चौथे गुणठाणे पिण व्रत नहीं तो प्र गुणठाणे व्रत किम हुवे । डाहा हुवे तो विचारि जोईजो ।

इति १० बोल सम्पूर्णा ।

केतला एक कहै—मिथ्यादृष्टि ने आत्मा बाहिरै कहीजे । तिवारे तैहनी ।  
 ॥ पिणः अ बाहिरै छै । मिथ्यात्वी अने मिथ्यात्वी रो करणी एक कहो, ते  
 ऊपर कुहेतु लगावो कहै—“अनुयोग द्वार” में । छै, गुण अने गुणीभूत  
 छै । तिण न्याय मिथ्यात्वी अने मिथ्यात्वी रो करणी एक छै, बाहिरै  
 छै । इम कहै । उत्तर—इम जो मिथ्यात्वी अने मिथ्यात्वी नी शुद्ध करणी  
 हुवे बाहिरै हुवे तो सम्यग्दृष्टि अने सम्यग्दृष्टि नी अशुद्ध करणी ए  
 पिण तिणरे लेखै एक कहिणी । इहां पिण गुण अने गुणीभूत नो न्याय  
 मेलणो । अने जो सम्यग्दृष्टि ना संग्राम कुशीलादिक ए अशुद्ध करणी न्यायी  
 गिणस्यो, आत्मा बाहिरै कहिस्यो, तो प्रथम गुणठाणे मिथ्यात्वी रा सुपातदान  
 शीलादिक ए पिण भला गुण आत्मा माहीं कहिणा पड़सी ।

वली केतला एक “सूयगडाङ्ग” रो नाम लेइ गुणठाणा रा धणी रो  
 करणी सर्व अशुद्ध कहै । तेहना सुपात दान शील तप आदिक ने विषे  
 अशुद्ध व रो कारण कहै । ते गाथा लिखिये छै ।

जेयाऽबुद्धा महाभागा वीरा असमत्त दंसिणो ।

शु तेस्सिं परवक्तं सफलं होइ सब्बसो ॥

(सूयगडाङ्ग शु १ अध्ययन ८ गाथा २३)

जे० जे कोई अशु० अशुद्ध तत्व ना अजाण छै स० पर लोकमाहीं ते पूज्य कहिवाई  
 बी० बीरसभ कहिवाई पहुँचा पिण अ० असम्यक्त्व, ज्ञान दर्शण विकल देवगुरु धर्म न जानै  
 अ० अशुद्ध तेहनों जे दान शील तप आदि अध्ययनदि विषे पराक्रम स० संसार ना  
 फल सहित होइ हुइ सं सर्वथा प्रकारे कर्म बन्वैन रो कारण पर निर्जरा रो कारण नथी ।

अथ तो इम कह्यो—जे तत्व ना ण मिथ्यात्वी नो जेतलो शुद्ध  
 छै, ते सर्व संसार नो कारण छै । अशुद्ध करणी रो कथन इहां कह्यो ।  
 शुद्ध करणी रो कथन तो इहां चाल्यो नथी । वली ते मिथ्यात्वी ना दान  
 शीलादिक अशुद्ध । तेहनो न्याय इम छै—अशुद्ध दान ते कु ने देवो  
 कुशील ते खोटो । तप ते अग्नि नो तापवो भावना ते बौटी भावना

भणवो ते कुशास्त्रनो. ए सर्व अशुद्ध है, ते कर्मबन्धन रा कारण है । पिण सुपात दान देवो. शील पालवो. मास खमणादिक तप करवो. भली भावनानुभाविवो. सिद्धान्त नो सुणवो. ए अशुद्ध नहीं है, ए तो आज्ञा माही है । अने जो तेहनी सर्व करणी अशुद्ध हुवे तो तिणरे लेखे सम्यग्दृष्टि री सर्व करणी शुद्ध कहिणी । तिहां ईज दूजी गाथा हम कही है ते लिखिये है ।

जेय बुद्धा महाभागा वीरा समत्त दंसिणो ।  
शुद्धं तेस्सिं परक्कन्तं अ लं होइ ज्वसो ॥

(सुयगङ्गाङ्ग धु० १ अ० ८ गा० २४)

जे० जे कोई. दु० तीर्थकरादि. म० महा भाग्य पूज्य तथा. वी० वीर कर्म विदारवा समर्थ स० सम्यग्दृष्टि पृथ्वानो जेतला अनुष्ठान ने विषे उद्यम ते. अ० सर्व प्रकार संसार ना फल रहित ते अफल कर्म बंधनो कारण नयो किन्तु निर्जरा रो कारण ।

अथ इहां—सम्यग्दृष्टि रो शुद्ध म है. सर्व निर्जरा नो कारण है. पिण संसार नो कारण नथी. हम कह्यो । इहां सम्यग्दृष्टि रे अशुद्ध पराक्रम रो कथन चाल्यो नथी । जो मिथ्यादृष्टि रो पराक्रम सर्व अशुद्ध हुवे तो सम्यग्दृष्टि रो पराक्रम सर्व शुद्ध कहिणो, तयारे लेखे तो सम्यग्दृष्टि कुशीलादिक. संप्र.म. वाणिज्य व्यापार. अनेक पाप करे ते सर्व शुद्ध कहिणा । सम्यग्दृष्टि रा सावध कुशीलादिक ते अशुद्ध कइ तो मिथ्यात्वी रा निरवधदान शीलादिक पिण अशुद्ध होवे नहीं । ए तो पाथरो न्याय है । मिथ्यात्वी रो मिथ्यात्वपणा नो म शुद्ध है, अने सम्यग्दृष्टि नो सम्यग्दृष्टि पणानो भलो पराक्रम शुद्ध है । मिथ्यात्वी नी अशुद्ध करणी रो कथन अने सम्यग्दृष्टि नी शुद्ध करणो रो कथन तो इहां चाल्यो है । अने मिथ्यात्वी नी शुद्ध करणी नो अने सम्यग्दृष्टि री अशुद्ध करणो रो कथन इहां चाल्यो नहीं । डाहा हुवे तो दि रि जोईजो ।

ते ११ बोल म्पूर्णा ।

केतला एक पाखंडी कहे—सम्यग्दृष्टि कुशीलादिक अनेक कार्य करे ते सर्व शुद्ध छै । सम्यग्दृष्टि नें पाप लागे नहीं । दृष्टि ने पाप लागे तो ते सम्यग्दृष्टि रो-पराक्रम शुद्ध नें कहे । तत्तोत्तरं—जो सम्यग्दृष्टि ने पाप लागे नहीं तो भगवान् महावीर स्वामी दीक्षा लीधी जद इम क्यूं तो “जे हूं आज थकी सर्व पाप न ” इम कही चारित्र पड़िवज्जो छै । ते लिखिये छै ।

तओणं ए गवं महावीरे दाहियेणं दहिणं  
मेण पं द्वियं लोयं रेत्ता सिद्धाणं एमोक्कारं करेइ  
रेत्ता “सब्बं अकरिणिज्जं पाप म्म” तिकहु सामाइयं  
चरि पड़िवज्जइपड़िवज्जइत्ता ।

( रांग. अ० १५ )

त० तिवारे, स० श्रमण भगवन्त महावीर दा० जीमणे हायसू, दा० जीमणे रो.  
धा० डावा हायसू डावा पासा रो. प० पंचमुष्टिक लोचकरी नें. सि० सिद्धा नें. ए० नमस्कार  
करी करीने स० सर्व. मे० मुक्ते. अ० करनो योग्य नथी. पा० पाप कर्म. ति० इम करीने.  
सा० सामायक. च० चारित्र. प० पड़िवज्जे आवरे. प० आवरी नें तिण अवसरे ।

अथ दीक्षा लेतां कह्यो—“जे आज थकी स<sup>१</sup> प्रकारे  
मोने न करिवो” इम कही सामायक चारित्र आदसो । जो गृह्णित नें पाप  
लागे नहीं तो भगवन्त सम्यग्दृष्टि था जो आगे पाप लागतो न हुन्तो तो “हूं आज  
थकी सर्व पाप न करे” इम कहिवारो काइ काम । डाहा हुवे तो विचारि  
जोईजो ।

ति १२ वो सम्पूर्णा ।

तथा सम्यग्दृष्टिः न पाप लागे ते चली सूत्र-पाठ लिखिये छै ।

अणुत्तरोववाइयाणं भंते ! देवा केवइएणं कम्माव-  
सेसेणं अणुत्तरोववाइय देवत्ताए उववएणा । गोय !  
जाव इये छट्ठु भत्तिए समणे णिग्गंथे कम्मं णिज्जेइ एव  
इएणं कम्मावसेसेणं अणुत्तरोववाइय उववएणा ।

( भ० श० १४ उ० १ )

अ० अनुत्तरोपपातिक भ० हे भगवन्त ! दे० देवगणो. के० केतलाइ. क० कर्म अवगोये  
अ० अनुत्तरोपपातिका दे० देवगणै. उ० अवतार हुइ. हे गौतम ! जा० जेतलू. छ० छठ भक्ति  
स० श्रमण नि० निर्यन्थ. क० कर्मप्रति. णि० निज्जे. ए० एतत्ते. क० कर्म अवगोये धकी  
अ० अनुत्तर विमाने ऊपणा ।

अथ अडे भगवन्ते इम कथो—एक बेला रा कर्म वाकी रह्या । अणुत्तर  
विमान में उपजेतो ऋग्भदेव स्वामी सर्वार्थसिद्ध थी चथी नवमास गर्भरा दुःख  
सही पड़े दीक्षा लीथी, १ वर्ष ताई भूखा रह्या, देव मनुष्य तियेंछ नी उपसर्ग  
सही केवल ज्ञान उपजायो । जो सम्यग्दृष्टि में पाप लागे इज नहीं तो ऋग्भदेवजी  
पहवा दुःख भोगव्या ते कर्म किहां उपजाव्या । सर्वार्थसिद्ध में गया जिवारे तो  
एक बेला रा कर्म वाकी रह्या, तठा पड़े सम्यक्त तो गई नथी । जो सम्यग्दृष्टि  
ने पाप न लागे तो एतला कर्म किहां लाग्या । पिण सम्यग्दृष्टि रे पाप लागे छै ।  
अने सम्यग्दृष्टि रो सर्व पराक्रम शुद्ध फरे—ते साध्वत सूत्र ना अज्ञाण छै,  
मृदावादी छै । सम्यग्दृष्टि रा कुगोलादिक आह्वा वाहिरे छै । डाहा हुवे तो  
विचारि जोईजो ।

ति १३ बोल सम्पूर्णा ।

वली केतला एक कहे—जे गुणठाणे शुद्ध करणी छै आह्वा माहि छै तो “उवाई” सूत्र में कह्यो । जे बिना मन शीलादिक पाळे ते देवता थाई ते परलोक ना अनआराधक कहा । ते माटे तेहना शीलादिक आह्वा बाहिरे छै । जे माहि हुवे तो, गोक ना आराधक कहिता । इम कहै तत्रोत्तर—इहां “उवाई” में कह्यो जे विगय ( घृतादिक ) न लेवे पुण्य अलंकार न करे । शीलादिक पाळे, इत्यादिक हिंसारहित निरवध करणी करे ते करणी माहि छै । ते करणी अशुद्ध किम कहिये । परलोक ना आराधक छै, ते धकी आराधक आ । कत्व नी आराधना आश्री ना । ते पिण देश-आराधना आश्री तथा निर्जरा धर्म आश्री आराधना नों ना नथी कह्यो । जिम भगवती श० १० उ० १ कह्यो, पूर्व दिशे “धर्मास्तिकाय” धर्मास्तिकाय नथी एहवूं । धर्मास्तिकाय नो देश प्रदेश तो छै, तो पूर्व दिशे धर्मास्तिकाय नो ना कह्यो ते तो सर्वथकी धर्मास्तिकाय बजो छै । पिण धर्मास्ति नो देश बज्यो नथी । तिम अ शील उपशान्त पणो ए करणी रा धनी ने परलोक ना आराधनथी, इम कहा । ते पिण सर्वथकी आराधक नथी । परं निर्जरा आश्री देशआराधक तो ते छै । जिम पूर्व दिशे धर्मास्तिकाय धकी नथी । तिम गुणठाणे शुद्ध करणी करे ते पिण सर्वथकी आराधक नथी । जिम पूर्व दिशे धर्मास्तिकाय नो देश छै, ते भणी देशधकी धर्मास्तिकाय कहि तिम गुणठाणे शुद्ध करणी करे, ते निर्जरा लेखे तो देशआराधक कहि । ते देशआराधक नी साक्षी, भगवती श० ८ उ० १० छै विचारि लेवूं । जिम भगवती श० उ० ६ तो साधु ने निर्दोष दीघां एकान्त निर्जरा कही परं पुण्य नों नहीं । “ठाणांग” ठाणे ६ “अन्नपुन्ये” ते साधु ने निर्दोष दीघां पुण्य नो बंध कह्यो, पिण निर्जरा रो चाल्यो नहीं । तो विचारी ए विहं मिलायै । जे साधु नें दीघां निर्जरा पिण हुवे अने पुण्य पिण बंधे । तिम गुणठाणा रो धनी शुद्ध करणी करे तेहने “उवाई” में तो कह्यो परलोक ना नथी । अने भगवती श० ८ उ० १० कह्यो । बिना जे करणी करे ते देशध छै । ए विहं रो मिलानो । सर्वथकी तथा आश्री तो आराधक नथी । निर्जरा आश्री देश धकी आराधक तो छै । पिण जावक किं पिण नथी, एहवी ऊंची करणी नहीं—

जो मिथ्यात्वी नी शुद्ध करणी आज्ञा वाहिरे हुवे, तो देशआराधक क्यूं कह्यो । ए तो पाधरो न्याय छै । तथा वली "उवाह" मध्ये अम्बड ने परलोक नो आराधक कह्यो छै । वली सर्व श्रावकां नें "उवाह" प्रश्न २० परलोक ना आराधक कहा छै । अने मिथ्यात्वी तापसादिक ने परलोक ना अनाराधक कहा छै । जो परलोक ना अनाराधक कहां माटे ते प्रथम गुणठाणा रे धणी रा सर्व कार्य वाहिरे कहे तिणरे लेखे इ सन्यासीने तथा सर्व श्रावकां ने परलोक ना आराधक छै ते भणी ते श्रावकां ना पिण सर्व कार्य आज्ञामें कहिणा । तो चेडो राजा सं कीधो, घणा मनुष्य मासा, तेहने लेखे ए पिण कार्य आज्ञामें कहिणो । "वर्णनागनतुयो" ए पिण श्रावक हुन्तो, ते परलोक नो आराधक थयो तो तेहने लेखे ए पिण संग्राम करि मनुष्य मासा, ए पिण कार्य आज्ञामें कहिणो । अम्बड काचो पाणी नदीमें बहतो आज्ञा थी लेतो ते पिण आज्ञामें कहिणो । वली अनेक वाणिज्य व्यापार हिंसा झूठ चोरी कुशीलादिक सेवे छै । अने उवाह प्रश्न २० सर्व नें परलोक ना आराधक कहा छै । जो आराधक वाला री करणी आज्ञामें कहे तो ए श्रावकां रा हिंसादिक सर्व सावद्य कार्य आज्ञामें कहिणा । अने परलोक ना आराधक कहा त्यां श्रावकां री अशुद्ध करणी संग्राम कुशीलादिक आज्ञा वाहिरे कहे तो प्रथम गुणठाणा रा धणी ने परलोक ना अनाराधक कहा, तेहनी शुद्ध करणी शील तपस्या क्षमा सन्तोषादिक भला गुण आज्ञामाहि कहिणा । ए तो पाधरो न्याय छै । तथा वली "रायपलेणी" सूत्रमें सूर्याभदेव ने भगवन्ते आराधक कह्यो—जो आराधकवाला री करणी सर्वआज्ञामें कहै तो तिणरे लेखे सूर्याभ पिण सावद्यकामा राज्य वैसतां ३२ वाना पू । वली कुशीलादि तेहना सर्वआज्ञामें कहिणा । वली भगवती श० ३ उ० ८ सनत्कुमार तीजा देवलोकना इन्द्रे पिण "आराहण नो विराहण" एहवा पाठ कह्यो । एतले अधिक कह्यो, तो तिणरे लेखे तेहनी सावद्यकरणी पिण में कहिणी । भक्त्येन्द्र-ईशानेन्द्र-चमरेन्द्र इत्यादिक अनेक देवता ने आराधक कहा छै । पिण तेहनी सावद्यकरणी आज्ञामें नहीं, ए आराधक छै ते सम्यग्दृष्टिरे लेखे छै, पिण करणी लेखे नहीं । तिम मिथ्यात्वी ने आराधक । इम कहा तेपिण सम्यक्त्व तथा संवर नथी, ते लेखे अनारा क । पिण करणारे लेखे नथी । वली "आनन्द" आदिक रे अरे

આરમ્મ સમારમ્મ હુન્તા—કર્ષણ ( છેતી ) આદિક કુશીલ વાણિજ્ય વ્યાપાર-  
દિકં સાવચકરણો કરતા હુન્તા, તેહને પિણ પરલોકના આરાધક । તે  
પિણ સમ્યક્ત્વ                      રા ઘ્રતાં રે લેલે આરાધક , પિણ તેહની  
કરણી આજ્ઞામં નહીં । તિમ            ગુણ            રા ધણીને “પરલોકના આરાધક  
ન થી” હમ            તે સમ્યક્ત્વ નથી તે આશ્રી            પિણ તેહની નિરવધ  
કરણી આજ્ઞા વાહિરે નહીં । વિરાધક    ાં રી સર્વકરણી આજ્ઞા વાહિરે કહૈ  
વિરાધક કહ્યાં માટે, તો તિણરે લેલે આરાધકવાલા સમ્યગ્દૃષ્ટિ શ્રાવકાંરી કરણી  
સર્વ આજ્ઞામં કહિણી આરાધક            માટે । અને જો આરાધક વાલા સમ્યગ્દૃષ્ટિ  
શ્રાવકાં રી અશુદ્ધ કરણી આજ્ઞા વાહિરે કહે તો અનારાધક વાલા પ્રકૃતિભદ્રકાદિ  
મનુષ્ય મિથ્યાત્વીરી શુદ્ધ કરણી જે છે, તે આજ્ઞામાહીં કહિણી પતો વીતરાગ રો  
સુધો            છે । તિ            મં કપટાઈ રો            છે નહીં । વલી વિરાધક  
આરાધક રો            લેઈ શુદ્ધ કરણી આજ્ઞા વાહિરે થાપે તેહને પૂછા કીજે—કુણ  
શ્રેણકાદિકને આરાધક કહીજે, વિરાધક કહીજે, : આરાધક કહે તો તેહના  
સં            કુશીલાદિક આજ્ઞામં કહિણા તિણ રે લેલે ।            જો વિરાધક કહૈ તો  
તિણ લેલે કુણાદિક ધર્મ વ્લાલી કરી શ્રી જિન વાંચા પ કરણી આજ્ઞા વાહિરે  
કહિણી । યે ન્યાય વતાયાં શુદ્ધ            દેવા અસમર્થ તિવારે            વક વોલે । કેઈ  
ક્રોધરો શરણો ગૈ । તેહને સાંચી શ્રદ્ધા આવળી ઘણી દુર્લભ છે । અને જો  
ન્યાયવાદી હલ્લુ કમ્મીં પ            સુણી શુદ્ધ શ્રદ્ધા ધારે ઓટી શ્રદ્ધા છાંડે પિણ  
ઝંઘો શ્રદ્ધા રી ટેક ન રાઘૈ તે ડ            જીવ જાણવા । હાહા હુવે તો વિચારિ  
જોઈજો ।

## इति १५ बोल सम्पूर्णा ।

કેતલા એક હમ કહૈ જો            ગુણ ઠાળા રા ધણીરી કરણી આજ્ઞામાહી છે  
તો તિણને મિથ્યાદૃષ્ટિ મિથ્યાત્વ ગુણ ઠાળે ક્યૂં કહ્યો । તેહનો ઉત્તર—મિથ્યાત્વ  
છે, જેહને તિણને મિથ્યાત્વી કહ્યો તેહને કતિયક શ્રદ્ધા સંવલી છે અને કે-  
વોલ ઝંઘા છે, તિહાં જે જે વોલ ઝંઘા તે તો મિથ્યાત્વ, અને જે કેતલા



एक बोल संजली श्रद्धारूप शुद्ध है ते गुण ठाणो है । मिथ्यात्वीना जेतला गुण ते मिथ्यात्व गुण ठाणो है । जिम छडा गुण ठाणा रो नाम प्रमादी है, तो ए प्रमाद है ते तो गुण ठाणो नहीं है ए प्रमाद तो सावद्य है ।

जे गुण ठाणो निरवद्य है । पिण प्रमादे करि ओलखायो है । जे प्रमादी नो सर्वचरित रूपगुण ते प्रमादी गुण ठाणो है । तथा बली दशवां गुण रो नाम सूक्ष्म-सम्पराय है । ते सूक्ष्म तो थोड़ो सम्पराय ते लोभने सूक्ष्म संपराय थोड़ो लोभ ते तो सावद्य है । एतो गुणा ठाणो नहीं । दशमो गुण ठाणो तो निरवद्य है । ते किम सूक्ष्म संपराय वाला नों जे चरित रूप गुण ते सूक्ष्म संपराय गुण ठाणो है । तिम मिथ्यात्वी रा जे केतला एक शुद्ध श्रद्धा गुण ते मिथ्यात्व गुण ठाणो है । तिवारे कोई कहै— गुण ठाणे किसा बोल संबला है । तेहनो उत्तर—जे मिथ्यात्वी ने गाय श्रद्धे. मनुष्य ने मनुष्य श्रद्धे. दिनने दिन श्रद्धे. सोना ने सोनो श्रद्धे. इत्यादि जे संबली श्रद्धा है ते क्षयोपशम भाव है । अने मिथ्यादृष्टि नें क्षयोपशम भाव अनुयोग द्वार सूत्रमें कही है । ते संबली श्रद्धा रूप गुणने प्रथम गुणठाणो कहिजे । ए तो निरवद्य है । कर्म नो क्षयोपशम कहाँ है । जद कोई कहे—ए गुण ठाणो निरवद्य कर्म नो क्षयोपशम किहां ॥ है । तेहनो उत्तर—समवायांगे १४ जीव ठाणा है । त्यां एहवो है ।

कम्म विसोहिय मग्गणां. पडुच्च. चोइस जीवठाणा.  
 ५० तं० मिच्छदिट्ठी. सासायण म्मदिट्ठी. सम् मिच्छदिट्ठी,  
 अविरयस दिट्ठी, विरयाविरए. पम्हत्त संजए. प्पमत्त  
 संजए. नियट्ठि निट्ठिवायरे, हुमसंपराए उवसमएवा  
 खवएवा, उवसंतमोहेवा, खीणमोहे, सजोगी केवली, अजोगी  
 केवली ॥ ५ ॥

क० कर्म विशेष वियोगः । ५० आश्री ने. चो० चवदह जीवना मेव १४  
गुणठाणा. ते कहै छै. मि० मिथ्यात्व गुण ठाणे. सास्वादन. सम्यग्दृष्टि. सम्यग्मिथ्यादृष्टि.  
अवति सम्यग्दृष्टि. अतावती. प्रमत्तस्यत. अप्रमत्तस्यत. नियद्विवाद. अनियद्विवाद  
सूत्र सम्पराय ते उवशाम्या थी अने द्वाणी थी. उपयान्त मोह, क्षीण मोह, सजोगी केवली,  
अजोगी केवली ।

इहां इम ।—जे. नी विशुद्धि ते क्षयोपशम तथा क्षायक आश्री १४  
जीवठाणा परूया । इहां चौदह जीवठाणा कर्मनी विशुद्धि आश्री कहा पिण कर्म  
उदय न कहा । मोह कर्मना उदय आश्री कहिता तो सावध, अने कर्मनी विशुद्धि  
आश्री ते भणी निरवध छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति १६ बोल सम्पूर्णा ।

वली केतला एक घणी अयुक्ति लगाय ने मिथ्यात्व गुणठाणे भली करणी  
शील संतोष क्षमादिक मास क्षमणादिक तप करे ते करणी सर्व आज्ञा बाहिरे कहे  
छै । तेहनो उत्तर—जो मिथ्यात्वी री भली करणी आज्ञा बाहिरे हुवे तो मिथ्यात्वी  
रो सम्यग्दृष्टि किम हुवे, घणा जीव मिथ्यात्वी शुद्ध करणी कर्म  
स्वपाया सम्यग्दृष्टि पाया छै, जो अशुद्ध करणी हुवे तो अशुद्ध आज्ञा बाहिर ली  
करणी सूं सम्यग्दृष्टि किम पावे । तिवारे कोई इम कहे—जो गुण रो  
धणी करणी करतां सम्यग्दृष्टि पामें ते आज्ञा माहि छै, तो ग्यारमा गुणठाणा रो  
धणी पहिले गुणठाणे आवे तेहनी करणी आज्ञा बाहिरे कहिणी । तेहनो उत्तर—  
ग्यारमा गुणठाणा रो धणी ग्यारमा थी तो पहिले गुणठाणे आवे नहीं,  
थी तो दशमे आवे, अने मरे तो चौथे आवे इम दशमा थी नवमें थी  
आठमें मा थी सातमें, सातमा थी छठे आवे । यां सर्व गुणठाणा थी मरे  
तो चउथे आवे । ए तो विशेष निर्मल परिणाम थी उतरतो आयो पिण सावध  
अशुभ योग सूं न आयो । जिम किणही महीनों पचख्यो ते शुद्ध १५ पनरे १५  
पचख्या इम १० पचख्या जाव शुद्ध पाली उपवास पचख्यो जे क्षमण कीधो ।  
तिबारे धर्म घणो उपवास रो धर्म थोइयो ययो । परं उपवास से नहीं ।

पाप तो महीना भांग्यां हुवे । ते महीनादिक उपवास ताई तपस्या में दोष लगायो नहीं तिणसूं उपवास रो पाप नहीं । तिम ग्यारमें गुणठाणे निर्मल परिणाम था ते गुणठाणा री स्थिति भोगवी दशमें आयां थोड़ा निर्मल परिणाम परं पाप नहीं । इम दशवां री स्थिति भोगवी नवमें आयां वली थोड़ा शुभ योग निर्मल, इम नवमा थी आठमे, आठमा थी सातमे, सातमा थी आयां थोड़ा शुभ योग निर्मल छै । पिण अशुभ योग थी नथी आया । ते किम सातमा थी आगे अणारम्भी शुभयोगी कहा छै तिहां अशुभ योग छै इज नथी । तो आह्वा बाहिर किम कहिए । वली सूत्र पाठ लिखिये छै ।

तत्थणं जे ते संजया. ते दुविहा. प० तं० पमत्त-  
संजयाय, अपमत्तसंजयाय । तत्थणं जे ते अपमत्त संजया  
तेणं णो आयारंभा णो परारंभा जाव अणारंभा । तत्थणं  
जे ते पमत्त संजया ते सुहं जोगं पडुच्च णो आयारंभा. णो  
परारंभा ।व अणारंभा । असुहं जोगं पडुच्च आयारंभावि  
जाव णो णारंभा ।

( भगवतो. श० १ उ० १ )

त० तिहां जे ते. सं० संयमी. ते० ते. दु० वे प्रकारे. प० कहा. तं० ते कई छै. प० प्रमत्तसंयमी. अ० अप्रमत्तसंयमी. त० तिहां. जे० जे ते. अ० अप्रमत्त संयमी. ते० ते. णो० आरंभी नहीं. णो० परारंभी नहीं. जा० यावत्. अ० अनारम्भी. त० तिहां जे ते. प० प्रमत्त संयमी. शु० शुभयोग. प० प्रति अंगीकार करी ने. णो० आत्मारंभी नहीं. जा० यावत्. अणारंभी. अ० अशुभयोग मन बच काया करीने. अ० आत्मारंभी भी तदुभयारंभी यावत्. णो० अनारंभी नहीं.

अथ इहां अप्रमादी साधुने अनारंभी कहा छै । ते माटे सातमा थी आगे अप्रमादी छै तेहने अशुभ योग तो नथी तो अशुभ योग थी किम आवे छटे गुणठाणे शुभ योग आश्री तो अनारंभी कहा छै, ते शुभ योग वर्ते तेहथी तो हेटे पडै नहीं । अने अशुभ योग आश्री आरंभी कहा छै, ते शुभ योग थी दोष लागे छै । छटा गुण ठाणा थी विपरीत अदृशं गुणठाणे आवे पिण

ન્યારમા થી ગુણઠાણે ન આવે, અને ન્યારમા થી ગુણઠાણે આવે—  
 હમ કહે તે મૃષાવાદી છે । એ તો પાધરો ન્યાય છે, જિમ ગુણઠાણે મ યોગ  
 ‘‘ દોષ લાગે હેઠો પડે તિમ પ્રથમ ગુણઠાણે શુભયોગ ઘટ્યાં કર્મ નિર્જરા  
 ઝંચી ચઢિ સમ્યગ્દૃષ્ટિ પાવે છે । લી પૂર્ણાવિક શુભ કરણી થી  
 કર્મ છપાયા એ તો ચૌડે દીસે છે । આહા હુવે તો વિચારિ જોડજો ।

## इति १७ बोल सम्पूर्णा ।

ઘણી અસોચા કેવલીને અધિકારે તપસ્યાદિક ડી કરણી કરતાં સમ્યગ્-  
 દૃષ્ટિ પાવે પહોવો કહ્યો છે । તે સૂત્ર પાઠ લિખિયે ।

તસ્ત્વણં મંતે ! છટ્ઠં છટ્ટેણં અનિલિત્તેણં. તવોકમ્મેણં.  
 ઉડ્ઠં વાહાઓ પગિજ્ઞિય ૨ સૂરાભિમુહસ્સ આયાવણ મૂમીણ,  
 આયાવેમાણસ્ય પગદ્ ભદ્યાણ. પગય ઉત્તસંતયાણ. પયદ્  
 પગણ્ ગેહ માણ માયા લોભયાણ. મિત્તમદ્વ સંપન્નયાણ  
 અલીણયાણ ભદ્યાણ. વિણીયયાણ કયાઈં સુમેણં  
 અજ્ઞવસાણેણં. સુમેણં પરિણામેણં. તે હિં વિસુજ્ઞમા-  
 ણીહિં. તયાવરણિજ્ઞાણં મ્માણં ઓવસમેણં રૂહાપોહ  
 મગ્ગણગવેસણં કરેમાણસ્સ વિભંગે. નાસં અન્નાણે સમુપ્પ  
 સેણં તેણં વિભંગનાણ સમુપ્પન્નેણં જહન્નેણં અંગુલસ્સ અસં-  
 લેજ્ઞદ્ ભાગં ઉક્કોસેણં સંલેજ્ઞાઈં જોઅણ સહસ્સાઈં  
 જાણદ્ પાસદ્ સેણં તેણં વિભંગનાણેણં સમુપ્પન્નેણં જીવેવિ-  
 ણદ્ અજીવેવિજાણદ્ પાસંડથેસારમ્મે સપરિગ્ગહે સાકલ-

स्समाणेवि जाणइ विसुज्झमाणेवि जाणइ सेणंपुव्वामेव  
सम्मत्तं पडिवज्जइ. समण धम्मं रोएइ २ चरित्तं पडिवज्जइ  
२ लिंगं पडिवज्जइ ।

( भगवती श० ६ उ० १ )

त० ते अण सभित्ता केवल ज्ञान प्रति उपार्जे तेहने हे भगवन्त ! छ० छठे छठे. अणि०  
निरन्तर. त० तप करे एतले छ० तपवन्त बाल तपस्वी ने विभंगनाए उपले ए जाणववाने. उ०  
जंजा बाहुप्रति. प० धरी ने. सू० सूर्यने सन्मुख साहमें मुखइ आ० आतपनानी भूमि ने विपे.  
आ० आतपना. लेता ने. प० प्रकृति भद्रक पणा थी. प० प्रकृति स्वभावइ. उ० उपशान्त  
पणा थी. प० स्वभावे प० स्तोक छै क्रोध मान माया लोभ तेणें करीने. मि० मृदुमार्दव तेणें  
करी सम्यक् पणा थी अ० इन्द्री ने गोपवा थी. म० भद्रक पणा थी. वि० विनीत पणा थी.  
अ० एकदा प्रस्ताव ने विपे. छ० शुभ अध्यवसाय करीने. छ० भले. प० परिणामें करीने.  
ले० लेख्याने. वि० विशुद्ध माने करी. शुद्ध लेख्याइ करी. त० विभंग ज्ञानावरणीय कर्मनी  
ख० क्षयोपशम छतइ ह० अर्थ चेष्टा ज्ञान सन्मुखविचारणा. अप्पे० धमध्यान बीजा पत्त  
रहित निर्णय करतो. न० धर्मनी आलोचना. ग. अधिक धर्मनी आलोचना करतां छते. वि०  
विभंग. शा० नामे अ० अज्ञान. स० उपजइ. से० ते बाल वी तेणें विभंग शा० नामे. स०  
उपजवै करीने ज० जघन्य. अ० अंगुल नो असंख्यात मो भाग. उ० उत्कृष्टो. अ० असंख्याता  
योजन ना सहइ ने. जा० जाण. पा० देखे. से० ते बाल तपस्वी. ते० तेणें विभंगअज्ञान स०  
उपने छतइ. जी० जीवप्रति जा० जायँ अजीव प्रति पिण जा० जायँ पा० पाषंडी ने आरंभ  
सहित. तप परिग्रह सहित जाणें. सं० ते० महा क्लेशे करी ने क्लेश मान अका जाणइ. वि०  
थोड़ी विशुद्ध ताई करी ने विशुद्ध मान जाणइ. से० ते विभंग अज्ञानो चारित्र प्रति पति  
थकी पूर्व. स० सम्यक्त्व प्रति पडिवज्जे, सम्यक्त्व पडिवज्जां पछै. स० अमण धर्म नी रो०  
रुचि करे. अमण धर्म नी रुचि हुआ पछै । च० चारित्र पडिवज्जे च० चारित्र पडिवज्जां पछै.  
लि० लिंग पडिवज्जे ।

अथ इहां असोधा कैबली ने अधिकारे इम ०० जें कोई बालतपस्वी साधु  
श्रावक पासे धर्म सुण्यां विना वेले २ तप करे, सूर्य साहमी आतापना लेवे, ते  
प्रकृति भद्रकी विनीत उपशान्त स्वभावे पतला क्रोध मान माया लोभ मृदु  
अहंकाररहित पहवा गुण कहा । ए गुण शुद्ध छै के अशुद्ध छै, ए गुण निरवद्य  
छै के सावद्य छै, ते पहवा गुणां सहित तपस्या करतां घणा क्षय कीया ।  
तिवारे एकदा प्रस्तावे शुभ अध्यवसाय. शुभ परिणाम. अत्यन्त विशुद्ध लेख्या.

विभङ्ग ज्ञानावरणीय कर्म रो क्षयोपशम करे, इहां अश्ववसाय शुभ परिणाम  
 विशुद्ध लेश्या थी कर्म खपाया । ए शुद्ध करणी थी कर्म खपाया के शुद्ध करणी थी  
 खपाया । ए परिणाम विशुद्ध लेश्या सावध है के नि है शुभ योग  
 है के शुभ योग है आशामें है के आशवाहिरे है । विशुद्ध लेश्या कही ते  
 लेश्या है । द्रव्य लेश्याथी तो खपे नहीं द्रव्य लेश्या तो पुद्गल अठफशीं  
 है ते माटे । अने कर्म खपाया ते धर्मलेश्या जीव ना परिणाम है तेह्यी कर्म  
 हुवे है । तै (तेजू) पद्म शुक्ल ए तीन भली लेश्या है ते विशुद्ध लेश्या  
 कही है । उ यन. अ० ३४ गाथा ५७ ए तीन भली लेश्याने धर्मलेश्या  
 कही है । बालतपस्वी विशुद्ध लेश्याथी कर्म ते धर्मलेश्याथी  
 है अधर्म लेश्याथी तो क्षय हुवे नहीं । अने धर्मलेश्या तो आशामें  
 है तेह्यी है । वली "ईहापोह मगण गवेसण करे माणस्स" ए  
 "ईहा" कहितां भला जाणवा सत्सुख थयो "अपोह" कहितां धर्म  
 बीजा ए रहित "मगण" कहितां चे धर्मनी आलोचना "गवेसण"  
 कहितां अधिक धर्मनी आलो ए विमंग उपजे । इहां तो धर्म  
 धर्मनी आलोचना अधिक धर्मनी ओचना गुण ठाणे कही तो धर्मनी  
 आलोचना ने अने ध्यान नें आशवाहिरे किस कहिये एतो प्रत्यक्ष आशामाहि  
 है । पछे विमंग र थी जघन्यअंगुलने असंख्यातमे जाणीने देखे ।  
 उत्कृष्टो व्यात हजार योजन जाणीने देखे ते विमंग अज्ञाने करी जीव अजीव  
 जाणया । तिवारे सम्यग्दृष्टिपामे सम्यग्दृष्टि विमंग रो अवधि हुवे । पछे चारित  
 लेइ लिङ्ग पढ़िवज्जे । एतले गुणा री प्राप्ति थई ते निर करणी सम्यग्दृष्टि अने  
 चारित है । जो अशुद्ध करणी हुवे तो सम्यग्दृष्टि चारित किम पामे हणे  
 आलावे चौड़े कह्यो तो वेले २ तप सूर्यनी को निरः  
 हंकार सगुण पछे शुभ परिणाम शुभ । ए विशुद्ध लेश्या कही, ती  
 "अपोहनो" धर्मध्यान कह्यो, नी ओचना ती एहवा म गुण  
 तेहने अवगुण किम कहिए । एहवा गुणा करी एहवों कह्यो तो त्यां  
 गुणा ने वाहिरे किम कहिये । जो ए तपस्वी २ तप न करतो तो  
 एतला गुण किम प्रकटता यां गुणा विना शुद्ध अश्ववसाय परिणाम भली  
 ले, किम, ती । यां गुणा विना न ध्यावतो भली विचा-

रणा न आवती तो सम्यग्दृष्टि किम पामतो । ते माटे ए करणी श्री सम्यग्दृष्टि पामी ते करणी शुद्ध आत्मा माहिली छै एहवी शुद्ध करणीने आवा वाहिरे कहे ते आत्मा वाहिरे जाणवा । केतला एक जीव प्रथम गुण ठाणे धर्म ध्यान न कहे छै, अने इहां वाल तपस्वीने धर्म ध्यान कहा छै, वली धर्मनी आलोचना कहा छै तिवारे कोई कहे ए धर्म ध्यान अर्थमें कहा छै पिण पाठमें न कहा तेहनो उत्तर—“ए अपोह” नो अर्थ धर्म ध्यान पक्षपात रहित एहवूं कहा ते अर्थ मिलतो छै । वली विशुद्ध परिणाम विशुद्ध लेश्या कही छै, विशुद्ध लेश्या कहिवे तैजस (तेजू) पद्म. शुक्ल. लेश्या प्रथम गुण ठाणे कहिणी । अने उत्तराध्ययन अ० ३४ गा० ३१ शुक्ल लेश्या ना लक्षण कहा छै ।

“अहुरुदाणि वज्जित्ता-धम्मसुक्काइ भायए ।”

इहां कहा अर्त्तवद्. ध्यान वरजे-और धर्म शुक्ल. ध्यान ध्यावे ए शुक्ल लेश्या ना लक्षण कहा ते शुक्ल ध्यान तो ऊपरले गुण ठाणे छै अने प्रथम गुण ठाणे शुक्ल लेश्या वत्तै ते बेलां आर्त्तवद् ध्यान तो वज्यों छै अने धर्म ध्यान पावे छै एतो पाठमें शुक्ल लेश्या ना लक्षण धर्म ध्यान कहा । ते प्रथम गुण ठाणे शुक्ल लेश्या पिण पावे छै ज्ञान नेत्रे करि विचारि जोइजो । वली एहनो न्याय दृष्टान्ते करी दिखाडे छै ।

जिम एक तलाव नो पाणी. एक घड़ो तो ब्राह्मण भर ले गयो । अने एक घड़ो भंगी भर ले गयो भंगी रा घड़ामें भंगी रो पाणी वाजे । अने ब्राह्मण रा घड़ा में ब्राह्मण रो पाणी वाजे पिण पाणी तो मीठो शीतल छै भंगीरा घड़ामें आयां खारो थयो नथी तथा शीतलता मिट्टी नहीं पाणी तो तेहिज तलाव नो छै पिण भाजन लारे नाम बोलवा रूप छै । तिम शील. दया. क्षमा. तपस्यादिक. रूप पाणी ब्राह्मण समान सम्यग्दृष्टि आदरे । भंगी समान मिथ्यादृष्टि आदरे तो ते तप. शील. दया. नो गुण जाय नहीं । जिम पाणी ब्राह्मण तथा भंगी रो वाजे पिण पाणी मीठा में फेर नहीं पाणी मीठो एक सरीखो छै । तिम मिथ्यादृष्टि शीलादिक पाले ते मिथ्यादृष्टि री करणी वाजे । सम्यग्दृष्टि शीलादिक पाले ते सम्यग्दृष्टि री करणी वाजे । पिण करणी दोनू निर्मल मोक्ष मार्ग नी छै । पाप रूप आताप नो

मेढणहारी छै । पुण्य रूप शीतलताई नी करणहारी छै । ते करणी आज्ञा माहि छै तेहनी आज्ञा साधु प्रत्यक्ष देवे छै । जे मिथ्यादृष्टि साधु ने पूछे हूं सुपात दान देवूं, शील पालूं, वेला तैलादिक तप करूं । जब साधु तेहने आज्ञा देवे के नहीं, जो आज्ञा देवे तो ते करणी आज्ञा माहोज थई । अने जे आज्ञा बाहिरे कहे- तेहने लेखे तो आज्ञा देणी हो नहीं । अशुद्ध आज्ञा बाहिरे हुवे तो ते करणी - वणी नहीं मुखसूं तो आज्ञा देवे छै जे तूं शीलपाल म्हारी छै इम आज्ञा देवे छै । अने वली इम पिण कहे ए करणी आज्ञा बाहिरे छै इम कहे ते आपरी भाषा रा ण छै जिम कोई कहे म्हारी बांछ छै ते सरीखा मूर्ख छै । माहरी माता छै इम पिण कहे. अने बांछ पिण कहे, तिम आज्ञा पिण ते करणी री देवे, अने आज्ञा बाहिरे पिण कहे, ते महा मूर्ख जाणवा । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति १८ बोल सम्पूर्ण ।

वली शुद्ध करणीनी आज्ञा तो २ सूत्रमें चाली छै । “रायपसेणी” सूत्रमें सूर्याभ ना. “अभिओगिया” देवता भगवान्ने बांछा तिवारे भगवान् आज्ञा दीधी छै ते सूत्रपाठ कहे छै ।

जेणेव आमलकप्पाए रायरी जेणेव अंवसालवणे चेइये जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ ता णं भगवं महावीरं तिवखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति २ ता वंदइ नमंसइ. २ एवं वयासी. अम्हेणं भंते ! सूरियाभ- स्स देवस्स भिओगिया देवा देवाणुप्पियं वंदामो णमंस्सामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासा- मो । देवाइ समणे भगवं हावीरे ते देवे एवं वयासी-पोराण



મેયં દેવા ! જીય મેયં દેવા ! કિચ્ચ મેયં દેવા ! કરણિ મેયં  
દેવા ! આચિરણ મેયં દેવા ! અભણુપ્પણ મેયં દેવા !

( રાય પસેણી-દેવતાઽધિકાર )

જેં જિહાં. આં આમલકંપા નગરી. જેં જિહાં શંબસાલ શેં ચૈત્ત જેં જિહાં. સં  
શ્રમણ. મં મગવન્ત. મં મહાવીર. તેં તિહાં. ડં આવે આવીનેં. સં શ્રમણ. મં મગવાન્. મં  
મહાવીરને. તિં તીન વાર. આં જીમણા થી. પં પ્રદક્ષિણ. કં કરે કરીનેં વં વાંદે. નં  
નમસ્કાર કરે કરીનેં. પં હમ વોલે. અં અમ્મૈ. મં હે મગવાન્ ! સં સૂર્યામ દેવ ના આં અમિ-  
યોગિયા દેવતા. દેં દેવાનુપ્રિય. તું તુમ્હેપ્રતિ. વં વાંદાં. શં નમસ્કાર કરાં. સં સત્કાર દેવાં. સં  
સન્માન દેવાં. કં કલ્યાણકારી. મં મંગલીક. દેં તીનલોકના અધિપતિ. શેં મત્તા મન ના હેતુ  
તે માટે ચૈત્ય. વં તુમ્હારો સેવા કરાં. તિવારે દેં હે દેવાં ! સં શ્રમણ. મં મગવન્ત. મં મહાવીર  
તેં તે દેવ પ્રતે. પં હમ વોલ્યા પોં જૂનો કાર્ય તુમ્હારું. પં પ. દેં હે દેવાં ! જીં જીત આચાર  
તુમ્હારું હે દેવાં ! કં પ કર્તવ્ય તુમ્હારું હે દેવાં ! આં પ તુમ્હારું આચરણ હે દેવાં ! અં મ્મં અને  
અનેરે તીર્થકરે અનુજા દીધી આજ્ઞા દીધી હે દેવાં !

इहां कह्यो—सूर्याम ना अमियोगिया देवता भगवान् ने वंदना र कियो  
तिवारे भगवान् बोल्या । ए वन्दनारूप तुम्हारो पुराणो आचार छै. ए तुम्हारो जीत  
आचार छै. ए तुम्हारो छै. ए वंदना करवा योग्य छै. ए तुम्हारो आचरण छै. ए  
वंदनारी म्हारी आज्ञा छै । इहां तो भगवान् कह्यो म्हारी आज्ञा छै—तो तिम करणीने  
आज्ञा बाहिरि वि कहिये, इम सूर्यामे भगवन्त वांचा तेहने पिण आज्ञा दीधी । अने  
सूर्यामे नाटक नो पूछ्यो तिवारे मौन साधी पिण आज्ञा न दीधी तो ए न  
करणी सम्यग्दृष्टि री पिण आज्ञा बाहिरि छै । अने वंदना करणी री सूर्याम  
सम्यग्दृष्टि ने भगवन्त आज्ञा दीधी । ति तेहना अमियोगिया ने पिण  
दीधी छै । तो ते करणी आज्ञा बाहिरि किम कहिये । डाहा हुवे तो विचारि  
जोइजो ।

इति १६ बोल सम्पूर्णा ।

વલી સ્કંદક સન્યાસીને ગુણઠાણે ભગવાન્ ને વંદના કરણ રી  
ગીતમ સ્વામી આજ્ઞા દીધી તે લિખિયે છે ।

तएणं से खंदए यण गो भगवं गोयमं एवं  
वयासी—गच्छामोणं गोय ! धम्मायरियं धम्मोवदेसयं  
णं भगवं महावीरं वंदामो न । मो जाव पज्जुवासा ते  
अहासुहं देवाणुप्पिया मा पडिबंधं करेह ।

( भगवती श० २ उ० १ )

त० तिवारे. से० ते. ख० स्कंदक. का० कात्यायन गोत्री छईने म० गौतमने प. इस कहै  
ज० जईहं हे गौतम ! त० तुम्हारा धर्माचार्यप्रति धर्मोपदेशक. स० अमण भगवन्त महावीर प्रति.  
बं. बांदां. य० करां. जा० यावत्. प० सेवा करां जिम सुख हे देवानुप्रिय ! मा० प्रतिबन्ध  
व्याघात मत करो ।

अठे स्कंदके कह्यो हे गौतम ! तांहरा धर्माचार्य भगवान् महावीर नें बांदां  
यावत् सेवा करां । तिवारे गौतम बोल्या—जिम सुख होवे तिम करो हे देवानुप्रिय !  
पिण प्रतिबन्ध विलम्ब ( जेज ) करो । इसी शीघ्र आह्वा वंदना नी दीधी तो  
ते वंदना रूप करणी गुण ठाणा रो धणी करे, तेहने आह्वा बाहिरि किम  
कहिये । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

ति २० बोल सम्पूर्णा ।

तिवारे कोई कहे तो जिम सुख होवे तिम करो इस कह्यो पिण आह्वा न  
दीधी । तेहनो उत्तर—स्कंदक दीक्षा लियां पछे तपस्या नी आह्वा मांगी तिहां  
एहवो छे ।

इच्छामिणं भंते ! तुज्जेहिं व्भणुण्णाए समाणे मासियं  
भिक्खुपट्ठिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए हा हं देवाणु-

पिया मापडिबन्धं तएणं से खंदए अणगारे समणेणं भगवया  
महावीरेणं अब्भणुणएणए समाणे हट्ठुट्ठे ।

( भगवती श० २ उ० १ )

ह० धाँछूँ छूँ. भ० हे भगवन्त. तु० तुम्हारी आज्ञाई करीने. मा० मास नों परिमाण.  
सि० भित्तुने योग्य प्रतिमा अभिग्रह विशेष ते प्रति अंगीकार करीने. वि० विचरवूँ. तिवारे  
भगवान् कह्यो अ० जिम छल उपजे तिम करो. दे० हे देवानुप्रिय ! मा० प्रतिबन्ध व्याघात मत  
करस्यो. त० तिवारे ते स्कन्दक अणगार. स० श्रमण भगवन्त. म० महावीर देव. अ० एहवी  
आज्ञा आपे थकें. ह० हर्प पाम्या तोष पाम्या ।

इहां कह्यो स्कन्दके तपस्या नी आज्ञा मांगी तिवारे “अहासुहं” एहवो  
कह्यो ते आज्ञा रो पाठ छै । तिम स्कन्दके वीर वंदन री धारी तिवारे गौतम पिण  
“अहासुहं” एहवो पाठ कह्यो ते आज्ञा रो पाठ छै । ते वंदना करण री आज्ञा दीधी  
छै । तथा “पुष्प चूलिथा” उपंगे भूतादारिका ने माता पिता पार्श्वनाथ भगवंत ने  
कह्यो । ए भूता वालिका संसार थी भय पामी ते माटे तुम्हाने शिष्यिणी रूप  
भिक्षा देवां छां । ते आप ल्यो तिवारे भगवान् “अहासुहं” पाठ कह्यो छै ते  
लिखिये छै ।

“ एयणं देवाणुप्पिये सिस्सिणी भिक्खं दत्तयंति  
पडिच्छंतुणं देवाणुप्पिया सिस्सिणी भिक्खं ! अहासुहं  
देवाणुप्पिया । ”

इहां पिण दीक्षा ना आज्ञा ऊपर “अहासुहं” कह्यो—तिम स्कन्दक  
सन्त्यासी ने पिण गौतमे “अहासुहं” पाठ कह्यो. ते आज्ञा दीधी छै । ए तो ठाम २  
शुद्ध करणी नी आज्ञा चाली तेहने अशुद्ध आज्ञा बाहिर कहे ते सिद्धान्त रा अज्ञाण  
छै । ए तो प्रत्यक्ष पाठमें आज्ञा चाली ते पिण न मार्ने ते गूढ मिथ्यात्व रा धर्णी  
अन्यायवादी जाणवा । डाहा हुवे तो विचारि जोड़जो ।

इति २१ बोल सम्पूर्णा ।

वली तामली तापस नी अनित्य जागरणा कही छै । ते प्रते लिखिये छै ।

तएणं तस्स तामलिस्स वालतवस्सिस्स अणयाकयाइं पुंवरत्तावरत्तकाल समयंस्सि अणिव्वजागरियं जागरमाणस्स इमे या रूवे अउभत्थिए । चिन्तिए जावसमुप्पजित्था ।

( भगवती श० ३ उ० १ )

त० तिवारे. त० ते. ता० तामली. वा० वाल तपस्वीने अ० एकदा समयने विपे पु० मध्य रात्री ना कालने विपे. अ० अनित्य जागरणा. जा० जागता थके. इ० एतदा रूप एहवो अ० अज्यात्म. जा० यावत् एहवो चित्त में भाव उपज्यो ।

इहां तामली वाल तपस्वी री अनित्य चिन्तवना कही छै । ए संसार अनित्य छै एहवी चिन्तवना ते तो शुद्ध छै । निरवद्य छै तेहने सावध किम कहिये । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २२ बोल सम्पूर्णा ।

वली सोमल ऋषि नी अनित्य चिन्तवना कही छै ते लिखिये छै ।

तत्तेणं तरस्स सोमिलस्स माहणारित्तिस्स. अणयाकयाइं पुंवरत्तावरत्तकाल समयंस्सि. अणिव्वजागरियं जागरमाणस्स इमे वा रूवे अउभत्थिए जाव समुप्पजित्था ।

( पुष्कियोपाङ्ग श० ३ )

त० तिवारे. त० ते. सो० सोमिल ब्राह्मण ऋषिने. अ० एकदा प्रस्तावे. पु० मध्य रात्रि ना ने विपे. अ० अनित्य जागरण. जा० जागते थके. इ० एहवा. अ० अज्यवसाय. जा० यावत्. स०

अथ इहां सोमल ऋषि नी अनित्य चिन्तवना कही ए अनित्य चिन्तवना शुद्ध करणी छै निरवद्य छै तेहने आज्ञा बाहिरे किम कहिये । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति २३ बोल सम्पूर्णा ।

कोई कहै—ए अनित्य चिन्तवना आज्ञा बाहिरे छै, अशुद्ध छै. सावध छै. निरवद्य हुवे तो धर्म जागरण कहिता । साधु भ्रावक री किहांइ अनित्य चिन्तवना कही हुवे तो बताओ । ते ऊपर चली भगवान् री अनित्य चिन्तवना रो लिखिये छै ।

तयरां अहं गोयसो ! गोसाले रां खलिपुत्तेणं द्विं  
परिणय भूमीए । छ्वासाइं लाभं अलाभं सुहं दुखं  
सत्कारं असत्कारं लिच्चजागरियं विहरित्था ।

( भगवतो. शतक १५ )

त० तिघारे. अ० हूं. गो० हे गौतम ! गो० गोशाला मंखलिपुत्र. स० संघाते. प० प्रणीत भूमिका ने आरम्भी ने छ० छव वर्ष लगे. ला० लाभ प्रति. अ० अलाभ प्रति. सु० सुख प्रति. दु० दुःख प्रति. स० सत्कार प्रति. अ० असत्कार प्रति. अ० अनित्य छै सर्व पृथ्वी चिन्ता करतां थकां. वि० विहार करूं छूं ।

अठे भगवान् कह्यो—हे गौतम ! मैं गोशाला साथे छव वर्ष ताइं अलाभ सुख दुःख सत्कार असत्कार भोगवतो. हूं अनित्य चिन्तवना करता विच्छसो तिहां पणे भगवान् री अनित्य चिन्तवना कही । तो ए अनित्य चिन्तवना ने आज्ञा बाहिरे किम कहिए । ए तो अनित्य चिन्तवना शुद्ध निरवद्य आज्ञा माहें छै । तिणसूं भगवान् पिण अनित्य चिन्तवना कीधी । अने अनित्य चिन्तवना ने अशुद्ध आज्ञा बाहिरे कहे आर्त्त रुद्र ध्यान कहे । तेहने लेखे तो ए अनित्य चिन्तवना भगवान् ने करणी नहीं । पिण अनित्य संसार छै पृथ्वी चिन्त-

तो धर्म ध्यान रो भेद है । ते माटे आज्ञा माहे छै ॥ भगवान् पिण ए अनित्य चिन्तवना करी छै । अने अशुद्ध हुवे तो ए चिन्तवना भगवान् करे नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति २४ बोल सम्पूर्णा ।

तिवारे कोई एक कहै—अनि नि धर्म रो भेद किसा सूत्रमें छै तेहनो कहै छै ।

धम्मस्सणं भाणस्स चत्तारि गुप्पेहा. प० तं०.  
शिच्चाणुप्पेहाए असरणाणुप्पेहाए. एगत्ताणुप्पेहाए  
राणुप्पेहाए ।

( उवाई सूत्र )

ध० धर्मध्यान नी. चार अनुप्रेक्षाविचारणा चित्त माही चिन्तन रूप. प० कक्षा. तं० ते कहै छै । अ० ए सांसारिक सर्व पदार्थ अनित्य छै । एहवी विचारणा चिन्तन १. अ० संसार माही कोई केहने शरण नथी एहवी विचारणा चिन्तन २. ए० ए जीव एकलो आयो एकलो जास्ये एहवी विचारणा चिन्तन ३. सं० संसार गति आगति रूप फिरवो छै ४ ।

इहां धर्म ध्यान नी ४ अनुप्रेक्षा ते चिन्तवना कहौ । तिहां पहिली अनित्यानुप्रेक्षा ए संसार अनित्य छै एहवी चिन्तवना करे ते अनित्यानुप्रेक्षा कहिए । इहां तो अनित्य चिन्तवना धर्मध्यान रो भेद कह्यो तो ए अनित्य चिन्तवना नै आज्ञा बाहिरे किम कहिए । ए अनित्य चिन्तवना भगवान् चिन्तवी । १ अनि चिन्तवना धर्म ध्यान रो भेद तो, तेहिज अनित्यचिन्तवना सामली. सोमल-ऋषि, गुणठाणे थके कीधी । तेहने अधर्म किम कहिये । ए ध्यान रो भेद बाहिरे किम कहिये । डाहाहुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २५ सम्पूर्णा ।

बली बाल तपः अकाम निर्जरा ने आज्ञा माही कहा ते पाठ लिखिये छै ।

मणुस्साउयकम्मा शरीर पुच्छा. गोयमा ! षगइ  
भइयाए. षगइ विणीययाए. साणुक्कोसणयाए. अमच्छ-  
रियत्ताए. मणुस्साउयकम्मा जावप्पओगवंधे. देवाउय-  
कम्मा. शरीर पुच्छा गोयमा ! सराग संजमेणं. जमासं-  
जमेणं. बालतवो कम्मेणं. अकामणिज्जराए. देवाउयकम्मा  
शरीर जावप्पओगवंधे ।

( भगवती शतक ८-३० ९ )

म० मनुष्यां ना आयु कर्म शरीर नी पृच्छा: हे गौतम ! प० स्वभावे भद्रकपणू परने परि-  
तापे नहिं प० स्वभावे विनीत पणै करीने. सा० दयाने परिणाम करीने. अ० अशमच्छराए  
तेणे करीने. म० मनुष्य नू आयु कर्म यावत् प्रयोगवंधे हुइ. दे० देवता ना आयु कर्म शरीर नी  
पृच्छा. हे गौतम ! सराग संयमे करीने. स० संयमासंयम तेदे० देशयती तेणे करीने. बा०  
बाल तप करवे करीने. अ० अकाम निर्जराहं. दे० देवता नू आयु कर्म. नाम शरीर यावत् प्रयोग  
बंध हुइ ।

अथ इहं चार प्रकारे मनुष्य नो आयुषो वंधे कहाँ । जे प्रकृति मद्गीक  
विनीत. दयावान्. अमत्सर भाव. ए चार करणी शुद्ध छै, आज्ञा माहि छै । ए  
तो दयादिक परिणाम साम्प्रत आज्ञामें छै । तेइने आज्ञा बाहिरे किम कहिए । अने  
मनुष्य तिर्यञ्चरे मनुष्यरो आयुषो वंधे । ते तो चार कारणे करि वंधे छै ।  
ते तो मनुष्य तिर्यञ्च प्रथम गुण ठाणे छै । सम्यग्दृष्टि मनुष्य तिर्यञ्च २ वैमानिक रो  
आयुषो वंधे ते माटे । अने जे दयादिक परिणाम अमत्सर भाव आज्ञा बाहिरे कहे तो  
तेहने लेखे हिंसादिक परिणाम मत्सर भाव आज्ञामें कहिणो । अने जो हिंसादिक  
परिणाम मत्सर भाव कपटाई आज्ञा बाहिरे कहे तो दयादिक परिणाम अमत्सर  
भाव संरल पणो आज्ञामें कहिणो । ए तो पांचरो त्याय छै । बली सराग संयम  
६ संयमासंयम ते श्रावक पणो ७ बाल तप ८ अकाम निर्जरा ८. ए चार कारणे  
करि देव आयुषो वंधे । इस कहाँ तो ए ४ चार कारण शुद्ध के अशुद्ध, सावध छै  
के निश्चय छै, आज्ञामें छै के आज्ञा बाहिरे छै । ए तो चार करणी शुद्ध आज्ञा

माहिली सूं देव आयुषो बंधे छै । अने जे वालतप. अकाम निर्जरा. ने आज्ञा बाहिरे कहे—तेहने लेखे सरागसंयम. संयमासंयम. पिण आज्ञा बाहिरे कहिणा । अने जो सरागसंयम. संयमा संयम. ने आज्ञामें कहे. तो वालतप. अकाम-निर्जरा. से पिण आज्ञा में कहिणा । ए वालतप. अकामनिर्जरा. शुद्ध आज्ञा माहि छै ते माटे सरागसंयम. संयमासंयम. रे मेला कछा । जो अशुद्ध होवे तो मेला न कहिता । अने जे सरागसंयम. संयमासंयम. तो आज्ञामें कहे । अने वालतप अकाम निर्जरा आज्ञा बाहिरे कहे ते आप रा मन सूं थाप करे, ते अन्यायवादी जाणवा । डाहा हुवे सो विचारि जोइजो ।

## इति २६ बोल सम्पूर्णा ।

बली गोशाला रे पिण पहवा तपना करणहार स्थविर कछा छै । ते पाठ लिखिये छै ।

आजीवियाणं चउव्विहे तवे ५० तं० उग्गतवे. घोर तवे.  
रसनिज्जुइणया. जिब्भंदिय पडिसंलीणया. ।

(अथांगठाय ४ उ० २)

आ० गोशाला ना शिष्यने. चा० चार प्रकारनो तप. ५० परूप्यौ. तं० ते कहे छै । उ० इह लोकादिकनी बांछा रहित शोभनतप. १ बो० आत्मानो अपेक्षा रहित तप २ २० घृतादिक रसनों परित्याग ३ जि० मनोज्ञ अमनोज्ञ आहारने विषे रागद्वेष रहित ४ ।

गोशाला रे स्थविर पहवा तपना करणहार कछा छै । उग्र तप १ घोर तप २ २ त्याग ३ जिह्मेन्द्रिय पशकीधी ४ । तेहनी छोटी श्रद्धा अशुद्ध छै पिण ए तप अशुद्ध नहीं ए तप तो शुद्ध छै आज्ञा माहि छै । ए जिह्मेन्द्रिय प्रति संलीनता को “भगवन्ते वारह भेद निर्जराना कछा” : तेहमे कही छै । उवाँहि में प्रति संलीनता ना ४ भेद किया । इन्द्रियप्रतिसंलीनता १ कप ति संलीनता २ योगप्रति संली-



न ता ३ विविक्त सयणासणसेवणया ४ । इन्द्रिय प्रतिसंलीनता ना ५ भेदा में  
रस इन्द्रियप्रति संलीनता "निर्जरा ना वारह भेद चाल्या" ते मध्ये कही छै । ते  
निर्जरा ने वाहिरे किम कहिये । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति २७ बोल सम्पूर्णा ।

वली बीजे संघरद्वार प्रश्न व्याकरण में श्रीवीतरागे सत्य ने तो  
प्रशंस्यो छै ते निरवद्य आह्वा माही छै । तिहां एहवो पाठ छै ।

अणोग पासंड परिगहियं. जं तिलोकम्मि सारभूयं  
गंभीरतरं महासमुद्धाओ थिरतरगं मेरु पठवआओ ।

(प्रश्न व्याकरण संवरद्वार २)

अ० अनेक पापंडी अन्य दर्शनी तेणे. प० परिग्रहो आदरयो । ज० ने. त्रिलोक माही सा०  
सारभूत वस्तु छै । तथा गं गाढोगंभीर अन्नोमित थकी. म० महासमुद्र थकी एहवा  
सत्यवचन. थि० स्थिरतरगाढो. मे० मेरुपर्वत थकी अधिक अचल ।

इहां कह्यो—सत्यवचन साधुने आदरवा योग्य छै । ते साथ अनेक पापंडी  
दर्शनी पिण आदर्यो कह्यो ते सत्यलोकमें सारभूत कह्यो । सत्य महासमुद्र थकी  
पिण गम्भीर कह्यो मेरु थकी स्थिर कह्यो एहवा श्रीभगवन्ते सत्यने बखानयो । ते  
सत्यने अन्यदर्शनी पिण धास्यो । तो ते सत्यने खोटो अशुद्ध किम कहिये ।  
वाहिरे बि कहिये । आह्वा वाहिरे कहे तो तेहनी ऊंधी श्रद्धा छै पिण निरवद्य  
सत्य श्री वीतरागे सरायो ते आह्वा वाहिरे नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति २८ बोल सम्पूर्णा ।

वली जीवाभिगमे जम्बूद्वीप नी जगतीने ऊपर वर वैदिका वनचंडने  
विषे चाणव्यन्तर क्रीड़ा करे तिहां एहवा पाठ कहा छै ।

तत्थणं वाण न्तरा देवा देवीओय आसयंति. सयन्ति.  
चिह्वंति. णिसीयंति. तुयंति. रमंति. ललंति. गेलंति.  
मोहन्ति, रा पोराणाणं सुचिणाणां सुपरि ताणं ज्ञा-  
णाणं णं णं णं फलवित्ति विशेषे णुभव-  
णा विहरंति ।

( जम्बुद्वीप पणत्ति )

त० तिहीं. वा. वाणव्यन्तर ना. देवी. देवता अने देवांगना. आ० छल पामी वसे छै। स०  
खे लांवी इं चि० वैसे ऊंचा चढ़ीने णि० पालटे छै तु० छले सूवे. र० रमे छै अन्नादिके.  
ल० लीला करे छै को० क्रीडा करे छै मो० जैथुन सेवा करे. पु० पूर्व कीबा छ० छवीर्यरूडा  
कीबा. छ० छपरिपक्व रूडा कीबा घर्मानुष्ठानादि क० कल्याणकारी. क० कीबा. क० कर्म  
क० कर फलविपाक प्रते. प० अनुभवतां भोगतां थकां. वि० विचरे छै।

अठै इम १०। ते वन ' ने विषे वाण ६ देवता देवी वैसे सूवे  
क्रीडा करे। पूर्व भवे भला पराक्रम फोड़व्या तेहना भोगवे एहवा श्रीतीर्थ-  
देवे १०। तो जे वाण व्यन्तर में तो सम्यग्दृष्टि नहीं व्यन्तर में तो  
मिथ्यात्वीज उपजे छै। जो मिथ्यात्वीरो सर्वअशुद्ध होवे तो श्रीतीर्थ-  
देवे १०। जे वाण व्यन्तर पूर्वभवे किया तेहना  
भोगवे छै। ए तो मिथ्यात्वी रा शील तपादिकने विषे भलो कह्यो छै। जो  
तिणरो म अशुद्ध हुवे तो भलो न कहिता। ए तो भली  
करणी करे ते माहि छै ते मिथ्यात्वीरो जे कह्यो। ते  
पूर्वले भवे मिथ्यादृष्टि पणे तप शीलदिक १:पराक्रमे करि पणे ।  
ते भणी श्रीतीर्थकरे र ना पूर्वना भवनो जे कह्यो। ते  
भली करणी ते आह्वामाहि छै ते करणीने बाहिरे कहे ते महा मूर्ख

।

जे श्रीजिन ना अज्ञान छै ते गुणठाणा रा घणी री शुद्ध करणीने  
अशुद्ध कहै, कहै आह्वा बाहिरे कहे संसार १० कहे। तेहने स निर-  
अ अ री ओल १ नही तिणखु करणीने बाहिरे कहे छै।

अने श्रीवीतराग देव तो प्रथम गुण ठाणा रा धणी री निरवद्य करणी ठाम २ शुद्ध कही छै आज्ञामें कही छै ते करणी थी संसार घटायां संक्षेप साक्षीरूप केतला एक चोल कहै छै । भगवती श० ८ उ० १० सम्यक्त्व विना करणी करें तेहने देश आराधक कह्यो तथा ज्ञाता अ० १ मेघकुमारने जीवे हाथीभवे दया करी परीत संसार करी मनुष्य नो आयुषो बांध्यो कह्यो । ( २ ) तथा सुख विपाक अध्ययन १ में सुमुखगाथापति सुदत्त अनगारने दात देय परीत संसारकरी मनुष्य नो आयुषो बांध्यो कह्यो । ( ३ ) तथा उत्तराध्ययन अ० ७ गा० २० मिथ्यात्वोने निर्जरा लेखे सुव्रती कह्यो । ( ४ ) तथा भगवती श० ३ उ० १ तामलीनी अनित्य चिन्तवना कही । ( ५ ) तथा पुष्पिका उपांगे अ० ३ सोमल ऋषिनी अनित्य चिन्तवना कही । ( ६ ) कोई अनित्य चिन्तवना ने अशुद्ध कहै तो भगवती श० १५ छन्नस्थपणे भगवन्तनी अनित्य चिन्तवना कही ( ७ ) तथा उवाई में अनित्य चिन्तावनाने धर्मध्यान री तेरहमो भेदकह्यो ( ८ ) तथा भगवती श० ६ उ० ३१ असोझा केवलीने अधिकारे-प्रथम गुणठाणा रे धणी रा शुभ अध्यवसाय, शुभपरिणाम, विशुद्धलेश्या, धर्म री चिन्तवना, अने अर्थमें धर्मध्यान कह्यो । ( ९ ) तथा जीवाभिगमे तथा जम्बूद्वीप पणत्ति में वाणव्यन्तर सुखपाय्या ते भलापराक्रमयी पाय्या कक्षा । ते वाणव्यन्तर में मिथ्या-द्वष्टि इज उपजै छै । ( १० ) तथा ठाणाङ्ग ठाणा ४ उ० २ गोशाला रे, स्थविरां रे ४ प्रकार री तप कह्यो । उग्रतप, घोरतप, रसपरित्याग, जिहा इन्द्रिय पडि संलीनता । ( ११ ) तथा दश वैकालिक अ० १ में संयम, तप, ए विह्वं धर्म कह्यो ( १२ ) तथा रायपसेणोमें सूर्योभ ना अभियोगिया वीतरागने वंदना कीधी । ते वन्दना करण री आज्ञा भगवान् दीधी, ( १३ ) तथा भगवती श० २ उ० १ भगवन्त ने वंदना करण री स्कंदक सन्यासी ने गौतम स्वामी आज्ञा दीधी । ( १४ ) इत्यादिक अनेक ठामे निरवद्य करणी ने शुद्ध कही । ते करणी ने अशुद्ध कहै आज्ञा बाहिरै कहै ते एकान्त मृवा-वादी जाणवा । डाहा हवे तो विचारि जोइजो ।

इति २६ बोल सम्पूर्णा ।

बली केतला एक अजाणजीव इम कहै—जो उवाई में कह्यो छै । पिता रा बिनय थी देवता थाय । तो मातापिता री बिनय करे ते सावध आज्ञा

बाहिरै छै । पिण तिण सावय थी पुण्यबंधे अने देवतां थाय छै । इम ऊंधी थाप करे तेहनो उत्तर । जे उवाई में घणा पाठ कहा छै । हाथी मारी खाय ते हाथी तापस पिण मरी देवता थाय इम कह्यो । मृग तापस मृग मारी खाय ते पिण मरी देवता थाय इम कह्यो । तो जे हाथीतापसः मृगतापसः देवता थाय । ते हाथी मृग मारे तेहथी तो थावै नहीं । पुण्यबंधे ते तापसादिक में अनेरा शील तप आदिक गुण छै तेहथी तो पुण्यबंधे अने देवता हुवे । तिम मातापिता नो बिनय करे तेहवा जीवां में पिण और भद्रकादि भला गुणाथी पुण्यबंधे देवता थाय । पिण मातापिता री शुभ्रवा थी देवता हुवे नहीं । गुण थी देवता हुवै छै । तिहां पहवो पाठ कह्यो छै ।

सै जे इमे गामागर नगर जाव सन्निवेशेसु मणुआ भवन्ति—पगति भद्रका पगति उवसन्ता. पगति पत्तणु कोह माण माया लोभा मिउ मदव संपन्ना अल्लीणा वीणिया अम्मा पिओ. उसुस्सुसका अम्मापित्ताणं अणतिक्कमणिज्जवयणा प्पिच्छा अप्पारंभा अप्प परिग्गहा अप्पेणं आरंभेणं अप्पेणं मारंभेणं अप्पेणं आरंभ समारंभेणं वित्तिकप्पेमाणा बहूइं वासाइं आउयं पालन्ति पालित्ता कालमांसे कालं किञ्चा अनुत्तरेसु वाणमंतरेसु देवत्ताए उववत्तारो भवन्ति, तच्चेय व्वणवरंठिति चोदसवास सहस्साइ ॥

( सूत्र उवाई प्रश्न ७ )

सै० ते० जे० गां० ग्राम आगर. नगर जावत. सै० सन्निवेश ने विषे. म० मनुष्य हुवे छै ( ते कहै छै ) प० प्रकृति भद्रक कुटिलपणां रहित प० प्रकृति स्वभाव जे क्रीडादिक उपशान्त्य छै । प० प्रकृति स्वभावे पतलाको० क्रोधमान माया लोभ मूर्च्छारूप छै जेहने मि० मृदुसुकोमल; म० अहंकार नो जीतवो तेणैकरी ने सहित; अ० गुरु ना चरख आधीते रखा. वि० विनीत सेव्य भक्ति ना करणहार अ० मातापिता ना सेवाभक्ति ना करणहार. अ० मातापिता नो ब्रुचन कथन उछवे नहीं. क० अल्पइच्छा मोटीवांछा जेहने नहीं । अ० अल्पयोगे आरंभ पृथिव्यादिक ना उपद्रव्य कर्पणादिक छै जेहने. अ० अल्पयोदो परिग्रह धनधान्यादि कनी मूर्च्छां छै जेहने । अ० अल्पयोदो आरंभ जीवनो विनाश जेहने तेणैकरी. अ० अल्प योदो समारंभ जीवनो परित्याग.

ઉપજાવિત્ જેહને છે તેણે કરી. અં અલ્પ થોડો જીવનો વિનાશ અને સમારંભ જીવને પરિતાપરૂપ છે જેહને તેણે કરી. વિં વૃત્તિ આજીવિકા કં કરતાં થકાં. વં ઘણા વર્ષ લગી આયુષો જીવિતવ્ય-પાલે પહોં આયુષો પ્રતિપાલીને કાં કાલ મરણ ના અવસર ને વિષે કાલમરણ કરી ને. અં ઘણા ઠામ છે તેમાહી અનેરો કોઈ ઇક. વાં વ્યન્તરના દેવલોક રહિવાના ઠામ ને વિષે દેં દેવતાપણે. ઝં ઉપપાત સમાહ ઉપજીવો લહે તં ગતિજાયવો આયુવાની સ્થિતિ ઉપપાત સર્વ પૂર્વલો પૈ. જં પતલો વિશેષ ડિં સ્થિતિ ચૌદહ સહસ્ર વર્ષ લગી હુઈ ।

અથ इहां तो भद्रकादि घणा गुण कहा । सहजे क्रोधमान मायालोभ

અલ્પ ઇચ્છા આરંભ અલ્પ સમારંભ પહવાગુણા કરિ દેવતા હુવે છે । તિવારે કોઈ કહે પતલા ગુણા મેં કહ્યા જે માતાપિતા રો વચન લોપે નહિ એ પિણ ગુણામેં ।ો તે ગુણજ છે । પિણ અવગુણ નહીં । અવગુણ હુવે તો ગુણામેં આળેં નહીં । એપિણ ગુણા મેં ।ો । ઇમ કહે તેહનો ઉત્તર—અહો મહાનુભાવો ! એ ગુણ નહીં એ તો પ્રતિપક્ષ વચન-છે । જે ઇહાં ઇમ કહ્યો સહજે પતલા ક્રોધ માન માયા લોભ, એ ક્રોધ-

માયા લોભ પતલા થોડા તે તો અવગુણજ છે । થોડા અવગુણ છે પિણ ક્રોધાદિક તો ગુણ નહીં પિણ પ્રતિપક્ષ વચને કરિ ઓલખાયો છે । પતલા ક્રોધા-દિક । તિવારે જાડા ક્રોધાદિક નહીં, એગુણ કહ્યા છે । વલો કહ્યો ઇચ્છા અલ્પ આરંભ અલ્પ સમારંભ એ પિણ પ્રતિપક્ષ વચને કરી ઓલખાયો છે । પરં અલ્પ આરંભ અલ્પ સમારંભ અલ્પ ઇચ્છા કહી । તિવારે ઇમ જાણીડ જે ઘણો ઇચ્છા નહીં એ ગુણ છે । એપિણ પ્રતિપક્ષ ને ઓ યો છે । તિમ એ પિણ ।ો માતાપિતા રો વિનીત । પિતા રો વચન લોપે નહીં. એપિણ પ્રતિપક્ષે વચને કરિ ઓલખાયો છે. જે માતાપિતા રા વિનીત કહ્યા । તિવારે ઇમ જાણીડ માતાપિતા રા અવિનીત નહીં ક્ષુદ્ર નહીં અયોગ્યતાં ન કરે કઝિયાઓડ વથોકડા ખંઘવંડ નહીં એગુણ છે । એપિણ પ્રતિપક્ષ વચન છે । અને જો । પિતા રો વિનીત તેહીજ ગુણથાય તો તિણરે લેલે અલ્પ એ અલ્પ આરંભ સમારંભ એ પિણ ગુણ કહિણા । જિમ થોડો આરંભ કહ્યાં ઘણો આરંભ નહીં ઇમ જાણીડ । તિમ માતાપિતા રા વિનીત અવિનીત કઝિયાઓડ નહીં. ઇમ જાણિયે । અને જો માતાપિતા રા વિનીત —તેહિજ ગુણ થાયસે તો ઇહાં ઇમ કહ્યો માતાપિતા રો વચન ડલ્લંધે નહીં । તિણરે લેલે એપિણ ગુણ કહિણો । જો એ ગુણ છે તો ધર્મ કરંતા પિતા વર્જે, અને ન માને તો એ વચન લોપ્યો તે માટે તિણરે લેલે અવગુણ કહિણો । સાંધુપણો લેતાં પણું

आदरतां सामायकपोषा करतां पिता ~ तो तिणरे लेखे धर्म करणो नहीं ।  
 ~ सामायकादि करे तो अविनीत थयो ते अवगुण हुवे तेहथी तो ~ हुवे नहीं ।  
 पाछो सुधो न मांवे अं ओले मतपक्षी हुवे ते लीधी  
 टेक छोड़े नहीं । अने विचारी ने छोटी टेक मिथ्यात्व छांडी सांची श्रद्धा धारे  
 ते न्यायवादी हल्लुकस्मी जीव जाणवा । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो

इति ३० वो सम्पूर्णा ।

इति मिथ्यात्वि क्रियाऽधिकारः ।



## अथ दानाधिकारः ।

अथ कोई कहे असंयती ने दीघां पुण्य पाप न कहिणो । मौन राखणी । अने पाप कहे ते आगला रे अन्तराय रो पाडणहार छै । उपदेश में पिण पाप न कहिणो । उपदेश में पिण पाप कहाँ आगलो देसी नहीं जद अन्तराय पड़े, ते भणी उपदेश में पिण पाप कहिणो नहीं, मौन राखणी । इम कहे तेहनो उत्तर—साधुरे मौन कही ते वर्त्तमानकाल आशी कही छै । देतो लेतो इसो वर्त्तमान देखी पाप न कहे । उण वेलां पाप कहाँ जे लेवे छै तेहनें अन्तराय पड़े ते माटे साधु वर्त्तमाने मौन राखे । तथा कोई अभिग्रहिक मिथ्यात्व नो घणी पूछै—तठे पिण द्रव्य भाव अवसर देखने बोलणो । पिण अवसर किना न बोले । जद आगलो कहै—जे वर्त्तमान में अन्तराय न पाडणी, अन्तराय तो तीनुहीं काल में णी नहीं । अने उपदेशमें पाप कहाँ आगलो देसी नहीं जद आगमिया काल में अन्तराय पड़ी कहे तेहने इम कहिणो । इम अन्तराय पड़े नहीं अन्तराय तो व १ नकाल में इज कही छै । पिण और वेलां अन्तराय कही नहीं । अ. उपदेशमें—हुवे जिसा फल बतायां अन्तराय थद्धे तिणरे लेखे तो किणहो ने दीघां पाप कहिणो नहीं । कसाई चोर भाल मेर मेंणा अनार्य स्लेच्छ हिंसक कुपात्रा ने दीघां पाप कहे तो तिणरे लेखे अन्तराय रो पाडणहार छै । बली अघर्मदान में पिण पाप किणही में कहिणो नहीं । पाप कहाँ आगलो देवे नही तो त्यारे लेखे उठे पिण अन्तराय पाड़ी, वेश्या ने कुकर्म करवा देवे, तिण में पिण पाप कहिणो नहीं । पाप कहाँ वेश्या ने देसी नहीं जद आगामीय काले अन्तराय पड़ती । धुर ने वाधिसाटे धान दीघां उपदेश में पाप कहिणो नहीं, पाप कहाँ देसी नहीं, तो तिणरे लेखे अन्तराय पड़सी । बली चरोटी जोमणवार मुकलाचो पद्विरावणी मुसालादिक नाटकियादिक ने दीघां—पिण पाप कहिणो नहीं, इहां पिण तिणरे लेखे अन्तराय पड़े छै । ती सगाई कियौ पिण पाप कहिणो नहीं । पाप कहाँ पुतादिक नी सगाई करे नहीं, जद पिण त्यारे लेखे अन्तराय पड़े । इण अद्रा रे लेखे कुपात्रदान में पिण

कहिणों नहीं । घली कोई नें सामायक पोषो करावणो नहीं । सामायक पोषा में कोई नें देवे नहीं । जद पिण इहां अन्तराय कर्म वंधे छै, इम अन्तराय श्रद्धे छै । तो ते बोल ते क्यूं सेवे छै । अन्तराय पिण कहिता जाय. अने पोते पिण सेवता जाय । त्यां जीवां नें किम समझाविये । अनें स्यगडाङ्ग अ० ११ गा० २० अर्थमें वर्त्तमानकाले निषेध्या अन्तराय कही छै । परं और में न कही । साधु गोचरी गयो गृहस्थ रा घर रे बाहिरने भिख्यारी ऊभो छै । ते वर्त्त काले देखी साधु तिण घरे गोचरी न जाय अनें साधु गोचरी गयां पछे भिख्यारी आवे तो तेहनी अन्तराय रे नहीं । तिम वर्त्तमानकाले देतो लेतो देखी पाप अन्तराय लागे । अनें उपदेश में हुवे जिसा फल बतायां अन्तराय लागे नहीं उपदेश में तो श्री तीर्थङ्करे पिण ठाम २ सूत्रां में असंयती नें दियां कडुवा फल कहा छै । ते साक्षीरूप कहे छे । भगवती श० ८ उ० ६ असंयती नें अशनादिक ४ संचित्त अचित्त सूक्तता असूक्तता दियां एकान्त पाप कह्यो ( १ ) तथा स्यगडाङ्ग श्रु० अ० १ अ० ६ गा० ४५ आर्द्रमुनि विप्र जिमायां नरक कहा ( २ ) तथा उत्तराध्ययन अ० १२ गा० १४ हरि कैशी मुनि ब्राह्मणां ते पाप कारिया क्षेत्र कहा ( ३ ) तथा उत्तराध्ययन अ० १४ गा० १२ पुरोहित भग्यु ने पुत्रां कह्यो विप्र जिमायां तमत्तमा जाय । ( ४ ) उपासक दशा अ० १ आनन्द श्रावक अभिग्रह भासो. जे हूं तीर्थियांने दान देवूं नहीं देवावूं नहीं । ( ५ ) तथा ठाणाङ्ग ठा० ४ उ० ४ कुपात्रा नें कुक्षेत्र कहा ( ६ ) उपासक दशा अ० ७ शकडाल पुत्र गोशाला ने सेज्या संयारो दियो तिहां “णो चैवण्णं धम्मोतिवा तवोतिवा” ( ७ ) तथा विपाक अ० १ मृगालोढा ने दुःखी देखि गोतम स्वामी पूछ्यो । इण काई कुपात दान दीधो तेहना ए फल भोगवे छै इम कह्यो । ( ८ ) स्यगडाङ्ग श्रु० १ अ० ११ गा० २० सावद्य दान प्रशंस्यां रो घाती । ( ९ ) तथा स्यगडाङ्ग श्रु १ अ० ६ गा० २३ गृहस्थ ने देवो साधां त्याग्यो ते संसार भ्रमण हेतु जाणी ने छोड्यो इम कह्यो । ( १० ) तथा निशीथ उ० १५ साधु गृहस्थ नें अशनादिक देवे देतां ने अनुमोदे तो चौमासी प्रायश्चित्त । ( ११ ) तथा स्यगडाङ्ग श्रु० १ अ० २ रौ खाणौ पीणौ नेहणौ में कहाँ । ( १२ ) ठाणाङ्ग ठाणा १० ने भावशस्त्र कह्यो । ( १३ ) इत्यादिक अनेक ठामे संयतो ने देवे तेहना । उपदेश में श्री तीर्थङ्करे । ते भणी उपदेश में अन्तराय लागे नहीं । उपदेश में छै जिसा



वतायां अन्तराय लागे तो मिथ्या दृष्टिरो सम्यग्दृष्टि किम हुवे । धर्म अधर्म री ओल-  
खना किम आवे ओलखणा तो साधुरी बताई आवे छै । डाहा हुवे तो विचारि  
जोइजो ।

## इति १ बोल सम्पूर्णा ।

हिंवे जे असंयती अन्यतीर्थी ना दान रा फल कहुआ सूत्र में कहा छै । ते  
पाठ मरोड़ी विपरीत । केतला एक करे छै । ते ऊँधा अर्थरूप मिटावा ने  
सिद्धान्त ना सहित देखाड़े छै । तो आनन्द श्रावक नो अभिप्रष्ट  
कहे छै ।

एणं से एणंदे गाहावइ एणस्स भगवओ महा-  
वीरस्स अंतिए पंचाणब्बइयं सत्त सिक्खावइयं दुव विहं  
। वागधम्मं पडिवज्जहि २ तास एं भगवं महावीरं वंदति  
नमंसति वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एणो खलु मे भंते !  
कप्पइ अजप्पभइओ अणए उत्थिएवा अणउत्थिय देव  
याणिवा अण उत्थिय परिग्गहियाणिवा अरिहन्त चेइयाति १  
वंदित्तएवा नमंसित्तएवा पुब्बिं अणालवि एणं आलवि  
एवा संलवित्त एवा तेसिं असणं वायाणं वा खाइ वा  
दाउ वा अणुप्पदाउ वा न त्थ रायाभि गेगेणं, गणाभिओगेणं  
वलाभिओगेणं देवाभिओगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्ती कंतारेणं ।

त० तिवारे आ० आनन्द गाथा पति. स० अमण भगवंत श्री महावीर स्वामी रे निकटे. पं० ५ अनुग्रह. स० ७ शिखारूप. दु० १२ प्रकार रा. सा० श्रावक धर्म. प० अंगीकार कीधो. करी नें. स० अमण भगवान् महावीर स्वामी बांधा. नमस्कार कीधी. बांढीने. न० नमस्कार करी नें. ए० इम. व० बोलया. शो० नहीं. ख० निश्चय करी ने. मे० मोने. अ० हे भगवन्त ! क० कल्पई. आज पळे अ० अन्य तीर्थी शक्यादिक. अ० तीर्थी ना देव हरि हरादिक. अ० अन्यतीर्थिये प० आपण करी ने ग्रह्या. अ० अरिहन्त ना. जे० साधु-ते नें. वं० वन्दना करवी न कल्पई पू० पहिलू. अ० बिना बोलाया तै हने. अ० एकवार बोलाविवो न कल्पे. स० बार बार बोलाविवो न कल्पे. ते० तेहने अ० अशनादिक ४ आहार दा० देवू नहीं. अ० अनेरा पाहे दिवरावू नहीं. ग० एतलो विशेष. रा० राजाने आदेशे आगार. ग० ब्रह्मा कुटुम्ब ना ने आदेशे आगार. २ व० कोई एक बलवन्त ने परवश पणे आगार ३ दे० देवता नें परवश पणे आगार. गु० कुटुम्ब में बड़े रो ते गुह कहिये तेहने आदेशे आगार. बि० अटवी कांतार ने बिषे कारणे आगार ६।

अटै भगवान् कने आनन्द १२ व्रत आदखा तिण हिज दिन ए अभिग्रह लीधौ। जे हूँ आज थी अन्यतीर्थी ने अने अन्यतीर्थी ना देव ने अने अन्य तीर्थी ना अरिहन्त ना ते साधु श्रद्धाम्रष्ट ए तीना नें बांदू नहीं नमस्कार नहीं। अशनादिक देवू नहीं देवावू नहीं। तिण में ६ आगार राख्या तै तो आपरी कचाई छै। परं धर्म नहीं। धर्म तो ए अभिग्रह लीधो तिण में छै। अने आगार तो छै। जो अन्य तीर्थी ने दिया धर्म हुबे तो आनन्द श्रावक ए अभिग्रह क्युं लियो। जे हूँ अन्य तीर्थी ने देवू नहीं दिवावू नहीं। ए पाठें रे लेखे तो अन्य तीर्थी ने देवो एकान्त सावद्य कर्म बंधनो कारण छै। तरे आनन्द छोड्यो छै। तिवारे कोई अशुक्ति लगावी कहे। ए तो तीर्थी धर्म रा द्वेपी निन्दक ने देवा रा कीधा। परं अनाथ ने देवारा कीधा नहीं। तेहनो उत्तर-पह जो ए में इज कह्यो। जे हूँ अन्य तीर्थी ने बांदू नही आहार देवू मही। ए हमें तो अन्य तीर्थी आया। सर्व अन्य तीर्थी ने बंदना अशनादिक नो निषेध गो छै अने जे कहे धर्म ना द्वेपी ने देणो छोड्यो। बीजा अन्य तीर्थियां ने देवा रो नियम लीधो नहीं। इम कहे ते हने लेखे तो धर्म ना द्वेपी ने वन्दना न करणी बीजां ने वन्दना पिण करणी। ए तो बेहू मेला छै। जो बीजा गरीब अन्यतीर्थी ने अशनादिक दियां पुण्य कहे तो तिणरे लेखे ते तीर्थियां ने वंदना कियां पिण पुण्य कहिणो। अने जो बीजा गरीब तीर्थी ने वंदना वि पुण्य नहीं तो अशनादिक दियां पिण पुण्य नहीं। ए तो पाधरो न्याय छै। जे

તીર્થિયાં ને વંદના નમસ્કાર કરણ રા ત્યાગ પાપ જાણી ને ક્રિયા તો અન્નાદિક દેવા રા ત્યાગ પિણ પાપ જાણ ને ક્રિયા છે । પહિલા તો વન્દના રો પાઠ અને પછે અશનાદિક દેવો છોડ્યો તે પાઠ છે । તે વિઠ્ઠ પાઠ સરીખા છે । વલી આગાર રો નામ લેવે છે તે છવ આગાર થી તો અન્ય તીર્થી ને વન્દના પિણ કરે અને દાન પિણ દેવે । જે રાજાને આદેશે અન્ય તીર્થી ને વન્દના પિણ કરે દાન પિણ દેવે । (૧)

સમુદાય ને આદેશે (૨) ચલચન્ત ને જોડે (૩) દેવતા ને આદેશે (૪) વઢેરા રે (૫) ૫ પાંચ કારણે પરવશ પળે કરી અન્ય તીર્થી ને વન્દના પિણ કરે દાન પિણ દેવે । અને છઠો “વિત્તી કંતાર” તે અટવી આદિક ને વિષે અન્ય તીર્થી આવ્યા છે । તો એને અને રા લોક વન્દના કરે , દાન દેવે છે । તો તેહના કથા થી લજ્ઞાઈ કરી વન્દના પિણ કરે દાન પિણ દેવે । ૫ લજ્ઞાઈ દેવે વન્દના કરે તે પિણ પરવશ । જે રાજાને આદેશે તે પિણ રાજા રી લાજરૂપ પરવશ પળો છે । ૬મ છઠ્ઠ આગાર પરવશ પળે વન્દના કરે દાન દેવે । જો છઠા આગાર મેં દાન મેં ધર્મ કહે તો વન્દના મેં પિણ ધર્મ કહિણો । અને જો વન્દના મેં ધર્મ નહીં તો તે દાન મેં પિણ ધર્મ નહીં ૫ તો છવ આગાર છે । તે આપ રી કચાઈ છે, પિણ ધર્મ નહીં । જો યાં ૬ આગારાં મેં ધર્મ હુવે તો સામાયિક પોષા મેં ૫ આગાર કયૂં ત્યાગ્યો । ૫ તો આગાર માઠા છે । તરે છાંડે છે ધર્મ ને તો નહીં । જિસા પાંચ આગારાં મેં હુવે તેહિજ ફલ આગાર નો છે । કાહા હુવે તો વિચારિ જોડજો ।

## इति २ बोल सम्पूर्णा ।

કોઈ કહે—અન્ય તીર્થી ને દેવા રા આનન્દે ત્યાગ કીધા પિણ ને દેવા રા ત્યાગ નથી કીધા । તે માટે અન્યતીર્થી ને દેવા નો છે પરં અસંયતી ને દિયાં પાપ નહીં . યતી ને દિયાં . કણો હુવે તો થતાવો । તે યતી ને દિયાં પાપ કણો છે । તે પાઠ લિખિયે છે ।

समणो गरुणं भन्ते ? तहारुवं असंजय. विरय.  
पडिह. प व य वकम्मे पासुएणवा अफासुएण ए -  
णिज्जेणवा सोसणिज्जेणवा एपाण जाव किं कज्जह  
गोयमा ? एगंतसो पावे म्मे कज्जइ नत्थि से इ  
निज्जरा कज्जइ ।

( भगवती ग० प० ६ )

स० भ्रमणोपासक. भ० हे भगवन्त ! त० तथा रूप असंयती. अ० भ्रमतो अ० नथी  
प्रतिहृष्या प० करी नें. प० पापकर्म जेणे, एहवा असंयतो नें. क० प्राशुक. अ०  
अप्राशुक. ए० एषणीय दोष रहित. अ० . पा० पाणी. जा० यावत्त दोधां स्यूं फल हुने.  
हे गौतम ! ए० एकान्त ते पापकर्म. क० दुई. श० नथी. ते० तेहने. का० काई. शि० निर्जरा.  
एतले निर्जरा न हई ।

अठे तथा रूप यती नें फासु असासु सुभूतो असुभूतो अशना-  
दिक देवे ते श्रावकने एकान्त पाप हो छै । अने जो उपदेश में पिण मौन राखणी  
हुवे तो इहां एकान्त पाप क्यों कह्यो । इहां केतला एक अयुक्ति छै । इम कहै.  
ए तथा रूप असंयती ते अन्य तीर्थो ना वेप सहित मतनो धणी ते तथा रूप  
यती तेहने "पड़िलाम भाणे" कहितां साधु जाणी ने दीधां एकान्त पाप कह्यो छै ।  
ते दीधां रो पाप नहीं छै । ते तथा रूप असंयतीने साधु जाणया मिथ्यात्वरूप पाप  
लागे ते एकान्त पाप मिथ्यात्व ने कहीजे । यहवो विपरीत अर्थ करे छै । तेहने  
कहीजे ए अन्य तीर्थो ना वेपसहित यती तो तुम्हे कह्यो छै तो ते  
तीर्थो नो श दीखे तेहने साधु किम जाणो । ए तो साक्षात् अन्य तीर्थो  
दीसे तेहने श्रावक तो साधु जाणे नहि । अने इहां दान देवे ते पोप  
श्रावक कह्यो छै । "समणोवासपणंभंते" यहवूं छै । ते माटे अन्यतीर्थी ते  
श्रावक तो साधु जाणे नहीं । ते इहां सचित्त अचित्त सुभूतो असुभूतो देवे कह्यो  
तो श्रावक साधु जाणने सचित्त असुभूता ४ आहार किम वहिरावे ते माटे ए तो  
मिले नहीं । वली जे कहै छै देवा रो पाप नहीं साधु ए  
ते मिथ्यात्व लागे । ए पिण विपरीत करे छै । देवा रो कह्यो पिण

जाणवा रो पाठ इज नहीं । इहां तो गोतम पूछ्यो । तथा रूप असंयती ने सचित्त अचित्त सूक्तो असूक्तो ४ आहार आबक देवे तेहने स्यूं हुवे । इम देवा रो प्रश्न चांल्यो, पिण इम न ॥ साधु जाणे तो स्यूं हुवे इम जाणवा रो प्रश्न तो न ॥ जो जाणवा रो प्रश्न हुवे तो सचित्त अचित्त सूक्तता असूक्तता वली ४ आहार ना क्यूं कहा । ए तो प्रत्यक्ष दान देवा रो इज प्रश्न कियो । तिण सूं ४ आहार ना नाम चाल्या । तिण दीधां में इज भगवन्ते एकान्त पाप कश्यो छै । वली एकान्त पाप मिथ्यात्व ने इज कहे । ते पिण केवल मृदावाद ना घोलण हार छै । जे ठाणांगे ४ सुखशय्या कही तिणमें सुखशय्या निःशङ्कपणो, बीजी परलाभनो अनवांछवो—तीजी काम भोगने अणवांछवो, चौथी वेदना समभावे सहिवूं । ते चौथी सुखशय्या नो लिखिये छै ।

अहावरा चउत्था सुहसेज्जा सेणं मुण्डं जावपव्वइए तस्सएणमेवं भवइ जइ ताव अरिहंता भगवन्ता हट्ठां आरोग्गां वलियां कल्लसरीरा अन्नयराइं, ओरालाइं, कल्लाणाइं, विउलाइं, पयत्ताइं, पग्गहियाहिं, हाणभागाइं, षडयकरणाइं, तवोकम्माइं, पडिज्जंति, किमंगपुणं हं अज्झोवगमिओ व मियंवेयणं णो सम्मं सहामि, मि, तितिक्वेमि हियासेमि समंचणं अज्झोवगमिओ भि सम्ममसहमाणस्स अखममाणस्स अतितिक्वेमा- णस्स अणहियासेमाणस्स किमण्णेकज्जइ एगंतसो पावे कम्मे कज्जइ ममंचणं मज्झोवगमिओ जाव सम्मं सहमा- णस्स जाव अहियासे माणस्स किमण्णे कज्जइ, एगंतसो मेणिज्जरा कज्जइ चउत्था सुहसेज्जा ।

अ० अथ हिंसे अ० अवर अनेरी. च० चउथी छुवशय्या. से० ते मुंड थई. जा० यावत्. प० प्रवज्यां लेई नें. त० ते साधु ने. ए० इम मनमांहि. भ० हुइ. ज० जो. ता० अ० अरिहन्त. भ० भगवन्त. ह० शोकने अभावे हरण्यानी परे हण्यो. अ० ज्वरादिक वर्जित. ब० क्लवन्त. क० परवडू शरीर. अ० अनशनादिक तप मांहिलू अनेरू शरीर. उ० अनशादिक दोष रहित युक्त. क० मंगलीकरू. वि० घणा दिन नो. प० अति हि संयम सहित. प० आदर पण पढिवज्या. म० अत्यन्त शक्ति युक्त पणो अदि नो करणहार. क० मोक्ष ना साधना थी कर्मज्ञय जु करणहार त० तप कर्म तर क्रिया. प० पढिवज्जै सेवै। किं० प्रश्ने अंग ते आमन्त्रणो अलंकारे. पु० चलो पूर्वोक्तार्थ नू विलक्षण पणू दिखाइवाने अर्थे. अ० हुं. भ० जे उदेरी लीजिये ते लोच ब्रह्मचर्यादिके. उ० आयुषो उपक्रमिये उलंघईये एण्णे करी ते ज्वरातिसारादिक नी वेदना स्वभावे उपजे. नो० नहीं. सं० सन्मुख पणो करी जिम. बेरी ना थार समूह ने साहमो थाइ ने लेवे तिमि वेदना थकी भाजू नहीं. ख० कोपरहित अदीनपणो लम्. अ० रुडी परै अहीयासू ए शब्द सर्व एकार्थज छै। म० मुक्त ने अम्युपगम की लोचादिक नी उ० की ज्वरादिक नी वेदना. स० सम्यक् प्रकारे अणसहितां ने. अ० अणखमता ने. अ० अदीन पणो अणखमतां ने. अ० अण अहियासताने. किं० वितर्क ने अर्थे. क० हुइ. ए० एकान्त. सो० सर्वथा मुक्त ने. पा० पाप कर्म. क० हुइ. एतलो जो ती सरीला पुण. तपादिक नो सई छै. तो हुं अज्जकोवगमिया अने उवक्कमिया वेदना किम न सहुं जो न सहुं तो एकान्त पाप कर्म लगे. अने जो. म० मुक्त ने. अ० ब्रह्मचर्यादिक ना. ता० तावत्. स० सम्यक् प्रकारे. स० सहताथकां. जाव अ० अहियासतां थकां. किं० वितर्क ने अर्थे. ए० एकान्त. सो० ते मुक्त ने निर्जरा क० थाइ ।

अथ अठे इम कह्यो—जे साधु ने कष्ट उपनें इम विचारे, जे अरिहन्त भगवन्त निरोगी काया रा धणी कर्म खपावा भणी उदेरी ने तप करै छै। तो हुं लोच-ब्रह्मचर्यादिक नी तथा रोगादिक नी वेदना किम न सहुं। एतले ए वेदना भाव अणसहितां मुक्त ने एकान्त पाप कर्म हुइ। अनें समभावे वेदना सहितां मुक्त ने एकान्त निर्जरा हुई। इहां साधु ने पिण वेदना अणसहिवे एकान्त पाप कह्यो। जे एकान्त पाप मिथ्यात्व ने कहै छै तो साधु नें तो मिथ्यात्व छै इज नथी। अनें वेदना अणसहिवे एकान्त पाप कह्यो छै। ते माटे एकान्त पाप ने मिथ्यात्व इज कहै छै। ते भूडा छै। इहां पाप रो नाम इज एकान्त पाप छै एकान्त शब्द तो पाप ना विशेषण ने अर्थे कह्यो छै। जे साधु वेदना सहे तो एकान्त निर्जरा कही छै। इहां पिण एकान्त विशेषण ने अर्थे कह्यो छै। तथा भगवती श० ८ उ० ६ साधु ने निर्दोष दियां एकान्त निर्जरा कही छै। तथा भगवती श० १ उ० ८ अत्रती

ने एकान्त बाल कह्यो साधु ने एकान्त पण्डित कह्यो । इत्यादिक अ ठामे एकान्त शब्द कहा है, एक पाप है पिण बीजो नहीं ! अन्त कहितां निश्चय करके तेहने एकान्त पाप कहिये । हेम नाममाला में ६ काण्ड में ६ वां श्लोक “निर्णयो निश्चयोऽन्तः” इहां अन्त नाम निश्चय नो कह्यो है । तथा तृती श० ७ उ० ६ “एकान्तमर्तगच्छइ” ए पाठ में एगन्त शब्द कह्यो है । तेहनो अर्थ टीका में इम कह्यो है । ते टीका—

“एगमिति—एक इत्येवमंतो निश्चय एवासावेकान्तः इत्यर्थः”

एहनों अर्थ—एक अन्त कहितां निश्चय ते एकान्त, एतले कहो भावे अन्त कहो । इम अन्त कहितां निश्चय कह्यो है अन्त कहितां निश्चय करो पाप ते एकान्त पाप है । एक पाप इज है पिण और नहीं इम निश्चय शब्द कहियो । एकान्त शब्द नो भ्रम पाड़ी एकान्त पाप मिथ्यात्व ने इज ठहिरावे है ते मृपा-चादी है । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ३ बोल सम्पूर्णा ।

बली “पड़िलाभमाणे” ए शब्द थी साधु जाणी देवे इम थापे है । ते पिण झूठा है । ए “पड़िलाभमाणे” तो देवा नो है । इहां साधु नो तो नाम चाल्यो नहीं । ए तो ‘पड़ि’ कहतां परि उपसर्ग है । अने लाभ ते “लभ-आपणे” आपण अर्थ ने विषे लभ् धातु है । ते पर अनेरा ने वस्तु नो लाभ तेने पड़िलाभ कहिइ । साधु जाणी ने श्रावक देवे तिहां “पड़िलाभ माणे” पाठ कह्यो तिम साधु ने असाधु जांणी हेल्या निन्दा अवज्ञा करे कोई धर्म रो द्वेषी अपमान देइ जुहर सरीखो अमनोइ आहार देवे तिहाँ पिण “पड़िलाभ माणे” पाठ कह्यो है । ते प्रते लिखिये है ।

कह्यां भंते ! जीवा असुभदीहाउ यत्ताए भं प रंति  
ओ ! पाणे अखाएत्ता सुसंवइत्ता तहारुवं समणंवा

हणंवा हीलित्ता निंदित्ता खिसित्ता गरहित्ता वमणित्ता  
अरणपरेणं अमणुणोणं अप्पोय कारणेणं सणपाण इम  
साइमेणं पडिलाभित्ता एवं लुजीवा जाव पकरेति ।

( अ० श० ५ उ० ६ तथा ठण्णङ्ग-ठा० ३ )

क० किम् भ० हे भगवन्त जी० जीव ! अ० अशुभ दीर्घ आयुषा प्रति प० बांधे० हे  
गौतम ! पा० प्राणजीव प्रति अति हृषी नैं सृषा प्रति व० बोली नैं तहा० तथा रूप दान देवा जोग  
स० अमण वें प० पोते श्री निवृत्यो छै अने दूजाने कहे माहणस्यो ते माहणने ही० हेलणा  
ते जातिनू उघाड वू तेणे करी नि० निन्दासन करोनें खि० खिसन ते जन समझ ग० गर्हण तेहनीअ  
साखै । अ० अपमान अन् ऊभायाव वू अ० अनेरो एतलावाना माहिलू एक अ० अमनोज्ञ  
अ० अप्रीति कारक अ० अशन पा० पाणी खा० खादिम सा० स्वादिम प० प्रतिलाभी ने  
ए० इम ख० निश्चय जी० जीव अशुभ दीर्घायु बांधे ।

अठ अठे कह्यो । जीवहणे भूठ बोले साधुरी हेल निन्दा अवज्ञा करी  
अपमान देई अमनोज्ञ अप्रीति कारियो अशनादिक प्रतिलाभे । तेहने अशुभ दीर्घायु  
पो बांधे पढ़ूं छै । तो ये साधु जाणी ने हेल निन्दा अवज्ञा किम करे । वली  
साधु ने गुरु जाणी तेहने अप किम करे । वली गुरु जाणी ने अमनोज्ञ अप्रीति  
कारियो आहार किम आपे । ए तो प्रत्यक्ष देणेवालो धर्म रो द्वेषी छै । साधु ने  
खोटा जाणी हेल निन्दा अवज्ञा करी अपमान देई अमनोज्ञ अप्रीतिकारियो जहरे  
सरीखो आहार देवे छै तिहां पिण "पडिलाभित्ता" पढ़वो पाठ कह्यो छै । ते माटे जे  
कहें "पडिलाभमाणे" कहितां गुरु जाणो देवे पढ़वूं कहे ते भूठा छै । "पडिलाभ-  
माणे" कहतां देतो थको इम अर्थ छै पिण साधु असाधु जाणावा रो अर्थ नहीं ।  
आहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## ति ४ लेख सम्पूर्णा ।

वली साधु ने मनोज्ञ आहार वहिरा वे तिहां पिण "पडिलाभमाणे" पाठ  
छै । ते लिखिये छै ।

कहणं भंते ? जीवा शुभ दीहाउयत्ताए कम्मं पक-  
रंति गोयमा ? नोपायो इवाएत्ता नो मुसं वइत्ता तहारूवं



समखांवा हखांवा वंदित्ता जाव पज्जुवासेत्ता. राण्यरेणं  
मण्युरेणं पीइकारएणं असणं पाणं खाइमं साइमं पडि-  
लाभित्ता एवं खलुजीवा आउ पकरेति ।

( भगवतो श० ५ उ० ६ )

क० किम् भ० हे भगवन्त ! जी० जीव. ख० शुभ दीर्घआयुवा नो. क० कर्म व० बांधे हे  
गौतम ! खो० जीव प्रति न हणो. खो० सुखा प्रति नहीं बोले. तथाखु स० भ्रमण प्रति मा०  
माहण ब्रह्मवारी प्रति. व० बाँदे बाँदी ने. जा० यावत् प० सेवा करो ने. अ० अनेरो.  
म० मनोज्ञ. पी० प्रीतिकारी भलो भाव कारी. अ० अथन. पा० पाणी. खा० खादिम सा०  
स्वादिम. प० प्रतिलाभी ने. ए० इम. ख० निश्चय जी० यावत् शुभ दीर्घायु बांधे ।

अठे इम कह्यो । साधुने उत्तम पुरुष जाणी वन्दना नमस्कार करी  
सन्मान देई मनोज्ञ प्रीति कारियो अशनादिक प्रतिलाभ्यां शुभ दीर्घायुषो ।  
इहां “पडिलाभित्ता” कह्यो । तिम हिज “पडिलाभित्ता” पाछिले आलावे  
कह्यो । जे साधु ने भलो जाणी सा करी ने मनोज्ञ आहार देवे । तिहां “पडिला-  
भित्ता” पाठ कह्यो । तिम साधु ने खोटो जाणी हेलनादिक करी अमनोज्ञ आहार  
देवे तिहां पिण “पडिलाभित्ता” कह्यो । ए साधु जाणी देवे अने असाधु जाणी  
ने देवे । ए विहं ठिकाने “पडिलाभित्ता” कह्यो । वली मनोज्ञ आहार देवे  
अमनोज्ञ आहार देवे ए विहं में “पडिलाभित्ता” पाठ कह्यो । वली वन्दना नमस्कार  
सन्मान करी देवे, हिला निन्दा अवज्ञा अपमान करी देवे ए वेहं में “पडिला-  
भित्ता” कह्यो । शुभ दीर्घ आयुषो बांधे तथा अशुभ दीर्घायुषो बांधे ए विहं में  
“पडिलाभित्ता” नाम देवा नो छै । पिण साधु जाणवा रो कारण नहीं. डाहा  
हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ५ बोल सम्पूर्णा ।

तथा वली गुरु जाण्या विना देवे. तिहां पिण “पडिलाभित्ता” कह्यो  
छै । ते लिखिये छै ।

त्तेणं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ  
पासति रत्ता हट्ठुत्ता । सणातो अब्भुट्ठेति रत्ता वंदइ रत्ता  
विपुल असणं ४ पड़ि । भेति २ ता एवं वयासी ।

( ज्ञाता अ० १४ )

स० तिवारे. सा० तिका. पोट्टिला. ता० ते. अ० आर्या महासती ने. प० ज्ञावती. पा०  
देखे देखीने. ह० हर्ष संतुष्ट पामो. आ० आसरा यती अ० उठे उठीने. वं० वादे वादीने वि०  
विस्तीर्ण अ० दिक् ४ आहार. प० प्रतिलाभीने-प० इस ओले ।

अथ अडे पोट्टिला—श्रावकरा व्रत आदसां पहिलां आर्यां नें अशनादिक  
प्रतिलाभी पछे तेतली पुत्र भर्त्तार वश हुवे ते उपाय पूछ्यो । एहवूँ कह्यो । इहां  
पिण अशनादिक पड़िलाभे इम कह्यो । तो ए गुरुणी जाणीने यन्त्र मन्त्र वशीकरण  
वार्त्ता किम् पूछे । जे साधवी नें गुरुणी जाणी ने धर्मवार्त्ता पूछवानी रीति छै ।  
पिण गुरुणी पाशे मन्त्र यन्त्रादिक किम करावे । वली श्रावक ना व्रत तो पाछे  
आदसा छै । तिवारे गुरुणी जाणो छै । ते माटे पहिलां अशनादिक प्रतिलाभ्या ते  
वेलां गुरुणी न जाणी गुरु पछे धासा । ते माटे पड़िलाभेइ नाम देवा नें छै ।  
पिण साधु जाणवा रो नहीं । जिम पोट्टिला अशनादिक प्रतिलाभी वशीकरण  
वार्त्ता पूछी तिम हीज ज्ञाता अ० १६ सुखमालिका पिण साधवीयां ने अशनादिक  
प्रतिलाभी यन्त्र मन्त्रादिक वशीकरण वार्त्ता पूछी । इम अनेक ठामे गुरु या  
विना अशनादिक दिया तिहां “पड़िलाभेइ” इम जो छै । ते माटे “पड़िलाभेइ”  
साधु जाणवा रो नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ६ बोल सम्पू ।

तिवारे केतला इम कहे—जे साधु ने देवे तिहां तो “पड़िलाभ माणे”  
एहवो छै । पिण “दलएज्जा” एहवो पाठ नहीं । अने साधु विना अनेरा ने  
देवे तिहां “दलएज्जा” एहवो पाठ छै । पिण “पड़िलाभेज्जा” एहवो पाठ नहीं ।

इम अयुक्ति लंगावे. तेहनो उत्तर—जे “पडिलाभेजा” अने “दलपजा” ए वेहं ए-  
कार्य छै । जे देवे कहो भावे पडिलाभे कहो । किणही ठामे तो साधु ने देवे  
तिहां “पडिलाभ माणे” कह्यो । अने किणही ठामे साधु ने अशनादिक देवे तिहां  
“दलपजा पाठ कह्यो छै । ते पाठ लिखिये छै ।

से भिक्खू वा (२) जाव समागो सेज्जं पुण जागो ।  
असणंवा (४) कोट्ठियातो वा कोलज्जातो वा असंजए भिक्खु  
पडियाए उक्कुजिया अवउज्जिया ओहरिया आहए दलए  
तहप्पगारं असणंवा मालोहडन्ति ए । लाभेसंते एो  
पडिगाहेज्जा ।

(आचारांग ध्रु० २ अ० १ उ० ७)

से० ते साधु साध्वी. जा० यावत् गृहस्थ ने घरे गयो थको. से० ते. जं० जे. पु०  
बली. जा० जाणे. अ० अशनादिक ४ आहार. को० कोठी माटी नी तेहमाही थकी. को०  
बांस नी कोठी तेहमाही थकी. अ० असंयती गृहस्थ. मि० साधु ने. प० अर्थ. उ० ऊपरलो  
शरीर नीचो नमाडी कूवड़ा नी परे थई देवे. अ० मांहि पेसो, एतले नीचलो शरीर माही पेसो  
ऊपरलो शरीर बाहिर इणी परे करो. अ० आणी ने. द० देई. त० तथा प्रकार नों तेहवो.  
अ० अशनादि ४ आहार. सो० ए मालोहड भिन्ना. ए० जाणी ने. ला० लाभे थके. नो०  
नं. लेई ।

अर्थ इहाँ साधु ने अशनादिक बहिरावे तिहां पिण “दलपजा” पाठ  
कह्यो छै । ते माटे “दलपजा” कहो भावे “पडिलाभेजा” कहो । ए विहं एकार्य  
छै ते माटे जे कहं साधु ने बहिरावे तिहां “पडिलाभेजा” कह्यो पिण “दलपजा”  
न कह्यो । इम कहे ते झूठा छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

ति ७ बोल सम्पूर्णा ।

अने जे कहे साधु बिना अनेरा जे देवे—तिहां “पडिलाभेजा” न  
कह्यो । “पडिलाभेजा” पाठ साधु रे ठिकाणे इज थापे ते पिण झूठा छै । साधु

विना अनेरा नें देवे तिहां पिण "पड़िलाभमाणे" पाठ कह्यो छै ते पाठ कहिये छै ।

ततेणं सुदर्शणो सुयस्स अंतिए धम्मं सो । इद्व तुद्व  
सुयस्स तियं सोयमूलयं ध गेहइ २ ता परिव्वाइएसु  
विपुलेणं सणं पाणं खाइमं साइमं वत्थ पड़िलाभेमाणे  
विहरइ ।

( ज्ञाता अ० ५ )

त० तिवारे. सु० सुदर्शण. सु० शुक्देव ने. अ० समीपे. ध० धर्म प्रते. सो० सांभली  
ने. हपं संतोष पामें. सु० शुक्देव ने. अ० समीपे. सो० शुचि मूल. ध० धर्म प्रते. गे० गेह  
ग्रही ने. प० परिआजकां ने. वि० विस्तीर्ण. अ० अशनादिक आहार. प० प्रतिलाभ तो  
थको. जा० यावत्. वि० विचरे ।

अथ अठे सुदर्शन सेठ शुक्देव सन्यासी ने विस्तीर्ण अशनादिक प्रतिलाभ  
तो तो विचरे । पहवूं थों तीर्थङ्करे कह्यो । ए तो प्रत्यक्ष अन्य तीर्थी ने देवे तिहां  
पिण "पड़िलाभमाणे" पाठ भगवन्ते कह्यो । तो ते अन्य तीर्थी ने साधु  
कहिये । ते माटे जे कहे साधु विना अनेरा नें देवे तिहां "दलएज्जा" पाठ छै  
पिण पड़िलाभ माणे पाठ नहों ते पिण झूठा छै । अतः कोई कहै शुक्देव तो  
सुदर्शन नीं गुरु हुन्तो ते माटे ते सुदर्शन शुक्देव ने अशनादिक प्रतिलाभतो, ते  
गुरु जाणी बहिरावतो विचरे । इहां सुदर्शन नी अपेक्षाइ ए पाठ छै । इम कहे  
तेहनो उत्तर—इहां "पड़िलाभमाणे" कहितां सुदर्शन गुरु जाणी प्रतिलाभ तो थको  
विचरे तो. भगवती श० ५ उ० ६ । अशुभ दीर्घ आयुपो ३ प्रकारे बंधे ।  
तिहां पिण तो, जे साधु नी हेला निन्दा अवज्ञा करी अपमान देई अमनोश  
( अप्रीतिकारियो ) आहार "पड़िलाभित्ता" कहितां प्रतिलाभतो कह्यो । तिणरे  
लेखे ए पिण गुरु जाणी प्रतिलाभतो कहिणो, तो गुरु जाणी हेला निन्दा अवज्ञा  
किम करे । अपमान देई अनोख ( अप्रीतिकारी ) जहर सरीखो आहार गुरु जाणी

किम् प्रतिलाभे । ए तो वात प्रत्यक्ष मिले नहीं "पड़िलाभेइ" नाम तो देवा नों छे ।  
पिण गुरु जाणी देवे इम नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ८ बोल संपूर्ण ।

एतलें कह्यो थके समझ न पड़े तो प्रत्यक्ष "पड़िलाभ" नाम देवानों छे ।  
ते सूत्र पाठ कहे छै ।

दक्षिणाय पडिलंभो अस्थिवा नस्थिवा पुणो ।  
नविपागरेज्ज मेहावो संति मग्गंच वूहए ॥

(सुपगडांग श्रु० २ ल० ५ गा० ३३)

द० दान तेहनों. प० गृहस्थे देवो लेणहार नें लेवो इसो ज्यापार वर्त्तमान देखी. अ०  
अस्ति नास्ति गुण दूषण काँई न कहे गुण कहिता असंयम नी अनुमोदना लागे. दूषण कहितां  
वृत्तिच्छेद थाय. इण कारण न० अस्ति नास्ति न कहे मे० मेहावो हिपे साधु किम बोले. स०  
ज्ञान दर्शन चारित्र रु३. बु० वधारे गृतावता जिण ववन बोलयां. असंयम सावय ते थाय तिम न  
बोले ।

अथ अठे कह्यो : "दक्षिणाय" कहितां दान नों "पडिलंभो" कहितां देवो  
एतले गृहस्थ ने दान देवे, तिहां साधु अस्ति नास्ति न कहे मौन राखे । इहां  
पिण "पडिलंभ" नाम देवानों कह्यो । ए गृहस्थादिक ने दान देवे तिहां "पडिलंभ"  
पाठ कह्यो । जे "पडिलंभ" रो अर्थ साधु गुरु जाणी देवे, इम अर्थ करे छै । तो  
गृहस्थ ने साधु जाणी किम देवे । ए गृहस्थ ने साधु जाणे इज नहीं, ते मटे  
"पडिलाभ" नाम देवानों इज ही छै । पिण साधु जाणी देवे इम अर्थ नहीं । इम  
घणे ठामे "पडिलाभ" नाम देवानों कह्यो छै । सूत्रनों न्याय पिण न मानें तेहनें  
मिथ्यात्व मोह नों उदय प्रवल दीसे छै । भगवती श० ५ उ० ६ तथा ठाणाङ्ग  
ठाणे ३ साधु ने उ जाणी वन्दना नमस्कार भक्ति करी मनोज्ञ आहार देवे  
तिहां पिण "पडिलामित्ता" पाठ कह्यो (१) तथा साधु खोडो जाणी हेला, निन्दा.

अवज्ञा अपमान करी जहूर सरीखो अमनोश आहार देवे तिहां पिण “पडिलासिता” पाठ कह्यो । (२) तथा आचाराङ्ग श्रु० २ अ० १ उ० ७ साधु ने आहार बहिरावे तिहां पिण “दलएज्जा” पाठ । (३) तथा ज्ञाता अ० १४ पोटिला आवक ना व्रत धासां पहिलां साध्वीयां नें अशनादिक दियो तिहां “पडिलाभेइ” पाठ कह्यो पछे वशीकरण वार्त्ता पूछी अज गुरु तो पछे कसा । (४) इम ज्ञाता अ० १६ सुखमालिका पिण गुरु कीधां पहिलां आर्यां नें बहिरायो तिहां “पडिलाभे” पाठ कह्यो । (५) तथा ज्ञाता अ० ५ सुदर्शन, शुक्रदेव ने अशनादिक दियो तिहां पिण “पडिलाभमाणे” ए पाठ श्री भगवन्ते कह्यो । (६) सूर्यगङ्गां श्रु० २ अ० ५ गा० २३ गृहस्थादिक नें दान देवे तिहां “पडिलंभ” पाठ कह्यो छै । इत्यादिक अनेक ठामे पडिलंभ नाम देवानो कह्यो पिण साधु जाणवा रो कारण नहीं । तिम असंयती ने पिण सच्चिदादिक देवे तिहां “पडिलाभमाणे” पाठ कह्यो छै । ते पडिलाभ नाम देवानो छै । ते भणी असंयती ने अशनादिक प्रतिलाभ्या कहो भावे दिया कहो । जे तथा रूप असंयती ने आवक तो साधु जाणें इज नहीं । अने साधु जाणें तो आवक तो असूक्त तो तथा सच्चि अशनादिक देवे नहीं । ए तो पाधरो न्याय छै । तो पिण दीर्घ संसारी सूत्र को पाठ मरोड़ता शङ्की नहीं, बली तथा रूप असंयती ने इज अन्य तीर्थो कहे तो पिण भूँठा छै । तथा रूप असंयती में तो साधु आवक बिना सर्व आया । तिम तथारूप श्रमण नें दियां एकान्त निर्जरा कही । ते तथा रूप श्रमण में सर्व साधु आया कोई साधु बाकी रह्यो नहीं । तिम तथा रूप असंयती में सर्व असंयती आया । अन्य तीर्थो ने पिण असंयती नों इज रूप छै । बली वणिमग रांक भिल्यासां रे पिण असंयती नों इज रूप छै । ते माटे यां सर्व तथा रूप असंयती कही जे । बली साधु रा वेप में रहे परं ईर्या भाषा एवणा आचार श्रद्धा रो ठिकाणो नहीं ए पिण साधु रो रूप नहीं । ते भणी तथा रूप असंयती इज छै आचार श्रद्धा व्यवहार करी शुद्ध छै । ते तथा रूप साधु छै तेहने दियां निर्जरा छै । अने तथा रूप असंयती नें दियां एकान्त पाप श्री वीतरागे छै । तेह में धर्म कहे ते महामूर्ख छै । डाहा हुवे तो विचारि जोड़जो ।

## इति ६ वो सम्पूर्णा ।

केतला एक कहे । असंयती नें दीधां धर्म नहीं परं पुण्य छै । तेहनो उत्तर । जे पुण्य हुवे तो आर्द्रकुमार “पुण्य कहे, ताने क्यूं निषेध्या । ते पाठ लिखिये छै ।

सिणायगाणं तु उवे सहस्से जे भोयएणित्तिए माहणाणं ।  
 ते पुण्ण खंधं सुमहं जणित्ता भवन्ति देवा इइ वेय वाओ ॥४३॥  
 सिणायगाणं तु उवे सहस्से जे भोयए णित्तिए कुलालयाणं ।  
 से गच्छइ लोलुया संपगाढे तिब्बाभितावी णरगाहि सेवी ॥४४॥  
 दयावरं धम्म उगच्छमाणे वहावहं धम्म पसंसमाणे ।  
 एवंपि जे भोअयइ असीलं णिवोणि संजाइ कओ सुरेहिं ॥४५॥

( सुयगदांग श्रु० २ अ० ६ गा० ४३-४४-४५ )

हिने आर्द्र कुमार प्रति ब्राह्मण पोता नो मार्ग देखाइ छै. सि० ज्ञातक पट्ट कर्म ना करणहार निरन्तर वेद नां भणनहार आपणां आचार नें विषे तत्पर पढ़वा ब्राह्मण. उ० वे सहस्र प्रति जे० जे पुरुष शि० नित्य भो० जिमाइ त्थानि० मनो वाञ्छित आहार आवे ते० ते पुरुष पु० पुण्य नो स्कंध सु० घणो एक जे० उपाजीं नें भ० थाय दे० देवता इ० इसो हमारे वे० वेदनों वचन छै हम जायी ए मार्ग वेदोफ छै ते तूं आदर पढ़वा ब्राह्मणा ना वचन सांभली आर्द्रकुमार कहै छै ॥ ४३ ॥

अहो ब्राह्मणो ! जे सि० ज्ञातक ना उ० वे सहस्र जे० जे दातार भो० जिमाइ शि० नित्य ते ज्ञातक कहवा छै कु० जे आमिष नें अर्थ कुत्ते कुत्ते भमें ते कुलाटक मानार जाणवा ते सरीखा ते ग्राह्य जाणवा जियो कारणे एह पिण्य सावद्य आहार वाञ्छता छता सदाइ घर घर नें विषे भमें पढ़वा नें जिमाइ ते छुपात्र दान नें प्रमाणे. से० ते. ग० जाइ लो० लोलुपी ब्राह्मण सहित सांस नें दूढ़ी पणें करी. ति० तीव्र वेदनां ना सहनहार पतावला तेवीस सागरोपम पर्यंत या० नरके नारकी थाइ इत्यादि ॥ ४४ ॥

बलि आर्द्रकुमार कहै छै. द० दया रूप व० प्रधान घ० धर्म नें उ० उगच्छतो निदो व० हिंसा. घ० धर्म प० प्रयंसतो अ० शील रहित अंगील वंत. ए० पढ़वा एक नें जे भो० जोमाइ ते शि० नृप राजा अथवा अनेराइ ते शि० नरक भूमि जाइ जियो कारणे नरक माही सदाही छुप्प अन्धकार रात्रि सरीखो काल वर्तै छै तिहां जा० जाइ एह वचन कही मानो तुमें कहो जे देवता थाइ ते नृपा पढ़वा पुरुष नें असुर नें विषे पिण्य गति न जाणवी तो क० देवता विमा-  
 निक किहां थी थाइ ॥ ४५ ॥

अथ धटे आर्द्र मुनि नें ब्राह्मणां कह्यो जे पुरुष वे हजार ब्राह्मण नित्य जिमाइ ते महा पुण्य स्कंध उपाजीं देवता हुइ पढ़वो हमारे वेदनों वचन छै तिवारे

आर्द्र मुनि बोल्या महो ब्राह्मणों ! जे मांसना गृह्णी घर घर नें विषे मांजोर नी परे भ्रमण करनार पहवा बे हजार कुपात्र ब्राह्मणों नें नित्य ज़ीमाड़े ते जीमाड़नहार पुरुष ते ब्राह्मणों सहित बहु वेदनां छै जेहने विषे पहवी महा असह्य वेदनायुक्त नरक नें विषे जाई अने दयारूप प्रधान धर्म नी निंदा नो करणहार हिंसादिक पंच आश्रव नीं प्रशंसा नो करणहार पहवो जे एक पिण दुःशोलवंत निर्बती ब्राह्मण जीमाड़े ते महा अन्धकार युक्त नरक में जाई तो जे पहवा घणां कुपात्र ब्राह्मणों नें जीमाड़े तेहनों स्यूं कहियो अने तमें कहो छो जे जीमाड़नहार देवता थाई तो हमें कहां छों जे पहवा दातार नें असुरादिक अधम देवता में पिण प्राप्ति नहीं तो जे उत्तम विमानिक देवता नीं गति नीं आशा तो एकान्त निराशा छै । पहवो आर्द्र मुनि ब्राह्मणों ने कह्यो । तो जोबोनी जे असंयती ने जिमायां पुण्य हुवें, तो आर्द्र मुनि पुण्य ना कहिणहार ने क्यूं निषेध्या क्यूं कही । ते उपदेश में पिण पाप कहिणो नहीं तो नरक क्यूं कही । तिवारे केइ अज्ञानी कहे—ए तो ब्राह्मणों ने पात्र बुद्धे जिमा नरक कही छै । तेहने पात्र जाण्या ऊंची भद्रा थी नरक जाय । इम कुहेतु लगावे । तेहने इम कहीजे । इहां तो जिमाड्यां नरक कही छै । अने ब्राह्मण पिण इमहिज कह्यो जे ब्राह्मण जिमाड़े तेहने पुण्य बंधे देवता हुवे हमारा वेद में इम कह्यो परं इम तो न कह्यो हे आर्द्र कुमार ! ब्राह्मणों नें पात्र जाण. ए ब्राह्मण सुपात्र छै इम तो कह्यो नहीं । ब्राह्मण तो जिमादा नो इज प्रश्न बियो । तिवारे आर्द्र मुनि जिमाड़वा ना फल बताया । जे “भोयए” पहवो पाठ छै । जे ब्राह्मणों ने भोजन करावे ते नरक जाये इम कश्यो पिण दीर्घ संसारी जोब पाठ मरोड़ता शंके नहीं । वली केई मतपक्षी इम कहे—ए आर्द्र कुमार । रा बाद में कह्यो छै । ते आर्द्र कुमार कित्यो केवली थो । नरक कही ते तो ताण में कही छै । इम कहे—तेहने इम कहिणो । आर्द्र मुनि तो शाक्यमति पावंडी गोशाला ने बौद्धमति ने एक दण्डियां ने हस्ती तापस ने एतला ने जवाव दीधां कीधी तिवारे पिण केवल ज्ञान उपनो न थी—ते साचा किम जाण्यो । गोशालादिक ने जवाव दीधां—ते साचा जाण्या तो झूठो ए किम जाण्यो । ए तो सर्व साचा जवाव दीधा छै । अने झूठो कह्यो होवे तो भगवान् इम क्यूं न कह्यो । हे आर्द्र मुनि ! और तो जवाव ठीक दीधा पिण ब्राह्मणों ने जवाव देतां चूफ्यो “मिच्छामि दुक्कडं” हे इम तो कह्यो नहीं । ए तो सर्व जवाव सिद्धान्त रे



न्याय दीधा छै । अने आप रो थापवा आर्द्रकुमार मुनि ने झूठो कहे ते मृषा-  
वादी जाणवा । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति १० बोल सम्पूर्णा ।

बली भग्नु रे पुत्रां पिण पिताने इम कह्यो , ते पाठ लिखिये छै ।

वेया अहीया न भवंतिताणं भुत्तादिया निति तमंत मेणं ।  
जायाय पुत्ता न हवंति माणं कोणाम ते अण मन्नेजण्यं ॥

( उत्तराध्ययन अ० १४ गा० १२ )

वेद भणवा हुन्ती न० नहीं. अ० थाय जीवा नें. त्राण शरण अने. भु० ब्राह्मणा नें जिमायां हुन्ता. ने पहुँचाडे तमतमा नरक ने विषे. रा० कहतां वचनालङ्कार जा० आत्मा थकी रूपना. पु० पुत्र. न० न थाय नरकादिके पड़ता जीवां नें त्राण शरण. अने जो पुत्र. थो शिवगति हावे तो दान धर्म निरर्थक ते भयी इम छै. ते माटे. को० कुण नाम संभावलो. ते० तुम्हारु वचन अ० माने ए पूर्वोक्त वेदादिक भण्यो ते एतले विवेकी हुवे ते तुम्हारु वचन मला करी न जाये ।

अथ इहां भग्नु ने पुत्रां कह्यो—वेद भण्या त्राण न होवे । ब्राह्मण जिमायां तमतमा जाय तमतमा ते अंधारा में अंधारा ते एहवी नरक में जाय । इम १०—जो विप्र जिमायां पुण्य बन्ने तो नरक क्यूँ कह्यो । इहां कैइ इम कहै एहवी भग्नु ना पुत्रां कह्यो ते तो गृहस्थ हुन्ता त्पारे झूठ बोलवा रा किस्सा त्याग था । इम कहे त्याने इम कहियो । जे भग्नु ना पुत्रां तो घणा बोल कहा छै । वेद भण्या त्राण शरण न हुवे । पुत्र जन्म्या पिण दुर्गति न टले । जो ए सत्य छै तो ए पिण सत्य छै । और बोल तो सत्य कहे—आपरी श्रद्धा अटके ते बोल नें झूठो कहै । त्यां जीवां नें किम सम-  
भाविये । बली भग्नु ना पुत्रां नें गणधर भगवन्ते सराया छै । ते किम तेहनी पहिली ग्यारमी गाया में इम कह्यो छै । “कुमारणा ते पसमिक्खवक्क” एहनो अर्थ—  
“कुमारणा”. कहितां वेहूँ कुमार “ते पसमिक्ख०” कहितां आलोची विमासी विचारी ने वचन बोलावे छै । इम गणधरे कह्यो विमासी आलोची बोले तेहनें झूठा किम कहिये । तथा केतला एक इम कहे ए तो भग्नु ना पुत्रां कह्यो—हे पिताजी । तुम्हें कहा श्रद्धयां तमतमा ते मिथ्यात्व लागे इम अयुक्ति लगावी तमतमा मिथ्यात्व

ने थापे । पिण तमतमा शब्द कह्यो—ते नरक ने कही छै । परं मिथ्यात्व ने न कह्यो उत्तराध्ययन अवचूरी में पिण इस कह्यो छै ते अवचूरी लिखिये छै ।

“भोजिता द्विजा विप्रा नयन्ति प्रापयन्ति तमसोपि यत्तमस्तस्मिन् रौद्रे रौरवादिके नरके यं वाक्यालंकारे ।”

अथ इहां अवचूरी में पिण इस कह्यो तम अन्धकार में अन्धारो पृथ्वी नरक में जावे । तमतमा शब्द दो अर्थ नरकहीज कह्यो, रौरवादिक नरका वासानों कही बतायो छै । तो जोवोनी विप्र जिमायां नरक कही अने गणधरे विमासी वाल्या इस सराया छै । तो असंयती ने दियां पुण्य किम कहिये । डाहा हुवे तो हि रि जोइजो ।

## इति ११ बोल सम्पूर्णा ।

तिवारे कोई इस कहे । सहजे वेद भण्णा अनुकम्पा ने अर्थे विप्र जिमाया जाय तो भ्रावक पिण विप्र जिमावे छै । ते तो नरक जाय नहीं, ते माटे ए तो मिथ्यात्व थकी नरक कही छै । अने जे दान थी नरक जाय तो प्रदेशी दानशाला मंडाई ते तो नरक गयो नहीं । तेहनों उत्तर—ए समचे माठी करणी रा कहा छै । सूत्र में मांस खाय पचेन्द्रिय हूने ते जाय पृथ्वी कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

गोरइआ उयकम्मा सरीरप्पओग बंधेणं भंते ! पुच्छा गोयमा ! महारंभयाए. महा परिग्गहियाए. पंचिंदिय बहेणं कुणिमाहारेणं. गोरइया उयकम्मा. सरीरप्पओग गामाए कम्मस्स उदएणं गोरइया उयकम्मा शरीर जाव प्पओग वंधे ।

( भगवती श० ८ उ० ६ )

ने० नारकी आयु. कर्म शरीर प्रयोग बन्ध केम दुह तेहनी. पु० पुच्छा. हे गौतम ! म० महारंभ कर्षणादिक थी. म० अपरिमाण परिग्रह तेहने करी ने. पंचेन्द्रिय जीव नो जे बंध तेशे करी ने. मांस भोजन तेणें करी ने. ने० नारकी नों आयुकर्म शरीर प्रयोग नाम कर्म ना उदय थी. ने० नारकी आयु कर्म शरीर. जा० यावत् प्रयोग बंध हुवे ।

अथ इहाँ कहाँ महारंजी, महापरिग्रही, मांस खाय, पंचेन्द्रिय हूणे ते नरक जाय, तो चेडो राजा वरणनागननुभो इत्यादिक घणा जणा संग्राम करी मनुष्य मात्सा पिण ते तो गया नहीं । तथा बली भग० श० २ उ० १ बारह प्रकारे बाल मरण थी अनन्ता नरक ना भव कहा तो बाल मरण रा घणी सचलाइ तो नरक जाय नहीं । बली छी आदिक सेव्यां थी दुर्गति कही तो श्रावक पिण छी आदिक सेवे परं ते तो दुर्गति जाय नहीं । ए तो माठा कर्त्तव्य ना समचे माठा फल बताया छै । ए माठा कर्त्तव्य तो दुर्गति ना इज कारण छै । अने जो और करणीरा जोरसूं दुर्गति न जाय तो पिण ते माठा कर्त्तव्य शुद्ध गति ना कारण न कहिये ते तो दुर्गति ना इज हेतु छै । मांस भद्य भखै छी आदिक सेवे बाल मरण भरे ए नरक ना कारण कहा । तिम विप्र जिमावे एपिण नरक ना कारण छै । अने ज इहाँ मिथ्यात्व करी नरक कहे तो मिथ्यात्व तो घणा रे छै । अने सर्व मिथ्यात्वी तो नरक जाये नहीं । केइ मिथ्यात्वी देवता पिण हुवे छै । जे देवता हुवे ते और करणी सूं हुवे । परं मिथ्यात्व तो नरक नो हेतु इज छै । तिम विप्र जिमावे ते नरक नो हेतु कहाँ छै तो पुण्य किम कहिये । उपदेश में पाप कहाँ अन्तराय किम कहिये । इम अन्तराय पड़े तो आर्द्रमुनि भग्गु ना पुत्रांते, नरक न कहिता अन्तराय थी तो ते पिण डरता था । परं अन्तराय तो वर्त्तमान काल में इज छै । उपदेश में कहाँ अन्तराय न थी । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति १२ बोल सम्पूर्णा ।

न्याय थकी बली कहिये छै । कोई कहे मौन वर्त्तमानकाल में किहां कही छै । तेहू जवाब कहे छै ।

जेयदाणं पसंसंति-बह मिच्छंति पाणिणो

जेयणं पडिसेहंति-वित्तिच्छेयं करन्ति ते ॥२०॥

दुहओ वि ते ए भासंति-अत्थि वा एत्थि वा पुणो

आयं रहस्स हेच्चाणं-निव्वाणं पाउणंति ते ॥२१॥

(सूयगाहांग श्रु० १ च० ११ गा० २०-२१)

जे० जती घणा जीवां ने उपकार थाइ छै । इम जाणी ने, दा० दान ने, प्रशंते, वं ते, परमार्थ ना अजाण, धव हिंसा, इ० इच्छे वांच्छे, पा० प्राणी जीव नो, जे गीतां दान

ने निषेधे ते वि० वृत्तिच्छेद वर्तमान काले पामवानो उपाय तेहनों चिन्न करे, ते अविषेको ॥ २० ॥  
 वली राजादिक साधु ने पूछे- तिमारे जे करिवो ते दिखाइ छै, दु० गिहू प्रकारे ते० ते साधु, श०  
 न भाये, अ० अस्ति पुण्य छै । न० पुण्य पुण्य नहीं छै, इम न कहे । पु० वली मौन करी विहू  
 माहिलो एम इम प्रकारे बोले तो स्थू थाय, ते कहे छै । आ० लाभ थाय किसानों, र० पापरूप रज  
 तेहनों लाभ थाय ते भणी अविष भापवो छांदवे निरवय भापवे करी नि० मोक्ष, पा० पामे, ते० ते  
 साधु ॥ २१ ॥

अथ अठे इम कह्यो जे सावय दान प्रशंसे ते छवकाय नो वचनो वंछण-  
 हार कह्यो । अने जे वर्त्तमान काले निषेधे ते अन्तराय रो पाडणहार कह्यो ।  
 वृत्तिच्छेद नो करणहार तो वर्त्तमान काले निषेध्यां कह्यो पिण और काल में कह्यो  
 नहीं । अने सावय दान प्रशंसे तेहने छवकाय नो घात नो वंछणहार कह्यो, तो  
 देणवाला ने घाती किम कहिये । अिम कुशील ने प्रशंसे तेहने पापी कहिये, तो  
 सेवणवाला ने स्थू कहिवो । तिम सावय दान प्रशंसे तेहने घाती कह्यो तो  
 देवणवाला ने स्थू कहिवो दान प्रशंसे ते तो तीजे करण छै ते पिण घाती छै तो  
 जे दान देवे ते तो पहिले करण घाती निश्चय ही छै तेहमें पुण्य किहां थकी । अने  
 वर्त्तमान काले निषेध्यां वृत्तिच्छेद कही । पिण उपदेश में वृत्तिच्छेद कह्यो नहीं ।  
 तिमारे कोई कहे—ए वर्त्तमान काल रो नाम तो अर्थ में छै । पिण पाठ में नहीं तिण  
 ने इम कहिणो ए अर्थ मिलतो छै अने पाठ में वृत्तिच्छेद कही छै । दान लेवे ते देवे  
 छै ते बेलां निषेध्यां वृत्तिच्छेद हुवे अने जे लेवे ते देवे न थी तो वृत्तिच्छेद किम हुवे ।  
 ते माटे वृत्तिच्छेद वर्त्तमानकाल में इज छै । वली “सूयगडांग” नी वृत्ति शीलाङ्ग-  
 चार्य क्रीधी ते टीका में पिण वर्त्तमान काल रो इज अर्थ छै । ते टीका लिखिये छै ।

“एन मेवार्थ पुनरपि समासतः स्पष्टतरं विमर्शितपुराह—

जेयदाण मित्यादि—ये केचन प्रपा सत्तादिकं दानं बहूनां जन्तूना मुपका-  
 रीति कृत्वा प्रशंसन्ति ( स्तुषन्ते ) । ते परमार्थानभिज्ञाः प्रभूततर आश्रिनां तत्प्रशंसा  
 द्वारेण वधं ( प्राणातिपातं ) इच्छन्ति । तद्दानस्य प्राणातिपात मन्तरेणाऽनुप-  
 पत्तेः । ये च किल सूक्ष्मधियो वय मित्येवं मन्यमाना आगम सद्भावाऽनभिज्ञा, प्रति-  
 पेक्षन्ति ( निषेधयन्ति ) तेप्यनीतार्थाः आश्रिनां वृत्तिच्छेदं वर्त्तनोपायविधं  
 कुर्वन्ति” ॥ २० ॥

“तदेवं राज्ञा अन्येन चैश्वरेण कूप तडांग सक्तदाना द्युद्यतेन पुण्य सद्भावं

पृष्टेर्मुमुक्षुमि र्द्यद्विधेयं तददर्शयितुमाह । दुहश्रोत्रीत्यादि—यद्यस्ति पुण्यमित्येवम्—  
 चुस्ततोऽनन्तानां सत्वानां सूक्ष्म वादराणां सर्वदा प्राणत्याग एव स्यात् । प्रीणन-  
 माबन्तु पुनः स्वल्पानां स्वल्पकालीयम्—अतोऽस्तीति न वक्तव्यम् । नास्ति पुण्य  
 मित्येवं प्रतिपेक्षेऽपि तदर्थिना सन्तरायः स्यात्—इत्यतो द्विविधा प्यस्ति नास्ति  
 वा पुण्य मित्येवं ते मुमुक्षवः साधवः पुन न भाषन्ते । किन्तु पृष्ठेः सङ्गिर्मौन मेव  
 समाश्रयणीयम् । निर्वन्वेत्वस्माकं द्विचत्वारिंशोप वर्जित आहारः कल्पते । एवं विषये  
 मुमुक्षूणां अधिकार एव नास्तीत्युक्तम्

सत्यं वप्रेषु शीतं—आशि कर धवलं बारि पीत्वा प्रकामं

व्युच्छिन्ना शेष तृप्याः—प्रमुदित मनसः प्राणिसार्था भवन्ति ।

शेषं नीते जलौघे—दिनकर किरणौ रान्त्यनन्ता विनाशं

तेनो दासीन भावं—व्रजति मुनिगणः कूपवप्रादि कार्ये ॥१॥

तदेव मुभयथापि भाषिते रजसः कर्मण आयो लाभो भवती त्यतस्तमाय रजसो—  
 भौनेनाऽनवद्य भाषणेन वा हित्वा ( त्यक्त्वा ) तेऽनवद्य भाषिणो निर्वाणं मोक्षं  
 प्राप्नुवन्ति ॥ २१ ॥

इहां श्रीलाङ्काचार्य कृतः २० वीं गाथा नी टीका में इम कहो जे पौ  
 सत्तुकारादिक ना दान ने जे घणा ने उपकार जाणी ने प्रशंसे, ते परमार्थ ना  
 अजाण प्रशंसा द्वारा करी घणा जीवा नो वध वांच्छै छै । प्राणातिपात बिना ते दान  
 नी उत्पत्ति न थी ते माटे । अने सूक्ष्म ( तीक्ष्ण ) बुद्धि छै सहारी पहवो मानतो  
 आगम सद्वाव अजाणतो तिण ने निषेधे, ते पिण अचिवेकी प्राणी नी वृत्तिच्छेद ने  
 वर्त्तमानकाले पामवानो विघ्न करे । इहां तो दान वर्त्तमानकाले निषेध्यां अन्तराय  
 कही छै । पिण अनेरा कालमें अन्तराय कही न थी । अने वली २१ वीं गाथा नी  
 टीका में पिण इम हीज कह्यो । राजादिक वा अनेरा पुरुष कूआ तालाव पौ  
 दानशाला विपै उद्यत थयो थको साधु प्रति पुण्य सद्वाव पूछै, तिवारे साधु ने  
 मौन अवलम्बन करवी कही । पिण तिण काल नो निषेध कसो न थी । अने  
 बड़ा टब्बा में पिण वर्त्तमानकाल रो इज अर्थ कह्यो ते अर्थ मिलंतो छै ते

वर्तमानः वि तो भगवती श० ८ उ० ६ यती ने दियां एकान्त  
कह्यो । तथा सूर्यगडाङ्ग श्रु० २ उ० ६ गा० ४५ ब्राह्मण जिमायां नरक कही छै ।  
तथा ठाणांग ठाणे १० बेश्यादिक ने देवे ते अधर्म दान कह्यो । तथा सूर्यगडाङ्ग  
श्रु० १ अ० ६ गा० २३ साधु बिना अनेरा ने देवो ते संसार ना हेतु कह्यो ।  
दिक अनेक ठामे सावध दान रा । ते माटे मौन वर्त्त-  
मान में इज गी । ते धी मिलतो छै । डाहा हुवे तो विचारि  
जोइजो ।

## इति १३ बोल सम्पूर्णा ।

पतले कह्यो न मानें तेहनें घली सूत नी साक्षी थकी न्याय देखाडे छै ।

दक्खिणाए पडिलंभो अत्थिवा नत्थिवा पुणो ।

नवियागरेज मेहावी संति मग्गंच बूहए ॥

( सूर्यगडांग श्रु० २ अ० ५ गा० ३३ )

द० दान तेहनों प० गृहस्थे देवो लेणहार ने लेवो इसो व्यापार वर्त्तमान देखी  
अ० अस्ति नास्ति गुण दूषण काई न कहे गुण कहितां अस गी अनुमोदना लागे दूषण  
कहितां वृत्तिच्छेद थाइ इण कारण अ० अस्ति नास्ति न कहे मे० मेहावी हिवे साधु किम  
बोले स० ज्ञान दर्शन चास्त्रि रूप हु० बधारे पुतावता जिण म  
ते थाइ तिम न बोले ।

अथ पिण इम कह्यो—दान देवे लेवे इसो देखी गुण दूषण  
न कहे । ए तो क्ष पाठ कह्यो जे देवे लेवे ते बेलां पुण्य नहीं कहिणो ।  
‘दक्खिणाए’ कहितां दान नो ‘पडिलंभ’ कहितां नें देवो ते प्राप्ति पतले  
दान देवे ते दान नी आगला ने प्राप्ति हुवे ते बेलां पुण्य कहिणो बज्यों । पिण  
और बेलां बज्यों नहीं । किण ही बेलां में प.प.रा न ना तो  
अधर्म दान में पाप कू कहै । असंयती नें दीघा पाप न्ते क्यू कह्यो ।  
आनन्द क अमिग्रह ने हूं अन्य तीर्थी ने देव नहीं । ए अमिग्रह क्यू

धास्यो । आर्द्रकुमार विप्र जिमायां नरक क्यूं कही । भग्नु ना पुत्रां विप्र जिमायां  
तमतमा क्यूं कही । त्यांनै गणधरां क्यूं सराया । इत्यादिक सावध दाने ना माठा  
क्यूं कहा । जो उपदेश में पिण छै जिसा फल न बतावणा तो एतले ठामे  
कहुआ फल क्यूं कहा । परं उपदेश में आगला नै समभावा सम्यग्दृष्टि पमाइवा  
छै जिसा फल बतायां दोष नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति १४ बोल सम्पूर्ण ।

तथा ज्ञाता. अ० १३ नन्दन मणिहारा री दान शाला नों विस्तार घणो  
चाह्यो छै ते पाठ लिखिये छै ।

ततेणं गांदे तेहिं सोलसेहिं रोयायंकेहिं अभिभूए स रो  
गांदाए पुक्खरिणीए मुच्छित्ते ४ तिखिख जोणिएहिं बद्धाए  
बद्धयए सिए अट्ट दुहट्ट वसट्टे काल मासे कालं किच्चा दा  
पोक्खरिणीए दहुरोए कुत्थिंसि दहुरत्ताए उववणो ॥ २६ ॥

( ज्ञाता अ० १३ )

त० तिवारे. गां० नन्दन नामक मणिहारो ते० तिथि १६ रोगां थो. अ० पराभव  
पामी नें. गां० नंदा नामक पुक्करिणी में मुच्छित धर्रो. ति० तियंच नो योनि बांधी नें. अ०  
अति रुद्र ध्यान ध्यावो नें का० काल अवसर नें बिषे का० काल करी नें. गां० नन्दा नामक  
पुक्करिणी में. द० डेढकपणो ऊपणो.

अथ इहां कह्यो—जे नन्दन मणिहारो दान शालादिक नों घणो आरम्भ  
करी मरने डेडको थयो । जो सावध दान थो पुण्य हुवे तो दानशालादिक थो  
घणा असयती जीवां रे सातां उपजाई ते साता रा फल किहां गयो । कोई कहै  
मिथ्यात्व थो डेडको थयो. तो मिथ्यात्व तो घणा जोवां रे छै । ते तो संसार में  
गोता खाय रह्या छै । पिण नन्दन रे तो दानशालादिक नो वर्णन घणो कियो ।  
घणा अलंयती जोवां रे शान्ति उपजाई छै । तेहना अशुभ फल प प्रत्यक्ष दोसै छै ।

वली "रायपसेणो" में प्रदेशी दानशाला मंडाई कही छै । राज रा ४ भाग करने आप न्यारो होय धर्म ध्यान करवा लाग्यो । केशी स्वामी विहं ६ ठामे मौन साधी छै । पिण इम न कह्यो—हे प्रदेशी ! तीन भाग में तो पाप छै । परं चौथो भाग दानशाला रो काम तो पुण्य रो हेतु छै । थारो भलो मन उठ्यो । ओ तो आच्छो काम करिबो विचारो । इम चौथा भाग नें सरायो नहीं । केशी स्वामी तो विहं सावदय जाणी ने मौन साधी छै । ते माटे तीन भाग रो जिसोई चौथे भाग रो फल छै । केइ तीन में पाप कहे चौथा भाग में पुण्य कहे । त्याने सम्प्रद्वष्टि न्यायवादी किम कहिये । केशी स्वामी तो प्रदेशी १२ व्रत धासां पछें एहवूं कह्यो । जे तू रमणीक तो थयो पिण अरमणीक होय जे मती । तो जावोनी १२ व्रत थी रमणीक कह्यो छै । पिण दानशाला थी रमणीक कह्यो नथी । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ;

## ति १५ बोल संपूर्ण ।

तिवारे केइ कहे—असंयती ने दियां धर्म पुण्य नहीं तो सूत्र में १० दान क्यूं कहा छै । ते माटे १० दान ओलखवा भणी तेहना नाम कहे छै ।

दसविहे दारो ५० तं०—

अणुकंपा संगहे चैव भया कालुणि एतिय ।

जाए गार वेणंच अधम्मेय पुण सत्तमे ।

धम्मे अट्टमे बुत्ते काहिइय कयन्तिय ॥

( सूत्र दशांग डा० १० )

द० दश प्रकारे दान. ५० परूया. ते० ते कहे छै । अ० अनुकम्पा दान ते कृपागे करी दीनां अनार्थां नें जे दीज. ते दान पिण अनुकम्पा कहिये. कोई रांक अनाय दरिद्री कष्ट पट्यां रोगे थोके हैराणां ने अनुकम्पाए दीज ते अनुकम्पा दान । ( १ ) म० संग्रह दान ते कष्टादिक ने विषे साहाय्य ने अर्थे दान दे अथवा गृहस्थ में आपी ने मुकावे । ( २ ) भ० भय करो दान



दे ते भय दान । (३) का० शोक ते पुत्र वियोगादिक जे दान ए म्हारु आगल सुखी थाये ते माटे रत्ना निमित्त दान आपे तथा सुआ न केडे वारादिक नो करवो । (४) ए करी जे दान दीजे ते लज्जा दान । (५) गा० गर्व करी खर्वे ते गर्व दान ते नाटकिया मलादिक नै विवाहादिक यण ने अर्थे । (६) अ० अधर्म पोषणहारो जे दान ते अधर्म दान गणिकादिक नू । (७) घ० धर्म नो कारण ते धर्म दान इज कहिये ते सुपात्र दान । (८) का० ए मुक्त ने कांई उपकार करस्ये एहवू जे दे ते काहि दान । क० इणो मुक्त ने घसी वार उपकार कीबो हू पिण उसींगल थायवाने काजे कांइ एक आपू इम जे देह ते कतन्ती दान । (१०)

इहां १० प्रकार रा दान तिण में धर्म दान री आज्ञा छै । ते निरवदय छै बीजा नव दानां री आज्ञा न देवे । ते माटे सावदय छै यती ने असूक्तता दिक ४ दीधां एकान्त पाप भगवती श० ८ उ० ६ कह्यो । ते माटे ए नव दानां में धर्म-पुण्य-मिश्र-नहीं छै । कोई कहे एक धर्म दान अधर्मदान बीजा में मिश्र छै । केह एकलो पुण्य छै इम कहे, एहनो — जो वेष्ट्या-दिक नो दान अधर्म में थापे विषय रो दोष घताय नैं । तो बीजा पिण हि में छै । रो घालियो देवे ते पिण आप री विषय कुशल राखवा देवे छै । मुआ केडे खर्चादिक करे ए म्हारो पुत्र आगल भवे सुखी थायस्ये इम जाणी आरम्भ करे ते पिण विषय में छै । गर्वदान ते अहंकार थी खर्वे मुकलाबो पहिरावणी आदि ए पिण विषय में इज छै । नेहतादिक घाले ए मुक्त ने पाछो देख्ये ए पिण विषय में छै । बाकी रा ४ दान पिण इमज कोई आप रे विषय ने काजे कोई पारकी विषय सेवा में देवे—ए ही दान वीतराग नी आज्ञा में नहीं बारे छै । लेणवाला अन्नत में लेवे तो देणवाला ने निर्जरा पुण्य किहां गी होसी । ठाणाङ्ग ठाणा ४ उ० ४ च्यार विसामा कहा । विसामो श्रावक ता आदसा । ते, बीजो सामायक देशावगासी तीजो पोषो चौथो संधारो सावदय भार छोड्यो तें विसामो ( विश्राम ) तो ए ६ दान चार विसामा बाहिरे । दान विसामा माहि छै । ए तो चतुर हुवे तो ओलखे । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १६ वोल सम्पूर्णा ।

कोई कहे दान क्यूँ कह्यो, तो हिवे इण १० रो धर्म अनें १० प्रकार रो स्थविर कहै छै ।

दस विहे धम्मे प० तं० गाम धम्मे, नगर धम्मे, रट्ट धम्मे, पासंडधम्मे. कुलधम्मे, गणधम्मे, संघधम्मे. सुयधम्मे, चरित्तधम्मे. त्थिकाय धम्मे ।

( ठाणाङ्ग ठाणा १० )

द० दश प्रकारे धम्मं. गा० ग्राम ते लोक ना ते हेतु धर्म आचार ते ग्राम २ जुई जुई अथवा इन्द्रिय ग्राम तेहनो ध० विषय जो अभिलाष. न० नगरधर्मते र ते नगर प्रते जुआ जुआ. र० रट्ट धर्म ते देहाचार पापंडो नू धर्म ते पापंड आचार. कु० कुल धर्म ते उपादिक कुल नो आचार अथवा चन्द्रादिक साधु ना गच्छनू समूह रूप तेहनों धर्म समावा री ग० गण धर्म ते मझादिक गणनो स्थिति अथवा गण ते साधु ना कुलनू समुदाय ते गण कोटिकादिक तेहनू धर्म री. सं० संघ धर्म ते गोठी नो आचार अथवा साधु ना समुदाय री संघ नों धर्म आचार. सु० श्रुत ते आचारांगादि. क० ते दुर्गति प्राणी ने धरे ते भणी ।

अ० प्रदेश तेहनी जे का० समूह अस्तिकाय ते हज जे गति ने विषे जे पुत्रलादिक धरिवा यको अस्तिकाय धर्म.

दस थेरा प० तं० गाम थेरा. नगर थेरा. रट्ट थेरा. पासंड थेरा. कुल थेरा. गण थेरा. संघ थेरा. जाइ थेरा. सुय थेरा. परियाय थेरा.

( ठाणाङ्ग ठाणा १० )

हिवे १० स्थविर कहै छै । ए ग्राम धर्मादि तो स्थविरादिक न हुवे. ते भणी स्थविर कहे छै । द० दस दुःस्थित जन्म नें मार्ग ने विषे स्थविर करे ते स्थविर तिहां जे ग्राम १ नगर २ देश ३ नें विषे बुद्धिबन्त आदेज मोटी मयांद रा करनहार ग्राम ते ग्रामादिक स्थविर. अमोपदेश अद्धा नों देहाहार ते हीज स्थिर यको स्थविर. जे लौकिक लोकोत्तर कुल ग० गण सं० संघनी मयांद नों करणहार वडेरा ते कुलादिक स्थविर वयस्थविर ज० साठ वर्ष नी वय नों. सु० श्रुत स्थविर तं ठाणाङ्ग समवायाङ्ग धरणाहार ते. व० प्रज्याय स्थविर. ते बीस वर्ष नो चादि-त्रियो ।

अथ ए १० धर्म १० स्थविर कहा । पिण सावद्य निरवद्य ओलखण्णं । अने दान १० कहा । ते पिण सावद्य निरवद्य पिळाणणा । धर्म अने स्थविर कहा छै, पिण लौकिक लोकोत्तर दोनू छै । जिम "जम्बूद्वीपपनत्ति" में ३ तीर्थ कहा : वरदाम. प्रभास. पिण आदरवा जोग नहीं तिम सावद्य धर्म स्थविर दान पिण आदरवा योग्य नहीं । सावद्य छांड़वां योग्य छै । विवेकलोचने करी विचारि जोड़जो ।

## इति १७ ब्रो सम्पूर्णा ।

कोई कहे ६ प्रकारे पुण्य बंधे ए कहा छै । ते माटे कहे छै ।

नव विहे पुराणे प० तं० अराण पुराणे. पाणपुराणे. स्नेहापुराणे. सयणपुराणे वत्थपुराणे. मणपुराणे. वयपुराणे. य-पुराणे. नमोकारपुराणे ।

( ठाणांग ठाणा ६ )

न० नव प्रकारे पुण्य पहूणा. ते० ते कहे छै अ० पात्र ने विषे अन्नादिक दीजे ते थकी तीर्थ कर नामादिक पुण्य प्रकृति नो बंध तेह थकी अनेरा ने देवो ते अनेरो प्रकृति नो बंध. पा० तिम हिज पाणी नो देवो. ल० घर हाटादिक नो देवो. स० संधारादिक नो देवो. व० वत्थ नो देवो. म० गुणवन्त ऊपर हर्ष. ब० वचन नो प्रसास. का० पयुपासना नो करिवो. न० नो करवो.

अथ इहां नव प्रकार पुण्य समूचे कहा । ते निरवद्य छै । मन. न. काया, पुण्य. नमस्कार पुण्य पिण समूचे कहा । पिण मन. वचन. काया. निरवद्य प्रवर्त्तायां पुण्य छै । सावद्य में पुण्य नहीं । तिम बीजा पिण निरवद्य प्रवर्त्तायां पुण्य छै । सावद्य में पुण्य नहीं । कोई कहे अनेरा ने दीधां अनेरी पुण्य प्रकृति छै । तिण रे लेखे किंण ही ने दीधां पाप नहीं । अने जे टव्वा में कहा पात्र ने विषे जे अन्नादिक नो देवो. तेह थकी तीर्थङ्करादिक पुण्य प्रकृति नो बंध, तो आदिक शब्द में तो वयालीसुइ ४२ पुण्य प्रकृति आई । जिम ऋषभादिक कहिचे चौबीसुइ तीर्थङ्कर आया । गौतमादिक साधु कहिचे २४ हजार हि आया । प्राणातिपातादिक पाप

कहिये १८ पाप आया । मिथ्यात्वादिक आश्रय कहिये ५ आश्रय आया । तिम तोर्यङ्करादिक पुण्य प्रकृति कहिये सर्व पुण्य नीं प्रकृति आई वली काई पुण्य नी ति बाको रही नहीं । अनेरां ने दीधां अनेरी प्रकृति नो बंध कह्यो छै । ते साधु थी अनेरो तो कुपात छै । तेहनें दीधां अनेरी प्रकृति नों बंध ते अनेरी प्रकृति नी छै । पुण्य थी अनेरो पाप धर्म सु अनेरो अधर्म लोक थी अनेरो अलोक जीव थी अनेरो अजीव मार्ग थी अनेरो कुमार्ग दया थी अनेरी हिंसा इत्यादिक बोलसूं ओलखिये । इण न्याय पुण्य थी अनेरी पाप नी प्रकृति जाणवी, अनें जो अनेरा ने दियां पुण्य छै । तो अनेरा ने पाणो पायां पिण पुण्य छै । ति अनेरा नें नमस्कार कियां पाप क्यूं कह्ये छै । अनेरा नें नमस्कार करण रो सूस देणो नहीं । पाप भद्रा नो नहीं तो आनन्द श्रावके अन्य तीर्थो नें न करिवूं । पहवो अभिग्रह क्यूं धार्यो । अनें भगवन्त तो साधु नें कल्पे ते हिज द्रव्य कहा छै । अनेरा नें दियां पुण्य हुवे तो गाय पुण्ये, भैंस पुण्ये, रूपौ पुण्ये, खेती पुण्ये, डोली पुण्ये, इत्यादिक बोल आणता ते तो आणया नहीं । तथा वली अनेरां ने दियां अनेरी प्रकृति नों बंध टक्वा में छै । पिण टीका में न थी । ते टीका लिखिये छै ।

“पात्रायाचदानाद्य स्तीर्थकरादि पुण्यप्रकृति बंधस्तद्वत्पुण्यमेव यावर लेणीति लयनं-गृह-शयनं-संस्तारकः”

इहां तो अनेरां ने दियां अनेरी प्रकृति नो बंध, पहवूं तो डाणाङ्ग नी-टीका देव सूरि कीधी तेहमें पिण न थी । इहां तो इम कह्यो जे पात्र ने देवा थी जे पुण्य ति नों बंध तेहने “अन्नपुण्ये” कही जे । इहां कह्यो पिण न कह्यो । अन्य अनेरो हुवे ते शब्द न थी अन्नपुण्य रो छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १८ बोल सम्पूर्णा ।

अनेरा नें दियां तो भगवती श० ८ उ० ६ एकान्त पाप कह्यो छै । तथा उत्तराध्ययन अध्ययन १४ गा० १२ भग्यु ना पुत्रां विप्र जिमायां तमतमा कही छै ।

तथा सूर्यगङ्गाङ्ग ५० २ अ० ६ गा० ४४ आर्द्रकुमार ब्राह्मण जिमायां कहो  
छे । तथा ठाणाङ्ग ठाणे ४ उ० ४ कुपात्र नें कुक्षेत कहा । ते लिखिये ।

चत्तारि मेहा ५० तं० खेत्तवासी णां मेगे णो अक्खे-  
तवासी एवा मेव चत्तारि पुरिसजाया ५० तं० खेत्तवासी  
णाम मेगे णो अक्खेतवासी ।

( ठाणाङ्ग ठा० ४ उ० ४ )

च० चार मेह पल्ल्या. तं० ते कहे छे. खे० क्षेत्र ते । धान नो उत्पत्ति स्थानवसें पिण. ५०  
अक्षेत्र वसें नहीं हम चौमङ्गो जोहवो. ५० पणो परी च्यार पुरुष नो जाति. ५० परूपी. तं० ते  
कहिये छे । खे० पात्र ने विवे । दिक देवे. णो० पिण कुपात्र ने न देवे. कुपात्र ने दे पिण  
ने न दे. मिथ्यादृष्टि लोले विवेक विरुल. अथवा मांटा उदार पण थो. अथवा नादिक  
कारण ना वस थको पात्र पिण कुपात्र पिण नेहू ने दे. चौथो कृपण नेहू ने न दे ।

अथ इहां पिण कुपाल दान कुक्षेत कहा कुपात्र कुक्षेत में  
बीज वि उगै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति १६ बोल सम्पूर्णा

शकंडाल पुत्र गोशाला ने पीठ. फलक. शय्या. संस्तारादिक दिया—  
तिहां पहचो पाठ । ते लिखिये छे ।

तएणं सेसदालपुत्ते समणोवासए गोसालं लिपुत्तं  
एवं वयासी. जम्हाणं देवाणुप्पिया ! तुब्भे सम धम ।यरिस्स  
जाव हावीरस्स सन्तेहिं तच्चेहिं तहि एहिं सब्बेहि सब्ब  
भूतेहिं भावेहिं गुण कित्तणं करेहि. तम्हाणं अहं तुब्भे पडि  
हारिणं पीढ जाव थारयणं उवनिमंतेमि नो चेवणं धम ।  
तिवा तबोतिवा ।

( उपासक दया अ० ७ )

त० तिवारे. से० ते. स० शकडाल पुत्र. स० श्रमसोपासक गोशाला मंखलि पुत्र ने.  
प० हम बोल्या. हे देवानु प्रिय ! तु० तुम्हें माहरा घमोचार्य ना. जा० यावत् महावीर देवता.  
स० छता. तं० . छ० तेहवा यथाभूत. भा० भाव थी. गु० कीर्त्तन कद्या. ते० ते  
भणी. अ० हू. तु० तुम ने. पा० पादोहारा पी० वाजोट जाव संधारो. उ० आपू छू. नो०  
महीं पिण निश्रय. ध० धर्म ने अर्थे. न० नहीं तप ने अर्थे.

अथ अठे पिण गोशाला ने पीठ क शय्या संधारा ल पुत्र दिया ।  
तिहां धर्म तप नहीं हम । तो गोशाला तो तीर्थङ्कर वाजतो थो तिण ने दिया  
ही धर्म तप नहीं—तो यती ने दियां. 'तप केम कहिये। पुण्य पिण न  
श्रद्धवो । पुण्य तो धर्म लारे बंधे छै ते शुभयोग छै । ते नि विना पुण्य निपजे  
नहीं । ते माटे असंयती ने दियां धर्म पुण्य नहीं । डाहा-हुवे तो विचारि जोइजो ।

ति २० वो सम्पूर्णा ।

बली असंयती ने दियां क छै । ते लिखिये छै ।

● सेणं भंते ! पुरिसे पुब्बभवे के सिं किंणामएवा.  
किंगोएवा. यरंसि. ग सि . नयरंसि . किंवादच्चा.  
पुराणं. दुब्बिएणाणं. दुप्पड़ि ताणं. असुभाणं. वाणं.  
क णं. पावगं वित्ति विसेसं प णुं शे गोच्चा  
किंवा मायरत्ता केसिंवा पुरा वि जाव विहरइ ।

( विपाक अ० १० )

● मुग्ध जनोको मोहनेके लिये वार्डस सम्प्रदायके पूज्य जवाहिरलालजी की प्रिया  
“प्रत्युत्तर दीपिका” इस पञ्चम स्वरमें अलापती है । एवं अपने खण्डके १५० पृष्ठमें  
श्री जिनाचार्य जीतमल्ल जी महाराज को इस पाठमें से कुछ भाग चोर लेने का निर्मूल  
लगाती हुई मिथ्या भाषण की परीक्षा में श्रेणी द्वारा उत्तीर्ण होती है । अब हम  
उक्त प्रिया की कोकिल कण्ठता का को परिचय देते हैं । और करनेके लिये आग्रह  
करते हैं ।

हे पूज्य ! पु० ए पुरुष. पु० पूर्व जन्मान्तरे. के० कुण हुन्तो. कि० किप्पू नाम हुन्तो किप्पू गोत्र हुन्तो. क० कुण. गा० ग्रामे वस्तो. म० कुण नगर ने विषे वस्तो कि० कुण अशुद्ध तथा कुपात्र दान दीधो. पू० पूर्वले. हु० दुश्चर्य कर्म करी प्राणातिपातादिक रूढी परे आलोचना निन्दन सन्नेह रहित. तथा प्रायश्चित्त करी टाल्या नहीं अशुभना हेतु. पा० दुष्ट भावनों ज्ञानावरणीय आदिक कर्म नों. फ० फलरूप विशेष भोगवतो थको विचरे. कि० कुण व्यसनादिक क्रोध सोमादि समाचर्या. के० पूव कुण कुशीलादि करी अशुभ कर्म उपार्ज्या कुण अभक्ष्य मांसादि भोगव्या ।

अथ इहां गौतम भगवन्त ने पूछ्यो । इण मृगालोढे पूर्व काईं कुकर्म कीधा , कुपात्र दान दीधा । तेहना फल ए नरक समान दुःख भोगवे छै । तो

+ पाठकगण ! कई हस्त लिखित सूत्र प्रतियों में सर्वथा ऐसा ही पाठ है जैसा कि जयाचार्य ( जी जी महाराज ) ने उद्धृत किया है । और कई प्रतियों में नीचे लिखे हुए प्रकारसे भी है ।

“सेणं भंते ! पुरिसे पुण्णभवे के आसी पिण्णामपुवा किंगोपुवा कयरंसि गार्मसिवा किंवाद्दधा किंवा भोच्चा किंवा समायरत्ता केसिवा पुरापोराण्णं दुच्चिण्णं दुप्पडिक्कंताणं अत्त-भाणं पाचाणं फल वित्ति वित्तेसं पञ्चण्णभवमाणे विहरह ।

इस पाठ को मिलाने से जयाचार्य उद्धृत पाठ के बीचमें किंवा दद्या के आगे “किंवा भोच्चा. किंवा समायरत्ता” ये पाठ नहीं हैं । इसीपर “प्रत्युत्तर दीपिका” चोर लिया. चोर लिया कह कर आँसु बहाती है । ये केवल स्वाभाविक ही “प्रत्युत्तर दीपिका” का स्त्री चरित्र है ।

गण ? ज्ञान चक्षु से विचारिये । इस पाठ को न रखने से क्या लाभ और रखने से जयाचार्य को क्या हानि निज सिद्धान्त में प्रतीत हुई । अस्तु—प्रत्युत, इस पाठ का होना तो जयाचार्यकी श्रद्धा को और भी पुष्ट करता है । जैसे कि—

“किंवा भोच्चा” क्या २ मांसादि सेवन किया, “किंवा रिता” क्या २ कुशीलादि का समाचरण किया ।

इससे तो यह सिद्ध हुआ कि “किंवा दद्या किंवा भोच्चा. किंवासमायरत्ता” ये तीनों एक ही फलके देनेवाले हैं । अर्थात्—कुपात्र दान. मांसादि सेवन. व्यसन कुशलादिक. ये तीनों ही एक मार्गके ही पथिक हैं । जैसे कि “चोर-जार-ठग ये तीनों समान व्यवसायी हैं । तैसे ही जया-चार्य सिद्धान्तानुसार दान भी मांसादि सेवन व्यसन कुशीलादिक की ही श्रेणी में गिनने योग्य है ।

अथ तो “प्रत्युत्तर दीपिका” से पूछिये कि हे मञ्जुभाषिणि ? तेरा ये आलाप किस शास्त्र के अनुगत होगा ।

अस्तु—यदि किसी आशुवर को इस पाठके परिवर्तन ( एक फेर ) का ही विचार हो तो तो जिस हस्त लिखित प्रति में से तर्क ने ये पाठ उद्धृत किया है । उस सूत्र प्रति को श्रीमान् जिनाचार्य पूज्य कालरामजी महाराज के दर्शन कर उनके समीप यथा देखें हैं, जो कि तैरापन्थ नायक भिन्नु स्वामीजी से जन्म के भी पूर्व लिखी गई है ।

“संशोधक”

जोवोनी. कुपात दान में चौड़े भारी कुर्म तो । काय रा शस्त्र ते ।  
। तेहने पोष्यां धर्म पुण्यः निपजे । डाहा हुवे तो विचारि जोइसो ।

इति २१ बोल सम्पूर्णा ।

ब्राह्मणां ने पापकारी क्षेत्र है । ते लिखिये ।

गेहो य माणो य वहो य जेसिं-  
कोसं दत्तं च परिग्रहं च  
त माह्वणा जाइ-विज्जा विह्वणा-  
त्ताइं तु खेत्ताइ मुपावयाइं ।

( उत्तराध्यायक अ० १२ गा० २४ )

को० क्रोध अने मान च शब्द हुन्ती सोभ. ब० ब० (प्राणघात) जे ने पाले  
अने सो० सृषा अलीक नों भावो अण दीघां नों लेवो च शब्दयो मैथुन अने परिग्रह. गाय  
अस भूम्यादिक नों अंगीकार करवो जेहने ते ब्राह्मण. जो ब्राह्मण जाति अने. वि० अठे १४ विद्या  
तेखे करी. वि० रहित जाणवा. अने क्रिया कर्म ने आगे करी चार वर्ग नी अवस्था थरुं. ता०  
ते जे तुमने जाणय वर्त्ते छै. लोका माहे. खे० ब्राह्मण रूप अक्षेत्र. तेवू निश्चय. अति पाहुआ छै.  
क्रोधादिके करी सहित ते माटे पाप नों हेतु छै. पिण अला नहीं ।

अठे ब्राह्मणां ने पापकारी क्षेत्र । तो बीजा नो स्यूं कहिवो ।  
कोई कहे प तो यक्षे कहा छै तो ब्राह्मणा ने क्रोधी मानी मायी लोभी  
हिंसादिक पिण यक्षे । जो प सांचा तो जेवे पिण साचा छै । सूव-  
गडाङ्ग श्रु० १ अ० ६ गा० २३ गृहस्थ ने देवो साधु तो ते संसार भ्रमण नों  
जाणी त्याग्यो कह्यो छै । तथा दशवैकालिक अ० ३ गा० ६ गृहस्थ नी व्याचच करे  
करावे अनुमोदे तो साधु ने अनाचार कह्यो । तथा निशीथ उ० १५ वो० ७८-७९  
गृहस्थ ने साधु आहार देवे देता ने अनुमोदे तो चौमासी प्रायश्चित्त तो ।  
आवश्यक अ० ४ कह्यो साधु उ० तो सर्व छांढ्यो—मार्ग अङ्गीकार कियो । तो



ते उन्मार्ग थी पुण्य ' वि नोपजे । तथा उत्तराध्ययन अ० २६ कह्यो साधु  
 श्रावक सामायिक में सावद्य योग त्यागे तो जे सामायिक में कार्य छोड्यो ते  
 सावद्य कार्य में धर्म पुण्य किम कहिये । ए ' पुण्य तो निरवद्य योग थी हुवे  
 छै । जे सामायिक में अनेरां ने देवा रा त्याग वि १, ते सावद्य जाणी ने त्याग्यो  
 छै, ते तो खोशे छै तरे त्याग्यो छै । उत्तम करणी आदरी माठी करणी छांडी छै ।  
 तो ए सावद्य दान सामायिक में १० तिण में छै के आदसो तिण में ।  
 जहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति २२ बोल सम्पूर्णा ।

तथा भगवती श० ८ उ० ५ तथा उपासक दशा अ० १ पनरे कर्मादान  
 छै, ते लिखिये छै ।

समणो वासए ' पणणरस्स कम्मा दाणाति जाणि-  
 यव्वाति न समारियव्वाति तंजहा इंगाल कम्मे. वण कम्मे  
 साडी कम्मे. भाडी कम्मे. फोडी कम्मे. दंत वडिज्जे.  
 रस वणिज्जे. केस वणिज्जे. विस वणिज्जे. लक्खणिज्जे. जं  
 पी ण म्मे. निल्लंछण म्मे. दवग्गिदावणया. सर दह  
 तड़ाग परि सोसणिया. असईजण पोसणया ॥ ५१ ॥

( ३ दशा अ० १ )

स० श्रावक नें. प० १५ रा. के० कर्मादान ( कर्म आचारा स्थान ) व्यापार  
 जाणना. किन्तु. न० नहीं. आदरवा. तं० ते कहै छै. इ० अग्नि कर्म. वन कर्म. साडी  
 ( शकटादि वाहन ) कर्म. भा० भाडी ( भाडो उपजावन वालो ) कर्म. फोडी कर्म.  
 वाणिज्य. रस. वाणिज्य. केश वाणिज्य. विष वाणिज्य. ल० लाला लाह आदि वाणिज्य.  
 यन्त्र पीलन कर्म. विल्लंछण ( बैल आदि का अङ्ग विशेष छेदन ) कर्म. दावाणि ( वन में  
 आदिकों में अग्नि लगाना ) कर्म. स० तालाव आदिके रे पाणी रें शोषण आदि. अ०  
 भेश्या आदि में पोषणा आदिक व्यापार कर्म.

तिहां “असती पोसणया” तथा “असइपोसणया” कह्यो छै । एहनों अर्थ केतला विरुद्ध करै छै । अने इहां १५ व्यापार कहा छै तिवारे कोई इमं फहे यती पोप व्यापार कहा छै । तो तुम्हें अनुकम्पा रे अर्थ असंयती ने पोष्या पाप किम कह्यो छै । तेहनो उत्तर—ते असंयती पोषी २ ने आजीविका करे ते यती पोप व्यापार छै । अने दाम लियां विना असंयती ने पोषे ते व्यापार नथी कहिये । परं पाप किम न कहिये । जिम कोयला करी बेचे ते “अंगालकर्म” व्यापार, अने दाम विना आगला ने कोयला करी आपे ते व्यापार नथी । परं पाप किम न कहिये । जे वनस्पति बेचे ते “वण कर्म” व्यापार कहिये ।

दाम लियां विना पर जीव भूखा नी अनुकम्पा आणी वनस्पति आपे ते व्यापार नहीं । परं पाप किम न कहिये । इम जे वदाम आदिक फोड़ी २ आजीविका करे दाम ले ते “फोड़ी कर्म व्यापार” अने दाम-लियां विना आरी खेद टालवा वदाम नारियल आदिक फोड़े ते व्यापार नहीं । परं पाप किम न कहिये । इम

तिमि निमित्ते सर-द्रह तालाव शोषवे ते सर-द्रह-तालाव शोषणिया व्यापार अने जे आगला रे काम शोषवे ते व्यापार नहीं परं पाप किम न कहिये । तिम १ पोषी २ विविका करे । दानशाला र रहे रोजगार रे वास्ते ग्वालियादिक दाम लेइ गाय भैंस्यां आदि चरावे । इम कुक्कुटे मारजार आदिक पोषी २ आजीविका करे । आदिक शब्द में तो असंयती ने रोजगार रे राखे ते यती व्यापार कहिये । अने दाम लियां विना यती ने पोषे ते व्यापार नहीं । परं पाप किम न कहिये । ए तो पनरे १५ ई व्यापार छै ते दाम लेई करे तो व्यापार । अने पनरे १५ ई दाम विना सेवे तो व्यापार नहीं । परं पाप किम न कहिये । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## ति २३ ले सम्पूर्ण ।

धली केतला एक इमं कह्ये—जे उपा दशा अ० १ अत ना ५ अती-  
कहा । तिण में भात-पाणी रो विच्छेद पाड्यो हुवे, ए पांचमो अतिचार  
कह्यो छै । तो जे असंयती में भात पाणी-रो विच्छेद पा अतीचार लागे । ते

भात पाणी थी पोप्यां धर्म बरू नहीं। इस कहै तेहनो उत्तर—सूत्रे करी लिखिये छै—

तदा रां तरंचणं थूलग पाणातिवाय वेरमणस्त समणो-  
वास तेणं पंच अइयारा पेयाला जाणियव्वा न समायरि-  
यव्वा, तंजहा-बंधे, वहे छविच्छेए अतिभारे भत्त पाण वोच्छेत्ते  
॥ ४५ ॥

( उपासक इशा अ० १ )

त० तिवारे पढे. थू० थूल प्राणातिपात वेरमण प्रत रा. स० आबक नें. प० ५.  
अतीचार. ये० पाताल नें विपे से जाखेवाला छै. किन्तु स० आदरवा योइय नहीं. त० ते को  
छै. व० मारवा नी बुझि हं करी पशु आदि नें गाढा बन्धने करे बांधे. व० गाढा प्रहारे करी  
मारे. छ० अज्ञोपाज्ञ नें छेदे. अ० शक्ति उपराना ऊपरे भार आपे. भ० मारवा नी बुझि हं.  
आहार पाणी रो विच्छेद करे.

इहां मारवा ने अर्थ गाढे-बंधन बांधे तो अतीचार कह्यो। अर्ने थोड़ो  
बंधन बांधे तो अतीचार नहीं। पिण धर्म किम कहिये। मारवा ने अर्थ गाढे धाव  
घाले तो अतीचार अर्ने ताड़वा नो बुद्धे लकड़ी इत्यादिक थी थोड़ो धाव घाले तो  
अतिचार नहीं। परं धर्म किम कहिये। इस ही चामड़ी छेद कहियो, इस मारवा  
नें अति ही भार घाल्यां अतीचार, अर्ने थोड़ो भार घाले ते अतीचार नहीं।  
परं धर्म किम कहिये। तिम मारवा ने अर्थ भात पाणी रो विच्छेद पाठ्यां तो  
अतिचार, अर्ने अस जीव नें भात पाणी थी पोपे ते अतीचार नहीं। पिण धर्म किम  
कहिये। अनेरा संसार ना कार्य छै। तिम पोषणो पिण संसार नो छै पिण  
धर्म नहीं। जे पोप्यां धर्म कहै तेहने लेखे पाठे कछा—ते सर्व बोला में  
कहियो। अर्ने पाछिला बोल होले बंधन बांध्यां ताड़वा ने अर्थ लकड़ियादिक  
थी कूट्यां धर्म नहीं। तिम भात पाणी थी पोप्यां पिण धर्म नहीं। चली  
आंगल कछो पारका व्याहव नाता जोड़या तो अतीचार. अर्ने घरका पुत्रादिक  
ना हव कियां अतीचार नहीं लागे। पिण धर्म किम कहिये। चली प्रथम

व्रत ना ५ अतिचार में दास दासी स्त्री आदिका ने मारवा ने अर्थ घर में धांधी पाणी ना विच्छेद पाड्या अतीचार परं दास दासी पुत्रादिक नें पोषे, तिण में धर्म किम कहिये । जे तिर्यञ्च रे भात पाणी रा विच्छेद पाड्या अतीचार छै । तिम मनुष्य ने भात पाणी रो विच्छेद पाड्या अतीचार छै । अने तिर्यञ्च ने भात पाणी थी पोष्या धर्म कहे तो तिण रे लेखे दास दासी पुत्र स्त्रियादिक मनुष्य नें पिण पोष्या धर्म कहिणो । ए अतीचार तो समचे जीवन पाणी रो विच्छेद करे ते अतीचार कह्यो छै । अने में तिर्यञ्च पिण आया मनुष्य पिण आया । अने जे कहे स्त्रियादिक ने पोषे ते विषय निमित्ते, दास दासी ने पोषे ते काम ने अर्थ । तिण सुं या नें पोष्या धर्म नहीं । तो गाय ऊँट छाली बलद इत्यादिक तिर्यञ्च ने पोषे ते पिण घर रा कार्य नें इज पोषे । ए तो तिर्यञ्च मनुष्य नवजाति ना परिग्रह माहि छै । ते परिग्रह ना किया धर्म किम हुवे । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति २४ बोल सम्पूर्णा ।

वली कोई इम कहे । तुंगिया नगरी ना श्रावकां रा उघाड़ा वारणा छै । ते मित्य नें देवा नें अर्थ डा वारणा छै । इम कहे, तेहनों उत्तर— वारणा छै । ते तो साधु री भावना रे अर्थ कहा छै । ते किम—जे और मि री तो बिड़ खोल नें पिण माहे आवे छै । अने साधु किमाड़ खोलनें आहार लेवा न आवे । ते माटे श्रावकां रा उघाड़ा वारणा कहा छै । साधु री भावना रे नहीं । सहजे उघाड़ा हुवे जद राखै । तिणसुं “अवगुंय दुवारा” कह्यो छै । भगवती श० २ उ० ५ तुंगिया नगरी ना श्रावकां रे अधिकारे टीका में बृद्ध व्याख्यानुसारे कियो ते टीका कहे छै ।

अवगुंय दुवारेति—अप्रावृतद्वाराः कषाटादिभि रस्थगित एह द्वारा इत्यर्थः । सदृशेन लामेन न कुतोपि पापंढिका द्विभ्यति शोमन मार्ग परिग्रहेणो- दघाट शिरसस्तिष्ठन्तीति भावः—इति वृद्धव्याख्या ।

इहां भगवती नी वृत्ति में पिण इम कह्यो । जे घर ना द्वार े नहीं ते भला दर्शन रे सम्यक्त्व ने लामे करी । पिण किणही पायंडी थी डरे नहीं । जे पायंडी आवी तेहना स्वजनादिक नें पिण चलावा असमर्थ । कदाचित् कोई पायंडी आवी चलावे । एहवा भय करी किमाड़ जड़े नहीं । इम कह्यो छै । तथा बली उवाई नो वृत्ति में पिण वृद्ध व्याख्यानुसारे इमज गे छै । ए तो कत्व नों सेंडा पणो बख्ताण्यो । तथा सूर्यगडाङ्ग ध्रु० २ अ० २ दीपिका में पिण हिज कह्यो छै । ते दीपिका लिखिये छै ।

अवगुण्य दुवारेति—अप्रावृतानि द्वाराणि येषां ते तथा सन्मार्गलाभाच्च कुतोपि भयं कुर्वन्ती त्युद्घाटित द्वाराः ॥

इहां सूर्यगडाङ्ग नी दीपिका में पिण कह्यो । भलो मार्ग सम्यग् दृष्टि पा ते माटे कोई ना भय थकी किमाड़ जड़े नहीं । इहां पिण कत्व नों दृढपणो बख्ताण्यो । तथा बली सूर्यगडाङ्ग ध्रु० २ अ० ७ दीपिका में कह्यो । ते दीपिका लिखिये छै ।

अवगुण्य दुवारेति—अप्रावृत मस्थगितं द्वारं गृहस्य येन सो ऽ प्रावृतद्वारः परं तीर्थिकोऽपि गृहं प्रविश्य धर्मैर्यदि वदेत् वदतु वा न तस्य परिजनोपि सम्यक्त्वा-बालयितुं शक्यते तद्गीत्या न द्वार प्रदान मित्यर्थः ।

इहां पिण कह्यो । जे परतीर्थी घर में आवी धर्म कहे । ते आ ना परिजन ने पिण चलावा मर्थ, ए सम्यक्त्व में सेंडों ते माटे पायंडी रा थकी जड़े नहीं । इहां पिण सम्यक्त्व नों सेंडा पणो बख्ताण्यो । पिण न कह्यो । असंयती ने देवा ने अर्थ उघाड़ा चारणा राखे । एहवा कह्यो नहीं । ए तो “अवगुण्य दुवार” नों अर्थ टीका में पिण सम्यक्त्व नों दृढपणो कह्यो । तथा भिक्षु ते साधु रो भावना रे अर्थ चारणा उघाड़ा राखना कहे तो ते पिण मिले । ते किम—साधु नें बहिरावा नों पाठ आगे कह्यो छै । ते माटे ए भावना रो पाठ छै । असंयती भिख्यारी रे अर्थ उघाड़ा चारणा हुवे । तो भिख्यारां नें देवा रो पिण कति । ते भिख्यारां ने देवा रो कह्यो न थी । “समणे निर्गन्धे

फारु पसणिज्जेण" इत्यादि. श्रमण निर्ग्रन्थ नै प्राप्नु एवणीक देतो थको विचरे ।  
साधु नै देवा नो कह्यो । ते माटे साधु रे उध वारणा पिण भिख्यासां रे अर्थ उघाडा वारणा न थी । डाहा हुवे तो विंरि जोइजो ।

## इति २५ बोल सम्पूर्ण

केतला एक कहै छै । जे भगवती श० ८ उ० ६ यती नै दीघां पाप कह्यो । पिण संयतासंयती नै दियां पाप न कह्यो । ते माटे श्रावक नै पोष्यां धर्म छै । अने श्रावक नै दीघां पाप किण सूत्र में कह्यो छै । ते बतावो । इम कहै तेहनों उत्तर—सूयगडाङ्ग श्रु० २ अ० ७ तीन पक्ष कह्या छै । धर्मपक्ष-अधर्मपक्ष-मिश्रपक्ष. साधु रे सर्वथा व्रत ते "धर्मपक्ष" अव्रती रे किञ्चित् व्रत नहीं. ते "पक्ष" श्रावक रे केई एक वस्तु रा त्याग-ते-तो व्रत केई एक वस्तु रा त्याग नहीं ते अव्रत, ते भणी श्रावकनै "मिश्रपक्ष" कह्यो जे । जेतली व्रत छै श्रावक रे-ते-तो क्ष माहिली छै । जेतली अव्रत छै ते अधर्मपक्ष माहिलो छै । सेवे सेवावे अनु-भवे-तिहां वीतराग देव आना देवे नहीं । ते भणी श्रावक रे सेवां सेवायां धर्म नहीं । श्रावक रे जेतला १ छै ते तो व्रत छै धर्म छै तेतलो २ । १८ छै ते छै अधर्म छै । ते श्रावक रा व्रत अने नो निर्णय सूत्र साक्षी करी कहै छै ।

सैजे इमे गामागरं नगरं जाव सणिणवेसेसु. मनुया भवन्ति. तं० अप्पारंभा अप्प परिग्गहा. धम्मिं १. धम्मं गुआ. धम्मिंढा. धम्मक्खाई. धम्म पलोइ. धम्मपल्लयणा. धम्म-समुदायरा. धम्मेषां चव वित्ति कप्पेमाणा. सीला सुब्बयां सुपडिआणांदा हु एगच्चाओ. पाणाइवायाओ पडिविर व जीवाए. एगच्चाओ प्पडिविरया. एवंज परिग्गहां नो

पड़िविरया. एगच्चाओ. —पड़िविरया. एगच्चाओ कीहाओ.

णाओ. मायाओ. लोभाओ. पेजाओ. दोसाओ. कलहाओ.  
अब्भक्खाणाओ. पेसुणाओ. परपरिवायाओ. तिरतीओ.

यामोसाओ. मिच्छा दंसण सल्लाओ पड़िविरया जावज्जीवा  
एगच्चाओ. डिविरया. जावजीवाए. एगच्चाओ. आरं-  
भाओ. समारंभाओ. पड़िविरया जावजीवाए एगच्चाओ.  
आरंभ रंभाओ. अपड़िविरया. एगच्चाओ. रणकरा-  
वणाओ पड़िविरया जावजीवाए. एगच्चाओ. पड़िविर  
एगच्चाओ. पयण पयावणाओ. पड़िविरया ।व जीवाए.  
एगच्चाओ पयण पयावणाओ पड़िविरया. एगच्चाओ कोट्ट  
पिट्ठण तज्जण तालण वह वंध परिकिलेसाओ. पड़िविरया जाव-  
ज्जीवाए. एगच्चाओ अपड़िविरयाओ. एगच्चाओ न्हाणु मदण  
वणणक विलेवण सद्द फरिस रस रूव गंध मल्ला काराओ  
पड़िविरया जावजीवाए. एगच्चाओ अपड़िविरया. जे यावण  
तहप्पगारा सावज्ज जोगोवहिया कम्मंता. परपाण परि वणकरा  
कज्जंति. ततोवि एगच्चाओ पड़िविरया जावज्जीवाए. एगच्चा-  
ओ अपड़िविरया तं जहा समणो वासगा भवति .

( उवाई प्र० २० तथा सूयगहाङ्ग अ० १८ )

से० ते. जे० एह प्रत्यक्ष संसारी जीव ग्राम आगर लोहादिक ना. न० मगर जिहां कर  
नहीं गयादिहं नो जा० यावत्. स० सन्निवेश तेहनें विषे. म० मनुष्य पुरुष स्त्री आदिक छे तं० ते  
कोहे छै. अ० अल्प थोड़ो ज आरंभ व्यापारादिक अल्प थोड़ो परिग्रह धनधान्यादिक ध० धर्म  
श्रुत चरित्र ना करणहार. ध० धर्म श्रुत चरित्ररूप ने केडे चाले छै. ध० धर्म श्रुत चरित्रग्रथ  
हो धर्म वेष्टारूप. ध० धर्म श्रुत चरित्र रूप भय्य ने समलावे. ध० धर्म श्रुत चरित्र रूप ने रहिना  
बोमय लाबो. धार २ तिहां दृष्टि प्रवृत्ते. ध० धर्मश्रुत चरित्ररूप ने विषे कर्म करिबा

छै. धर्म ने रागे रंगाया छै. धर्म धर्मभुत चारित्ररूप ने विषे प्रमोद सहित छै  
 जेहनों. धर्म धर्म चारित्र ने अखंड पाल वे सूत्र नें आराधने ज कृत्ति छै आजीविका करे छै ।  
 ४० भलो शील छै जेहनों. ४० भला मत छै. ४० आह्लाद हर्ष सहित चित्त छै साधु नें  
 बिषे जेहना. सा० साधु ना समीपवर्त्ती. ए० एकैक प्राणी जीव इन्द्रियादिक नें अतिपात हणबो  
 तेह थकी अतिपाय सूँ चिरम्या निवृत्या त्रि हुआ छै । आ० जीवे ज्यां लगे. एकेक प्राणी जीव  
 पृथिव्यादिक थकी निवृत्या न थी. ए० इम सृषावाद अदत्तादान मैथुन परिग्रह एक देश थकी  
 निवृत्या इत्यादिक मूर्च्छा कर्म रा थी निवृत्या. ए० एकैक मूठ खोरी मैथुन परिग्रह द्रव्य  
 मूर्च्छा थकी निवृत्या न थी. ए० एकैक क्रोध थकी निवृत्या एकैक क्रोध थकी निवृत्या न थी,  
 मा० मान थी निवृत्या एकैक मान थी न निवृत्या. ए० एकैक थी निवृत्या एकैक थी  
 न निवृत्या. एकैक लोभ थी निवृत्या एकैक लोभ थी न निवृत्या. पे० एकैक प्रेम राग थी निवृत्या  
 न थी निवृत्या. दो० एकैक द्वेष थकी निवृत्या. एकैक थकी न निवृत्या. क० एकैक कलह थी  
 निवृत्या एकैक थी न निवृत्या. अ० एकैक अभ्याख्यान थी निवृत्या एकैक थी न निवृत्या. पे०  
 पेछणचाही थी निवृत्या एकैक थी न निवृत्या एकैक पारका अपवाद थी निवृत्या एकैक थी  
 न निवृत्या एकैक रति अरति थी निवृत्या एकैक थी न निवृत्या. मा० एकैक कृपा थी  
 निवृत्या एकैक थी न निवृत्या. एकैक मिथ्या दर्शन थी निवृत्या छै जा० जीवे ज्यां लगे.  
 मिथ्यात्व दर्शन थकी न निवृत्या. ए० एकैक जीवनों उपद्रव हणबो न ते उप-  
 द्रव्यादिक नें विषे 'बो. अ० अति सूँ प० निवृत्या छै. ए० एकैक आरम्भ  
 थकी. अ० निवृत्या न थी. एकैक करिवो बो ते अने रा पाहे तेहथी. प० निवृत्या छै. जा०  
 जीवे ज्यां लागे. ए० एकैक करिवो करावबो व्यापारादिक तेह थकी निवृत्या न थी. ए० एकैक  
 पचिवो पचाविवो अने रा पाहे तेह थी निवृत्या छै जा० जीवे ज्यां लगे. प० एकैक पचिवो पोते  
 पचाविवो अने रा पाहे अन्नादिक तेह थकी निवृत्या न थी. एकेक को० कृदण पीदण ताडन तर्जन  
 बध परिच्छेद्य ते नो उपजावो ते थी निवृत्या. जा० जीवे ज्यां लगे. एकैक थी निवृत्या  
 न थी. एकैक उगटणो चोपड वाना नो पूरवो द्रवकानो करवो विलेपन फूल  
 हार आभरखादिक तेह थकी प० निवृत्या. जा० जीवे ज्यां लागे. एकैक आनादिक पूरें  
 तेह थकी निवृत्या न थी । जे काई बली अनेराई अनेक तेहवा पूर्वोक्त. सा०  
 योग मन काया रा उ० प्रयोजन प्रस्थय क० कर्म ना : प० पर  
 अनेरा जीव नें प० परिताप ना क० हार. क० करीजे निपजावे. ते० तेह थकी निश्चय. प०  
 थकी निवृत्या छै. जा० जीवे ज्यां लगे. ए० एकैक योग थकी. अ० निवृत्या न थी,  
 त० ते कहै छै. स० ना सेवक पढ़वा अ० कहिये ।

अठे रा मत जुदा । मोटा जीव हम्पबारा

मोटा झूठ रा मोटी खोरी मिथुन परि रो मर्यादा उपरान्त त्याग-क्षीधो ते तो



व्रत कही । अने पांच खावर हणवा रो आगार छोटी भूठ छोटी चोरी मिथुन परिग्रह री मर्यादा कीधी-ते माहिला सेवन सेवावन अनुमोदन रो आगार ते अव्रत कही । वली एक एक आरंभ समारंभ रा त्याग कीधा ते व्रत एकैक रो आगार ते अव्रत एकैक करण करावण पचन पचावन रा ते व्रत एकैक रो आगार ते अव्रत । एकैक कूटवा थी पीढवा थी बांधवा थी निवृत्या-ते तो व्रत अने एकैक कूटवा थी बांधवा थी निवृत्या न थी ते अव्रत एकैक खान उगतनीं विलेपन शब्द रस पकवांनादिक कस्तूरी आदिक कारादिक थी निवृत्या ते एकैक थी न निवृत्या ते अव्रत । जे अनेराई सा योग रा ते तो व्रत । आगार ते अव्रत । इहां तो जे १२ त्याग ते व्रत कहा । अने जेतला २ आगार ते अव्रत ।

१ । तिण में रस पकवांनादिक रा गोहणा रा त्याग ते व्रत कही । अने जेतलो खावण पीवण गोहणादिक भोगवण रो आगार ते अव्रत कही छै । ते व्रत सेवे सेवावे अनुमोदे ते धर्म नहीं । जे आवक तपस्या करे ते तो व्रत छै । अने पारणी करे ते अव्रत माही छै । आगार सेवे छै-ते सेवनवाला ने धर्म नहीं तो सेवावण वाला ने धर्म किम हुवे । ए अव्रत एकान्त खोटी छै । अव्रत तो रेणा देवी सरीली छै । ठाणाङ्गठाणे ५ तथा समवायाङ्गे अव्रत ने आ छै । ते अव्रत से धर्म नहीं । किण ही आवक १० सूकड़ी १० नीलोती उपरान्त त्याग कीधा ते दण उपरान्त त्यागी ते तो व्रत छै धर्म छै । अने १० नीलोती १० सूकड़ी रो आगार ते अव्रत छै । ते आगार आप सेवे तथा अनेरा ने सेवावे अनुमोदे ते अधर्म छै-सावध छै । जिम किणही ३ आहारना त्याग कीधा एक ऊन्हा पाणी रो आगार राख्यो तो ते ३ आहार रा त्याग तो व्रत छै धर्म छै । एक ऊन्हा पाणी रो आगार राख्यो ते अव्रत छै, अधर्म छै । ते पाणी पीवे गृहस्थ ने पावे अनुमोदे तिण व्रत सेवाई के अव्रत सेवाई । उत्तम विचारि जोइजो । ए तो प्रत्यक्ष पाणी पीयां पाप छै । ते पहिले करण अव्रत सेवे छै । और ने पावे ते बीजे करण व्रत सेवावे छै । अनुमोदे ते तीजे छै । जे पहिले करण पाणी पीयां पाप छै तो अनुमोदां किम होवे । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २६ बोल सम्पूर्णा ।

वलीअव्रत ने भाव

कहा ते पाठ लिखिये छै-

दसत्रिहे सत्ये प० तं०—

सत्य मग्गी विसं लोणं सिणंहे । र.मंविर्ल ।

दुप्पउत्तो मग्गो बाया काओ भावो य अबिरई ॥

( गायान्न गणे १० ),

द० दय प्रकारे स० जेणे करी हणिये ते शस्त्र ते हिंसक वस्तु वेहू भेद द्रव्य थकी अनें भाव थकी तिहां द्रव्य थी कहे छै । स० शस्त्र अग्नि थकी अनेरो अग्नि छै ते स्वकाय शस्त्र पृथ्व्यादिक नी अपेक्षा पर काय शस्त्र वि० विष. स्थावर-जङ्गम. लो० लवण ते मोठो. सि० स्नेह ते तेल घृतादिक. खा० खार ते भस्मादिक. आ० ओहणादिक. दु० दुष्प्रयुक्त पाहुआ मन. वा० वचन. का० इहां काया हिंसा ने विये प्रवर्ते हं ते मग्गी खड्गादिक शस्त्र पिण कांथा शस्त्र में आवे. भा० भावे करी शास्त्र कहे छै । अ० अव्रत ते अपचलाण अथवा रूप भाव शस्त्र ।

अथ अठे १० शस्त्र तिण में नें भाव कह्यो । तो जे धावक ने अव्रत सेवायां रुड़ा फल किम लागे । ए तो शस्त्र छै ते माटे जेतला २ अ रे त्याग छै ते तो व्रत छै । अनें जेतलो आगार छै ते सर्व अव्रत छै । आगार अव्रत सेवायां सेवायां शस्त्र तीखो कीधो कहिये । पिण धर्म किम कहिये । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

ति २७ बोल सम्पूर्णा ।

केतला एक कहे—अव्रत सेवायां धर्म नहीं पर पुण्य छै । ते पुण्य थी देवता थाय छै अव्रत थी पुण्य न बंधे, तो आवक देवलोक किसी करणी थी । तेहनी उत्तर—ए तो आवक व्रत आदरसा ते व्रत पालतां पुण्य बंधे । तेहथी देवता हुवे पिण थी देवता न । ते सूत्र कहे छै ।

बाल पंडित्यां भंते ! मणूसे किं नेरइयां उयं पकरेइ जाव देवाउयं किञ्चा देवेसु उववज्जइ गोयमा ! गो गेर ।

उयं पकरेइ देवाउयं किच्चा देवेसु उव वज्जइ से केणहेणं  
जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ गोयमा ! बाल पंडिणं  
णस्से तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एग-  
मवि रियं धम्मियं सोच्चा निसम्म देसं उवरमइ देसं णो-  
उवरमइ देसं पच्चखाइ. देसं णो पच्चखाइ. से तेणहेणं  
देसोवरमइ. देस पच्चखाणेणं णो गोरइया उयं पकरेइ जाव  
देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ. से तेणहेणं जाव देवे  
उववज्जइ ।

( भगवती श० १ उ० ८ )

पंडित ते देशप्रती म० हे भगवन्त ! किं स्यूं नारकी नू आयुषो. प०  
फरे. जा० यावत्. दे० देव नू आयुषो. किं करी नें. दे० देवलोक ने विषे उपजे. गो० हे गौतम !  
यो० नारकी ना आयुषो प्रते न करे. जा० यावत्. दे० देवनों आयुषो. किं करी ने. दे० देव ने  
विषे उपजे. से० ते स्यां माटे जावत्. दे० देवनू आयुषो किं करी ने. दे० देवलोक ने विषे  
उपजे. हे गौतम ! बाल पंडित म० मनुष्य. त० तथारूप. स० धर्म्य साधु. मा० माहण ते  
प्राहण ने पासे. ए० एक पिण्य आरम्भ रहित. ध० धर्म नू रुदु बचन. सो० सांभली नें.  
नि० हृदय धरी नें देशयकी विरमें स्थूल प्राणातिपातिक वजें सूक्ष्म प्राणातिपात थी निवर्त्ते नहीं.  
दे० देश काइक. प० पचले. दे० देश काइक. यो० न पचले. से० ते कारणे दे० देश उपरम्यो देश  
पचल्यो तेणे करी. यो० नहीं नारकी नों आयुषो फरे. जा० यावत् दे० देवनू आयुषो. किं  
करी ने. दे० देवने विषे उपजे. से० तेणे अर्थे यावत् देव ने विषे उ० उपजे ।

अठे कह्यो जे आवक देश थकी निवृत्यो देश थकी नथी निवृत्यो देश-  
पचखाण कीधो देश पचखाण कीधो नथी । जे देशे करि निवृत्यो देश  
प्राण कीधो तेणे करी देवता हुवे । इहां पचखाणे करी देवता कह्यो ते  
किम जे पचखाण पालतां कष्ट थी पुण्य वंधे तेणे करी देवायुष कह्यो । पिण  
अन्नत सेव्यां सेवायां देव गति नो वंध न कह्यो । डाहा हुवे तो विचारि ओइओ ।

इति १८ बोल सम्पूर्णा ।

केतला एक कहे—ने श्रावक सामायक में साधु ने बहिरावे तो सामायक भाने, ते भणी सामायक में साधु ने बहिरावणो नहीं ते किम श्रावक सामायक में जे द्रव्य बोसिराया छै ते द्रव्य आह्वा लियां बिना साधु ने बहिरावणो नहीं । एह्वी झूठी । णा करे तेहनो उत्तर—सामायक में ११ व्रत निपजे के नहीं ।

कहे ११ व्रत तो निपजे छै । तो १२ में क्यूँ न निपजे सूं तो व्रत अंटे के नहीं । में तो सावद्य योग रा पच छै । अने साधु ने बहिरावे ते निरवद्य योग छै । ते भणी सामायक में बहिरायां दोष नहीं । तिवारे आगलो कहे द्रव्य बोसिराया छै । तिण सूं ते द्रव्य बहिरावणा नहीं । तेहने इम कहिये ते द्रव्य तो एहनाज छै । ए तो सामायक में छांड्या जे द्रव्य तेह्यी सावद्य सेवा रा त्याग

। अने साधु ने बहिरावे ते निरवद्य योग छै ते माटे दोष नहीं । जो सामायक में छांड्या जे द्रव्य बहिरावणा नहीं । इम जाणी आहार बहिरावे नहीं तो तिण रे लेखे जागां री पीठ, फलक शय्या संस्तारा री आह्वा पिण देणी नहीं । बली त्यां रे लेखे औषधादिक पिण देणी नहीं । बली स्त्री पुत्रादिक दीक्षा लेवे तो तिण रे लेखे सामायक में त्याने पिण आह्वा देणी नहीं । ए नव जाति रो परिग्रह सामायक में बोसिरायो छै । स्त्रीआदिक पिण परिग्रह माहें छै ते माटे अने स्त्रीआदिक नी तथा जागां आदिक नी आह्वा देणी तो नादिक री पिण आह्वा देणी । अने हाथां सूं पिण भशनादिक बहिरावणो । “बोसिराया” कही पाड़े तेहनो उत्तर—ए नव जाति रो परिग्रह सामायक में बोसिरायो कहाँ ते पिण देश थकी बोसिराया, परं ममत्व भाव प्रेम रागबन्धन तांतो दूटो नथी । पुत्रादिक थयां राजी पणो आवे छै । ते माटे एहनाज छै पिण सर्वथा प्रकारे ममत्व भाव मिछ्यो नथी । ते सूत्र पाठ लिखिये छै ।

समणोवासगस्स एां भंते सामाइय कडस्स एो-  
ए अत्थ एास्स केइ भंडं अबहरेज्जा सेएां भंते ! तं भंडं  
अणुगवे एाणे किं भंडं, एागवेसइ, परायगं भंडं  
एागवेसइ, गोयमा ! भंडं एागवेसइ नो परायगं भंडं  
एागवेसइ भंते ! तेहिं सीलव्वय बेरमएा

पचक्खाण पोसहो ववासेहिं से भन्दे अभंडे भवइ. हंता भवइ. से केणं खाइणं अट्ठेणं भन्ते ! एवं बुच्च सयं भन्दं अणुगवेसइ णो परायणं भन्दं णुगवेसइ. गोयमा ! तस्सणं एवं भवइ. णो ॐ हिरण्णे णो मे सुवण्णे णो ॐ कसे नो मे-दूसे. विउ धण एण रयण-मोत्तिय-शंख. सिल-प्पवाल रत्त रयण मादिए संतसार । वणज्जे ममत्त भावे पुण से अपरिणणए भवइ से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वु इ भन्दं अणुगवेसइ णो परायणं भन्दं अणुगवेसइ ॥ १ ॥

समणो वासगस्स णं भन्ते ! सामाइय कडस्स समणो-वासए. अत्थमाणस्स केइ जायं चरेज्जा सेणं भन्ते ! किं चरइ अजायं चरइ. गोयमा ! जायं चरइ नो अजायं चर. तस्सणं भन्ते ! तेहिं सीलव्वयगुण. वेरमण पचक्खाण पोसहोववासेहिं सा जाया अजाया भवइ. हंता भवइ. से केणं खाइणं ट्ठेणं भन्ते ! एवं चइ जायं चरइ नो चरइ गोयमा ! तस्सणं एवं भवइ नो ॐ माया णो मे पिया णो मे भाया णो मे भइनी. नो मे भज्जा नो मे पुत्ता नो मे धूआ नो मे सुण्हा पेज्ज बंधणे पुण से अवोच्छिण्णे भवइ. से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नो अजायं चरइ. ॥ २ ॥

( भगवती श० प ३० ५ )

सं० श्रमणोपासक आचरन्ते. म० हे भगवन्त ! सा० सामायक. क० कीधि हन्ते सं० श्रमणं नें उपाश्रय नें विपे. अ० पैठो छै पृहवे. के० कोइक पुरुष. म० म० द वच्चादिक गृह नें विपे ते प्रति. अ० अपहरे. से० ते आचरन्ते. म० हे भगवन्त ! ते० ते म० द वच्चादिक प्रते गवै-पया करे सामायक पूर्ण धर्या पछी जाई. किं ते स्यू पोता ना म० द नी. अ० अनुगवेपया करे

छै. प० के पारका भंड नी. अनुगवेषणा करे छै. गो० हे गौतम ! स० पोताना भंडनी अनु-  
गवेषणा करे छै । नो० नहीं पारका भंडनी अनुगवेषणा करे छै. त० ते श्रावक नें भ० हे भगवन्त !  
से० ते. सो० शील व्रत गुण व्रत. प० रागादिक नी विरति. प० पचखाण नवकारसी प्रमुख. पो०  
पोषध पर्व तिथि उपवास तिथि. से० ते. भ० भंड वस्तु नें अभंड धाई परिग्रह बोसि-  
राव्या थी. हं० हां गौतम ! हुइं. से० ते. के केह अ० धये. म० हे भगवन्त ! ए० इम. हु०  
कहे. स० ते श्रावक पोता नू भंड जोई छै. शो० नहीं परकू भंड अ० जोई छै । गो० हे  
गौतम ! त० ते श्रावक नों. ए० एहवो मननो परिग्राम हुइं. शो० नहीं. मे० माहरो. हिरय  
शो० नहीं माहरो छु० छुवर्ण. शो० नहीं. मे० माहरो. कं० कांस्य. शो० नहीं. मे० माहरो. दू०  
दूयवन्न शो० नहीं. मे० माहरो. वि० विस्तीर्ण. ध० धन गणिमादि क० छवर्ण ककैतनादि.  
र० रत्न मणि चन्द्रकान्तादि. मो० मोतो. स० शंख. सि० मिलिप्य प्रवाली. र० रत्न पद्मरागादि.  
सं० विद्यमान. सा० सार प्रवान. सा० स्वाप ते. द्रव्य बोसिराभू परिग्रह मन वचन हं  
करिबू करायबू पचखू छै । पिण. म० परिग्रह ने धिये समता परिग्राम नथी पचख्या, अनु-  
मति ते समता ते न पचखी तेहनी समता तेथे मेली नथी. से० ते. तेथे अर्थे हे गौतम ! ए० इम  
हु० कहे. सं० पोतानू भंड अ० जोई छै. शो० पारकू भंड कोवे नथी. स० अभयोपासक नें  
भ० हे भगवन्त ! सामायक कोवे छते. स० धमण ने उपास्य बैठे छै. के० कोई नार पुरुष  
भार्या प्रति च० सेवे. से० ते नार पुरुष. भ० हे भगवन्त ! भार्या प्रते सेवे के अभार्या प्रते सेवे. हे  
गौतम ! जा० भार्या प्रति सेवे छै. शो० नहीं अभार्या प्रति सेवे छै । त० ते . भ० हे  
भगवन्त ! सो० शीलव्रत अनुव्रत गुणव्रत. व० रागादिक विरति. प० पचखाण नवकारसी प्रमुख.  
पो० पोषध उपवास तेथे करीने. सा० ते भार्या प्रते बोसरावी छै ते भार्या अभार्या. म० हुइं.  
हं० हां. गौतम ! हुइं. से० ते. केई खा० ख्याति अ० अर्थे करी ने. म० हे भगवन्त ! ए० इम.  
हु० कहे. जा० भार्या प्रति सेवे छै । शो० नहीं अभार्या प्रति सेवे छै । हे गौतम ! ते श्रावक  
नों. ए० एहवो अभिप्राय हुइं. शो० नहीं मे० माहरी माता. शो० नहीं. मे० माहरो पिता. शो०  
नहीं. मे० माहरो भाई. शो० नहीं मे० माहरी बहिन. शो० नहीं मे० माहरी भार्या. शो०  
नहीं मे० माहरी पुत्र. शो० नहीं मे० माहरी बेटा. शो० नहीं मे० माहरी. हु० पुत्रनी भार्या.  
पे० पिण प्रेमबंधन. से० तेहने. अ० विच्छेद नथी पान्यो ते श्रावक नें तिणें अनुमति पचखी नथी.  
प्रेम बन्धने अनुमति पिण पचखी नथी. से० ते. तेथे अर्थे. गो० हे गौतम ! ए० इम हु० कही.  
जा० यावत्. शो० नहीं अभार्या प्रति सेवे ।

अथ इहां कह्यो—श्रावक सामायक में साधु उत्तमा, तेणं  
बंटां कोई तेहनी भंड ते वस्तु चोरे तो ते सामायक चित्ताखां पछे पोता नों भंड  
गवेवे के अनेरा नों भंड गवेवे । तिवारे भगवान् कह्यो—पोता नो इज भंड गवेवे  
पिण अनेरा नों गवेवे नहीं । ति रे वली गौतम पूछ्यो । तेहने ते सा क

पोषा में भंड बोसिरायो है। भगवान् कह्यो हां बोसिरायो । ते बोसिरायो तो  
 बली पोता नो । किण कह्यो । जद भगवान् कह्यो ते में  
 चिन्तवें । ए रूपो सोनो रत्नादिक माहरा नहीं विचारे पिण तेहने  
 भावें छूटो नहीं । ईम कह्यो तो जोवौनी सामायक में छूट्यो नहीं ।  
 ते माटे ते धनादिक तेहनों कह्यो बोसिरायो कह्यो है । ते धनादिक थी  
 करवो त्याग्यो है । पिण तेहनों मिट्यो नहीं । ते भणी  
 ते दिक एहनों है । ते माटे सामायक में साधु ने वहिरावे ते कार्य निरवद्य  
 है ते दोष । जिम नो कह्यो तिम आगले आलावे छी नो कह्यो । तो  
 में पिण छी ने बोसिराई कही है । तेहनी साधु पणा री आत्मा देवे तो  
 आहार नी किम न देवे । खियादिक वहिरावे तो आहार किम न वहिरावे ।  
 इहाँ तो सूत्र में नो छी नो एक सरीखो कह्यो है । ते माटे वहिरायां  
 दोष नहीं । जिम आवश्यक सूत्र में कह्यो—साधु एकाशना में एकल ठाणा में  
 आयां तो पचकाण भांगे नहीं । तो श्रावक नो सामायक किम भांगे ।  
 संतो कार्य कियां सामायक भांगे पिण निरवद्य कार्य थी सामायक बि भांगे ।  
 श्रावक रे साधु ने वहिरायां १२ माँ निपजे है । व्रत थी सामायक भणि  
 , त्यागे सम्पदृष्टि किम कहिये । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति २६ बोल सम्पूर्णा ।

धली केतला पाषंडी श्रावक जिमायां धर्म श्रद्धे । तिण उपर पड़ि-  
 मांधारी जिम कल्यो अभिग्रहधारी साधु रो नाम लेवे । तथा महावीर रा  
 न साधु अशनादिक देवे नहीं ते कल्य नहीं तिणसूं न देवे पिण  
 गृहस्थ त्यागे वहिरावे तिण ने धर्म है । तिम श्रावक ने अशनादिक साधु देवे  
 नहीं ; ते साधु रो कल्य नहीं तिण सू न देवे है । पिण गृहस्थ श्रावक ने जिमावे  
 तिण में धर्म है । ईमे कुहेतु उगाय ने श्रावक जिमायां धर्म कहे है । तेहनी उत्तर—  
 महावीर नो साधु ने श्री पाश्र्वनाथ नो साधु अशनादिक देवे नहीं । ते तो त्यागो  
 नहीं । पिण महावीर नो साधु ने कोई गृहस्थ आहार देवे तेहने पाश्र्वन

जिन कल्यो ॥ जो जाणे अनुमोदना करे । न  
अशनादिक देवे नहीं देवावे नहीं ॥ देता नें अनुमोदे नहीं ।  
पिण देवे नहीं तिणसूं आचक्र नें जिमायां पार्श्वनाथ महावीर ना नों  
मिले नहीं । वली पार्श्वनाथ ना साधु केशी स्वामी गौतम ने संथारो द्विओ  
कह्यो छै ते लिखिये छै ।

फासुयं पं कुस तणाणिय ।  
गोयमस्स निसेज्जाए खिप्पं संपणामए ॥

( अ० २३ गा० १७ )

प० फा० प्राशुक्र शीवरहित निर्जीव । त० तिहो तिम्लुक वन में विवे  
ना पराल शालिनो १ ग्रीहिनो २ कोद्वानो ३ वनस्पति नो ४ प० पांचसों  
प्रमुख नो ५ अ० अनेरा पिण साधु योग्य विक. गो० गौतम ने ति० ने  
वि० श्रीव. सं० आपे छै निमित्त.

गौतम ने तो केशी स्वामी संथारो आयो कह्यो छै । अनें  
ने तो साधु संथारादिक त्रिविधे करि आपे नहीं । ते भणी पार्श्वनाथ  
महावीर ना रो न्याय ने जिमाव्यां ऊपर न मिले । हुवे तो  
विचारि जोइजो ।

ति ३० गोल ० ।

वली असोषा केवली अन्यमति ना लिङ्ग कोई ने शिष्य न  
करे ण करे नहीं । पिण अनेरा साधु कने "तूं दीक्षा छे" उपदेश करे छै ।  
से लिखिये छै ।

सेणं भंते पठ्वावेज्जवा णो इण्डे

पुण रेज्जा ।



से० ते. भ० हे भगवन्त ! प० प्रवज्या देवे. सु० मुदावे. गो० ए अर्थ नहीं. उ० उपदेश. पु० बली. क० करे. “तू प्रभु का पासे दीक्षा ले” इस उपदेश करे ।

अथ इहां पिण कह्यो जे असोक्षा के बली आप तो दीक्षा न देवे । परं भनेरा दीक्षा लेवानों उपदेश करे छै । अनें श्रावक नें अशनादिक देवानों साधु उपदेश पिण न करे, तो देण वालां ने धर्म किम हुवे । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ३१ बोल सम्पूर्णा ।

अभिग्रह घारी परिहार विशुद्ध चारित्रिया नें भनेरा साधु आहार न देवे । कारण पढयां ते साधु नें पिण अशनादिक देवो कह्यो छै ते लिखिये छै ।

परिहार कप्पट्टियस्सणं भिक्खुस्स कप्पइ. आयरिय. उवज्झाएणं. तद्विसं एगंसि. गिहंसि पिंडवायं. दव्वावित्तए. तेणपरं. नो से कप्पइ. असणं वा ४ दाउंवा अणुपदाउंवा कप्पइ. से अ परं. वेया. वडियं करित्तए. तंजहा. उट्ठाणंवा निसीयावणं वा तुयट्ठावणंवा उच्चारंवा पासवणंवा. खेलं जल संवाण विगिचणंवा विसोहणंवा करित्तए अह पुण एवं जारोज्जा. छिण्णा वा एमुपन्थेसु आउरे भुंजिए पिवासिए वसी दुव्वले किलं ते मुच्छेज्जवा. पवडेज्जवा. ए वसे कप्पइ. असणंवा ४ दाउंवा अणुपदाउंवा ।

( दृढत्कल्प उ० ४ बो० २६ )

प० परिहार विशुद्ध चरित्र ना घसी ने परिहार  
ओ घसी कोई क्षप विशेष ने बिने प्रवेश करे दिन

नि निष्ठ परिहार विशुद्ध चरित्र  
तेह-नेगू ना घर नों

वे विधि, दिवावे आहार लेवा नी ते पिण पारयो जेहवो कल्पे तिम रीति देखाइो एह निविश्वमाण कपट्ठी ५० परिहार विशुद्ध चरित्र नी ए विध. मि० साधुने. क० कल्पे. आ० आचार्य. उ० उपाध्याय स० तेण तप करिवो । ते ते दिवस नें विषे. ए० एक घर ने विषे पि० आहार ने, द० देवरावो कल्पे ते विधि देखाइे छै । ते० ते दिन उपरान्त. नो० न कल्पे. से० तेहने. अ० अशनादिक ४ दा० देवराय घो. अ० घणीवार पिण देवरावो न कल्पे. क० कल्पे. से० तेहने. अ० अनेरी. वे०

ग्लामना पामे ते माटे. तं० तिमज छै तिम कहे छै. उ० काउसमा ऊभो करिवो. नि० - शवो. छ० सूवावयो. उ० बढी नीति. पा० लघु नीति. खे० खेल गलानों बलखो. ज० शरीर मो मल स० संग्राह नासिका नो मैल. वि० निवर्त्ताववो. वि० उच्चारादिके शरीर खरब्यो हुवे. ते शुद्ध कराववो असजाय टलाववा. अ० बली. ए० इम ज० जाये. हिबे बली इम करता नें शरीर छामना पावे. तिवारे गुह आदिक बैयावच कही. ते रीति करे. जायो जे. छि० कोई आवतो जावतो नथी. एहवा निग्रंथ मार्ग ने विषे ते चरित्रियों. आ० आतंक रोगे करी. भूख पीदितो हुवे. पि० तृषा तपस्वी. दु० दुर्धल. कि० क्लामना पामी. मु० मूर्च्छित. नि० निर्बल पयो. ए० भूख लागी. ए० इम एहवे. से० ते कल्पे तेहने. अशनादिक ४ एकवार आसी आपवो. अ० बणीवार आपवो ।

अठे कथो । जे अमिग्रह धारी परिहार स्थित साधु ने पिण तेगेज दिने स्थिर साथे जाइ आहार दिवावे-उपरान्त न दिवावे । अनेरी तेहने बीजा साधु करे । अने भूख तृषाई कारणे अशनादिक पिण ते अमिग्रह धारी ने अनेरा साधु देवे इम कथो । अने "श्रावक" ने तो कारण पिण साधु अशनादिक देवे नहीं, दिवावे नहीं । ते माटे जिन कल्पी स्थिर नी नों न्याय श्रावक नें जिमाण्यां न मिले । बली जिन पी साधु स्थिर कल्पी ने अशनादिक देवे नहीं परं देता नें अनुमोदना तो करे छें । अने नें तो साधु आहार देवे नहीं दिवावे नहीं । देता ने अनुमोदे पिण नहीं । ते माटे इहां जिन पी स्थिर कल्पी रो न्याय मिले नहीं । अने जिन पी साधु तो विशेष नें शुभ कर्म ने अर्थ शुभ योग राई त्याग कीधा ते किण नें ई दीक्षा देवे नहीं बलाण करे नहीं । अनेरा साधु नी व्यावच करे नहीं । संथारो करावे नहीं । पिण और साधु ए कार्य करे छै । त्वारी अनुमोदना करे छै । अनुमोदना रा नथी कीधा । अने श्रावक नें आहार देवे । तेहनी अनुमोदना करवा रा ई साधु रे त्याग छै । अने जिन कल्पी नि योग रूध्यां-ते विशेष गुण रे अर्थ पिण सावच जाणी त्याग्या नथी । अने श्रावक नें देवा रा साधां त्याग कीधा, ते जाणी नें त्रिविधे २ त्याग कीधा । घर छोड़ी दीक्षा लीधी तिण दिन

पहचूँ "सर्वं सावज्ञ जोगं प तामि" सावध योग रा म्हारे  
 ॥ कही चारित्र आदखो । तो ते गृहस्थ ने देवो त्याग्यो-ते पिण  
 ज्ञान ने त्याग्यो छै । तो सावध 'में धर्म' कहिये । जाहा हुवे तो विचारि  
 जोइजो ।

## इति ३२ बोल सम्पूर्णा ।

जे सूर्यगडाङ्ग में कह्यो-जे साधु गृहस्थादिक नें देवो त्याग्यो । ते  
 नों हेतु ने छोड़्यो, पहचो कह्यो । ते लिखिये ।

जेणिहं णिव्वहे भिक्खू अन्नपाण तहाविहं  
 णुप्पयाण न्नेसिं तं विज्जं परिजाणिजा ।

(सूर्यगडाङ्ग भु० १ अ० ६ पा० २३)

जे० जेणे अन्नपाणी हं हम करी इह लोक नें बिचे. भि० साधु संयम निर्वहे जीवे.  
 विभ सहवो निहोव अन्नपाणी ग्रहे आजीविका करे एह अन्नपाणी नों देवो केहने. स० गृहस्थ नें  
 घर तीर्थी नें आसयती नें. तं० ते सर्व संसार हेतु जाणी नें पड़ित परिहरे ।

इहाँ पिण कह्यो । ते गृहस्थादिक नें देवो संसार नों हेतु जाणी  
 नें त्याग्यो । हम कह्यो तो गृहस्थ में तो आवक पिण आयो । तो ते अ  
 री साधु अनुमोदना किम करे । तिण में 'पुण्य' किम कहे ।  
 वि त्रि जोइजो ।

## इति ३३ बोल सम्पूर्णा ।

बली निशीथ में कह्यो । जे नों अनुमोदे तो बीमासी  
 प्रायश्चित्त आवे । ते खिये ।

भिक्षु एउत्थिएणावा गारत्थिएणावा असणावा ४  
देयइ देयन्तंवा साइज्जइ ॥ ७८ ॥

भिक्षु एउत्थिएणावा गारत्थिएणावा वत्थंवा  
पडिग्गहंवा पाय च्छणांवा देयइ देयन्तं वा साइज्जइ,  
॥ ७९ ॥

( निशीथ ३० १५ को० ७८-७९ )

जे० जे कोई भि० साधु साध्वी अ० अन्य तीर्थी ने गा० गृहस्थ ने अ० धनो-  
दिक ४ देवे दे० देवतां ने सा० अनुमोदे ॥ ७८ ॥

जे० जे कोई भि० . ति. अ० तीर्थी गा० गृहस्थ ने व० वक्त्र पा०  
क० कांवल्लो पा० पाय पुरुषों रजो हरण दे० देवे दे० देवता ने सा० अनुमोदे ॥ ७९ ॥

इहाँ गृहस्थ ने अशनादिक दियां, अने देतां ने अनुमोद्यां चाँमासी  
अति कष्टो छै । पिण गृहस्थ इज छै ते माटे गृहस्थ नों दान साधु ने  
अनुमोदनो नहीं । हुवे तो अनुमोद्यां क्यूं कष्टो । धर्मरी सदा ही  
साधु अनुमोदना करे छै । तिवारे कोई इहाँ अयुक्ति लगावी कहे । जे साधु  
ने अशनादिक देवे तो अति-अने गृहस्थ ने साधु देवे तिण ने भलो जाण्या  
प्रायश्चित छै । परं गृहस्थ ने गृहस्थ देवे तेहनी अनुमोदना नों प्रायश्चित नहीं । इम  
कहे तेहने उत्तर—इण निशीथ ने पनर में १५ उद्देशे पढ़वा कहा छै । “जे  
भिक्षु सचित्तं अंब भुंजइ भुंजंतंवा साइज्जइ” इहाँ कहा सति आबो भोगवें तो  
अने भोगवतां ने अनुमोदे तो प्रायश्चित आवे । जो भोगवतो हुवे तेहने  
अनुमोदणों नहीं, तो गृहस्थ आबो भोगवें तेहने साधु किम अनुमोदे । जो गृहस्थ  
रा.दान ने साधु अनुमोदे तो तिण ने लेखे आबो गृहस्थ भोगवे, तेहने पिण अनुमो-  
दणो । जो भोगवे, तेहने अनुमोद्यां धर्म नहीं, तो गृहस्थ ने दान  
देवे ते पिण अनुमोद्यां धर्म नहीं । अने जे कहे साधु ने दान देवे नहीं  
ने देतो हुवे तेहने अनुमोदनो नहीं । एहवो कष्टो करे तेहने  
इसा निशीथ में ते . जे

भाँवो चूसता नें साधु अनुमोदे नहीं, तिम आहार देता नें अनुमोदे नहीं तो ते दान में धर्म किम कहिये । डाहा हुवे तो रि-जोड़जो ।

## इति ३४ दोल सम्पूर्णा ।

कैतला एक एहवो प्रश्न पूछै । जे पड़िमाधारी भ्रावक ने दीघां “ हुवे । तेहनों उत्तर—पड़िमाधारी पिण देशवती छै । तेहना जेतला २ त्याग ते तो छै । अने पारणे सूफता आहार नो आगार अव्रत छै ते अव्रत सेवे छै, ते पड़िमाधारी । तेहनें धर्म नहीं तो जे अव्रत सेवावण वालाने धर्म किम हुई । गृहस्थ ना दान नें साधु अनुमोदे तो प्रायश्चित्त आवे तो पड़िमाधारी भ्रावक पिण गृहस्थ छै तेहनां दान अनुमोदन वाला नें ही पाप हुवे, तो देणवाला ने धर्म किम हुवे । तिवारे कोई कहे ए पड़िमाधारी भ्रावक नें गृहस्थ न कहिये । एहनें सूत्रमें तो “समणभुए” कह्यो छै । तेहनों उत्तर—द्वारिका नें “देवलोक भुए” कही पिण दे लोक नथी । ओ उपमा कही छै । तिम पड़िमाधारी ने पिण “समण भुए” कह्यो । ते दीघी छै । ते ईयादिक पिण गृहस्थपणो मिट्यो नहीं । संथारा में पिण आनन्द भ्रावक नें गृहस्थ ओ छै ते पाठ लिखिये छै ।

रां से आरां द समणो वासए भगवं गोयमं ति-  
कवुत्तो मुद्धाणेरां पादेसुवंदति रांमंसति २ ता एवं वयासी—  
अत्थिणं भंते । गिहिणो गिहिवास मज्जे वसन्तस्स ओहि-  
णारो समुप्पज्जइ. हंता त्थि ॥ ८३ ॥

जइरां भंते । गिहिणो जाव समुप्पज्जइ. एवं खलुभंते  
मलंगिगिहणो गिहिमज्जे वसंतस्स ओहिणारो समुप्पणो  
पुरत्थिमेरां वण समुद्धे पञ्च जोयण याइं लोलुए  
नरयं जाणामि मि ॥ ८४ ॥

तएषां सै गोयमे आणंदे एषोवा एषां एवं  
 ॥— त्थिणं । द ! गिहिणो मुप्पज्जति  
 ॥ वे एवं महालए तेषां तुम्हं आणन्दा ! एयस्स  
 ढ्ढाणस्स गोएहि जाव तवो पडिवज्जहि ॥ ८५ ॥

( दर्शा अ० १ )

तिवारे पछे आनन्द अमणोपासक नें. म० अगवान् गोतम नें. ति० त्रिणवार. सु० मंस्सके  
 करी. पा० चरया नें. विपे वादि. ग० कार करे वादी नें नमस्कार करी नें हम बोल्या अ० छै.  
 अ० हे पूज्य भगवन् ! गि० गृहस्थ नें. गि० गृहवास. म० माहे. व० नें. ओ० अवधि  
 स० हे० हां आनन्द ! उपजे. ज० जो. म० हे पूज्य भगवन् ! गि० गृहस्थ नें. गि० गृहवास  
 व० नें ओ० अवधि ज्ञान उपजे. ए० हम. ख० निश्चय करी नें. अ० हे ! म०  
 मुक्कने पिण गि० गृहस्थ नें. गि० गृहवास माहे. व० नें. ओ० अवधि ज्ञान. स० उपनो छै.  
 पू० पूर्वदिश. ल० लवण. स० समुद्र माहे. प० पांच सौ भोजन लगे जायूँ-देखूँ. हम दक्षिण नें  
 पश्चिम उत्तर चूल हेमवन्त ऊँचो सर्वर्म देवलोक लगे जा० यावत् लो० लोलुच पायदो नीचो  
 पहिलो नरक नौ नर तो जाणू छूँ. त० तिवारे पछे. से० ते भगवन्त. गो० आ०  
 आनन्द. स० प्रते. ए० हम. प० बोल्या. आ० उपजे तो छै. आ० हे आनन्द ! गि० गृहस्थ-  
 म० माहे. व० नें. स० नें. ओ० अवधि ज्ञान. स० उपजे छै. पिण. यो० नहीं  
 उपजे छै निश्चय. एवढो मोटो अवधि ज्ञान त० तिण. तु० तुम्हें. आ० अहो आणन्द ! ए०  
 ए० ठा० क झूठ नो. आ० आलोको. निन्दवो. जा० यावत्. त० तपकर्म. अ० अंगीकार कते ।

अथ आनन्द आवकै सँ में पिणं गोतम ने कह्यो—जे हूँ गृहस्थ  
 छूँ. घर मध्ये नें एतलूँ अवधि उपनो छै । तो जोवोनी संथारा  
 में पिणं आनन्द नें गृहस्थ कहिये । घर मध्ये तो कहिये । तौ पडिमा में घर  
 मध्ये गृहस्थ किम न कहिये । इण पडिमाधारी श्रावक नें गृहस्थ  
 कहिये । “निशीथ उ० १५” गृहस्थ नें अशनादिक दियां देतां ने अनुमोद्यां  
 चौमासो दंड कही । तो पडिमाधारी पिण गृहस्थ छै, तेहनां दान ने साधु अनु-  
 मोदे तो तेहनें दंड आवे तो देण नें धर्म किम हुवे । तिवारे कोई कहें  
 गृहस्थ नौ दान साधु नें अनुमोदनों नहीं ते माटे साधु अनुमोदे तो तिण नें द  
 आवे । पिण गृहस्थ नें हुवे । हम कहे, तेहनों उत्तर—प. निशीथ १५ उहे शे

घणा धोळं छै । सचि आंवो चूंसे, सचि आंवो भोगवे, भोगवतां ने अनुमोदे, तो साधु नें दंड कह्यो । जो सचित्त आंवा भोग ने अनुमोदे ते ने दण्ड आवे तो जे गृहस्थ सचित्त आंवो भोगवे तो तेहनें धर्म किम हुवे । तिम गृहस्थ ने दात देवे तेहनें साधु अनुमोदे तो दंड आवे तो जे गृहस्थ नें देवे तिण नें किम हुवे । इण न्याय पड़िमाधारी स्थ तेहनों दात अनुमोद्यां दंड आवे तो देण घाला ने धर्म किम हुवे । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ३५ ल सम्पू ।

तथा वली नी व्यावच करे, करावे, अनुमोदे तो अनाचार कह्यो । ते लिखिये छै ।

गिहिणो वेया वडियं जाइ, आजीव वत्तिया ।

तत्ता निवुड भोइत्तं, आउरस् रणाणिय ॥ ६ ॥

( दशवैकालिक अ० ३ गा० ६ )

ति० गृहस्थ नी. वे० वेयावचनों करिवो ते अनाचीर्यं. जा० जाति. आ० आजीविका पेट भराई नें. व० अर्थ पोतानी जाति जयावी नें आहार लेवे ते अनाचीर्यं. त० उन्हीं पाणी अग्नि नो पूरो प्रणम्यो नथी. गृहवा पाणी नों भोगविवो ते सिध पाणी भोगवे तो अनाचार. आ० रोगादिके पीइवो थको. स० स्वजनादिक नें समारे ते अनाचार.

अथ अठे कह्यो—गृहस्थ नी व्यावच कियां यां अनुमोद्यां. अठावी-समो अणाचार कह्यो । जे अंशनादिक देवे ते पिण व्या कह्यो छै । अने गृहस्थ में पड़िमाधारी पिण आयो । तेहनें पिण गृहस्थ छै । तिण सूं तिण नें, अशनादिक दियां दिरायां अनुमोद्यां अणाचार लागे ते अणाचार में धर्म किम कहिये । तिवारे कोई कहे प अणाचार तो साधु ने छै । पिण गृहस्थ नें धर्म छै । तेहनो उत्तर—वाचन ५२ अनाचार में मूलो भोगवे ते पिण अनाचार कह्यो । आदो भोगवे तो अनाचार कह्यो । ६ रा. सचित्त लूण भोगविया अणाचार । का

धाल्यां, विभूषा कियां, पीठी मदन कियां, ॥ ते साधु ने अनाचार है ।  
 ते रा बोल ते किम हुवे । जे साधु तो ३ करण ३ जोग  
 सू ५२ सेवे तो व्रत भांगे । गृहस्थ ए ५२ बोल सेवे तेहनो व्रत भांगे  
 नहीं, परं तो लागे । अने जे कहे—गृहस्थ नी वैयावच साधु करे तो अणाचार  
 पिण गृहस्थ ने है । तो तिण रे लेखे मूलो आदो पिण साधु भोगव्यां अनाचार  
 गृहस्थ भोगवे तो कहिणों । इम ५२ बोल साधु सेव्यां अणाचार  
 सेवे तो तिण रे लेखे कहिणो । और बोल गृहस्थ सेव्यां  
 नहीं तो व्यावच पिण गृहस्थ रो गृहस्थ करे तिण में नहीं । इणन्याय पड़िमा-  
 धारी पिण गृहस्थ है । तेहनें अशनादिक नों देवो, ते है, तेहमें धर्म नहीं ।  
 जे “समणभुए” ते सरीखो ए रो बतावी लोकां रे पाडे  
 है ते तो उपमा वाचीं शब्द है । उपमा तो घणे डामे चाली है । दशांगे  
 बन्दि दशा उपांगे सूत्रे द्वारिका ने “ देवलोक भुया” कही । ए द्वारिका  
 देवलोक सरीखी कही । तो किहां तो देवलोक, अने किहां द्वारिका नगरी,  
 पिण ए है । तिम पड़िमाधारी ने कह्यो “समणभुए” ए पिण उ है ।  
 किहां साधु व्रती अने किहां देशव्रती । ॥ स्थविरां रा गुणा में  
 एहवा पाठ —

“अजिणा जिण कांसा जिणा इव वितहवा गरेमाण्णा”

पिण स्थविरां ने केवली सरीखा । तो किहां तो केवली रो  
 किहां रो । केवली ने अनन्त मे भांगे स्थविरां पासे है ।  
 पिण जिन सरीखा । गुणो फेर में है । तेहनें पिण जिन सरीखा  
 कह्यो ते ए देश उपमा है । तिम आनन्द ने “समणभुए” कह्यो । ए पिण देश  
 है ।

बली “ द्वीप ति” में जी रा अश्व ना में  
 एहवा है । “इसिमिब खमाण्ण” ऋषि (साधु) नी परे क्षमावान् है । तो  
 किहां साधु संयती किहां ए अश्व यती ए पिण देश है । तिम  
 पड़िमाधारी ने “णभुए” कह्यो । ए पि देशधकी है । परं सर्वधकी



નથી । તે વિ-જે સાધુ રે સર્વથા પ્રકારે વન્ધન વ્રૂટ્યો । અને પડિમાધારી રે પ્રેમ  
વન્ધન વ્રૂટ્યો નથી તે માટે । ઢાહા હવે તો વિચારિ જોડજો ।

इति ३६ बोल सम्पूर्णा ।

ઘલી પડિમાધારી રે પ્રેમવન્ધન વ્રૂટ્યો નથી । તે લિખિયે છે—

केवल सेणाय पेज वंधणं अवोच्छिन्नं भवति. एवं से  
कप्पड़ गीय विहितए ।

( . . . સ્કન્ધ પ્રા० ૬ )

કે० એક. સે० તેહને. ગા० પિતાદિક ને વિપ્રે પ્રેમવન્ધન. પ્રા० વ્રૂટ્યો નથી.  
પ્રા० હવે. એ પગી પરે. સે० તેહને. કા० કલ્પે ઘટે. નાં ન્યાતવિધિ ગોચરી કરે આહાર ને  
જાયે ।

અટે ક્યારમી પડિમા મેં પિણ એ પાઠ કહ્યો । જે ન્યાતીલાં રો રાગ  
પ્રેમ વંધન વ્રૂટ્યો । તે માટે ન્યાતીલાં રે ઘરે જાવે . અને . રે  
સર્વથા પ્રકારે . તે વ્રૂટો છે । તે મળી “અણાય કુલે” ઘણે ઠામે કહ્યો છે । તે  
મળી “સમ્મણભુણ” ઉપમા દેશયકી છે । પિણ સર્વથકી નહીં । . તો ચૌદે કહ્યો  
જો ન્યાતીલાં રો રાગ . વંધન ન વ્રૂટ્યો, તે મળી ન્યાતીલાં રે . ઘરે ગોચરી  
તો પ્રેમવન્ધન થી ન્યાતીલા પિણ દેવે છે । તો વાતાર તથા લેનહાર વિદ્ધ ને  
ડિ . આજ્ઞા કિમ દેવે । જે એ પ્રેમ રાગ . વંધન સાવચ આજ્ઞા બાહિરે છે । તો તે  
રાગ કરી તેહને ઘરે ગોચરી જાય તે પિણ કાર્ય સાવચ આજ્ઞા બાહિરે । . ને  
લેનહાર ને ધર્મ નહીં તો વાતાર ને ધર્મ કિમ હવે । જણન્યાય પડિમાધારી ને  
‘સમ્મણભુણ’ કહ્યો । તે દેશયકી ઉપમા છે, પરં સર્વ થકી નહીં । ઢાહા હવે તો  
વિચારિ જોડજો ।

इति ३७ बोल सम्पूर्णा ।

तिवारे कोई कहे-जो पड़िमाधारी में दियां धर्म न हुवे तो "दशा  
 शु 'ध' में हम क्यूं तो । जे पड़िमाधारी न्यातीलारे घरे भिक्षा न  
 तिहां पहिलां उतरी दाल अने तो कल्पेपड़िमाधारी नें दाल  
 लेणी, न कल्पे चावल लेवा ॥१॥ अने पहिलां उ पछे उतरी दाल तो  
 कल्पे लेवा न कल्पे दाल ॥२॥ दाल अने चावल दोनूइ पहिलां तो  
 दोनूइ कल्पे ॥३॥ दोनुं पछे तो दोनुं न ॥४॥ दाल  
 पहिलां उ ते पड़िमाधारी नें लेवा कल्पे, ते माटे पड़िमाधारी लेवे  
 तेहमें जिन छै । आक्षा बाहिर हुवे तो कल्पे न कहिता ।

हम कहे तेहनों —ए आक्षा नो नहीं छै । ए तो  
 नों छै । पड़िमाधारी नें जेहवो आचार कल्पतो हुन्तो ते बतायो । पिण  
 आक्षा नहीं दीधी । हम जो आक्षा हुवे, तो नें अधिकारे पिण तो ।  
 ते लिखिये छै ।

अम्बडस्स परि ायगस्स कप्पति गहए  
 ढए लस्स पड़िगाहित्तए सेविय, वह एो एो चेवणं अवह-  
 एो एवं थिमियं प एो परिपूए एो चेवणं अपरिपूए सेविय,  
 ज्जेति एोएो चेवणं अणवज्जे सेविये, जीवातिकाओ  
 एो चेवणं अजीवा सेविय दिरणे एो चेवणं अदिरणे सेविय  
 हत्थ चरु चम्म पक्खा एण्डुयाए पिबित्तएवा एो चेव णं  
 सिणाइत्तएवा ।

( उवाहं प्रश्न १४ ) .

अ० परित्राजक में कल्पे. अ० देश सम्बन्धी अर्थात्क मान विशेष सेर ४  
 अ० जल पाणी नों पड़िगाहित्तो अतिशय सूं ग्रहिवो. से० ते पिण ते नदी आदिक संबंधि  
 अवाहनीं. एो० न लेवो अवहतो वावडी न सम्बन्धी पाणी. ए० हम पाणी नीचे  
 कादो न थो. प० अति आछो निर्मल. प० करी में गल्यो लेवो. एो० पिण ते न लेवो.  
 अ० जे करी करी गल्यो न हुइ. से० ते. पिण निश्चय करी पाप सहित. ति० एहवो  
 कही में पिण ते न जाणे. चे० (पदपूर्ण अणी) से० ते पिण जीव सचेतन रूप. ति०

पहवो कहौनें यो० पिण न जानवो: अ० अजीव चेतना रहित: से० ते पिण दीधो लेवयो.  
यो० पिण ते न लेवो जे. अ० अण दीधो.

से० ते पिण ह० हाथ. पा० पाय पग. च० चरु . च० करछो. प० पखालबारे  
अर्थे. यो० नहीं. सि० निमित्त ।

अथ इहां कह्यो—कल्पे अम्बड सन्यासी नें मगध-देश सम्बन्धी  
अ मान ४ सेर पाणो लेवो ते पिण कर्दम रहित निर्मल यो—ते पिण  
कहितां पाप सहित ए कार्य पहवूं कहीनें । ते पिण पाणी सचित्त छै जीव  
सहित छै कही नें ते पाणी ने लेवो कल्पे, पहवूं छै । तो जे “पड़ि-  
माधारी ने पहिलां उतरी दाल लेवी ” इम कहां माटे आज्ञा में कहे तो तिणटे  
लेवे अम्बड काचो पाणी लियो ते पिण जिन आज्ञा में कहिणो । नें  
काचो पाणी लेवो. कह्यो ते माटे इहां पिण आज्ञा कहिणी । अम्बड काचो  
पाणी सहित कही ने लेवे । तिण में जिन आज्ञा नहीं तो पड़िमाधारी में पिण  
अ नहीं । कोई मतपक्षी कहे जे कह्यो-कल्पे अम्बड नें काचो पाणी लेवो,  
ए तो सन्यासीपणां नों आचार कह्यो छै । पिण श्रावक  
कल्पे पाणी लेवो, न कह्यो । कहे तेहनों उत्तर—अम्बड नों कह्यो.  
ते तो श्रावक लो ए छै । पिण पहिलां नों नहीं । ते बि जे  
में कह्यो-कल्पे अम्बड नें काचो पाणी लेवो । ते पिण यह तो निर्मल  
छाण्यो. ते पिण सा पाप सहित ए कार्य छै. तथा ए पाणी जीव छै. इम कही  
ने लेवो कल्पे, कह्यो । ते माटे ए ओलखणा तो श्रावक पछे आई छै । ते माटे  
सहित ए कही नें लेवे । अने सन्यासी पणां ना कल्प में सावध  
अने जीव कही नें लेवो. ए पाठ न थी । अनेरा सन्यासी रा विस्तार में पहचा  
। ते लिखिये छै ।

तेसिणं परिज्वायगाणं कप्पति मार्गहए पत्थए जलस्स  
पड़िगाहितए सेवियं वहमाणे णो चेरणं अवहमाणे सेवियं  
थिमि उदए रो चेरणं इमोदए सेवियं बहुपसणे नो चेरणं  
अव्रुप सेवियं परिपूए णो चेरणं अपरिपूए सेवि णं

दिग्गणे णो चवणं अदिग्गणे सेविय पिबित्तए णो चवणं हत्थं  
६ चम्म पक्खालणट्ठाए सिणाइत्तएवा ।

( उवाह प्रश्न १२ )

ते० ते. ५० सन्यासी नें. क० कल्पे ( घटे ) मा० मंगध देश सम्बन्धी ५० पाथो एक मानं विशेष सेर २ प्रमाण. ज० जलपाणी नों. पदिग्गहिवो अतिथय सुं ग्रहिवो. णो० पिणः ते न लेवो. अ० अणवहतो बावडी व सम्बन्धी. से० ते पिण पाणी जेह नीचे कर्दम नथी. णो० पिण ते न लेवो जे कर्दमोदक कादा सहित पाणी. से० ते पिण कल्पे बहु अति आछो निर्मल. णो० ते पिण न लेवो. अति मैलो. से० ते पिण परिपूत वस्त्रे करी नें गल्यो. णो० पिण ते न लेवो अपरिपूत करी गल्यो. न हुहं. से० ते पिण मिश्रय लेवो दत्त दीधो मनुष्यादिके. णो० पिण ते न लेवो अणदीधो मनुष्यादिके. से० ते पिण पीवा निमित्ते. णो० नहीं. ह० हाथ पग चह बमचो. ५० पल्लालण रे अर्ये. सि० और नहीं निमित्ते ।

अनेरा सन्यासी रा में एहवो पाठ कह्यो, जे कल्पे परिब्राज-  
कां ने देश सम्बन्धिया पाथो पाणी लेवो । ते पिण कर्दम रहित  
निर्मल छाप्यो. ते पिण दीधो लेवो कल्पे । पिण इम ते । ए सावद्य अने  
जीव कही नें लेवे । ते अनेरा सन्यासी जीव. अजीव. सावद्य. निरवद्य. ना अजाण  
छै । सावद्य. निरवद्य. जीव. अजीव. जाणे छै श्रावक छै । ते माटे

तो, सावद्य. जीव. कहीने लेवे । अने अनेरा सन्यासी ए सावद्य. अने ए  
पाणी जीव छै. इम विना ई लेवे छै । इण न्याय अम्बड सन्यासी श्रावक  
पळे ए " " कह्यो छै । वली तिण हीज में पहिलां ने श्रावक कह्यो  
छै । "अवडेणं परिव्यायए समाणे. अभिगय जीवाजीव उपलद्धं पुण्णं

" इत्यादिक कही नें पळे आगले कह्यो. कल्पे नें सचित्त दहतो  
पाणी सावद्य कही नें लेवो, ते माटे श्रावक पणो पळे अम्बड नों. ए कल्प  
ते ते सावद्य कल्प छै. पिण धर्म नहीं । तिम पडिमाधारी नों ते कल्प कह्यो  
छै. पिण नहीं । तो जेहनों जे हुन्तो ते वतयो. पिण आझ  
नहीं दीधी. डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ३८ वोल सम्पूर्णा ।

वली “वर्णनाग नतुओ” संग्रामे तो-तिहां पइवो कह्यो ।  
ते लिखिये छै ।

कप्पइ मै रह मुसल संगाम संगामेमाणस्स । जे  
विं पइणइ से पडिहणित्तए वसेसे णो कप्पतीति  
मेया रूवं अभिगहं भि गिण्हि रह  
संगामेनि ।

( भगवती श० ७ उ० ६ )

क० कल्पे मुक ने. २० २थ मुसल संग्राम. स० संग्राम करते छते. जे० जे पूर्व से  
ते प्रति अ० शेष कहितां बीजां में हणवो न न छते. अ० एतां हण रूप पइवो  
अ० अभिग्रह प्रतिग्रह ग्रही ने. २० २थ मुसल से प्रति करे ।

अर्थ इहां पिण वर्ण नाग नतुओ संग्रामे गयो । तिहां पइवो अभिग्रह  
धासो, कल्पे मुक ने जे पूर्व हणे तेहने हणवो । जे न हणे ते न हणवो ।  
पिण चलावे तेहने हणवो कल्पे कह्यो । ए “वर्ण नाग नतुओ” ने तो  
आवक कह्यो, पहनो ए कह्यो । पिण जिन नहीं । ए तो जे  
हुन्तो ते बतायो । तिम भम्बड ने कांचो पाणी लेवो कल्पे, तीर्थङ्कर कह्यो ।  
पिण जिन नहीं । ए तो नो जेहवो आचार हुन्तो ते बतायो ।  
तिम पडिमाधारी नो जेहवो अ र हुन्तो ते बतायो । पिण जिन  
नहीं । ते पडिमाधारी ने पइवो दशा श्रुत मि कह्यो । “केवलं सेणा य  
पेल्लवधणं अघोच्छिन्ने भवति एवं से कप्पइ णाय विहिंपत्तए” इहां कह्यो जे केवलं  
न्यातीला रो प्रेम बन्धन तूटो न थी ते माटे—कल्पे पडिमाधारी ने न्यातीला रे  
घरे बाहिरवो, इम कह्यो । पिण न्यातीला रे वो आज्ञा दीधी नहीं ।  
कल्पे पहिलां दाल उतरी ते लेवी, इहां आज्ञा कहे, तो त्यांरे लेखे न्यातीला रे  
घरे बाहिरवो, पिण आज्ञा कहिणी । वली कल्पे भम्बड ने तो पाणी  
कही लेवो, पिण रे लेखे आज्ञा कहिणी । वली कल्पे “नागनतुओ” ने  
पहिलां हणे तेहने हणवो । पिण तिण रे लेखे अ कहिणी । जो “

नाग नतुओ' नों तथा अम्बड नों जेहवो कल्प आचार हुत्तो, ते बतायो, पिण जिन आझा नहीं । तो पड़िमाधारी नें न्यातीला रे घरे वहिरवो कल्पे, एह पिण तेहनो जे ( ) हुत्तो ते बतायो पिण आझा नहीं । झाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ३६ बोल सम्पूर्णा ।

तथा धली उत्तराध्ययन में कह्यो । सर्व आषक थकी पिण साधु चारिद्रि करो प्रधान छै । इम कह्यो, ते पाठ कहे छै ।

संति एगेहिं भिक्षूहिं गारत्था संजमुत्तरा ।  
गारत्थेहिं सव्वेहिं साहवो संजमुत्तरा ॥ २० ॥

( उत्तराध्ययन अ० ५ गा० २० )

सं० छैः ५० एकैक, जी० पर पाषंडी कापडीयादिक भा भिक्षु थो, गा० गृहस्थ जो १२ व्रत रूप सं० संयम, उ० प्रधान, गा० गृहस्थ, स० समासाई दे, ी थकी सा० साधुनो सर्वव्रती ५ महाव्रत रूप, संयम करी उ० छै ।

इम कह्यो—जे एक भिक्षाचर अन्यतीर्थी थकी गृहस्थ आषक देशव्रते करी, अने सर्व गृहस्थ थकी साधु व्रति करी । तो जोवोनी गृहस्थ थकी पिण सर्व व्रते करी साधु नें प्रधान कह्यो । तो पड़िमाधारी आषक साधु रे तुल्य किम आवे । सर्व गृहस्थ में तो पड़िमाधारी पिण आयो । ते आषक पड़िमाधारी पिण देशव्रती छै । ते मांटे सर्वव्रती रे तुल्य न आवे । इणः “समणमुप” पड़िमाधारी आषक नें कह्यो । ते देशथकी रे लेखे दीधी छै । परं तेहनो खाणो पीणो तो व्रत नथी । तेहनी तपस्या में धर्म छै, परं पारणा में धर्म नथी । झाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ४० ल सम्पूर्णा ।

वली केई कहै—श्रावक सामायक पोषा में बैठो छै तेहनें कारण और गृहस्थ साता करे, तो अ न देवे परं छै । एहनें रा त्याग छै । ते माटे एहनी व्यावच कियां पाप नहीं । इम कहै तेहनो उत्तर—सामायक पोषा में आगमिया काल में सावद्य सेवन रो त्याग नहीं छै । आगमिया में सावद्य सेवन री इच्छा मिटी नहीं । तो जीवोनी इण शरीर थी आगमिया में पांच आश्रव सेवण रो आगार छै । ते भणी तेहनों शरीर शस्त्र छै । अनें जे शरीर नी व्यावच करे तेणे शस्त्र तीखो कीधो जिम कोई मासताइ छुरी कटारी सूं जीवहणवारा कीधा ते छुरी तीखी करे तो पिण आगमिया नी अपेक्षा तिण वेलां तीखो कियो कहिये । तिम एक पोषा में इण सूं पांच आश्रव सेवण रा त्याग परं आगमिया में ते काया थी ५ आश्रव सेवण रो आगार ते माटे ए शरीर शस्त्र छै । तेहनी व्यावच करण वाले छः काया रो शस्त्र तीखो कीधो कहिये । हिवडां त्याग परं आगमिया काल नी अपेक्षा ए शरीर शस्त्र छै । वली सामायक पोषा माहि पिण अनुमोदण रो करण जुल्यो ते न्याय शस्त्र कह्यो छै । वली कोइक मास में ६ पोषा ८ पोहरिया करे छै । अनें परदेशां दूकाना छै । सैकड़ां गुमाश्ता कमाय रखा है । तो ते वर्ष रा ७३ पोषा रो व्याज लेवे कि नहीं । वहत्तर दिन में जे गुमाश्ता हजारों रुपया कमावे ते सर्व नफो लेवे कि नहीं । सर्व नो मालिक तो पहिज छै । ते माटे पोषा में पिण १० तूट्यो नथी । परिग्रह त्व भाव मिट्यो नहीं । ते साख भगवती श० ८ उ० ५ कही छै । ते सामायक में पिण तेहनी आत्मा शस्त्र छै ।

तिषारे कोई कहै सामायक में श्रावक रो आत्मा शस्त्र किहां कही छै । तेहनूं उत्तर सूत्र मध्ये कही । ते लिखिये छै—

समणो वासगस्स रां भंते । सामाइय कडस्स णो-  
वस्सए अत्थ एणस् तर रां भंते । । ईरियावहिया किरि-  
याकज्जइ. संपराइया किरिया कज्जइ. गोयमा । नो ईरिया  
वहिया किरिया ज्जइ. संपराइया किरिया कज्जइ. से केण-  
एण जाव संपराइया गोय । । स णोवासयस्स रां सामाइय

कडस्स समणोवस्सए अत्थमाणस्स ।या अहिगरणी  
भवइ. आयाहि गरण वत्तियं च णं तस्स नो ईरिया वहिया  
किरिया कज्जइ संपराइया किरिया ज्जइ पराइया किरिया  
कज्जइ से तेण्णुणं. ॥४॥

( भगवती श० ७ उ० १ )

स० श्रमणोपासक ने. भ० हे भगवन्त ! कीचे छते. स० श्रमण नों जे उपाश्रय  
तेहने विषे अ० बैठो छै. त० ते श्रमणोपासक ने भ० भगवन्त ? कियूं. इ० इरियावहिकी क्रिया  
हुई. अथवा संपरायकी क्रिया हुई निरुद्ध कवायपणा थी ए आशंकाई प्रश्न. हे गौतम ? यो०  
इरियावहिकी क्रिया न उपजे. स० संपरायकी उपजे. से० ते केह अर्थे यावत्. संपराय क्रिया हुई.  
गौतम ? स० श्रमणोपासक ने. सामायक कीचे छतै. स० श्रमण साधु तेहने नें विषे.  
अ० रहतै छते. आ० आत्माजीव. आ० अधिकरण ते हल शकटादिक ते ना भूत  
छै. आ० आत्मा अधिकरण नें विषे वत्तै छै ते माटे तेहने. यो० इरियावहिकी क्रिया न उपजे.  
स० स० क्रिया उपजे. से० ते माटे ।

अथ इहाँ पिणं सा में श्रावक री आत्मा अधिकरण कह्यो छै ।  
अधिकरण ते ६ काय री शस्त्र जाणवो । ते माटे सामायक पोषा में तेहनी  
शस्त्र छै । ते तीखो वि धर्म नहीं । वली ठाणाङ्ग ठाणे १० ने  
भाव शस्त्र कह्यो छै । ते सामायक में पिण वस्त्र गेहणा पूंजणी आदिक उपकरण  
अने काया ए सर्व में छै । तेहना कियौ धर्म नहीं ।

तिवारे कोई कहै सामायक में पूंजणी राखे तेहनो धर्म छै । दया रे अर्थे  
पूंजणी राखे छै । तेहनो उत्तर—ए पूंजणी आदिक सामायक में राखे तें में  
छै । ए तो सामायक में शरीर नी रक्षा निमित्त पूंजणी आदिक उपधि राखे छै ।  
ते पिण आप री कचाई छै. परं धर्म नहीं । ते किम—जे पूंजणी आदिक न राखे  
तो काया स्थिर राखणी पड़े । अने काया स्थिर राखणे री शक्ति नहीं । माछरादिक  
ना फर्स खमणी आवे नहीं । ते माटे पूंजणी आदिक । माछरादिक पूंजी  
खणे । ए तो शरीर नी रक्षा निमित्त पूंजे, पिण धर्म हेतु नहीं । कोई कहै दया  
रे अर्थे पूंजे ते मिले नहीं । जो पूंजणी बिना दया न पळे, तो अढ़ाई द्वीप वारे  
ख्याता तिर्यञ्च श्रावक छै । सामायकादिक व्रत पाले छै । त्वारे तो पूंजणी कीसे



नहीं । जे दया रे ॥ पूंजणी राखणी कहै—त्यारे लेखे अढ़ाई द्वीप वारे भ्रावकां रे दया किम पले पिण ए पूंजणीयादिक राखे ते शरीर नी रखाने अर्थे छै । जे हि पूंज्यां तो खणवारा त्याग अने माछरादिक रा फर्स खमणी न आवे तिणसूं पूंजीने खणे । ए पूंजे ते खाज खणवा साता रे ॥, जो पूंजे नहीं—तो दया तो घणी चोखी पले । ते किम माछरादिक उड़ावना पड़े नहीं । तेहना फर्स

खम्यां घणी निर्जरा हुवे । परं दया तो उठे नहीं ॥ एहवी शक्ति नहीं । ते माटे पूंजणी आदिक राखी खणे छै । हि किणही अछांण्यो पाणी पीवा रा कीधा—अने पाणी छाणे ते पीवा रे अर्थे, परं दयारे ॥ छाणे नहीं । ते किम—विना छांण्या तो पीवा रा त्याग ॥ न छांणे तो पाणी पीणो नहीं । अपूड़ी दया तो चोखी पले पिण आप से पाणी पीधां विना रहिणी न आवे । तिण सूं पीवा रे ॥ छांणे ते धर्म नहीं । तिम सामा में विना पूंज्यां खाज खणवारा

॥ जो पूंजे नहीं तो खाज ॥ नहीं पड़े, एहवी शक्ति नहीं । तिणसूं पूंजणी ॥ छै । ए भ्रा रा उपधि सर्व ॥ में छै । तिवारे कोई कहै—साधु पिण पूंजणी आदिक राखे छै । जो भ्रावक ने धर्म नहीं तो साधु ने पिण धर्म नहीं । कहे तेहनों उत्तर—ए साधु पिण शरीर ने अर्थे राखे छै । ए तो सत्य छै पिण साधु रो शरीर छव ६ काय रो पीहर छै पिण शस्त्र नहीं ते माटे साधु रा उपधि ॥ शरीर पिण ॥ ने हेतु छै । ते माटे साधु उपधि राखे ते धर्म छै । अने भ्रावक रो शरीर ६ काय रो शस्त्र छै । ते माटे तेहना उपकरण पिण शरीर ने ॥ छै । ते भणी उपकरण राखे ते सावद्य व्यापार छै ।

॥ साधु उपकरण राखे ते निरवद्य भला व्यापार छै । डाहा हुवे तो विचारि मोइजो ।

## इति ४१ गोल सम्पूर्णा ।

तिवारे कोई कहे ए भ्रावक उपकरण राखे ते भला नहीं । ॥ साधु

॥ ते पार किहां छै । तेहना उत्तर । सुवे करो कहिये ।

चउव्विहे पण्हिहाणे प० तं० मण पण्हिहाणे वय पण्हिहाणे. काय पण्हिहाणे. उवगरण पण्हिहाणे. एवं नेरइयाणं पंचेंदियाणं जाव वेमाणियाणं । चउव्विहे सुप्पण्हिहाणे. प० तं० णसुप्पण्हिहाणे. जाव उवगरण सुप्पण्हिहाणे. एवं संजय णुस्साणवि । चउव्विहे दुप्पण्हिहाणे. प० तं० णदुप्पण्हिहाणे जाव उवगरण एवं पंचेंदियाणं जाव वेमाणियाणं.

(अण्णाङ्ग अ० ४ उ० १)

च० चारि प्रकारे. प० व्यापार. प० परुष्या. तं० ते कहे छै. म० मन प्रणिधान व्यापार आत्ता आदि चार ध्यान. वचन प्रणिधान. का० काय. प० व्यापार. उ० उपकरण. प्रणिधान ते लौकिक लोकोत्तर रूप उपकरण वत्त पात्रादिक. तेहनुं संयमन ने काजे असंयम ने काजे प्रवर्त्तावितो—ते उपकरण प्रणिधान. प० इम. गे नारकी ने. प० पंचेन्द्रिय ने जा० जावत्. वैमानिक लगे एकेन्द्रियादिक वज्या. तेहने मनादिक नथो तो प्रणिधान किहां थी ॥ हिथे प्रणिधान विशेष कहे छै. च० चार प्रकारे. छ० रुडो जे संयमार्थ पणा थकी मनादिक नो व्यापार ते छप्रणिधान परुष्यो । म० मन छप्रणिधान. जा० जावत्. उ० उपकरण छप्रणिधान. प० इम. मनुष्य ना दंडक मांही एक संयती मनुष्य ने चारित्र परिणाम छै. ते माटे ये चार प्रणिधान संयती ने इज हुइ ॥ च० चार प्रकारे. दु० असंयम ने अर्थ. मनादिक. नो व्यापार ते दुप्पण्हिधान. प० परुष्यो. तं० ते कहे छै. म० मनदुःप्रणिधान. व० वचन दुःप्रणिधान. क० काया दुःप्रणिधान. जा० यावत्. उ० उपकरण. दु० दुःप्रणिधान. प० इम. प० पंचेन्द्रिय ने हुइ. जा० यावत्. थे० वैमानिक लगे ।

इहां चार व्यापार कहा । मन १ वचन २ काया ३ उपकरण ४ ए चारु व्यापार सन्नि पंचेन्द्रिय रे कहा । ए चारु भुंडा व्यापार पिण १६ वं सन्ती पंचेन्द्रिय रे कहा । अने ये चारु भला व्यापार तो एक संयती मनुष्या रे इज । पिण और रे न कहा । तो जोवोनी साधु रां उपकरण तो भला व्यापार में धाल्या अने श्रावकरा पूजणी आदिक उपकरण भला व्यापार में न धाल्या । ते माटे पूजणी आदिक श्रावक राखे ते सावध योग छै । अने साधु राखे ते भला निरवध व्यापार छै । श्रावकरा उपकरण तो अत्रत मांहि छै । परिग्रह माहे छै ।

ते माटे भला व्यापार नहीं । निशीथ उ० १५ गृहस्थ ने रजोहरण पूंजणी आदिक दियं देतांने भलो जाण्या चौमासी प्रायश्चित्त कह्यो छै । पूंजणी देतां ने ओ जाण्या ही प्रायश्चित्त आवे तो ए माहोमाही पूंजणी आदिक देवे त्यांने धर्म किम कहिये ।

कोई कहे साधु गृहस्थ नें सामायक पा ि सिखावे-परं पलावे नहीं पलावारी आज्ञा देवे नहीं तो पालणी किम सिखावे । तत्तोत्तरम्—एक मुहूर्त्त नी सामायक कीधी । अने एक मुहूर्त्त वीतां पछे सामायक तो गई. ए तो आलो-वणा री पाटी छै । ते आलोवणा करण री आज्ञा छै । धर्म छै । ते भणी ओ-वण री पाटी सिखावै छै ते आज्ञा बाहिरे नहीं । साधु पलावे नहीं ते उठवा रो ठिकाणो जाण नें पलावे नहीं । जिम किण ही पौरसी कीधी ते जीमण रे अर्थे साधु ने पूछे । साधु पौहर दिन आयो जाणे तो पिण बतावे नहीं । तिम उठण रो ठिकाणो जाण ने पलावे नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ४२ बोल सम्पूर्णा ।

इति दानाधिकारः समाप्तः ।



## अथ अनुकम्पाऽधिकारः ।

केतला एक अश्वानी इम कहे । एक तो जीवहणे १ एक न हणे २ जीव बचावे ३ ए जीव बचावे ते न हणे तिण में आयो । एहवो कुहेतु लगावी नें यती जीवारो जीवणो वाञ्छयां धर्मः कहे छै । तेहनो उत्तर—एक तो जीव हणे १ न हणे २ जीव ३ ए तीनूं न्यारा २ छै । दोयां में मिले नहीं ते दूजो दृष्टान्त देई ओलखावे छै । जिम तो फूठ बोले १ एक २ न बोले २ बोले ३ ए पिण तीनूं न्यारा छै । अने ३ बोले ते तो शुद्ध छै १ २ बोले नहीं ते शुद्ध छै २ अने सांच बोले ते शुद्ध अशुद्ध वेहू छै ३ । जे सावध सांच बोले ते तो अशुद्ध- निरवध बोले ते शुद्ध छै । इम सांच बोले ते तीजो न्यारो छै । तिम जीव हणे ते तो अशुद्ध छै १ न हणे ते शुद्ध छै २ अने छोडावे तेहनो —जे जीव हणता नें उपदेश देई नें हिंसा छोडावे ते तो शुद्ध छै । अने जोरावरी सूं गर्थ (धन) देई जीवरो जीवणो वांछी छोडावे ते अशुद्ध छै । इम तीनूं न्यारा २ छै । जद अगलो कहे इम नहीं ए तो एम छै । एक फूठ बोले १ फूठ न बोले २ एक फूठ बोलता ने वर्ज ३ ए ३ दोयां में बालो । तिम जीवरा पिण तीनूं बोल दोयां में बालणा । तेहनो उत्तर—एक तो फूठ बोले ते सावध योग छै १ । एक फूठ बोलवारा कीधा ते संवर छै २ । एक ३ बोलता नें उपदेश देई समझावे ते वचन रो शुभ योग छै निर्जरा री करणी छै इम तीनूं न्यारा २ छै । तिम तो जीव हणे ते हिंसक १ एक हणवारा कीधा ते हणे नहीं ए संवर २ तीजो जीव हणता ने उपदेश देई ने भावे । हिंसा छोडावे ३ जिम उपदेश देई फूठ छोडावे, तिम उपदेश देई हिंसा छोडावे । ए व रो शुभ योग निर्जरा री करणी छै । ए तीनूं न्यारा २ छै । जद लो कहे इम नहीं । एक तो जीव हणे १ जीव न हणे २ जीव रो जीवणो वांछी नें जीव ने छो तो ३ । एणि में आयो तेहनो उत्तर—एक तो चोरी

करे १ एक चोरी न करे २ एक ते धनी रो धन राखवा ने चोरी करता नी चोरी छोडावे ३ जिम गृहस्थ रो धन राखवा चोरी छुडावे प तीजो न्यारो छै । तिम जीव मो जीवणों वांछी जीव छुडावे ते पिण तीजो न्यारो । चोरी छुडावे प पिण तीजो रो छै । जिम चोर नें तरिवा उपदेश देइ हिंसा छोडावे ते पिण शुद्ध छै । धन राखवारो कर्त्तव्य साधु न करे । राखवा ने चोर ने साधु उपदेश देवे नहीं । तिम असंयती नो जीवणो वांछी नें तेहना जीवितव्य नें साधु उपदेश देवे नहीं । हिंसक अने चोर नें तरिवा भणी उपदेश देवे । परं धन राखवा ने अने यम जीवितव्य नें उपदेश देवे नहीं । श्री तीर्थङ्कर देव पिण पोताना कर्म खपावा अनेरा नें तरिवा नें उपदेश देवे इम कह्यो छै । पिण जीव धचावा उपदेश देवे इम कह्यो नहीं । ते पाठ प्रते लिखिये छै ।

नो काम कि नय बाल किच्चा

रायाभिन्नोगेण कुतो भण्णं ।

वियागरेज्जा पसिणं नवावि

सकाम किच्चि णिह आरियाणं ॥ १७ ॥

गन्ता वतत्था अदुवा अगन्ता

वियागरेज्जा सि या सुपण्णे ।

अणारिया दंसणतो परित्ता

इति संकमाणे न उवे तितत्था ॥ १८ ॥

(सूयगडाङ्ग श्रु० २ अ० ६ गा० १०-१८)

मो० अकाम कृत्य नयी. एतले कुण अर्थे. जे अण विमास्यो काम नों करणहार हुवे तो आपण नें तथा पर नें निरर्थक कार्य करे. परं श्री भगवन्त सर्वज्ञ सर्वदर्शी परहित नों करणहार. आपण नें पर ने नित्यकारी किम थाय. ते भणी स्वामी निरर्थक नूं करणहार नयी. न० तथा स्वामी बाल कृत्य नयी. बाल नी परे अण विमास्यो काम न करे. तथा रा० राजा न. अ० अभियोगे करी धर्म देशनादिक नें विषे प्रवर्त्ते नहीं. कु० ीना. भ० भयधकी. बि० वागरे नहीं. प० ग्रन्थे किं बहु ना उपकार विना कियहीने कोई न कई. अनुत्तर विमान

कौसी देवता रे मनहीज सूं पूछी निर्णय करे... जे कोई इस कहे... वीतराग धर्मक्या स्थां काजे करे छै. इसी आणी चौथे पदे कहे छै। स० पो काजे एतावता सीयंकर नाम कर्म खपावा नें काजे. क्षेत्र लोक भा प्रतिबोधवा भयी धर्म देश भा करे पर अनैरो कार्य आत्म प्रशंसादिक करे नथी. ॥ १० ॥

कली आर्द्र मुनि कहे छै. ग० ते परहित काजे जई ने. अथवा तिहां० अणु जोड़ने किम्बहुना जिम २ भव्य जीव नें उपकार याह. तिम २ वि० धर्म देश भा वागरे जे आये तो जई नें पिण धर्म कहे. अ० उपकार न देखे तो तिहां नें पिण न कहे. तेहने राग द्वेष नी संभावना नथी। सम्यग्दृष्टि पणे चक्रवर्ती अथवा रंक ने पूछिठ अथवा अनपूछिठ यके धर्म कहे. शीघ्र प्रशान्त एतिले सर्वज्ञ तथा जे रं देश न जाय स्वामी तेहनू कारण संभली अ०. इ० इरान अकी पिण. उ० अष्ट. इति० इण कारणे. स० बांक धकां. स० तिहां. ख० न जाय. जिण ते जीव वीतराग ने देखी अथवा स्नादिके कर्म उपाजी आपण पे अनन्त संसार करिख्ये इच्छा जाणी तिहां न जाय. पर राग द्वेष भय को नथी. ॥ १८ ॥

अथ अठे कह्यो—पोता ना कर्म खपावा तथा आर्य क्षेत्र ना मनुष्य नें सारिवा भगवान् धर्म कहे, इस कह्यो पिण इस न कह्यो जे जीव वा नें अर्थ धर्म कहे. इण न्याय असंयती जीवां रो जीवणो बां धर्म नहीं। तिवारे कोई कहे असंयती जीवां रो जीवणो बांछणो नहीं। ती ये जीव हणवा रा सूंस वो ते जीव हणे नहीं, तिवारे असंयम जीवितव्य वधे छे। तथा महणो २ कह्यो छो। तथा जीव हणता ने उपदेश देई हिंसा छोड़ावो छो। तरे यम जीवितव्य वधे छै। तेहनो —साधु जीव हणता ने उपदेश देवे ते तो तिणरो डालवाने यती रो संयती करवा ने. पिण यती नें जिवावण नें उपदेश न देवे। म कोई कसाई पांचसी २ पंचेन्द्रिय जीव नित्य हणे छै, ते कसाई नें कोई मारतो हुवे तो तिण नें साधु उपदेश देवे। ते तिण ने सारिवा नें, पिण कसाई नें जीवतो नें उपदेश न देवे। ए कसाई जीवतो रहे तो आछो. इस ई जो जीवणो बांछणो नहीं। कई पंचेन्द्रिय हणे, कई पंचेन्द्रियादिक हणे छै। ते माटे असंयती जीव ते छै। हिंसक नों जीवणो धर्म किम हुवे। हुवे तो विचारि जोड़ो।

इति १ बोल सम्पूर्ण ।

केतला जीव कहे—असंयती जीवों जीवणो वांछयां धर्म । ते कहे— यती जीवारा जीवण रे उपदेश देणो । ते सूत्र ना ण छै । अने साधु तो जीवितव्य जीवे नहीं. जीवावे नहीं. जीवता नें भलो पिण जाणे नहीं । तो अस जीवितव्य वांछयां धर्म किहो थकी । ठाम २ सूत्र में अस जीवितव्य वाल मरण वांछणो बज्यो छै । ते संक्षेपे सूत्र साख करी कहे छै । ठाणाङ्ग ठाणे १० दश वांछा करणी बज्यो । तिहां कहाँ जीवणो मरणो वांछणो नहीं । ए पिण जीवितव्य अने आश्री बज्यो छै । (१) तथा सूत्र अ० १० गा० २४ जीवणो मरणो वांछणो नहीं । ए पिण जीवणो ते जीवितव्य आश्री कहाँ । (२) सूयगडाङ्ग अ० १३ अ० २३ में पिण जीवणो मरणो वांछणो बज्यो । ए पिण जीवितव्य आश्री बज्यो छै । (३) सूयगडाङ्ग अ० १५ गा० १० में जो जीवितव्य नें अनादर देतो विचरे । (४) सूयगडाङ्ग अ० ३ उ० ४ गा० १५ में पिण कहाँ जीवणो मरणो वांछणो नहीं । ए पिण जीवितव्य वाल मरण बज्यो । (५) तथा सूयगडाङ्ग अ० ५ उ० १ गा० ३ में पिण ना अर्थो नें अहानी । (६) सूयगडाङ्ग अ० १० गा० ३ में पिण जीवितव्य वांछणो बज्यो । (७) सूयगडाङ्ग अ० २ उ० २ गा० १६ में कहाँ । न उरना सहिणो । पिण असंयम जीवितव्य न वांछणो । (८) उत्तराध्ययन अ० ४ गा० ७ में कहाँ । जीवितव्य नें आहार करवो । ए सं जीवितव्य आश्री कहाँ । (९) तथा सूयगडाङ्ग अ० २ उ० १ गा० १ में जो सं जीवितव्य दोहिलो (दुर्लभ) । पिण जीवितव्य दोहिलो न थी कहाँ । (१०) आवश्यक सूत्र में “नमोत्पुण” में जो “जीवदयाण” जीवि व्य ना दातार ते संयम जीवि व्य ना दातार आश्री । (११) तथा सूयगडाङ्ग अ० २ उ० १ अ० १८ में जीवण णो बज्यो । ते पिण अस जीवितव्य बज्यो छै । (१२) तथा सूयगडाङ्ग श्रु २ अ० ५ गा० ३० में कहाँ । सिंह बाघादिक हिं जीव देखी नें मार कहिणो नहीं । पिण तेहना जीवण रे कहिणो नहीं । (१३) दशवैकालिक अ० ७ गा० ५० में कहाँ देव मनुष्य तिर्यक्ष माहोमाही विग्रह करे ते देखी नें तेहनी हार जीत वांछणो नहीं । (१४) दश लिक अ० ७ गा० ५१ में बायरो १ वर्षा २ शति ३ तगडो ४ ५५.

सुकाल ६ उपद्रव रहित पणो ७ प बोल बज्या । (१२) तथा  
 राङ्ग भु० २ अ० २ उ १ गृहस्थ माहोमाहि लड़े त्वाने मार मतमार इम बांछणो  
 बज्यो ते पिण राग द्वेय आश्री बज्यो छै । (१६) तथा आचाराङ्ग भु० २ अ० २ उ० १  
 ॥ तेउकाय रो अ करे, तिहां अग्नि प्रज्वाल मत प्रज्वाल इम  
 बांछणो नहीं । अग्नि मत प्रज्वाल इम ॥ ॥ ॥ ते पिण जीवण रे  
 बांछणो बज्यो छै । (१७) तथा सूर्यगडाङ्ग भु० २ अ० ६ गा० १७ आर्द्रकुमार ॥  
 भगवान् उपदेश देवे ते वनेरा नें तारिवा तथा आपरा कर्म खपावा उपदेश देवे  
 पिण असंयती रे जीवण रे उपदेश देणो न कह्यो । (१८) उत्तराध्ययन  
 अ० ६ गा० १२ १३ १४ १५ मिथिला नगरी चलती जाण नें नमि ऋषि साहमोद  
 जोयो नहीं, तो जीवणो किम बांछणो । (१९) उत्तराध्ययन अ० २१ गा० ६  
 समुद्रपाल चोर नें मारतो देखी नें गर्भ देई छोड़ायो नहीं । (२०) तथा चलो  
 निशीथ उ० १३ गृहस्थ मार्ग भूला नें ॥ बतावे तो चौमासी प्रायश्चित्त कह्यो ।  
 (२१) तथा निशीथ उ० १३ गृहस्थ नो रक्षा निमित्त मंतादिक भूति कर्म करे तो  
 चौमासी प्रायश्चित्त कह्यो । (२२) निशीथ उ० ११ पर जीव नें डरावे डरा-  
 ने अनुमोदे तो चौमासी श्रित कह्यो । (२३) डाणाङ्ग ठाणे ३ उ० ३  
 हिंसा करता देखी नें धर्म उपदेश देई समझावणो तथा मोन राखणी । तथा उठिने  
 एकान्त जाणो प ३ बोल पर जोरावरी सू छोड़ावणो कह्यो नहीं । (२४)  
 भगवती श० ७ उ० १० अग्नि लगायां घणो आरम्भ घणो आश्रव कह्यो अने  
 बुझायां थोड़ो आरम्भ थोड़ो आश्रव कत्यो पिण धर्म न कह्यो । (२५) तथा भगवती  
 श० १६ उ० ३ साधुरी अर्ग ( मस्ता ) छेदे ते वैद्य नें क्रिया कही पिण धर्म न  
 कह्यो । (२६) मिशीथ उ० १२ में बोल १-२ जीवनी अनुकम्पा भाण नें  
 बांधे बांधता नें अनुमोदे । छोड़े छोड़ता नें अनुमोदे तो चौमासी श्रित कह्यो ।  
 (२७) तथा आचाराङ्ग भु० २ अ० ३ उ० १ नावा में पाणी आवतो देखी घणा  
 स्त्रोकां ने पाणी में डूबता नें देखी नें साधु नें ते छिद्र गृहस्थ ने ॥ नहीं । इम  
 कह्यो । (२८) इत्यादिक घणे कामे यती रो जीवणो बांछणो बज्यो ।



न्ती वार असंयम जीवि जीवो अनन्ती वार बाल मरण मुंओ पिण गर्ज सरी  
 नहीं ते भणी जीवितव्य वांछ्यां धर्म नहीं । ज्ञान, दर्शन, चरित, तप, ए  
 मुक्ति रा मार्ग आदरे. आदरावे. ते तिरणो वां । धर्म छै । डाहा हवे  
 तो विचारि जोइजो ।

## इति २ बोल सम्पूर्णा ।

कैतला एक कहे असंयती रो जीवणो वांछ्यां धर्म नहीं तो नेमि जी  
 वां रो हित वं ।— कह्यो जीवां रे मुक्ति रो हित थयो नहीं ।

ते माटे जीवां रो जीवणो वां ये जीवां रो हित छै । कहे । वली  
 “साणुकोसे जिणहि उ” ए रो ऊंओ अर्थ करी जीवां रो हित थापे ।  
 ( साणुकोस-कहितां अनुकंपा सहित, जिणहिउ—कहितां जीवां रो हित वांछ्यो )  
 ते जीवां रो जीवणो वंछ्यो कहे—ते रा कोलणहार छै । ए तो विपरीत  
 करे छै । जीवां रे जीवण रे तो नेमिनाथजी फिसा नहीं ।  
 ए जो जीवां री अनुकम्पा कही तेहनो न्याय हम छै । जे माहरा व्याह रे बास्ते यां  
 जीवां ने हणे तो मोनें तो ए कार्य करवो नहीं । विचारि पाछा पि । ए तो  
 अनु । निरवद्य छै । जीवां रो हित वांछ्यो सूत्र रो नाम लेइ कहै—ते  
 सिद्धान्त रा छै । तिहां तो कह्यो छै ते पाठ लिखिये छै ।

सोऊणं तं वयणं बहुपाणि विणासणं ।

चिंतेइ से महापन्नो साणुकोसो जिणहि उ ॥ १८ ॥

( उतराध अ० २२ गा० १८ )

सो० सांउली नें. त० तं सारथी नां. श्री नेमिनाथ . व० . पा० प्राणी  
 जीव नां वि० विनाशकारी वचन सांभली नें. चि० चिन्तये. से० ते. म० महा प्रज्ञावन्त. स०  
 सहित. जि० जीवां नें विषे. उ० पूर्ण.

तो इम कह्यो—सारथी रा सांमली ने घणा प्राणी रो बिनाज जाणी नें ते महा प्रज्ञावान् नैमिनाथ चिंतवे । “साणु” कहितां करुणासहि “जिण्हि” कहितां जीवां नें विषे “उ” कहितां पाद पूर्ण—इम अर्थ छै । “साणुकोसे जिण्हिउ” ए पद नो अर्थ उत्तरा री अवचूरी में क्रियो । ते लिखिये छै । “स मगवान् सानुकोशः सकरुणः उः पूर्ण” एहवो अर्थ अवचूरी में क्रियो । पाई टीका में तथा विनयहंसगणि कृत लघु दीपिका में पिणः

क्रियो ते शुद्ध छै । अने केतला एक ट्ठवामें “सकल जीवां ना हितकारी” तेहनों न्याय—इम प्रथम तो अवचूरी, पाई टीका उक्त दीपिका में नथी । ते माटे ए ट्ठवो टीका नों नथी । तथा सकल जीवां ना हितकारी कहिवे, ते जीवां नें न हणवा रा परिणाम ते बैर भाव न हणवा रा भाव तेहिज हित छै । पिण जीवणो बांछे ते हित नथी । प्रअव्याकरण प्रथम द्वारे कह्यो । “सव्व जग वच्छल्लंयाए” इहां कह्यो सर्व जग ना “वच्छल्ल” कहिये हितकारी तीर्यङ्कुर । इहां सर्व जीवां में एकेन्द्रियादिक तथा नाहर चीता बघेरां सर्प आदि दैइ सकल जीवां में सुपात कुपात सर्व आया । ते सर्व जीवां ना हितकारी । ते जीव न हणवा रा परिणाम तेहीज हित जाणवो ।

अ० ८ में कह्यो “हिय निस्सेसाय सव्व जीवाणं तेस्सि च मो” इहां “हिय निस्सेसाय” कहिये मोक्ष नें अर्थ सर्व जीव नें एहवो कह्यो । ते हित मोक्ष जाणवो । अने चोरां ने कर्मा सूं मुकावण अर्थे कपिल मुनि उपदेश दियो । तथा उत्तराध्ययन अ० १३ में चित्त मुनि ब्रह्मदत्त नें हित ना गवैयी उपदेश दियो । इहां पिण भाव हित जाणवो । तथा उत्तराध्ययन अ० ८ गा० ५ “हिय निस्सेसाय बुद्धिं पुञ्चत्ये” जे भोग में खूता ती बुद्धिहित अने मोक्ष यी विपरीत कही । इहां पिण भाव हित मोक्ष मार्ग रूप तेहथी विपरीत जाणवो । तथा उत्तराध्ययन अ० ६ गा० २ “मिच्छिमुएसुकपइ” मित्र पणो सर्व प्राणी नें विषे करे । इहां एकेन्द्रियादिक जीव नें न हणे तेहीज मित्र पणो । “जिण्हिउ” रो ट्ठवा में अर्थ हित करे तेहनी ठाण करे । तेहनो सर्व नें नहि हणवा रा भाव कोई सूं बैर वां रा भाव नहि, तेहीज हित जाणवो । अवचूरी में उत्तम दीपिका में लि नों क्रियो । “साणुकोसे-जिण्हिउ” साणुकोसे कहितां करुणासहित “जिण्हि”

कहितां जीवां न विवे, “उ” कहिता पाद पूरणे एहवो कियो छै । “जिएहि उ”  
 ॥, पिण “जिएहिय” एहवो पाठ न कह्यो । २ “हिय” नो हित  
 हुवे । तथा उत्तराध्ययन अ० १ गा० ६ कह्यो । “इच्छंतो हिय मप्पणो”  
 वां ॥ हित आपणी आत्मा नो इहां पिण हिय कह्यो । पिण हिउ न कह्यो । उत्तरा-  
 ध्ययन अ० १ गा० २८ “हियं तं मप्पणं पण्णो” इहां पिण गुरु नी सीख विनीत  
 हितकारी मानें । तिहां “हिय” कह्यो, पिण “हिउ” न कह्यो । उत्तरा-  
 ध्ययन अ० १ गा० २६ “हियं विगम भया बुद्धा” सीख हित नी कारण कही  
 तिहां “हिय” पाठ कह्यो । पिण “हिउ” न कह्यो । उत्तराध्ययन अ० ८  
 गा० ३ “हिय निस्सेस सव पीवाणं” इहां पिण “हिय” ॥, पिण “हिउ” न  
 ॥ । तिणहिज अध्ययन गा० ५ “हियनिस्सेसय बुद्धि बुद्धये” पिण  
 “य” कह्यो पिण “हिउ” न ॥ । तथा भगवती शतक १५ में कह्यो । चौथो  
 वि फोड़ता तिणे वाणिये वज्यों । तिहां पिण “हिय ए” पाठ छै । तिहां  
 “हिय” ॥ । पिण “हिउ” न कह्यो । तथा भगवती श० ३ उ० १ तोजा देव-  
 लोक ना नें अधिकारे “हिय कामए सुहकामये” कह्यो । तिहां “हिय”  
 पिण “हिउ” पाठ नथी । तथा उत्तराध्ययन अ० १३ गा० १५ में  
 “धम्मस्सिओ स हियाणुपेहो-चित्तो इमं वयण मुदाहरित्था” पिण “हिय”  
 पाठ ॥ पिण “हिउ” पाठ न कह्यो । तथा उत्तराध्ययन अ० २ गा० १३ “एगाया  
 अचेल्प होइ सचेले आविपगया एयं धम्मं हियं णच्चा, नाणी नो परि देवए” इहां  
 पिण “हिय” पाठ कह्यो । पिण “हिउ” पाठ न कह्यो । इत्यादिक अनेक ठामे  
 हिय नो हित कियो छै । अने नेमिनाथ ने अधिकारे हिय नथी ।  
 नथी—“हिउ” छै । “जिएहि” इहां हि वर्ण छै । ते तो विभक्ति ने मागधी  
 वाणी माटे “जिएहि” पाठ नों अर्थ टीका में “जीवेषु” ॥ । “उ” शब्द नों  
 अर्थ “पूर्ण” कियो छै । ते जानवो अने नेमिनाथ जीवां रो जीवणो न बांछ्यो ।  
 आप रो तिरणो बांछ्यो तिहां अगळी गाथा में एइवो कह्यो । ते लिखिये छै ।

जइ उक्त कारण ए ए हम्मं सु बहुजिया ।

एयं निस्सेसं पर गेगे भविस्सइ ॥ १६ ॥

ज० जो. म० माहरे. का० . ए० ए. इ० हखली. सु० अति. व० . जि०  
जीव. म० नहीं. मे० मुक्त ने. ए० जी . नि० (भलो) प० परलोक नें विषे.  
म० होसी.

इहां तो पाधरो कह्यो—जे म्हारे कारण यां जीवा नें हणे तो ए  
ज मोनें परलोक में कल्याणकारी भलो नहीं। इम विचारि प फि ।  
पिण जीवां ने छुड़ावा चाल्यो नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ३ ेल सम्पूर्ण ।

बली मेघकुमार रे जीव हाथी रे भवे एक सुसला री अनुकम्पा करी परीत  
संसार कियो । केइ कहै मं में घणा जीव व घणा प्राणी री  
। इं करी परीत संसार कियो कहे. ते सुतार्थ ना । सुसलारी  
थी परीत फि ो छै। ते पाठ लिखिये छै ।

तएणं ु मेहा ! गायं कडुइ पुणरवि पायं पडिक्ख  
मिस्सामि तिकट्ठु तं ससयं गुपविट्ठुं पासति ण्ण प-  
याए भुयाणु पयाए जीवानु याए णु कंपयाए से  
पाए चेव संधारिये. णो चेव णं गिक्खित्ते.

( ज्ञाता अ० १ )

त० तिवारे. तु० तूं. गा० गात्र ने विषे करी नें. पु० बली. पा० हटे पग मूकू.  
बि० एइ विचारी नें त० तिहां ठिकाणे पग रे हटे एक सुसलो ते पगरी खाली जगा दीठी बैठो.  
ते पा० प्राणी नी दया इं करी. भूत नी दया इं करी. जीव नी दया इं करी. स० स्वत्व नी दया  
इं करी से० ते ( हाथी ) पा० पग. अ० विचाले. चे० निम्नय करी. स० राक्षसो. खो० नहीं. चे०  
निम्नय. पग. बि० मूक्यो.

सुसला नें प्राण. भूत. जीव. कह्यो। पिण और  
जीवां आश्री न कह्यो। प्राण थी ते नें प्राणी कह्यो। सुसल पणे

‘थयो ते भणी भूत । जी । आयुषा ने बले जीवे ते भणी जीव कहीजे । शुभाशुभ कर्मा नें विषे सक्त अथवा शक्त ( र्य ) ते भणी सत्व कहीजे इम सुसला नें चार नामे करि बोलायो छै । ते माटे एकार्थ छै, नी वृत्ति में पिण चार शब्द नें कहा छै । ते टीका कहे छै ।

पाणानुकंपयेत्यादि “पद चतुष्टय मेकार्थं दयाप्रकर्ष प्रतिपादनार्थम्”

पहनो —ए पद चार छै, ते एकार्थ छै । जुया २ चार शब्द कहा ते विशेष दया ने अर्थ छै । इम टीका में पिण ए चार शब्द नों कियो । ते माटे सुसला नें प्राणी, भूत, जीव, सत्व, ए चार शब्द करी बोलायो । जिम भगवती श० २ उ० १ मडाई निर्ग्रन्थ प्राशुक भोजी नें ६ नामे करी बोलाव्यो कहाते लिखिये छै ।

मडाई णं भंते नियंठे नो निरुद्ध भवे, नो निरुद्ध पवंचे. णो पहीण संसारे णो पहीण संसार वेयणिज्जे नो वोच्छिण संसारे. णो वोच्छिण संसार वेयणिज्जे. णो नियं णो नि यट्ठ रणिज्जे. पुणरवि इच्छंतं हव्व च्छइ. हंता गोयमा । मडाई णं नियंठे जाव पुण रवि इच्छंतं हव्व मागच्छइ. सेणं भंते ! कि वत्तव्वंसिया. गोयमा ! पाणेति व्वंसिया. भूतेति वत्तव्वंसिया. जीवेति व व्वंसिया. ेति व व्वंसिया. विन्नुयत्ति वत्तव्वंसिया. वेदेति वत्तव्वंसिया पाणे भूये जीवे सत्ते विण्णूवेदेति व्वंसिया. केणट्ठेणं पाणेति वत्तव्वंसिया जाव वेदेति वत्तव्वंसिया. जह्मा आणमंति वा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा तम्हा पाणेति वत्तव्वंसिया ज । भूए भवइ भविस्सइ. तम्हा भूए ति वत्तव्वंसिया जह्मा जीवे जीवइ

जीवत्तं आउयं च कम्मं उवजीवइ तह्मा जीवेति वत्तव्वंसिया  
जह्मा सत्तेसुहा सुहेहिं कम्मैहिं तह्मा सत्तेवि वत्तव्वंसिया  
जह्मा तित्त कट्ठ कसाय अं विल महुरे रसे जाणइ. तह्मा  
विण्णु तत्ति वत्तव्वंसिया वेदेइय सुह दुक्खं तह्मा वेदेति  
वत्तव्वंसिया, से तेण्ह्णं जाव पाण्णेति वत्तव्वंसिया, जाव  
वेदेति व्वंसिया ॥३॥

( भगवती श्र० १ उ० १ )

म० प्राशुकं भोजी. भ०० हं भगवन् ! नो० नयी. रु० ध्यो, आगलौ जन्म जेयौ. यौ० नयी  
रु० ध्यो भव नौ प्रग्रन्थ जेयौ. भवविस्तार. शो० नयी प्रत्नीय संसार जेहनौ. शो० नयी प्रत्नीय  
संसार नो वेदनीय जेहनौ. शो० नयी सूख्यो गति गमनबंध जेहनौ. शो० नयी विच्छेद पामी संसार  
वेदनीय कर्म जेहनौ. शो० नयी कार्यकाम संसार ना नीडा. शो० नयी मोठो फरयाय कार्य जेहनौ.  
पु० बली तिर्यच नरदेव नारकी लज्जा भव करंतो मनुष्य भय पामें मनुष्य पणू बली पामें. हां.  
गो० गोतमं म० प्राशुकं भोजी निर्ग्रन्थ. जा० यावत् बली मनुष्यादिक पणू पामे. से० ते निर्ग्रन्थ नें  
भगवन्त ! किं-स्य कही नें बोलावीयें हे गोतम ! पा० प्राण कही नें बोलावीये. भू० भूत इम कही  
ने बोलावीये. जी० जीव कही नें बोलावीये. स० सत्त्व कही नें बोलावीये. वि० विज्ञ इम कही  
ने बोलावीये. वे० वेद इम कही ने बोलावीयें प्राण. भूत. जीव. सत्त्व. विज्ञ. वेद. इम कही ने  
बोलावीये. से० ते. के० किय अर्थ भगवन्त ! पा० प्राण इम कही ने बोलाविये. जा० यावत्.  
विज्ञ-वेद इम कही ने बोलाविये. हे गोतम ! ज० जे भणी आनमन्त छै. पा० प्राणमन्त छै.  
उ० उन्वास छै. शी० निम्वास छै. त० ते भणी प्राण इम कहिये. ज० जे भणी. सु० हुबो हुब  
हुस्यै. त० ते भणी भूत इम कहिये. ज० जे भणी जीव प्राण धरे छै तथा जीवत्व लक्षण. अने  
आयु कर्म प्रति अंनुभवे छै. ते माटे जीव कहिये. ज० जे भणी संक ते आसक्त. शक्त  
समर्थ श्रुत चेष्टा नें विषे अथवा संक संवद. शुभाशुभ कर्म करो. नें ते भणी सत्त्व कहिये. ज० जे  
माटे तिक कट्ट कवायलू. आ० आं विल खाटा मंधुर रस प्रति जायो. त० ते भणी विज्ञ पदवो  
कहिये. वे० वेदे छल दुःख नें ते भणी वेदी इम कहिये. से० ते. तें० ते माटे. जा० यावत्. पा० प्राण  
इम कहिये. जा० यावत्. वे० वेद इम कहिये.

इहां मंडाई निर्ग्रन्थ प्राशुकं भोजी ने प्राण. भूत. जीव. सत्त्व. विष्णु  
वेदी पं ६ नामे करि बोलायो । तिम ते सुसला नें पिण चार नामे करी बोलायो ।  
। तिवारे कोई कहै सुसला जा ४ तो "पाणाणुकंपयाप" इहां पाणा

बहुवचन कह्यो । ते 'इहां बहुवचन नहीं, ए तो एक व है । इहां पाण- 'पयाए, ए विहूँनो अकार मि णी दीर्घ थयो है । ते माटे 'पाणानुकंपयाए, ' । इण न्याय एक है । ते माटे एक सुसला री दया थी परीत सं क्रियो । डांहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ४ बोल सम्पूर्णा ।

केतला . कहे—पड़िमाधारी साधु लाय मैं बलता नैं कोई बाहि एकड़ने बाहिर काढे तो तेहनी दया ने निकल जाय, ते जाणे हूं मैं रहि सूं तो ये जास्ये । ॥ तेहनी दया ने बाहिर निकलवो कल्पे वशाश्रुतस्कंध में पहवूं कह्यो है । इम कहे ते मृपावादी है सूत्र ना अ है । तिण ठामे तो दया नों चाल्यो नहीं । तिहां तो पड़िमाधारी नी गोचरी नी विधि कही । पछे बोलवारी विधि कही । पछे उपाश्रय नी विधि कही । पछे संथारा नी विधि कही । पछे तिहां रहितां परिपह उपजे तेहनों विस्तार कह्यो । जुई जुई विधि कही है । तिहां इम कह्यो है । पड़िमाधारी रहे ते नैं विषे स्त्री पुरुष अ आवे, तो ते स्त्री पुरुष ॥ पड़िमाधारी साधु नैं निकलवो न कल्पे । ॥ पड़िमाधारी रह्यो तिहां कोई अग्नि लगावे तो अग्नि आश्री निक- ॥ न कल्पे । ए तो अग्नि नों परिपह खमवो कह्यो । वली तिहां रहितां कोई ने अर्थ खड़ादिक ग्रही नैं आवे तो तेहना खड़ादिक अवलम्बवा न कल्पे । ए परिपह खमवो कह्यो । न्यारा २ विस्तार है पिण वि नहीं ते लिजिये ।

रि एणं भिक्खु पडिमं पडि एणगरु कैइ  
उव यं एकाएण भामेज्जा णो से कप्पइ : तं  
निक्खं ए वा पविसित्तए वा तत्थणं कैइ वहाय गहाय  
आगच्छे जाव णो कप्पइ वलंवित्तए वा पव वित्तए  
कप्पइ आहारि रित्तए ॥१३॥

मा० एक नी. भिक्षु नी प्रतिज्ञा. प० प्रतिपन्न. अ० साधु नें. के० कोई एक उपाश्रय नें विषे. अ० अग्नि काय करी वले. नो० नहीं तेहनें कल्पे. त० ते अग्नि माही आवो. प० ते माटे माहे थी. शि० निकलवो. प० बाहिर थी माहे पेलवो. त० तिहां. के० कोई. व० पडिमाधारी ना बध नें अर्थे. ग० खज्जादिक ग्रही नें. आ०. जा० यावत्. शो० नहीं. से० ते कल्पे. अ० शस्त्र नों पकड़वो. वा०. प० रोकवो, क० कल्पे. आ० यथा ईयाई हो.

तो कह्यो । पडिमाधारी रहे ते अर्थ नें विषे कोई अग्नि लगावे तो ते अग्नि प्री निकलवो न कल्पे । ए तो अग्नि नों परिषह खमवो हो । हिंवे वली बध परिषह उपजे ते पिण सम्यग् भावे खमचूं पहरूं कह्यो 'तत्थ तिहां पडिमाधारी रहे ते उपाश्रय ने विषे कोई पुरुष "वहाय" कहितां बध ते हणवा नें "गहाय" कहितां खड्गादिक ग्रही नें हणे तो तेहना दिक भव-लंब वा एकड़वा न कल्पे । एतले पडिमाधारी नें हणे तो तेहना शस्त्रादिक पकड़वा न कल्पे. "कप्पइसे आहारियं रियत्तए" कहितां कल्पे तेहनें यथा ईयाईं चालवो । इम अग्नि परिषह. बध परिषह. ए दोनूं जुआ २ छै । कोई झूठ बोली नें कहे—साधु रहे तिहां कोई अग्नि वे. तिहां कोई बध ने अर्थे आवे तो साधु वि रे कदाचित् ए जाय. इम तेहनी दया आणी नें बाहिरे निकलवो कल्पे पहरवो झूठ बोले छै । पिण सूत्र में तो पहरवो हो न थी । जे अग्नि में तो साधु वले छै । वली तिहां मारवा नें आवा रो काई काम छै । अग्नि में वले तिहां वली बध ने किम आवे इहां अग्नि नों परिषह तो खमवो कह्यो । तिहां सैंठों रहिवो । अनें बीजी वार जो कदाचित् बध परिषह उपजे तो ते बध परिषह पिण खमवो हो । तिहां सैंठों रहिवो ए तो दोनू परिषह उपजे ते वा । पिण बध परिषह थी डरतो निकले नहीं । वली कोइ अज्ञान कहे—साधु अग्निमें वलता ने अग्नि आश्री निकलवो नहीं । अनें तिहां कोई सम्यग्दृष्टि दयावन्त वांछि ने बाहिरे तो तेहनी दया आणी ईयां सूं निकलवो कल्पे । इम कहें में पिण त्रिपरीत कहे छै ते किम—सूत्र में तो "वहाय गहाय" पहरवो छै । तिहां वहाय रे ठामे "वाहाय गाहाय" पहरवो पाठ कहे छै । पिण सूत्रमें तो वहाय हो । पिण वाहाय पाठ तो कइयो नथी । ठाम ठाम जूनी में वहाय छै । वली दशाश्रुत स्कंध नी टीका में पिण "वहाय" पाठ रो इज अर्थ कियो. पिण "वाहाय" ये पाठ रो न कियो । ते टीका लिखिये छै ।



इति स्थान विधि रुक्ः साम्प्रतं गमन स्थान विधि माह तद्व्यति, तत्र  
मार्गे वसत्यादौ वा कश्चित् वधार्थं वधनिमित्तं गहायति-गृहीत्वा खड्गादिक मिति  
शेषः, आगच्छेत् । यो अवलंबितएवा-अवलम्बयितुम्-आकर्षयितुं-प्रत्यवलम्बयितुं  
पुनः पुनः अवलम्बयितुं यथेयां मनतिक्रम्य गच्छेत् । एतावता द्विधमानोऽपि नाति  
शीर्षयायात् ।

इहां टीकामें पिण इम कह्यो—जै वध नैं खड्गादिक ग्रही ने आवे  
तो तेहना खड्गादिक अवलम्बवा पकड़वा न कल्पे । पिण इम न कह्यो—बाहि  
पकड़ ने बाहिरे काढ़े तो निकलवो कल्पे ते माटे बाहिनों अर्थ करे ते सृपावादी  
। अने जो अग्नि माहि थी बाहि पकड़ी ने बाहिरे काढ़े तेहने अर्थ निकले-तो  
इम क्युं न कह्यो ते पुरुष नी दया ने अर्थ बाहिर निकलवो कल्पे । पिण बाहिर  
निकलवा रो पाठ तो चाल्यो नहीं । इहां तो इम कह्यो जे पड़िमाधारी रहे ते उपा-  
श्रय ली पुरुष आवे तो “नो से कप्पइ तं पडुच्च निक्खमित्तएवा” ए निकलवां रो  
पाठ तो “निक्खमि एवा” इम हुवे । तथा वली आगे कह्यो जे पड़िमाधारी रहे ते  
उपाश्रय नैं बिषे कोई अग्नि लगावे तो “नो से कप्पइ तं पडुच्च निक्खमित्तएवा”  
ए निकलवा रो पाठ कह्यो । तिम तिहां निकलवा रो पाठ कह्यो नहीं । जो ते पुरुष  
नी दया नैं अर्थ निकले तो पहवो पाठ कहिता “कप्पइ से तं पडुच्च निक्खमित्तएवा”  
इम निकलवां रो पाठ चाल्यो नहीं । अने तिहां तो “आहारियं रियत्तए” ए पाठ है ।  
“आहारियं रियत्तए” अने “निक्खमित्तए” ए पाठ नो अर्थ जुआ जुआ है । “निक्ख-  
मित्तए” कहितां निकले । ए निकलवा रो तो पाठ मूल थी ज न कह्यो । अने “अहा-  
रियं रियत्तए” ए पाठ कह्यो तेहनों अर्थ कहै है । “अहारियं” इहां ऋजु (ऋजु-गतौ-  
स्थैर्यं च) धातु है । ते गति अने स्थिर भाव रूप ए वे अर्यां ने बिषे है । जे गति  
अर्थ नैं बिषे हुवे तो आगलि चालवा रो विस्तार है । ते माटे ए चालवा री विधि  
समचे बताई । पिण ते वध परिपह माहि थी चालवा रो समास नहीं । अने स्थिर  
भाव अर्थ होय तो इम अर्थ करवो । पड़िमाधारी नैं हणवां नैं अर्थ खड्गादिक  
ग्रही नैं आवे तो तेहना खड्गादिक अवलम्ब वा न कल्पे । “कप्पइ से अहारियं  
रियत्तए” कल्पे तेहने शुभ अश्रयवसाय ने बिषे स्थिर पणे रहिवो पिण माहिला परि-

णाम किञ्चित् चलायवा नहीं । . जिम आचारांग श्रु० २ अ० ३ उ० १ कह्यो-जे साधु नावा में बैठा नावा में पाणी आवतो देखी मन वचने करी पिण गृहस्थ नें घतावणो नहीं । राग द्वेष पणे रहित आत्मा करिवो । तिहां पिण “आहारियं रियेज्जा” एहवो पाठ कह्यो छै । तेहनों अर्थ शीलाङ्गुलचार्य कृत टीका में इम कह्यो । ते टीका लिखिये छै ।

अहारियमिति-यथेयं भवति तथा गच्छेत् । विशिष्टाव्यवसायो यायादित्यर्थः ।

अथ इहां टीका में पिण इम कह्यो । विशिष्ट अध्यवसाय ने विषे प्रवर्त्तवो । तिम इहां पिण “आहारियं रियेज्जा” एहनो अर्थ शुभ अध्यवसाय नें विषे प्रवर्त्त । स्थिर भाव नें विषे रहे एहवूं जणाय छै । पिण वध परिग्रह माहि थी उठे नहीं । जे पड़िमाधारी तो हाथी सिंहदिक साहमा आवे तो पिण उठे नहीं । तो परिग्रह माहि थी किम उठे । तिवारे कोई कहे—परिग्रह थी डरता न उठे । परं दया अनुकम्पा नें अर्थे बाहिरे निकले । इम कहे तेहनें इम कहिणो, ए तो अयुक्त छै । जे पड़िमाधारी किण हीनें संथारो पिण पचखावे नहीं, कोई नें दीक्षा पिण देवे नहीं । आवक ना व्रत अदरावे नहीं, उपदेश देवे नहीं, चार भाषा उपरान्त बोले नहीं—तो ए काम किम करे । अनें जो दया नें अर्थे उठे तो ने अर्थे उपदेश पिण देणो । दीक्षा पिण देणी । हिंसा, क्रूठ, चोरी, रा त्याग पिण करावणा । इत्यादिक और कार्य पिण करणा । पिण पड़िमाधारी धर्म उपदेशादिक कांई न देवे । ए तो एकान्त आप रो इज उद्धार करवा नें उठ्या छै । ते पोते किणही जीव नें हणे नहीं । ए तो आपरीज अनुकम्पा करे । पिण परनी न करे । जिम ठाणाङ्ग ठांजे ४ उ० ४ कह्यो । “आयाणुकंपय नाम मेगे णो पराणु कंपय” आत्मानोज अनुकम्पा करे पिण परनी न करे ते जिनकल्पी आदिक । इहां पिण जिन कल्पी आदिक कह्यो । ते आदिक शब्द में तो पड़िमाधारी पिण आया ते आप री इज अनुम्पा करे । पिण परनी न करे, ते जीव नें न हणे ते आपरीज अनुकम्पा छै । ते किम—जे एहनें मात्सां मोनें पाप लागतो तो हूं डूबसूं । इम आप री अनुकम्पा नें अर्थे जीव हणे नहीं । जो जीव नें हणे तो पोतानीज अनुकम्पा उठे छै—आप डूबे ते माटे । अनें अग्नि माहि थी न निकले अनें कोई बले तो आप नें पाप लागे नहीं । ते माटे पड़िमाधारी परिग्रह माहि थी निकले नहीं—अडिग रहे । अनें जे सिद्धान्त ना अजाण कूठा अर्थ बताय नें पड़िमाधारी नें

परिवह मां हि धीमि वो कहे, ते मृयावादी छै । प्र तो सूत्र में कह्यो । “व  
 य” ते हणवा नें “शस्त्र ग्रही नें हणे कह्यो । ते पाठ उत्थापी नें  
 “वाहाय माहाय” थापे । ए वां हि रो तो कह्यो इज नथी । ते विरुद्ध  
 लिखी ने अज्ञाण नें भरमावे छै । टीका में पिण वध नों कियो । पिण वां हि नों  
 कियो नहीं । तो ए वां हि रो किम थापिये । एहवी भूंडी थाप करे तेहनें  
 लोके जिह्वा पामणी दुर्लभ छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

ति ५ बोल सम्पूर्णा ।

बली साधु उपदेश देवे ते पिण जीवण रे जीवा रो आणी  
 नें उपदेश पिण न देणो एइवू कह्यो ते लिखिये छै ।

स्सेसं अक्खयं वावि सव्व दुक्खेति वा पुणो ।  
 वज्झपाणा उवज्झन्ति इति वायं न नीसरे ॥ ३० ॥

( सुयगाङ्ग भु० २ अ० ५ गा० ३० )

अ० जगत् माहि समस्त वस्तु घट पटादिक एकान्त । अ० नित्य सासताइज छै । इसो  
 प्र बोले । स० तथा बली सगलो जगत् दुःखात्मक छै इस्यूं पिण न बोले । इय कारण जग  
 माही । एकैक जीव नें महा छली बोल्या छै । यतः “तण संथार निविट्ठो-मुणिवरो भग्ग राग-  
 गय मोहो । ज पावह मुत्तिष्ठहं-कत्तोतं चहन्टीवि” इति वचनात् । तथा वध दिनाशवा योग्य  
 परदारक तेहनें । तथा ए पुरुष अ० बधवा योग्य नथी । ए पिण न कहे । इम कहितो तेहनी  
 कर्म नी अजुमोदना लागे । इणि परे सिंह मार्जार आदिक हिंसक जीव देखो चारित्रिया  
 रहे । इ० एहवो नहीं बोले ।

अथ कह्यो—जीवा नें मार तथा मार एहवूं पिण वचन न कहिणो ।  
 इहां ए रहस्य महणो २ तो साधु नो उपदेश छै । ते तारिवा ने उपदेश देवे ।  
 अन वज्ज्यों, छेव आणी ने हणो इम न कहिणो । त्यां जीवा रो आणी  
 नें हणो इम पिण न कहिणो । मध्य पणे रहिवो । श्रीलाङ्काचार्य

। में पिण इम कह्यो मार ते हि जीवां ना कार्य नी अनुमोदना  
लागे । ते लिखिये छै ।

“वध्या श्वोर पर दारिका दयो ऽ वध्यां वा तत्कर्मानु मति प्रसंगा दित्येषं  
भूतां वाचं स्वाजुष्ठान परायण स्ताषुः पर व्यापार निरपेक्षो निसृजे तथाहि सिंह  
व्यात्र भार्जरादीन् परसत्त्व व्यापादयन परायणान् दृष्ट्वा माध्यस्थ भवत्वयेत्”

इहां शीलाङ्गुचार्य टीका में बड़ा टक्का में पिण । अश्वोर  
पर दारिकादि नें बधवा योग्य तेहनी हिंसा लागे । तथा वधवा योग्य नहीं,  
ते माटे हणो इम कथां तेहना नो अनुमोदना लागे । ते माटे हिंसक जीव  
देखी मार न कहिणो । मध्यस्थ भावे रहिणो । एहवूं यूँ  
सिंह व्याघ्रादिक हिं जीव —ते आदिक शब्द में हिं जीव  
छै । तेहनों राग आणी जीवणो बांछी ने पिण न कहिणो  
सो यती रो जीवण किम हुवे । हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ६ बोल सम्पूर्णा ।

। गृहस्थ ने माही माही लड़ता देखी ने एहने मार-तथा मार य  
ने चिन्तवणो नहीं इम कह्यो ते सूत्र कहे छै ।

आयाण भिक्षुस्स सांगारिण उवस्सए वसमाणस्स  
खलु गाहवती वा जाव करी वा मन्नं हो-  
सन्तिवा तिवा रुंभन्तिवा उद्वन्तिवा अह भिक्षू  
णं णियच्छे । एते न्नमन्नं होसंतुवा उक्को-  
संतु उद्वन्तु ।

आ० पाप नों स्थानक ए पिण् मि० साधु नें. सा० गृहस्थ कुल सहित. उ० एहवे  
उपाश्रय. व० रहता वसता. इ० इण्डि उपाश्रय. ख० निश्चय. गा० गृहस्थ. जा० जाव कर्मकरी  
जटिणी प्रमुख. अ० परस्पर माहो माहि अनेरा नें. अ० आक्रोशे. वं० दंडादिक सुं वधे. ६०  
रोके. उ० उपद्रवे ताडे मारे. अ० अय हिवे. तेहरे सरूपे. मि० साधु देखी कदाचित्. उ० ऊंचो.  
व० नीचो. म० मन. शि० करे मनमाहि इसूं भाव आण्ये. ए० एह ते. ख० निश्चय. अ० माहो  
माहि. अ० आक्रोशो. मा० एहनें म करो आक्रोश जा० यावत् म करो. अ० उपद्रव, ताडे, मारे  
इहां ऊपर रांग द्वेप नो भाव आव्यो. अथवा इम जाण्ये एहनें आक्रोश करो तेहें उपरें द्वेप नो  
भाव आव्यो राग द्वेप कर्म वंश नों कारण ते साधु ने न करवा ।

अथ इहां कह्यो गृहस्थ माहोमाहि लडे छै । आक्रोश आदिक करे छै । तो  
इम चिन्तवणो नहीं एहनें आक्रोशो हणो रोको उद्वेग दुःख उपजावो । तथा एहनें  
मत हणो मत आक्रोशो मत रोको उद्वेग दुःख मत उपजावो. इम पिण चिन्तवणो  
नहीं । एह तो ए परमार्थ, जे राग आणी जीवणो वांछी इम न चिन्तवणो । ए  
बापड़ा नें मत हणो दुःख उद्वेग मत देवो तो राग में धर्म किहां थी । जीवणो  
धर्म किम कहिये । अनें जे हणे तेहनो पाप टलावा नें तारिवा नें उपदेश  
देई हिंसा छोडावे ते तो धर्म छै । पिण राग में धर्म नहीं । असंयती रो जीवणो  
भांछ्यां धर्म नहीं । डाहां हुवे ते विचारि जोड़्यो ।

## इति ७ ोल सम्पूर्ण ।

तथा साधु गृहस्थ नें अग्नि प्रज्वाल बुझाव तथा बुझाव इम नें ।  
इम कह्यो ते लिखिये छै ।

आयाण् एं भिक्खुस्स गाहावतीहिं सद्धिं. संवसेमा-  
णस्स-इह खलु गाहावती. अप्पणो. अट्ठाए. अगणिकायं  
उज्जालेज्जवा पज्जालेज्जवा विज्जालेज्जवा अह भिक्खू उच्चावर्यं  
मणं शियच्छेज्जा-एतेखलु अगणिकायं उज्जालेतुवा ।

उज्जाले पज्जालेतुवा मा वा पज्जालेतुवा विज्जवेतुवा मा वा विज्जवेतुवा ।

( शु० २ अ० २ उ० १ )

पाप नों ए ए पिण. मि० साधु नें. गा० गृहस्थ. स० साध. बसता नें. इ० इहाँ. ख० निश्चय. गा० गृहस्थ. अ० आपणे अर्थ. अ० अश्रिकाय उ० उज्जाले. वा प० प्रज्जाले. वा० अथवा. वि० बुझावे पहवो प्रकार कर तो. अ० अथ हिवे साधु गृहस्थ नें देखी नें. उ० ऊंचो. व० नीचो. म० मन. शि० करे किम करी इम चिन्तवै. ए० ए गृहस्थ. ख० निश्चय. अ० अश्रिकाय. उ० उज्जालो अथवा मत उज्जालो प्रज्जालो. वा० मत प्रज्जालो. वि० बुझावो. वा० मत बुझावो । पहवें भावे घणो असंयम अग्नि कायनी हिंसा विराचना प्रमुख ६ कायनी हिंसा लागे तिय कारण इसो न चिन्तवै.

अथ अठे इम ॥ जे अग्नि लगाव तथा मत लगाव बुझाव तथा मत बुझाव इम पिण साधु नें चिं णो नहीं । तो लाय मत लगाव इहां स्थू आरम्भ छै । ते माटे इसो न चिन्तवणो । इहां ए रहस्य—जे अग्नि थी कीइयां आदिक घणा जीव मरुस्ये त्यां जीवां रो जीवणो वांछी ने इम न चिन्तवणो जे अग्नि मत लगाव । अने अग्नि रो आरंभ तेहनो पाप टलावा तेहनै तारिया अग्नि रो आरंभ करवा री त्यांग करीयां धर्म छै । पिण जीवणो वां धर्म नहीं । डाहा हुवै तो विचारि जोइजो ।

इति ८ बोल सम्पूर्णा ।

तथा असंयम जीवितव्य तो साधु नें वांछणो नहीं ते जीवितव्य तीं ठाम २ बरज्यो छै ते संक्षेप पाठ लिखिये छै ।

दसविहे संसप्पयोगे प० तं० इह गेगा संसप्पयोगे परलोगा संसप्पयोगे दुहओ लोगा संसप्पयोगे जीविया संसप्पयोगे मरण संसप्पयोगे कामा संसप्पयोगे भोगा

संसर्पओगे । भा संसर्पओगे पूया संसर्पयोगे सत्कारा  
सर्पओगे ।

( अथाङ्ग अ० १० )

द० दश प्रकारे आ० इच्छा तेहनों प० व्यापार ते करिवो प० परुष्यो तं० ते कहे हैं।  
इह लोक ते मनुष्य लोक नो आसंता जे तप थी हूं चक्रवर्त्ती आदिक होय जो प० ए तप करण  
थी इन्द्र अथवा सामानिक होयजो दु० हूं इन्द्र यह नें चक्रवर्त्ती यायजो अथवा इह लोक ते  
इण जन्मे काह एक बांछे परलोके काह एक बांछे विहूं लोके काह एक बांछे जि० ते चिरंजीवी  
होयजो म० शीघ्र मरण मुक्त ने होयजो का० मनोज्ञ शब्दादिक माहरे होयजो भो० भोग-  
बन्ध रसादिक माहरे होयजो ला० ते कीर्ति श्लाघादिक नों लाभ मुक्त नें होयजो पू० पूजा  
पुष्पादिक नी पूजा मुक्त ने होयजो स० सत्कार ते प्रधान वस्त्रादिके पूजवो मुक्त ने होयजो

अथ अठे पिण कह्यो । जीवणो मरणो आपणो २ बांछणो नहीं तो पारको  
ने बांछसी । जीवण मरण में धर्म नहीं धर्म तो पचखाण में छै । डाहा हुवे तो  
विचारि जोइजो ।

इति ६ बोल सम्पूर्णा ।

तथा सूयगडाङ्ग अ० १० में कह्यो । असंयम जीवितव्य बांछणो नहीं । ते  
लिखिये छै ।

निकखम्म गेहा उ निराव कंखी,  
तयं विउ सेंज नियाण छिन्नो ।  
मे जीविय नो मरणा वकंखी,  
चरेज भिक्खू वलया विमुक्के ॥

( सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० १० गा० २४ )

नि० घर थी निकली चरित्र आदरी नें जीवितव्य नें विषे निरापेक्षी छतो—का० शरीर.  
वि० बोसरावी नें प्रतिकर्म विक्रिसादिक. अनकरतो शरीर ममता छोडे. नि० निपाण रहित.  
तथा नो० जीवो न बांछे. म० मरणो पिण. कं० न बांछे. च० संयम अनुष्ठान पाले. भि० साधु.  
व० संसार. व० तथा कम बंध थकी. वि० सूकाणो.

अथ अठे पिण जीवणो णो वरज्यो । ते असंयम जीवितव्य  
आध्री वज्यो छै । डाहा हुवें तो विचारि जोइजो ।

इति १० बोल सम्पूर्णा ।

तथा सूयगडाङ्ग अ० १३ गा० २३ में पिण जीवणो मरणो णो वज्यो ते  
लिखिये छै ।

आहत्त हियं समुपेह माणे,  
सठ्वेहि पाणे हि निहाय दंडं ।  
णो जीवियं णो मरणावकंखी,  
परि वदेज्जा वलया त्रिमुक्के ॥

( सूयगडांग ध्रु० १ अ० १३ गा० २३ )

आ० यथा तथा सुधो मार्ग सूत्रगत. स० सम्यक् प्रकारे आलोचतो अनुष्ठान  
तो. सर्व प्राणी जीव त्रस स्थावर नों दंड विनाश ते छोड़ी नें प्राण तजे पिण धर्म उलंघे नहीं.  
आ० जीवितव्य. तथा. णो मरण पिण बांछे नहीं. एहवो छतो प्रवर्त्ते संयम पाले. व० मोह-  
गहन थकी ते विमुक्त जाणवो.

अठे पिण जीवणो मरणो बांछणो वज्यो । ते मरणो णि रो न  
णे । तो असंयती रो जीवणो पिण न बांछणो । हुवे तो विचारि  
जोइजो ।

इति ११ बोल सम्पूर्णा ।



सूयगडाङ्ग अ० १५ में पिण असंयम जीवितव्य वांछणो वज्यो है ।  
ते पाठ लिखिये है ।

जीवितं पिट्टयो वि ।, अंतं पावन्ति कम्मुणा ।

कम्मुणा सम्मुही भूता, जे मग्ग मणु सासइ ॥

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० १५ गा० १०.)

जि० असंयम जीवितव्य. पि० उपराठो करी निपेधी जीवितव्य नें अनादर देतो भला अनुष्ठान नें विषे तत्पर छता. अ० अंतं पामें अंत करे. क० ज्ञानावरणीय आदिक कर्म नों तथा. क० रुडा अनुष्ठान करी. स० मोक्ष मार्ग नें सन्मुख छता. अथवा केवल उपने छते सासता पद नें सनमुख छता. जे० जे वीतराग प्रणेत ज्ञानादिक. व० श्रील्लवे. प्राणीयानो हितकारी प्रकाशे आपण. पे समाचरे.

अथ अठे पिण कह्यो—असं जीवितव्य नें अन आदर देतो थको विचरे तो असंयम जीवितव्य वांछयां धर्म किम कहिये । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १२ बोल सम्पूर्णा ।

तथा सूयगडाङ्ग अ० ३ उ० ४ गा० १५ जीवणो वांछणो वज्यो ते पाठ लिखिये है ।

हि ले परिक्कंतं न पच्छा परितप्पइ ।

ते धीरा वंधणु मुक्का नाव कंखन्ति जीवियं ॥

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ३ उ० ४ गा० १५)

जे० जेथे महा पुरुष. का० काल प्रस्तावे धर्म नें विषे कीधो. न० ते पवे मरण वेलां. प० पिछतावे नहीं. ते धीर पुरुष. व० कर्म बंधन थकी छूटा मुक्कना है । ना० न० जी० असंयम जीवितव्य अथवा बाल मरण पिण न बांछे. एतावता जीवि मरण नें विषे सस भाव वर्त्ते ।

अटे पिण कह्यो । जीवणो मरणो णो नहीं । ते पिण यम  
जीवितव्य मरण आश्री वज्यों । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १३ बोल सम्पूर्णा ।

सूयगडाङ्क अ० ५ में यम जीवितव्य वांछणो वज्यों । ते  
लिखिये छै ।

केइ वाले इह जीवियट्टी  
पावाइं म्माइं रेंति रुदा,  
ते घोर रूवे तिमिसंधयारे  
तिब्बाभितावे नरए पडेंति ॥

( सूयगडांग सु० १ अ० ५ उ० १ गा० ३ )

जे० जे कोई अज्ञानी महारंभी महा परिग्रही इण संसार ने बिषे. जी० असंयम  
जीवितव्य ना अर्थी. पा० मिथ्यात्व प्रमाद योग ए पाप. क० ज्ञानावरणीयादिक  
कर्म. क० उपाजें छै. सैला कर्म केहवा रुद्र प्राणीया नें भय नों कारण. ते० ते पुरुष तीव्र पाप ने  
उदय. जो० घोर रूप डरामणो. ति० महा अन्धकार तिहां आलें करी कोई दीखे नहीं.  
ति० तीव्र गाढ़ो ताव छै जिहां इहां नो अग्नि यकी अनन्तगुणी अधिक त्राप छै. न०  
ना विषे. प० पडे ते कूड कर्म ना करणहार.

अटे पिण कह्यो । जे अज्ञानी जीवितव्य वांछे. ते  
पड़े तो साधु थई नें म जीवितव्य नी किम करे । डाहा हुवे तो विचारि  
जोइजो ।

इति १४ बोल सम्पूर्णा ।

तथा सूयगडाङ्क अ० १० में पिण जीवणो वांछणो वज्यों । ते कहे छै ।

सुयञ्जलाय धम्मे वित्तिगिच्छतिन्ने,  
 लाहे चरे आय तुले पयासु ।  
 चयं न कुज्जा इह जीवियद्धि,  
 चयं न कुज्जासु तवस्सि भिक्खू ।

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० १ गा० ३)

सु० रुडी परे जिन धर्म कह्यो. ए धर्म एहवो हुइं तथा. वि० सन्देह रहित वीतराग बोले  
 ते इसो माने एतले ज्ञानदर्शन समाधि कही. तथा सा० संयम ने विषे. निर्दोष आहार लेतो  
 यको बिचरे. आ० आत्मा तुल्य. प० सर्व जीव नें देखे एहवो साधु हुइं. आ० आश्रम न करे इहाँ  
 यम जीवितव्य अर्थी न हुई. च० धन धान्यादिक नु परिग्रह न करे. सु० भलो तपस्वी. मि० ते  
 साधु हुवे.

अथ अटे पिण कह्यो । असंयम जीवितव्य नो अर्थी न हुवे । ते जीवि-  
 सावय में छै । ते माटे ते असंयम जीवितव्य चां । धर्म नहीं । डाहा हुवे तो  
 विचारि जोइजो ।

## ति १५ बोल सम्पूर्णा

तथा सूयगडाङ्ग अ० ५ उ० २ जीवणो वांछणो वज्ज्यो ते पाठ लिखिये छै ।

नो भि खे गोबियं नो विय पुयण पत्थए सिया  
 थ वेति भेर सुन्नागार गयस्य भिक्खुणो ।

(सूयगडाङ्ग श्रु०-१ अ० २ उ० २ गा० १६)

नो० तेणे उपसर्ग पीछ्यो छतो साधु असंयम जीविनव्य न बांछे एतले आगमे  
 जीवितव्य घणो काल जीवू इम न बांछे. नो० परिसह नें सहिवे वस्त्रादिक पूजा नी प्रार्थना न  
 बांछे. सि० कदाचित् न करे. अ० आत्मा ने विषे. सु० उपजे परिग्रह केहवा. मे० भय कारिया

पिशाचादक ना. छ० सूना घर नें विपे. ग० रक्षा. भि० साधु नें जीवितव्य मरण से आकांक्षा रहित पहवा साधु नें उपसर्ग सहितां सोहिला हुई ।

अथ इहां पिण जीवणो वांछणो वज्यो । ते पिण असंयम जीवितव्य आश्री वांछणो वज्यो छै । डाहा हुवे तो विचारि जोझो ।

## इति १६ ोल संपूर्ण ।

तथा उत्तराध्ययन अ० ४ संयम जीवितव्य धारणो कहीँ । ते पाए लिखिये छै ।

चरे पयाइं परिसंकमाणो,

जं किंचिपासं इह मन्नमाणो ।

लाभंतरे जीविय बूहइत्ता,

पच्चा परि ।य सत्तावधंसी ॥

( उत्तराध्ययन अ० ४ गा० ७ )

च० विचरे सुनि केहवूं. प० पगले २ संयम विचारणी थो ।दरे ते माटे शंक्तो चाले. जें कीइ पिण गृहस्थ संसतादिक तेहने संयम नी प्रवृत्ति रुंधवा माटे. पा० पासनी परे. पास ए संसार नें विपे. तो हुन्तो. ला० लाभ विशेष छै ते एतले भला २ सम्यगु ज्ञान दर्शन चारित्र नूं लाभ ए जीवितव्य थकी छै तिहां लगे. जी० जीवितव्य नें अन्नपानादिक देवे करी संधारे. प० ज्ञानादिक लाभ विशेष नी प्राप्ति थो पछे. परि० ज्ञान प्रज्ञाई गुण उपाजेंवा एहवूं जाणी नें तिवारे पछे प्रत्याख्यान परिज्ञाई म० शरीर कार्मणादिक विध्वंसे.

अथ अठे पिण । अन्न पाणी आदिक देई संयम जीवितव्य रणो पिण ओर नहीं । ते किम उण जीवितव्य री.वांछा.नहीं । एक संयम री बांछा आहार पिण संयम छै । आहार करण री पिण अंतर्गत नहीं । तीर्थङ्कर

री श्रावक नो तो आहार अन्नत में छै । तीर्थङ्कर नी आह्वा बाहिर छै ।  
 नें तो जेतलो प ण छै ते छै । अ छै ते अधर्म छै । ते माटे  
 यम मरण जीवंग री बाँछा करे ते अन्न में छै । डाहा हुवे तो विचारि  
 जोइजो ।

## इति १७ लेख सम्पूर्ण ।

तथा सुयगडाङ्ग अ० २ में पिण संयम जीवितव्य दुर्लभ गो । ते पाठ  
 लिखिये छै ।

सं वुज्झह किं न वुज्झह संवोही खलुपेच्च दुल्लहा । एणं  
 उ वणम्म राइओ एण सुलभं पुण रावि जीवियं ।

( सुयगडाङ्ग अ० १ अ० २ गा० १ )

सं० श्री आदिनाथ जी नो ६८ पुत्र भरतेश्वर अपमान्या सवेग अपने श्रुपम आगल आन्या  
 ते प्रते पृह संबध कहे छै । अथवा श्री महावीर देव परिपदा साहे कहे । अहो प्राणी तुम्हें बूझ्यो  
 काँइ नथी वूझता, चार अंग दुर्लभ । सं० सम्यग् ज्ञानबोधि ज्ञान दर्शन चरित्र । ख० निश्चय पे०  
 परलोक नें अति ही दुर्लभ छै । शो० अवधारणे । जे अतिक्रमी गइ रा० रात्रि दिवस तथा  
 भौवनादिक पाछो न आवे परत ना पाणी नी परे शो० पामतां सोहिलो नथी । पु० बली । जी०  
 संयम जीवितव्य ण सहित जीवितव्य

अथ अठे पिण संयम जीवितव्य दोहिलो कह्यो । पिण और जीवितव्य  
 दोहिलो न कह्यो । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति १८ बोल सम्पूर्ण ।

तथा नमी राज ऋषि मिथिला नगरी बलती देखी साहमो जौयो न कह्यो ।  
 ते पाठ लिखिये छै ।

एस अग्गीय पाऊय एयं डज्झइ दिरं ।

भयवं अन्तेउरं तेणं कीसणं व पिक्खह ॥ १२ ॥

एय मं निसामित्ता हेउ रण चोइयो ।

तंओ गी र रिसी देवेदं ण मज्जवी ॥ १३ ॥

सुहं व गो जीवा गो सिं मो नत्थि किंचणं ।

महिलाए डज्झमाणीए न मे डज्झइ किंचणं ॥ १४ ॥

धत्त पुत्त कलत्तस्स निज्जावारस्स भिक्खुणो ।

पियं न विज्झइ विं चि पियं पि न विज्झइ ॥ १५ ॥

( उत्तराध्ययन अ० ६ गा० १२-१३-१४-१५ )

ए० प्रत्यक्षः अ० अग्नि अग्ने वा० वाय रे करी. ए० प्रत्यक्ष तुम्ह संबन्धी. उ० बले छ. मं० मन्दिर घर. मं० हे भगवान् ! अ० अंतःपुर समूह. की० क्यों मणी ना नयी जोबता, तुम ने तो ज्ञानादि राखना तिम अंतपुर पिण राखवूं ॥ १२ ॥

देवेन्द्र रो ए० ए. अ० अर्थ. नि० छनी. हे० हेतु कारण हू प्रेरया. न० नमीराज ऋषि. दे० देवेन्द्र ने. इ० ए वचन. म० बोल्या. ॥ १३ ॥

छ० छले वलूँ छूँ अने. छ० छले जीवूँ छूँ. जे अशमात्र पिण म्हारे. न० छै नहीं. कि० किंचित् वस्तु आदिक. मिथिलानगरी बलती छतीये. न० माहल नयी किंचित् मात्र पिण थोड़ी ई पिण जे मणी. ॥ १४ ॥

च० छोब्या छै. पु० पुत्र अने. क० कलत्र जेणे. एहवूँ बली. नि० निर्व्यापार करण पणु पालवीदिक क्रिया ते रहित करी. मि० साधु ने. पि० प्रिय नयी. कि० किंचित् पदार्थ पिण राग । माटे. अ० अप्रिय पिण नयी कोई पदार्थ साधु ने द्वेष पिण अकरवा माटे.

अटे इम कह्यो—मिथिला नगरी बलती देख नमीराज ऋषि साहमो न जोयो । बली कह्यो म्हारे बाहलो दुवाहलो पकही नहीं । राग द्वेष अणकरवा माटे । तो साधु. मिनक्रिया आदिक रे लारे पड़ने उदरादिक जीवां ने बचावे. ते

शुद्ध के अशुद्ध । असंयती रा शरीर ना जावता करे ते धर्म के अधर्म । असंयम जीवितव्य वांछे, ते धर्म के अधर्म छै । ज्ञानादिक गुण वांछयां धर्म छै । डाहा हुवे तो विचारि जोड़जो ।

## इति १६ बोल सम्पूर्णा ।

तथा दश वैकालिक अ० ७ में पिण इम कह्यो । ते लिखिये छै ।

देवाणां मणुयाणांच तिरियाणां च वृग्गहे  
अमुयाणां जओहोउं मावा होउत्ति नो वए ।

( दश वैकालिक अ० ७ गा० ५० )

दे० देवता ने, तधा. म० मनुष्य ने. च० बली. ति० तिर्यञ्च ने. च० बली दु० विग्रह ( कलह ) थाइ छै । अ० असुकानों. ज० जय जीतवो होज्यो. अथवा. मा० म होज्यो असुकानों जय इम तो न घोले साधु-

अथ अठे पिण कह्यो । देवता मनुष्य तथा तिर्यञ्च माहोमाही कलह करे तो हार जीत वांछणी नहीं । तो काया थी हार जीत किम करावणी, असंयती ना शरीर नी सात्त करे ते तो सावय छै । डाहा हुवे तो विचारि जोड़जो ।

## इति २० बोल सम्पूर्णा ।

१ दश वैकालिक अ० ७ में ते ते पाठ लिखिये छै ।

वायुवुट्ठिं च सीउण्हं खेमं धायं सिवन्तिवा  
अयाणु होज्ज एयाणि मा वा हो उत्ति नो वए ।

( दश वैकालिक अ० ७ गा० ५६ )

वा० वायरो. कु० वर्षात. सी० शीत. ताप. खे० राजादिक ना कलह रहित हुये. ते क्षेम. भ्रा० सकल. सि० उपद्रव रहित पणो. क० किबारे हुस्यै. ए० वायरा आदिक हुये । अथवा मा यास्यौ इति. इम साधु न बोले.

अठे कह्यो वायरो वर्षा, शीत. तावडो.राज विरोध रहित सुमिक्ष पणो. उपद्रव रहित पणो. ए ७ बोल हुवो इम साधु नें कहिणो नहीं । तो करणो किम् उदरादिक नें मिनकियादिक थी छु. नें उपद्रव पणा रहित करे ते सुल विरुद्ध है । झाडा हुवे तो विचारि जोड़ो ।

## इति २१ बोल सम्पूर्णा ।

सूयगडाङ्ग शु० २ अ० ७ में पिण आपरा 'तोड़वा' लान तारिवा उपदेश देणो कह्यो छै । ठाणाङ्ग ठा० ४ एहवो कह्यो ते लिखिये छै ।

चत्तारि पुरि प० तं० याण 'पाए न मेगे' णो पराणुकंपए ।

( ठा० ठा० ४ )

अ० चार पुरुष जाति परुष्या. तं० ते कहे छै. आ० पोताना हित नें विषे प्रवर्त्तो ते प्रत्येक बुद्ध जिन कल्पी परोपकार बुद्धि रहित निर्दय. थो० हित नें विषे न प्रवर्त्तो १ पर उपकारे प्रवर्त्तो ते पोता ना हित ना कार्य पूरा करीने पछे परहित नें विषे एकान्ते प्रवर्त्तो ते तीर्थकर "मेतारज" वत् २ तीजो वेहूनों हित बांछे ते स्थविरकल्पी ३ चोयो पाप-वेहूनों हित न बांछे ते कालकसूरीवत्. ४

अठे पिण १० । जे साधु पोतानी अनुकम्पा करे. पिण ला नी अनुकम्पा न करे । तो जे पर जीव पग न देवे. ते पिण पोतानी ज अनुकम्पा निश्चय नियमा छै । ते किम एहनै । मोनें इज लागसी जाणी



न हणे । ते भणी पोता नी अनुकम्पा कही छै अने आप नें पाप ~ आगलानी  
अनुकम्पा करे ते छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति २२ बोल सम्पूर्णा ।

उत्तराध्ययन अ० २१ समुद्र पाली पिण चोर नें मारतो देखी  
छोडायो, चाल्यो नहीं । ते लिखिये छै ।

तं पासिऊण संवेगं समुद्रपालो इणमव्ववी  
अहो असुभाण कम्माणं निजाणं पावगंडमम्

( उत्तराध्ययन अ० २१ गा० ६ )

तं० ते चोर ने. पा० देखी नें. सं० वैराग्य ऊपनों. स० समुद्र . इ० इस. म० बोखो.  
आ० आश्चर्यकारी. अ० अशुभ. कर्म नों. नि० छेहड़े थ० अशुभ विपाक इ० ए प्रत्यक्ष.

अथ पिण कह्यो—समुद्रपाली चोर ने मारतो देखी वैराग्य आणी  
चारित लीधो पिण 'देइ छोडायो नहीं । परिग्रह तो पाचमों पाप कह्यो छै । जे  
परिग्रह देइ जीव छुड़ायां धर्म हुवे तो वाकी चार आश्रव सेवाय न जीव छोड़ायां  
पिण 'कहिणो । पिण इम धर्म निपजे नहीं । जीवितव्य बांछे ते तो  
मोह अनुकम्पा । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति २३ बोल सम्पूर्णा ।

गृहस्थ रस्तो भूलो दुखी छै । तेहनें मार्ग बतावणो नहीं । गृहस्थ रस्तो  
भूला नें मार्ग बतायां साधु नें प्रायश्चित कह्यो । ते पाठ लिखिये ।

जे भिक्खू ए उत्थियाणं गारत्थियाणं गाट्ठाणं  
मूढाणं विपरियासियाणं मग्गं वा पवेदेइ संधिं पवेदेइ णं  
संधिं पवेदेइ धिं उ वा पवेदेइ पवेदंतं इज्जइ.  
( निष्पीय उ० १३ बोल २७ )

जे० जे साधु. अ० अन्यतीर्थिक नें तथा. गा० गृ नें. शू० पंथ धकी नष्टां नें. मू०  
अटवी में दिशा मूढ हुआ नें. वि० विपरीत पण नें मार्ग नों. प० कहिवो. स० संधि नो  
कहिवो म० मार्ग थकी. स० संधि. प० कहिवो. स० संधि थकी. म० मार्ग नों. प० कहिवो.  
मार्ग नी संधि प० कहे कहता नें सा० अनुमोदे । तो पूर्ववत् प्रायश्चित्त.

अथ अठे गृहस्थ त्रया तीर्थों नें मार्ग भूला नें दुःखी अ देखी.  
। चौमासी प्रायश्चित्त कह्यो । ते माटे यती री सुखसाता धर्म  
नहीं । गृहस्थ नी साता पूछ्यां दशवैकालिक अ० ३ में सोलमो अनाचार कह्यो ।

वली व्यावच कियां करायां अनुमोद्यां अट्ठावीसमों चार कह्यो ।  
पिण धर्म न कह्यो । ते माटे असंयती शरीर नो ज । वि धर्म नहीं । डाहा  
हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति २४ बोल सम्पूर्णा ।

धर्म तो उपदेश देइ समझायां कह्यो छै । ते लिखिये छै ।

तत्रो आयक्खा प० तं० धम्मियाए पडिचोयणाए  
भवइ १ तुसिणीए वासिया २ उट्ठि एगन्त  
मवक्खमेज्जा ३

(ठायाङ्ग ठाया ३ उ० ४)

त० त्रिण. आ० ते राग द्वेषादिक थकी थकी  
आत्मा में रखे ते रक्तक. ध० धर्म नी. प० छोड़णाइ करी नें पर नें उपदेशे जिम

प्रतिकूल उपसर्ग करता नें धारे तेथी ते उपसर्ग करवा रूप अकार्य नू सेवणहार न हुइ अनें साधु पिण उपसर्ग नें प्रभावे कार्य अकार्य करे उपसर्ग करतो वारयो । तो ते थकी साधु पिण अकार्य थी राख्यो अनें उपसर्ग थकी पिण आत्मा राख्यो. अथवा तु० साधु अणबोल्हो रहे निरापेक्षी थकां अनें वारी न सके अणबोल्हो पिण रही न सके तो तिहां थी उठी नें. आपण पे. ए० एकान्त भाग नें विपे म० जाई.

अथ अठे पिण कह्यो । हिंसादिक अ ० देखी ० उपदेश देइ भावणो तथा अणबोल्हो रहे । तथा उठि एकान्त जावणो कह्यो । पिण जवरी सूं छोडावणो न कइयो । तो रजोहरण ( ओघा ) थी मिनकी नें डराय नें ऊंदरां ने वचावे । तथा माका ने हटाय माखी नें वचावे । त्यांने आत्म-रक्षक वि कहिये । अनें जो त्रस काय जवरी सूं छोडावणी तो पंच काय हणता देखी ने क्यूं न छोडावणी नीलण फूलण माछल्यादिक सहित पाणीका नाडा ऊपर तो भैस्यां आवे । सुलिया धान्य रा ढिगला में सुलसुलिया इडादिक घणा छै । ते ऊपर व आवे । जमीकन्दरा ढिगला ऊपर बलद आवे । अलगण पाणी रा माटा ऊपर गाय आवे ऊकड़ री लटां सहित छै तेहनें पक्षी चुगै छै । उंदरा ऊपर मिनकी आवे । माखिया ऊपर माका आवे । हिवे साधु किण नें छुडावे । साधु तो छकाय नो पीहर छै । जे उंदरा ने माख्यां ने तो वचावे अनेरा ने न वंचावे ते काई कारण । ए जवरी सूं वचावणो तो सूत में चाल्यो नहीं । भगवन्त तो उपदेश देइ समभाव्यां, तथा मौन राख्यां, तथा उठि एकान्त गयां, आत्म-रक्षक कह्यो । पिण असंयती रो जीवणो वांछयां आत्म-रक्षक न कह्यो । तो मिनकी ने डरायनें ऊंदरा नें वचावे तेहनें आत्म-रक्षक किम कहिये । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २५ बोल सम्पूर्णा ।

तथा अनेरा नें भय उपजावे ते हिंसा प्र आश्रव द्वारे “प्रश्नव्याकरण” में कही छै । तो मिनकी ने भय किम उपजावणो । चली भय उपजायां प्रायश्चित्त कइयो । ते पांठ लिखिये छै ।

जे भिखू परं विभावेइ विभावंतंवा साइज्जइ ।

( निगोय उ० ११ बो० १७० )

जे० जे कोइ साधु साध्वी अनेरा नें इहलोक मनुष्य नें भय करी परलोक ते तिर्यन्वादिक नें भय करी नें. वि० बीहावे. वि० बीहावता नें. सा० अनुमोदे इहां भय उपजावतां दोष उपजै. विहावतो यको अनेरा नें मूल जीव नें हणै. तिवारे दही काय नी विराचना करे इत्यादिक दोष उपजै. तो पूर्व वत्प्रायश्चित्त ।

अठे पर जीव नें विहाव्यां विहावतां नें अनुमोद्यां चौमासी प्रायश्चित्त कह्यो । तो मितकी नें डराय नें उन्दरा नें पोषणो किहां थी । अने असंयती ना शरीर नी रक्षा किम करणी । डाडा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २६ बोल सम्पूर्ण ।

तथा गृहस्थ नी रक्षा निमित्ते मंत्रादिक क्रियां प्रायश्चित्त कह्यो । ते लिखिये छै ।

भिखू अणउत्थियंवा गारत्थियंवा भुइ कम्मं करेइ करंतंवा साइज्जइ ।

( निगोय उ० १३ बो० १४ )

जे० जे कोरे साधु साध्वी अन्य तीर्थी ने. गा० गृहस्थ नें. भू० रक्षा निमित्ते भूती कर्म क्रियाइ करी मंत्री ने भूती कर्म करे. भूती कर्म ने. सा० साधु अनुमोदे. तो पूर्ववत् प्रायश्चित्त.

अथ अठे गृहस्थ नी रक्षा निमित्त मंत्रादिक क्रियां अनुमोद्यां चौमासी प्रायश्चित्त कह्यो । तो जे ऊंदादिक नी रक्षा साधु किम करे । अने जो इम रक्षा क्रियां धर्म हुवे तो डाकिनी शाकिनी भूतादिक काढ़ना सर्पादिक ना ज़हर उतारना

औषधादिक करी, असंयती नें बचावणा । अनें जो एतला बोल न करणा तो  
यती ना शरीर नी रक्षा पिण न करणी । डाहा हुवे तो ि रि जोइजो ।

## इति २७ बोल सम्पूर्णा ।

बली साधु तो गृहस्थ ना शरीर नी रक्षा किम करे सामायक पोषा में  
पिण गृहस्थ नी रक्षा करणी वर्जो छै । ते पाठ कहे छै ।

तएणं तस्स चुल्लणी पियस्स समणो वासयस्स पुंवं-  
रत्तावरत्त का समयंसि एगे देवे अंतियं पाऊन्भवेता ॥४॥

ेणं देवे एग नीलुप्पल जाव असिं गहाय चुल्लणीपितं  
णो वाययं एवं वयासी. हंभो चुल्लणी पिया ! जहा  
काम देवे जाव ना भंजसी तो ते अहं अज्ज जेठं पु तो  
गिहातो णीणेमी तव आघत्तो घाएमि २ त्ता ततो मंस सोल्ले  
रेमि ३ त्ता आदाण भरियंसि कड़ाइयंसि अद्दहेमि २

वगातं मंसेणय सोणिणय आइचामि जहाणं तुमं अइ  
दुहट्टे वसट्टे अकाले चेव जीवीयाओ ववरो विज्जासि ॥५॥  
तएणं से चुल्लणी पीए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समणे अभीए  
जाव विहरंति ॥६॥ एणं से देवे चु णी पियं अभीयं जाव

नी दोच्चंपि तच्चंपि चुल्लणी पियं णो वासयं एवं  
वयासी हंभो चुल्लणी पिया त्थीयापत्थीया जाव न भंजसि  
चेव भणइ गे जाव विहरंति ॥७॥ तएणं से देवे चुल्लणी  
पियाणं अभीयं जाव पासित्ता आ रुत्ते-चुल्लणी पितस्स

समणोवासगस्सं जे पुत्तं गिहातो णीणेती २ ता । गत्तो  
 घाएती २ तओ ससोल्लए करेति २ ता आदाण भरि-  
 णंसि कडाहयंसि अहेति २ ता चुल्लणी पियस्स गायं मंसे-  
 णय सोणीएणयं अइच्चंति ॥८॥ तएणं से चुल्लणी पिया  
 समणोवासाया तं उज्जलं जाव अहियासंती ॥९॥ तत्तेणं  
 से देव चुल्लणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव पासइ  
 २ दोच्चंपि चुल्लणि पियं समणोवासयं एवं वयासी  
 हंभो चुल्लणी पिया । पत्थीया पत्थीया जाव न भंजसि तो  
 ते हं मज्झिमं पुत्तं साहो गिहातो नीणेमी २ ता तव  
 अगओ घाएमि जहा जे पुत्तं तहेव भणइ तहेव करेइ एवं  
 तच्चं णियासंपि जाव अहियासेति ॥१०॥ तएणं से देवे  
 चुल्लणी पिया । अभीयं जाव पासाइ २ ता चउत्थंपि  
 चु णी पियं एवं वयासी-हंभो चुल्लणि पिया । अपत्थीया  
 पत्थीया जइणं तुम्हं जाव न भंजसि ततो अहं ज जा इमा  
 तव माया भदासत्थवाहीणी देवयं गुरु जणणी दुकर २  
 कारिया तंसि साओ गिहाओ नीणेमि २ ता तव अगओ  
 घाएमि २ ता तओ मंससोल्लए करेमि २ ता आदाणं भ-  
 रियंसि डाहयंसि अहेमि २ ता तव गायं मंसेणय सो-  
 णिएणं अइच्चामि जहाणं तुम्हं अइ दुहइ वसइ अकाले चव  
 जीविया गो ववरो वजसि ॥११॥ तत्तेणं चुल्लणी पिया तेणं  
 देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरंति ॥१२॥ तएणं  
 से देवं चुल्लणिपियं मणोवा अभीयं जाव पाससि

२ चुल्लणी पियं स णो सयं दोच्चंपि तच्चंति एवं  
 वयासी-हंभो चुल्लणी पिया ! तहेव ण विविरो विज्जसि  
 ॥१३॥ तएणं तस्स चुल्लणीपियस्स तेणं देवेणं दोच्चंपि  
 तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे इमे या ख्वे अज्झत्थिए जाव समु-  
 ष्यज्जित्ता अहो णं इ पुरिसे अणारिये अणारिय बुद्धि  
 अणायरियाइं पावाइं कम्माइं सभायरंति जेणं जेहूं पुत्तं  
 साओ गिहाओ णीणेति मम अग्गओ घाएति २ ता जहा  
 यं तहा चिन्तीयं जाव आइचेति । जेणं मम मज्झिमं  
 पुत्तं साओ गिहाओ णीणेति जाव आइचंति, जेणं मम  
 णीए पुत्तं साओ गिहाओ तहेव जाव आइचेति, जाति-  
 यणं, इमा । या भदा सत्थवाही देवगुरु जणणी दुक्क  
 २ कारिया तं पियणं इच्छंति सयाओ गिहाओ णीणे मम  
 अग्गओ इत्ताए, 'सेय' एयं पुरिसं गिहितए  
 त्तिकट्ट उट्ठाइये सेविय आगसि उप्पइए तेणेय खंभे आसा-  
 दितं महया २ सदेसां कोलाहलेणं कए ॥१४॥ तत्तेणं सा  
 भदा सत्थवाहिणी ते कोलाहल सद सो । निसम्म जेणेव  
 चुल्लणीपियं मणोवासयं एवं वयासी-किणं पु ।  
 तुम्हं महया २ सदेसां कोलाहले कए । ॥१५॥ तएणं से  
 चुल्लणीपिया अम्मयं भदसत्थ वाहीणीयं एवं वयासी एवं  
 खलु मे । ण याणामि केइ पुरिसे सुरुत्ते । एगंमह  
 निलूप्पल जाव असिं गहाय एवं वयासी हंभो चुल्लणी  
 पिया ! अपत्थीया पत्थीया जइणं तुम्हं जाव ववरो विज्जसि  
 सत्तेणं अहं तेणं पुरिसे एवं वुत्ते स णो अभीए । व विह-

रामी । तएणं से पुरिसे रीयं जाव विहरमाणं  
 पासंति दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी हं भो चुल्लणीपिया !  
 तहेव जाव आइचंति तत्तेणं अहं तं उज्जलं जाव अहिया-  
 सेमि एहं तहेव जाव एणीयसं । व हियासेमि तए से  
 पुरिसे म अभिते जाव पासति २ चउत्थंपि एवं  
 वयासी हं भो चुल्लणी पिया ! अपत्थीय पत्थीया जाव न  
 सि तो ते जा जा इमा म भदा गुरु देवे जाव  
 ववरो विजासी । तत्तेणं अहं तेणं रिसेणं एवं वुत्ते एणे  
 रीए जाव विहरामी तएणं से पुरिसे दोच्चंपि तच्चंपि  
 म एवं वयासी भो चुल्लणी पिया ० इणं तुम्हं । व  
 ववरो विज्जसि । तएणं तेणं देवे दोच्चंपि गोपि  
 एवं माणेस्स मेया रुवे अज्झत्थिए जाव समुप्प-  
 जिता होणं इमे पुरिसे णारिये ज अणायरिय कम्माइं  
 मायणी जेणं जे पुत्तं सातो गिहातो तहेव णि-  
 आइचति तुज्जेवि इच्छति तो गिहातो णी-  
 णो म गा गो घाएति तं सेयं एयं पुरि  
 गिरणत्तए तिकडु उट्ठाइये सेविय गासे उप्पत्तिए मए विय  
 भे । साईए महया २ सइेणं गेलाहले ए ॥ १६ ॥  
 तएणं भदा सत्थ वाहीणी चु णी पियं एवं वयासी नो  
 लु केइ पुरिसे तव जाव एणीयसं पुत्तं स गो गिहाओ  
 नीणे । तव गो एत्ति, ए णं केइ पुरिसे  
 गं रेत्ति एसणं तु वि दरिसणे दि । तेणं तुमं  
 इदाणि भग्गवए, भग्ग नियमै, भग्गपोसहोववासे, विहरसि



तेणं तुमं पुत्ता ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पायच्छित्तं  
 पडिवज्जाहिं ॥१७॥ तएणं चुल्लणी पिया समणोवासए  
 अम्मगाए भदाए सत्थवाहीणिणए तहत्ति एयमट्ठ विणएणं  
 पडि सुणेइ २ त्ता तस्स ठाणस्से आलोएइ जाव पडिवज्जइ  
 ॥ १८ ॥

( उपासक दशा अ० ३ )

त० तिवारे. त० ते. चु० चुल्लणी पिया. स० आवक ने. पु० मध्वरात्रि ना काल. स०  
 ने विदे. ए० एक देवता. अ० समीप. पा० प्रकट हुये ॥१७॥ त० तिवारे पड़े. से० ते देवता. ए० एक  
 म० मोटो. नी० नीलोत्पल कमल एहको नीलो. जा० यावत्. अ० खट्ट (सरवार) ग० यही ने. चु०  
 चुल्लणी पिया. स० आवक प्रते. ए० एम. व० बोल्यो. हं० अरे अहो चूलणी पिता ! ज० जिम कास-  
 देवनी परे. ज० यावत् जो तू मृत नहीं मांजसो. तो त० तिवारे पड़े ते ताहरा. अ० हं. अ०  
 ने० बड़ा. पु० पुत्र ने. स० तांहरा गि० घर थकी. गी० काठ सूं काढ़ी ने. त० तांहरा. आ०  
 घा० मारिल. ए० एम० व० बोल्यो. त० तिवारे पड़े. सं० मांसना. सो० शूला तीन करसूं. त०  
 आधण. भ० भर सूं तेल सूं. क० कड़ाही ने यातो अ० तेल सूं तलसूं. त० तांहरा गात्र. म०  
 मासे करी ने. सो० लोहिये करी ने. अ० छांटसूं. ज० जे भण्यो. तु० तू. आ० रौद्र  
 ने. व० वश पहुँतो थको. अ० अवसर. बिना अकाले. जीवितव्य थकी व० रहित होसी.  
 ॥१८॥ त० तिवारे पड़े. से० ते चूलणी पिता. स० आवक. ते० तेणे देवता इ० ए० इस वु० कहे  
 थके. अ० बीहड़ों नहीं जा० यावत्. वि० विचरे. त० तिवारे पड़े. से० तें. देवता चु० चुल्लणी-  
 पिता. स० आवक ने निर्भय थको. जा० यावत्. वि० विचरतां थको देख्यो. दो० बीजीवार. त०  
 त्रिणवार. चु० चुल्लणी पिता. स० आवक प्रते. ए० इस बोल्यो. हं० अरे अहो चूलणी पिता.  
 त० तिमज कह्यो. सो० ते पिण. जा० यावत् नि० निर्भय थको विचरे छै ॥ १८ ॥ त० तिवारे  
 पड़े. से० ते देवता. स० आवक ने. अ० निर्भय थको. जा० यावत् देखी ने. अ० अति  
 रिसाण्यो. चु० चुल्लणी पिता. स० आवक ना जे० बड़ा पुत्र ने. स० पोता ना. गि० घर थकी.  
 यि० आणी ने तांहरा आगे. घा० मारी मारी ने. त० तेहना मांसना. स० शूला. क० करी  
 ने. आ० आधण तेल सूं भ० भरी ने. क० कड़ाही मांही. अ० तल्यो. चु० चुल्लणी पिया.  
 स० आवक ना. ग० शरीर ने. म० मांसे करी ने. सो० लोहिये करी ने. आ० साँच्यो. त०  
 तिवारे पड़े. से० ते चु० चुल्लणी पिता. स० आवक. ते० ते देवता. उ० उजली. जा० यावत्.  
 अ० अहियासी ( जमी ) त० तिवारे पड़े. से० ते देवता. चु० चुल्लणी पिता. स० प्रते.  
 अ० बीहड़ो थको. जा० यावत्. पा० देखी ने. दो० दजी वार. त० तीजी वार. चु० व०

लक्ष्मी पिता. स० प्रते. ए० इम. व० बोल्यो. ह० अरे अहो. चु० चूलणी पिता. !  
 अ० कोई अर्थ नहीं तेह बस्तु ना प्रार्थनहार मरणा ना बांछणहार. जा० यावत्. न० नहीं भांजसो  
 तो. त० तिवारे पछे ते तांहरों. अ० हूँ. अ० आज. म० विचलो. पु० पुत्र नें. सा० पोता ना घर  
 थकी. यी० आणी आणीनें. त० तांहे आगलि हणस्यूं. ज० जिमज बडो बेदो ते. त० तिमज  
 कह्यो देवता. त० तिमज. क० कीधो. ए० इम. क० छोटा बेदो नें पिण हणियो. जा० यावत्  
 बेदना अहियासी. त० तिवारेपछे. से० ते. देवता. चूलणी पिता नें. अ० बीहतो  
 थको. जा० यावत्. पा० देखी नें. व० चौथी वार. चु० चूलणी पिता प्रते. ए० इम. व०  
 बोल्यो. ह० अरे अहो चूलणी पिता. ! अ० अना प्रार्थना प्रार्थणहार. ज० जो तू. जा० यावत्.  
 न० नहीं भांजे तो. त० तिवारे पछे. अ० हूँ. अ० जा० जे. इ० ए प्रत्यक्ष म० भद्रासार्थ-  
 बाही. दे० देव समान, गु० गुरु. ज० माता. दु० दुष्कर २ करणी ते दोहिली.  
 त० तेहनें. सा० पोताना घर थकी. नि० काढ़ी नें. त० तांहे. आ० . घा० . त० .  
 त्रिण. म० मांस ना. सो० शूना. क० करी नें. आ० आचण तेल सू. म० कड़ाही माहीं घाती  
 नें. अ० तेल सू तली नें ताहरो. गा० गात्र. म० मासे करी नें. सो० लोहिये करी नें. आ०  
 छांट स्यूं ज० जे भणी. त० तू. अ० . रुद्र ध्यान में व० वश पहुँतो थको अ० बिना.  
 वे० निश्चय करी नें. जी० जीवितव्य थकी. व० रहित हुस्ये. त० तिवारे पछे. से० ते. चु०  
 चूलणी पिता. ते० तेणे देवता. ए० इम. हु० कहे थके. जा० यावत् अवीहतो थको. जा० यावत्  
 बि० विचरे छै. त० तिवारे पछे. से० ते. दे० देवता. चु० चूलणी पिता नें. अ० निर्भय थको.  
 जा० . वि० विचरतो थको. पा० देख्यो. पा० देखी नें. चु० चूलणी पिता. स०  
 प्रते. दो० दूजी वार तीजी वार. ए० इम बोल्यो. ह० अरे अहो चूलणी पिता. त० तिमज  
 जा० यावत्. जीवितव्य थकी रहित होइस. त० तिवारे पछे. त० ते. चु० चूलणी पिता. त० ते.  
 दे० देवता. दो० दूजीवार. ए० इम. हु० कहे थके. इ० एहवा उपना. अ० आश्चर्यकारी.  
 ह० ए पुरुष. अ० अनार्य छै. अ० अनार्य बुद्धिवालो छै. कर्म. पा० . नें. स० समाचरे.  
 छै. जे० जे भणी. म० माहरो. जे० बडो पुत्र. स० पोता ना. गि० घर थकी. नि० आणनें. म०  
 माहरे आगले घा० हण्यो. जि० जिम. दे० देवता कीधा. त० तिमज. चि० चिन्तव्यो. जा० यावत्.  
 आ० सीच्यो. गा० गात्र. जे० जे भणी. म० माहरो. म० विचला पुत्र. स० पोताना घर थकी.  
 जा० यावत् सीच्यो. जे० जे भणी. म० माहरे. क० लघुपुत्र नें. त० तिमज. जा० यावत्. आ०  
 सीच्यो. जी० जे भणी. इ० ए प्रत्यक्ष. म० माहरी. मा० . भद्रा नामे. स० सार्थबाही.  
 देवगुरु. जे० माता ते. दु० दुष्कर दुष्कारिणी ते प . दोहिली छै. तेहनें पिण. इ० बांछे  
 छै. स० पोताना. गि० घर थकी. यी० आणी नें. म० माहरे. आ० आगली. घा० घात करीस.  
 त० ते भणी. से० भलो. ख० निश्चय करी. म० मुक्त ने एक पुरुष नें. प० पकड़बो इम चिन्तवी जे  
 घा० घायो . से० ते सले देवता. आ० . उ० उड्यो नासी गयो. त० तिवारे पछे. ख०  
 घांभो. आ० मझो माली नें म० मोटे २. स० शब्दे करीनें. को० कोलाहल कीधो. त०  
 तिवारे पछे. सा० ते. अ० भद्रा सार्थबाही. त० ते कोलाहल. स० शब्द. सो० सांभली नें. नि०

हियामें विचारी नें जे जिहां चुलणी पिया ते तिहां उ० आत्री आवी नें चू० चुलणी पिता स० आवक नें ए० इम० व० बोली कि० किम पु० हे पुत्र ! तु० तुम्हें मोटे २ स० शब्द करी नें को० कोलाहल शब्द कीधो त० तिवारे पछे से० ते चुलणी पिया अ० माता म० मद्रा सार्थवाही प्रते इम व० बोल्यो ए० इम ख० निश्चय करी नें अ० हे माता ! हूं न जायू के० कोई पुरुष आ० कोपायमान थको ए० एक म० मोटो नी० नीलोत्पल कमल एहवो अ० खड्ग ते तरवार ते ग्रही नें म० मुक्त नें ए० इम व० बोल्यो हं० अरे अहो चुलणी पिया ! अ० प्रार्थना प० प्रार्थणहार मरण वांछणहार ज० यावत् व० जीव काया धी रहित थाइस त० तिवारे पछे अ० हूं से० तेणे दे० देवता ए० इम बु० कहे थके अ० निर्भय थको जा० यावत् विचरवा लागो त० तिवारे पछे ते देवत् मुक्त नें अ० निभय रहित जा० यावत् च० विचारतो देखो देखीने म० मुक्त नें दो० दूजी वार त० तीजी वार ए० इम व० बोल्यो हं० अरे अहो चु० चुलणी पिता ! त० तिमज जा० यावत् गा० गात्र शरीर नें अ० सींच्यो त० तिवारे पछे अ० हूं अ० अत्यन्त उज्ज्वली आकरी जा० यावत् अ० खमी वेदना ए० इम त० तिमज जा० यावत् क० लघु वेदो यावत् खमी तं० ते वेदना अनंत उजली त० तिवारे पछे से० ते देवता म० मुक्त नें च० चौथी वार ए० इम व० बोल्यो हं० अरे अहो चू० चुलणी पिता ! अ० प्रार्थण रा प्रार्थणहार मरण वांछणहार जा० यावत् न० नहीं भांजे तो त० तिवारे पछे अ० हूं अ० आज जा० जन्म नी देणहारी त० तांही माता गु० गुल्या समान तेहने मद्रा सार्थवाही नें जा० यावत् जी० जीवत थकी बि० रहित करस्युं त० तिवारे पछे अ० हूं दे० देवता हं० ए० इम बु० वचन कहे थके अ० निर्भय थको जा० यावत् बि० विचार वा लागो त० तिवारे पछे से० ते दे० देवता दु० दूजी वार त० तीजी वार ए० इम बु० बोल्यो हं० अरे अहो चुलणी पिता ! अ० आज व० जीवित्तय थकी रहित थाइस तिवारे पछे से० देवता दूजी वार तीजी वार ए० इम बु० कहे थके इ० एतावत रूप अ० एहवा अच्यवसाय मनका उपना अ० आश्चर्यकारी इ० ए० पु० पुरुष अ० अनार्य जा० यावत् पा० पापकर्म स० समाचरे छै जे जे भणी म० माहरो जे ज्येष्ठ पुत्र सा० पोताना घर थकी त० तिमज क० लघु पुत्र नें जाव० ने यावत् आ० सींच्यो तु० तुजे पिण्य इ० वांच्छै छै सा० पोताना घर थकी शी० आशी आणी नें म० माहिर आ० आगले घा० हणस्यै तं० ते भणी से० श्रेय कल्याण नों ख० निश्चय करी नें म० मुक्त ने ए० ए० पुरुष गि० भालवो ति० इम विचारी नें उ० उठी नें हूं धायो से० ते देवता आ० आकाश नें विपे उ० उड़ी गयो म० सहारे हाथ ख० खो आयो पकड़ी नें म० मोटे २ शब्द करी नें को० कोलाहल शब्द कीधो त० तिवारे पछे सा० मद्रा सार्थवाही चु० चुलणी पियानें ए० इम व० बोली नो० नहीं ख० निश्चय करी नें क० कोई एक पुरुष त० ताहरो बडो वेदो जा० यावत् लघु वेदो सा० पोताना घर थकी शो० आख्यो आणी ने त० तांहे आगल घा० मारया ए० ए० कोई पुरुष त० मुक्त नें उपसर्ग करी नें ए० एहवे रूपे तु० तुम नें दर्शन करी नें दिख्याड्यो चलाय गयो त० तेणे कारये तु० तुम ना द्विवडां भांग्यो अत भांग्यो नियम भांग्यो पोपो पोपो मतादिक भांग्यो थको बि० नूं

विचरे छै. तं ते माटे हे पुत्र ! ए प्रत्यक्ष . आ० आलोवो, जा० यावत्, पा० प्राय-  
श्चित्त अंगीकार करो. तं तिवारे पछे, से० ते० चू० चूलणी पिता. स० . अ० माता,  
भद्रा नामे सार्थ वाही नौ वचन. तं संय कोषो. ए० पूर्वोक्त अर्थ सांचो, वि० विनय सहित,  
ए० सांभल्यो सामली नें. तं ते. डा० नें. आ० आलोयो, जा० यावत्. ए० प्राय-  
श्चित्त अंगीकार कियो ।

अथ पिण कह्यो—चुलंगी पिया आवक रा मुहड़ा आगे देवता तीन  
पुत्रां ना शूझ क्रिया पिण त्याने वचाया नहीं. माता ने वचावा उठयो ते पोया,  
नियम. व्रत. भांग्यो कह्यो । तो उंदरादिक ने साधु बि वे । डाहा हुवे तो  
विचारि जोइजो ।

## इति २८ बोल सम्पूर्णा ।

साधु ने नावा में पाणी अर्चतो देखी ने जो नहीं । ते  
लि छै ।

से भिक्खू वा ( २ ) णावाए उत्तिंगेण उदय ।  
वमाणां पेहाए उवरुवरिणां कज्जलावे णं पेहाए णो परं  
उव कमित्तु एवं वूया आउंसतो गाहावइ एयं ते णावाए,  
उदयं उत्तिंगेणं आसवति उवरु वरिंवा णावाकज्जलावेति  
एतप्पगारं म वा वायं वा णो पुरओकहुं विहरेजा अप्पुस्सुए  
बहिलेसे एगंति गएणं अप्पाणं विपोसेज हीए. ।  
गे जयामेव णावा संतारिमे उदए आहारियं रियेजा.

( आचाराङ्ग श्रु० २ अ० ३ उ० १ )

ते० साधु, साध्वी, आ० नावाने विपे, उ० छिद्र करी, उ० पाणी, आ० आर्चवतो  
आवतो. पे० देखी ने तथा उ० उपरे घणो पाणी सू नावा भराती, पे० देखी नें. जो० नहीं ए०  
गृहस्थ नें. तेहने समीपे आवी. ए० एहवां, उ० कहे, आ० अहो आयुषवन्त गृहस्थ ! ए० ए.

ते ताहरी. शा० नावाने विपे. उ० उदकः उ० छिद्रे करी. आ० आवे छै. उ० उपरे २ बल्लो २ आवते. शा० नावा. क० भराई छै. ए० ए तथा प्रकार ए आव सहितः म० मन तथा वा० वचन एहवा. यो० नहीं. पु० आगल करी. वि० विहरे नहीं. एतावता मन माहि एहवो भाव न चिन्तवै. जो ए-गृहस्थ ने पाणी भरातो नावां कहुँ अथवा वचने करी कहें नहीं जो ए नावा ताहरी पाणी हँ भरिये छै. एहवो न कहे. किन्तु. अ० अविमनस्क एतले स्युं भाव. घरीर उपकरण ने विवे भमता अण करतो. तथा अ० संयम थकी जेह नी लेखा बाहिर नथी निकलती, एतावता संयम में बरौ, एकान्त गत रागद्वेष रहित. आ० आत्मा करवो इयं परे. समाधि सहित. त० तिवारे. साधु. शा० नावा ने विपे रछो थकी शुभ अनुष्ठान ने विपे प्रवर्त्तौ ।

अथ अठे कह्यो—जे पाणी नावा में आवे घणां मनुष्य नावां में डूबता देखै तो पिण साधु ने मन वचन करी पिण बतावणो नहीं । जे असंयती रो जीवणो बांछ्यां धर्म हुवे तो नावा में पाणी आवतो देखी साधु क्यों न बतावे । कैतला एक कहे—जे लाय लाग्या ते घर रा किन्नाइ उगाडणा तथा गांठां हेठे बा आवे तो साधु ने उठाय लेणो, इम कहे । तेहनो उत्तर—जो लाय लाग्या बाहिर काहणा तो नावा में पाणी आवे ते क्यूं न बतावणो । इहां तो श्री धीतराग देव चौड़े वर्यो छै । जे पाणी में डूबतो देखी न बचावणो । तो अनि थकी किम बचावणो । इम असंयती रो जीवणो बांछ्यां धर्म हुवे, तो नमी ऋषि भगरी बलती देखी ने साहमो क्यूं न जोयो । तथा समुद्र पाली चोर ने मारतो देखी क्यूं न छोड़ायो । तथा १०० श्रावकां रो पेट दूखे साधु हाथ फेरे तो सौ १०० बचे । तो हाथ क्यूं न फेरे, तथा लटां गजायां कांतरादिक ढांढा रा पंग हेठे मरता देखी साधु क्यूं न बचावे । जो मिनकी ने नशाय उंदरां ने बचावे तो सौ १०० श्रावकां ने तथा लटां गजायां आदि ने क्यूं न बचावे, तथा दशवैकालिक अ० ७ गा० ५१ कह्यो. ए जीव नों उपद्रव मिटे इसी बांछा पिण न करवी. तो उंदरादिक नों उपद्रव किम मेटणो । तथा दशवैकालिक अ० ७ गा० ५० कह्यो देवता मनुष्य तिर्यञ्च माहो माही लड़े तो हार जीत बांछणी नथी । तो मिनकी नी हार उंदरानी जीत किम बांछणी । चली किम हार जीत तेहनी हाथां सू करणी । । कैह कहे—पक्षी माला ( घोंसला ) थीं साधु रे आय पड्यो तो तेहने बचावण ने पाछो माला में साधु ने मेलणो, इम कहे तेहनो उत्तर—जो पक्षी ने वणो तो तपस्वी श्रावक साधु रे स्थानक कायोत्सर्ग ( ध्यान ) में तांगी ( भुगी ) थी हेठो पड्यो गावड़ी ( गर्दन ) भांगती देखी साधु ते श्रावक ने बैठो क्यों

न करे । तथा सौ १०० श्रावकां रे पेट ऊपर हाथ फेरी क्यूं न वचावे । पक्षी उदरादिक असंयती ने वणा तो श्रावकां नें क्यूं न वचावणा । जो असंयम जीवितव्य बांछ्यां धर्म हुवे तो साधु ने मोहीज उपाय सीखणो । डाकण साकण भूतादिक काढणा सर्पादिक ना जहर उतारणा । मंदादिक सीखणा इत्यादिक अनेक सावध कार्य करणा । त्यांरे लेखे पिण ए धर्म नहीं ते भणी साधु ए सर्व कार्य न करे । निशीथ उ० १३ गृहस्थ नी रक्षा निमित्ते भूती कर्म क्रियां प्रायश्चित्त कह्यो छै । ते भणी यती रो जीवणो बांछ्यां धर्म नहीं । २ सूत्र में असंयम जीवितव्य बांछणो बज्यो छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति २६ बोल सम्पूर्णा ।

केतला एक कहे छै, अनुकम्पा सावध-निरवध किहां कही छै । तथा अनुकम्पा कियां प्रायश्चित्त किहां ते छै । ते ऊपर सूत्र न्याय कहे छै ।

जे भिक्षू ० कोलुण पडियाए अणायरियं तस पाण जायं तण फासएणवा मुंजपासएणवा कट्ठपासएणवा चम्मपासएणवा वेत्तपासएणवा रज्जुपासएणवा सुत्तपासएणवा वंधइ वंधतंवा साइज्जइ ॥ १ ॥

जे भिक्षू वंधेह्यंवा मुयइ मुयंतंवा साइज्जइ ॥ २ ॥

( निशीथ उ० १२ बो० १-२ )

ज० जे कोई भि० साधु साध्वी को० अनुकम्पा प० निमित्ते अ० अनेरोई त० ब्रह्म प्राणि जाति वे इन्द्रियादिक नें त० डाभादिक नी डोरी करो क० लकड़ादिक नी डोरी बरी

छै कई एउ अज्ञानो पुइर अर्थ के भर्मको न समक्ते हुए इस “कोलुण” शब्द का अर्थ “दीन भाव” करते हैं । उन दिवान्ध पुरुषों के अभिज्ञान के लिये “कोलुण” शब्दका “अनुकम्पा” अर्थ बतलानेवाली ओ “जिनदास” गणिकृत “लघु चूर्णी” लिखी जाती है । “भिक्षु पुत्र भण्ड कोलुणति-कालाय अनुकम्पां प्रतिज्ञया इत्यर्थः । ब्रह्मन्तीति ब्रह्माः ते च तेजोवायु द्वीन्द्रियादयश्च प्राणिनः । एतत्तु वेओ वाऊई याहिकारो जाइ गइयओ विसिइइ गोबाई” इति । “संशोधक”

सु० मुंज नी डोरी करी. क० लकड़ादिक नी डोरी करी. च० चमडोरी डोरी करी नें, वे० वेतनी झालनी डोरी करी. १० रासडी नें पासे करी. सू० सूत नें पासे करी. एतले पासे करी नें. वं बांधे. व० बांधता नें. सा० अनुमोदे. जे० जे कोई. भि० साधु साध्वी. व० एतले पासे करी बांध्या अस जीव नें. सु० सूके. सु० सूकता नें अनुमोदे । तो चौमासी प्रायश्चित्त

अथ इहाँ कह्यो “कोलुण पडियाए” कहितां अनुकम्पा निमित्त तस जीव नें बांधे बांधता नें अनुमोदे भलो जाणे तो चौमासी दंड कह्यो । अने बांध्या जीव ने छोड़े छोड़तां ने अनुमोदे भलो जाणे तो पिण चौमासी दंड कह्यो । बांधे छोड़े तिण नें सरीखो प्रायश्चित्त कह्यो छै । अने बांध्या जीव छोड़ता नें भलो जाण्यां ई चौमासी प्रायश्चित्त आवे, तो जे पुण्य कहे—तिण भलो जाण्यो कै न जाण्यो । ए तो साम्प्रत आह्वा बाहिर लो सावय अनुकम्पा छै । तिण सूं प्रायश्चित्त कह्यो छै । ए साधु अनुकम्पा करे तो दंड कह्यो । कोई गृहस्थ करतो हुवे, तिण नें साधु अनुमोदे भलो जाणे तो पिण दंड आवे छै । अने निरवय अनुकम्पा रो तो दंड आवे नहीं । जे गृहस्थ सामायक पोषा करे. हिंसा झूठ चोरी परिग्रह रा त्याग करे, ए निरवय कार्य छै । पहनी साधु अनुमोदना करे छै । आह्वा पिण देवे छै । अने जीवां नें बांधे छोड़े ते अनुकम्पा सावय छै । तिण सूं साधु ने अनुमोदां दंड आवे छै । जेतला २ निरवय कार्य, तिण री अनुमोदना कियां धर्म छै परं दंड नहीं । अने जेतला २ सावय कार्य छै तेहनी अनुमोदना कियां दंड छै पिण धर्म नहीं । ते माटे असंयती रो जीवणो बांधे ते सावय अनुकम्पा छै. तिण में धर्म नहीं । इहां केतला एक अभिग्रहिक मिथ्यात्व ना धणी अयुक्ति लगावी इम कहे । ए तो तस जीव नें साधु बांधे तथा छोड़े तो दंड । अने साधु बांधते छोड़तो हुवे तिण नें अनुमोदां दंड आवे । पिण कोई गृहस्थ बंधन छोड़तो हुवे तिण ने अनुमोदां दंड नहीं. तिण में तो धर्म छै इम कहे । तेहनो उत्तर—ए तो अस जीव बांध्यां तथा छोड्यां साधु नें तो पहिलां इज दंड कह्यो । ते माटे साधु तो प्रोते बांधे तथा छोड़े इज नहीं । अने जे जीव नें बांधे छोड़े ते साधु नहीं । वीतराग नी आह्वा लोपी बंधन छोड़े तिण नें साधु न कहिणो । ते असाधु छै, गृहस्थ तुल्य छे । अने गृहस्थ बांध्या जीव नें छोड़े तेहने अनुमोदां दंड छै । जे कहे साधु बंधन छोड़े तिण नें अनुमोदणो नहीं, अने गृहस्थ छोड़े तो अनुमोदणो, इम कहे तिण रे लेखे घणा वोल इगहिज कहिणा पडसी तिण बारमें १२ उद्देश्ये इज इम कह्यो छै । ते पाठ लिखिये छै ।

जे भिक्खू भिक्खवाणं २ पच्चक्खवाणं भंजइ भंजंतंवा  
इज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू परित्तकायं संजुत्तं आहारं  
हारेइ हारंतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥

( निशीथ १२ उ० ३-४ बोल )

जे० जे कोई साधु साध्वी. अ० वारंवार. प० नौकारसीयादिक पचखाण ने. भ० भंजे  
अ० भांजता ने. सा० अनुमोदे ३; जे० जे कोई साधु साध्वी. प० प्रत्येक वनस्पतिकाय. सं०  
संयुक्त. अ० अशनादिक ४ आहार. आ० आहारे. आ० आहारताने. सा० अनुमोदे। तो पूर्व-  
वत् प्रायश्चित्त.

अथ अटे कह्यो। जे साधु पचखाण भांगे तो दंड अने पचखाण भांगता  
ने अनुमोदे तो दंड कह्यो। तो तिणरे लेखे साधु पचखाण भांगतो हुवे तिण ने अनु-  
मोदनो नहीं। अने गृहस्थ पचखाण भांगतो हुवे तिण ने अनुमोद्यां दंड नहीं  
कहिणो। वली कह्यो प्रत्येक वनस्पति संयुक्त आहार भोगवे भोगवतां ने अनु-  
मोदे तो दंड-तो तिणरे लेखे प्रत्येक वनस्पति संयुक्त आहार साधु करतो हुवे तिण  
ने अनुमोद्यां दंड-अने गृहस्थ ते हीज आहार करे तिण ने अनुमोद्यां दंड नहीं। जो  
गृहस्थ जीव बांध्या जीव छोड़े तिण ने अनुमोद्यां धर्म कहे, तो तिणरे लेखे

भांगे ते पिण अनुमोद्यां धर्म कहिणो। वली गृहस्थ प्रत्येक वनस्पति  
संयुक्त आहार करे ते पिण अनुमोद्यां धर्म कहिणो। इण लेखे “निशीथ” में पहवा  
अनेक । छै। ते मूलो भोगवता ने अनुमोद्यां दंड. कुतूहल ने  
अनुमोद्यां दंड. इत्यादिक घणा सावध कार्य अनुमोद्यां दंड कह्यो। तो तिण रे लेखे  
ए करे तो अनुमोदनो नहीं। अने गृहस्थ मूलो कुतू-  
हल करे गृहस्थ करे ते अनुमोद्यां तिण रे लेखे धर्म कहिणो। अने  
जो गृ भांगे ते अनुमोद्यां धर्म नहीं। वनस्पति संयुक्त आहार करे  
ते आहार अनुमोद्यां धर्म नहीं तो गृहस्थ अनुकम्पा निमित्ते जीव ने छोड़े  
तिण ने पिण अनुमोद्यां धर्म नहीं कहिणो। ए तो सब बोल सरीखा छै। जो  
बोल में धर्म थापे तो बोला में धर्म थापणो पड़े। ए तो वीतराग नो  
मार्ग छै। कपटाई रहित छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३० गोल सम्पूर्णा ।



तथा चली केतला एक “कोलुण वडियाए” रो विपरीत करे छै । ते कहे “कोलुण वडिया” कहितां कुतूहल निमित्ते तस जीव नें बांधे छोड़े तो प्रायश्चित्त कह्यो । इम ऊँधो अर्थ करे ते शब्दार्थ ना अजाण छै । ए “कोलुण” शब्द नो अर्थ तो करुणा हुवे । पिण कुतूहल तो हुवे नहीं “कोउहल वडियाए” कह्यो हुवे तो “कुतूहल” हुवे । ते प्रते लिखिये छै ।

जे भिक्खू कोउहल वडियाए अणायरं तसपाण जातिं तण पासएणवा जाव सुत्त पासएणवा वंधति वंधंतवा साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू कोउहल वडियाए वंधेल्लयंवा मुयति मुयंतंवा साइज्जइ ॥ २ ॥

( नियीय उ० १७ बो० १-२ )

जे० जे कोई साधु साध्वी. को० कुतूहल नें निमित्तो. अनेरो कोईक दस प्राणी नी जाति नें. त० वृण नें. पा० पासे करी ने. जा० ज्यां लगे सूत्र ने पासे करी ने. वं० बांधे. वं० बांधता नें अनुमोदे. तो प्रायश्चित्त आवे ॥१॥ जे छे कोई भ० साधु साध्वी. को० कुतूहल निमित्तो बांध्या नें मूके छोड़े. मूकता नें अनुमोदे । तो पूर्ववत् प्रायश्चित्त.

अठे कह्यो—कुतूहल निमित्त जीव ने बांधे बांधता नें अनुमोदे तो दंड—छोड़े छोड़ता नें अनुमोदे तो दंड कह्यो । इहां “कोउहल” कहितां कुतूहल कह्यो. पिण “कोलुण” नहीं । अने १२ में उद्देश्ये “कोलुण” ते करुणा अनुकम्पा कही । पिण कोउहल पाठ नहीं । ए विहं पाठां में घणो फेर छै, ते विचारि जोईजो । जिम सत्तरह १७ में उद्देश्ये कुतूहल निमित्त तस जीवां ने बांधे छोड़े बांधतां छोड़तां नें अनुमोधां प्रायश्चित्त कह्यो । तिम वारमें १२ उद्देश्ये णा अनुकम्पा निमित्त बांध्यां छोड्यां दंड— बांधता छोड़ता नें अनुमोधां दंड कह्यो । जे कहे अनुकम्पा निमित्त साधु जीव नें बांधे छोड़े नहीं । साधु बांधतो तथा छोड़तो हुवे तेहने अनुमोदनो नहीं । पिण गृहस्थ अनुकम्पा निमित्त तस जीव बांधे छोड़े तेहने अनुमोधां श्चित्त नहीं ते गृहस्थ नें अनुमोधां धर्म छै । ते माटे गृहस्थ नें अनुमोदनो. इम कहे तो सतरमे १७ उद्देश्ये ॥ कुतूहल निमित्त साधु तस जीव नें बांधे छोड़े ।

साधु बांधतो छोड़तो हुवे तेहनें अनुमोदनों नहीं । पिण गृहस्थ कुतूहल निमित्त जीव नें बांधे छोड़े तेहनें अनुमोदनों तिण रे लेखे धर्म कहिणो । अनें कुतूहल निमित्त गृहस्थ छोड़े ते अनुमोदनों धर्म नहीं तो अनुकम्पा निमित्त गृहस्थ छोड़े ते पिण अनुमोदनों धर्म नहीं । ए तो दोनूं सरीखा छै । तिहां अनुकम्पा निमित्त अनें कुतूहल निमित्त एतलो फेर छै । और सरीखो छै । कुतूहल निमित्त जीव बांध्यां छोड्यां पिण चौमासी श्रित कह्यो । अनें अनुकम्पा निमित्त जीव बांध्यां छोड्यां पिण चौमासी दंड कह्यो छै । ए विहूं बोल में छै । ते माटे विहूं कार्य सावय छै । तिण में धर्म नहीं । डाहा हुवे तो त्रिचारि जोइजो ।

## इति ३१ बोल सम्पूर्णा ।

केतला एक कहे—“कोलुण पडियाए” कहितां आजीविका निमित्त अस जीव नें बांध्यां छोड्यां प्रायश्चित कह्यो । पिण “कोलुण” नामं अनुकम्पा रो नहीं, इम कहे ते पिण विरुद्ध छै । तेहनों उत्तर सूत्रे करि कहे छै ।

आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावति लेण सद्धिं संव-  
समाणस्स अलसए वा विसूइयावां छुडीवाणं उज्जाहिज्जा  
अणत्तरे वा से दुवखे रोयान्तके समुप्पज्जेज्जा असंजए कलुण  
वडियाए तं भिक्खुस्स गातं तेलेण वा घण्ण णवणीतेण  
वसाएवा अभंगेज्जा मक्खिज्जा सिण्णणेणवा । कक्केण  
वा लोदेणवा णेणवा चुन्नेणवा पउमेणवा । धंसेज्जा  
पधंसेज्जा उव्वेलेज्जा उवटे । सीयोदका वियडेणवा  
उसीणोदक वियडेणवा उच्छोलेज्जापच्छो लेज्जा पहा-  
एज्जा ।

(आचार्यां शु० २ अ० २ उ० १)

आ० साधु ने. ए० आदान कर्म बंधवा नो कारण ते साधु ने. गा० एहवा गृहस्थ ना. कु० कुटुम्बे करी सहित. सं० वसता. भोजनादि क्रिया निःशंक थाह संकतो भोजन करे तथा साधु नीत बड़ो नीत नो आवाधा सहित रहे. तिण कारणे. अ० (अलसक) हस्त पग नों स्तम्भ उपजे डोल सोजो हुहं. वि० (विषूचिका) उपजे. छ० छर्दि (उबक) इत्यादिक उ० व्याधि साधु ने पीडे तिवारे. अ० अनेरो. बलो. से० ते साधु. दु० दुःख. रो० ज्वरादिक. आ० आतंक तत्काल प्राण नों हरणहार शूलादिक. सं० उपजे एहवा जे साधु नें शरीर रोग आतंक उपजे तो जाणी. म० असंयतो गृहस्थ. क० करुणा. अनुकम्पा. प० अर्थ. ते० ते. मि० साधु नो गाय शरीर. ते० तेले करी घ० घृते करी. ग्रा० माखणे करी. व० वसाई करी. अ० मर्दन करे. सि० सुगंध द्रव्य समुदाय करी करे. क० पीठी. लो० लोच. वर्णा. चू० चूर्ण. प० पत्रे करी अ० घसे. प० विशेष घत्रे. उ० उतारे. उ० विशेष शुद्ध करे. सो० ठंडा पाणी अचित्ते करी. पाणी अचित्ते करी, उ० धोवे. व० बारम्बार धोवे. प० करे ।

अथ अठे कह्यो—साधु अकल्पनीक जगां रह्यां गृहस्थ साधु नी अनुकम्पा करुणा अर्थ साधु नें तैलादिक करी मर्दन करे । ए दोष उपजे ते माटे एहवे उपाश्रये रहिवो नहीं । इहां " कुलुण पडियाए" कहितां करुणा अनुकम्पा रे. ~ इम अर्थ कियो । पिण आजीविका निमित्ते इम न कह्यो । तिम निशीथ उ० १२ "कोलुण पडियाए" ते करुणा अनुकम्पा. अर्थ इम अर्थ छै । अने जे कोलुण शब्द रो अनेक कुयुक्ति लगावी नें विपरीत करे पिण कोलुण रो अर्थ अनुकम्पा न करे । तो इहां पिण कलुण पडियाए कह्यो ते साधु री करुणा अनुकम्पा रे अर्थ तिण लेखे नहीं कहिवो । ~ जो इहां कलुण पडियाए रो अर्थ करुणा अनुकम्पा थापसी तो तेहने कोलुण पडियाए निशीथ में कह्यो तिण रो पिण करुणा अनुकम्पा कहिणो पड़सी । अने इहां तो प्रत्यक्ष करुणा अनुकम्पा करी साधु ने शरीर तैलादि मर्दन करे. ते माटे करुणा अनुकम्पा नों कहीजे । पिण आजीविका रो नहीं । तिवारे कोई कहै "कलुण पडियाए" । रांग में कह्यो । तेहनों तो कुम्पा करुणा हुवे । पिण निशीथ में "कोलुण पडियाए" कह्यो—तेहनों अर्थ कुम्पा करुणा किम होवे । इम कहे तेहनो उत्तर—ए कोलुण रो कलुण रो अर्थ एक करुणा छै । पिण में फेर नहीं । जिम निशीथ उ० १२ "कोलुण पडियाए" रो चूर्णी में अनुकम्पा करुणा इज अर्थ कियो छै । अने आचारांग श्रु० २ अ० २ उ० १ "कलुण पडियाए" रो अर्थ टीका में करुणा अनुकम्पा इज कियो छै । ए विह पाठ नों अर्थ ए करुणा

अनुकम्पाइज छै, सरीखो छै' पिण अनेरो नहीं । तिवारे कोई कहे ए करुणा २ तो सर्व खोटी छै । जिम कलुण रस कह्यो ते सावध छै तिम करुणा पिण सावध छै । तेहनों उत्तर—साधु ने शरीरे मर्दन करे तिहाँ पिण "कलुण पड़ियाए" कह्यो तो ए करुणा ने स्थूँ कहीजे । तिहां टीकाकार पिण इम कह्यो । "कारुण्ये न भक्त्यावा" करुणा ने आवे करी तथा भक्ति करी इम कह्यो । तो ए करुणा पिण आज्ञा वारे ए भक्ति पिण आज्ञा बाहिरै छै । तेहनी साधु न देवे ते माटे । ए करुणा नें एकान्त खोटी कहे तिण रे लेखे साधु नें शरीरे साता करे तेह करुणा इ करी तिण में पिण धर्म न कहिणो । अनें जे धर्म कहे तो तिण रे लेखे इज "कलुण पड़ियाए" कह्यो । ते कलुण रस न हुवे । करुणा अनुकम्पा नो धयो । तथा प्रश्रव्याकरण अ० १ हिंसा नें "निकलुणो" ते करुणा रहित कही छै । जे करुणा नें एकान्त खोटी इज कहे तो हिंसा नें करुणा रहित क्यूँ कही । जिणऋषि रेणा देवी रे साहमो जोयो ते पिण रेणा देवी नी कहणाई करी । ए करुणा सावध छै । ए करुणा अनुकम्पा सावध निरवध जुदी छै । ते माटे जीव नी करुणा अनुकम्पा करी साधु वंछन बांधे छोडे छोड़ता ने अनुमोद्यां प्रायश्चित्त कह्यो । ते पिण अनु सावध छै । ते माटे तेहनों प्रायश्चित्त कह्यो छै । निरवध नो तो प्रायश्चित्त आवे नहीं । डाहा कुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ३२ बोल सम्पूर्णा ।

तथा वली अनुकम्पा तो घणे ठिकाणे कही छै । जिहां वीतराग देव आज्ञा देवे ते निरवध छै । अनें आज्ञा न देवे ते सावध छै । ते अनुकम्पा ओलखवा नें सुल कहे छै ।

ततेणं हरिण गमेसी देवी सुलसाए गाहावइणीए  
गुकंपणहुयाए विणिहाय मावणणे दारए रयल संपुल

गिर<sup>६२</sup> २ ता न्व 'तियं साहरत्ति अंतिए हरत्ता ।  
तं समयं चणं तुम्हं पि नवगहं मासाणं सुकुमालं दारए पस-  
वसि जे वियणं देवाणु प्पियाणं तव पुत्ता ते विय तव अंति-  
यातो करयल पुडे गिरहइ २ ता सुलसाए गाहावइणीए  
'तिए साहरत्ति ।

( अन्तगड-तृतीय वा अष्टमाध्ययन )

त० तिवारे पछे, से० ते, हरिण गमेपी देवता, छ० सुलभा गाथापतिणीनी, अ० अनुकम्पा ने' दया ने' अर्थे वि० मुच्चा बालक ने' विपे गि० ग्रहे ग्रही ने त० तांहरे अ० समीपे सा० मैले । त० तिवारे पछे, तु० ते' नव मास पश्चात् सुकुमार पुत्र प्रसन्ना, तांहरे समीप सु' तिय पुत्रां ने' हरी ने' करतल ने' विपे ग्रहण करी ने गाथा पति नी सुलसारे कने मैल्या ।

अथ यहां कह्यो—सुलसानी अनुकम्पा ने' अर्थे देवकी पासे सुलसानी मुन्ना बालक मैल्या । देवकी ना पुत्र सुलसा पासे मैल्या ए पिण अनुकम्पा कही ए अनुकम्पा आज्ञा माहे के बाहिरे सावध के निरवध छै । ए तो कार्य क्ष माज्ञा बाहिरे सावध छै । ते कार्य नी देवता ना मन में उपनी जे ए दुःखिनी छै तो पहनो ए कार्य करी दुःख मेटूं । ए परिणाम रूप अनुकम्पा पिण सावध छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ३३ बोल सम्पूर्णा ।

तथा श्री कृष्ण जी डोंकरानी अनुकम्पा कीधी ते पाठ लिखिये छै ।

तएणं से किरह वासुदेवे तस्स परिसस्स अनुकम्प-  
गाढाए हत्थि खंध वर गते चेव एगं इट्ठिं गिरहइ २ वहिया  
रययहाओ अन्तो अणुप्प विसंति ॥ ७४ ॥

( अन्तगड वा ३ अ० ५ )

तं तिवारे पछे. से० ते. कि० कृष्ण बाबुदेव. त० ते पुरुष नी. अ० अनुकम्पा आणी  
ने. ह० हाथी ना कंधा ऊपरज थकी. ए० एक ईट प्रते. गि० ग्रहे ग्रंही नी. व० बाहिरे. र०  
राज मार्ग सें. अं० घर में विषे. अ० प्रवेश कीधी (मूकी)

अथ इहां कृष्णजी डोकरानी अनुकम्पा करी हस्ति वैठा ईट  
उपाड़ी तिण रे घरे मूकी ए अनुकम्पा आझा में के बाहिरे सावध छे के निरवध छे।  
डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ३४ बोल सम्पूर्णा ।

तथा यक्षे हरिकेशी मुनि नी अनुकम्पा कीधी ते लिखिये छै ।

ज० गो तहिं तिंदुग रुखवासी,  
गुणपञ्चो तस्स महा मुणस्स ।  
पच्छायइत्ता नियगं सरीरं,  
इमाइं वयणाइ मुदा हरित्था ॥ ८ ॥

( उत्तराध्ययन अ० १२ गा० ८ )

ज० यक्ष. त० तेणे . ति० तिन्दुक. र० वृक्षनू वासी. अ० अनुकम्पा नू  
करणहार. भगवन्त. ते हरिकेशी महा मुनीश्वर ना. ए० प्रवेश करी शरीर में विषे. इ० ए. व०  
बोल्थो.

अथ इहां हरिकेशी मुनि नी अनुकम्पा करी यक्षे विप्रां ने ता ऊंधा  
पाड्या. ए पा सावध छे के निरवध छे । आझा में छे के आझा बाहिरे छे ।  
ए तो क्ष आझा बाहिरे छे । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ३५ बोल सम्पूर्णा ।

— गी धारणी राणी गर्भ नी अनुकम्पाः कीधी ते लिखिये है ।

तएषां सा धारिणी देवी तंसि अकाल दोहलंसि  
विणिचंसि सम्माणिय दोहला तस्स गव्वभस्स अणुकम्पणा-  
ट्ठाए. जयं चिट्ठइ जयं आसइ जयं सुवइ आहारं पियणं  
आहारे माणी-णाइतित्तं णाय कडुयं णाइ कसायं णाय  
अंवलं णाइ मदुरं जंतस्स गव्वभस्स हियं मियं पत्थं तं देसेय  
कालेय आहारं आहारे माणी० ।

( ज्ञाता अ० १ )

त० तिवारे. सा० ते. धा० धारणी देवी. त० तिण. अ० अकाल मेघ नों. दो०  
दोहल पूर्ण हुयां पछे. त० तिण. ग० गर्भ नी. अ० अनुकम्पा ने अये. ज० यत्ता पूर्वक. चिं  
खड़ी हुवे. ज० यत्ता पूर्वक. आ० बैठे. ज० यत्ता पूर्वक. सु० सुवे. आ० आहार ने विपे. पिण  
आहार. ण० नहीं करे अति तीखो. अति कडु. अति कषाय. अति अम्वट. अति मधुर.  
ज० जे. त० ते. ग० गर्भ ने. हि० हितकारी पत्थ. दे० देश कालानुसार धाय. अ० ते आहार  
करे ।

अथ इहाँ धारणी राणी गर्भ नी अनुकम्पा करी मन गमता आहार जीम्या  
ए अनुकम्पा सावध छै के निरवद्य छै । ए तो प्रत्यक्ष आह्वा वाहिरे छै । डाहा हुवे  
तो विचारि जोइओ ।

इति ३६ बोल सम्पूर्णा ।

बली अभयकुमार नी अनुकम्पा करी देवता मेह बरसायो ते लिखिये  
छै—

अभयकुमार मणुकंपमाणो देवो पुञ्चभन्न जणिय  
एह पिय बहुमाण जाय सोयंतओ० ।

( ज्ञाता अ० १ )

अ० अभयकुमार प्रते अनुकम्पा करतो जे तेह मित्र नें त्रिण रूप कष्ट है एहवो चिन्तवतो थको. पु० पूर्व भव (जन्म) रो. ज० हुवो थको. शे० स्नेह तथा पि० अती बहुमान वालो देवता. जा० गयो है जेहनों.

इहां अभयकुमार नी अनु । करी दे मेह वरसायो ए पिण अनुकम्पा कही. ते है के निरवद्य है। ए तो प्रत्यक्ष आज्ञा बाहिरे है। हुवे तो विचारि जोइजो।

## इति ३७ गोल सम्पूर्णा ।

जिनऋषि रयणा देवी री अनु । कीधी ते पाठ लिखिये छे ।

ततेणं जिण रक्खिआ समुप्पणं कलुण भावं मच्चु  
गलत्थलणो स्त्रिय मइ तं तहेव जक्खेओ से लए  
ओहिणा जाणिउण सणियं २ उव्विहइ २ णियग पिट्ठाहि  
विगयसड्ढे ॥४१॥

(ज्ञातां अ० ६)

त० तिवारे. जि० जिण ऋषि नें. स० उपनो करुणा भाव ते देवी ऊपर. ह० ना मुख में पढ्यो थको. पो० लोलुपी थी है मति जेहनी. एहवा जिन ऋषि नें देखतो थको त० ते. ज० यत्न. से० सेलक. ओ० अवधि ज्ञाने करी जा० जाणी नें स० धीरे २ उ० चीचे उतारयो शि० आपनी पीठ सेती. वि० गत श्रद्धावन्त एहवा ने.

अथ इहां रयणा देवी री अनु । करी जिनऋषि साहमो जोयो ए पिण अनुकम्पा कही ए अनुकम्पा मोह रा उदय थी के मोह कर्म रा क्षयौपशम थी। ए अनु । सावद्य है के निरवद्य है। आज्ञा में है के आज्ञा बाहिरे है। विवेक लोचने करी विचारि जोइजो। ए पाछे कही ते अनुकम्पा बाहिरे है। मोह कर्म रा उदय थी हियो हुवे ते माटे ए अनु सावद्य है। तिवारे कोई कहे—रयणा देवी री करुणा करी जिन ऋषि साहमो जोयो ते तो



मोह है । पिण अनुकम्पा नहीं तेहनो उत्तर अनुकम्पा रा अनेक नाम है । अनुकम्पा, करुणा, दया, कृपा, कोलुण, कलुण, इत्यादिक । ते सावदय निरवदय बेहू है । अने रयणा देवी री करुणा जित अपि कीधी तिण ने मोह कहे तो ए प्राछे कृपादिक अनुकम्पा कीधी-ते पिण मोह है । डाहा हुवे तो विचारि जोझो ।

## इति ३८ बोल सम्पूर्णा ।

तथा बली कोई कहे करुणा नाम तो मोह नो है अने अनुकम्पा नाम धर्म नो है । पिण करुणा नाम दया रों तथा धर्म नों नहीं । तत्रोत्तरं—प्रश्नव्याकरण म आश्रव द्वारे हिंसा नें ओलखाई तिहां गो । ए पहिलो आश्रव द्वारे केहवो है । तेहनों वर्णन सूत्र द्वारा लिखिये है ।

पाण बहो नाम एस निच्चं जिणेहिं भणिओ पावो चंडो रुदो खुदो साहसिओ अणारिओ निग्घिणो गिस्संसो महवभओ पइवभओ अतिभओ बीहणओ तासणओ अणजो उव्वेणउय गिरयवयक्खो निद्धमो गिप्पिवासो गिक्कलुणो गिरय सगमण निधणो मोह मह भय पयइओ मरण वेसणामो अहम्मदारं ।

( प्रश्नव्याकरण १ अ० )

पा० हिंसा ना ए प्रत्यक्त जदपि जे आगल पाप चंडी आदिक स्वरूप कहिल्ये ते झांडी निवर्त्तो नहीं । तिण कारणा नि० सदा केहो, जि० श्री वीतराग तेणे, भ० माख्यो पा० पाप प्रकृति ना वंच नों कारणा, च० कषाय करी कूट प्राणघात करे, ह० रीसे प्रवर्त्तो प्रसिद्ध, खु० पदद्रोहक तथा अघर्म जे अणी हथि मार्ग प्रवर्त्तो, सा० साहसात् करी प्रवर्त्तो, अ० म्लेच्छादिक तेहनों 'वो छै, नि० निर्घाण, नृणांस ( क्रूर ) म० महा भयकारी, प० अन्य भयकर्त्ता, अ० अति भय ( मरणांत ) कर्त्ता, वी० दरावणा, ता० त्रासकारी, अ० अन्यायकारी, उ० उद्देगकारी, गि० परलोकादि नी अपेक्षा रहित, नि० धर्म रहित, बि०

पिपासा स्नेह रहित. शि० दयारहित, शि० नों कारण. मो० मोह महा भयकर्ता. म० प्राण त्याग रूप दीनता कर्त्ता प० प्रथम. अ० अवर्म द्वार है ।

अथ अठे कह्यो ( निक्कलुणो ) कहितां करुणा दया रहित ए आश्रव द्वार हिंसा छै । इहां पिण हिंसा नें करुणा रहित कही ते करुणा नाम दया नो छै । अनें जे करुणा नाम एकान्त मोह रो थापे ते मिले नहीं । जिम इहां ए करुणा पाठ कह्यो । ते निरवदय करुणा छै । अनें रेणा देवी नी करुणा कही ते करुणा छै पिण सावदय छै । तिम अनुकम्पा पिण सावदय निरवदय छै । ए पाछे :कृष्णादिक कीधी ते अनुकम्पा सावदय छै । अनें नेमिनाथ जी जीवां री करुणा कीधी तथा हाथी सुसलारी अनुकम्पा कीधी ते निरवदय छै । जिम करुणा सावदय निरवदय छै तिम अनुकम्पा पिण सावदय निरवदय छै । नेमिनाथ जी जीवां ने देखी पाछा फिंसा तिहां पिण पहवो छै । “साणुक्कोसे जिवेहिउ” साणुक्कोसे कहितां करुणा सहित जियहि, कहितां जीवां नें चिपे उ कहतां पाद पूरणे इहां पिण समचे करुणा कही पिण इम न कह्यो ए निरवदय करुणा छै । अनें रेणा देवी री पिण करुणा कही पिण इम न कह्यो ए सावदय करुणा छै । कर्त्तव्य लारे करुणा जाणिये । जे सावदय कर्त्तव्य करे ते ठिकाणे सावदय करुणा. अनें निरवदय कर्त्तव्य रे ठिकाणे निरवदय करुणा । तिम अनुकम्पा पिण सावदय निरवदय व्य लारे जाणवी । जिम कृष्ण हरिणगमेसी, धारणी राणी,

देवता. सावदय कर्त्तव्य कीधा तेहनी मन में विचारी हियो कम्पाय थयो ते माटे अनुकम्पा सावदय छै । अनें हाथी सुसलारी अनुकम्पा करी पग दियो नहीं ते निरवदय कर्त्तव्य छै । तिणं सूं ते अनुकम्पा पिण निरवदय छै । जे । सावदय निरवदय मानें त्यानें अनुकम्पा पिण सावदय निरवदय मानणी पड़सी । अनें करुणा तो सावदय निरवदय मानें अनें अनुकम्पा एकली निरवदय मानें । ते अन्यायवादी जाणवा । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

ति ३६ बोल सम्पूर्ण ।

रयणा देवी, करुणा सहित जिन ऋषि ने हण्यो । पहवो कह्यो छै । ते पाठ लिखिये छै ।

तएणं सा खण दीव देवया गिस्संसा लुणं जिण  
रक्खियं सकलुसं सेलण पिट्ठाहि उवयंतं दा, उ सिन्ति  
जंपमाणी अप्पत्तं सागर सलिलं गिण्हह वाहाहिं आरसंतं  
उड्ढं उव्विहहिति अंवर तले उवय माणं च मडलगेण पडि-  
च्छित्ता निलुप्पल गवल असियप्पगासेणं असिवरेणं डा-  
डिं करेति २ ता तत्थ विविलवमाणं तस्सय सरिस्सवहियस्स  
वेणं अंगम गाति सरुहि राई उक्खित्तवलं चउदिसिं  
करेति सा पंजली पहट्ठा ॥४२॥

( शाता सूत्र अ० ६ )

त० तिवारे. सा० ते २० रत्न द्रोप नी देवी. केहरी छै. नि० सुग रहित दया रहित  
परिणामे करी करुणा सहित जिन अपि प्रते. स० पाप सहित देवी. से० सेलक यत्त ना पठ थकी.  
ऊ० ऊंचा थी देखो पढ़ता नै. दा० रे दास अरे गोला ! म० मूत्रो पहचो बचन बोलती थकी.  
अ० समुद्र ना पायी मोह अण पडुंचता नै. गि० ग्रही नै. वा० बाहु सूं काली नै. अ० अर डाट  
करतां. ऊंचो उछाल्यो. अ० आकाश नै विपे. उ० पाछा आवत पढ़ता नै त्रियल नै अये करी.  
प० भेली नै. नि० नीलात्पलनी परे तीक्ष्ण. अ० खड्गो करी. ख० खंड २ करे करी नै. ते० तेहना  
विलाप करता थका ना सरधिर अंगोपांग ग्रही नै बलि नी परे च्यार दिशा नै विपे उछाले ।

अथ अठे कह्यो खणया देवी, करुणा सहित जिन अपि नै दया रहित  
परिणामे करी हण्यो । ते दया रहित परिणामे करी जिन अपि नै हण्यो । अने  
खणया देवी रे साहमो जिन अपि जोयो ते सावदय करुणा छै । जिम करुणा  
सावदय निरवदय छै । तिम अनुकम्पा पिण सावदय निरवदय छै । केई पूछे-अनु-  
। दोय किहां कही छै । तेहनै पूछणो । करुणा सावदय निरवदय किहां कही  
छै । ए तो करुणा कहो भावे अनुकम्पा कहो । जे मोहना उदय थीं हियो कंपावे  
ते सावदय अनुकम्पा । अने मोह रहित निरवदय कर्त्तव्य में हियो कंपावे ते  
निरवदय अनुकम्पा । इतरो कहाँ समझ न पड़े तो आशा विचार लेवी । डाहा  
हुवे तो विचारि जोहजो ।

इति ४० बोल सम्पूर्ण ।

वली सूर्या भे नाटक गो ते पिण भक्ति कही छै, ते पाठ लिखिये छै ।

तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं भत्ति पुव्वग गोयमा-  
इसमणाणं निग्गंघाणं दिव्वं दिव्विट्ठिं वत्तीसविहिं नट्टविहिं  
उवदंसित्तए । ततेणं समणे भगवं महावीरे सुरियाभेणं  
देवेणं एवं ७ समाणे सुरियाभस्स देवस्स एयमट्ठं नो  
ढाए नो परिजाणइ तुसणीए संचिट्ठइ ।

( राज प्रप्रेणी )

त० ते. इ० बांछू छू. दे० हे देवानु प्रिय ! त० तुम्हारी भक्तिपूर्वक. गो० गोतमादिक  
स० भ्रमण. नि० निर्ग्रन्थ नै. दि० दिव्य प्रधान. दे० देवता नै श्रद्धि व० वत्तीस वन्दन गटनाटक  
विधि प्रते. ङ० देखवाद् वो बांछू. त० तिवारे. स० भ्रमण भगवन्त. म० महावीर. सू० सूर्याभ  
देव. ए० इम. बु० कहे थके. सू० सूर्याभ देवता. ए० एहवा वचन प्रते. नो० आदर न देवे नो० मन  
करनें भलो न जायो. आज्ञा पिण न देवे. अ० अणवोल्या थकां रहे.

अथ अठे सूर्या भरी क रूप भक्ति कही । तेहनी भगवान् न  
दीधी । अनुमोदना पिण न कीधी । अनें;सूर्याभ वंदना रूप सेवा भक्ति कीधी ।  
तिहां एहवो छै । “अभ्रमणुणाय मेर्य सुरियांमा” एवं वन्दना रूप भक्ति री  
म्हारी आज्ञा छै । इम आज्ञा दीधी तो ए वन्दना रूप भक्ति निरवदय छै ते माटे.

दीधी । अनें नाटक रूप भक्ति सावदय छै । ते माटे आज्ञा न दीधी. अनु-  
मोदना पिण न कीधी । जिम सावदय निरवदय भक्ति छै—तिम अनुकम्पा पिण  
सावदय निरवदय छै । कोई कहे. सावदय ७ पा किहां कही छै तेहनें कहिणो  
सावदय भक्ति किहां कही छै । ए नाटक रूप भक्ति कही पिण इम न कह्यो—ए  
सावदय भक्ति छै । पिण ए भक्ति आज्ञा वाहिरे छै । ते माटे जाणिये । तिम ७  
कम्पा नी पिण न देवे ते सावदय जाणवी । आज्ञा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ४१ बोल सम्पूर्णा ।

वली यक्षे छातां ( ब्राह्मण विद्यार्थियों ) ने ऊंधा ते पिण  
कही । ते पाठ लिखिये छै ।

पुच्छिं च इणिहं च अणागयं च,  
मण्णपदोसो नमे अत्थि गेइ ।

जबवाहु वेयावडियं करेति,  
तम्हा हु ए ए णिहया कुमारा ॥ ३२ ॥

( उत्तराध्ययन अ० १२ गा० ० ३२ )

पु० यत्त अल्लगो थयूं हिं यति थोल्पो पूर्व. इ० हिवदां. अ० थनागतकाले. म० मने  
करी. प० प्रदोष नयी. मे० म्हारे. अ० छै. को० कोई अल्पमात्र पिण. ज० यत्त. हु० निश्चय.  
वि० वेयावच पत्तापात. क० करे छै. तं० ते भणी. हु० निश्चय. ए० ए प्रत्यक्ष. नि० निरंतर. णि०  
हण्या. कु० कुमार.

अथ अठे हरिकुशी मुनि कह्यो—ए छातां ने हण्या ते यक्षे व्यावच कीधी  
। पर म्हारो दोष तीनु ही काल में न थी । इहां व्यावच कही ते सावद्य छै  
आज्ञा चाहिरे छै । अने हरिकेशी आदि मुनि ने अशनादिक दानरूप जे व्यावच  
ते निरवद्य छै । तिम अनुकम्पा पिण सावद्य निरवद्य है । अने जे कोई छात्रां ने  
ऊंधा पाड़्या ए व्यावच में धर्म श्रद्धे, तिणरे लेखे सूर्याभ नाटक पाड़्यो. ए पिण  
भक्ति कही छै ते भक्ति में पिण धर्म कहिणो । अने ए सावद्य भक्ति में धर्म नहीं  
तो ए सावद्य व्यावच में पिण धर्म नहीं । कदाचित् कोई मतपक्षी थको सावद्य  
नाटक रूप भक्ति में पिण धर्म कही देवे तेहने कहिणो—ए नाटक में धर्म हुवे  
तो भगवान् आज्ञा कयूं न दीधी । जिम जमाली विहार करण री आज्ञा मांगी ।  
तिवारे भगवान् आज्ञा न दीधी । ते हज पाठ नाटक में कह्यो । ते माटे क नी  
पिण आज्ञा न दीधी तिवारे कोई कहे ए नाटक में पाप हुवे तो भगवान् वज्यों कयूं  
नहीं । तिण ने कहिणो जमाली ने विहार करतां वज्यों कयूं नहीं । यदि कोई कहे  
निश्चय विहार करंसी ज इसा भाव भगवान् देख लिया अने निरर्थक वाणी भग-  
वान् न बोले ते न वज्यों । तो सूर्याभ ने पिण नाटक पाड़तो निश्चय जाण्यो.  
ते भणी निरर्थक वचन भगवान् किम बोले । ते माटे नाटक नी आज्ञा न दीधी ते

न - रूप वचन ने आदर न दियो अने 'नो परिजाणइ' कहितां मन में पिण भेलो न जाण्यो । अनुमोदना पिण न कीधी । वली "मलयगिरि" राय प्रश्नेगी री टीका में पिण "नो परिजाणाइ" ए पाठनों भगवते नाटक रूप वचन नी अनुमोदना पिण न कीधी इम । ते टीका लिखिये छै ।

“तएण मित्यादि-ततः श्रमणो भगवान् महावीरः सूर्याग्नेन देवेन एवं मुक्तः सन् सूर्यामस्य देवस्य एव मनन्तरोदित मयै नाद्रियते, न तदर्थं करणाया-  
दर परो भवति, नापि परिजानाति, नानुमन्यते स्वतो वीत रागत्वात्, गौतमा-  
दीनां च नाद्य विधिः स्वाध्यायादि विघात कारित्वात्, केवलं तूष्णीकोऽवति-  
ष्ठते”

इहां टीका में पिण कह्यो—नाटक नी अनुमोदना न कीधी । जो ए भक्ति में धर्म हुवे तो भगवान् अनुमोदना क्यूं न कीधी । । क्यूं न दीधी । पिण ए सावदय भक्ति छै । ते माटे आह्मा न दीधी अने वन्दना रूप निरवदय भक्ति नी कीधी छै । तिम अनु । पिण आह्मा बाहिर छै ते सावदय छै अने आह्मा माहि छै ते अनु । निरवदय छै । झाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ४२ लेख सम्पूर्णा ।

वली कैतला एक कहै—गोशाला नै भगवान् बचायो, ते अनुकम्पा कहीं ते माटे धर्म छै । तेहनों —जो ए अनुकम्पा में धर्म छै तो अनुकम्पा तो धणे ठिकाणे कही छै । कृष्ण जी ईंट उपाड़ी डोकरा रे धरे मूकी ए डोकरानी अनुकम्पा कही छै । ( १ ) हरिण गमेपी देवता देवकी रा पुत्रा नै चोरी सुलसारे धरे मूक्या—ए पिण सुलसा री अनुकम्पा कही छै । ( २ ) धारणी मनगमता अशनादिक खाधा ते गर्भ नी अनुकम्पा कही । ( ३ ) देवता अकाले मेह बरसायो ए अमयकुमार नी अनुकम्पा कही । ( ४ ) विप्रां सुं वाद कियो तिहां हरि-केशी नी अनुकम्पा कही । ( ५ ) अने भगवान् तेजु लखि फोड़ी गोशाला नै बचायो ते गोशाला नी अनुकम्पा कही छै । ( ६ ) जो ए पाछे कहीं ते अनु-

कम्पा ना कार्य सावध , तो ते तेजु लब्धि फोड़ी ते माटे ए अनुकम्पा पिण सावध छै । ए सावध छै ते माटे । ए कार्य नी मनमें उपनी हियो कम्पा तन ह्यो ते माटे ए अनुकम्पा पिण सा छै । अनुकम्पा अने कार्य संलग्न छै । जे कृष्णजी ईंट छी ते अनुकम्पा ने अर्थे "अणुकम्पणद्वयाए" पहचूं पाठ कह्यो, ते अनुकम्पा ने अर्थे ईंट उपाड़ी सूकी हम ते माटे ए थी अनुकम्पा संलग्न छै । ए कार्य अनुकम्पा सावध छै । इम हरिण गमेषी तथा धारणी अनुकम्पा कीधी तिहां पिण "अणुकम्पणद्वयाए" कह्यो । ते माटे ते अनुकम्पा पिण सावध छै । जिम वती श० ७ उ० २ कह्यो । "जीवदव्वद्वयाए सासए भावद्वयाए असासए" जीव द्रव्यार्थे सासतो भावार्थे असासतो कह्यो । तो द्रव्य भाव जीव थी न्यारा नहीं । तिम कृष्ण आदि जे सावध कार्य किया ते तो अनुकम्पा अर्थे किया ते माटे ए कार्य थी अनुकम्पा न्यारी न गिणवी । ए कार्य स तिम अनुकम्पा पिण सावध छै । तिम भगवान् पिण अनुकम्पा ने तेजु लब्धि फोड़ी, ते माटे ते अनुकम्पा पिण सावध छै । तेजु लब्धि फोड़वा री केवली री आह्वा नहीं छै । ते भणी भगवन्त छद्मस्थ पणे तेजु लब्धि फोड़ी तिण में धर्म नहीं । "यिक लब्धि, आहारिक लब्धि, तेजु लब्धि, जंघाचरण, विद्या ण, पुलाक, इत्यादिक ए लब्धि फोड़वा नी तो सूत्र में वजीं छै । गौ दिक साधु रा गुण आया त्यां पहचो पाठ छै । "संखित्त विउल तेय लेस्से" संक्षेपी छै विस्तीर्ण तेजु, लेश्या, इहां तेजु लेश्या तीची ते गुण कह्यो । पिण तेजु लेश्या फोड़े ते गुण न कह्यो, तो भगवन्ते तेजु लेश्या फोड़ी गोशाला नें वचायो तिण में धर्म किम कहिये । तिवारे कोई कहे-भगवान् तो शीतल लेश्या सूकी पिण तेजु लेश्या न सूकी तेजु लेश्या तो तापस गोशाला ऊपर सूकी तिवारे भगवान् शी लेश्या फोड़ नें गोशाला नें वचायो । पिण तेजु लेश्या भगवान् फोड़ी नहीं इम कहे तेहनो उत्तर—जे शीतल लेश्या ने तेजु लेश्या न भ्रद्धे ते तो सिद्धान्त रा ण छै । ए शीतल लेश्या तो तेजु नों इज मेद छै । जे तपस्वी मेली ते तो उष्ण तेजु लेश्या अने वान् मेली ते शीतल तेजु लेश्या पहचूं छै । ते पाठ लिखिये छै ।

तएण अहं गोयमा ! गोशा स्स मंखति पुत्तस्स  
गुकंपणद्वयाए वेसियायणस्स बाल तवस्सिस्स सा उसिण

तेय लेस्सा तेय पडिस्सा हरणद्धयाए एत्थणां अंतरा हं सोय  
लियं तेयलेस्सं णिसिरामि, जाए सा ममं सीयलियाए तेव  
लेस्साए वेसियायणस्स वाल तवस्सिस्स सा उसिण तेय  
लेस्सा पडिहया ।

( भगवती श० १५ )

त० तिवारे. अ० हं. गोतम ! गो० गोशाला. म० मंखलि पुत्र नें. अ० अनुकम्पा ने  
अथ. वेसियायन. वा० वाल तपस्वीनी. ते० तेजूलेश्या प्रते. सा० संहारवा ने अर्थे. ए०  
अन्तराले. अ० हं. सी० शीतल. ते० तेजूलेश्या प्रते. णि० म्हे मूकी जा० जे० ए. मा० माहरी. सी०  
शीतल. ते० तेजूलेश्याई करी. दे० वालतपस्वी नी. ते. उ० उष्ण तेजूलेश्या. प० हयाणी ।

अथ अठे तो इम कह्यो—जे तापस तो उष्ण तेजू लेश्या मूकी अनें  
शीतल तेजू लेश्या मूकी । ते भगवान् री शीतल तेजू लेश्या ई करी तापस नी  
उष्ण तेजू लेश्या हयाणी । अत्त उष्ण तेजू अनें शीतल तेजू कही । ते माटे  
लेश्या ते पिण तेजू नों भेद छै । अनें शीतल लेश्या ते पिण तेजू नों भेद छै । ते  
भणी भगवान् पणे शीतल तेजू लेश्या फोड़ी ने गोशाला नें बचायो छै । ते  
सावय छै । । हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ४३ वो सम्पूर्णा ।

इति अनुकम्पाऽधिकारः ।



## अथ लब्धि-अधिकारः ।

कोई कहे लब्धि फोड्यां पाप किहां कह्यो छै तिण नें ओलखावण नें  
“पञ्चवणा” पद छत्तीसमें तेजू लब्धि फोड्यां जघन्य ३ उत्कृष्ट ५ क्रिया  
कही ते लिखिये छै ।

जीवेणं भंते । वे उंणि समुग्घाएणं मोहते मो-  
णित्ता जे पोग्गले निच्छुभति तेणं भंते । पोग्गलेहिं केवति  
ते खेत्ते आफुणणे केवइए खेत्ते ७ गोयमां । सरीरप्पमांण  
मेत्ते विक्खंभ बाहल्लेणं आयामेणं हणणेणं  
असंखेज्जति भागं उक्कोसेणं 'खेज्जाइं जोयणाइ' एगदिसिं  
विदिहिं वा एवइए खे अफुणणे एवतिए खेत्ते ७ सेणं  
भंते । केवति । २ अफुणणे केवति का २ ७ डे  
गोयमा । एग समएण दुसमएण तिसमएण  
विग्गहेणं एवति आफुणणे एवति । लस् फुडे सेसं  
तंचेव जाव पंच किरियावि ।

( पञ्चवणा पद ३६ )

जा० जीव. म० हे भगवन् ! वे० वैक्रिय. स० समुद्रघाते करी नें प्रदेश बाहि  
स० बाहिर जीने, जे० जे पुद्गल प्रते ग्रहे सूके. ते० सेयो पुद्गल. म० हे भगवन् ! के० केतलो  
अ० अ० के० केतलू क्षेत्र हे गोतम ! स० शरीर प्रमाण वि० पोहलपयो,  
वा० जाठपयो. आ० अने लावपयो. ज० जघन्य थकी. अ० अंगुल नों मो माग. उ०  
उत्कृष्ट. स० संख्याता योजन एकदिशे अथवा विदिशे फल्ये नव रूप करवाने

योजन लगे एक दिशे तथा चिदिशे आत्मप्रदेश विस्तारी नें. अ० अ . ए० क्षेत्र पसें  
से० तेह. म० हे भगवन् ! खे० क्षेत्र. के० केतला काल लगे. असृष्ट क० केतला काललगे  
गो० हे गोतम ! ए० एक समय नें. दु० वे नें. ति० त्रिण समय नें विग्रहे पुद्गल  
एतलाज. थाय ते माटे एतला लगे. असृष्ट एतला लगे फरस्ये. से०  
शेष सर्व तिमज यावत्. पं० पांच क्रियावन्त दुई ।

वैक्रिय समुद् करि पुद्गल काढे । ते पुद्गलां सूं जेतला  
में प्राण भूत जीव सत्त्व नी हुवे ते जाव शब्द में ाया छै । ते पुद्गलां थी  
विराधना हुवे तिण सूं उत्कृष्टी ५ क्रिया कहीं छै । इम वैक्रिय लब्धि फोड्यां ५  
क्रिया लागती कही । दिवे तेजू लेश्या फोडें ते लिखिये छै ।

जीवेणं भन्ते ! तेय ग्वाएणं गोहए समोहणि ।  
जे पोग्गले निच्छुभति तेहिणं भन्ते पोग्गलेहिं कैवति ते खेत्ते  
अफुरणो. एवं जहेव वेउब्बिय मुग्घाए. तहेव एवरं  
मेणं जहणणोणं. गुलस्स खेज्जति भागं सेसं तं ।  
( पद ३६ )

जी० जीव. म० हे भगवन् ! ते० समुद्घाते करी नें. स० आत्म प्रदेशमाही. जे  
जे पुद्गल प्रते ग्रहे सूके. ते० तिण पुद्गले. म० हे भगवन् ! के० केतल क्षेत्र. अ० . पणी रीते  
जे० जिम वैक्रिय. स० समुद्घाते कहुं ति सर्व कहिहु-या० एतलो विशेष. जे लावपबे,  
ज० धकी, अ० अंगुल नों संख्यात मो भाग फरस्ये. पिण असंख्यात मो भाग नयी. से०  
शेष सर्व, त० तिमज,

वैक्रि समुद् पांच त्रि कही. तिमहिज तेजू  
समुद्घात । क्रिया जाणवी । जिम वैक्रिय तिम तै समुद्घात पिण  
कहिणो । इम माटे ते समुद् उत्कृष्टी ५ क्रिया लागे तो तेजू  
लब्धि फो धर्म किम कहिये । भगवन्ते पणे शीतल तेजू लेश्या फोड्डीं  
गोशाला नें वचायो भगवती शतक १५ में कछो छै । अने णा पद । इसमें  
तेजस समुद् फो ५ क्रिया कही । ते केवल पछे ५ क्रिया कही  
पणे ते ५ क्रिया लागे ते लब्धि फोड्डी तो जे पणे कार्य

कीधो ते प्रमाण करियो के केवल ज्ञान उपना पछे कह्यो ते प्रमाण करियो ।  
उत्तम जीव विचारि जोइजो । केवली नो वचन प्रमाण छै । ए लब्धि फोड़नी तो  
भगवान् सूत्र में ठाम २ वर्जो छै । ए वैकिय तथा तेजू लब्धि फोड़्यां उत्कृष्टी  
५ क्रिया कही ते माटे ए लब्धि फोड़न री केवली री आज्ञा नहीं छै । डाहा हुवे तो  
विचारि जोइजो ।

## इति १ बोल सम्पूर्णा ।

तथा बली आहारिक लब्धि फोड़्यां पिण ५ क्रिया लागे इम कह्यो छै । ते  
पाठ लिखिये छै ।

जीवेणं भंते आहारग समुच्चाएणं संमोहए संमोह-  
णित्ता जे पोग्गले निच्छुभइ तेहिणं भंते ! पोग्गलेहिं केवइए  
खेत्ते आफुएणे केवइए खेत्ते फुडे गोयमा ! शरीरप्पमाण मेत्ते  
विक्खंभ वाहल्लेणं आयामेणं जहरणेणं अंगुलस्स संखेति  
भागं उक्कोसेणं संखेज्जाइजोयणाइं एगदिसिं एवतिए खे  
एगस एण वा दुसमएण वा तिसमएण वा विग्गहेणं एवति  
कालस्स आफुएणे एवति कालस्स उडं तेणं भंते ! पोग्गला  
केवइका का स्स निच्छुवति गोयमा ! जहरणेणं वि उक्कोसे  
णवि अंतोमुहुत्तस्स । तेणं भंते ! पोग्गला निच्छूढा समाणा  
जाइं तत्थ पाणाइं भूयाइं जीवाइं ताइं अभिहणंति व  
उद्दवंति तओणं भंते ! जीवे ति किरिए गोयमा ! सियति  
किरिए सिय चउकिरिए सिय पंच किरिए ।

जी० जीव. भ० हे भगवन्, आहारिक समुद्रघाते करी नें. सं० आत्मं प्रदेशं बाहिर सं० कांटे कांटी नें. जे० जे पुद्गल प्रते ग्रहे मूके. ते० तिणे हे भगवन् ! पो० पुद्गले करी ने के० केतलू होत्र अस्पृष्ट केतलू होत्र परते. हे गोतम ! सं० शरीर नां प्रमाण नां. वि० पोहलपणे. वा० जाडपणे. आ० अने लावपणे. ज० जघन्य थी. अ० अंगुल नों. सं० संख्यात मों भाग उत्कृष्ट पणे. सं० संख्यात योजनः ए० ए० द्वयो. ए० एतलो होत्र अस्पृष्ट ए० एकसमय ने. दु० अथवा वे समय नें. ति० अथवा त्रिणं समय नें वि० विग्रहे. ए० एतलो काल लगे अस्पृष्ट. ए० एतलो काल लगे. फेरसू हुइ. ते० तेहने. भ० हे भगवन् ! पो० पुद्गल. के० केतला काल लगे. ग्राह्य हुइ. गो० हे गोतम ! ज० जघन्य पणे पिणं. उ० अने उत्कृष्ट पणे पिणं. अ० अन्तर्मुहूर्त्त रहे. ते० तेहः भ० हे भगवन् ! पो० पुद्गल. गि० काढ्या थका. ज० जेह. त० तिहां. पा० प्राणभूत. जी० जीव. सं० सत्त्व प्रते. अ० हयो. जा० यावत् उपद्रव करे ते जीव थकी. भ० हे भगवन् ! जि० आहारिक समुद्रघात नों करण-हार जीव केतली क्रियावन्त हुइ. गो० हे गोतम ! सि० किवारे त्रिण क्रिया करे. सि० किवारे चार क्रिया करे. सि० किवारे पांच क्रिया लागे ।

अथ इहां आहारिक लघ्वि फोड्यां पिण जघन्य ३ उत्कृष्टी ५ क्रिया लागती कही. तिम वैक्रिय लघ्वि. तेजू लघ्वि फोड्यां जघन्य ३ उत्कृष्टी ५ क्रिया कही । ते भणी आहारिक. तेजू. वैक्रिय. लघ्वि. फोडण री केवली री आज्ञा नहीं तो ए लघ्वि फोड्यां धर्म किम हुवे, ए लघ्वि फोडवे ते छडे गुणठाणे अशुभ योग आभी फोडवे छे ते अशुभ योग में धर्म किम थापिये । डाहा हुवे तो विचाहि जोइजो ।

## इति २ बोल सम्पूर्णा ।

वली आहारिक लघ्वि फोडवे ते अमाद आभी अधिकरण कह्यो छै । ते पाठ लिखिये छै ।

जीवेणं भते आहारग सरीरं णिव्वतिपमाणे किं धिगरणी पुच्छा गोयमा । अधिगरणी वि अधिगरणंपि से केणट्ठेणं जाव अधिगरणंपि । गोयमा पमादं पडुच्च से तेणट्ठेणं जाव धिकरणं पि, एवं मणुस्से वि ।

( भगवती श० १६ उ० १ )

जी० जीव. म० हे भगवन् ! आ० आहारिक शरीर प्रते. शि० निपजावतो इतो किञ्च्यु  
अधिकरणी ए प्रभ. गो० हे गोतम ! अ० अधिकरणी पिण. अ० अधिकरणी पिण. से० ते. के०  
केहे अये. जा० यावत्. अ० अधिकरणी पिण. गो० हे गोतम ! ए० प्रमाद प्रते आश्रयी न. जा०  
यावत्. अ० अधिकरणी पिण. ए० एम. मनुष्य पिण जाणवो.

अथ अडे पिण आहारिक लब्धि फोडवी नें आहारिक शरीर करे तिण नें  
प्रमाद आश्री अधिकरण कह्यो । तो ए लब्धि फोडे ते कार्य केवली री  
बाहिर कहीजे के आशा माहि कहीजे । विवेक लोचने करि जीव विचारे ।  
श्री भगवन्ते तो आहारिक लब्धि फोडे ते प्रमाद कह्यो ते प्रमाद तो अशुभ योग  
आश्रव पिण धर्म नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ३ वोल सम्पूर्णा ।

वली ए लब्धि फोड्यां क्रिया लागती कही. ते क्रिया लागे ते  
में धर्म नहीं । वली लब्धि फोडे तिण ने मायी सकपायी कह्यो छै ते पाठ  
लिखिये ।

से भंते ! विं माई विकुब्बइ. अमाइ विकुब्बइ. गो०  
माइ विकुब्बति. एो अमाइ विकुब्बति ।

( भगवती श० ३ व० ४ )

से० ते. म० हे भगवन् ! किं स्तू. मायी वैक्रिय रूप करे, अ० के अमायी. वि० वैक्रिय  
रूप करे. गो० हे गोतम ! मायी विकूर्वे. एो० पिण अमायी न विकूर्वे अप्रमत्त गुणठाया रो  
भक्षी ।

वैक्रिय लब्धि फोडे तिण नें मायी कह्यो । ते माडे सावंध  
में नहीं ।

वली लब्धि फोडे ते बिना आलौयां मरे तो विराधक कह्यो छै । ते पाठ  
लिखिये छै ।

माइणं ठाणस्स अणलोइय पडिक्कंतं कालं करे  
ति त्थि राहणा मायीणं तस्सं ठाणस्स तो-  
इय पडिक्कंतं करेइ त्थि स आराहणा.

( भगवती श० ३ उ० ४ )

मा० मायी में. त० ते विक्रय कारण थकी. अ० आलोई ने प० अप-  
विक्रमी ने का० करे. श० न थी. त० तेहने. आ० धना. अ० पूर्व मायी थी  
वैक्रिय पण प्रणीत मोजन पण करतो हवो पळे जातुं प पामी ने. त० वैक्रिय लब्धि प्रते.  
आ० आलोय ने प० पडिकमी ने. का० करे. तो अ० छै. तेहने. अ० अन्यथा  
नहीं ।

वैक्रिय लब्धि फोडे ते मायी आलोयां विना मरे तो विराधक  
कह्यो । आलोई मरे तो साधु ने आराधक कह्यो । ते माटे प लब्धि फोड्यां  
धर्म नहीं । तिवारे कोई इम कहे—ए तो वैक्रिय लब्धि फोडे तेहने मायी विराधक  
कह्यो । परं तेजु लब्धि फोडे तिण-ने न कह्यो इम कहे तेहनों उत्तर—ए लब्धि  
फोडे ते मायी इम कह्यो । विना आलोयां मरे तो विराधक कह्यो । इसो सोडो  
छै ते माटे वैक्रिय लब्धि फो वणा पद ३६ कि कही छै ।

तेजु समुद् करी तेजु लब्धि फोडे तिहां एहवूं पाठ कह्यो ।

जीवेणं भंते तेयग समु एणं मोहए संमोहणित्ता  
जे पोग्गले णिच्छुभइ तेहिणं पोग्गलेहिं केवत्तिए खेत्ते  
अफुराणो एवं जहेव वेउन्विण्य समुग्घाए तहेव ।

( पञ्चवणा पद ३६ )

जी० जीव. भ० हे भगवन्त ! ते तेज समुद्घाते करी ने. स० आत्म प्रदेश बाहिर  
काड़ी ने. जे० प्रते. शि० ग्रे मूके. ते तिबे पुत्रले. हे भगवन् ! के० केतलू कोत्र.  
ए० एशी रीते. ज० जिम नैक्रिय. स० समुद्घाते करी तिमज सर्व कहेवूं.

अथ इहां कह्यो—जिम वैक्रिय समुदघात १ उत्कृष्टी ५ क्रिया लागे तिम तेजू समुदघात करतां पिण पांच क्रिया कहिवी । जिम वैक्रिय तिम तेजस पिण कहिचूं इम जिम वैक्रिय मायी करे अमायी न करे तिम तेजू लब्धि पिण मायी फोडवे, पिण अमायी न फोडवे । वैक्रिय क्रियां ५ क्रिया लागे ते आलोयां विना मरे तो विराधक छै । तिम तेजू लब्धि फोड्यां पिण ५ क्रिया लागे ते आलोयां विना मरे तो विराधक छै । ए तो पाधरो न्याय छै । ए लब्धि फोडे ते कार्य सादध छै । तिण सूं तोर्यङ्कर देव ५ क्रिया कह्यो छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ४ बोल सम्पूर्णा ।

तथा चली जंघा चारण विद्या चारण लब्धि फोडे तेहने पिण आलोय्य विना मरे तो विराधक कह्या छै । ते पाठ लिखिये छै ।

विजा चारणस्स णं भंते ! उड्ढं केवइए गति विसए परणत्ते गोयमा । सेणं इओ एगेणं उप्पाएणं रांदण वणे समो सरणं करेइ, रेइ । तहिं चेइयाइं वंदइ, वंदइत्ता वितिएणं उप्पाएणं पंडग वरो समोवसरणं करेइ करेइ तहिं चेइयाइं वंदइ वंदइ । त गो पडिणिइत्तइ २ त्ता इहं चेइयाइं वंदइ विजाचारणस्स णं गोयमा ! उड्ढं एवइए गति विसए, परणत्ते सेणं तस्स ठाणस्स अण लोइय पडिक्कंते कालं करेइ एत्थि तस्स आराहणा सेणं तस्स ठाणस्स आलोइय पडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा ।

वि० विद्या चारण रो. भ० हे भगवन्त ! उ० ऊर्ध्व. के० केतलो. ग० गति विशेष. प० परुष्यो. ( भगवान् कहे छै ) गो० हे गौतम ! से० विद्याचारण. इ० इहां सूं. ए० एक उप-  
धात में उड़ी नें. श० नन्दन वन नें विषे विश्राम लेवे. लेवी नें. त० तिहां. चे० चैत्य नें वांदि.  
वांदी ने. वि० द्वितीय उपपात में. प० पण्ड्य वन नें विषे. स० विश्राम लेवे. लेवी नें. त०  
तिहां. चे० चैत्य नें वांदि. वांदी नें. त० तटे सूं पाछा आवे. आवी नें. इ० इहां आवे. आवी  
नें. चे० चैत्य नें वांदि. वि० विद्याचारण ना. हे गौतम ! ऊ० ऊंचो. ए० एतली. ग० गति  
नों विषय परुष्यो. से० ते विद्याचारण. त० ते स्थानक नें. अ० अण्ण आलोई. अ० अण्ण पडि-  
कमी नें. क० काल प्रते करे. श० नहीं हुई. त० तेहनें. आ० आराधना. से० ते विद्याचारण  
ते स्थानक नें. आ० आलोई. प० पडिकमी नें. का० काल करे तो. अ० छै. त० तेहनें.  
आ० आराधक चारित्र फल नों.

अथ इहां पिण जंघा चारण विद्या चारण लब्धि फोड़े ते पिण विना.  
आलोयां मरे तो विराधक कहा छै । तिहां टीकाकार पिण इस कह्यो ते टीका  
लिखिये छै ।

“अथ मत्र माशयो लब्धुपजीवनं किल प्रमाद स्तल वा सेविते ऽ नालोचिते  
न भवति चारित्रस्याराधना तद्विराधकश्च न लभते चारित्राराधना फल मिति”

अथ टीका में इस कह्यो—ए लब्धि फोड़े ते प्रमादनों सेवको ते आलोयां  
विना चारित्र नी आराधना न थी. ते मादे विराधक कह्यो । इहां पिण लब्धि  
फो रो प्रायश्चित्त कह्यो । इहां पिण लब्धि फोड्यां धर्म न कह्यो । २  
लब्धि फोडणी सूत्र में वर्जो छै, तो भगवन्त गुण ठाणे तेजू लब्धि  
फोड़ी ने गोशाला ने वचायो, तिण में धर्म किम कहिये । आहारिक समुदधात  
१ क्रिया कही । वैक्रिय लब्धि फोड्यां ५ क्रिया कही । वैक्रिय लब्धि  
फोड़े तिण नें मायी कह्यो । विना आलोयां मरे तो तिण नें विराधक कह्यो । जिम  
वैक्रिय लब्धि फोड्यां ५ क्रिया तिम तेजू लब्धि फो ५ मि लागती तीर्थङ्कर  
देवे कही . तो तेजू लेश्या न्त पणे फोड़ी तिण में धर्म किम होवे ।

वली जंघा चारण. विद्या चारण. लब्धि फोड़े ते विना आलोयां मरे तो  
विराधक कह्यो । वली आहारिक लब्धि फोड़े तेहनें प्रमाद आश्री अधिकरण कह्यो ।  
ए तो २ लब्धि फोडणी केवली वर्जो छै । ते केवली नों वचन ए



करिवो । परं केवली नो न उत्थापनें छद्मस्थपणे तो गोतम चार सहित  
१४ पूर्वधारी पिण आनन्द ने घरे चूक तो छद्मस्थ ना अशुद्ध कार्य नी  
किम करिये । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ५ बोल सम्पूर्णा ।

तथा . ए तो सात प्रकारे चूके एहवूं णं में कह्यो छै । ते पाठ  
लिखिये ।

सत्तहिं गोहिं छउमत्थं जाणोज्जा, तं पाणो वा  
एत्ता भवइ. मुसं वदित्ता भवइ. अदिन्न माइ । भवइ सद-  
रिस रस रुव गंधे आसादेत्ता भवइ. पूयासक्कार मणुवूहेत्ता  
भवइ. इमं सावज्जंति पणवेत्ता पड़ि सेवेत्ता भव . गो जहा-  
वादी तहां गीयावि भवइ. हिं ठाणोहिं केवलिं जाणोज्जा  
तंणोपाणो अइवाएत्ता भवइ जाव जहावादी तहाकारीया वि-  
भवइ.

(ठायाङ्ग ठाया ७)

साते स्थानके करि. छ० छद्मस्थ जाणी इ. त० ते कहे छै. पा० जीव जो  
इहा ना करिवां थकी इम जाणी इं ए छद्मस्थ छै. १ मु० इमज मृषावाद बोले २  
अ० अदत्ता दान ले. ३ स० शब्द स्पर्श रस रूप गन्ध तेह. आ० राग भावे दि ४ ए०  
पूजा पुष्पार्चना. स० . ते वस्त्रादिक अर्चां ते अनेरो करतो . ते० तिवारे. अ०  
मोदे. हर्ष करे. ५ ए० इम. सदोष आहारिक. सा० . प० इम जाणी ने. प० सेवे. ६  
यो० थकी जिम बोले तिम न करे अन्यथा बोले करे. ७ स० साते के  
करी ने. के० केवली. जा० जाणी इ. तं० ते कहे छै. यो० केवली क्षीय चारित्रावरण थकी  
अतिचार थकी. अपहितेची पया थकी. कवाचित् हिसा न करे. जा० ज्यां  
लगे. ज० जिम कहे. तिम करे.

अठे पिण इम कह्यो— प्रकारे ए जाणिये । अने

प्रकारे केवली जाणिये । केवली तो ए सातूँ इ दोष न सेवे. ते भणी न चूके. अने

७ दोष सेवे ते भणी सात प्रकारे चूके छै । तो ते पणे जे सावद्य कार्य करे तेहना । किम करणी । पणे तो भगवन्ते लब्धि

फोड़ी गोशाला ने' ते । केवल पछे लब्धि फोड्या उत्कृष्टि ५

क्रिया लागती कही । तो केवली नो उत्थाप ने' पणे लब्धि फोड़ी

तिण में धर्म किम थापिये । अने जो लब्धि फोड़ी गोशाला ने' धर्म हुवे

तो केवल उपना पछे. गोशाले दोय साधां वाल्या त्याने' क्यून न । जो

गोशाला ने' वचायां धर्म छै तो दोय साधां ने' व तो धर्म घणो हुवे । तिवारे

कोई कहे । न केवली था सो दोय साधां रो आयुषो आयो जाण्यो तिण सूं न

। इम कहे तेहने र—जो भगवान् केवलज्ञानी आयुषो आयो जाण्यो

तिण सूं न वचाया तो और गौतमादि ए साधु लब्धि धारी घणा इ ।

त्याने तो आयुषो आयां री नहीं त्यां साधां ने' लब्धि फोड़ी ने क्यून न

या । यदि कहे और साधां ने' भगवान् बर्ज दिया तिण सूं और साधां पिण

न वचाया । तिण ने कहिणो और साधां ने वज्या ते तो गोशाला सुं धर्म चोयणा

करणी वजी छै । वा रा कारण माटे, पिण और साधां ने' इम तो वज्यो नहीं.

जे यां साधां ने वचाय जो मती । ए तो गोशाला सूं बोलणो वज्यो । पिण साधां

ने' वचावणा तो वज्यो नहीं । वली बिना कोल्या इ लब्धि फोड़ ने दोय ने

लेवे वा में वो रो काई छै । पिण ए लब्धि फोड़ी री

केवली री आज्ञा नहीं । तिण सूं और साधां पिण दोय साधां ने' या नहीं ।

लब्धि तो मोहनी कर्म रा उदय थो फोडवे छै । ते तो प्रमाद नों सेववो छै ।

तो केवलज्ञान पछे मोह रहित अप्रमादी छै । तिण सूं न

पिण केवलज्ञान पछे लब्धि फोड़ी ने' दोय साधां ने' नथी । तिहां

भगवती नी टीका में पिण पहवो कह्यो छै, ते टीका लिखिये छै ।

इहं च यद् गोशालकस्य संरक्षणं भगवता कृतं तत्सरागत्वेन दयैक रस-

त्वात् भगवतः यच्च सुनक्षत्र सर्वानुमृति मुनि पुंगवयो न करिष्यति तद्वीतरा-

गत्वेन लब्धनुपजीवकत्वात् अवश्यं भावि भावत्वात् वेत्यवसेयम् इति”.

अथ टीका में पिण इम कह्यो—ते गोशाला नों रक्षण भगवन्ते कियो ते सराग पणे करी अने सर्वाभूति सुनक्षत्र मुनि नों रक्षण न करस्ये ते वीतराग पणे करि । ए तो गोशाला नें वचायो ते सराग पणो कह्यो पिण धर्म न कह्यो । ए सराग पणा ना अशुद्ध कार्य में धर्म किम होय । अने कोई कहे निरवद्य दया थी गोशाला नें वचायो तो दोष साधां नें न वचाया तिवारे भगवान् गौतमादिक सब साधु दयावान् इज हुंता । जो गोशाला ने निरवद्य दया थी वचायो, तो दोष साधां नें क्यूं न वचाया । पिण निरवद्य दया सूं वचायो नहीं । ए तो सराग पणा सूं वचायो छै । तिण नें सरागपणो कह्यो भावे सावध अनुकम्पा कह्यो भावे सावध दया कह्यो, पिण मोक्ष मार्ग नी निरवद्य अनुकम्पा निरवद्य दया नहीं । इहां तो शी तेजू लब्धि फोड़ी ने वचाओ चाल्यो छै । अने तेजू लब्धि फोड़्यां ५ क्रिया कही, ते माटे ए सावध अनुकम्पा थी गोशाला ने वचायो छै । ए लब्धि फोड़णी तो ठाम २ वर्जो छै । लब्धि फोड़्यां क्रिया कही प्रमाद नो सेवबो कह्यो । विना आलोयां विराधक कश्यो, तो लब्धि फोड़ी गोशाला ने वचायो तिण में धर्म किम कहिये । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति बोल ६ सम्पूर्णा ।

केद अज्ञानी जीव कहे—जे अम्वड थावक वैक्रिय लब्धि फोड़ी ने सौ घरां पारणो कियो, सौ घरां वासो लियो, ते धर्म दिखावण निमित्ते, इम कहे ते मृपावादी छै इम लब्धि फोड़्यां तो मार्ग दीपे नहीं । जो लब्धि फोड़्यां मार्ग दीपे, तो पहिलां गौतमादिक घणा साधु लब्धि धारी हुन्ता, ते पिण लब्धि फोड़ी नें मार्ग क्यूं न दिपाव्यो । मार्ग दीपावण री तो भगवान् री आज्ञा छै । परं लब्धि फोड़ण री तो भगवान् री आज्ञा नहीं । ए वैक्रिय लब्धि फोड़्यां तो पन्नवणा पद ३६ में ५ क्रिया कही छै, पिण न कह्यो, तो सन्यासी वैक्रिय लब्धि फोड़ी तिण नें पिण ५ क्रिया लागती दीसै छै, पिण धर्म नथी । भगवती श० ३ उ० ४ कह्यो मायी विकुर्वे ते विना आलोयां मरे तो विराधक कह्यो आलोयां आराधक । तिहां पिण वैक्रिय लब्धि फोड़नी निवेधी छै । जे साधु वैक्रिय लब्धि

फोड़े, तेहनों ब्रत पिण भांगे अने पाप पिण लागे । अने साधु बिना अनेरो वैक्रिय लब्धि फोड़े तेहनों ब्रत न भांगे .पिण पाप तो लागे । तो अम्बड पिण वैक्रिय लब्धि फोड़ी तेहनों ब्रत न भांग्यो पिण पाप तो लाग्यो । ए तो आप रे छांदे ए कार्य कियो पिण धर्मदीपण निमित्ते नहीं । एतो लोकां ने त्रिस्म्य उपजावण निमित्ते वैक्रिय लब्धि फोड़ी सौ घरां पारणो कियो वासो लियो । ते पाठ लिखिये छै ।

बहु जणोणं भंते ! अणण मणणस्स एव माइक्खइ एवं भासइ एवं पणणवेइ एवं परूवेइ एवं खलु अंवडे परिव्वा-  
यए कंपोल पुरणयरे घर सत्ते आहार माहारेति घरसत्ते  
वसते वसहि उवेइ से कहमेयं भंते ! एवं गोयमा ! जणं  
बहुजणे एव माइक्खंति जाव घरसत्तेहि वसेहि उवेति  
सच्चेणं एसमद्धे अहं पुण गोयमा ! एव माइक्खामि जाव  
परूवेमि एवं खलु अंवडे परिव्वाइए जाव वसहिं उवेति से  
केणट्ठेणं भंते ! एवं बुच्चति अंवडे परिव्वाइए जाव वसहिं  
उवेति गोयमा ! अंवडस्सणं परिव्वायगस्स पगति भइयाए  
जाव वीणियत्ताए छट्ठं छट्ठेणं अणिकित्तेणं तवो कम्मेणं  
उड्ढंवाहाओ पगिज्झिय २ सुराभिमुहस्स आयावण भूमिए  
आयावेमाणस्स सुभेणं परिणामेणं पसत्थेहि अज्झवसाणाहिं  
लेस्सेहिं विसुज्झमाणीहिं अणण्या कयाइं तदा वरणिज्जाणं  
कम्माणं उवसमेणं ईहा पूह मग्ग गवेसणं करेमाणस्स  
विरिय लद्धि वेउव्विय लद्धि ओहिणाण लद्धि समुप्पणणा  
तएणं से अंवडे परिवायए ताए वीरिय लद्धिए वेउव्विय  
लद्धिए ओहिणाण लद्धि समुप्पणाए जण विज्ञावण हेउं

પિલપુર શાગરે      જાવ વસહિં ઉવેતિ સે તેણદ્દેણં  
 ગોયમા ! એવં વુ તિ      પરિવ્વાડયે      વસહિં  
 ઉવેતિ ॥ ૩૬ ॥

( ડવાઈ પ્રકા ૧૪ )

જાં ઘણાં એક જન લોક ગ્રામાદિક નગરાદિક સમ્બન્ધી. મંં હે ભગવન્ત ! જાં  
 અન્યોન્ય માહો માહી. એં એહવો અતિશય સ્યું કહે છે. એં      માં માં  
 નેં બોલે. એં એહવો ઉપદેશ હુદ્દિ હં પ્રજાપે જણાવે. એં એહવો પરુપે છે. સાંભલણહાર નેં  
 હિવે જણાવે. એં એયો પ્રકારે. જાં જાલુ નિશ્ચય. જાં      એં પરિઆજક સન્યાસી.  
 કં કમ્પિલ્લ નગર જિહાં ગવાદિક નોં કર નહીં તેહને વિષે. જાં આહાર પાન લાદિમ.  
 સ્વાદિમ આહારે જીમણ કરે છે. જાં એક સૌ ૧૦૦ ઘર ગૃહસ્થ ના તેહને વિષે. વં વસવો. ડં  
 કરે છે. સેં તેહવાત્તાં. મંં હે ભગવન્ત ! કહો સ્યું કરો માનું. મંં      કહે છે. હમહિજ  
 ગોં હે ગૌતમ ! જાં જેહને ઘણાં લોક ગ્રામાદિક સમ્બન્ધી જાં અન્યોન્ય  
 માંહી. એં એહવો અતિશય સ્યું. માં હમ કહે છે. જાં      શબ્દ થી અનેરા પિણ બોલ.  
 જાં એક સૌ ઘર તેહને વિષે. વં વસવો. ડં કરે છે. સં સત્ય સાંચો જણ છે. એં એહવા તે  
 લોક કહે છે. એં તે એહ અર્થ. જાં હે પિણ નિશ્ચય સહિત. ગોં હે ગૌતમ ! એં એહવો સમ-  
      કહું છું. જાં      શબ્દ થી અનેરા બોલ જાણવા. એં એહવો પરુપું છું. એયો પ્રકારે.  
 જાં નિશ્ચય. જાં અમ્બડ નામા પરિઆજક સન્યાસી. જાં      શબ્દ થી વીજાઈ બોલ. વં  
 વાસો. તે. ડં કરે છે. સેં તે. કેં કેળે અર્થે પ્રયોજને. મંં હે      ! હમ. હું કહી હું  
 છે. જાં      પરિઆજક સન્યાસી છે. તે. જાં જાવ શબ્દ થી વીજાઈ બોલ. વં વસતિ  
 વાસો. ડં કરે છે. ગોં હે ગૌતમ ! જાં      પરિઆજક સન્યાસી. એં પ્રકૃતિ સ્વભાવે  
 મદ્રીક પરિઆમે કરી. જાં      શબ્દ થી વીજાઈ બોલ. વિં વિનીત પણા કરી નેં. જાં જાં  
 જાં ઉપવાસે કરી નેં. જાં વિચાલે તપ મુકાવે નહીં તં એહવો તપ તેહ રૂપ કર્મ કર્તવ્યે કરી.  
 ડં વાહુ વેદું ઝંબી કરી નેં. જાં સૂર્ય ના સામુહી દષ્ટિ માંહો નેં. જાં      ની ધૂમિ  
 તેહ માહી રૂંટ ના ચૂલાદિક ની ધરતી નેં વિષે. જાં આતાપના      થકાં શરીર નેં વિષે વલેશ  
     કર્મ સન્તાપતા      જાં શુભ મનોહર જીવ સમ્બન્ધી. એં પરિઆમ માવ વિષે  
 કરી.      મહો. અધ્યવસાય મન ના ભાવાર્થ વિશેષે કરી. સેં લેશ્યા તેજૂ લેશ્યાવિકે  
 વિશુદ્ધ નિર્મલ તપ કરી નેં. જાં અનયથા કોઈ થક      ાવને વિષે જે જ્ઞાન ઉપજાવણહાર છે  
 તેહને. આચરણ વિગ્ન ના કરણહાર જે કર્મ જ્ઞાના ધરણીય ઘાતાદિક પાપ નોં. જાં કોઈ જય  
     કોઈ એક      ત્ત પામ્યા તિણે કરી. હં રૂંટ્યુ અમુક અથવા અનેરો. અમુકોજ એહવું  
 જ નિશ્ચય કરિવો. સ્યું છું      મંં ટા નેં વિષે વેલહી હાલે છે. તિમ કોઈ વિચાર. એં પુરુષ-જમાયો

अयो छै चीज छै इत्यादिक निग्रह रूप इत्यादिक पूर्वोक्त बोलना- वि० धीर्य  
 बीज नी शक्ति-वि रूप लब्धि-विशेष- वि० वैक्रिय-शक्ति-रूप तेहनी लब्धि विशेष-  
 क० अवधि मयादा सहित जायवा ज्ञानशक्ति रूप नी लब्धि गुण विशेष ते क०  
 प्रकार नी उपनो- त० तिवारे पछे से० ते परिवाजक ता० पूर्वोक्त धीर्य लब्धि जे उपनी  
 तिपो करी वैक्रिय लब्धि रूप करवा सम्बन्धी तिपो करी तथा ओ० अवधि मयादा सहित  
 ते अवधि ज्ञान रूप लब्धि तिपो करी स० प्रकार ए त्रिण ने विषे उपनी ते जन वि-  
 स्मरण हेतु क० कंपिलपुर नामा नगर ने विषे एक सौ गृहस्थ ना घर तिहां जाव अकी  
 अनेराई व० वसति वास करी रहियो करे छै ते तिण अर्थ कहिए छै गो०  
 इम कहिए छै सन्यासी जा० शब्द थी बीजाद बोल वसति करी रहियो  
 करे छै

अथ अठे प - सन्यासी वैक्रिय लब्धि फोड़ी सौ घरां पारणौ कियो  
 सौ तो लियो ते लोकां ने विस्मय-उपजावण निमित्त कह्यो, पिण धर्म  
 दिपावण निमित्त, तो तो नथी । प विस्मय ते आश्चर्य उपजावण निमित्त प  
 कियो छै । इम लब्धि फोड़यां धर्म दिपे नहीं । भगवान् रे २ साधु  
 लब्धि धारी त्यां उपदेश देई तथा धर्म चर्चा करी करी ने मार्ग  
 दिपायो पिण वैक्रिय लब्धि फोड़ी ने मार्ग दिपायो चाल्यो नहीं । बाहा हुवे तो  
 विचारि जो तो ।

## इति ७ बोल सम्पूर्णा ।

विस्मय उपजायां तो चौमासिक प्रायश्चित्त कह्यो छै । ते  
 लिखिये छै ।

भिक्षु परं विम्हावेइ, विम्हावतं साइजइ ।

( निपाय उ० ११ बो० १७२ )

जे० जे. मि० साधु साध्वी प० अनेरा ने विस्मय उपजावे वि० तथा विस्मय  
 ने सा० अनुमोदे तेहने पूर्ववत् चातुर्मासिक प्रायश्चित्त आवे

अथ इहां पिण कह्यो—जे साधु अनेरा नें विस्मय उपजावे विस्मय  
 वतां ने अनुमोदे तो चातुर्मासिक दंड आवे । जो ए कार्य में धर्म हुवे तो  
 श्रित्त ू कह्यो । जे साधुने अनेरा नें विस्मय उपजायां प्रायश्चित्त आवे तो  
 लोकां ने विस्मय उपजावा नें ॥ सौ घरां धारणो कियो तिण में धर्म किम  
 कहिए । जिम साधु नें काचो पाणी पीघां प्रायश्चित्त आवे तो म्बड काचो  
 पाणी पीघो तिण नें धर्म किम हुवे । तिम विस्मय उपजायां पिण जाणवो ।  
 विस्मय उपजावता नें अनुमोद्यां चातुर्मासिक दंड कह्यो, तो विस्मय उपज  
 ॥ नें धर्म किम हुवे । श्री तीर्थङ्कर देवे तो ए कार्य अनुमोद्यां दंड कह्यो । तो  
 ते ॥ कियां धर्मपुण्य किम कहिये । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ८ बोल सम्पूर्णा ।

इति लब्धि-अधिकारः ।



## अथ प्रायश्चित्ताधिकारः ।

तिवारे कई अज्ञानी जीव वैक्रिय. तेजु, आहारिक, लब्धि फोड्याँ से दोष नहीं। ते कहे—जो ए लब्धि फोड्याँ दोष ढागे तो भगवान्, श्रित्त काई लियो ते प्रायश्चित्त सूत्र में क्यूँ नहीं कह्यो। तेहनो —सूत्र में तो साधाँ दोष सेव्या त्यांरो प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं। पिण लिया इज होसी। सीहो अनगार मोटे २ शब्दे रोयो तेहनों पिण प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं। ते लिखिये छै ।

तएणं गीह णगारस्सं ज्झां तरियाए  
वट्टमाणस्स मेवा रूवे जाव समुप्पज्जित्था एवं लु  
धम्ममारिस्स धम्मोवए सगस्स समणस्स भगवओ महा-  
वीरस्स सरीरगंसि विउले रोगायंके पडिभूए उज्जले जाव छ-  
उमत्थे चैव रेस्सइ वदिस्संति यणं णउत्थि  
छउमत्थ चैव कालगए इमेणं एयारूवेणं महया मणोमाण-  
सिएणं भिभूए णे यावण भूमीओ पच्चोरुभइ पच्चो-  
रुभइत्ता जेणेव युया च्छए, तेणेव उवागच्छइ २ त्ता  
। या कच्छयं तो २ णुप्पविसइ अणुप्पविसइत्ता महया  
हया देणं हु हुस्स परुणो ॥१४३॥

( भगवती श० ५१ )

त० तिवारे. त० सिण सीहा अणुगार नं. ज्झा० छ्यान में बैठा नें. अ० एह.  
वतारूप. जा० भावतु विचार हुवो. ए० एतावता रूपः म० संहारे. ध० धर्माचार्य. धर्मो-



पदेयक. स० भ्रमण भगवन्त महावीर ना शरीर नें विषे, वि० विपुल. रो० रोगान्तक. पा०  
 दुवो. उ० उज्ज्वल. जा० यावत्. का० करसी. व० बोलसी. अ० अन्यतीक्ष्ण.  
 छ० मैं काल कीधो, इ० ए० ए० एहवो. म० महा. मा० मानसिक दुःख. ते मन में विषे  
 दुःख है पिण वचने करी बाहिर प्रकाश्यों नहीं ते दुःख करी. अ० ते थको सिंह  
 साधु. अ० आतापना भूमि थकी. प० पाछो. ऊ० ऊसरे. उ० ऊसरी नें. जे० जिहां. मा०  
 मालुया कच्छ है वन गहन है तिहां उ० आवे आवी नें. मा० मालुया कच्छ ना. अ० मच्चो-  
 मध्य. अ० तेहनें विषे प्रवेश करी नें. म० मोटे २. स० शब्दे करी नें. कु० शब्दे करी  
 नें हदन करई ।

इहां सीहो अनगार ध्यान ध्यावतां मैं मानसिक दुःख  
 ऊपनो । मालुया क मैं जाइ मोटे २ शब्दे-रोयो पाड़ी एहवो कह्यो । पिण  
 तेहनों प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं पिण लियो होसी । तिम भगवन्त लब्धि फोड़ी  
 गोशाला नें बचायो. तेहनों पिण प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं पिण लियो इज होसी ।  
 डाहा हुये तो विचारि जोइजो ।

## इति १ बोल सम्पूर्णा ।

तथा बली ते साधु ( अति ) पाणी में पाती तराई । तेहनों पिण  
 चित्त चाल्यो नहीं । ते पाठ लिखिये ।

तएणं से अइमुत्ते कुमार समणे वाहयं वहयमाणं  
 १ त्ता दियापालिं वंधइ २ णावियामे २ नाविआवि  
 वणावमयं पडिग्ग हयं उदगंसि पवाहमाणे अभिरमइ तं च  
 १ रा अदक्ख ।

( ति श० ५ उ० ४ )

त० तिवारे. 'से० ते. अ० अइमुत्तो कुमार. स० भ्रमण. बा० पाइलो पाणी नों. व०  
 बहलो थको. पा० देव. देखी नें. मा० सादिये पालि बांधी. खा० मौका ए माहरी एहवी विक-

करे. या० नाविक ना वाइक सिया नी परे अइमुत्तो मुनि. या० नावसंयपदको  
प्रते उ० उदक ने विषे प० प्रवाहतो नावानो परे पढ्यो चलावतो अ० अभिरमे छे. रमयप्रिया  
ते व ना चाला धको, त० ते प्रति स्थविर देखता इभा.

अमुत्ते अनगर पाणी रो वाहलो बहतो देखी पाल बांधी पात्री  
न पाणी में नावानी परे तरावा लागो । एहवूं स्थविर देखी भग ने पूछयो ।  
अइमुत्तो केतले भवे मोक्ष जास्ये । भगवान् कह्यो इणहिज भवे मोक्ष जास्ये ।  
एहनी हीलना मत करो अग्लानिपणे सेवा व्यावच करो । एहवूं कह्यो चाल्यो पिण  
पाणी में पाली तराई तेहनों प्रायश्चित्त न चाल्यो पिण लियो इज होसी । तिम  
भगवान् लब्धि फोड़ी-तेहनो पिण प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं । पिण लियो इज होसी ।  
इहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति २ बोल सम्पूर्णा ।

बली रहनेमी राजमती ने विषय रूप बोल्यो । तेहनों इंड न  
चाल्यो । ते लिखिये छे ।

एहिता भंजिमो भोए. माणुस्सं खु दुल्लहं  
भुत्तभोगी पुणो पच्छा. जिण मगं चरिस्समो ॥३८॥

( उत्तराध्ययन अ० २२. गा० ३८ )

ए० आप. ता० पहिलू. सु० आपणवेइ भोगपी. भो० भोग. मा० मनुष्य नो भव  
सु० निश्चय करी. छ० अतिहि. दु० दुर्लभ छे. भु० भुक्त भोगी यह ने. त० तिवारे पछे. जि०  
जिन मार्ग ने. च० आपण वेइ आचरसयां ।

अथ इहां कह्यो— ती रो रूप देखी रहनेमी बोल्यो । हे सुन्दरि !  
आव आपां भोग भोगवां भोग भोगवी पछे बली दीक्षा लेस्यां । एहवा  
विषय रूप दुष्ट वचन बोल्यो । तेहनों स्यं प्रायश्चित्त लीधो । मांसिक थी

६ मासी-ताईं प्रायश्चि क है । माहिलो काई प्रायश्चि लीधो । तथा दश प्रायश्चित्त कहा है । त्यां माहिलो किसो प्रायश्चित्त लीधो । रहनेमी नें पिण काई प्रायश्चित्त चाह्यो नहीं । पिण लियो इज होसी । डाहा हुवे तो विचारि जोइसो ।

### इति ३ बोल सम्पूर्णा ।

तथा धर्म घोष ना साधना नागश्री नें निन्दी ते लिखिये है ।

तं धिरत्थुणं अज्जो नागसिरीए । हणीए धन्नाए  
अपुन्नाए. जाव निंवोलियाए. जाएणं तहारूवे । हु । हु  
रूवे धम्मरूइ अणगारे मास णंसि पारणगंसि । लइएणं  
जाव गाढेणं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए. ॥२२॥  
ततेणं ते णा णिगंथा धम्मघोषाणं थेराणं । तिए एय  
महुं सोच्चा णिसम्म चंपाए नयरीए सिं डग तिग जाव  
हुजणस्स एव । इक्खति धिरत्थुणं देवाणुप्पिया । णाग-  
सिरीए माहणीए. जाव णिंवोळि याए जएणं तहा रूवे साहु  
हु रूवे सालतिएणं जीविया गो ववरोवेति ॥२३॥ ततेणं  
तेसिं समणायणं अंतिए एयमहुं सोच्चा णि बहुजणो  
एणमणस्स एव माइव ति एवं भासति धिरत्थुणं णाग-  
सिरीए । णीए । व ववरोवेति ॥२४॥

( शाता अ० १६ )

त० ते माटे. धि० चिह्नार हुओ. पाहो ते नाग श्री माहणी नें. अ० य अ०  
अपुण्य दोर्भागिनी जा० यावत्. शि० निवोली नो परे. महा जिके कह्यो व्यञ्जन. जा०

जेयोः तथा रूप उत्तम साधु नें. मोटो साधु. ध० धर्म रचि मोटो अनगर साधु. मा०  
समय नें पारणोः सा० शरद नो कहुवो स्नेह करी समारथो ते विपभूत देई नें. अ०  
अकाले. चे० निश्चय. जी० जीवितव्य थी चुकाव्यो इमं कहाँ तें साधु गो. त० तिवारे.  
ते भ्रमण निर्गन्ध साधु. ध० धर्म घोष. ये० स्थविर नें. अ० समीपे. ए० ए अर्थ. सी०  
सांभली. शि० अवधारी नें ते साधु. च० चम्पा नगरी नें त्रिक चौक चत्वर बीच मार्गें. जा०  
यावत. व० घणा लोका नें. ए० इम भापे कहे. धि० धिक्कार हुवो अरे नाग श्री ब्राह्मणी नें.

अपुण्य दौर्भागिणी जा० यावत. शि० निवोली सम कहुवो स्यात्तव्य व्यंजन. जा० जेजे  
त० महा साधु. गुणवन्त मास खमण नें पारणो कहुवो तूवो. सा० सालस्य . बहि-  
रावी नें. जी० जीवितव्य थी रहित कीधो. साधु मारथो. त० तिवारे. ते० ते. स० भ्रमण.  
अ० समीपे ए बचन. सो. सांभली नें. शि० अवधारी नें. व० घणा लोक माहों माहो. ए०  
इम कहे. ए० इम भावे ए बात कहे. धि० धिक्कार हुवो रे नाग श्री ब्राह्मणी नें भ्रमण अपुण्य  
दौर्भागिनी जेयो साधु मारथो जीवितव्य थी रहित कियो ।

अटे धर्मघोष तो साधानें कह्यो । जे श्री पापिनी धर्म रचि  
नें कहुवो तुम्हो बहिरायो । तेहथी करी धर्मरचि सर्वार्थ सिद्ध में गी ।  
पिण इम न कह्यो श्री नें हेलो निन्दो इम आम्हा न दीधी । अने गुरां री  
विना इ साधानें वाजार में तीन मार्ग तथा घणा पंथ मिले तिहां जाइ नें नागभी नें  
हेली निन्दी । एहवो कार्य साधानें तो करवो नहीं । अने ए साधानें  
क्रियो । अने निशीय उ० १३ में कह्यो गाढो अकरो तपी नें ( क्रोध करीने ) कठोर  
बोले तो चौमासी प्रायश्चित्त आवे तो गुरां री आम्हा विना साधानें तपी नें  
ए कीधो । तेहनों पिण श्रित्त चाल्यो नहीं । पिण लियो होसी ।  
तिम भगवान् लब्धि फोड़ी—तेहनों प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं । पिण लियो होसी ।  
हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ४ बोल सम्पूर्णा ।

तथा सै अत्रि हील्यो पढ्यो । तेहनों पिण प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं । ते  
लि ७ ।

ततेणं से सेलए तंसि रोयायंकंसि उवसंतंसि समाणं  
 सितंसिबिउल असणं पाणं खाइमं साइमं मज्जपाणएय  
 मुच्छिये गढिए गिछे अज्झोववन्ने पासत्थे पासत्थ विहारी  
 एवं उसन्ने कुसीले पमत्ते संसत्त विहारी उवलच्छ पीढ फल-  
 ग सेजा संथारए पमत्तेवावि विहरइ नो संचाएइ फासुए-  
 सरिणज्ज पीढ फलग पच्चप्पिणित्ता मंडडुयं चरायं आपुच्छेत्ता  
 वहिया जणवय विहारं वित्तए ॥७४॥

(ज्ञाता अ० ५)

स० तिबारे से० ते सेलकाचार्य तं० ते रोग आतंक उ० उपपन्ना गयी यकी रोग  
 क्ष० त शरीर सम्बन्धी उपधर्मो तं० ते वि० विस्तीर्ण धर्मो पाणी लादिन  
 आदि देई ने राज पिढ ने विषे तथा मद्य पान ने विषे मु० मूच्छा पाप्मो ग० अत्यन्त  
 मूच्छयो गि० गुप्त्र धर्मो अ० तन मय मन यह रह्यो उ० याकतो चारित्र क्रिया इ आसत्  
 थयो विहार थी, हम ज्ञान दर्शनादिक आचार मूकी पासत्थो रह्यो भाठो ज्ञानादिक आचार  
 तेहनों प० पांच विध प्रमादे करी युक्त धर्मो स० कदाचित् क्रिया कदाचित् पासत्थो  
 तेहवो ही विहार है जेहनों उ० श्रुत बन्ध काले पीढ फलक शय्या सन्यारो सेवो है तेहनों  
 प० प्रमादी धर्मो सदा नारवा थी पहवो बिचरे यो० पिण समर्थ नहीं फा० प्रायुक्त एषकी  
 पीडादिक पाडा सूरी ने राजा प्रते आ० पृथ्वी ने व० बाहिर देश मध्ये विहार करिना न  
 हुवो

अथ मठे सेलक ने उसन्नो पासत्थो कुसीलियो प्रमादी संसत्तो कह्यो ।  
 पाडिहारिया पीढ फलक शय्या सन्यारो आपी विहार करवा असमर्थ कह्यो ।  
 पहनों प्रायश्चित्त आवे के न आवे । ए तो प्रत्यक्ष पासत्थो कुसीलिया पणा नो  
 ढीलापणा नो श्रित्त आवे । पिण में सेलक ने प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं । पिण  
 लियो इज होसी ।

वली से ज्यूं ढीलो तिण ने हेलवा निन्दवा योग्य कह्यो । ते  
 लिखिये ॥

एवा मेव मण्णाउसो जाव गिगंथो २ असणो  
जाव संथारण. पमत्ते विहरइ. एणं इह लोए चव बहुणं सस-  
णाणं ४ हीलणिज्जे सारो भाणियव्वो ॥८२॥

(शाता.अ० ५)

ए० इयं दृष्टान्त. स० हे आयावान्त अमणां ! जा० जिहां लगे. णि० म्हारो साधु  
॥ उ० उसन्नो पासत्थो हुवे. जा० यावत्. सं० संयारा नें विचे. प० प्रमादी पणे वि०  
विचे. से० ते. इ० इय मनुष्य लोक नें विचे. व० घणा साधु साध्वी आवक आविका माहि.  
हि० हेलवा निन्दवा योग्य. सं० चार गति रूप संसारे भ्रमण कहिवो.

इहां भगवन्ते सांधां नें कह्यो—जे म्हारो साधु साध्वी सेलक ज्यूं उसन्नो  
पासत्थो ढीलो हुवे, ते ४ तीर्थां में हेलवा योग्य निन्दवा योग्य छै । यावत् अनन्त  
संसारी हुवे । तो जे सेलक नें हेलवा योग्य निन्दवा योग्य कह्यो, उसन्नो पासत्थो  
कुशीलियो प्रमादी संसत्तो कह्यो । पहलों पिण प्रायश्चित्त चाह्यो नहीं । पिण  
लियो इज हुस्ये । तथा सेलक नी व्यावच पंथक करी । तेहनों पिण प्रायश्चित्त  
आवे । ते किम्—ए सेलक तो उसन्नो पासत्थो कह्यो । अने निशीथ. उद्देश्य ६५  
पासत्था नें अशनादिक दीर्घा चौमासी प्रायश्चित्त कह्यो । ते माटे ते पाठ  
लिखिये छै ।

जे भिक्षू पासत्थस्स असणं वा ४ देइ देयंत वा  
साइज्जइ ।

(निशीथ उ० १५ बो० ८०)

जे० जे कोई साधु साध्वी. पा० पासत्था नें. अ० अशनादिक ४-प्रमाहार. दे० देवे. दे०  
देवता नें अनुमोदे.

अथ अठे पासत्था नें अशनादिक देवे देता नें अनुमोदे तो चौमासी दंड  
कह्यो अने सेलक नें शाता में पासत्थो कह्यो । ते सेलक पासत्था कुशीलिया नें

अशनादिक ४ पं. आपी दीधा । ते माटे पं. नें पिण चौमासी प्रायश्चित्त निशीथ में कहाँ ते न्याय जोह्ये । ते पंथक नों पिण प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं । पिण लियो इज होसी । केतला एक अजाण, सेलक नी व्यावच पं. कीधी तिण में धर्म कहे छै । ते कहे ४६६ साधां सेलक नी व्यावच करवा पंथक ने थाप्यो ते माटे धर्म छै । जो धर्म न हुवे तो पंथक नें व्यावच करवा राखता नहीं । इम कहे तेहनों उत्तर—जे ए पंथक ने सेलक नी व्यावच करवा थाप्यो, जे मेला हुंता, आहार पाणी तो तोह्यो न हुंतो ते पिण रो छांदो छै । पूर्वली प्रीति माटे थाप्यो । जो पंथक व्यावच करी तिण में धर्म हुवे तो ४६६ पोते छोड़ी क्यूं गया । त्यां एम विचारो—जे श्रमण निर्ग्रन्थ ने पासत्था पणो न कल्ये ते माटे आपां ने विहार करवो ध्येय छै । इम ४६६ साधां मनसूवो कीधी । ते मनसूवा में पिण पंथक न हुंतो । ते माटे पंथक नें थाप्यो कहाँ । अने ४६६ साधां सेलक नें पूछी विहार कीधी पिण वंदना न कीधी । जे सेलक नी व्यावच में धर्म जाने तो वंदना क्यूं न कीधी । पछे सेलक विहार कियो । तिचारे मं. ने पूछो ने विहार कियो छै ते माटे पूछवा रो कारण नहीं । अने सेलक नें ४६६ चेला वन्दना पिण न कीधी । ते माटे पंथक सेलक ने वन्दना करी व्यावच करी तिण में धर्म नहीं । जे निशीथ ३० १३ में कहाँ—उसन्ना पासत्था ने वांटे तो चौमासी आवे । तो सेलक उसन्ना पासत्था ने पंथक बांधो ते निशीथ ने चौमासी दंड आवे ते पंथक नें पिण प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं । पिण लियो इज हुस्ये । हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ५ वोल सम्पूर्णा ।

। सुमंगल अनगार ५ मारसी तेहने पिण दंड चाल्यो नहीं । ते पाठ लिखिये छै ।

तएणं से सुमंगले अणगारे मलवाहणे णं राणा  
तच्चपि रहारि रेणं णोह्वाविण स णे सुरुत्ते जावमिसि

मिसेमाणे भूमीओ पओ इ पच्चोरुभइत्ता तेया  
समुग्घाएणं समोहणहिति गोहणहिति पयाइं  
पच्चो किहिति पच्चो किहिंत्ता विमलवाहणं रायं सहयं  
सरहं हियं तवेणं तेएणं भा सिं करेहिति  
॥१८५॥ सुमंगलेणं भंते ! अणगारे वि वाहणं रायं सहयं  
भासरारिं रे हिं गच्छहिति हिं उववज्जेहिति.  
गो० सुमंगले णगारे विमलवाहने रायं सहयं जाव  
भासरारिं रेत्ता बहूहिं चउत्थ छट्ठुम दसम दुवालस्स व  
विचित्तेहिं तवो म्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं साइं  
। ए परिथागं उणिहिति बहू २ त्ता सियाए संले-  
णाए ढिं भ इ एसणाइं जाव छेदेत्ता लोइय  
पडिक्खते समाहियत्ते उ चंदिम सूरिय जाव गेवेज्ज गवि-  
माणे वीईवइत्ता सव्वट्ठसि महाविमाणे देवताए  
वज्जिहिति ॥

( अंगस्ती सू० १५ )

त० तिवारे. ते० ते छमंगल . वि० विमल . २० . त० तीजी बार.  
२० २थ. सि० गिरे करी नें. गो० उच्छाएया छता. आ० प्रोधवन्त. जा० यावत्. मिसिमिसा-  
. अ० आतापना भूमि थी. प० पाछो कसरे कसरी नें. ते० तेज समुद्रवात. स०  
करस्ये करी नें. स० . प० . प० पाछे कसरे. स० . पाछा  
कसरी ने. वि० विमल . २० . प्रते. स० घोड़ा रथ . स० . ती साथे. तें  
करी नें. स० तप. राशि करस्ये. छ० छमंगल. भ० ! अ० अन-  
गार. वि० विमल . प्रते. स० घोड़ा सहित. जा० यावत्. भ० . राशि करी नें.  
क० किहां. ग० जोस्ये. क० किहां उपजस्ये. गो० हे गौतम ! छ० छमंगल. अ०  
वि० विमल . राजा प्रते. स० घोड़ा सहित. जा० . भ० . राशि करी नें. २०  
. २० . २० छट्ठ. अ० . २० दशम. जा० यावत्. वि० विमल. स० तप. कर्म करी



ने. अ० आपण आत्मा प्रते भावी ने. च० घणा वर्ष. आ० चारित्र पाली ने. मा० मास नी.

स० सलेखणाई. स० साठ. भ० भात पाणी. अ० अणसणा. यावत् छेदी ने. आ० आलोइ. प० पडिकमे. स० समाधि प्राप्ति. उ० ऊर्ध्व चन्द्रमा. जा० यावत्. ग्रै० ग्रैव्यक. विवानवालना. स० शयन प्रते. वि० व्यक्ति क्रमी ने. सर्वार्थ सिद्धि. म० महा विमान ने विषे. दे० देवता पणो. उ० उपजस्ये.

अथ इम कह्यो—गोशाला रो जीव विमल वाहन राजा सुमंगल अन-  
रे माथे तीन चार रथ फेरसी । तिवारे सुमंगल अनगार कोथो थको तेजु  
लेश्या मेली भस्म करसी । ते सुमंगल अनगार सर्वार्थसिद्धि जइ महावदी में मोक्ष  
जासी । इहां सुमंगल अनगार घोड़ा सारथी राजा रथ सहित सर्व ने  
करसी । एहवूं कह्यो पिण तेहनों प्रायश्चित्त चाल्यो नथी । जिम मनुष्य मासा  
एहवो मोटो अकार्य कीधो तेहनों पिण प्रायश्चित्त चाल्यो न थी । तिम भगवन्ते  
लब्धि फोड़ी तेहनों पिण प्रायश्चित्त चाल्यो न थी । जिम सुमंगल आराधक  
॥ सर्वार्थ सिद्धि नी नति कही । ते माटे जाणीइ प्रायश्चित्त लियो इज होसी ।  
तिम लब्धि फोड्यां उत्कृष्टी ५ क्रिया कही ते माटे इम जाणीइ भगवन्त लब्धि  
फोड़ी तेहनों पिण प्रायश्चित्त लियो इज हुस्यै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ६ बोल सम्पूर्णा ।

घली केतला . कहे—सुमंगल अनगार ने तो “आलोइय पडिककंते”  
ए कह्यो । तिणसूं लब्धि फोड़ी तिणरो श्चित्त चाल्यो । पिण भगवन्त ने  
प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं कहे तेहनों २—“आलोइय पडिककंते” ए लब्धि  
फोड़ी तेहनों नहीं छे । ए तो घणा वर्षा चारित्र पाली मास नों संधारो करी  
पछे “आलोइय पडिककंते” ए पाठ कह्यो । ते तो समचे पाठ छेहला अवसर नों  
चाल्यो । ए छेहला अवसर नों “आलोइय पडिककंते” तो घणे ठिकाणे  
कह्यो छे । ते केतला एक लिखिये छे ।

ततेणं से धए णंगारे समणस्स भगवओ महा-  
वीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइय माइयाइं एक्का-  
र 'गाइं' हिज्झित्ता बहु पडिपुण्णाइं दुवालस्स वासाइं  
।मणए परियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्तायां  
भूसित्ता हिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय पडि-  
क्कंते समाहिपत्ते आणपुव्वीए कालंगए ।

( भगवती श० २ उ० १ )

त० तिवारे. से० ते. ख० स्कंदक. अ० अनंगार. स० अमण. भ० भंगवन्त. म०  
महावीर ना. , त० तथा रूप तेहवा स्थविर नें. अ० समीपे. सा० आदि देई नें. प० ११  
अंग प्रति. अ० भणी नें. व० वणू प्रतिपूर्ण. दु० १२. व० वष. प० चारित्र पर्याय. पा० पाली  
नें. मा० मास नो सलेखणाइं मास दिवस नें अनशनं. अ० आत्मा थकी कर्म क्षीण करी नें.  
स० साठि दिन राति नी भत्ति छै तेहना त्याग थकी साठि. भत्ति अनशनं त्यजी नें छेदीने.  
आ० अत ना अतिचार गुरु नें संभलावी नें तेहनों भिच्छामि दुक्कं देई नें. समाधि पाम्यो अनु-  
क्रमे पाम्यो.

अथ अठे स्कंदक संधारो कियो तेहनों पिण “आलोइय पडिक्कंते”  
कह्यो । तो जे संधारो करतीं वेलां तो ५ मह आरोप्या एह्वो पांठ कह्यो ।  
पछे संधारा में इण स्कंदके किसी लब्धि फोड़ी तेहनी आलोवणा कही । पिण ए तो  
।ण पने दोष लागां री शंका हुवे तेहनें ए जणाय छै । पिण जाण में दोष  
लागवे तेहनें ए पाठ नहीं दीसै । तिम सुमंगल रे अजाण दोष रो ए छै पिण  
लब्धि फोड़ी तिण री आलोवणा चाली नहीं । । हुवे तो विचारि जोइजो ।

**इति ७ बोल सम्पूर्णा ।**

तथा ति अनंगार पिण संधारो कियो तेहनें आलोइय कह्यो । ते  
लिखिये छै ।

एवं — देवाणुप्पियाणं अंतेवासी ती नामं  
 णगारे पगइ भदए जाव विणीए छट्ठं छट्ठेणं णिक्खित्तेणं  
 वो कम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे वहु पडिपुण्णाइं अट्ठ  
 वच्छराइं सामणण परियाइं पाउणित्ता मांसियाए संलेह-  
 णाए अत्ताणं भूसित्ता द्विं भुत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता  
 आलोइय पडिक्कंते स हिपत्ते । किच्चा रोहम्मे कप्पे  
 यंसि विमाणंहि उववायस भाए देव सयणज्जंसि देव  
 दूसं रिए असंखेज्ज भाग मेत्तीए ओगाहणाए  
 देविदंस देवरणो सामाणिय देवत्ताए उववणो ।

( भगवती श० ३ उ० १ )

पृ० इम, खलु, निश्चय, देवानुप्रिय रो, अ० अन्ते वासी, ती० तिष्यक नाम अशगार,  
 प० प्रकृति भद्रीके, जा० यावत्, विनीत छ० छठ मत्ति करी, अ० निरन्तर, त० तप कर्म करी,  
 अ० आत्मा ने आवतो थको, बहु प्रतिपूर्णा वर्ष, सा० दीक्षा पर्याय, पा० पाली नें,  
 मास नो, स० सलेखया करी नें, अ० आत्मा नें सेवी नें, स० साठि पाणी ते अनन्यने,  
 छे० छेदी नें, आलोई नें मनना शल्य नें प० अतिचार ने पडिकमी नें, मन नें पणे  
 समाधि पास्या थकां, का० करी नें, सो० सौधर्म देवलोके, स० आपना विमान नें  
 विषे, उ० उप सभा में, दे० देवशय्या में, दे० वदूय्य रे में, अज्जुल ना  
 अवगाहना, स० शकेन्द्र, देवेन्द्र, देव राजा रे सामानिक देव पणे, उ० हुवो ।  
 तिष्यक अ ८ चारित्र पाली मास रो संथारो कियो तिहां  
 छेह्हे "आलोइय पडिक्कंते" ॥ एणे किसी लब्धि फोड़ी तेहनी आलो  
 कधी । हुवे तो विचारि जाइजो ।

इति ८ बोल सम्पूर्णा ।

कार्षिक सेठ १८ पूर्व भणी १२ चारित्र पाली संथारो कियो  
 तेहने पिण आलोइय कछो । ते लिखिये ।

तएणं से तिण्ण गगारे ठाणे सुव्वयस्स अरहओ  
 रुवाणं थेराणं तियं सामाइय माइयाइ चउदस्स-  
 पुव्वाइ हिज्जइ २ वहुइ चउत्थ छट्ठम अप्पाणं  
 वे ए वहु पड़ि पुण्णाइ दुव साइ मग्गण  
 परियाणं पाउणइ २ चा मासियाए संलेहणाए अत्ताणं  
 भासेइ २ स भत्ताइ णसणाइ छेदेइ छेदेइत्ता  
 आलोइय पडिक्कंते जाव कि सोहम्म कप्पं सोहम्म  
 वडिसए विमाणो उववाय सभाए देवसयणिज्जा स जाव सक्के  
 देविंदत्ताए उववणो ।

( भावती १८ उ० ३ )

त० तिबारे. से० ते. क० कार्तिक से० अश्विनार. सु० मुनि अरिहत ना. त० तथा  
 रूप. ये० स्थविरां रे कने-सू. सासायकादि षडह पूर्व नों करी ने. व० चतुर्थ  
 भत्ति क्त यावत्. अन आत्मा ने म थको. व० बहुत प्रतिपत्तों. दु० १२ वर्ष ती  
 री प्याय पाली ने. नी सत्ते सू. अ० ने दुर्वल करी ने. स० साठि  
 अ० छे० छेदे छेदी ने. आलोई ने. जा० यावत्. मासे करी ने.  
 सो० सौघर्म देवलोक ने विवे. सौघर्म विमान ने विवे. ने विवे. दे० देव  
 ने विवे. दे० देवेन्द्र पद्मे हुवो ।

कार्तिक ने पिण "आलोइय पडिक्कंते" प छेहडे  
 कह्यो । एणे किसी लब्धि फोड़ी-जेह नी जेवणा कही । कप्पवड्डीसिय  
 उपाङ्ग में ने पिण "आलोइय पडिक्कंते" कह्यो । इम घनादिक  
 रे घणे ठिकाणे ८ डे शब्द में " ओइय पडिक्कंते" कह्यो छै ।  
 दशा में आनन्द कामदेवादिक आ ने पिण छेहडे "आलोइय  
 पडिक्कंते" कह्यो छै । तिम सुम ने पिण पहिलां तो वर्षां चारित  
 बाव्यो ते कह्यो. एछे सं नों कहि छेहडे "आलोइय पडि ते"  
 कह्यो । पिण लब्धि फोड़वा रो प्रायश्चित्ता नही । ओ

फोड़ण रा प्रायश्चित्त रो पाठ हुवे तो हम कहिता "तस्स ठाणस्स आलोइय पडिक्कंते" पिण तो तो नथी । ते माटे लव्हि फोड़ण रो प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं । भगवती श० २० उ० ६ जंघा चारण विद्या चारण लव्हि फोड़े तेहनों प्रायश्चित्त चाल्यो छै । तिहां पढ़वो पाठ कह्यो छै । "तस्स ठाणस्स आलोइय पडि 'ते' हम कह्यो । तथा भगवती श० ३ उ० ४ वैक्रिय करे तेहनों श्रित कह्यो । तिहां पिण "तस्स ठाण आलोइय पडिक्कंते" हम पाठ कह्यो । लव्हि फोड़ी ते स्थानक आलोयां आराधक कहा । अने सुमंगल ने अधिकारे " ठाण " पाठ नथी । ते माटे लव्हि फोड़ण रो प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं । जे सीहो अगगार मोटे २ शब्दे रोयो चांग पाड़ी ते अकल्पनीक कार्य छै । तेहनों प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं । अइमुत्ते पाणी में पात्री तराई प पिण कार्य साधु ने करवा जोग नहीं । उपयोग चूक ने कियो । तेहने पिण प्रायश्चित्त जोइये पिण चाल्यो नहीं । रहनेमी राजमती ने कह्यो, हे सुन्दरि ! आपां संसार ना काम भोग भोगवी भुक्त भोगी थइ पछे बली दीक्षा लेस्यां । प पिण वचन महा अयोग्य पापकारी छै । तेहनों पिण दंड चाल्यो नहीं । धर्मघोष रा सार्धा गुरां ने बिना पूछ्यां घणा पंथ मिले तिहां नागथी ने हेली निन्दी एइनों पिण दंड चाल्यो नहीं । सेलक ने उसन्नो पासत्थो कुशीलियो संसत्तो प्रमादी कह्यो । वली सेलक जिसो हुवे तिण ने हेलवा योग्य निन्दवा योग्य यावत् अनन्त संसारी कह्यो । ते सेलक ने पिण श्रित्त चाल्यो नहीं । पंथक सेलक पासत्था नी व्यावच करी तेहनों पिण दंड चाल्यो नहीं । सुमंगल अनगार राजा सारथी घोड़ा रथ सहित ने भ्रम करसी तेहने पिण प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं । तिम भगवन्त पिण छल्लस पणे लव्हि फोड़ी गोशाला ने बचायो तेहनों पिण प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं । जिम प पाछे कहा सीहादिक अणगार ने दंड चाल्यो नहीं । पिण लियो इज होस्ये । तिम भगवन्त पिण लव्हि फोड़ी तिण रो दंड चाल्यो नहीं । पिण लियो इज होसी । डाहा हुवे तो विचारि जोइजी ।

## इति ६ बोल सम्पूर्णा ।

केतकी । कहे—गोशाला ने भगवान् लव्हि फोड़ी बचायो । तिण में दोष लागे तो भगवान् में नियंठो कियो हुन्तो । भगवान् में पणे

कुशील नियंठो छै । ते कषाय कुशील नि गो मयडिसेवी गो छै । ते माटे भंगवान् ने दोष लागे नहीं । इम कहे तेहनों उत्तर—कषाय कुशील नियंठा री ताण करे तेहने पूछी जे गौतम स्वामी में किसी नियंठो हुन्तो । गौतम स्वामी में पिण कुशील नियंठो हुन्तो । पिण आनन्द ने घरे बचन में खलाया, बली पडि-कषणो सदा करता, बली गोचरी घी आवी इरियावही पडिकमता जे कषाय कुशील नियंठे दोष लागे इज नहीं । तो गौतम आनन्द ने घरे किम खलाया । बली इरियावहि पडिकमवा रो काई काम । तथा बली कषाय कुशील नियंठे एतला बोल । ते पाठ लिखिये छै ।

कषाय कुसीलेणं पुच्छा. गोयमा । जहणणेणं आहुप-  
यण मायाओ उक्कोसेणं चउदस पुव्वाइं अहिज्जेजा ।

( भावती श० २५ उ० ६ )

क० कषाय कुशील नी पृच्छा. गो० हे गौतम ! ज० जघन्य. अ० पाठ प्रवचन मातृका  
अध्ययन भये. उ० उत्कृष्ट. च० चउद पूर्व नो. पा० अध्ययन करे ।

अथ कह्यो—कषाय कुशील नियंठा री घंणी भणे तो जघन्य ८ प्रवचन  
माता ना उत्कृष्टा १४ पूर्व अने पुलक नियंठा बालो जघन्य ६ मा पूर्व नी तीर्ज  
( वस्तु ) उत्कृष्टा ६ पूर्व वक्कुल अने पडिसेवणा कुशील भणे तो जघन्य ८  
प्रवचन माता ना उत्कृष्टा १० पूर्व भणे । हिवे ज्ञान द्वारे कहे छै ।

कषाय कुसीलेणं पुच्छा. गोयमा । दोसुवा तिसुवा  
चउसुवा होजा । दोसु होजमाणे दोसु आभिणिवो हियणाण  
सुअणाणेसु होजा तिसु होजमाणे तिसु आभिणिवोयियणाण  
अणाण रोहिणाणेसु होजा अहवा तिसु आभिणिवो-  
हियणाण सुअणाण मण पज्जवणाणेसु होजा, चउसु होज-

माणे चउसु आभिणिवोहियणाण सुअणाण गेहिणाण  
मण पजवणाणोसु होजा ॥

( भगवती श० २५ उ० ६ )

क० कपाय कुशील नी पृच्छा. हे गौतम ! दो० वे ने विषे, ति० त्रिण ने विषे. चा० चार ने विषे. दे० वे ज्ञान ने विषे होय. तिवारे. अ० मतिज्ञान ने विषे. सु० श्रुतज्ञान ने विषे, ति० त्रिण ज्ञान ने विषे हुइ तिवारे. आ० मतिज्ञान ने विषे. सु० श्रुतज्ञान ने विषे. ओ० अवधिज्ञान ने विषे हुइ अ० अवधि त्रिण ने विषे हुइ. तिवारे त्रिण. आ० मतिज्ञान ने विषे. सु० श्रुतज्ञान ने विषे. म० मन पर्यव ने विषे. च० चार ने विषे हुइ तिवारे. आ० मतिज्ञान ने विषे. सु० श्रुतज्ञान ने विषे. ओ० अवधि ज्ञान ने विषे. म० मन पर्यव ने विषे हुइ ।

अथ कपाय कुशील नियंटे जघन्य २ ज्ञान अने उत्कृष्टा ४ ।

पुलाक वक्कुस पडि सेवणा में उत्कृष्टा मति श्रुत अवधि ३ ।

पिण पर्यव ज्ञान न कछो। हिवै शरीर द्वारे करी कहे है ।

कपाय कुशीले पुच्छा. गो० ! तिसुवा चउसु वा पंचसु  
वा होजा तिसु उरालिये ते या कम्मए सु होजा चउसु  
होमाणे चउसु उरालिये वेउव्विह तेया कम्मएसु होजा पंचसु  
माणे उरालिय वेउव्विय आहारग तेयग कम्मएसु होजा ।

( भगवती २५ उ० ६ )

क० क कुशील नी पृच्छा. गो० हे गौतम ! ति० त्रिण चार. प० पांच शरीर हुइ-  
त्रिण शरीर ने विषे तिवारे हुइ. उ० औदारिक. ते० तेजस. क० 'य' हुइ च० चार शरीर  
ने विषे हुइ तिवारे चार. उ० औदारिक. वे० वैक्रिय. ते० तेजस. क० कामण ने विषे हुइ. प०  
पांच शरीर ने विषे हुइ ओ० औदारिक. वे० वैक्रिय. आ० आहारिक. ते० क०  
कर्मण शरीर ने विषे

इहां कुशीले में ३ ४ ५ शरीर । पुलाक  
में ३ शरीर वक्कुस पडिसेवणा कुशील में आहारिक विना ४ शरीर ।  
कुशील में वैक्रिय आहारिक शरीर कहा, तो वैक्रिय आहारिक लब्धि  
फो दोष लागे छै। हिबै समुद्धात द्वार कहे छै।

कुसीलेयां पुच्छा. गो० ! छ समुघाया प०  
त० वेदणा समुघाए जाव हारग समुघाए.

( भगवती श० २५ उ० ६ )

क० कुशील नी पुच्छा. गो० हे गौतम ! छ० ६ समुद्धात परुपी ते कहे छै. वे०  
वेदनी समुद्धात आ० आहारिक समुद्धात.

अठे कपाय कुशील में केवल समुद्धात वर्जी ६ समुद्धात कही।  
पुलाक में ३ समुद्धात बेरनी १ कपाय २ मरणंती ३ वक्कुस पडिसेवणा  
कुशील में आहारिक, केवल वर्जी ५ समुद्धात पावै। कपाय कुशील में ६  
समुद्धात कही। ते भणी वैक्रिय तैजस आहारिक समुद्धात पिण ते करे छै।  
पन्नवणा पद ३६ वैक्रिय ते आहारिक समुद्धात क्रियां ३ वि  
उत्कृष्टी ५ क्रिया कही छै। इणन्याय कपाय कुशील नि उत्कृष्टी ५ वि पिण  
लागे छै। ए तो मोटो दोष छै। तथा वली य कुशील नियंठे आहारिक  
शरीर कह्यो। भगवती श० १६ उ० १ आहारिक शरीर करे ते अधि  
कह्यो। प्रमाद नों सेविवो कह्यो। अधिकरण अनै प्रमाद सेवे ते तो प्रत्यक्ष दोष  
छै। वली कुशील नियंठे वैक्रिय शरीर कह्यो छै। अनै भगवती श०  
३ उ० ४ कह्यो। मायी वैक्रिय करे पिण ॥ वैक्रिय न करे। ते मायी विना  
आलोयां मरे तो विराधक कह्यो। एहवो वैक्रिय नों मोटो दोष कह्यो। ते वैक्रिय  
कुशील में पावे छै। ते कुशील वैक्रिय आहारिक  
करे छै। ए तो प्रत्यक्ष मोटा २ दोष कपाय कुशील में छै।  
कुशील नियंठे प्रत्यक्ष दोष लगावे छै। ते पाठ लिखिये छै।



कसाय कुशीले पुच्छा गो० । कसाय कुशीलत्तं जहति  
पुलायं वा वउसं वा पडिसेवणा कुशीलं वा शिण्यं वा  
अस्संजमं वा संजमासंजमं वा उवसंपज्जइ ।

( भगवती श० २५ ड० ६ )

क० कषाय कुशील नी पुच्छा गो० हे गौतम ! क० कषाय कुशील पणुं, त० तजी पु०  
पुलाक पणुं, प० वक्कुस पणुं, प० प्रति सेवना कुशील पणुं शि० अथवा निर्ग्रन्थ पणुं, अ०  
असंयम पणुं, स० संयमासंयम पणुं, ड० पडिबज्जे.

अथ इहां कह्यो—कषाय कुशील नियंठो छांडि किण में जावे ।

कुशील पणो छांडी पुलाक में आवे । वक्कुस में आवे । पडिसेवण कुशील में  
आवे । निर्ग्रन्थ में आवे । असं में आवे । संयमासंयम ते आ पणुं में आवे ।

कुशील पणो छांडि प ६ ठिकाणो आवतो कह्यो । कषाय कुशील में दोष  
लागे इज नहीं । तो संयमासंयम में किम आवे । प तो साधु पणो भांगी

हे ते तो मोटो दोष छै । प तो साम्प्रत दोष लागे तिवारे साधु रो हुवे  
छै । दोष लागी बिना तो साधु रो श्रावक हुवे नहीं । जे कुशील नियंठे  
तो साधु हुंतो । साधु पणो पाल्यो नहीं तिवारे श्रावक रा आदरी श्रावक

थयो । जे साधु रो श्रावक थयो जद नि य दोष लाय्यो । तिवारे कोई कहे—प  
तो ए कुशील पणो छांडी पाधरो संयम म में आवे नहीं । इम कहे

देहनेो उत्तर—जे कुशील पणो छांडी पुलाक तथा वक्कुस थयो । ते वक्कुस  
अष्ट थई श्रावक पणो आदरे ते तो वक्कुस पणो छांडी संयमासंयम में आयो  
कहिणो । पिण कषाय कुशील पणो छांडो संयमा संयम में आयो न कहिणो ।

कषाय कुशील पणो छांडी निर्ग्रन्थ में आवे कह्यो । पिण स्नातक में आवे इम न  
कह्यो । बीचमें अनेरो नियंठो फर्सि आवे ते लेखे कह्यो हुवे तो स्नातक में पिण  
आवतो न कहिता । दश में गुणठाणे कषाय कुशील नियंठो हुवे तो तिहां थी १२

में गुणठाणे गयां निर्ग्रन्थ में आयो; तिहां थी १३ में गुणठाणे गयां स्नातक थयो ते  
निर्ग्रन्थ पणो छांडी स्नातक थयो । पिण कषाय कुशील पणो छांडी स्नातक में

आयो इम न कह्यो । तिम कषाय कुशील पणो छांडि व थयो । ते वक्कुस

थई श्रावक थयो । ते पिण वक्कुस पणो छांडी संयमा संयम में आयो ।  
पिण कपाय कुशील पणो छांडि संयमा संयम में न आयो । तथा वक्कुस पणो  
छांडि पडिसेवणा में आवे १ कपाय कुशील में २ असंयम में ३ संयमासंयम में ४  
ए चार ठिकाणे आवे कह्यो । पिण निर्ग्रन्थ स्नातक में आवता न । ते किम  
वक्कुस पणू छांडी निर्ग्रन्थ स्नातक में आवे नहीं चढतो चढतो २ आवे वक्कुस  
पणो छांडो पाधरो निर्ग्रन्थ न हुवे । वीचे कपाय कुशील फसी ने निर्ग्रन्थ में  
आवे । ते माटे निर्ग्रन्थ में कपाय कुशील आवे पिण वक्कुस न आवे । ए तो  
पाधरो आवे इज नहीं कह्यो छै । ते न्याय कपाय कुशील पणो छांडि संयमासंयम  
में आवे कह्यो । ते भणी कपाय कुशील में प्रत्यक्ष दोष लागे छै । डाहा हुवे तो  
विचारि जोइजो ।

## इति १० बोल सम्पूर्ण ।

बली पुलाक वक्कुस पडिसेवणा में ४ ज्ञान १४ पूर्व नों भणवो  
बज्यों छै । अने कपाय कुशील में ४ ज्ञान १४ पूर्व कहा छै । अने १४ पूर्वधारी  
पिण वचन में चूकता कहा छै । ते पाठ लिखिबे छै ।

आयार पन्नति धरं दिट्ठिवाय महिज्जगं ।

कायविक्रखलियं नच्चा न तं उवहसे मुणी ॥ ५० ॥

( दशवैकालिक अ० ८ गा० ५० )

आ० आचारंग. प० भगवती सूत्र नों धरणाहार ते १० छै. दि० इष्टि  
मंग नों. स० भणणाहार एहवा नें. व० जोलता वचनें करी. खलाणो जाणो नें. म० नहीं  
हने. हसे. सु० साधु.

अथ इहां कइयो—दृष्टि वाद रो धणी पिण वचन में  
तो और साधु नें हसणो नहीं । ए दृष्टि वाद रो जाण चूके. तिण में पिण कपाय

कुशील नियंठो है । वली १४ पूर्वधर ४ ज्ञानी पिण पंडिक्रमणो करे । इणन्याय कषाय कुशील नियंठे अजाण तथा जाण नें पिण दोष लगावे है । जे वैकिय तेजू आहारिक लब्धि फोड़ें ते जाण नें दोष लगावे है । वली साधु पणो भांग नें श्रावक पणो आदरे ए जावक भ्रष्ट थयो, तो और दोष किम न लगावे । इणन्याय कषाय कुशील नियंठे दोष लगावे है । तिवारे कोई कहे ए कषाय कुशील नियंठा नें अपडिसेवी किणन्याय कह्यो । तेहनो उत्तर—ए कुशील नियंठा नें अपडिसेवी कह्यो—ते अप्रमत्त तुल्य अपडिसेवी जणाय है । कषाय कुशील नियंठा में गुणठाणा ५ है । छठा थी दशमा ताईं तिहां सातमें आठमें नवमें दशमें गुणठाणे अत्यन्त शुद्ध निर्मल चारित्त है । ते अपडिसेवी है । अने गुणठाणे पिण अत्यन्त विशिष्ट निर्मल परिणाम नो धणी शुभ योग में प्रवर्त्तें है । ते अपडिसेवी है । तथा दीक्षा लेतां अथवा पुलाक वक्कुरा पंडिसेवणा तजी कषाय कुशील में आवे तिण बेलां आश्री अपडिसेवी कह्यो जणाय है । पिण सर्व कषाय कुशील रा धणी अपडिसेवी न दीसे । जिम कषाय कुशील में ज्ञान तो २ तथा ३ तथा ४ इम क । शरीर पिण ३ तथा ४ तथा ५ इम कहा । लेस्या ६ वही है । पिण इम नहीं कही १ तथा ३ तथा ६ एहवो न कह्यो । ए लेस्या ६ कही है । ते गुणठाणा री अपेक्षा इं पिण सर्व कषाय कुशील रा धणी में ६ लेस्या नहीं । ते किम् ७-८-९-१० गुणठाणा में कषाय कुशील नियंठो है । तिहां ६ लेस्या नथो । कोई कहे ६ लेस्या रा पेदा में किहां १ पावे किहां ३ पावे, ते ६ लेस्या में आगई इम कहे । तिण २ लेखे शरीर पिण पांच इज कहिणा । तीन तथा ४ कहवा रो काई काम । ३ तथा ४ शरीर पांच रा पेदा में समाय गया । वली ज्ञान पिण ४ कहिणा । २ तथा ३ कहिवा रो काई काम । २ तथा ३ ज्ञान तो चार ज्ञान में समाय गया । लेस्या न कही समचे ६ लेस्या कही ए गुणठाणा आश्री ६ लेस्या कही । सर्व आश्री कहिता तो १ ३ तथा ६ इम कहिता पिण सर्व रो कथन इहां न लियो । तिम अपडिसेवी ते । ते पिण अप्रमत्त आश्री तथा ४ तुल्य विशिष्ट चारित्त रो धणी छठे गुण ठाणे शुभ योग में वर्त्तें ते आश्री अपडिसेवी कह्यो जणाय है । ते ऊपर सूत्र नों हेतु भगवती श० १६ उ० ६ रे कहा । वली भाव निद्रा नी अपेक्षाय जीचां नें सुत्ता, जागरा अने सुत्ता जागरा कहा । तिहां मनुष्य अने तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय डाल २२ दं तो सुत्ता कहा । सर्वथा

माटे । अनें तिर्यक् पंचेन्द्रिय सुत्ता पिण छै । अनें सुत्ताजागरा पिण छै । पिण जागरा नहीं । मनुष्य में तीन ही छै । इहां अत्रती नें सुत्ता कहा । अत्रती नै जागरा ।। अनें ब्र ती ते सुत्ताजागरा कहा । जिम सुत्ता, जागरा, सुत्ता-जागरा ।। तिमहीज संवुडा. असंवुडा. संवुडाऽसंवुडा पिण कहिवा । "जहेव सुत्ताणं दंडओत्तहे भाणियव्वो" संवुडा सर्व अत्रती साधु असंवुडा अत्रती संवुडाऽअसंवुडा. ते अत्रती इम ३ भेद छै । तिहां पहलू पाठ छै ते लिखिये छै ।

संवुडेणं भंते सुविणं पासइ. असंवुडे सुविणं पासइ. संवुडासंवुडे सुविणं पासइ. गोयमा ! संवुडे सुविणं पासइ. असंवुडेवि सुविणं पासइ. संवुडासंवुडेवि सुविणं पासइ. संवुडे विणं पासइ हा तच्चं पासइ. संवुडे सुविणं पासइ. तहावातं होज्जा अण्णहावा तं होज्जा वुडासंवुडे विणं पासइ एवं चेव ॥ ४ ॥

( अगवती श० १६ उ० ६ )

सं० संवृत. अ० हे अगवत्तु ! सं० स्वप्न. पा० देखे. अ० असंवृत. छ० स्वप्न. पा० देखे. सं० सम्मृतासंवृत. छ० स्वप्न. पा० देखे. गो० हे गोतम ! सं० संमृत. छ० स्वप्न. पा० देखे. अ० असंवृत. छ० स्वप्न. पा० देखे. सं० सम्मृतासंवृत. स्वप्न देखे. सं० संमृत. छ० पा० देखे. अ० ते यथा तथ्य. पा० देखे. अ० असंवृत. छ० स्वप्न. पा० देखे. त० तथा प्रकार अ० अन्यथा. हो० होवे. पिण त० तेहवो. सं० सम्मृतासंवृत. छ० पा० देखे. ए० १ प्रकारे.

इहां कहा—संवुडो ते साधु सर्वअत्रती स्वप्नों देखे । ते यथा तथ्य सांचो स्वप्नो देखे । अनें वुडो ।। अनें संवुडासंवुडो आ ते स्वप्नो सांचो पिण देखे । अनें झूटो पिण देखे । इहां वुडो स्वप्नो देखे ते यथा तथ्य सांचो देखे ।। अनें साधु ने तो जंजालादिक झूटा पिण आवे छै । अ० आवश्यक अ० ४ कहा । "सोयणव्रतियाए" कहितो जंजालादिक देखवे

करी, तथा आगल कह्यो । “पाण भोयण विणपरियासियाण” कहितां स्वप्ना में पाणी नों पीवो । भोजन नों करवो ते अतिचार नों “मिच्छामिदुक्कं” इहां स्वप्न जंजालादिक भूटा विपरीत स्वप्ना साधु नें आवता कहा है । तो इहां सांचो स्वप्नो देखे इम कथूं कह्यो । एहनों न्याय ए सर्व संवुड़ा साधु आश्री नथी । विशिष्ट अत्यन्त निर्मल चारित्र नों धणी सम्बुड़ो स्वप्नो देखे ते आश्री कह्यो है । तिहां टीकाकार पिण इम कह्यो छै । “समृतश्चेह-विशिष्टतर समृततत्त युक्तो ग्राह्यः” इहां टीका में पिण इम कह्यो । सांचो स्वप्नो देखे तो सम्बुड़ो विशिष्ट अत्यन्त निर्मल परिणाम नों धणी सम्बुड़ो ग्रहणो । इहां अत्यन्त निर्मल चारित्र आश्री सम्बुड़ो सांचो स्वप्नो देखे कह्यो । पिण सर्व सम्बुड़ा आश्री नहीं । तिम विशिष्ट निर्मल परिणाम नों धणी कषाय कुशील अपडिसेवी कह्यो जणाय छै । तथा दीक्षा लेतां पुलाक वक्कुस पडिसेवणा तजि कषाय कुशील में आवे ते वेलां आश्री अपडिसेवी कह्यो जणाय छै । तथा पुलाक वक्कुस पडिसेवणा नें पडिसेवी कहा । ते कषाय कुशील पणो छांडी पुलाक वक्कुस पडिसेवणा में आवे ते दोष लगायां सेती आवे ते भणी यां तीना नें पडिसेवी कहा । अने कषाय कुशील नें अपडिसेवी कह्यो । ते दीक्षा लेतां कषाय कुशील पणो आवे ते वेलां अपडिसेवी तथा पुलाक वक्कुस पडिसेवणा तजि कषाय कुशील में आवे ते वेलां आगलो दंड लेइ अपडिसेवी थावै । तिम पुलाक वक्कुस पडिसेवणा पणा नें आदरतां पडिसेवी कह्यो । तिम कषाय कुशील पणो आदरतां अपडिसेवी कह्यो । इण न्याय कषाय कुशील नें अपडिसेवी कह्यो जणाय छै । पिण सर्व कषाय कुशील ना धणी अपडिसेवी कहा दीखे नहीं । तिम कषाय कुशील में ६ लेश्यांकही ते पिण प्रमत्त गुणठाणा आश्री करी । पिण सर्व कषाय कुशील ना धणी में ६ लेश्या नहीं । तिम अपडिसेवी कह्यो । ते पिण अग्रमत्त तुल्य विशिष्ट निर्मल चारित्र नो धणी दीखे छै । पिण सर्व कषाय कुशील चारितिया अपडिसेवी कहा दीसता न थी । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ११ बोल सम्पूर्णा ।

गुत्तरोववाइयाणं भन्ते । देवा वि उद्विण्ण मोहा उव-  
मोहा खीण मोहा, गोयमा । नो उद्विण्ण मोहा, उव-  
त मोहा. एो खीण मोहा.

( भगवतो श० ५ उ० ४ )

अ० अनुत्तरोपपातिकः भ० हे अगं देव ! किं स्यू वेद मोहनी है, उ० उप-  
मोहनी है, अनुत्कट वेद मोहनी, गो० गोसम ! खो० नहीं उ० वेद मोहनी, उ०  
मोहनी है, खो० नहीं खीण मोहनी ।

कह्यो—अनुत्तर विमान ना देवता उदीर्ण मोह न थी । अने  
क्षीण मोह न थी । उपशान्त मोह है, इमं कह्यो । इहां मोह नै उपशमायो कह्यो ।

उपशान्त मोह तो इग्यारवे ११ गुणठाणे है । अने देवता तो चौथे गुणठाणे  
है, ति तो मोह नों उदय है । तेहथी २ सांत २ कर्म लागे है । मोह  
नों उदय तो दशमें गुणठाणे ताई है । अने इहां तो देवता नै उपशान्त मोह  
कह्यो, ते उत्कट वेद मोहनी आश्री कह्यो । तिहां देवता नै परिचारणा न थी  
ते माटे बहुल वेद मोहनी आश्री उपशान्त मोह । पिण था मोह आश्री  
उपशान्त मोह न थी । टीकामें पिण इमेज अर्थ कियो है । तिण अनुसार  
वि ना देवता में उत्कट वेद मोह आश्री उपशान्त मोह । पिण सर्व  
मोहनों री ति रे आश्री उपशान्त मोह न थी । तिम कुशील नै  
अपडिसेवी । ते पिण विशिष्ट परिणाम ना धणी आश्री अपडिसेवी कह्यो ।

दीक्षा लेतां अथवा पुलाक वक्कुस पडिसेवणा तनी कषाय कुशील में आवे  
ते वेलां आश्री अपडिसेवी कह्यो जणाय है । पिण कुशील चारित्रिया  
अपडिसेवी नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

१२ 'ल संपू' ।

भगवती श० ७ उ० ८ पहवो कह्यो—ते लिखिये है ।

से गूणां भन्ते ! हत्थिस्स यं तुस्सय समा चेव पच्चक्खाण  
वि रिया कज्जइ हन्ता गोयमा ! तिस्स तुस्सय जाव  
कज्जइ । से केणट्ठेणं एवं वु इ जाव कज्जइ गोयमा ! वि-  
रइं पडुच्च से तेणट्ठेणं जाव इ ॥ ६ ॥

( भगवती श० ७ उ० ८ )

से० ते. गू० निश्चय. भ० हे ! ह० हाथी ने अने. कु० कुंथुया ने, स०  
सरीखी. चे० निश्चय. अ० अपचक्खाण की क्रिया उपजे. हां. गो० गौतम ! ह० हाथी ने, अने.  
कु० कुंथुया ने. सरीखी. अपचक्खाण क्रिया उपजे. से० ते. के० केहे अर्थे. भ० ! ए०  
हम कहीइ. जा० . क० करे छै. हे गौतम ! अ० अमती प्रति आश्री ने. से० ते. ते०  
अर्थे. क० करे.

इहां हाथी कुंआ रे नी क्रिया बरोबर कही । ते अमती हाथी  
आश्री कही । पिण सर्व हाथी आश्री न कही । हाथी तो देशव्रती पिण छै । ते  
देशव्रती हाथी थकी तो कुंथुआ रे अमती नी क्रिया घणी छै । ते माटे इहां हाथी  
कुंथुआ रे बरोबर क्रिया कही । ते अमती हाथी आश्री कही । पिण सर्व हाथी  
आश्री नहीं कही । ति कपाय कुशील ने अपडिसेवी कह्यो । ते विशिष्ट परिणाम  
ते वेली आश्री अपडिसेवी कह्यो । तथा दीक्षा लेतां अथवा पुलाक वक्कुस पडि-  
से तंजी कपाय कुशील में आवे । ते वेली आश्री अपडिसेवी जणाय  
छै । ते पिण सर्व कुशील चारितिया अपडिसेवी नहीं । वली भगवती  
श० १० उ० १ पूर्वदिश ने विषे “नो तिथिकाए” एहवू कह्यो । ते पूर्वदिशे  
सम्पूर्ण धर्मास्ति नहीं । पिण देश आश्री धर्मास्ति छै । तिम कपाय  
कुशील ने पिण अपडिसेवी कह्यो । ते विशिष्ट परिणाम ते आश्री अपडिसेवी छै ।  
पिण य कुशील चारितिया , अपडिसेवी नहीं । डाहा हुवे तो विचारि  
जोइजो ।

इति १३ लेख सम्पूर्ण ।

तथा भगवती श० १२ उ० २ एहवो कह्यो छै । ते लिखिये छै ।

सर्वेविणं भन्ते ! सिद्धिया जीवा सिद्धिस्तन्ति हन्ता  
जयन्ती ! सर्वेविणं भवसिद्धिया जी सिद्धिस्तन्ति ।

( भगवती श० १२ उ० २ )

स० सर्व पिब। भ० हे । म० भव सिद्धि। जीव सीजस्ये। ह० ह्रीं ज० जयन्ती  
आविका ! स० सर्व पिब। म० भवसिद्धि। जी० जीव। सि० सीजस्ये।

इम कह्यो—सर्व भवी जीव मोक्ष जास्ये । ते मोक्ष योग्य  
भवी लिया, पिण और भवी मोक्ष न जाय, ते न । मोक्ष योग्य  
भवी जीवां आश्री भवी सीजस्ये इम कह्यो । तिम कुशील अप-  
डिसेवी कह्यो । ते पिण विशिष्ट परिणाम नों धणी अ तुल्य अपडिसेवी  
है । दीक्षा लेतां पुलाक वक्कुस पडिसेवणा तजी  
कुशील में आवे ते चेलां आश्री अपडिसेवी कह्यो जणाय है । पिण तय  
ील चारित्रिया अपडिसेवी न थी । डाहा हुवे तो विचारि जोइजी ।

इति १४ बोल सम्पूर्णा ।

भगवती श० १२ उ० ५ में कह्यो । ते लिखिये है ।

धम्मत्थिकाए पोम्मालित्थिकाए एए सर्वे अवगणा  
णवरं पोग्गति ए पं णे दुग्ंधे पंचरेसें  
अट्टफासे एत्ते ॥ १५ ॥

( भगवती श० १२ उ० ५ )

ध० स्तिकाय जा० पो० पुट्टलास्तिकाय ए० ए० स० सर्व अ० वर्या रहित  
है । जा० अ० रूप्य रहित है । बा० एतलो विलेप पो० पुट्टलास्ति में ५०  
वर्या पं० पांच रस दु० वे गन्ध अ० ।



पुद्गलास्तिकाय में ८ स्पर्श कहा। ते स्पर्शी खंघ आश्री कहा। पिण सर्व पुद्गल परमाणु आदिक में ८ स्पर्श नहीं। तिम कपाय कुशील नियंठा में अपडिसेवी कहा ते विशिष्ट परिणाम ते वेलां आश्री कहा। तथा दीक्षा लेतां अथवा पुलाक वक्कुस पडिसेवणा तजी कपाय कुशील में आवे ते वेलां आश्री अपडिसेवी कहा जणाय छै। पिण सर्व कुशील अपडिसेवी जणाय नयी। जिम पुद्गलास्तिकाय नें स्पर्शी १. अने सूक्ष्म त प्रदेशी खंघ पुद्गलास्तिकाय में तो छै, पिण अष्ट स्पर्शी नहीं। तिम कुशील चारितिया अपडिसेवी कहा, ते मादी साधु आश्री जणाय छै। पिण सर्व कुशीलना धणी अपडिसेवी कहा दीसै नहीं। इण न्याय कुशील नियंठा नें डिसेवी कहा जणाय छै। तथा चली और किण ही न्याय सूं अपडिसेवी कहा हुस्ये ते पिण केवली जाणे। पिण कुशील पणो छांड़ि श्रावक पणो आदसो। चली वैकिय, आहारिक, तैजस, लब्धि फोड़े। चली १४ पूर्व धर ४ ज्ञानी में कपाय कुशील पावे ते पिण जावे। इण न्याय कपाय कुशील नों धणी दोष लगावे छै। चली गोतम पिण ४ ज्ञानी आनन्द ने घरे वचन में खलाया। त्यां ने पिण कपाय कुशील नियंठा हुन्तो। त्यां में १४ पूर्व ४ ज्ञान हुन्ता ते माटे। तिवारे कोई कहे—उपासक दशा सूत्र में गोतम में ४ ज्ञान १४ पूर्व नों पाठक कहा नयी। ते माटे आनन्द ने घरे वचन में खलाया। ते वेलां १४ पूर्व ४ ज्ञान न हुन्ता। पछे पाया छै। ते वेलां कपाय कुशील नियंठा पिण न हुन्तो। तिण सूं में खलाया इम कहे तेहनों उत्तर। जे आनन्द ने श्रावक ना आदसां नें २० थया। तेहने अन्तकाले सन्यारा में गौतम वचन में खलाया। अने रा शिष्य गौतम थया, ते माटे ला वर्णा में गौतम १४ पूर्व धारी किम न। अने जे उपासक दशा में ४ ज्ञान १४ पूर्व नों गौतम २ गुणां में न कहा—इम कही लोकां नें में पाड़े, तेहने इम कहिणो। १४ अङ्ग रच्या तिण में उपासक दशा नों सातमों अङ्ग छठो अङ्ग ज्ञाता नों पांचमों अङ्ग भगवती। ते भगवन्ते भगवती रची पछे ज्ञाता रची पछे उपासक दशा रची छै। भवती नी आदि में गोतम ना गुण कहा। तिहाँ एहवो पाठ छै। “चोदसपुव्वी णाणो” इहां १४ पूर्व अने ४ ज्ञान गोतम में कहा। जे प १. अङ्ग में ४ ज्ञानी १४ पूर्व धारी गोतम ने कहा, ते भणी सातमा अङ्ग में ४ १४ पूर्व

न । ते कहिवा शे कई कारण नहीं । पहिलां ५ मों अङ्ग रच्यो छै , पछे छठो. अङ्ग रच्यो । पछे सातमों अङ्ग दशा रच्यो । ते माटे अङ्ग रच्यो ते बेलों ४ ज्ञानी १४ पूर्व धर था, तो पछे सा अङ्ग रच्यो ते बेलों ४ ज्ञान १४ पूर्व किम न हुन्ता । ते अङ्ग अनुक्रमे रच्यो तिम इज जम्बू स्वामी सुधर्मा स्वामी ने पूछ्यो छै । ते लिखिये छै ।

जंबू पज्जुवासमाणे एवं वयासी जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं छट्ठं अंगं णा धम्मकहाणं अयमट्ठे पराणत्ते णं भंते अंगस्स उवासगदसाणं स णेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पराणत्ते ।

( दशा अ० १ )

ज० स्वामी. प० विलय करी ने. ए० इस बोल्या. ज० जो. म० हे पूज्य ! स० ! जा० सं० सोल पहुंता तियो. छ० छटा अङ्ग ना. शा० ज्ञाता. ध० धम ना. अ० पृहवा. म० अर्थ. प० परुप्या. स० सातमा ना. न० हे भगवन् पूज्य ! अ० वा. उ० दशा ना. स० भगवन्त महावीर. जा० सं० सोल तेबे पहुन्ता. के० अ० अर्थ. प० परुप्या ।

इहां पिण इम कह्यो । जे अङ्ग ना, प क तो अंग नों स्युं , इम पांचमों अङ्ग पहिलां थापी पाछे छठो अङ्ग थाप्यो । छठों अङ्ग थापी पछे सातमो अङ्ग थाप्यो ते माटे अङ्ग नी में ४ १४ पूर्व धर गोतम ने कहा । ते स अङ्ग में न तो पिण नहीं । अने आनन्द रे स रे अवसरे गोतम ने दीक्षा लियां बहुला वर्ष ते माटे ४ १४ पूर्व धर किम न हुवे । इणन्याय गोतम ४ ज्ञानी १४ पूर्व धर कुशील नियंटे हुन्ता । तिवारे आनन्द ने घरे में खलाया छै । बली भगवान् ४ ज्ञानी कुशील नियंटे लब्धि फोड़ी ने गोशाला ने बचायो प पिण दोव छै । बली गोशाला ने तिल यो. लेस्या सिद्धार्थ दी

दीधी. ए सर्व उपयोग चूक नें कार्य कीधा । जो उपयोग देवे अनें जाणे ए तिल  
उखेल नाखंसी. तो तिल बतावता इज क्यनि । पिण उपयोग दियां विना ए कार्य  
नि है । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १५ बोल सम्पूर्ण ।

इति प्रायश्चित्ताऽविकारः ।



## अथ गोशालाऽधिकारः ।

केतला कहे—गोशाला नें भगवान् दीक्षा दीधी नही । ते  
मृषावादी छै । भगवती श० १५ गौतम नें कह्यो—हे गौतम ! तीनवार  
गोशाले मोने कह्यो छै । आप म्हारा धर्म, अर्थात् अने हूं आपरो धर्म अन्तेवासी  
शिष्य, पिण तेहना ने म्हे आदर न दीधो । मन में पिण मलो न जाण्यो ।  
मौन साथी अने चौथी अङ्गीकार कीधो-पहवो छै । ते लिखिये छै ।

तएणं से गोशाले ति पुत्ते हट्टुत्तु ममं तिव्वु गो  
आयाहिणं प हिणं एमंसि एवं वयासी तुब्भेणं  
भंते ! धम्मायरिया अहं एणं तुब्भं अन्तेवासी ॥ ४० ॥  
तएणं अहं गोयमा ! गोशालस्स लि पुत्तस्स एय मं  
पंडिसुरोमि ॥ ४१ ॥

( भगवती श० १५ )

त० तिण काले से० ते गो० गोशालो मं० मंखलि पुत्र ह० हट्टु तु० तुट्ट मं०  
मोने ति० त्रिष वार आ० आदान प० प्रदक्षिणा जा० यावत् श० करी प० इया  
प्रकारे व० बोल्यो तु० तुम्हे मं० हे ! म० म्हारा ध० धर्माचार्य अ० हूं तो तु०  
तुम्हारो अ० शिष्य त० तिवारे अ० हूं गो० हे ! गो० गोशाला नों मं० मंखलि पुत्र  
नों प० प अर्थ प्रति प० अङ्गीकार करवो ।

इहां भगवान् गौतम नें कह्यो—हे गौतम ! गोशाले मोने कह्यो ।  
तुम्हे म्हारा धर्माचार्य अने हूं तुम्हारो धर्म अन्तेवासी शिष्य तिवारे म्हे अङ्गीकार  
कीधो । इहां गोशाला ने अङ्गीकार कीधो चाल्यो ते माटे दीक्षा दीधी । तिहां  
अङ्गीकार पिण पहवो गो । ते टीका लिखिये छै ।

एयं मट्टं पडिसुण्णो मिति—अभ्युपगच्छामि, यच्चैतस्याऽयोग्यस्यां प्यभ्यु-  
पगमनं भगवत स्तदक्षीणरागतया परिचये नेपत्स्नेहंगमोऽनुकम्पा सद्भावान् छद्मस्थ-  
तया ऽ नागत दोषानवगमा दवश्यं भावित्वा चैतस्येति भावनीय मिति ।

टीका में पिण कह्यो—ए अयोग्य'ने वान् अङ्गीकार कीधो ते'  
अक्षीण राग एणे करी. तेहना परिचय करी. स्नेह अनु । ना सद्भाव यी. अने'  
छद्मस्थ छै ते माटे मिया काल ना दोष ना अज्ञाणवा धकी अङ्गीकार कीधो.  
कह्यो राग. परिचय. स्नेह. अनुकम्पा कही । ते स्नेह अनुकम्पा कहो भावे मोहः  
अनुकम्पा कहो । जो ए कार्य करवा योग्य होवे तो इम क्यां नें कहिता ।

एय तीर्थङ्कर दीक्षा लेवे जिण दिन कोई साथे दीक्षा लेवे ते तो ठीक छै । पिण  
। पछे केवल ज्ञान उपना पहिलां और नें दीक्षा देवे नहीं । ठाणांग ठाणे ६  
में पहवो कही छै ।

“नपरोवएस विसया नय छउमत्था परोवएसंघि दिति ।  
नय सीस वगं दिक्खंति ि णा जहा सब्बे”

ठाणाङ्ग ना अर्थ में ए गाथा कही. तिहां इम कह्यो छै । छद्मस्थ  
तीर्थङ्कर पर उपदेश न चाले । अने आप पिण आगला नें उपदेश न देवे । तथा  
बली कह्यो । सर्व तीर्थङ्कर शिष्य वर्ग नें दीक्षा न देवे । एहवूं अर्थ में छै ।  
अने भगवन्त आप पोतें दीक्षा लीधो ते पाठ में कह्यो । अने टीका में पिण स्नेह  
रागे करि अङ्गीकार कीधो चाल्यो छै । पाठ में पिण पहवो कह्यो । तीन  
तां अङ्गीकार कीधो नहीं । अने चौथी वार में “पडिसुणेमि” पहवो पाठ कह्यो ।  
ते प्रतिश्रुत नाम अङ्गीकार नों छै । केतला एक कहे—गोशाला रो वचन भगवान्  
सुण्यो पिण अङ्गीकार न कियो इम कहे ते सिद्धान्त ना अज्ञाण छै । अने “पडिसुणेइ”  
पाठ रो घणे ठामे अङ्गीकार हो छै । ते पाठ लिखिये छै ।

जे भिक्खू रायाणं रायंतेपुरिया वएज्जा उसंतो  
णा ! णो तुब्भं कप्पइ. रायंतेपुरं शिव मित्तएवा,

पविसि ए , आहारेयं पडिग्गहं जायते अहं रायंतेपुराओ  
 एंवा ४ भिहडं आहदु दलयामि जोतं एवं वदइ पडि-  
 एणइ पडि एतं साइज्जइ ।

( निघीय उ० ६ बो० ५ )

जे० जे कोरे. मि० साधु. साधु ने. रा० राजा ना. रा० :पुर नों . व० कहे.  
 आ० हे आयुष्यवन्त ! त० साधु. ओ नहीं. त० निश्चय. तु० नें. क० कल्पे. रा०  
 ना :पुर मध्ये खि० त्रिकलवो अने. प० पेसवो ते माटे. आ० एतले ब्याव. व०  
 ग्रही नें. जा० ज्यां लगे तुमने काजे. अ० हूं राजा ना अन्तःपुर माहि थी. अ० दि-  
 क० ४ अ० साहसो. अ० आणी नें. द० देवू. जो० जे साधु नें त० ते रत्नपाल. ए० इन एहवो.  
 व० प्रवेद्यो कद्यो वचन कहे अने. तं० ते. प० सांभले. अङ्गीकार करे. प० सांभलता नें अङ्गीकार  
 नें. सा० अनुमोदे. तेहने प्रायश्चित्त आवे पर्यवत् दोष है ।

कद्यो—जे राजा ना :पुर नो रत्नपाल साधु नें कहे—हे  
 आयुष्यवन्त ! राजा ना अन्तःपुर मे निकलवो पेसवो तोने न कल्पे तो ब्याव  
 अन्तःपुर माहि थी नाविक आणी नें हूं । इम अन्तःपुर नो रत्नपाल  
 कहे तेहनों —“पडिसुणेइ” कहितां अङ्गीकार करे तो प्रायश्चित्त आवे ।  
 पिण “पडिसुणेइ” रो अङ्गीकार करे इम कद्यो । वली अनेरे बणे ठिकाणे  
 “पडिसुणेइ” रो अङ्गीकार कियो । तथा हेम नाममाला ना छडा जाणइ रे  
 १२४ श्लोक मे अङ्गीकार ना १० है । ते लिखिये छै । अङ्गीकृत १  
 प्रति २ ऊरी कृत ३ उररी ४ संश्रुत ५ अभ्युपगत ६ उररी ७ त  
 ८ संगीर्ण ९ प्रतिश्रुत १० । पिण प्रतिश्रुत अङ्गीकार नों कद्यो छै ।  
 इणन्याय “पडिसुणेमि” कहितां अङ्गीकार कीयो । इणन्याय चौथी वार गोशाला  
 नें भगवान् अङ्गीकार कियो ते दीक्षा दीधी छै । डाहा हुवे तो विचारि जाइजो ।

इति १ बोल सम्पूर्णा ।

वली आगे गोशाले भगवान् थी विवाद कियो । तिहां सर्वाङ्गीभूति  
 साधु गोशाला नें कद्यो ते लि छै ।

तेणं कालेणं तेणं मएणं समणस्स भगव ते महा-  
वीरस्स अंतेवासी पाईए जाणवए सञ्चारुभूई णामं अणगारे  
पगइ भइए जाव विणीए धम्मारियाणुरागेणं एयमहुं  
असइहमाणो उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठेइत्ता जेरोव गोशाले मंखलि-  
पु तेरोव उवागच्छइ. उवागच्छइत्ता गोशालं मं वि पु  
एवं वयासी जेविताव गोशाला ! तहारुवस्स णस्स वा  
माहणस्स वा अंतियं एगमवि आरियं धम्मिइं सुवयणं शि-  
सामेइ. सेवि ताव तं वंदइ. णमंसइ. जाव कल्लाणं गलं  
देवयं चेइयं पज्जुवासइ. किमंग पुण तुमं गोशाला ! भगवया  
चेव पठ्ठाविए भगवया चेव मुंडविए भगवया चेव सेहाविए.  
भगवया चेव सिक्खाविए. भगवया चेव बहुस्सुई कए भग-  
वओ चेव मिच्छं विप्पडिवरणो तं मा एवं गोशाला ! णो  
रिद्धिसि गोशाला ! सच्चेव ते सा छाया णो .एणा ॥ ६७ ॥

( भगवती श० १५ )

ते० तिण काले. ते० तिणं समये. स० अमण. अ० भगवन्ते. म० महावीर नौ. अ०  
शिष्य पा० पूर्व दिशा नें. जा० देश नौ. सर्वांनुभूति. शा० नाम. अ० अनगार. प० प्रकृति  
भद्रिक. जा० यावत्. विनीत. ध० धर्माचार्य ने अनुरागे करि. ए० इया नें. अ० नहीं अदत्ता  
थका. ड० उठीनें. ज० जेठे. गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र छै. ते० तठे. ड० आवी नें. गो०  
गोशाला. मं० मंखली पुत्र नें. ए० इया प्रकारे. घ० बोल्यो। जे० जे कोई. गो० हे गोशाल ! त०  
तथा रूप. स० अमण. मा० माहण गुणयुक्त चे. अ० पासे. ए० एक पिण्य. आ० आर्य. धा०  
धार्मिक. छ० धचन. शि० छने छै. से० ते पिण्य. तं० तिण ने वं० वांदे छै. ण० नमस्कार करे  
छै। जा० यावत्. क० कल्याण कारी. मं० मज्जलकारी. दे० धर्मदेव समान चे० ज्ञानवन्त. प०  
पर्युपासना करे छै. कि० प्रश्ने. अं० आसंरणे. पु० पुनः वली तुमनं हे गोशाला मंखली पुत्र ! भ०  
भगवन्त. चे० निश्चय प० प्रमन्याव्यो. शिष्य पणो अङ्गीकार करवा थी. अ० भगवन्त. चे० निश्चय.  
मे० तेज्जु तेइया नौ उपदेश सिखाव्यो. घत सेव्यो. अ० भगवन्त. चे० निश्चय. सि० सिखाव्यो.

म० भगवन्ते. चे० निश्चय. व० बहुश्रुति करवो. भगवायो. म० भगवन्त संघाते. चे० निश्चय. मि० मिथ्यात्व पक्षू. पडिवज्जे छै. तं इय कारणे. मा० मत. गो० गोशाला ! यो० नहीं. रि० योग्य छै. गो० गोशाला ! ते हीज छाया नहीं. अ०

सर्वानुभूति साधु, गोशाला नें कह्यो । हे गोशाला ! तोनें भगवान् दीधी. भगवान् मूढ्यो. तोनें भगवान् शिष्य कियो, तोनें, भगवन्ते सिखायो. तोनें भगवान् बहुश्रुति कीधो । इमज सुनक्षत मुनि गोशाला नें गो । तयाँ सूँइज मिथ्यात्व पडिवज्जे छै । तो प्रत्यक्ष दीक्षा दीधी चाली । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति २ बोल सम्पूर्णा ।

बली आगे पिण भगवान् गोशाला नें कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

तएणं गो भगवं महावीरे गोशालं संखलिपुत्तं एवं वयासी. जेवि ताव गोशाला ! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वातं चेव जाव पज्जुवासति. किमंग पुण गोशाला ! तुम्हं मए चेव पव्वाविए जाव मए चेव बहुसुई कए. मसं चेव मिच्छं विप्पडिव गो । एवं गोशाला जाव णो अगणा ॥ १०४ ॥

( भगवती श० १५ )

त० तिवारे. स० म० भगवान्, म० महावीर. गो० गोशाला. म० संखलि नें. ए० प्रकारे. व० बोल्या. जे० जे. गो० हे गोशाला ! त० तथा रूप. स० अमण. मा० गुणयुक्त नी. तं तिण प्रकारे. जा० यावत्त. प० ना करे छै. कि० स्थू. अ० अंग इति कोमलामंत्रणे. पुनः बली. गो० हे गो ! तु० तुम नें. म० म्हे. निश्चय प० लेवरावी. जा० म० म्हे. निश्चय. व० बहुश्रुति करवो. म० मुक्त संघाते. नि० मिथ्यात्व पक्षू पडिवज्जे छै । तं कारणे. म० मत. ए० इम. गो० गो ! जा० यावत्त. यो० नहीं. अ०



अयं इहां भगवान् पिणं कथ्यो । हे गोशाला ! महे तोने दीधी ।  
 महे तोने मूढयो शिष्यं कथ्यो. बहुश्रुति कियो. ए तो चौडे दीक्षा दीधी कही छै ।  
 केइ अणहुंती विभक्ति रो नाम लेई कहै. इहां मी विभक्ति छै । “भगवयां  
 चेव पव्वाविण” ते भगवन्त थकी प्रव्रज्या आई. पिण भ न दीधी ।  
 इम कहै ते कूठ रा धोलणहार छै । “भगवया” तो २ कथ्यो छै ।  
 वैकालिक अ० ४ कथ्यो “भगवया मक्खायं” त्पारे लेखे इहां पिण पांचमी विभक्ति  
 कहिणी । भगवन्त थकी इम कथ्यो, “भगवान् न कथ्यो तो ए छः जीवणी  
 केणे कथ्यो । पिण इहां मी विभक्ति नहीं. तीजी विभक्ति छै । ते  
 कर्त्ता “ने विषे तीजी विभक्ति अनेक जागां छै । सूयगडाङ्ग अ० १ कथ्यो “ईस-  
 रेण कडे लोए” ईश्वर लोक कीधो । इहां पिण “ने विषे तीजी  
 विभक्ति छै । तिम “वया चेव पव्वइये” इहां पिण कर्त्ता अर्थ ने विषे तीजी  
 विभक्ति छै । वली भगवन्ते गोशाला ने कथ्यो “तुमं चेव पव्वाविण” “पिण  
 कर्त्ता “ने विषे तीजी विभक्ति छै । ते “मए” अनेक ठामे छै । भगवती  
 श० ८ उ० १० कथ्यो । “मए चत्तारि पुरिस पण्णात्ता” “कहितां  
 महे च्यार पुइय परुया । तिम “मए चेव पव्वाविण” कहितां महे दीधी ।  
 इहां पिण कर्त्ता अर्थ ने विषे तीजी विभक्ति छै । तिवारे कोई कहे “मए”  
 तीजी वि कि किहां कही छै । तेहनो उत्तर—अनुयोग द्वार में ८ विभक्ति ओल-  
 खाई छै । तिहां “शब्द रे ठामे तीजी वि कि छै । ते लिखिये छै ।

त्तिया कारणं मिकया, शियंच तेणं मए ।

(अनुयोग द्वार. विषय)

त० तृतीया विभक्ति. का० कारण ने विषे. क० कीधी. ते दि. छै. अ० भयू. क०  
 कीधी. ते० ते. म० महे. वा० अथवा.

इहां “ ” कहितां तीजी विभक्ति कही छै । ते माटे भगवान्  
 गोशाला ने कथ्यो । “चेव पव्वाविण” महे प्रव्रज्या दीधी । इहां पिण तीजी  
 वि कि । च्यार ठामे गोशाला री दीक्षा चाली छै । म तो ते  
 कथ्यो—महे गोशाला ने अङ्गीकार कियो । वली सर्वानुभूति साधु कथ्यो । इ

गोशाला ! तोनें भगवान् प्रबुज्या दीधी. मूङ्घो. बहुश्रुति कीधी । इम सु-  
त्र मुनि कह्यो । इमज भगवान् महावीर स्वामी कह्यो । हे गोशाला ! रहे तोनें  
प्रबुज्या दीधी यावत् बहुश्रुति कीधी । ए च्यार णि जे दीक्षा गी । हुवे  
तो विचारि जोइजो ।

## इति ३ बोल सम्पूर्णा ।

बली पांचमे ठिकाणे गोशाला ने कुशिष्य कह्यो । ते लिखिये छै ।

एवं गोयमा ! मम अंतेवासी सिस्से गोशाले-  
णामं मं लिपुत्ते समणघायए जाव छउमस्थ चेव कालं कि  
चंदिम सूरिय जाव चुए जे देवताए उववणो ।

( भगवती १५ )

ए० इम. ख० निश्रय करो जे. गो० हे गौतम ! म० माइरो. अ० अन्तेवासी कु० कुशिष्य  
गो० गोशालो. म० मंखलि नो पुत्र. ख० साधा नो धातक. जा० यावत्. छ०  
पद्ये. च० निश्रय करो ने. का० काल. कि० करी ने ( मत्तुपामी ने ) उ० ऊर्ध्व. च० चन्द्रमा. ख०  
सूर्य जा० यावत्. अ० अच्युत कल्प ने विपे. दे० देवता पणो. उ० ऊपन्यो.

इहां भगवान् कह्यो—हे गौतम ! माइरो अन्तेवासी कुशिष्य गोशालो  
मंखलि वारमे गयो । कुशिष्य कह्यो ते पहिलां शिष्य न कियो हुवे  
तो कुशिष्य किम हुवे । पहिलां पूत जन्म्यां विना कपूत किम हुवे पूत कपूत  
सपूत हुवे । तिम शिष्य कीधां सुशिष्य कुशिष्य हुवे । इण न्याय गोशालो पहिलां  
शिष्य थयो छै । तिवारे कुशिष्य कह्यो । बली भगवती श० ६ उ० ३३ कह्यो ।

“एवं खलु गोयमा ! मम अंते वासी कुसिस्से जमाली  
णामं अणगारे”

इहां जमाली ने कुशिष्य कज्यो । ते पहिलां शिष्य थयो हुन्तो । ते माटे कुशिष्य  
कह्यो । तिम गोशालो पिण पहिलां शिष्य थयो. ते माटे गोशाला ने कु

गे। पांच ठिकाणे गोशाला री दीक्षा कुशिष्य पणे कही । ~ केई कहे—  
 गोशाला नें दीक्षा न दीधी । ते सिद्धान्त ना उत्थापण हार । — हुवे  
 तो हि रि जोइजो ।

इति ४ बोल सम्पूर्णा ।

इति गोशालाऽधिकारः ।



## थ गुणवर्णनाधिकारः ।

केतला कहे—भगवान् गौतम नें कह्यो हे गौतम ! मोने १२ वर्ष १३ पक्ष में किञ्चिन्मात्र पाप लाग्यो नहीं । इस कहे ते झूठ रा बोलणहार छै । ते सूत्र में लेई कहे । ते लिखिये छै ।

एचाणसे हावीरे णोचिय पावणं सयम कासी,  
अन्नेहिं वाण रित्था. करंतं पि णाणु जाणित्था ।

( आचाराङ्ग अ० १ अ० ६ उ० ४ गा० ६ )

अ० हेय शेष. उपादेय. इत्थं । धर्या. ते० तेणे महत्कीरे. णो० न कीचौ, पा० पाप स० पोते. अनेरा पाहि पाप न. क० पाप नें शा० नहीं अनु-मोरे.

तो गणधरां भगवान् रा गुण कहा । तिहां इस कह्यो । “गणधरा” कहितां. जाणतां भग पाप कियो नहीं करावे नहीं, नें अनुमावे । ए तो नू रो बतायो छै । सर्व साधां रो पिण ओहीज । पिण इहां १२ वर्ष १३ पक्ष रो चाल्यो नहीं ।

अने गणधरां भगवान् रा गुण वर्णन कीधा । त्यां गुणा में अवगुणा में किम कहे । गुणा में तो गुणा नें इज कहे । डाहा तो विचारि ओइजो ।

### इति १ बोल सम्पूर्णा ।

बकी ई में साधां रा गुण । त्यां वो छै ते लिखिये ।

उत्तम जाति रूख विणय विणाय वण वीकम  
 प णा रोभाग ति जुत्ता बहुधणकण णिचय परिया  
 फीडिया णरवइ णाइरेया इत्थिय भोगा सुहं संपलिया वि-  
 पागफलोव च मुणिय वीसय रोव वुंवुय समाणं  
 सगग ज विन्दु चलं विविं उणं अधुव मणिरय  
 मीव पडगगस् विधुणि णं चइ हिरणं चइत्ता सुवणं जाव  
 पवइया ॥ २१ ॥

( सूत्र उवाई )

३० उत्तम भली जाति मातापत्त. कु० कुल पितापत्त. ३० शरीर नों आकार. वि०  
 गुणरूप. वि० अनेक विज्ञान चतुराई पणो. ला० शरीर ना गौर वर्णादि नी स्थाधा.  
 वि० वि पुरुषाकार है. सो० सौभाग्य क० कांति शरीर नी क्षीति रूप तिबो  
 करी युक्त सहित. ब० बहु धन मणि रत्नादिक धान्य गोधूमादिक ना निश्चय कोठार परिवार दासी.  
 पहनें. सर्व ने छांडी. न० नरपति राजा तेहना गुणयकी अतिरेक अधिक. इ० की भोग  
 छल ने विषे अवलित सर्व आनन्दा ने. कि० किम ना फल नी परे प्रथम अन्य दुःख-  
 प्रद जायया है वि० विषय सुखां ने ज० जल बुदबुद नी परे. कु० कुयाप आगस्थित जल बिन्दु  
 नी परे चंचल जी० जीवित्व ने. गा० जायया है. अ० अध्रुव अनित्य वख नी रज भाट के  
 जिम छांडी ने हिरण्य छांडी ने सुर्वयां यावत् प्रमज्या लीची.

इहां साधार्ण रा गुणा में पहवा गुण कहा। ते उत्तम जाति उत्तम  
 कुल ना ऊपना कहा। पिण इम न कहा नीच कुल ना ऊपना न ी आदि  
 देह। ए गुण न कहा। वली जे साधु धर्म ध्यान रा ध्यावनहार, विषय  
 सुख में किंपाक फल ( किरमाला ) जाणणहार, एहवा जे गुण हुन्ता ते  
 कहा। पिण इम न ो, जे कोई आर्त्तरीद्र ध्यान ना ध्यावनहार, सीहादिक  
 अणगार वली केई नियाणा रा करणहार, नव नियाणा रा करणहार, नव  
 नियाणा किया, तेहवा साधु केई उपयोग ना चूकणहार, केई ता ना आणण-  
 अवगुण न । जे साधार्ण में गुण हुंता ते बखाण्या। परं इम न  
 निघे—जे वीर रा साधु रे करे अ न आवे ब्रज नहीं माठा परिणामे

क्रोधादिक आवे इज नहीं इम नथी । कदाचित् उपयोग चूकां दोष लागे । परं गुण  
न में अवगुण किम कहे । तिम गणधरां भगवान् रा गुण किया तिम में तो  
गुण इज वर्णव्या । जेतलो पाप न कीधो तेहिज आश्री ते । परं गुण में अवगुण  
नि कहे । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति २ वोला सम्पूर्णा ।

कोणक राजा ना गुण कया ते पाठ लिखिये छे ।

सन्वगुण समिद्धे खत्तिण मुईए मुद्धाहि सिन्ने माउपिउ  
सुजाए ।

( उवाहै सुत्र )

स० सर्प जे राजाना गुण तिथो करी सन्द्ध परिपूर्ण । ए० हाथिय भातिबन्ध छे ।  
मु० मोद सहित छे । माता पितादिक परिवार मिलि राज्याभिषेक कीचो छे । ना० मातापिता  
नौ विनीत पयो करी सःपुत्र छे ।

अथ अठे कोणक नें सय्य राजा ना गुण सहित कह्यो । मातापिता नौ  
विनीत ते । अनें निरावलिया में कह्यो । जे कोणक श्रेणिक नें वेड़ी बन्धन देह  
पोते बैठ्यो तो जे श्रेणिक नें वेड़ी बन्धन बांध्यो ते विनीत पणो नहीं ते तो  
अविनीत पणो इज छे । पिण उवाहै में कोणक ना गुण वर्णव्या । तिम में जेतलो  
विनीत पणो तेहिज वर्णव्यो । अविनीत पणो गुण नहीं । ते भणी गुण कहिणे में  
तेहनों कथन कियो नहीं । तिम गणधरां भगवान् रा गुण किया । त्यां गुणा में  
जेतला गुण हुन्ता तेहिज गुण बलाप्या परं लब्धि फोड़ी ते गुण नहीं । ते अवगुण  
रो गुणा में किम करे । डाहा हुवे तो रि जोइजो ।

## इति ३ वोला सम्पूर्णा ।

तथा वली उवाई प्रश्न २० कां ना गुण कहा । तिहां ए ॥ छै ते लिखिये छै ।

से जे इमे गामागर नगर सदि वेसैसु मनुसा भवति तंजहा अप्पारंभा अप्प परिग्रहा धम्मिया धम्माणुया धम्मिहा धम्मक्खाई धम्मपलोइ धम्म पालंजणा धम्म समुदायरा धम्मेणं चैव वित्ति कप्पेमाणा सुसीला सुव्वया सुपडियाणंदा साहु ॥ ६४ ॥

( उवाई प्रश्न २० )

सै० तै० जै० जौ० गा० ग्राम आगार नगर आत्वत् सन्निवेशने विपे स० मनुष्य अ० हुपे छै अ० अल्प आरंभवन्त अ० अल्प परिग्रहवन्त ध० धर्मश्रुत चारित्र रूप ना करणहार ध० धर्मश्रुत चारित्र रूप ने केहे चाले छै ध० धर्मश्रुत चारित्र रूप ने संभलावे ते धर्मव्याप्त कहीजे । ध० धर्मश्रुत चारित्र रूप ने ग्रहिवा योग्य जाणी वार २ तिहां दृष्टि प्रवर्तवे व० धर्मश्रुत चारित्र ने विपे प्रकर्षे सादधान छै अथवा धर्म ने रागे रंगाणा छै । प्रमद रहित छै आचार जेहनो ध० धर्मश्रुत चारित्र ने अखंड पालवे श्रुत ने आराधिवैज वि० वृत्ति आजीविका कल्पना करता छतां स० सुष्ठु भलो शील आचार है जेहनो स० सुष्ठु भलो अत है जेहवो स० भले कर्ताव्ये करी आनन्द रा मननहार सा० श्रेष्ठ

आवक ने धर्म ना करणहार कहा , तो ते स्यूं अधर्म न करे काइ । वाणिज्य व्यापार संग्राम आदिक अधर्म छै , ते अधर्म ना करणहार छै पिण ते आवकां रा गुण वर्णन में अवगुण किम कइ । जेतला गुण हुंता ते कहा छै । पिण अधर्म करे ते गुण नहीं । वली सुशील ते आवका नो भलो शील आचार कहो । पिण ते कुशील सेवे ते सुशील पणो नहीं । ते माटे तेहनों कथन गुण में नहीं कियो । तिम भगवान् रे गुण वर्णन में लब्धि फोड़ी ते अवगुण नो वर्णन किम करे । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ४ बोला सम्पूर्णा ।

गौतम रा गुण । तिहां पहचो पाठ छै ते लिखिये छै ।

तेणं लेणं तेणं समयेणं समणस्स भगवन्नो महावीर-  
स्स जे अन्तेवासी इन्द्रभूती णामं अणगारे गोयम गोत्तेणं  
सत्तुस्सेहे सम चउरंस । ण सन्ठिण वज्जरिसह नाराय संघ  
यणो णग पुलगणिघस पम्ह गोरे उग्गतवे. दित्ततवे.  
तत्ततवे. महातवे. घोरतवे. उराले. घोरे. घोरगुणो. घोर  
तवस्सी. घोर वंभचेरवासी. उच्छूढ सरीरे ।

( भगवती श० १ उ० १ )

ते० तिब्ब . ते० तिण . स० अमण. भगवंत महावीर नो. जे० जेठो. अ०  
शिष्य. इ० इन्द्र भूति नाम. अ० . गो० गोतम नो. स० सात हाथअमाण उच्च. स० सम-  
चतुरस्र . स० सहित. व० बज्ज भूपम ना राज संघयणी. क० सुवर्ण. पु० कसौटी ने विवे.  
विष्यो थको. तिण . प० पद्म गौर वर्ण. उ० तीव्र तप. दि० दीप्ततप. कर्मवन दहवा समर्थ.  
त० तप्या छै तप जेहने. पहवा. म० महा तपवन्त छै। उ० उदार तपवन्त. बो० निर्दय ( कर्म  
ने ) बो० अनेरो आदरी न सके पहवा घोर गुणवन्त छै। बो० घोर ( तीव्र ) प्रह्वारी  
छै. उ० रहित जेहनों शरीर छै।

अठे पतला गौतम ना गुण कहा छै। अने गौतम में ४ ४  
संज्ञा स्नेहादिक छै। तथा उपयोग चूके तिण रो पड़िकमणो पिण करता पिण ते  
अवगुण न । गौतम ना गुण वर्णव्या पिण इम न कह्यो. जे गौतम उप-  
योग ना चूकणहार सकपायी संज्ञा सहित प्रमादी इत्यादिक अवगुण हुन्ता। ते  
पिण न । ति में निन्दा अयुक्त छै। ते माटे तिम गणधरां भगवान् रा  
गुण . त्यां गुणा में अवगुण न ही कहा। जेतलो पाप नहीं कीधो तेहिज  
ण्यो छै। अने लब्धि फोड़ी तिण रो पाप लाग्यो छै। वली समय २ सात २  
कर्म लागता हुन्ता ते पिण न कहा, ते अवगुण छै ते माटे स्तुति में निन्दा न शोभे।  
अने केइ एक पापंडी कहे—गौतम न भगवान् कह्यो। हे गौतम ! १२ वर्ष १३ पक्ष



में मो ने किञ्चिन्मात्र पाप लाग्यो नहीं । ते झूठ रा बोलणहार छै । अने भगवान् ने निद्रा आई तिण में तेहीज पाप लाग्यो कहे छै । प्रमाद कहे छै । प्रमाद री ओलखणा बिना भगवान् री द्रव्य निद्रा में प्रमाद कहे छै । अने वली किञ्चि पाप लागे नहीं इम पिण कहिता जावे छै । त्यां जीवां ने किम समझाविये । झाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ५ बोल सम्पूर्णा ।

इति गुणवर्णनाधिकारः ।



## अथ लेश्याऽधिकारः ।

बली कोई ंडी कहे—भगवान् में माठी लेश्या पावे नहीं । भगवान् में लेश्या किहां ी है । तत्तोत्तरम्—कषाय कुशील नियंठो में ६ लेश्या कही है । भगवान् में कषाय कुशील नियंठो ै है । ते लिखिये है ।

कषाय कुशीले पुच्छा, गोयमा ! तित्थेवा होज्जा  
तित्थेवा होज्जा । जइ तित्थेवा होज्जा किं तित्थयरे होज्जा  
पत्तेयबुद्धे होज्जा गोयमा ! तित्थगरे वा होज्जा पत्तेयबुद्धे  
होज्जा एवं नियंठेवि. एवं सिणाते ।

( भगवती श० २५ उ० ६ )

क० कुशील नी पृच्छा. गो० हे गौतम ! ति० तीर्थ नें विषे पिण हुइं. अ० अने  
अतीर्थ नें विषे पिण हुइं. छन्नस्य अवस्या नें विषे तीर्थकर पिण हुइं. तीर्थकर ते तीर्थगूं  
पिण तीर्थ माहि नहीं । ल० जो तीर्थ नें विषे हुइं तो. किं स्पू तीर्थकर नें विषे हुइं.  
प० प्रत्येक बुद्ध नें विषे हुइं. हे गौतम ! ति० तीर्थकर नें विषे पिण हुइं. प० प्रत्येक नें  
विषे हुइं ए० एवं निर्गन्ध अने. ए० एवं जाणवा.

अथ अठे तीर्थङ्कर में स्य पणे कुशील नियंठो कह्यो है । तिण  
सूं भगवान् में य कुशील नियंठो हुत्तो । अने कषाय कुशील नियंठे ६ लेश्या  
कही है । ते लिखिये है ।

कषाय कुशीले पुच्छा गोयमा ! सलेस्सा होजा गो  
अलेस्सा होजा जइ सलेस्सा होजा सेणं भं ते ! कइ सुले-  
स्सासु होजा, गोयमा ! छसु लेस्सासु-होजा !

( भगवती श० २५ उ० ६ )

कषाय कुशील नी पुच्छा हे गौतम ! स० लेस्या सहित हुइं. शो० नहीं. अलेस्यावन्त  
हुइं. ज० जो लेस्या सहित हुइं तो. से० ते. भगवन्त ! क० केतली लेस्या ने विपे हुइं गो०  
हे गौतम ! छ० ६ लेस्या ने विपे हुइं ।

इहां कषाय कुशील नि १ में ६ लेस्या कही छै । ते न्याय  
भगवान् में ६ लेस्या हुवे तथा पन्नवणा पद ३६ तैजस लब्धि फोड्या उत्कृष्टी  
क्रिया कही । अनें हिंसा करे ते कृष्ण लेस्या ना लक्षण । उत्तराध्ययन अ०  
३४ गा० २१ "पंचासवपवता" इति वचनात् पञ्च आश्रव में प्रवर्त्तते कृष्ण लेस्या  
ना लक्षण कहा । अनें भ । न् तेजु शीतल लेस्या रूप लब्धि फोडी तिहां उत्कृष्टी  
५ क्रिया कही । ते माटे ५ कृष्ण लेस्या नों अंश जाणवो । कोई कहें कृष्ण लेस्या  
ना लक्षण तो अत्यन्त छोटा छै । ते भगवान् में किम हुवे । तेहनों उत्तर—प्रथम गुण  
ठाणे ६ लेस्या छै । तिहां शुक्ल लेस्या ना तो लक्षण अत्यन्त निर्मल भला कहा  
छै । ते प्रथम गुण ठाणे किम पावे । जिम मिथ्यात्वी में शुक्ल लेस्या नों अंश  
कही जे । तिम भगवान् में पिण कृष्ण लेस्या नों अंश कही जे । डाहा हुवे तो  
विचारि जोइजो ।

इति १ बोल सम्पूर्णा ।

केतला एक कहे—साधु में ३ माठी लेस्या पावै इज नहीं ते पिण  
। भगवान् तो घणे ठामे साधु में ६ लेस्या कही छै । म तो भगवती श०  
२५ उ० ६ कषाय कुशील नियंठे ६ लेस्या कही छै । तथा भगवती श० २५ उ० ७

सीमां छेदोपस्थापनीक चारित्र्य में ६ लेश्या में कही है । तथा आवश्यक अ० ४ में कह्यो । ते पाठ लिखिये है ।

पडिक्कमामि छहिं लेसाहिं कण्हलेशाए. नील लेसाए.

उलेसाए. तेउलेसाए. पम्ह लेसाए. सु लेसाए.

( आवश्यक अ०-४ )

निवर्त्तू छूं ६ लेश्या में विषे जे कोई विपरीत करवो ते कृण ते कहे है । वि० कृण्य लेश्या कलह चोरी मृषावाद इत्यादिक ऊपर अभ्यवसाय ते कृण्य लेम्या जाणवी. नी० ईर्पा पर गुण नूं असहिचो अत्यन्त कदाग्रह तप रहित कुण्य रूप अविद्या माया इत्यादिक लक्षणो करी नील लेम्या. का० वक्र वचन वक्र. आचार. आप रो दोष ठाँके दुष्ट बोले चोर पर सम्पदा सही न सके. इत्यादिक लक्षणो करी काठ लेम्या जाणिये. ते० तेउ लेम्या दया दान प्रिय धर्मी दृढ़ धर्मी कीचो उपकार जाणो विविध गुणवन्त तेजू लेम्या. प० पद्म लेम्या दान परीक्षावन्त शील उत्तम साधु पूज्य क्रोधादिक उपयमान्या. सु० सदा मुनीवर राग द्वेष रहित हुवे ते लेम्या जाणवी.

इहां पिण ६ लेश्या कही जो अशुभ लेश्या में न वर्त्तें तो ए कयूं कह्यो । तथा "पडिक्कमामि चउहिं ऋणेहिं अट्टेणं ऋणेणं रुहेणं ऋणेणं धम्मेणं ऋणेणं सुक्केणं ऋणेणं" इहां साधु में ४ ध्यान कहा । जिन आर्त्तरीद पावे तिम कृण नील कापोत लेश्या पिण आवे । तेहंनों प्रायश्चित्त आवे । जाहा हुवे तो विवारि जोइजो ।

इति २ बोल सम्पूर्णा ।

पञ्चवर्णा पद १७ उ० ३ में पहवा पाठ कहा है । ते लिखिये है ।

कण्ह लेस्सेयां भंते ! जीवे कइ सुणाणेसु होजा गोयमा ! दोसु वा तिसु वा चउसु वा णाणेसु होजा दोसु

होज्जा गो भिणिबोहियणाणे सु णाणे होज्जा तिसु  
 होज्जमाणे भिणिबोहियणाणे सुय णाणे ओहियणाणे  
 होज्जा वा तीसु होज्जमाणे आभिणिबोहिय सुय णाणे  
 मण प वणाणे होज्जा चउसु होज्जमाणे भिणिबोहिय-  
 णाणे सुय णाणे रोहियणाणे मणपज्जवणाणेसु होज्जा ।

( पञ्चव्या पद १७ उ० ३ )

फ० कृष्ण लेश्यावन्त. भ० हे भगवन्त ! जीव. फ० केतला. ज्ञानवन्त हुह. गो० हे  
 गौतम ! दो० वे ज्ञानवन्त. ति० अथवा त्रिण ज्ञानवन्त. च० अथवा च्यार ज्ञानवन्त हुह. दो० वे  
 ज्ञानवन्त हुह तो. आ० मतिज्ञान. छ० श्रुतज्ञान हुह. ए ज्ञानवन्त. ति० त्रिण ज्ञानवन्त हुह.  
 अ० मतिज्ञान. छ० श्रुतज्ञान. अवधि ज्ञानवन्त. ए त्रिण ज्ञानवन्त हुह. अ० त्रिण  
 ज्ञानवन्त हुह तो. आ० मतिज्ञान. छ० श्रुतज्ञान. म० मन पर्यव ज्ञान. ए त्रिण ज्ञानवन्त हुह.  
 अवधि ज्ञान रहित ने पिण मन पर्यव ज्ञान उपजे. ते माटे दोष नहीं. च० च्यार ज्ञानवन्त हुह  
 तो. आ० मतिज्ञान. छ० श्रुतज्ञान. उ० अवधि ज्ञानवन्त. म० मनः ज्ञान ए चार ज्ञान-  
 वन्त

पर्यवज्ञानी में ६ लेश्या में कही है। तिहां टीकाकार  
 ण पर्यवज्ञानी में कृष्ण लेश्या ना मंद अध्यवसाय ।। ते टीका  
 लिखिये है।

ननु मनः पर्यवज्ञान मति विशुद्धस्य जायते. कृष्णा लेश्या च संक्षिप्ता  
 अध्यवसाय रूपा, ततः कृष्ण लेश्याकस्य मनःपर्यव ज्ञान संभव उच्यते । इह  
 लेश्यानां प्रत्येक मसंख्येय लोकाकाश प्रदेश प्रमाणाणि अध्यवसाय स्थानानि  
 तत्र कानिचिन्मन्दानुमावान्यध्यवसाय स्थानानि. प्रमत्त संयतस्यापि लभ्यन्ते ।  
 अतएव कृष्ण नील कापोत लेश्याः प्रमत्त संयतानां गीयन्ते । मनः पर्यव ज्ञानञ्च  
 प्रथमतो ऽ प्रमत्तस्यो त्यज्यते. ततः प्रमत्त संयतस्यापि लभ्यते । इति सम्भवति  
 कृष्ण लेश्यापि मनः पर्यव ज्ञानं चतुर्धामिनिबोधकं श्रुतावधि मनः पर्यव ज्ञानेषु ।

अत्र टीका में कह्यो—लेश्या ना मसंब्याता लोकाकाश प्रदेश प्रमाणे अभ्यवसाय ना स्थानक छै । तिण में कृष्ण नील कापोत ना मंदानुभाव अभ्यवसाय स्थानक प्रमत्त संयती में लोमे—तिणी में मन पर्यव ज्ञान सम्भवे, इस कह्यो । ए अभ्यवसाय रूप भाव लेश्या छै । ते मणी गन पर्यव ज्ञानी में पिण माठी लेश्या पावे छै । तथा भगवती श० ८ उ० २ कृष्ण नील कापोत लेश्या में ४ नी भजना कही । इत्यादिक अनेक ठामे साधु में ६ लेश्या कही छै । डाहा हुवे तो विचारि जोड़्यो ।

## इति ३ बोल सम्पूर्णा ।

तिवारे कोई कहे भगवती में १०—प्रमादी अप्रमादी में कृष्णादिक ३ लेश्या न कहिणी । ते माटे साधु में माठी लेश्या न पावे । तेहनों उत्तर—तिण ठामे पहुँचो छै ते लिखिये छै ।

कण्ह लेस्सस्स नील लेस्सस्स काउ लेस्सस्स जंहा ओहिं-  
या जीवा एवरं पमत्ता पमत्ता ए भाणियव्वा ।

( भगवती श० १ उ० १ )

क० कृष्ण लेश्या. नी० नील लेश्या. कापोत लेश्या. ज० जिमः ओ० ओधिक संव जीवः ५० पिण एतले विशेषः ५० प्रमत्त अप्रमत्त न कहिवोः

अंध अठे तो इस कह्यो—कृष्ण, नील, कापोत, लेश्या जिम ओहि ( समूचे जीव ) तिम कहिवो । पिण एतलो विशेष प्रमादी, अप्रमादी, ए वे भेद संयती रा न । जे अधिक में संयती रा वे भेद किया ते वे भेद नील, कापोत लेश्या संयती रा न हुवे । ते कृष्णादिक ३ प्रमादी में छै । अने अप्रमादी में नथी । ते माटे वे भेद करवा नथी । बाकी ओधिक नों पाठ कह्यो, तिम कहिवो । ते ओधिक नों पाठ लिखिये छै ।

जीवा दुविहा परणत्ता, तं जहा संसार समावणगाय,  
असंसार समावण गाय । तत्थणं जे ते असंसार समावण  
गाय, तेणं सिद्धा सिद्धाणं णो आयारंभा जाव अणारंभा ।  
तत्थणं जे ते संसार समावणगा ते दुविहा प० तं० संजयाय  
असंजयाय । तत्थणं जे ते संजया ते दुविहा प० तं० पमत्त  
संजयाय अपमत्त संजयाय । तत्थणं जे ते अपमत्त संजयात्तेणं  
णो आयारंभा णो परारंभा जाव अणारंभा । तत्थणं जे ते  
पमत्त संजया ते सुहं जोगं पडुच्च णो आयारंभा णो परारंभा  
जाव अणारंभा असुहं जोगं पडुच्च आयारंभावि. परारंभावि.  
तदुभयारंभावि. णो अणारंभा”

( भगवती श० १ उ० १ )

जी० जीव. दु० ये प्रकारे. प० कथा है, संसार समावण असंसार समावण, तं० तं०  
सिद्धा जे असंसार समावण. ते० ते सिद्ध णो० नहीं आत्मारंभी वात्तु अनारंभी तिहां, जे० जे.  
ते० ते. सं० संसार समावण जीव. तं० ते. दु० बहुत प्रकारे. प० कहे है. सं० संयती. अ० असं-  
यती. तं० तिहां. जे० जे. ते० ते. सं० संयमी. ते० ते. दु० बहुत प्रकारे. प० पद्यों. तं० ते  
कहे है. प० प्रमत्त संयमी. अ० अप्रमत्त संयमी. तं० तिहां. जे० जे. ते० ते. अ० अप्रमत्त  
संयमी. ते० ते. आत्मारंभी नहीं. परारंभी नहीं. उभयारंभी नहीं. अ० अनारंभी है, तं०  
तिहां. जे० जे. ते० ते. प० प्रमत्त संयमी. ते० ते. उ० शुभ योग प्रति अंगीकार करी नें. णो०  
आत्मारंभी नहीं. प० परारंभी नहीं. उभयारंभी नहीं. अ० अनारंभी है. अ० अशुभ  
योग मन वचन काया ना अङ्गीकार करी नें. आ० आत्मारंभी पिण हुइ. प० परारंभी पिण  
उभयारंभी पिण हुइ. णो० अनारंभी न हुइ.

अथ अष्ट ओषिक पाठ कह्यो—तिण में संयती रा २ भेद प्रमादी. अप्रमादी.  
क्रिया । अने कृष्ण, नील, कापोत, लेश्या नें ओषिक नों पाठ कह्यो । तिम  
कहियो. विण पतलो विशेष—संयती रा प्रमादी. अप्रमादी. प २ भेद न करवा ।  
ते वि . प्रमत्त में कृष्णादिक ३ लेश्या हुवें । अने अप्रमत्त में न हुवे, ते गार्ह  
२ भेद वर्ज्या । अने साधु में कृष्णादि ३ न हुवे तो “संजया न भाणियव्वा” पढ़वू

कहिता । पिण पहवो तो पाठ कहाँ नहीं । जे साधु में कृष्णादिक ३ लेश्या न होवे तो पहिलो दोल संयती रो छोड़ नें प्रमत्त, अप्रमत्त, ए २ भेद संयती रा किया ते क्वां ने बरजे । ए तो साम्प्रत कृष्णादि ३ लेश्या संयती में टाली नथी । ते भणी संयती में कृष्णादिक ३ लेश्या छै । अने प्रमादी, अप्रमादी, ए २ भेद संयती रा करवा भात्री बज्यो छै । बाहा हुवे तो विचारि जोड़जो ।

## इति ४ बोल सम्पूर्णा ।

तथा इतरो सम्पूर्ण न पड़े तो बली भगवती शतक १ उ० २ कहाँ—ते पाठ लिखिये छै ।

शेरइयाणं भंते ! सध्वे समवेदनां, गोयमा ! शोइया  
समद्वे, सेकेणद्वेणं भंते ! गोयमा ! शेरइया दुविहा परणता  
तं जहा संगिणभूयाय, असंगिणभूयाय । तत्थणं जे ते संगिण-  
भूया तेणं महावेदणा तत्थणं जे ते असंगिणभूया तेणं अप्प-  
वेयण तरागा सेतेणद्वेणं जाव णो समवेदणा ॥

( भगवती श० १ उ० २ )

ने० नारकी भ० हे भगवन्त ! स० सध्वे, स० समवेदनावन्त दुइ, गो० हे गौतम !  
यो० ए अर्थ समर्थ नहीं, से० ते एवां माटे, गो० हे गौतम ! यो० नारकी, दु० विद्व प्रकारे, ए०  
कहा, तं० ते कहे छै, स० संगी भूत, अ० असंगी भूत, तं० तिहां जे, स० रक्षी भूत, ते०  
सेहने, म० महा वेदना दुइ, तं० तिहां, जे० जे, ते० ते, अ० असंगी भूत, ते० तेहने, अ०  
वेदना बोदी दुइ, से० ते माटे, जा० दत्त, यो० नहीं, स० सरीखी वेदना,

ए समवे नारकी रा नव प्रश्न में सातमों ओघिक प्रश्न १० हिवे समुचे  
मनुष्य ना नव प्रश्न कहा तिण में आठमों किया नों पश्च कहे छै । ते पाठ  
लिखिये छै ।



मणुस्साणं भंते ! सव्वे सम किरिया, गोयमा ! खोइ-  
 ण्हे समद्धे. से केण्हेणं भंते, ! गोयमा ! मणुस्सा ति विहा  
 पणत्ता तं जहा सम्मदिट्ठी. मिच्छदिट्ठी. सम्म मिच्छदिट्ठी.  
 तत्थणं जे ते सम्मदिट्ठी ते ति विहा प० तं० संजयाय. सं-  
 जयाय. संजया संजयाय । तत्थणं जे ते संजया ते दुविहा प०  
 तं० सराग संजयाय. वीयरग संजयाय. तत्थणं जे ते वीयरग  
 संजया तेणं अकिरिया तत्थणं जे ते सराग संजया ते दुविहा  
 प० तं० पमत्त संजयाय. अपमत्त संजयाय । तत्थणं जे ते  
 अपमत्त संजया ते सिणं एगा माया वत्तिया किरिया कज्जइ ।  
 तत्थणं जे ते पमत्त संजया ते सिणं दो किरिया कज्जइ. तं०  
 आरंभियाय. माया वत्तियाय. तत्थणं जे ते संजयासंजया  
 ते सिणं आदिमाओ ति गिण किरियाओ कज्जंति । असंज-  
 णं चत्तारि किरियाओ कज्जंति मिच्छदिट्ठीणं पंच सम्म  
 मिच्छदिट्ठीणं पंच ॥१३॥ वाण संतर जोइस वेमाणिया  
 जहा असुर कुमारा णवरं वेदणाए णाणत्तं माई मिच्छदिट्ठी  
 उववण गाय अप्प वेयणतरा, अमायी सम्मदिट्ठी उववण-  
 गाय महा वेयण तरा भाणियन्वा । जोइस वेमाणियाय ॥१४॥  
 सलेस्साणं भंते खोइया सव्वे समाहारगा ओहियाणं सले-  
 स्साणं. सुक्कलेस्साणं ए एसिणं ति गहं एक्कोगमो करह लेस.  
 णील लेस्साणं पि एक्कोगमो । णवरं वेदणाए मायी मिच्छ-  
 दिट्ठी उववणगाय अमायी सम्मदिट्ठी उववणगाय भाणि-  
 यन्वा । काउलेस्सा णवि एव मेव गमो णवरं खोइए जहा

ओहिए दंडए तहा भाणियव्वा. तेउलेस्सा. पम्हलेस्सा. स  
 ल्थि जहाओ. हिओ तहा भाणियव्वा एवरं मणस्सा राग  
 वीतरागा ए भाणियव्वा ।

( भगवती श० १ उ० २ )

म० मनुष्य. भ० हे भगवन्त ! स० सम क्रियावन्त. गो० हे गोतम ! बो० ए अर्थ  
 नहीं. से० ते. के० स्प्यां माटे. गो० गोतम ! म० मनुष्य. ति० त्रिण भेदे कक्षा. तं० ते.  
 कहे छै. स० सम्यग् दृष्टि मि० मिथ्या दृष्टि. स० सम्यग् मिथ्या दृष्टि. ते० तिहां जे सम्यक्-  
 दृष्टि. ते० ते. ति० त्रिण प्रकारे. प० कक्षा तं० ते कहे छै. सं० संयमी साधु. अ० असंयमी.  
 सं० संयम्यसंयमी. तं० तिहां. जे. संयमी साधु. तं० दु० विहुं प्रकारे कक्षा. तं० ते कहे छै. सराय  
 ती अज्ञीय अनुपशान्त कषाय दशमा गुण ठाया लगे सराय संयमी कहीह. वो० वीतराग  
 संयमी. ते उपशान्त कषाय ज्ञीय कषाय. तं० तिहां जे ते. वो० वीतराग संयमी. ते० तेहने.  
 अ० क्रिया न हुइ. तं० तिहां जे ते सराय संयमी. ते विहुं भेद कक्षा. तं० ते कहे छै. प०

ति० अ० अप्रमत्त संयमी. तं० तिहां जे ते. अ० अप्रमत्त संयमी. ते० तेहने. ए० एक  
 बल्लि नी क्रिया उपजे. अज्ञीय पणा थकी. तं० तिहां जे ते. प० संयमी. ते० तेहने.  
 दो० दोय क्रिया उपजे. ते० ते कहे छै. आ० अप्रमत्त संयमी नें सर्व प्रमत्त योग आरंभ की क्रिया  
 कहे. अज्ञीय पणा थी मायावर्त्ति नी क्रिया कहीह. तं० तिहां जे ते. सं० संयता संयति. ते०  
 तेहने. आ० प्रथम री. ति० तीन. कि० क्रिया. क० उपजे छै. अ० असंयती नें, च० चार क्रिया.  
 क० उपजे छै. मि० मिथ्या दृष्टि नें ५ स० सम मिथ्या दृष्टि नें ५ ( क्रिया उपजे छै ) ॥१३॥

वा० वाण व्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक. ज० यथा. अ० अक्षर कुमार. श० एतलो विशेष  
 वे० वेदना नें विषे. शा० नाना प्रकार. मा० मायी मिथ्या दृष्टि. उ० उपजे. अ० अल्पवेदनावन्त.  
 अ० अमायी. सम्यक् दृष्टि. उ० उपजे. म० महा वेदनावन्त. भा० कही जे. जो० ज्योतिषी वैमा-  
 निक नें. ॥१४॥

स० सलेयी. भ० भगवन्त ! ना० नारकी. स० सर्व. तं० सम आहारी. औ० औधिक.  
 स० सलेयी. शु० शुद्ध लेयी. ए० ह्य तीन नें विषे एक सरीखो. क० कृष्ण लेभ्या नील लेभ्या ने  
 विषे. ए० एक सरीखा. शा० एतले विशेष वे० वेदना रे विषे. मा० मायी मिथ्या दृष्टि ते  
 महा वेदना वन्त. अ० अने अमायी सम्यग् दृष्टि अपना ते वेदनावन्त. म० मनुष्य. कि०  
 क्रिया नें विषे. स० सराय संयमी वीतराग संयमी. प० प्रमत्त संयमी. अ० अप्रमत्त संयमी  
 ते कृष्ण लेभ्या ना दण्डक नें विषे न कहिवा. का० कापोत लेभ्या दंडक ते नील लेभ्या दंडक  
 सरीख. प्रिण श० एतले विशेष. तारक पदे. ज० जिम औधिक दंडके नारकी विहुं भेद छै. ती

भूत अने अस्त्रांशो भूत. अस्त्रांशो प्रथम कृष्णे. तिहां करोत लेख्या. ते० तेजू लेख्या. ५० पत्र लेख्या. ज० वेद जोवनें छै ते जोवनें आश्री ने. ज० जिम ओधिक दंडक तिम भयवो नारकी विकलेन्द्रिय तेगल्फाय. वायुकाय ने प्रथम नो ३ लेख्या पिण. २० पतलो विशेष. केवल ओधिक दंडक के क्रिया सूत्रे मनुष्य सरागी चीतरागी विवेक्य कछा । ते इहां न कइवा तेजू पत्र लेख्या सरागी ने हुइ. पिण चीतराग ने न हुइ. चीतराग ने एक शुद्ध लेख्या ज हुवे ते माटे सराग चीतराग न भयवा.

अथ इहां कह्यो—कृष्ण, नील, लेशी नेरिया तौ ओधिक नेरिया ना नव प्रश्न नी परे. पिण पतलो विशेष. वेदना में फेर. ओधिक में तो सत्री भूत नेरिया रे घणी वेदना कही । अत्रात्री भूत नेरिया रे थोड़ी वेदना कही । अने इहां मायी मिथ्या दृष्टि रे घणी वेदना अनं अमायी सम्प्रकृष्टि रे थोड़ी वेदना कहिणी । ते किम् असत्री मरी कृष्ण नील लेशो नेरिया न हुवे । ते माटे सत्री भूत असत्री भूत कहिणा । अनं कृष्ण लेशी मनुष्य पिण ओधिक मनुष्य ना प्रश्न नो परे. पिण क्रिया में फेर. समजे मनुष्य ना भेद क्रिया में किया । तिम कृष्ण नील लेशी मनुष्य ना भेद करणा । पिण सरागी चीतरागी, प्रमादी, अप्रमादी, ५ भेद न करवा । जे समजे मनुष्य ना ३ भेद सम्प्रकृष्टि, मिथ्यादृष्टि, सत्यकमिथ्यादृष्टि, तिम कृष्ण नील लेशी मनुष्य ना ३ भेद सत्यकृष्टि, मिथ्यादृष्टि, सत्यकमिथ्यादृष्टि, जिम समजे मनुष्य ना ३ भेद में सत्यकृष्टि, मनुष्य रा ३ भेद—संयती, असंयती, संयतासंयती, तिम कृष्ण नील लेशी मनुष्य रा पिण ३ भेद करवा संयती, असंयती, संयतासंयती । इण न्याय संयती में तो कृष्ण नील लेख्या हुवे, अने धागे समजे मनुष्य रा भेदां में संयती रा २ भेद—सरागी, चीतरागी, । अने सरागी रा २ भेद—प्रमादी, अप्रमादी, ५ सरागी चीतरागी प्रमादी अप्रमादी भेद कृष्ण नील लेशी संयती मनुष्य रा न हुवे । चीतरागी अने अप्रमादी में कृष्ण नील लेख्या न हुवे । ते माटे २-२ भेद न हुवे । सरागी में तो कृष्ण से नील लेख्या हुवे, परं चीतरागी में न हुवे । ते माटे संयती रा २ भेद सरागी चीतरागी न करवा । अने प्रमादी में तो कृष्ण नील लेख्या हुवे, परं अप्रमादी में न हुवे । ते माटे सरागी रा २ भेद—प्रमादी, अप्रमादी न करवा । इणन्याय कृष्ण नील लेशी संयती रा सरागी चीतरागी प्रमादी अप्रमादी भेद करवा वर्ज्या । परं संयती वर्ज्या नहीं । संयती में कृष्ण नील लेख्या छै । अने जो संयती में कृष्णादिक न हुवे तो इम कहिता ‘संजया न भाणियवा’ ५ धुर नों संयती बोल छोड़ी नें आगला

“सरागी वीतरागी पमत्ता पमत्ता न भाणियत्वा” इतरो क्यूं कहे । वली साध्या में कृष्ण नील लेश्या हुवे इज नहीं तो पहिलां सरागी वीतरागी पछे प्रमादी अप्रमादी इम उलटा क्यूं कह्या । पिण संयती रा भेद आगे इमहिज किया हुन्ता । तिमहिज नाम लेइ इहां वज्यां छै । ते संयती रा भेद करवा वज्यां छै । पिण संयती वज्यां नहीं । वली धागे कह्यो तेजू पक्ष लेशी मनुष्य क्रिया में पूर्वे मनुष्य ओधिक कह्यो । तिम कहियो । पिण सरागी वीतरागी न कहियो । इहां तेजू पक्ष लेशी मनुष्य में पिण सरागी वीतरागी वज्यां । ते पिण संयती रा २ भेद सरागी, वीतरागी पूर्वे कह्या तिम तेजू पक्ष लेश्या संयती रा ये भेद न करवा । ते किम—सरागी में तो तेजू पक्ष हुवे । पिण वीतरागी में तेजू पक्ष न हुवे । ते भणी तेजू पक्ष, लेशी संयती रा २ भेद वज्यां । पिण संयती वज्यां नहीं । तिम भ० श० १ उ० ४१ कृष्ण नील कापोत लेशी संयती रा २ भेद प्रमादी, अप्रमादी, करना वज्यां । पिण संयती वज्यां नहीं । तिवारे कोई कहे कृष्ण, नील, कापोत, लेशी में प्रमादी, अप्रमादी विह्व वज्यां । तो साधु में कृष्णादिक ३ किम होवे । तिण ने इम कहिणो—तेजू पक्ष में पिण सरागी वीतरागी वज्यां छै । जो तेजू, पक्ष, लेश्या साधु में सरागी वीतरागी क्यूं वज्यां तो साधु में तेजू पक्ष किम कहो छो । तुम्हारे लेखे हो सरागी में पिण तेजू पक्ष नथी । अने वीतरागी में पिण तेजू पक्ष नथी । तिवारे साधु में पिण तेजू पक्ष न कहिणी । तिवारे आगलो कहें—संयती रा २ भेद कह्या । सरागी में तो तेजू पक्ष होवे पिण वीतरागी में तेजू पक्ष न होवे । तिण सूं २ भेद करवा वज्यां छै । इम कहे तो तिण ने इम कहिणो । तिम कृष्ण नील कापोत लेशी संयती रा पिण प्रमादी अप्रमादी ये भेद करवा वज्यां । प्रमादी में तो कृष्णादिक ३ लेश्या हुवे । पिण अप्रमादी में न हुवे । तिण सूं ये भेद करवा वज्यां । पिण संयती ने न वज्यां । ए तो चौड़े साधु में कृष्णादिक लेश्या छै । तिवारे कोई कहे—ए तो कृष्णादिक ३ द्रव्य लेश्या छै । अने भावे होय तो भावे कृष्णादिक में अणआरम्भी किम हुवे । तिण ने कहिणो ए द्रव्य लेश्या छै । तो ३ भली लेश्या पिण द्रव्य हुवे । एहने पिण आरम्भी कह्या छै । ते भली लेश्या में आरम्भी किम हुवे । एहनों पाठ छै ।

“तेउलेस्सस्स पद्मलेस्सस्स सुक्क लेस्सस्स जहो ओहिया जीवा एवरं सिद्धा ए भाणियत्वा”

इमं तीन भट्टी लेश्या नें पिण ओघिक नों पाठ भलायो ते लेखे तेजू पद्म शुक्ल लेशी पिण आरम्भी अणारम्भी येहु हुवे । जो कृष्णादिक द्रव्य लेश्या कहे तो ए भली लेश्या पिण द्रव्य कहिणी । तिवारे आगलो कहे—भली भाव लेश्या वत्तें ते बेलां आरम्भो न हुवे । पिण भट्टी भाव लेश्यावन्त साधु नों पृच्छा आश्री आरम्भी हुवे । ते न्याय ए ३ भली भाव लेश्यावन्त छै । इम कहे तेहने इम कहिणी । इगन्याय कृष्णादिक ३ भट्टी भाव लेश्या वत्तें । तिण बेलां द्रव्य आरम्भी न हुवे । पिण भट्टी लेश्यावन्त साधु नों पृच्छा आश्री अणारम्भी हुवे ए तो जो कृष्णादिक ३ द्रव्य कहे तो तेजू, पद्म, शुक्ल, पिण द्रव्य कहिणी । अने जो तेजू, पद्म, शुक्ल, भाव लेश्या कहे तो कृष्णादिक पिण भाव लेश्या कहिणी । ए तो साम्प्रत साधु में ६ लेश्या कही छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ५ वोल सम्पूर्णा ।

वली जिम भगवती प्रथम शतक दूजे उद्देश्ये कहाँ—तिम पञ्चवणा पद १० उद्देश्ये कहाँ ते पाठ लिखिये छै ।

कएह लेसाणं भन्ते ! गोरइया सव्वे समाहारा समै शरीरा सव्वेव पुच्छा, गोयमा ! जहा ओहिया एवरं गोरइया वेदणाए, माई मिच्छ दिट्ठी उववणगाय अमायी सम्म-दिट्ठी उववणगाय भाणियव्वा । सेसं तहेव जहा ओहि-ताणं असुर कुमारा जाव वाण मंतरा एते जहा ओहिया एवरं एसाणं किरियाहिं विसेसो जाव तत्थणं जे ते सम्म-दिट्ठी ते ति विहा पणत्ता तंजहा संजया, असंजया, संजया-संजया जहा ओहियाण ।

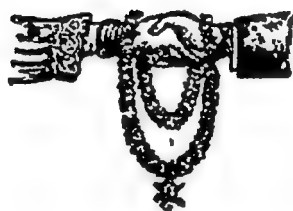
क० कृष्ण लेश्यावन्तं, हे भगवन् ! ने० नारकी, स० ई० स० सरीसा आहार-  
 है सम शरीरवन्त है, पूर्वली परे पृच्छा, गो० हे गौतम ! ज० जिमें ओघिक तिम  
 कहिवा, ख० पिण एतलो विशेष, ख० नारकी, वे० जे कृष्ण लेश्या ना वेदना न विषे केतला एक  
 भावावन्त मिथ्यादृष्टि मरी ने, नारकी पण है, अने केतला एक अमायी दृष्टि  
 मरी ने है, ए वे भेद कहिवा मायी मि दृष्टि है ते अति दुष्टाध्यवसाय निर्वन्ध  
 कर्म थकी महा दुःख वेदनावन्त है, अमायी सम्यग्दृष्टि उपनो है ते अल्पाध्यवसाय थकी  
 दुःख वेदनावन्त है, ए वे भेद कहिवा, पिण सेंझी मूत असंझी भूत न कहिवा, जे भंशी तो  
 नरके ऊपजे है कृष्ण लेश्यावन्त ५-६-७ नरके ऊपजे, ते माटे, से० शेष सर्व  
 तिमज ओघिक नी परे, कहिवा, कृष्ण लेश्या ना डाडाकुमार यावत्, वा० वायव्यन्तर एह सर्व  
 तिम ओघिक पण कया, रि कहिवा, ख० पिण एतलो, म० कृष्ण लेश्या ना मनुष्य ने  
 विशेषता है, ते कहे है, कृष्ण लेश्या ना मनुष्य सम्यग्दृष्टि ते त्रिण भेद कइो है, ते कहे है,  
 संयती, असंयती, सं यतो । ओघिक नी परे ।

इहां पिण कृष्णलेशी मनुष्य रा ३ भेद है । संयती, असंयती,  
 सं , ते न्याय पिण संयती में कृष्णादिक हुवे । इम संयती में कृष्णादिक  
 लेश्या घणे ठामे कही है, अने कोई कहे साधु रे माठी लेश्या आवैज नहीं । ते  
 रा बोलणहार है । अने साधु रे तो २ माठी लेश्या कर्मयोगे आवती  
 है । कहे साधु रे कर्म योगे अशुभ योग अशुभ ध्यान पिण आवे । तिम कहे  
 अशुभ लेश्या पिण आवे है । भगवती श० ३ उ० ४-५ साधु अनेक प्रकार ना रूप  
 वैक्रिय करे ते विना आलोयां मरे तो विराधक । वैक्रिय करे है, वली योगे  
 आहारिक तेजू लब्धि पिण फोडवे इत्यादिक अनेक सावध कार्य करे । तिवारे  
 नी लेश्या आवे है । तेहनों श्रित आवे है । सीहो मुनि रोयो पाडी,  
 रहनेमि वि परिणाम आणी छोटो बोल्यो, अहमुत्ते मुनि पाणीमें पाती  
 तराई, धर्म घोष रा साधां नागश्री ने बाजार में हेली निन्दी, भगवान् लब्धि  
 फोडी, गौतम न में खलाया, इत्यादिक में स माठी लेश्या है ।  
 तिवारे प्रायश्चित्त लेवे है । जो मली लेश्या हुवे तो प्रायश्चित्त क्यूं लेवे । माठा

रा ~ माठी लेश्या ना लक्षण केई एक सरीखा छै । ~ कैतला साधु  
 रे माठो कहे । पिण माठी लेश्या न कहे । आर्त्तछ्द्र ना ~ कृष्ण  
 लेश्या ना लक्षण मिलता छै । ते माठो ध्यान साधु में ~. तो माठी लेश्या किम  
 न पावे । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ६ बोल सम्पूर्णा ।

इति लेश्याऽधिकारः



## अथ वैयावृत्ति-अधिकारः ।

कोई कहे—जे यक्षों में मूर्च्छा गति कीधी ते हरि केशी मुनि  
 कही, ते ए में धर्म है । जो यक्ष में पाप हुवे, तो व्यावच कयू  
 कही । तत्रोत्तम्—ए तो है । आज्ञा बाहिरे है । जे विप्र ना  
 में अ कीधा, ते तो प्रत्यक्ष विरुद्ध है । जद केई कहे—ए में धर्म  
 नहीं तो हरिकेशी मुनि इस कयू कह्यो । ए यक्ष करी इस कहे तेहनों  
 —ए तो हरिकेशी मुनि आपरी आशङ्का मेटवा ने कह्यो है । ते  
 है ।

विंच इण्हिं च एणागायं च,  
 एण्णदोसो ए मे अत्थि कोई ।  
 जक्खाहु वेयावडियं ति,  
 तम्हाहु ए ए णिहया कुमारा ।

( अ० १२ गा० ३२ )

पु० यत्त गो यपो हिवे यती बोल्यो. ए० पूर्वे. इ० वर्त्तमान काले. अ० अ  
 काले. म० मोनें करी. ए० प्रद्वेष. न० नयी. मे० माहेर. अ० छै. को० कोई पिब.  
 ज० हु० निमय. ते मयी करे छै. ते मयी हु० निमय. ए० ए

हरिकेशी मुनि कह्यो,—पूर्वे हिं अने काले म्हारो  
 तो किञ्चित् देव नहीं । अने जे यक्ष करी, ते माटे ए विप्र ना वा ने



हण्या छै । ए तो पोता नी आशंका भेटवा " कह्यो । जे छातां ने हण्या ते यक्ष व्यावच करी पिण म्हारो द्वेष न थी । ए छातां ने हण्या ते पक्षपात रूप व्यावच कही छै । आजा बाहिरे छै ते मादे सावच छै । झाड़ा हुवे तो विचारि जोड़जो ।

## इति १ बोल सम्पूर्णा ।

बली सूर्याभ नाटक पाड़्यो, ते पिण भक्ति कही छै । ते लिखिये छै ।

इच्छामि णं, भक्ति पुर्वं गोयसाइणं मणायणं  
निगंथाणं दिव्वं देवदिढ जाव वत्तिस विहि नह विहिं  
दंसिए । ततेणं समणे भगवं । विरे सुरियाभेणं देवेणं एवं  
वुत्ते समाणे सुरियाभस्स एयमद्वं णो आढाप णो परिजाणइ  
तुस्सणीए संचिद्वइ ।

( राज प्रब्रेणी )

त० ते. इ० . . . दे० हे देवानु प्रिय ! भ० तुम्हारी भक्ति पूर्वक. गो० गौतमादि  
स० श्रमण. नि० निर्ग्रन्थ ने. दि० प्रधान देवता नी भूद्धि. जा० यावत्. व० वत्तीस प्रकार ना  
विधि प्रते देखाववो बांछू. त० तिवारे. स० श्रमण. भ० भगवान् महावीर. स० सूर्याभ  
देव ने. ए० इम. वु० . . . यके. स० सूर्याभ. व० देवता ना. ए० एहवा वचन प्रते. शो०  
आदर न देवे. मन करने भलो न जाये. आजा पिण न देवे. अण बोल्या धकां रहे.

इहां सूर्याभ नाटक ने भक्ति कही छै । ते भक्ति छै । ते मादे  
भक्ति नी भगवन्ते आजा न दीधी । "णो आढाप नो परिजाणइ" ए . . . रो अर्थ  
दीक्षा में इम कियो ।

“एव मनन्तरो दितमर्थं नाद्रियते, न तदर्थं करणाया दरपरो भवति ।  
नापि परि जानाति अनुमन्यते स्वतो वीतराग त्वात् । गौतमादीनां च नाव्यविधिः  
स्वाध्यायादि विघात कारित्वात् केवलं तूष्णीकोऽवतिष्ठते”

टीका में पिण ए क रूप भक्ति कही । ते नें भगवन्ते  
आदर न दीधो । अनुमोदना पिण न कीधी । पोते वीतराग छै ते माटे । गौत-  
मादिक साधु नें ना स्वाध्यायादिक नों व्याघात करणहार छै, ते माटे मौन  
साधी । पिण आज्ञा न दीधी । अनें सूर्याभे पहिलां वन्दना कीधी ते वन्दना  
भक्ति नो भगवन्ते आज्ञा दीधी । “अभ्युपगम्य मेयं सुरियाभा” ए आज्ञा नों  
चाल्यो छै । तिम नों चाल्यो नहीं जिम ए रूप भक्ति  
छै । बाहिरे छै । तिम ते छात्र यक्षे हण्या ते व्यावच पिण सावध  
छै बाहिरे छै । हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २ बोल सम्पूर्णा ।

क्ली म देव निर्वाण पहुन्ता. तिहां भ नी दादा  
लीधी, बीजा देवता शरीर ना हाइ लीधा । ते केई देवता भक्ति जाणी न हम कछों  
छै । ते लिखिये छै ।

तएणं से सकहे देविंदे देवराया भ ओ तित्यग-  
स उवरिल्लं दाहिणं हं गेणहइ, ईसाणे देविंदे देवरा-  
उवरिल्लं सकहं गेणहइ चमरे असुरिंदे रर  
हिट्ठिल्लं दाहिणं सकहं गेणहइ वली वइरो णिंदे वइरोयण-  
राया हिट्ठिल्लं मं सकहं गेणहइ, सेसा वइ

वेमाणिया देवा हारिहं अवसे इं गुवंगाई के जिण  
भत्तीए केइ जीअमेयं तिकट्टु केइ धम्मो ति ु गेरहंति । ५८।  
( जम्बूद्वीप पञ्चति )

स० तिवारे पछे ते देवेन्द्र देवता नों राजा. भ० भगवन्त तीर्थकर नी. उ० ऊपरली  
दा० जीमया पासानी दादा ग्रहे. ई० ईशान देवेन्द्र देवता नों . उपरली. वा० वावी. स०  
दादा ग्रहे. च० अखरेन्द्र अखरा नों राजा. हे० हेठली. दा० जीमया. स० दादा. गे०  
ग्रहे. ब० बलेन्द्र वैरोचनेन्द्र उत्तर दिशा ना अखरा नों इन्द्र वैरोचन राजा. हे० हेठली. वा० वावी.  
स० दादा. ग्रहे. अ० वीजा भ० भवन पति. जा० व्यन्तर ज्योतिषी. वे० वैमा-  
निक देवता. ज० ययायोग्य अ० अवशेष ते प्र ना अस्थि. उपाङ्ग ते अत्रुति  
प्रमुख ना अस्थि ग्रहे. के० केइ एक देवता तीर्थकर नी भक्ति रागे करी. केइ एक देवता  
जीत आचार साचविवा ने अयें इम कही नें. के० केई एक देवता धर्म निमित्तो. ति० इत कही  
ने अस्थि आदि देई ग्रहे.

इहां भगवन्त नी दादा अङ्ग उपाङ्ग देवता लिया । ते केइक देवता तीर्थ-  
ङ्कर नी भक्ति जाणी नें केईएक जीत आचार जाणी ने केईएक धर्म जाणी नें ।  
इहां पिण भक्ति कही छै । ते भक्ति सावद्य छै । तर कह्यो ते पिण जीत  
सावद्य छै । धर्म कह्यो ते पिण धर्म नाम स्वभाव नों छै । रीति जिम देव-  
लोक नी । तिम लिया पिण श्रुत चारित्त धर्म नहीं । धर्म तो १० प्रकारे  
। तिण में कुल धर्म गणधर्म इत्यादिक जाणिये । पिण वीतराग नों  
नहीं । । भक्ति १ आचार २ धर्म ३ प तिण । ते सावद्य बाहिरे  
। ति हीज यक्षे व्यावच कीधी ते पिण सावद्य छै । आम्हा बाहिरे छै । जे  
विप्रां ना वालकां ने ता , दुःख दीघो, ते तो प्रत्यक्ष विरुद्ध छै । डाहा इवे तो  
विचारि जोइजो ।

## इति ३ बोल सम्पूर्णा ।

कोई कहे ' जीवां नें साता उपजायां तीर्थङ्कर गोल वंधे, कहे ते  
पिण । सूत्र में तो सर्व जीवां रो नाम चाल्यो नहीं । चीसां बोलां तीर्थ-  
ङ्कर गोल वंधे तिहां एहसो कह्यो छै तें पाठ लिखिये ।

इमे हियाणं वीसाहिय रणेहिं सेविय बहुली  
कएहिं तित्थयर गाम गोय कम् निव्वन्ते तं हा—

अरिहंत सिद्ध पवयण गुरु थेरे बहुस्सुए स्तीसु ।

वच्छ य तेसिं भिक्खुणाणो वज्जो गेय ॥१॥

दंसण विणाय स्सएय, सी व्वएय गिरवइ रे ।

एलव च्चियाए वेयावच्चे समाहीयं ॥२॥

अपुव्वणाणा गहणे सुय भत्ती पवयणोपभावणया ।

एएहि रणेहिं तित्थयरत्तं लहइ जीवो ॥३॥

(शता अ० ८)

इ० प्रत्येक भागले वीस भेदां करी ने. तें भेद कहे छे. आ० आसेवितं छे मर्यादा करी ने एकवार थकी सेव्या छे. घसी वार करवा थकी घसी वार सेव्या छे । वीस धानकं तिब्ब करी तीर्थकर नाम. गोत्र कर्म उपार्जन करे बांधे तो हुवो ते महाबल आशुगारं सेव्या. तं० ते २० कहे छे. अ० अरिहन्त नी. तें सेवा भक्ति करे. सि० सिद्ध नी ते करे प० श्रुतज्ञान सिद्धान्त भों बलाणवो. घम्मोपदेशक गुरु नों विनय करे. धि० स्यविर नों विनय करे. ब० बहुश्रुती घणा नों अखेनहार. एक २ नी अपे-करी नें जाबवो, त० तपस्वी एक आदि देइ घणा तप सहित समौन साधु तेहनी सेवा भक्ति करे, अरिहंत १ सिद्ध २ ३ गुरु ४ स्यविर ५ बहुश्रुति ६ तपस्वी ७ ए सात पदां नी पणे भक्ति करी ने अने अनुरागी. गा० नों हुंती तीर्थकर गोत्र भवि. द० ते निर्मल पालतो नों विनय ए बिहू ने निरतिचार पालतो. नों थकी भीषण. पडिकमबो करवो. निरतिचार पणे करी. मत कहितां में. निरतिचार पालतो थको जीव ती. नाम कर्म भवि. ल० लौख सवादिक ने विषे सवेग भाव नों ध्यान ना सेवा थकी बंधे. त० तप एक दिक तप सु करी. चि० साधु यती ने शुद्ध दान देई ने. वे० दण विध करतो. स० गुर्वसिद्धि ना कार्य करके गुरु ने षोष उपजावे करी ने. तीर्थकर अ० भयतो तीर्थकर नाम गोत्र बांधे. सु० श्रुत नी भक्ति सिद्धान्त नी भक्ति थकी ती नाम साधु मार्ग ने देखावेकरी. नी प्र तीर्थकर ना मार्ग ने दिपावे करी. ए तीर्थकर ना थकी २० भेद ।

इहां तीर्थङ्कर गोत्र ना २० बोल कहा । तिहां सत्तरह में बोल में  
गुह ने चित्त नें समाधि उपजावे, तो तीर्थङ्कर गोत्र बंधे यहवूं कह्यो छै । तेदनी  
टीका में पिण कह्यो । ते टीका लिखिये छै ।

“समाधौ च गुर्वादीनां कार्यं करणं द्वायेण चित्तं स्वास्थ्योत्पादने सति नि-  
र्वर्तितवान्”

इहां टीकामें पिण गुर्वादिक साधु इजें कहा । पिण गृहस्थ न ।  
गृहस्थ नी व्यावच करे ते तो अडावीसमो अणाचार छै । पिण आझा में नहीं । अने  
बीसां बोला तीर्थङ्कर गोत्र बंधे । ते बीस ही बोल निरवध छै । आझा माहि छै ।  
ए तो बीस बोल महाबल अणगार सेव्या ते ठिकाने कहा छै । ते महाबल अण-  
गार तो साधु हुन्ता । ते गृहस्थ नी व्यावच किम करस्ये । गृहस्थ शरीर नी  
ता बाँछै, ते सावध छै । तेह थी तो तीर्थङ्कर गोत्र बंधे नहीं । साहा हुवे तो  
चिंचारि जोइजो ।

## इति ४ बोला सम्पूर्णा ।

तेया सावधें साता दीघां साता कहे, तिण ने तो भंगवान, नियेध्या छैं ते  
सूत्र पाठे लिखिये ।

इहं मेगैउ भासंसि सार्यं सार्तेण विज्जइ ।  
जेतत्थ आयरिय मग्गं परं च समाहिय ॥ ६ ॥  
मा एवं मन्नन्ता अप्पेण लुप्पहा बहु ।  
एअस्स मोक्खाए अयं हरिव्व भूर ॥ ७ ॥

(सुण्णदीप्प ४० १ अ० ६३० ४)

इ० संसार माहें में० एकैक शास्त्रादिक अथवा स्वतीर्थी. सा० सुख तें सुखेज करी  
धीई परं दुःख थकी सुख न याह. जे० जे कोई शास्त्रादिक हमें कहें. तिहां मोक्ष विचारणा नें  
प्रस्तावे. आ० तीर्थकर नों पल्लवो मोक्ष मार्ग छोडे. परम समाधि नों कारण ज्ञान.  
ईश्वर. चारित्र रूप इह भाषिबे परिहरी संसार माहें अमण करे तेहीज देखावे छै ॥ ६ ॥

दर्शनी. मा० रखे ए पूर्वोक्त इण बचने करीज सुखे सुख याह. हम श्री जिन  
मार्ग नें होसता हुन्ता. थोडे विषय नें सुखे करी गमादो छो. मोक्ष ना सुख. अ०  
नें छांडवे करी नें मोक्ष नथी, निन्दा नें करीबें मोक्ष न जाह. ते सोह दाखिदानी  
परे भूरमी.

अथ इहां कह्यो—साता दियां साता हुवे हम कहे. ते आर्य मार्ग थी  
अलगो कह्यो । समाधि मार्ग श्री ग्यारो कह्यो । जिण धर्म री हेलणा रो फरणहार.  
सुखां रे अर्थ घणा सुखां रो हारणहार, ए असत्य पक्षे अणछांडवे करी मोक्ष  
नहीं । लोह चाणिया नी परे घणो भूरसी, साता दियां साता पल्लवो तिण में  
एतला अवगुण १, तो साता में धर्म किम कहिये । तेइधी तीर्थङ्कर  
गोत्र किम बंधे । दशवैकालिक अ० ३ गृहस्थ नी साता पूछ्यां सोलमों अणाचार  
लाग्यो कह्यो । तथा गृहस्थ नी व्यावच कीधां अट्ठावीसमों अणाचार कह्यो ।  
तथा निशोय उ० १३ गृहस्थ नी रक्षा निमित्ते भूनीं कर्म कियां प्रायश्चित्त  
गे । तो गृहस्थ री सावध साता बां तीर्थङ्कर गोत्र किम बंधे । ए तो  
गृह ना कार्य करी सन्तोष उपजावियो । तथा साधु माहोमाहि समाधि उपजावे ।  
तथा दर्शन. चारित्र री समाधि उपजायां तीर्थङ्कर गोत्र बांधे । पिण सावध  
साता थी तीर्थङ्कर गोत्र न बंधे । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो

इति ५ बोल सम्पूर्णा ।

धली कोई कहे—वीसां वोलां तीर्थङ्कर गोत्र बंधे तिण में सोलमों बोल  
दश प्रकार नी करतो कह्यो । ते दश प्रकार नी व्यावच ना कहें छै ।  
आर्य. उपाध्याय. स्वविर. तपस्वी. ग्लान. नवो शिष्य. कुल. गण. सङ्ग. सा-  
धर्मि, ए दश च में सङ्ग अने साधर्मि में आवाक नें घाले छै । अने

तो दूसरे साधु । है । गी ठाम २ व्यावच करवा ने ठामे सङ्ग भने  
साधुमी च नो साधु कह्यो है । ते लिखिये है ।

पं हिं ठाणेहिं समणे निगंथे हा निजरे हा पज्जव-  
णे. ० अगिलाए सेह वेयावच्चं करेमाणे - गि ए कुल  
वेयावच्चं करे णे अगिलाए गण वेयावच्चं करे णे गि-  
लाए वेयावच्चं रेमाणे अगिलाए साहमिय वेयावच्चं  
करेमाणे ॥ १२ ॥

( जणाङ्ग ठाया ५ उ० १ )

१० पांच स्थान के करी. सं० अमण निर्मन्य. भ० मोटा कर्मज्ञ नों करणहार. महा  
निर्जरा थकी भव ने नसादये करी मोटो अंत है जेहनों. ते महा । न. सं० ते कहे है. अ०  
खेद रहित नव दीक्षित तेहनूं. वे० वेयावच आत्तादि धर्म ना जे आधारकारी वस्तु तेखें करी ने  
आधार देतो क० कहतो थको. अ० खेद रहित. कु० कुल चंद्रादिक साधु नों समुदाय तेहनी  
व्यावच. खेद रहित ग० गण ते कुल नों समुदाय. एतले एक । ना साधु ते कुल ते  
आचार्य साधु ते गण. अ० अने बली खेद रहित संघ ते गण नू समुदाय एतले घणे । ना  
साधु तेहनी वेयावच अ० खेद रहित साधर्मिक ते प्रवचन थने लिङ्गे करी ने सरीखो धर्म ते  
साधर्मिक तेहनी. वे० वेयावच पाणादिक भक्ति नो. क० करतौ थको.

कुल. गण. सङ्ग. साधुमी साधु ने इज । पिण अनेरा हैं  
म ।। ते ठाणाङ्ग नी टीका में पिण एहनों अर्थ कियो है । ते टीका  
लिखिये है ।

कुल चन्द्रादिक साधु समुदायः विशेष रूपं प्रतीत्य गणः कुल समुदायः  
संघो गण समुदाय इति । साधर्मिकः समान धर्मो जिगतः प्रवचनतश्चेति ।

टीका में पिण कह्यो—कुल चन्द्रादिक साधु नों समुदाय गण ते  
कुल नों समुदाय, सङ्ग ते गण नों समुदाय । धर्मिक ते सरीखो धर्म लिङ्ग प्र-

ते क इहां तो सङ्ग साधर्मी साधु ने , पिण  
ने न । हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ६ सम्पूर्णा ।

तथा ठाणाङ्ग ठाणे १० मे कह्यो ते लिखिये छे ।

दसविहे वैयावच्चे ५० तं० । यरिय वैयावच्चे उवज्झाय  
वैयावच्चे थेरा वैयावच्चे तवस्सि वैयावच्चे गिलाण वैयावच्चे  
सेह वैयावच्चे वैयावच्चे गण वैयावच्चे संघ वैयावच्चे  
हमि वैयावच्चे ॥ १५ ॥

( ठाणाङ्ग ठा० १० )

५० दस प्रकारे कही. ते कहे छे. आ० आचार्य पवनी धर तथा पोता ना गुव  
तेहनी . उ० समीप रहे तेहने भयावे ते उपाध्याय. थे० स्थविर त्रिण प्रकारे विर  
६० वर्ष नों १ सूत्र स्थविर उपाङ्ग । पाङ्गादि नों जायसहार पर्याय स्थविर २० वर्ष दीक्षा  
लिये हुबा तेहने त० मास क्षमणादिक तप नों करणहार. गि० रोगी प्रसुल. से० नव दीक्षित  
शिष्य तेहने प्रसुल सोखवे. कु० एक गुरु ना शिष्य ते भणी कुल कहिये । ग० वे  
ना शिष्य ते गण सं० घणा आचार्य ना शिष्य ते संघ सा० सरीले धर्मे विचरे ते  
मिक साधु एतलानी व्यावक करे. आहारादिक आपवे करी ने. ।

पिण दश व्यावच साधुनीज कही । पिण नी न कही ।  
अने तेहनी टीका में पिण नव नों तो सुगम माटे न कीधो । अने साधर्मी  
नों कियो ते टीका लिखिये छे ।

“समानो धर्मः सधर्म स्तेन चरन्तीति साधर्मिकाः साधवः”

पि साधर्मी ने इज । पिण गृहस्थ ने साधर्मी न  
कह्यो । रो सरीलो धर्म नहीं । चारे तेहने पिण क ।



भनें १२ व्रत धारे तेहनें पिण आवक कहिये । ते माटे प्रथम तथा छेहला तीर्थङ्कर ना सर्व साधु २ पांच महाव्रत छै । ते भणी तेहिज साधर्मिक कहिये । डाहा हुवे तो विचारि जोड़जो ।

## इति ७ बोल सम्पूर्णा ।

तथा बली उवाह में १० व्यावच कही छै । ते पाठ लिखिये छै ।

सेकितं वेयावच्चे दसविहे प० तं० आयरिय वेयावच्चे ।  
उवज्झाय वेयावच्चे, सेह वे०, गिलाण वे०, तवस्सि वे०,  
थेरे वे०, साहम्मिय वे०, कुल वे०, गण वे०, संघ वेयावच्चे ।  
( उवाह )

से० ते कहो भात पाणी आदिक अवष्टम्मादिक घन नों देवो, तेहनें दश प्रकारे ब्रह्म, तीर्थ करे, तं० ते कहे छै, आ० आचार्य पंचाचार नों प्रतिपालक, तेहनें वेयावच अवष्टम्भ सा-  
हाय्य देवो, उ० उपाध्याय द्वादशांगो ना भणणहार तेहनी वेयावच, से० शिष्य नव दीक्षित  
नी वेयावच, गि० ग्लान नी वेयावच, त० तपस्वी छठ २ धटमादिक तेहनी वेयावच, ये०  
स्थविर तीन प्रकार तेहनी वेयावच, सा० मर्मिक साधु साध्वी तेहनी वेयावच, कु०  
नो समुदाय ते कुल तेहनी वेयावच, ग० कुल नों समुदाय ते गण तेहनी वेयावच, सं० गण नों  
समुदाय ते संघ तेहनी वेयावच, आहारादिक अवष्टम्भ देवो,

इहां पिण दश व्यावच में दसुंइ साधु कहा । पिण ने न कहा ।  
तेहनी टीका में पिण इम कह्यो । ते टीका लिखिये छै ।

“साधर्मिकः साधुः साध्वी वा कुलं गच्छ समुदायः गणः कुलानां समु-  
दायः, संघो गण समुदाय इति”

इहां टीका में पिण कुल गण सङ्ग नों साधु नों समुदाय कीधो ।

भर्मी साधु, साध्वी ने इज कहा । पिण आवक आबिका ने न ।

‘व्यवहार’ उ० १० में सङ्घ साधर्मी साधु नें इज । । प्रश्न व्याकरण तीजे सम्बर द्वारे सङ्घ साधर्मी साधु नें कहा । इम अनेक ठामे सङ्घ साधर्मी साधु नें इज कहा । ते साधु नी व्यावच करण री न्त नी आहा छै । अने-व्यावच ने ठामे सङ्घ नाम समुदाय वाची छै । ते साधु ना समुदाय नें इज कह्यो छै । पिण व्यावच ने ठामे सङ्घ कह्यो तिण में श्रावक न जानवो । चतुर्विध सङ्घ में श्रावक नें सङ्घ कह्यो । पिण व्यावच नें ठामे सङ्घ कह्यो तिणमें श्रा नहीं हुवे समुदाय रो नाम पिण सङ्घ कह्यो छै ते लिखिये छै ।

समूह एं भंते ! पडुच्च कति पडिणीया, प० गो० तउ पडिणीया प० तं० कुल पडिणीए गण पडिणीए संघ पडिणीए ।

( भगवती श० ८ उ० ८ )

स० समूह ते साधु समुदाय. ते प्रति अंगीकरी नें भ० भगवन्त ! के० केसला, प्रत्यनीक परुष्या गो० हे गौतम ! त्रिण प्रत्यनीक परुष्या. सं० ते केहे छै. कु० कुल चंद्रादिक तेहना प्रत्यनीक. ग० गण कोटिकादि तेहना प्रत्यनीक सं० संघ ना प्रत्यनीक. अवर्णवाद बोले.

अथ इहां पिण कुल, गण, सङ्घ, समुदाय वाची कहा, तेहनी टीका में पिण इम कह्यो ते टीका लिखिये छै ।

“समूहं साधु समुदायं प्रतीत्य तत्र कुलं चन्द्रादिकं, तत्समूहो गणः कोटिकादिः तत्समूहः संघः प्रत्यनीकता चैतेषां मवर्णं वादादिभिरिति”

पिण साधु ना समुदाय नें कुल. . संघ. कह्यो । तीना नें समूह कहा । तिण में संघ नाम समुदायनो कह्यो । . अ० ३३ गो० ३ में कह्यो । “सीस संघ समाकुलो” इहां पिण शिष्यनो समुदाय ते संघ कह्यो ते भणी दश व्यावच में संघ गो ते साधु ना समुदाय नें इज कह्यो छै । अने साधर्मी पिण साधु साध्वीयां नें इज छै । किणहिक देशे लोक भावाइ श्रावकां नें साधर्मी कहि बोलाविये छै, ते साधु नाम छै । पिण

व्यावच नैं ठामे साधर्मिक कहा, तिण में थावक थाविका नहीँ रुद्र भाषाई करी तो मागध. वरदान. ।स. प ३ तीर्थ नाम कहि बोलाया छै । पिण तेह तीर्थ थी संसार समुद्र तरे नहीं । तिम रुद्र भाषाईं थावक थाविकां नैं साधर्मी कोई कहे तो पिण दश व्यावच में साधर्मी कहा तिण में साधु साध्वी नैं इव कहा, पिण थावक थाविकां नैं न कहा । ते संघ साधर्मी साधु नीज कीधां उत्कृष्टो तीर्थद्वार नोल वंधे । पिण गृहस्थ री व्यावच कियां तीर्थद्वार गोत्र बंधे नहीं । थावक नी व्यावच करणी री तो भगवान् री आज्ञा नहीं । अनैं विना धर्म पुण्य निपजे नहीं । झाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ८ वोल सम्पूर्णा ।

बली केइ अशानी साधु री सावध व्यावच गृहस्थ करे तिण में धर्म थापे छै । तिण ऊपर श्री "मिक्षु" महामुनि राज कृत वार्त्तिक लिखिये छै ।

केइ एक मूढ़ मिथ्यात्वो भारी कर्मा जिन आज्ञा वाहिरे धर्म ना स्थापन हार जिनवर नों धर्म आज्ञा वाहिरे थापे छै । ते अनेक प्रकार कूड़ा २ कुहेल लगावे । खोटा २ दृष्टान्त देई धर्म नैं जिन आज्ञा वाहिरे थापे छै । कूडी २ । करी ने कूड़ा २ कुहेल पूछै, जिन आज्ञा वाहिरे धर्म स्थापन रे ताई । ते कहे छै पड़िमा-धारी साधु अग्नि माहि बलता नैं वांहि पकड़ने वाहिरे काढ़े । अथवा सिंहादिक पकड़ता नैं भाल राखे । तथा हर कोई साधु साध्वी जिन कल्पी. स्थविर कल्पी. त्यानैं वांहि पकड़ने वाहिरे काढ़े इत्यादिक कार्य करी ने साता उपजावे । अथवा जीवां बचावे । अथवा ऊंचा थी पड़तां नैं भाल बचावे । अथवा आखड़ पड़ता नैं भाल बचावे । अथवा ऊंचा थी पड़तां नैं बैठो करे । अथवा आखड़ पड़ता नैं बैठो करे । तिण गृहस्थ नैं भगवन्त अरिहन्त री पिण आज्ञा नहीं । अनन्ता साधु-साध्वी गये काले हुवा. त्यांरी पिण आज्ञा । जिण साधु नैं ।यो तिण री पिण आज्ञा नहीं । तिण नैं । पिण सरावे नहीं । थे आछो काम कियो इम पिण कहे नहीं । तिण नैं पहिलां पिण सिखावे नहीं । तूं इसो कीजे, तिण नैं । पिण आज्ञा देवे नहीं । तूं इसो काम इम तो

कहि जावे छै । वली इम पिण कहे छै । तिण गृहस्थ नें धर्म हुवो । देखो धर्म पिण कहिता जावे, तिण धर्म री भगवान् री पिण आज्ञा नहीं । तिण धर्म नें वे पिण नहीं इम पिण कहिता जाय । जाव सगलाई बोल पाछे ते कहिता रि जावे । अने धर्म पिण कहिता जावे । त्यानिं इम पूछिये—ये धर्म पिण कहो छौ, त्त री आज्ञा पिण न कहो छो, तो ओ किण री सिखावो धर्म छै ।

किसो धर्म छै । धर्म तो भगवन्ते वे प्रकार नों कह्यो । श्रुत धर्म, अने चारित्र धर्म, तिण री तो जिन छै । वली दोय धर्म कथा छै । गृहस्थ री धर्म साधु री धर्म, तिण री पिण जिन छै । वली धर्म रा २ भेद छै । धर्म, निर्जरा धर्म । सम्बर तों आवता कर्मा नें रोके, निर्जरा कर्मा नें खपावे । तिण धर्म री पिण जिन आज्ञा छै । सम्बर धर्म रा २० भेद । त्यां बीसां री जिन छै । निर्जरा धर्म रा १२ भेद छै । त्यां बाराई भेदां री वि छै । वली सम्बर निर्जरा रा ४ भेद किया, दर्शन, चारित्र, तप, ए च्याहं मोक्ष रा मार्ग छै । त्यां में तो जिन आज्ञा छै ।

बोलां नें जिन सरावे छै । अने जे आज्ञाण कहे जिन आज्ञा न दे पिण धर्म छै । ने फेर पूछी जे, ओ किसो धर्म छै । तिण धर्म री नाम बतावो । जव

नहीं तव झूठ बोली नें गालां रा गोला च छै । कहै—साधु री नहीं छै । तिण सूं आज्ञा न देवे पिण धर्म छै । तिण ऊपर झूठ बोली नें कुडेतु लगावे पिण डाहा तो जिन आज्ञा वाहिरे धर्म न छै । अने गृहस्थ नें धर्म छै । पिण म्हे नहीं धां छां ते म्हारे आज्ञा देण रो नहीं छै । तिण सूं नहीं धां छां, इम कहै तिण नें इम कहोजे । धर्म करण वाला नें धर्म हुवे तो धर्म री अ देणवाला नें किम होसी । अने धर्म री आज्ञा देणवाला नें होसी तो आला नें धर्म किण विधि होसी । देखों विकलां री धर्म

री आज्ञा देण रो नहीं इम कहै छै । पिण केवली परुया धर्म री देण रो तो छै । पापंडी परुयो धर्म तिण री आज्ञा देण रो । निरवध धर्म री देण रो कल्प नहीं, आ बात तो मिले नहीं । धर्म री

न देवे ते तो महा अयोम्य धर्म छै । जिण धर्म री देवगुरु न दे तिण में भलियार कदेह नहीं छै । देवगुरु स योग रा त्याग बि जि दिन माठो २ छान्पो छै । तिण छान्पा री अ पिण दे नहीं । ते

६ 'ज्यो छै ते तो माडो तरे छांड्यो छै । जे साधु साध्वी जिन कल्पौ, स्वविर कल्पौ त्यनि' अग्नि माहि बलतां नें कोई गृहस्थ बांहि पकड़ ने बाहिरि काढ़े, अथवा सिंहादिक पकड़ता नें भाली राखे । अथवा ऊँचा थी प नें बैठो करे । १ आसड़ पड़िया नें बैठो करे । ते गृहस्थ नें धर्म कहे छै । जो तिण नें इम कियॉ धर्म होसी तो इण अनुसारे अनेक बोलां में धर्म होसी । ते बोल लिखिये छै ।

पड़िमाधारी साधु अथवा जिन कस्यो साधु वा स्वविर कस्यो साधु हर कोई साधु अचेत पड़्यो छै । तिण थी चालणी न आवे छै । गाम उजाड़ में पड़्यो छै । तिण साधु नें गाड़ी, घोड़ो, ऊँट, रथ, पालखी, पोत्रिये, भैंसे, गधे, दिक् हर कोई ऊपर बैसाण नें गाम माँही आणे ठिकाणे आणे तो उण री श्रद्धा लेलेखे, उण री परकाणा रे लेखे, तिण में पिण धर्म होसी ॥ १ ॥ अथवा कोई साधु गाम तथा उजाड़ में असमाधियो पड़्यो छै तिण सूँ हालणी चालणी न आवे, बैसणी, उठणी, न आवे छै, अन्न बिना मरे छै । तो उण री श्रद्धा रे लेखे अशनादिक ले जाय नें दियां में हाथ सूँ खवायां में पिण धर्म छै ॥ २ ॥ अथवा कोई साधु उजाड़ में अथवा गाम माहि अचेत पड़्यो छै । तिण सूँ बोलणी, चालणी, न आवे छै । उठणी बैसणी, पिण न आवे छै । औषध खाधां बिना जीवां मरे छै, तो उण री श्रद्धा रे लेखे औषधादिक ले जाय नें मुख माहि घाल नें सचेत करे, डील रे मुसल नें सचेत करे, तिण में पिण धर्म होसी ॥ ३ ॥ अथवा किण ही साधु रे पाशो ( रोग विशेष ) हुवो छै, गम्भीर हुवो छै, अथवा गूमड़ो हुवो छै, तिण दुख सूँ हालणी, चालणी, न आवे छै, गोचरी पिण जावणी न आवे, ते साधु अशनादि चित खाधां पानी बिना पीधां जीवां मरे छै । तो उण री श्रद्धा रे लेखे अशनादिक आणी खवावे, अथवा तिण नें गोचरी करी नें आणी आपे तिण में पिण धर्म होसी ॥ ४ ॥ अथवा कोई साधु गरड़ो ( वृद्ध ) रलान असमाधियो, तिण सूँ पोथ्यां रा बोझ सूँ उपकरण रा बोझ सूँ चालणी न आवे छै अलगो छै, भूख तृषा पिण घणी लागे छै, तिण रे असाता घणी छै । तो उण री श्रद्धा रे लेखे बोझ उठायां रो पिण धर्म होसी ॥ ५ ॥ अथवा किण ही साधु नें शीतकाले शीत घणो लागे छै, चाय रो पिण बाजे छै, तिण काल में मेह पिण घणो बरसे छै, साधु पिण घणो घूजे छै । तो उण री श्रद्धा रे लेखे कोई राली ( गूदड़ी ) ओढ़ावे तिण में पिण धर्म होसी ॥ ६ ॥ अथवा किण ही साधु रो पेट दूखे छै । तलमल ६

करे है, महा वेदना है, पेट मुसल्यां विना जीवां मरे है । तो उण री श्रद्धा रे  
 पेट मुसले तिण में पिण धर्म होसी ॥ ७ ॥ अथवा किण ही साधु रे पेदूंची  
 ( धरण ) टली है । तिण री साधु नें घणो दुःख है । आहार पिण न भावे है ।  
 फेरो ( दस्त लागनो ) पिण घणों है । तो उण री श्रद्धा रे लेखे पेदूंची मुसले तिण  
 में पिण धर्म होसी ॥ ८ ॥ अथवा किण ही साधु रो गोलो चढ्यो है, महा दुःखी  
 , हालणी चालणी पिण न आवे है, मौत घात है, तो उण री श्रद्धा रे लेखे  
 गोलो मुसले साधु रे साता करे तिण में पिण धर्म होसी ॥ ९ ॥ साधु नें कल्पे  
 ते भक्ष्य, नहीं कल्पे ते अमक्ष्य, कत्राय नें चचावे तो तिण री श्रद्धा रे लेखे तिण में  
 पिण धर्म होसी ॥ १० ॥ साधु रे जिण वस्तु रा त्याग है, अने ते तो मरे है,  
 तो उण री श्रद्धा रे लेखे त्याग भंगाय वचायां पिण धर्म होसी ॥ ११ ॥ साधु री  
 कल्पे है ते तो जिन आह्वा सहित है, नहीं कल्पे ते व्यावच तो मकार्य है ।  
 साधु नें दुःखी देखनें उण री श्रद्धा रे लेखे नहीं कल्पे ते व्यावच कीधां पिण तेहनें  
 धर्म होसी ॥ १२ ॥ साधु नों संघारो देखी साधु रे घणी मसाता देखी साधु नें  
 मरंतो देखी नें उण री श्रद्धा रे लेखे किण ही अन्नपाणी मुख माही घालनो तिण में  
 पिण धर्म होसी ॥ १३ ॥ साधु भूखो है, अशनादिक विना मरे है, तो उण री  
 श्रद्धा रे लेखे अशुद्ध बहिरायां पिण धर्म होसी ॥ १४ ॥ यलो कइक इसड़ी कहे है,  
 सुभद्रा सती साधु री माहि थीं फांटो काढ्यो तिण में धर्म कहे है, जइ तो  
 इण अनुसारे अनेक वोलां में धर्म होसी, ते बोल कहे है । किणहिं साधु रे  
 में फांटो पढ्यो ते वाई काढ्यो तो उण री श्रद्धा रे लेखे उण नें पिण धर्म  
 होसी ॥ १ ॥ अथवा साधु रे पेट दुःखे है, मरे है, ते वाई पेट मुसले तो उण री  
 श्रद्धा रे लेखे तिण नें पिण धर्म होसी ॥ २ ॥ किण ही साधु रो गोलो चढ्यो है,  
 जीव मौत है, उण री श्रद्धा रे लेखे वाई साधु रो गोलो मुसले तिण में पिण  
 होसी ॥ ३ ॥ किण ही साधु रे पेदूंची टली है, तिण रो घणो दुःख है,  
 आहार पिण न भावे है । फेरो पिण घणो है । तो उण री श्रद्धा रे लेखे वाई  
 पेदूंची मुसले तिण नें पिण धर्म होसी ॥ ४ ॥ साधु नें अग्नि माहि चढतां नें  
 वाई बाहि पकड़ने बाहिरे काढे तो तिण री श्रद्धा रे लेखे तिण नें पिण धर्म होसी  
 ॥ ५ ॥ साधु ऊंचा थी पड़ता नें वाई कले तो उण री श्रद्धा रे लेखे तिण नें  
 पिण धर्म होसी ॥ ६ ॥ साधु आखड़ पड़ता नें राखे तो तिण री श्रद्धा

रे लेखे तिण नें पिण धर्म होसी ॥ ७ ॥ साधु ऊंचा थी पड़ता नें वाई बैठो करे तो तिण री श्रद्धा रे लेखे तिण नें पिण होसी ॥ ८ ॥ साधु आखड़ पड़िया नें वाई बैठो करे तो तिण री श्रद्धा रे लेखे तिण में पिण धर्म होसी ॥ ९ ॥ साधु रो माथो तो हुवे जब वाई माथो दावे तो तिण री श्रद्धा रे लेखे तिण नें पिण धर्म होसी ॥ १० ॥ साधु रा दूखणा ऊपर वाई मलम लगावे तो तिण री श्रद्धा रे लेखे तिण में पिण धर्म होसी ॥ ११ ॥ साधु रा दूखणा ऊपर वाई पाटो बांधे तो तिण री श्रद्धा रे लेखे तिण में पिण धर्म होसी ॥ १२ ॥ साधु ने मूर्च्छा (लू) छै ते वाई मुसले तो तिण री श्रद्धा रे लेखे तिण में पिण धर्म होसी ॥ १३ ॥ इत्यादिक अनेक कार्य साधु रा वाई करे, साधु ने दुखी देखी नें पीड़ाणो देखी नें वाई साधु रे साता करे, जीवां बचावे । जो सुमद्रा नें फाटो काढ्यां धर्म होसी तो यां में पिण धर्म होसी । वाई साधु रा कार्य करे तिमही भायो साध्वी रा कार्य करे तो उण री श्रद्धा रे लेखे भाया नें पिण धर्म होसी । ते बोल लिखिये छै । साध्वी रोपेट भायो मुसले १ साध्वी री पेटूंची भायो मुसले २ साध्वी रे गोलो भायो मुसले ३ साध्वी रे माथो दुखे जब भायो मुसले ४ साध्वी रे मूर्च्छा भायो मुसले ५ साध्वी रे दूखणा ऊपर भायो मलम लगावे ६ साध्वी रे दूखणा ऊपर भायो पाटो बांधे ७ साध्वी पड़ती नें भायो मूले ८ साध्वी पड़ी नें भायो उठावे घेडी करे तो उण री श्रद्धा रे लेखे तिण नें पिण धर्म होसी ९ साध्वी रो पेट दुखे छै, तलफल २ करे छै, तिण रो पेट भायो मुसले १० इत्यादिक साधु रा कार्य वाई करे, तिम साध्वी रा भायो करे । जा सुमद्रा साधु री आंखि माहि सूं फाटो काढ्यां रो धर्म होसी तो सारां नें धर्म होसी । जो यां में जिन आज्ञा देवे नहीं तो धर्म पिण नहीं । जिन रीते जिनवर कह्यो छै तिण रीते साधु साध्वी ने बचायां धर्म छै । व्यावच कीर्थां पिण धर्म छै । भगवन्त आप तां सरावे नहीं आज्ञा पिण देवे नहीं, सिखावे पिण नहीं, तिण कर्तव्य में धर्म रो पिण अंश नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो । इति भिक्षु महा मुनिराज कृत वार्तिक ।

इति ६ बोल सम्पूर्णा ।

केतला एक जिन आन्ना नां अजाण छै, ते "साधु अग्नि माहि नें कोई गृहस्थी बांहि पकड़ने बाहिर काढ़े, तथा साधु री फांसी कोई थ कापे" तिण में धर्म कहे छै, अने भगवती श० १६ उ० ३ गौतम । प्रश्न पूछयो, ते साधु ऊभो प ना लेवे छै. तेहना अर्थ ( मस्सा ) कोई वैद्य छेदे छै, तेहनें स्युं होवे, ते पाठ कहे छै ।

अणगारस्स णं भंते ! भावियप्पणो छुंछुद्धेणं अणि-  
क्खित्तेणं जाव आयावेसाणस्स तस्सणं पुरच्छिमेणं अवड्ढं  
दिवसं णो कप्पइ हत्थं वा पायं वा जाव उरुं वा आउंटा  
वेत्तएवा पसारेत्तएवा पच्चच्छिमेणं अवड्ढं दिवसं कप्पइ  
हत्थं वा पादं वा जाव उरुं वा आउंटा वेत्तए वा पसारेत्तएवा,  
सिया ओ लंवइ तं चेव विज्जे अदक्खु इसिंपाडेइ.  
पाडेइ असियाओ छिंदेज्जा । सेणणं भंते ! जे छिंदइ  
किरिया जइ जस्स छिज्जइ णो तस्स किरिया कज्जइ  
णणत्थेगेणं धम्मंतराइएणं हंता गोयमा जे छिंदइ णण-  
त्थेगेणं धम्मंतराइएणं ।

( भगवती श० १६ उ० ३ )

अ० अणगार. भ० ! भा० भावितात्मा नें. छ० छट्ट छट्ट निरन्तरं तप  
नें. जा० यावत्. आ० प लेतां तेहनें. पु० पूर्व भाग ना दिनाई लगे एतले पहिला  
वे प्रहर लगे. शो० न कल्पे. हा० हाथ अथवा पा० पा. बा० बाहु उ० . आ०  
संकोचवो. अथवा. ए० पसारवो प० पश्चिम भाग ना दिनाई लगे क० कल्पे. इ० . जा०  
यावत्. उ० आ० संकोचवो. प० पसारवो । त० ते साधु नें कार्योत्सर्गें रहिया नें. अ०  
अर्थ लम्बायमान दीसे. ते अर्थ नें. वे० वैद्य देखी नें. इ० ते साधु नें लिंगारेक भूमि नें बिचे पाडे  
पादी नें. अ० अर्थ नें छेदे. से० ते निश्चय भगवन् ! जे० छेदे. त० ते वैद्य नें क्रिया जे नी  
छेदायी छै. शो० तेहनें क्रिया हुइ नहीं. ए० एतलो विशेष. एक धर्मान्तराय क्रिया



हुई शुभ ध्यान नो विच्छेद हुई। हं० हां गौतम ! जे वैद्य छेदे ते वैद्य ने एक धर्मान्तराय क्रिया

इहां गोतम स्वामी पूछ्यो, जे साधु ऊभो आतापणां लेवे छै, तेहना अर्श वैद्य देखी नें ते अर्श छेदे। हे भगवन् ! ते वैद्य नें क्रिया लागे, अने "ज छिज्जति" कहितां जे साधु री अर्श छेदाणी ते साधु नें क्रिया न लागे। पिण एक धर्मान्तराय साधु नें पिण हुई, ए प्रश्न पूछ्यो—तिवारे भगवान् कह्यो। हां गोतम ! जे अर्श छेदे ते वैद्य ने क्रिया लागे, अने जे साधु री अर्श छेदाणी ते साधु नें क्रिया न लागे। पिण एक धर्मान्तराय साधु रे पिण हुवे, ए शब्दार्थ कह्यो। अथ इहां कह्यो—जे साधु नी अर्श छेदे, ते वैद्य ने क्रिया लागि एहवू कह्यो पिण धर्म न कह्यो। ए व्यावच आज्ञा बाहिरै छै। साधु रे गृहस्थ पासे करावा रा त्याग छै। अने जिण साधु री आज्ञा बिना साधु रो कार्य कियो, ते साधु रो त्याग भंगावणवालो छै। कदाचित् साधु अनुमोदे नहीं। तो ते साधु रो घत न भांगे। पिण भंगावण रो कार्य करे तिण नें तो त्यागनों भंगावण वालो इज कह्यो जे। जिम कोई साधु नें आधा कर्म्म आदिक असूजतो भशनादिक जाणो नें देवे, अने साधु पूछी ओकस कर जाणी ने लियो तो ते साधु ने तो पाप न लागे। पिण आधा कर्म्म आदिक साधु नें अकल्पतो दियो तिण ने तो लाग्यो ते तो त्याग भंगावण वालो इज कह्यो जे। पिण धर्म न कहिये। तिम साधु रे गृहस्थ पासे जे व्यावच करावण रा त्याग ते व्यावच गृहस्थ करे। अने साधु अनुमोदे नहीं, तो तिण रा त्याग न भांगे। पिण आज्ञा बिना नीक कार्य गृहस्थ कियो तिण ने तो त्याग भंगावण रो कामी कहिये। पिण तिण में धर्म न कहिये। तथा चली दूजो दृष्टान्त—जिम ईयां सुमति बिना चाले अने पिण जीव न सुयो तो पिण ते साधु नें छह काय नों ती कहि जे, आज्ञा लोपी ते मारि। तिम ते वैद्य साधु री अर्श छेदी आज्ञा बिना ते वैद्य ने पिण भंगावण रो कामी कह्यो जे। तिण सूं ते वैद्य ने क्रिया लागती कह्यो। जिम ते वैद्य अर्श छेदे तेहने क्रिया लागे। तिम अग्नि में चलता ने कोई गृहस्थ बाहिरै तिण ने क्रिया हुई। पिण धर्म न हुई। तिवारे कोई कहे—ए वैद्य ने क्रिया कह्यो ते पुण्य नी क्रिया छै। पिण पाप नी क्रिया नहीं। एहवो ऊंधो करे

तेहनों उत्तर—इहां कइयो, अर्श छेदे ते वैद्य ने' किया लागे, पिण धर्मान्तराय साधु रे पड़ी। धर्मान्तराय ते धर्म में बिग्न पड़्यो तो जे साधु रे धर्मान्तराय पाडे तेहने' शुन किया किम हुवे। ए धर्मान्तराय पाढ्यां तो पुण्य बंधे नहीं। धर्मान्तराय पाढ्यां तो पाप नी किया लागे छै। ए तो पाधरो न्याय छै। एक तो जिन आज्ञा दिना कार्य कियो बीजो साधु री अकल्यती व्यावच करी. ते माटे साधु रा त्याग भंगवण रो कानी कही जे। तीजो साधु रे धर्म ध्यान में अन्तराय पाड़ी। ए तीन<sup>१</sup> कियां तो पुण्य री किया बंधे नहीं। पुण्य री करणी तो आज्ञा माहि छै। निरवद्य कही छै। ते निरवद्य करणी तो साधु कहिने' करावे छै। ते करणी री साधु अनुमोदना करे छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

## इति १० बोल सम्पू<sup>१</sup> ।

बली ए अर्श तो साधु गृहस्थी अन्यतीर्थी पासे छेदावे नहीं। छेदा ते' अनुमोदे नहीं। जे साधु अर्श छेदावे छेदवता ने' अनुमोदे तो प्रायश्चित्त कइयो। ते लिखिये छै।

जे भिक्षू अरण्य उत्थिएणवा गारत्थिएणवा अप्पाणो  
कायंसि गडंवा पलियंवा अरियंवा असियंवा .भगंदत्तं  
अरण्यथरेण वा तिक्खेण सत्थ जाएण आच्छिंदेइ विच्छिंदेइ  
आच्छिंदंतं वा विच्छिंदंतं वा साइज्जइ. ॥३१॥

( निशोय उ० १५ बो० ३१ )

जे० जे कोई. मि० साधु. साध्वी. अ० अन्य तीर्थी. वा गा० गृहस्थी. पासे अ० आपसी  
ने' बिषे. नं० गंड मालादिक पं० मेदलियादिक. अ० गूमडो वा. अ० अर्श ते  
टाम ना, मगदर रोग. वा अ० अनेरो रोग. ति० घाल नी जाति तथा ना तोह्ण करी. १  
बार अथवा थोड़ो सोई छेदेवे वि० बिशेषे बार छेदेवे तथा घणो छेदावे. आ० एक बार छेदता नें.  
वि० बारवार छेदता नें अनुमोदे.

अथ इहां गो—साधू अन्यतीर्थी तथा गृहस्थ पासे अर्श छेदावे.  
 कोई अनेरा साधू री अर्श छेदता नें अनुमोदे तो मासिक प्रायश्चित्त आवे । अर्श  
 छेदव्यां पुण्य नी क्रियां होवे तो ए अर्श छेदनवाला नें अनुमोदे तो दंड क्यूं कह्यो ।  
 पुण्य री करणी तो निरवद्य छै । निरवद्य करणी अनुमोद्यां तो दंड आवे नहीं ।  
 दंड तो पाप री करणी अनुमोद्यां थो ज आवे । पुण्य री करणी आज्ञा माहिज  
 छै । अने अर्श छेद्यो ते कार्य आज्ञा बाहिरे छें । पुण्य री करणी तो निर छै । ते  
 आज्ञा माहिली निरवद्य करणी अनुमोद्यां तो साधू नें दंड आवे नहीं । दंड तो  
 सावद्य आज्ञा बाहिर ली पाप री करणी अनुमोद्यां रो छै । जे कोई साधू री अर्श  
 छेदे तेहनी अनुमोदना कियां पाप लागे तो छेदन वाला नें किम हुवे । डाहा  
 हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ११ बोल सम्पूर्णा ।

बली आचारांगे अ० १३ पहचो कह्यो छै ते लिखिये छै ।

सिया से परो यं सिवणं शयरे ए जाएणं  
 छिंदेज्ज विच्छिंदेज्जा णो तिए णो नियमे ।

( अ० १३ श्रु० २ )

सि० कदाचित्ते से० ते साधु नों का० शरीर नें विवे. व० गूमंडो जायी. अनेरे  
 गृहस्थ स० शस्त्रे करी आ० थोडो छेदे वि० घणो छेदे. नो० तो ते साधु बांछे नहीं. शो०  
 करावे नहीं.

अथ इहां कह्यो—जे साधु रे शरीरे ब्रण ते गूमंडो फुणसी आदिक तेहनें  
 कोई पर अनेरो गृहस्थ शस्त्रे करी छेदे तो तेहनें करी अनुमोदे नहीं ।  
 करी तथा काया ई करी करावे नहीं । जे कार्य नें साधु करी अनुमोदना ई न  
 करे ते करण वाला नें किम हुवे । एणे घणा बोल छै । जे

साधु ना कांटा आदिक । कोई मर्दन पीठी स्नान करावे. कोई विलेपन तथा धूपे करी सुगन्ध करे । तेहनें साधु मन करी अनुमोदे नहीं । जे साधु ना गूमड़ा अर्श आदिक छेयां धर्म कहे, तो यां सर्व धोलां में धर्म कहिणो । अने, यां बोलां में धर्म नहीं तो गूमड़ा अर्श आदिक छेयां में पिण धर्म नहीं । इणन्याय साधु री अर्श छेयां क्रिया कही ते पाप री बि छै पिण पुण्य री क्रिया नहीं । विवेक लोचने करी विचारि जोइजो । तथा केतला एक अज्ञानी “किरिया कज्जइ” ए पाठ नो अर्थ ऊँधो करे छै ते कहे--अर्श छेदे ते वैद्य क्रिया “कज्जइ” कहितां कीधी, वैद्य क्रिया कीधी. ते कार्य कीधो अने साधु क्रिया न कीधी, इम विपरीत अर्थ करे छै । ते एकान्त मृपावादी छै । ए वैद्य क्रिया कीधी ए तो प्रत्यक्ष दीसे छै । ए करण रूप क्रिया नों तो प्रश्न पूछ्यो नहीं, कर्म वन्धन रूप क्रिया नों प्रश्न पूछ्यो छै ।

“ ” कहितां कीधी इम ऊँधो अर्थ करी पाडे तेहनों उत्तर--भगवती श० ७ उ० १ जे साधु ईयाई चाले तेहनें स्यूँ “इरिया वहिया किरिया कज्जइ. संपरा-इया किरिया .” इहां पिण इरिया वहिया किरिया कज्जइ कहितां इरियावहिया :क्रिया हुवे के संपराय क्रिया हुवे । इम “कज्जइ” रो अर्थ हुवे इम कियो छै । “कज्जइ” कहितां भवति । भगवती श० ८ उ० ६ साधु ने निर्दोष देवे तेहनें “किं कज्जति” कहितां स्यूँ होवे इम अर्थ टीका में कियो छै—

“कज्जति—किं फलं भवति”

यहां टीका में पिण कज्जति रो अर्थ भवति कियो छै । तथा भगवती श० १६ उ० २ कह्यो “जीवाणं भंते चेय कड़ा कस्मा कज्जति” अचेय कड़ा कस्मा कज्जति इहां पूछ्यो—चेतन रा कीधा कर्म “कज्जति” कहितां हुवे, के अचेतन रा कीधा कर्म हुवे इहां पिण टीका में कज्जति कहितां भवति एहवो अर्थ कियो छै । इत्यादिक अनेक ठामे “कज्जइ” कहितां हुवे इम अर्थ कियो । . तिम अर्श छेदे तिहां पिण “किरिया कज्जइ” ते क्रिया हुवे इम अर्थ छै । तथा ठाणाङ्ग ठाणे ३ कह्यो— जे शिष्य देवलोके गयो गुरां ने दुँकाल थी सुकाल में मेले तथा अटवी थी । में

मेले । तया गुरां ना शरीर माहि थी १६ रोग बाहिरें काढे । हम गुरां रे साता  
 कीयां पिण शिष्य उम्हण न हुइ । ॥ गुरु धर्म थी डिम्यां नें स्थिर कियां ॥  
 हुवे । कह्यो ते माटे ए सावय साता कियां धर्म पुण्य नथी । डाहा हुवे तो  
 विचारि जौइजो ।

इति १२ वा सम्पूर्णा ।

इति वैयावृत्ति-अधिकारः ।



## अथ विनयाऽधिकारः ।

कैई पाषंडी श्रावक रो स विनय कियां धर्म कहे छै । विनय मूल धर्म रो नाम लेई श्रावक री शुश्रूषा तथा विनय करवो धापे । अनें हम कहे—ज्ञाता सूत्र में २ प्रकार रो विनय मूल धर्म कइयो । एक तो सांधु नों विनय मूल धर्म, बीजो श्रावक नों विनय मूल धर्म, ए विहूँ धर्म कह्या ते माटे साधु, श्रावक, वेहुनों विनय कियां धर्म छै हम कहे—दर्यारे विनय मूल धर्म री ओलखणा नहिं, ते ज्ञाता सूत्र नों नाम लेई नें सावध विनय धापे तिहां पढ़वो पाठ छै । ते पाठ लिखिये छै ।

ततेणं थावच्चा पुत्ते सुदंसणेणं एवं वुत्ते समाणे, सुदंसणं एवं वयासी सुदंसणा विनय मूले धम्ममे पणणते, सेविय विणए दुविहे पणणत्ते तं जहा आगार विणएय, अणगार विणएय तत्थणं जे से आगार विणए सेणं पंच अणुब्बयाइं, सत्त सिक्खावयाइं एकारस उवासग पड़िमाओ तत्थणं जे से आगार विणए सेणं पंच महब्बयाइं ।

( ज्ञाता अ० ५ )

त० तिवारं. था० थावच्चा पुत्र. सु० सुदर्शन. ए० एम कइया थकां. सु० सुदर्शन ने. ए० एम. व० बोलया. सु० हे सुदर्शन. वि० विनय मूल धर्म कइयो छै. से० ते. विनय मूल धर्म पु० २. नों कइयो छै ते कहे छै. आ० एक गृहस्थ नों विनय मूल धर्म. अ० बीजो साधु नों विनय मूल धर्म. त० तिहां. जे० जे. आ० गृहस्थ नों विनय मूल धर्म. से० ते. ५ अणुग्रत. स० सात । व्रत. ए० ११. उ० नी प्रतिमा गृहस्थ नों विनय मूल धर्म. ते० तिहां जे. साधु नों विनय मूल धर्म. से० ते. प० पांच महाव्रत रूप.

२ प्रकार नों विनय मूल धर्म बतायो । तिण में साधु राँ १२  
 व्रत ते साधु रो विनय मूल धर्म. अने आ रा १२ ११ पडिमा नों  
 विनय मूल धर्म. ए तो साधु श्रावक नों धर्म बतायो छै । ते धर्म थी कर्म वीणिये  
 ते टालिये, ते भणी व्रतां रो नाम विनय मूल धर्म ते छै । जे व्रतां रा अतिचार  
 टाली निर्मल पाले ते व्रतां रो विनय कहिए । इहां तो साधु श्रावकां रा सु  
 किण ही जीवने आसात ना उपजे नहीं, ते भणी नें विनय मूल धर्म कही जे ।  
 ए तो अण आसातना विनय रो लेखो कह्यो पिण शुश्रूषा विनय नों इहां  
 नहीं । तिवारे कोई कहे—श्रावक री शुश्रूषा तथा विनय न कह्यो. तो साधु रो  
 पिण शुश्रूषा तथा विनय इहां न कइयो । श्रावकां रा व्रतां ने इज विनय मूल  
 कहिणो, तो साधु री शुश्रूषा तथा विनय करे ते किण न्याय इम कहे तेहनों  
 तो शुश्रूषा विनय करे तेहनों कथन चाल्यो नहीं । साधु. श्रावक. विहं  
 नों इज नाम विनय मूल धर्म कह्यो छै । पिण साधु री शुश्रूषा विनय करे तेहनी  
 तो घणे ठामे श्री तीर्थङ्कर देवे आज्ञा दीधी छै । “उत्तराध्ययन” अ० १ साधु री  
 शुश्रूषा तथा विनय री भगवान् आज्ञा दीधी छै तथा “दश वैकाति ” अ० ६  
 शुश्रूषा विनय साधु रो करणो कइयो । पिण श्रावक री शुश्रूषा तथा विनय री  
 किण ही सूत्र में कही न थी । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति १ बोल सम्पूर्णा ।

केतला एक कहे—भगवतो शं० १२ उ० १ कह्यो । पोपली श्रावक नें  
 उत्पला विका वन्दना न र कियो । जो श्रावकां रो विनय कियां नहीं  
 तो उत्पला श्राविका पोपली श्रावकां नों विनय कयूं कियो । इम कहे तेहनों उत्तर—  
 ए उत्पला श्राविका पोपली श्रावक नों विनय कियो ते संसार नी रीति जाणी ते  
 साखवी पिण धर्म न जाण्यो । जिम पांडु राजा पिण संसार नी रीति जाणी  
 नारद नों विनय कियो कह्यो ते पाठ लिखिये छै ।

ततेणं से पंडुराया कच्छुल्लं गारयं एज्जमाणं पासति  
 २ ता पंचहिं पंडवेहिं कुंतीएय देवीएसच्चिं आसणाओ

अन्महेति २ कच्छु नारयं संत पयाइं पच्चुगच्छइ  
तिक्खुत्तो याहिणं पयाहिणं रेइ २ ता वंदइ नमंसइ  
वंदिता रि महरिहेणं सणेणं उवणि मंतेति ॥१३२॥

( शाता अ० १६ )

स० तिवारे. से० ते. पं० . क० छु नारद ने. ए० आवतो देखी ने.  
० पांच. पं० व अने. कु० कुन्ती देवी साथे. आ० थी उठी. उठी ने. क० सु  
ने. स० सात साहसों जावे जाई ने ३ बार दक्षिणा वत्त अंजलि करी ने. पं०  
प्रदक्षिणा करे करी ने बांटे. करे. बांटी ने नम करी ने. म० मू.  
री निसन्त्रणा कीधी ।

॥। पाण्डु पाण्डव. अने कुन्ती देवी सहित नारद  
ने त्रिप्रदक्षिणा देई ने वन्दना नम ।र कियो घणो विनय कियो । सं नी रीति  
हुन्ती तिम साचवी । १ कृष्णे नारद नों विनय कियो । ते जाव शब्दमें  
भलायो । ते कहे छै ।

“इ चणं कच्छुल नारए जेणोवं कणहस्स रन्नो गिहरि  
समोवइए निसीइत्ता कणहं वासुदेवं कुसलोदंतं  
पुच्छइ”

कृष्ण : पुर मे तिहां नारद आयो । तिहां शब्द  
माटे जिम विनय कियो तिम कृष्ण पिण विनय कियो य छै ।  
ते पिण सं नी रीति जाणी साचवी पिण धर्म न जाण्यो । तिम  
आविका पोषली नों विनय कियो ते संसार नी रीति छै. पिण न थी ।

शंख आवक ने और आवकां नम कियो ते आपणे छांदे पिण हेत  
न थी । “वंदेइ” कहितां गुण करिवो. अने “नमंसइ” कहितां नम ते  
क विवो. ते आवकां ने म नवाचिवा नी श्रीजिन नहीं । जिम

“दशवैकालिक” अ० ५ उ० २ गा० २६ “वंदमाणो न ” जे  
में बांदतो अशनादिक जाचे नहीं । बांदतो ते गुण कस्तो थको आहार  
न जांचे । इम “वंदइ” रो अर्थ गुण घणे ठामे कस्यो छै । ते माटे शंख ने ओर-



श्रावकां वांछो कह्यो, ते तो गुण प्राप्त किया । अने "नमस्स" ते मस्तक नवायो । पहिलां कडुवा चचन शंख श्रावक ने त्यां श्रावकां कहा हुन्ता । ते मादे खमाया ते तो ठीक, परं नमस्कार कियो तिण में धर्म नहीं । ए कार्द आज्ञा बाहिर छै । सामायक पोषां में सावध रा त्याग छै । ते सामायक पोषां में माहोमाही श्रावक नमस्कार करे नहीं, ते मादे ए विनय सावध छै । ३ पोषलो में उत्पला नमस्कार कियो ते पिण आवतां कियो । ४ पोषली जातौ वन्दना नमस्कार न कियो । ते मादे धर्म हेते नमस्कार न कियो । जे धर्म हेते नमं ५ कीधी हुवे तो जातां पिण करता । छली शंख नों विनय पोषली कियो ते पिण आवतां कियो । पिण पाछा जावतां विनय कियो चाल्यो नथी । इणन्याय संसार हेते विनय कियो, पिण धर्म हेते नथी । जिम साधु नों विनय करे ते श्रावक आवतां पिण करे अने पाछा जावतां पिण करे । तिम पोषली नों विनय उत्पला पाछा जातां न कियो । तथा पोषली पिण शंख कना थी पाछा जातां विनय न कियो । ते मादे संसार नी रीते ए विनय कियो छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति २ बोल सम्पूर्णा ।

केतला एक कहे—जो श्रावक ने नमस्कार कियो धर्म ते तो ना चेलां अम्बड ने नमस्कार क्यू कीधी । अम्बड ने धर्म कहे । तेहनों उत्तर—अम्बड ने चेलां कियो ते पोता ना गुरु नी रीति जाणी पिण न जाण्यो । पहिलां सिद्धां ने अरिहता ने वांछा तिण में जिन आज्ञा छै । अने पछे अम्बड ने वांछो तिण में जिन आज्ञा नहीं । ते मादे धर्म नहीं । अम्बड ने चेलां नमस्कार कियो तिहां एहवो पाठ छै । ते पाठ लिखिये छै ।

न गोत्थुणां अम्बडस्सं परिवायगस्सं म्हं धम्मायस्सि  
धम्मोवदेसगस्स ।

न० नमस्कार होज्यो. अ० . . . प० परित्राजक दंडवर संन्यासी. अ० म्हारा धर्माचार्य ने. ध० धर्म ना उपदेशक ने.

अथ इहां चेलां कह्यो—नमस्कार थावो म्हारा धर्माचार्य धर्मोपदेशक ने इहां अम्बड परित्राजक ने नमस्कार थावो यहवूं कह्यो । श्रमणोपासक ने नमस्कार थावो इम न कह्यूं । ए श्रमणोपासक पद छांडी परित्राजक पद ग्रहण करी नमस्कार कीधो ते माटे परि ना धर्म नों आचार्य, अने परित्राजक ना धर्म नों उपदेशक छै । तिण ने आगे पिण वन्दना नमस्कार करता हुत्ता । जिन धर्म पिण तिणकने पास्या । पिण आगलो गुरु पणो मिट्यो नहीं । ते माटे संन्यासी धर्म रो उपदेशक कह्यो छै । तिवारे कोई कहे—ए चेलां श्रावक रा व्रत पासे लिया । ते माटे धर्माचार्य अम्बड ने कह्यो छै । इम कहे तेहनों उत्तर—इम जो धर्माचार्य हुवे तो पुत्र कने पिता श्र रा व्रत धारे तो तिण रे लेखे पुत्र ने धर्माचार्य कहीजे । इमहिज स्त्री कने भर्त्ता श्रावक ना व्रत धारे तो तिण रे लेखे स्त्री ने पिण धर्माचार्य कहीजे । तथा सासू बहू कने व्रत आदरे. सैठ गुमाश्ता कने व्रत आदरे, तो तिण ने पिण धर्माचार्य कहीजे । बली “व्यवहार” पुत्र में कह्यो साधु ने दोष लागा \* पछाकड़ा श्रावक पासे तथा वेषधारी पासे आलोचना करी प्रायश्चित्त लेवे तो १० प्रायश्चित्त में १० ब्रह्मचर्य नवी दीक्षा पिण तेहने लेवे तो तिण रे लेखे ते पछाकड़ा श्रावक ने वेषधारी ने पिण धर्माचार्य कहीजे । अने जिण पासे धर्म सील्या तिण ने वन्दना करणी कहे— तिण रे लेखे पाछे कह्या ते सर्व ने वन्दना नमस्कार करणी । जो अम्बड ने पासे चेलां धर्म पाया ते कारण तेहने बांछां धर्म छै तो ए पाछे —ज्यां पासे धर्म पाया छै, त्यां सर्व ने बांछां धर्म कहिणो । अम्बड ने धर्माचार्य कहे तो तिण रे लेखे ए पाछे कह्या त्यां सर्व ने धर्माचार्य कहिणा । पिण इम धर्माचार्य हुवे नहीं । आचार्य नां गुण ३६ कह्या छै अने अम्बड में तो ते गुण पावे नहीं । आचार्य पद तो ५ पद माहि छै । अने अम्बड तो पांच पदां माही नहिं छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ३ बोल सम्पूर्णा ।

॥ जो साधु अष्ट हुआ पुनः श्रावक है उसको “पछाकड़ा ” कहते हैं ।

“संशोधक”

तथा धर्माचार्य साधु नें इज कहा है । 'रायपसेणी' में ३ प्रकार का  
आचार्य कहा है । कला आचार्य १ शिल्प । २ । ३ । ए तीन  
। में धर्माचार्य साधु नें इज । है । ते । लिखिये है ।

तएणं केशी कु । र मणो पदेसी रा । एवं व सी—  
जाणातिणं तुम्हं पएसी । केइ आयरियो पएण । हंता  
जाणामि, ओ आयरिया पएण । जहा । यरिए,  
सिप्पायरिए. धम् । यरिए. । जाणाति । म्हं पएसी ।  
सिं तिण्हं आयारियाणं कस्स काविणय पडिवत्ती पउंजि  
यव्वाहंता जाणाति । यरिस्स सिप्पा परियस्स लेवणं  
समज्झणं वा रेजा पुप्फाणि वा आणावेज्जा वेज्जा  
भोयावेज्जावा विउ जीवियारिहं पीइंदाणं दत्तए,  
पुत्ताए. पु । यंवा विं पेज्जा जत्थेव धम्मायरियं सेज्जा  
तत्थेव वंदिज्जा णमंसेज्जा सक्कारेज्जा समारोज्जा कल्लाणं  
देवयं चेइयं पज्जुवासेज्जा फासुएसणिब्जेणं  
इमं साइमेणं पडिलाभेज्जा पडिहारिएणं पीढ़ रि  
थारए नमंतिज्जा ।

( राय पसेणी )

त० तिवारे. के० केशी कुमार भ्रमण. प० प्रदेशी राजा ने. ए० इस बोल्यो. जा०  
जाणे है. तू. प० हे प्रदेशी । के० केतला आचार्य परुप्या. ( प्रदेशी बोल्यो ) हं० हां जायूँ हूँ.  
त० तीन आचार्य परुप्या. त० ते कहे है. क० कलाचार्य. सि० शिल्पाचार्य. ध० धर्माचार्य.  
केशीकुमार बोल्यो जा० जाणे है. तु० तू. प० हे प्रदेशी ! तं० तिण्ण त्रिण्ण । नें विपे.  
क० ि री केइवी भक्ति करिये. ( प्रदेशी बोल्यो ) हं० हां जायूँ हूँ. क० कलाचार्य री शिल्पा-  
री भक्ति. उ० उपलेपन. करविए. पु० पुप्ये करी मंदन कराविए. भोजन  
विए. जो० जीवित्तव्य रे. प्रीतिदान दीजिये. पु० तिण्ण रे पुअ. पुत्रियां री. वृत्ति  
विए. ज० जिहां धर्माचार्य प्रक्ति. पा० देखी में. त० तिहां. धं० बंदी नें. शू० नम करी



धर्माचार्य १ । सन्यासी योगी आदि ना गुरां नें कुप्रायचनीक द्रव्य धर्माचार्य कहीजे २ । अने साधु रा वेप में आचार्य बाजे ते वेपथा रा आचार्य नें लोकोत्तर द्रव्य धर्माचार्य ३ । अने ३६ गुणा सहित नें भावे धर्माचार्य कहीजे । अने तीजा धर्माचार्य कहा ते भाव धर्माचार्य आश्री कह्यो । कुप्राय नीक धर्माचार्य रो न अने लोकोत्तर द्रव्य धर्माचार्य रो रायपसेणी में आचार्य कहा, त्यां में नथी । इहां तो कला, शिल्प, लौकिक, धर्माचार्य, अने भावे धर्माचार्य ए तीनां रो कथन कियो छै । ते माटे ए० ३ आचार्य में अम्वड नथी । तथा ठाणाङ्क ठाणे ४ चार प्रकार ना आचार्य कहा—चाण्डाल रा करंडिया समान, वैश्य ना करंडिया समान, सेठ रा करण्डिया समान, राजा ना करंडिया समान, तो चाण्डाल रा करंडिया समान, अने वैश्य ना करण्डिया समान, किसा आचार्य में लेवा ! तथा उपासक दशा अ० ७ शकडाल पुत्र रो धर्माचार्य गोशाला नें कह्यो । ते पिण यां तीनां में, चार्य, शिल्पाचार्य, धर्माचार्य, में नथी । ते माटे अ वड ने धर्माचार्य कह्यो—ते पिण आगले कुप्रायचनीक रो धर्माचार्य पणो घासो ते आश्री कह्यो । पिण भावे धर्माचार्य नथी । इणन्याय चेलों अम्वड नें कुप्रायचनीक धर्माचार्य जाणी बांधो पिण धर्माचार्य जाणी बांधो नहीं । तिवारे कोई कहे—ए संथारो करवा तयारी थया ते चेलों ए पाप रो कार्य ब्यूं कीधो तेहनों उत्तर—जे तीर्थङ्कर दीक्षा लेवे तिवारे १ वर्ष ताईं निरय १ करोड़ अने सोनइया दान देवे । चली दीक्षा लेतां हजार चौंसठ कलशा थी करे । ए संसार नी रीति साचवे पिण धर्म नहीं । तिम अम्वड ना चेलों पिण संसार नी रीति साचवी पिण धर्म नहीं । डाहा हुवे तो बिचारि जोइजो ।

## इति ४ बोल सम्पूर्णा ।

तथा सूर्यामि देव स दृष्टि प्रतिमा आगे " मोक्षुर्ण गुण्यो—ते लौकिक रीति पिण हेते नहीं । भरत जी पिण चक्र नों दि कियो । ते पाठ लिखिये ।

सीहासणाओं अम्बु इ २ . पाय पीढाओ पचो-  
 कहइ २ ता पाउया रो ३ मुयइ २ एग साडिय उत्तरा  
 गं करेइ २ । अंजलि मउलि यग हत्ये चक्रयणाभिमुहे  
 दूपयाइं गुगच्छइ २ । मंजागु अंचेइ २ ता दाहिणं  
 गु धरणि तलंसि गिहहु रय जाव अंजलि कहु चक्र-  
 यणास्स पणामं करेइ २ ता ।

( जम्बूद्वीप प्रकृति )

सिंहासनं यकी. अ० डटे. डठी ने. पा० बाजीट धी डतरे डतरी ने. पा० पा नी  
 बावडी तथा पगरली सूके सूकी ने. ए० एक शादिक वक्र नों उत्तरासन करे करी ने. अ० हाथ  
 ने जोडी ने मस्तक ने आगे हाथ चढा दी ने एहवो थको चक्र रुत्ने सम्मुख ते सामुहो सांत घाट  
 पगलां. अ० जाई जाई ने. दा० डावो गोडो ऊंचो राखे. राखी ने. दा० जीरणो गोडो. च०  
 भरतो वज्र ने बिरे. गि० थाली क० यावत् हाथ जोडी ने. च० चक्रव ने. ए० प्रक्षाम  
 करे की ने.

इहां चक्र उपनों सुण्यो तिहां भरत जी इसो विनय कीधो । पछे चक्र फले  
 भावी पूजा कीधी, ते संसार रीते, पिण धर्म हेंते नहीं । तिम अम्बुड नें चेलां  
 पिण रो निज गुरु जाणी गुरु नी रीति सांचवी । पिण धर्म न जाण्यो, जंव  
 कोई कहे—सम्मुख मिल्यां तो रीति वे, पिण पाप जाणे तो पर पूड विनय क्युं  
 कियो । तेहनो उत्तर— जी उपनों सुणतां पाण हर्ष सन्तोष पाम्या,  
 विकलाय थइ परपूडे पिण विनय कियो ते संसार नी रीति ते माटे ।  
 तिम ना चेलां पिण संसार ना गुरु जाणी आगलो स्नेह तिण सूं आप री  
 ली रीते विनय नम कियो पिण धर्म नहीं । डाहा हुवे तो विचारि  
 जोइजो ।

इति ५ बोल सम्पूर्णा ।

तथा “जम्बूद्वीप पञ्चति” में तीर्थङ्कर जन्मयां कणो करे ते  
लिखिये है ।

सूरिदे सीहासणाओ अब्भुद्धेइ २ पाय पीढाओ  
पचोरुहइ २ ता वेरुलिय वरिद्ध रिट्ट अञ्जण णिउ णोच्चिय  
मिसिमिसिन्ति णिरयण मंडिआ गो उआओ उमुअइ  
२ ता एग साडियं उत्तरा संगं करेइ २ अञ्जलि लि-  
यग्गहत्थे तित्थयराभिमुहे सत्त इं अणुगच्छइ २ ता  
वा जाणु अंचेइ २ ता दाहिणं जाणु धरणि सि साहइ  
तिक्खु गो मुद्धाणं धरणि लंसि निवेसेइ २ ता ईसिं पच्चु-  
रणमइ २ ता कडग तुडिय थंभिओ भुयाओ साहरइ २ ।  
कइयल परिग्गहियं सिरस्ताव मत्थए अलि कडु एवं  
वयात्ती—णामुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं इगगाणं तित्थ-  
यराणं संयंसबुद्धाणं पुरिसुत्तमा पुरि सीहाणं पुरि वर  
पुंडरीयाणं पुरिस्वर गंध हत्थीणं लोयुत्तमाणं लोगणाहाणं  
लोगहिआणं लोगपइवाणं नोन पज्जोयगराणं अभय दयाणं  
चक्खु दयाणं मग्गदया सरण दयाणं जीव दयाणं बोहि-  
दयाणं धम्म दयाणं धम्मदेसियाणं धम्म यगाणं धम्मसार-  
हीणं धम्मवरचा उरंत चक्कवट्ठीणं दीवोताणं सरणगइ पइ-  
ट्ठाणं अप्पडिहय वरणाण दंसण धराणं विअइ छउभाणं  
जिणाणं जांवयाणं तिण्णाणं तारयाणं कुद्धाणं बोहियाणं  
मुत्ताणं मोअगा सव्वभूणं सव्वदरिसीणं सिवमयल मरुअ-  
ते मव मव्वात्राह पुणरायत्तियं सिद्धि गइ णाम

१. एमो जिणाणं जीयभणाणं एमोत्थु  
भगवओ तिथयरस्त आईगरस्त संपाविओ  
वंदामिणं भग तापगयं इहगए पासउ मे तत्थगए  
ईहगयं तिकहु वंदइ एमंसइ २ चा सीहासण वरंसि रस्था-  
भिमुहे णिण ए ॥ ६ ॥

(जम्बूद्वीप पञ्चसि)

सु० . सी० सिहासन थी. अ० उठे. उठो ने. पा० पावदी पगरसी सूके. सूकी ने.  
पु० एक शायिक अखंड आखो वख तेहनों उत्तरासंग खवे ऊपर काल में नीचे वख राखे उत्तरा संग  
करे. करी ने. अ० जोदी. दोहा ने आकारे चप हए छे केहनों एहमे थको. सि०  
तीर्थ कर ने हो. स० पंगलां. अ० जाई जाई ने. वा० गोडो ऊंचो राखे  
हाली ने. वा० जीमयो गोदो. ध० घरयो तल ने विषे. सा० स्थापी ने ति० त्रिण वार  
ध० चरतो ने विषे. नि० लगावे. लगावी ने. ई० ईपलु लिगारेक ऊंचो धई ने. क०  
सु० बहिरवा. स० तेबे करी स्तम्भित. भु० एहवी भुजा प्रते. सा० संकोची  
ने. क० हाथ ना. प० एकठा करी ने. सि० मस्तके. रूप. म० म ने  
अ० अजलि करी ने. पु० इस के स्तुति करे. न० नमस्कार थावो. ख० कारे.  
अ० अरिहन्त ने. म० ने ज्ञानवन्त ने. आ० धर्म नी आदिकरण हारा ने. ती०  
तीर्थ ने. स० वे ज्ञान प्राप्त करण ने. पु० पुरयोत्तम ने.  
पु० सिंह ने. पु० ने विषे पुण्यहरीक नी वाला ने. पु० पुरुषा में गन्वहस्ती  
नी सा ने. सो० सोकोत्तम ने. सो० सोकनाथ ने. सो० सोक हितकारी ने. सो०  
में दीपक ने. सो० में काला ने. अ० दाता ने. ध० ज्ञान रूप  
ने. म० मोक्ष मार्ग ने. स० दाता ने. जी० संयम रूप जीव दाता ने.  
को० रूप बोध देखावाला ने. ध० धर्म देखावाला ने. ध० धर्मोपदेश करण ने.  
ध० ने. ध० धर्म सारथि ने. ध० धर्म में चातुरन्त नि ने. दी० संसार समुद्र  
में द्वीप ने. स० शरणागत आधार मूल ने. अ० अप्रतिहत केवल केवल दर्शन  
ने. वि० रहित ने. जि० राग द्वेष नों जय वाला ने तथा  
ने. ति० संसार समुद्र थकी तिरब ने तथा ने बु०  
ने. तथा ने. सु० अष्ट कर्मां थकी निवृत्त  
ने. तथा निवृत्त ने. स० सर्वदर्शी ने. सि० उपद्रव रहित. अवल.  
अरोग. सिद्ध गति ने. न०



थावो जिन तीर्थंकर ने जीत्या छै मय जेखे. न० यावो शं वाक्यालंकारे. म० भगवन्त.  
 ति० तीर्थंकर ने. आ० धर्म ना आदि ना करणहार. जा० यावत्. सं० मोक्ष गति प्राप्तवानों  
 अमिताभ छै जेहनों एहवा तीर्थंकर ने. वं० वांई छू. म० भगवन्त प्रते तिहां जन्मस्थान  
 इ० हूँ इहां सौधर्म देवलोक ने विचे रह्यो एहवा ने देखो हे भगवन् ! म० भगवन्त तिहां जन्म-  
 स्थान के रह्यो. इ० इहां देवलोक रह्यो छू. ति० इस करो ने वं० वांई कचने करो स्तुति करे.  
 न० नमस्कार करे कायाहं करी.

अथ इहां कह्यो—तीर्थङ्कर स्या ते द्रव्य तीर्थङ्कर नें इन्द्र नमोत्युणं गुणे,  
 नमस्कार करे, ते पिण इन्द्र नी रीति हुन्ती ते साचवे पिण जाणे नहीं । तिण  
 सहित इन्द्र एकावतारी नें पिण परपूठे जनम्या छतां द्रव्य तीर्थङ्कर नों विनय  
 करे । “नमोत्युणं” गुणे ते लौकिक संसार ने हेते रीति साचवे, पिण मोक्ष हेते  
 नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ६ बोत सम्पूर्णा ।

बली इन्द्र पिण इस विचारो—जे तीर्थङ्कर नी जन्म महिमा . . . ते माहरो  
 जीत आचार छै । एहवो पाठ. कह्यो ते पाठ लिखिये ।

तएवां तस्स सकस्स देविंदस्स देवराणो अयमेवा  
 रुवे जाव संकप्पे समुपज्जित्था उप्पण्णो खलु भो ! जम्बुद्वीपे  
 भयवं तित्थयरे तं जीयमेयं तीय पच्चुप्पण्ण मणागयाणां सक्काणं  
 देविंदाणां देवराईणां तित्थयराणां जम्मणा महिमं करित्तए तं  
 च्छामिणां अहं पि भगवओ तित्थयरस्स जम्मणा हिं करे-  
 मित्तिकट्ठु.

( जम्बुद्वीप पद्यति )

त० तिवारे पद्धे. त० ते. स० शक्र देवेन्द्र देवता ना राजा नें. अ० एहवो एताइय रूप.  
 जा० यावत्. अ० संकल्प विचार उपनो. उ० . सं० निग्रय. भो० भो इति आत्मन्त्रे.

ज० जम्बूद्वीप नामा द्वीप नें विवे. अ० भगवन्त. ति० तीर्थंकर. तं० ते भयी. जी० जीत आ-  
चार एहवो अतीत काले थया. ५० वर्त्तमान काले छै. म० काले थारुये एहवा. सं०  
शक्र. देवता ना राजा. ती० तीर्थंकर ना. ज० जन्म महोत्सव महिमा. क० करिवो ते  
छै. तं० ते भणी जावू. अ० हूँ पिण. अ० भगवन्त तीर्थंकर ना. ज० जन्म नी. म० महिमा  
करू. ति० एहवो विचार करी नें. "

अथ इहां इन्द्रे विचारो—जे तीर्थङ्कर नी जन्म मा ते म्हारो जीत  
छै एहवो कह्यो । पिण ए जन्म महिमा धर्म हेंते इम नथी कह्यो ।  
तो जिम इन्द्र जीत आचार जाणी जन्म महिमा करे. तीर्थङ्कर जनम्या "नमोत्थुण"  
गुणे. ए पिण संसार नी लौकिक रीति साचवे । तिम ना जेलां  
उत आचिका आचकादिक नें नमस्कार किया ते पिण पोता नी लौकिक रीति  
साचवी पिण धर्म न जाण्यो । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ७ लेख सम्पूर्णा ।

तीर्थङ्कर नी माता नें पिण न करे ते लिखिये छै ।

जेणोव भयवं तित्थ यरे तित्थयर याय तेणोव उवा-  
गच्छइ २ ता आलोए चैव पणामं करेइ २ ता भयवं तित्थ-  
तित्थयर मायरंच तिव्वुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ  
२ करयल जाव एवं व सी--णमोत्थुणं ते रयण कुच्छि  
धारिण एवं जहा दिसा कुमारी ओजाव धरणासि पुरणासि  
तं तथासि अहरणं देवाणुप्पिण । सक्कैणामं देविंदे देव  
राया भगवओ तित्थ यरस्स जम्मण महिमं करिस्सामि ।

( जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति )

जे० जिहां. अ० न तीर्थंकर छै अने तीर्थंकर नी छै. उ० आवे. आनी ने.  
आ० देखी नें तिसज. ५० प्रणाम करी ने. अ० भगवन्त तीर्थंकर प्रते. ति० तीर्थंकर नी

प्रते. ति० त्रिण वार. आ० जीमणा पासा थी. प० प्रदक्षिणा करे. क० हाथ जोड़ी नें  
 ए० हम कहे. न० नमस्कार थावो ते० तुम नें. हे रत्न कुन्नि मो घरबाहारी. ए०  
 अ० त्रिन. दि० दिवाकुमारी कहा तिम कहे छै. घ० तूं धनय छै. पु० तूं पु० छै. क० तूं  
 कृतार्थ छै. अ० अहो. दे० देवानुप्रिये ! स० हूं नामक देवेन्द्र. दे० देवता नो म०  
 भगवान्. ति० तीर्थ कर नों. ज० जन्म महोत्सव. क० करस्यूं.

तीर्थङ्कर नी माता नें प्रदक्षिणा देई नें नमस्कार कियो ।  
 ते इन्द्र तो सम्यग्दृष्टि अने तीर्थङ्कर नी माता गृष्टि हुवे, तथा प्र गुणठाणे  
 पिण भगवान् री हुवे तो तेहने पिण नमस्कार करे, ते पोता नों जीत  
 लौकिक रीति जाणी साचवे पिण न जाणे । तिम ना चेलां रि  
 संसार नों गुरु जाणी नमस्कार कियो पिण धर्म हेते नहीं । वली अनेक  
 श्रावक ना मङ्गलीक रे घर ना देव पूजे । “नाग हेउवा भूत हेउवा  
 छै । अभयकुमार धारणी रो दोहिलो पूर्वा पूर्व ना मित्त देवता ध्यो ।  
 भरतजी १३ तैला किया, देवता नें स्कार करी बाण मुफ्यो त्यानें बश किया ।  
 कृष्ण देवता नें आराध्यो छै । पछे गज सुकुमाल फो जन्म थयो । इत्यादिक  
 ने हेते सम्यग्दृष्टि श्रावक अनेक सावध कार्य करे । पिण धर्म न जाणे । तिम  
 ना चेलां पिण दिनय नमस्कार कियो ते संसार नों गुरु जाणी नें, पिण हेते  
 नहीं । गृहस्थ नें नमस्कार करण री भगवान् री नहीं ते माटे नें  
 कियां नहीं । आहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ८ बोल सम्पूर्णा ।

आवश्यक सूत्र में नवकार ना ५ पद —पिण “ सावयान्”  
 छठो पद कहा नहीं । चन्द्र ति सूत्र में एहवो कहा । ते  
 लिखिये ।

मिऊण सुर सुर गरुल-भुयंगपरिवन्दिण गय किलेसे  
 रिहं सिद्धा रिय--उवज्जाय व्वसाहूय ।

( प्रवसि गा० २ )

म० करी अ० पति आदिक. सु० वैमानिक. ग० देवता. मु०  
विशेष ते देवता ना पन्दनोकां प्रते. बलि ते केहवा ग० रागादिक क्लेश  
गयो छै जेहनों. अ० अरिह कहिता पूजा योग्य छै. सि० सिद्ध ते कर्म रहित. आ०  
ने. ड० भले भबवे तेहने. स० प्रते संस्कार कियो छै.  
पिण ५ पदां नें कह्यो पिण नें न कह्यो । झाहां हुवै  
तो विचारि ओइजो ।

## इति ६ बोल सम्पूर्णा ।

सर्वानुभूति मुनि गोशाला नें कह्यो—तै लिखिय ।  
जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ २  
गोसालं लिपु एवं वयासी—जे वि गोसाला तहा  
एर माहणस्स अंतियं एगमवि आयरियं  
धम्मियं एं निसामेति २ सेवितावि तं वंदति  
ति जाव एं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासति ।

( भावती. पं० १५ )

जे० जिहां ते गोशालो मंखलिपुत्र. तिहां आवी नें. गौ० गोशाला मंखलिपुत्र  
इम करे. जे० गोशाला तया रूप ना तया ब्रह्मचारी ना थी. ए० एक  
आचरवा योग्य धर्म सुवर्न सांभले सांभली नें. तें पुरुष ते प्रते वदि. न० फार करे. जे०  
मज्झसीक देव नी परे देव छे० वन्त नी पयु करे.

सर्वानुभूति मुनि गोशाला नें कह्यो । हे गोशाला ।  
जे माहण सीखे. तेहने पिण धांदि नम करे ।  
कल्याणीक मंगलीक देवयं चेइयं जाणी नें घणी सेवा करे । इहां अमण माहण  
सीखे ते वन्दना करणी कही । पिण अमणोपासक कने  
तेहने ती—इम न कह्यो । अमण न नी सेवा कही पिण

श्रमणोपासक री सेवा न कही । ए तो प्रत्यक्ष श्रावक नें द्वियो, अने श्रमण माहण नें वन्दना स्कार करणो कह्यो, ते माटे श्रावक नें स्कार करे ते कार्य आधा बाहिरे छै । तथा सूर्यगङ्गाङ्ग श्रु० २ अ० ७ उदक पेढाल पुत्र नें पिण गौतम कह्यो । जे तथा रूप श्रमण माहण सीखे तेहने वन्दना नमस्कार करे, पिण श्रावक कने सीखे तेहने नमस्कार करणो न कह्यो । केतला कहे श्रमण ते साधु माहण ते श्रावक छै ते पासे सीखां तेहने वन्दना नमस्कार करणो । इम अयुक्ति लगावे तेहनो उत्तर—इहां तो एहवा पाठ कथा जे तथा श्रमण माहण कने एक वचन सीखे तो तेहने “वन्दइ, नमंसइ, सत्कारेइ सम्माणेइ, कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं” एतला पाठ कथा । एहवा शब्द साधु नें भगवान् नें ठामे २ । पिण श्रावक नें एतला शब्द किहांही कथा नथी । “कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं” ए ४ नाम भगवान् तथा साधु रा तो अनेक ठामे कथा, पिण रा ४ किहां ही नथी कथा, ते माटे श्रमण माहण साधु नें इज । पिण श्रावक नें माहण नथी कह्यो । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १० ल सम्पूर्ण ।

तथा सूर्यगङ्गाङ्ग अ० १६ ण साधु नें ते पोठ लिखिये छै ।

अहाह भगवं दंते दविए वोस काए तिवच्चे माहणे  
तिवा समणेतिवा भिक्खूति वा निग्गंथेति वा पड़ि ह  
भंते । कहणं भंते । दविए वोसट्टकाए तिवच्चे माहणेति  
वासमणेति वा । भिक्खूति वा निग्गंथेति वा तं नो वूहि मुणी  
ति विरय सव्व पाप कम्मे पेज दोस कलह अब्भक्खाण  
पेसुण परि परिवाय अरइ रइ माया मोसा णि च्छादंसणसल्ल  
विरए मिए हिए सदाजए णो कुजे णो णि माहणे-  
तिवच्चे ।

अ० अथ अनन्तरं. अ० भगवान् श्री महावीर. ते० साधु नै. द० इन्द्रिय दमणहार.  
 द० मुक्त योग्य. वो० वोसरावी छै काया विभूषा रहित एहवो शरीर जेहनों. ति० हम  
 कहिवो. मा० महयो महयो एहवो उपदेश ते माहण अथवा नवगुप्त ब्रह्मचर्य धकी ब्राह्मण स०  
 भ्रमण तपस्वी. वा० । साधु भिलाइ करी भिद्यु. नि० धंधि रहित ते  
 भयी निर्ग्रंथ कहिए. हम भगवते कहे हुते शिष्य बोल्हो किम है भगवन् ! दांति. काया वोसरावे  
 ते मुक्त योग्य हम कहिवो. मा० अस स्थावर न हयो. स० भ्रमण तपस्वी. मि०  
 कर्म भेदे भिलाइ जीवे. नि० निर्ग्रंथ. त० तेमहा नै कछो सुनीश्वर. तिवारे गुरु ब्राह्मणादिके  
 प्यार नाम नों अर्थ अनुक्रमे कहिवो छै. ति० जेणे प्रकारे विरत. स० सर्व पाप कर्म थको निवृत्त्यो.  
 तयो. पे० राग. दो० द्वेष क० कुवचन भाषण अ० अभ्याख्यान अक्षता दोष नों प्रकाशिवो. पे०  
 पैशुनय. परगुण नों असहिबो तेहना दोष नों उघादिवो. प० पर परिवार अनेरा नों दोष अनेरा  
 आगले प्रकाशिवो. अ० अरति चित्त नों उद्वेग. र० रति चित्त नो समाधि. मा० भार्या  
 संसार विषे परवंचना. मो० सृषा अलीक भाषण. मि० मिथ्या दर्पन सत्य ते तत्त्व नै विषे  
 अतत्त्व नो बुद्धि नै विषे तत्त्व नो बुद्धि. एहीज गंल्य. वि० तेह थकी विरत. स० पांच  
 सुमति सहित. ज्ञानादिक सहित. स० सदा संयम ने विषे सावधान. यो० कियारी सूं क्रोध  
 न करे. यो० मान रहित. एयो परे माया लोभ रहित एव गुण कलित माहण कहिवो.

अथ इहां १८ पाप सूं निवृत्त्यो. पांच सुमति सहित एहवा महा मुनि नै  
 इज माहण कह्यो । पिण अ नै माहण न कह्यो । डाहा हुवे तो विचारि  
 जोइजो ।

## इति ११ वोल् सम्पूर्णा ।

तथा सूर्यगडाङ्गं श्रु० २ अ० १ पिण साधु नै इज माहण कह्यो छै । ते पाठ  
 लिखिये छै ।

एवं से भिक्षु परिणाय कम्मे परिणाय संगे परिणाय  
 गिहवासे उवसंते स ए सहिए सया जए से एवं दत्तवे  
 तंजहा—समणेति वा माहणेति वा ति ति वा दंते तिया  
 गुत्तेति वा मुत्तेतिवा इसीतिवा मुणीति वा किन्तीति वा

विऊत्तिवा भिक्खूति वा लुहेति वा तीरट्ठीइवा चरण करण  
पारविदूत्तिवेमि ।

(सूयगडाङ्ग श्रु० २ अ० १)

ए० एणी परे. भि० साधु ज्ञाने करी जाण्यो. व० ज्ञाने करि जाणी ने पचक्खारी  
करी पक्खिखो. क० कर्मबंध नों कारण. प० प्रत्याख्यान प्रज्ञाई पचक्खिखो बाह्य आभ्यंतर  
संग जेणे. ए० जेणे असार करी जाणी ने छांड्यो. गि० गृहवास. 'उ० इन्द्रिय उपशमाब्ध्या,  
स० पांच समुत्ति सहित. ज्ञ० ज्ञानादि करी सहित. स० सर्वदाकाल यत्तावंत. से० ते  
पहवो चारित्रियो हुइ. व० ते कहियो. तं० ते कहे छै. स० श्रमण तपस्वी तथा मित्र शत्रु ऊपर  
जेहनों ते श्रमण. मा० प्राणिया ने महयो २ जेहनों उपदेश ते माहण. ल० लमा-  
वंत. दं० इन्द्रिय नों दमणहार. गु० त्रिहुं गुप्ति गुप्तो. सु० निलोभो लोभ रहित. इ० जीव  
रक्षा करे ते इपि. सु० जगत् ना स्वरूप नों जाणणहार. कि० सहू कोई कीर्त्तिं करे ते कीर्त्ति-  
वंत. वि० परमार्थ यकी पणित्त. भि० निरवय आहार नों लेणहार. लु० अंतर्प्रांत आहार नों  
करणहार. ती० संसार नों तीर रूप मोक्ष तेहनों अर्थी. च० चरण ते मूल गुण. क० करस ते  
उत्तर गुण तेहनों. पा० पारगामी ते अणी चरण करण तेहनों वि० जाणणहार. ति० श्री  
छधर्मास्वामी जम्बू स्वामी प्रते कहे छै.

अटे साधु रा १४ नाम बली कहा—जेणे गृहस्य वास त्याग्यो ते साधु नै  
इज पतले नामे बोलाव्यो । ;जिण माहे माहण नाम साधु नों कह्यो पिण भावक  
नों नाम नथी चाल्यो । तिचारे कोई कहे—‘समणवा माहणवा’ इहां वा शब्द  
अन्य पुरुष नी अपेक्षाय कह्यो छै, ते माटे श्रमण कहितां साधु अने माहण कहितां  
भावक कहीजे. इम कहे तेहनों उत्तर—जिम सूयगडाङ्ग श्रु० २ अ० १६ साधु रा  
नाम ४ पूर्वे कहा में पिण वा शब्द नाम नी अपेक्षाय कह्यो छै पिण अन्य  
पुरुष नी अपेक्षाय कह्यो नथी । लोगस्स में ‘सुविहं च पुण्णदंतं’ कह्यो तिहां  
च शब्द ते सुविध नों नाम बीजो पुण्णदंत तेहनी अपेक्षाय कह्यो, पिण सुविध  
पुण्णदंत. ए वे तीर्थङ्कर नहीं । नवमा तीर्थङ्कर ना वे नाम छै तेहनी अपेक्षाय च  
शब्द कह्यो छै । तिम ‘खमणं वा माहणं वा’ इहां वा शब्द साधु ना वे नाम नी  
अपेक्षाय जाणवो । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १२ बोल सम्पूर्णा ।

अ० २५ माहण ना लक्षण ते लिखिये है ।

जो लोए वंभणोवुत्तो अग्गीव महिओ जहा ।

सया संदि तं वयं वूम माहणं ॥

जो० जे. सो० लोक नें विषे. वं० ण . अ० घृते करी सिञ्चित अग्नि  
दीपे . म० पूजनीय. ज० यथा प्रकारे. स० सर्वदा काले. कु० कुणले तीर्थकरादिक. सं०  
तं० . वं० म्हे. वू० . छां. मा० .

इहां कह्यो—लोक नें विषे जे ब्राह्मण जिम अग्नि पूजे छते घृता-  
दिके दीपे तिम गुणे करी दीपे सदा शोभे किया इ करी. कुणले तीर्थदु-  
रादिक , तेहनें म्हे कहां माहण, —

जो न सज्जइ गंतु पव्वयं तो न सोयइ ।

रमइ वयणम्मि तं वयं वूम माहणं ॥ २० ॥

जो० जे. न० नहीं. स० होवे. आ० स्वजनादिक नें आयां. पं० अने  
के जातां. न० नहीं. सो० शोक करे. र० रति करे. अ० तीर्थकर ना. व०  
ना विषे. ते० तेहनें. वं० म्हे. वू० कहां छां. मा० माहण.

इहां कह्यो—स्वजनादिक नें आयां आशक्त न होवे, अने  
स्थानके जातां शोक न करे, तीर्थदूर ना वचन नें विषे रति करे, तेहनें म्हे  
छां माहण । —

जायरूवं जहामि निद्धंतं मल पावगं ।

राग दोस भयाईयं तं वयं वूम माहणं ॥ २१ ॥

जा० . नें. ज० जिम. मि० मठारे अग्नि करी धर्मे. नि० मल दूर करे तिम नें.  
जे. रा० राग दोष भयादि करी रहित करे. तं० तेहनें. वं० म्हे. वू० कहां छां. मा० माहण.

कह्यो—सुवर्ण नें मठारे अग्नि करी दूर करे तिम मा नें  
धमी नें कसी नें मल सरीखूं पाप दूर कीघो जेहनें राग द्वेष भय अति जेहनें  
म्हे कहां छां माहण । —



तवस्सियं किसं दंतं अवाचिय मंस गोणियं ।

सुवयं पत्त निव्वाणं तं वयं वूम माहणं ॥ २२ ॥

त० तपस्वी. कि० तपे करी कृश शरीर छ जेहनें. दं० इन्द्रिय दमी जेहनें अ० सुखो है. मां० लांही जेहनें. छ० सुवती. प० मोक्ष पद ग्रहण करवा ने योग्य. तं० तेहनें. व० म्हे. व० कहाँ छां. मा० माहण.

अथ इहां कह्यो—तपे करी कृश दुर्बल, इन्द्रिय दमी जेणे, मांस लोही शुष्क. सुवती समाधि पाभ्यो. तेहनें म्हे कहाँ छां माहण । तथा,

तस पाणे वियाणेत्ता संगहेणय थावरे ।

जोनहिंसइ तिविहेणं तं वयं वूम ाहणं ॥ २३ ॥

त० द्वीन्द्रियादिक त्रस प्राणी नें. वि० विशेष जाणी नें. सं० विस्तारे करी तथा. संतपे करी. था० दृथिव्यादिक स्थावर जीव नें. जो० जे. न० नहीं. हि० मारे. ति० त्रिविध मन वचन ।इ० करी. तं० तेहनें. व० म्हे. व० कहाँ छां. मा० माहण.

अथ इहां कह्यो—तस स्थावर जीव ने त्रिविधे २ न हणे तेहनें म्हे छां माहण । तथा,

कोहा वा इवा हासा लोहा वा जइवा भया ।

सं न वयइ जोउ वयं वूम माहणं ॥ २४ ॥

को० थी. यदि वा. हा० हास्य थी. यदि वा. लोभ थी. यदि वा. भ० भय थी. मु० मृषा झूठ. न० नहीं. व० बोले. जो० जे. सं० तेहनें. व० म्हे. व० कहाँ छां. माहण.

अथ इहां कह्यो—क्रोध थी हास्य थी लोभ थी भय थी मृषा न बोले तेहनें म्हे कहाँ छां माहण । तथा,

चित्तमंत चित्तं वा अप्पं वा जइ वहुं ।

न गिरहइ अदत्तं जे तं वयं वूम ाहणं ॥ २५ ॥

चि० सचित्त. म० अथवा अचित्त. अ० अथवा व० बहु वस्तु न० नहीं. गि० ग्रहण करे. अ० विना दीधी थकी अर्थात् चोरी न करे. जे० जो. तं० तेहनें म्हे कहाँ छां

अथ इहां गो—सचित्त अथवा अचित्त. अथवा व हु वस्तु री चोरी न करे तेहनें म्हे कहां छां माहण । तथा,

दि०व माणुस तोरच्छं जो न सेवइ मेहुणं ।

मणसा काय वक्केणं तं वयं वूम माहणं ॥ २६ ॥

दि० देवता सम्बन्धी. म० मनुष्य सम्बन्धी. ति० तिर्यक् सम्बन्धी. जो० जो. न० नहीं. से० सेवे. मे० मैथुन. स० मन करी. का० काया करी. वा० वचन करी. तं० तेहनें. व० म्हे. वू० कहां छां माहण.

अथ इहां कहाँ—देवता. मनुष्य. तिर्यञ्च सम्बन्धी. मन. काया करी न सेवे तेहनें म्हे कहां छां माहण । तथा,

जहा पोमं जले जायं नो वलिपइ वारिणा ।

एवं लित्तं कामेहिं तं वयं वूम माहणं ॥ २७ ॥

ज० जिम. बो०. ज० जल नें विपे. जा० उपना हुवा पिण. नो० नहीं. लि० लिपावे. वा० पाणी करी. ए० इय प्रकारे जो. अ० नहीं लिपाय मान हुवा. का० काम भोगे करी. तं० तेहनें म्हे कहां छां माहण.

अथ इहां कहाँ—जिम जल नें चिबे उपनों पिण पाणी करी न लिपावे इम भोगे करी जो अलिप्त छै । तेहनें म्हे कहां छां म ।

आलो यं मुहाजीवी णगारं अकिंचनं ।

असंसत्तं गिहत्थे सु तं वयं वूम माहणं ॥ २८ ॥

अ० अलोलुपी. सु० अनय पुरुषां रे अर्थे बनावोदो आहार तेयें करी प्राण करे. अ० अणगार घर रहित. अ० परिग्रह रहित. अ० असंसक्त. यो० गृहस्थ नें चिबे. तं० तेहनें म्हे कहां छां माहण.

अथ इहां गो—लोलपणा रहित अज्ञात कुल नी गोचरी करे, घर री परिग्रह रहित. गृहस्थ सूंससर्ग रहित, अणगार तेहनें म्हे कहां छां माहण ।

जहिता पुव्व संजोगं नाति संगेय वंधवे ।

जो न सज्जइ भोगेसु वयं वू माहणं ॥ २६ ॥

( उत्तराध्ययन अ० २५ )

ज० छांडी नें विचे. पू० पूर्व. सं० संयोग माता पितादिक ना. ना० ज्ञाति ते कुल. सं० संग ते सुसरादिक ना. व० वांछते आदिक नें. जो० जो. न० नहीं. सं० होवे भोगों नें विचे. तं० तेहनें व० म्हे. कहां छां माहण.

अथ ॥—पूर्व संयोग ज्ञाति संयोग तजी नें काम भोग नें विचे पणो न करे । तेहनें म्हे कहां माहण । इहां पिण अनेक गाथा में माहण साधु नें इज कह्यो । पिण भ्रावक नें न कह्यो । प्रथम तो सूर्यगडाङ्ग अ० १६ महामुनि नें माहण कह्यो । सूर्यगडाङ्ग श्रुतखंड २ अ० १ साधु रा १४ १ में माहण कह्यो । तथा उत्तराध्ययन अ० २५ अनेक गाथा में माहण साधु ने इज कह्यो । सूर्यगडाङ्ग श्रु० १ अ० २ उ० २ गा० १ माहण नों अर्थ साधु कियो । तथा तथा तिणहिज उद्देश्ये गा० ५ माहण मुनि नें कह्यो । तथा तैहज उद्देश्ये माहण यति नें कह्यो । इत्यादिक अनेक ठामे माहण साधु नें इज कह्यो । श्रमण ते युक्त उत्तर गुण साहित ते भणी कह्यो । माहण ते पोते हणवा थी निवृत्त्या पर नें कहे महणो महणो, मूल गुण युक्त ते भणी माहण कह्यो । एतले ण माहण साधु नें इज कह्यो । पिण नें किण ही सूत में माहण कह्यो नथी । जिम स्वतीर्थी साधु नें ण माहण कहा, तिम अन्य तीर्थी में श्रमण दिक. माहण ते ब्राह्मण ए अन्य तीर्थी ना पिण श्रमण माहण कहा । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १३ बोल सम्पूर्णा ।

अनुयोग में एहचो कह्यो छै ते लिखिये छै ।

से किं तं सिलोय मे ि गोए नामे ए माहणे  
स० तिही सेतं सिलोय नामे ।

( अनुयोग द्वार )

से० ते. कि० कौय. सि० श्लाघनीक नाम. इति प्रश्न । डसर श्लाघनीक नाम स०  
स० सर्व अतिथि ए सर्व साधु वाचो नाम. से० ते. सि० श्लाघनीक नाम जाणवा.

अथ इहां पिण भ्रमण माहण सर्व अतिथि नों नाम कह्यो । पिण भ्रा  
नों नाम भ्रमण माहण न कह्यो । जैन मत में जे गुरु तेहना नाम माहण  
। मत में जे जे गुरु भ्रमण शाक्यादिक माहण ण ते पिण गुरु  
वाजे । ते सादे सर्व अतिथि नें भ्रमण माहण । पिण भ्रावक नें माहण  
नथी । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १ ेल सम्पूर्णा ।

भाराङ्ग शु० २ अ० ४ उ० १ कह्यो ते लिखिवैं छै ।

से भिक्खूवा पुमं आमंते ए ति एवां अपडि सुण  
माणे एवं वदेज्जा गोतिवा आउसो तिवा आउसं तो ति  
सावगे ती वा उपासगेति वा धम्मिए ति वा धम्मि पिये ति  
वा एय प्पगारं भासं असावज्जं जाव अभूतो व घातिथं  
अभि कंख भासेज्जा ॥ ११ ॥

( आधारांग शु० २ अ० ४ उ० १ )

से० ते साधु साध्वी. पु० पुरुष भ०. आमन्त्रयां थकां वा. अ० आमन्त्रे तिवारे किश ही  
कारणे किश ही पुरुष न०. अ० क्दाचित् ते सांभले नहीं पाळे. प्रतिउत्तर नहीं दे । तिवारे ते  
प्रते. ए० इम कहे. अ० असुके ( जे नाम हुइं ते बोलावैं ) आ० आमुप्यमन् ! आ०

आ० आयुष्यवत् ! सा० हे श्रावको ! उ० अथवा हे साधु ना उपासको ! घ० हे धार्मिक ! घ० हे धर्म प्रिय ! ए० एहवा प्रकार नी भाषाने. आ० अ जा० यावत्. अ० दया पूर्ण. अ० बांछे. भा० बोलवा.

इहाँ एतले नामे करी श्रावक बोलावणो कह्यो । तिण नें नाम लेई इम बोलावो । हे श्रावक ! हे उपासक ! हे धार्मिक ! हे धर्मप्रिय ! एहवा नामा करी बोलावणो कह्यो । इहाँ श्रावक, उपासक, धार्मिक, धर्मप्रिय, ए नाम कह्या । पिण हे माहण ! इम माहण नाम श्रावक रो न कह्यो । ते भणी श्रावक नें माहण णि कहीजे । अने किण्हिक ठामे टीका में माहण ना अर्थ प्रथम तो साधु इज कियो, अने बीजो अर्थ अथवा श्रावक इम कियो छै पिण मूल अर्थ तो भ्रमण माहण नों साधु इज कियो । अने किहां एक माहण नों अर्थ श्रावक कियो ते पिण णवा रे स्थानक कियो । पिण "वदइ नमसइ सकारइ, समाणेइ, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं," एतला पाठ कह्या तिहां तथा आहार पाणी देवा नें ठामे माहण शब्द कह्यो । तिहां माहण शब्द नों अर्थ श्रावक नथी कह्यो । "जे उत्तर" (बीजो ) बतावी दान देवा नें ठामे, तथा वन्दना नमस्कार नें ठामे माहण नो अर्थ श्रावक थापे छै, ते तो एकान्त मिथ्वात्वी छै अने टीका में तो अनेक विरुद्ध

। जिम आचाराङ्ग श्रु० २ अ० १ उ० १० टीका में सचित्त लूण । कह्यो छै ।

तिणहिज उद्देश्ये रोग उपशमावा, "साधु नें कारणे" नों परिभोग करिवो कह्यो छै । निशीथ नी चूर्णी में "द्वितीय पदे" में अनेक मोटा अणाचार कुशीलादिक पिण सेवण कह्या छै । टीका में, चूर्णी में, "मैं, तो अनेक बातां विरुद्ध कही छै । ते किम् मानिये ।" तिम सूत्र में तो १८ थी निवृत्त्या ते मुनि नें माहण घणे ठामे कह्यो । ते सूत्र उत्थापी वन्दना नमस्कार नें ठामे तथा दान देवा नें ठामे माहण नों अर्थ श्रावक केई कहे ते किम् मानिये । श्रावक नें तो माहण किणही सूत्र पाठ में कह्यो नथी । ते भणी श्रावक नें माहण किम थापिये । श्रावक नें नमस्कार करण री भगवान् री आज्ञा नहीं छै । ते माटे अम्बड ना चेलां कियो ते पीता रो छांदो छै । पिण धर्म हेते नहीं । जे अन्य तीर्थी ना त्रैष में केवल ज्ञान उपजे ते पिण उपदेश देवे नहीं । जो साधु केवली जाणे तो पिण ते लिङ्ग तिण नें प्रत्यक्ष वन्दना नमस्कार करे नहीं । तेहनो मतो नों लिङ्ग छै ते माटे तो अम्बड तो अन्य लिङ्ग सहित

इजं छै । तिण नें कियां धर्म किम होवे । वली कोई कहे—छोटा साधु साधु रो विनय करे तिम छोटा नें पिण धावक नों विनय करणो । इम कहे तेहनों उत्तर— तो धावक रो पुत्र व्रत आदसा, अनें पछे ते पुत्र आगे पिताइं १२ व्रत , तयारे लेखे पुत्र रे पिता नें लागणो । जिम पहिलां दीक्षा पुत्र लीधी पछे पिता लीधी, तो ते पिता साधु, पुत्र साधु रे पगां लागे तेहनी ३३ टाले । तिम पुत्र आगे पि १२ व्रत धासा तो तेहनी पिण ३३ असातनां टालणी, न टाले तो ते पिता नें अविनीत विनय मूल धर्म रो उत्थापणहार तयारे लेखे कहीजे । इम पहिलां बहू व्रत आदसा, पछे कने साखू व्रत आदसा, तो ते बहू नों दि करणो । इमहिजं पहिलां गुमाश्ता व्रत धासा, पछे सेठ व्रत धासा, ते गुमाश्ता नें पासे सेठ संभूयो तो तेहनें धर्माचार्य जाणो घणो विनय करणो । जो विनय न करे तो तयारे लेखे तेहनें अविनीत कहीजे दि मूल धर्म रो उत्थापणहार कहीजे । पिण इम नहीं । विनय तो साधु नों इज करणो ॥ छै । अनें अ नों विनय करे ते तो पोता नों छांदो छै । पिण धर्म हेते नहीं । डाहां हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १४ बोल सम्पूर्णा ।

इति विनयाऽधिकारः ।



## अथ पुरायाऽधिकारः ।

केतला एक अजाण जीव—ते साधु बिना अनेरां ने' दीधां पुण्य बंधतो कहे ते पुण्य ने' आदरवा योग्य कहे. ते पुण्य ने' मोक्ष नों साधन कहे. ते ऊपर सूत्र नों नाम लेवी कहे, भगवती श० १ उ० ७ जे जीव गर्भ में मरी देवता थाय तिहां एहवूं पाठ कह्यो छै । “सेणं जीवे धम्म कामए पुण्य कामए सगं कामए मोक्ख कामए कंखिए पुण्ण कंखिए सगं कंखिए मोक्ख कंखिए” इहाँ धर्म, पुण्य, स्वर्ग, मोक्ष नों अभिलाषी ( बंछणहार ) श्री तार्थङ्करे कह्यो, ते माटे ए पुण्य आदरवा योग्य छै. तिण सूं भगवान् सरायो छै । जो पुण्य छांडवा योग्य हुवे तो सरावता नहीं ।

इम कहे तेहनो उत्तर—इहां पुण्य भगवान् सरायो नहीं । आदरवा योग्य कह्यो नहीं । ए तो जे गर्भ में मरी देवता थाय. तेहनें जेहवी बांछा हुन्ती ते बताई छै । पिण पुण्य नी बांछा करे तेहनें सरायो नहीं । तिणहिज उद्देश्ये इम कह्यो—जे गर्भ में मरी नरके जाय ते पर कटक ( दूसरा री सेना ) थो सं करे । तिहां एहवो पाठ छै ते लिखिये छै ।

सेणं जीवे अथ कामए. रज्ज कामए. भोग कामए. काम कामए. अथ कंखिए. रज्ज कंखिए. भोग कंखिए. काम कंखिए. । अथ पिवासिए. रज्ज पिवासिए. भोग पिवासिए. काम पिवासिए. तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदङ्गवसिए तत्तिव्वङ्गवसाणे. तदद्दो वउत्ते तदपिय करणे तवभावणा भाविए एयं सिणं अंतरंसिकालं करेज्जा नेरइएसु उववज्जइ ।

से० ते. जी० जीव केहवो छै. अर्थ नों छै काम जेहने. १० राज्य नों छै काम जेहने. भो० भोग नों छै काम जेहने. का० शब्द रूप नों काम छै जेहने. अ० अर्थ नो कांक्षा (वांछा) छै जेहने. २० राज्य नी कांक्षा छै जेहने. भो० भोग नी कांक्षा छै जेहने. का० शब्द रूप नी कांक्षा छै जेहने. अर्थ पिपासा. राज्य पिपासा. भोग पिपासा. काम पिपासा छै जेहने. त० तिहां चित्त नों लगावनहार. त० तिहां मन नों लगावनहार. त० लेम्यावन्त. त० - वन्त. ति० तोत्र आरम्भवन्त. अर्थयुक्त रह्यो थको करण. भा० भावता इन अन्तरे करे ते ने० नरक नें विषे उपने.

अथ इहां ते जीव नें अर्थ नों कामी. राज्य नों कामी. भोग नों कामी. नों कामी. अर्थ नों, राज्य नो, भोग नो, काम नो, कांक्षी (बंक्षणहार) श्री तीर्थङ्करे कह्यो । पिण अर्थ. भोग. राज्य. काम. नी वांछा करे ते आह्मा में नहीं । जिम अर्थ. भोग. राज्य. काम. नी । करे ते आह्मा में नहीं. जिम अर्थ. भोग. राज्य. काम. नी वांछा नें सरावे नहीं । तिम पुण्य नी वांछा नें ० नी वांछा नें पिण सरावे नथी । "पुण्यकामय. सग्नकामय" ए

पुण्य नी नें सराई कहे तो तिण रे लेखे स्वर्ग नों कामी वां क्यो ते पिण स्वर्ग नी वांछा सराई कहिणी । अने स्वर्ग की वांछा करणी तो सूत्र में २ वर्जो छै । दशवैकालिक अ० उ० ४ एहवा पाठ । छै ते लिखिये छै ।

चउव्विहा खलु समाहि भवइ. तंजहा—नोइह लोग-  
हुयाए तंव महिद्विजा नो परलोगहुयाए महिद्विजा नो  
किन्ति वरण सद सिलोगहुयाए महिद्विजा नि-  
जरहुयाए तव महिजा ।

( दशवै० अ० ६ उ० ४ )

च० चार नी. ख० निश्चय करी नें. आ० समाधि. अ० हुवे छै. त० ते कहे छै. नो० इह लोक नें अर्थ (चक्रवर्ती आदिक हुवा नें अर्थ) नहीं. त० तप करे. नो० नहीं. प० परलोक (इन्द्रादिक हुआ) नें अर्थ. त० तप करे. नो० नहीं. कि० कीर्त्ति. वर्ण. शब्द. श्लोक. (म्लाघा) नें अर्थ. त० तप करे. न० केवल. नि० निर्जरा नें अर्थ. त० तप करे.

परलोक नी करवी वर्जो, तो नें तो परलोक कहीजे, ते परलोक नी वांछा करी पिण न ति तो स्वर्ग नी वांछा करे तेहने



किम् सरावे । १ उपासक दशा अ० १ श्रावक नें संलेखना ना ५ अतीचार-  
जाणवा योग्य पिण आदरवा योग्य नहीं एहवूँ कह्यो तिहां परलोक नी वांछा करणी  
श्रावक नें पिण वजीं तो स्वर्ग तो परलोक छै तेहनी वांछा भगवान् किम् सरावे ।  
ए ५ अतीचार आदरवा योग्य नहीं एहवो कहाँ माटे परलोक नी वांछा पिण  
आदरवा योग्य नहीं । तो परलोक नी वांछा वि कहोजे । इन्द्रादिक पदवी नी  
वांछा ते परलोक नी वांछा, ते इन्द्रादिक पदवी तो पुण्य थी पावे छै । जे परलोक  
नी वांछा आदरवा योग्य नहीं, तो पुण्य पिण आदरवा योग्य किम् हुवे । इन्द्रादिक  
पदवी तो पुण्य थीज पावे छै, ते माटे इन्द्रादिक पद. अने पुण्य. विहूँ आदरवा  
योग्य नहीं । इणन्याय पुण्य नी वांछा ~ स्वर्ग नी वांछा भगवान् सरावे नहीं ।  
वली कह्यो एक निर्जेरा टोल और किणही नें अर्थे तपस्या न करणी तो पुण्य ने  
अर्थे तपस्या किम् करणी । पुण्य नें अर्थे तपस्या न करणी तो पुण्य नें आदरवा  
योग्य किम् कहिए । तथा उत्तराध्ययन अ० १० गा० १५ में कह्यो “एवं भव संसारे  
संसरइ सुभासुमेहिं कस्मेहिं” इहां पिण शुभ अशुभ ते पुण्य, पाप, कर्म करी  
संसरता ते पचता कहा । इम पुण्य, पाप, ना विपाक नें निपेध्या छै । ते पुण्य  
पाप नें आदरवा योग्य किम् कहिए । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १ बोल सम्पूर्णा ।

केतला एक अजाण कहे—जे चित्तजी ग्रहदत्त ने कह्यो । जे तू पुण्य न  
करसी तो मरणान्ते घणो पिछतावसी कहे ते एकान्त मृषावादी छै । तिहां तो  
एहवो पाठ कह्यो छै ते लिखिये छै ।

इह जीविए राय असासयम्मि,

धणियं तु पुणणाइ अकुव्वमाणे ।

सेसोयइ मच्चुमुहोवणीए,

धम्मं अकाऊण परम्मिलोए ॥२१॥

( उत्तराध्ययन अ० १३ गा० २१ )

इ० मनुष्य सम्यन्धी. जी० प्रायुषो. रा० हे राजन्. अ० अशाश्वत (अनित्य) तेहनें विषे. ध० अतिहि. पु० पुण्य नो हेतु शुभ अनुष्ठान ते. अ० अशकराण हारो जे जीव. से० ते. सो० सोचे पश्चात्ताप करे. म० मृत्यु ना मुखे पहुन्तो तिवारे. ध० धर्म. अ० अशकीधे अके सोचे. प० परलोक नें विषे.

अथ इहां तो कह्यो—हे राजन् ! अशाश्वत जीवितव्य ने विषे गाढा पुण्य ना हेतु शुभ अनुष्ठान शुभ करणी न करे ते मरणान्त ने विषे पश्चात्ताप करे । इहां पुण्य शब्दे पुण्य नो हेतु शुभ अनुष्ठान ने कह्यो । तिहां टीका में पिण इम कह्यो ते टीका लिखिये छै ।

“पुण्या इं अकुर्वमाणेति—पुण्यानि पुण्य हेतु भूतानि शुभानुष्ठानानि अकुर्वाणः”

इहां टीका में पिण कह्यो—पुण्य ते पुण्य ना हेतु शुभ अनुष्ठान अणकरे तो मरणान्ते पिछतावे । इहां कोई कहे पुण्य शब्द पुण्य नो हेतु. शुभ अनुष्ठानः एहवो पाठ में तो न कह्यो । ए तो अर्थ में कह्यो । अने में तो पुण्य करे नहीं ते पिछतावे इम कह्यो छै । इम कहे तेहनों उत्तर—पुण्य शब्दे पुण्य नो अर्थ में कह्यो ते अर्थ मिलतो छै । अने तू पुण्य कर एहवो तो पाठ में कह्यो नथी । अने इहां पुण्य शब्दे करी पुण्य ना हेतु शुभ अनुष्ठान नें ओलखायो छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २ लेख सम्पूर्ण ।

तथा उत्तराध्ययन अ० १८ गा० ३४ में पिण इम ले छै ते लिखिये छै ।

एयं पुण्यपयं सो धम्मो वसोहिंयं ।  
भरहो विभरहं वासं चि । इ पव्वण ॥३४॥

( उत्तराध्ययन उ० १८ )

ए० क्रियावादी प्रमुख नो अद्धना तेहनी पाप संगति वर्जवा रूप. पु० पुण्य नो हेतु ते पुण्य. प० पद. सो० सांभली नें. पुण्य पद केहवो छै. ते कहे छै. अ० स्वर्ग मोक्ष पामवा नों उपाय ते अर्थे. ध० जिनोक्त धर्म एहवूं करो. शो० शोभनीक छै जे पुण्य पद ते सांभली नें. म० चक्रवर्ती पिण. अ० क्षेत्र नों राजा. चि० छांडी नें. का० काम भोग. प० दीक्षा लीधो.

अथ इहां पुण्य ना हेतु शुभ अनुष्ठान नें पुण्य पद कह्यो तिहां टीका में पिण ॥ ते टीका लिखिये छै ।

“पुण्य हेतुत्वात्पुण्यं तत्पद्यते गम्यते ऽ थों ऽ नेन-इति पदं स्थानं पुण्य पदम्”

टीका में पुण्य नों हेतु ते पुण्य पद कह्यो । पुण्य नो हेतु किण नें कहिई । शुभ-योग शुभ अनुष्ठान करणी नें कहिई, तेहथी पुण्य बंधे. ते माटे शुभ अनुष्ठान ने पुण्य नो हेतु कहीजे । पुण्य ना हेतु नें पुण्य शब्दे करी ओलखायो छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ३ बोल सम्पूर्णा ।

तथा ध्य में पिण कह्यो.ते पाठ लिखिये छै ।

सर्वगइ 'दे काहिति एं ए अकय पुण्णा जेय  
सुणंति ध सोऊण यजे पमायंति ॥२॥

( प्रश्न व्याकरण ५ आश्र० )

स० गति. प० गमन नें. का० करस्ये. अ० अनन्तवार. अ० अकृत पुण्य ते जेण निरोचक पवित्र. न थी कौधू ते जीव संसार में रहस्ये: जे० जे कोई. व० वली. न सांभले. ध० धर्म नें. सो सांभली नें य० वली. जे प० प्रमाद करे. सम्बर,आदरे नहीं.

अथ पिण कह्यो—जे अकृत पुण्य जीव संसार भमे । अकृत पुण्य ते आश्रव निरोध रूप पवित्र अनुष्ठान न करे ते जीव संसार में रले । तेहनी टीका में पिण इमहिज कह्यो छै । ते टीका—

“अकृतपुण्या अविहिताश्रव निरोध लक्षण पवित्रानुष्ठाना”

पहनों अर्थ—अकृत ते न कीघो आश्रव निरोधक पवित्र अनुष्ठान, इहां पिण शुभ अनुष्ठान पुण्य ना हेतु नें पुण्य शब्दे करी ओलखायो छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ४ बोल सम्पूर्णा ।

उत्तराध्ययन अ० ३ गा० १३ में पड़वो कह्यो छै । ते लिखिये छै॥

विगिंच कम्मणोहेउं जसं संचिणु तिण  
पाढवं सरीरं हिच्चा उड्ढं इ दिसं ॥१॥

( अ० ३ गा० १३ )

वि० त्यागो नें. क० कर्म ना हेतु मिथ्यात्व . प्रसाद, कषाय, आदिक नें. ज० संयम, तप, विनय, ते यशनू हेतु नें. सं० संचय कर. खं० क्षमा करी, पा० पुण्यी री भाटी सरीखो औदारिक. स० शरीर नें हि० छोड़ी नें. उ० ऊर्ध्व ऊपर प० गमन करे छै. हि० परलोक नें विचे.

अथ इहां पिण कह्यो—यश नों संचय करे यश नों तथा विनय तेहनें यश शब्दे करी ओलखायो छै । तिम पुण्य ना हेतु ने पुण्य शब्दे करी ओलखायो छै । पाठ में तो यश नो हेतु कह्यो नहीं, यश नों संचय करणो कह्यो । अनें साधु नें तो कीर्त्ति श्लघा यश वांछणो तो ठाम २ सूत्र में चर्च्यो, तो यश नों संचय किम करे । पिण यश ना हेतु नें यश शब्दे करी ओलखायो छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ५ बोल सम्पूर्णा ।

तथा भ० श० ४१ उ० १ कह्यो—ते पाठ लिखिये छै ।

सेणं भंते ! जीवा किं आय जसेणं उवज्जंति आय  
अजसेणं उववज्जंति गोयमा ! णो आय जसेणं उववज्जंति ।  
आय अजसेणं उव वज्जंति ।

( भगवतो घ० ४१ उ० १ )

से० ते. भ० हे भगवन्त ! जी० जीव. किं स्पू. आ० आत्मा यये करी उपजे छै. आ०  
अथवा आत्म अयशे करी उपजे छै. गो० हे गोतम ! णो० नहीं आत्म यये करी ने उपजे छै.  
आ० आत्म अयशे करी उपजे छै.

अथ इहां पिण कह्यो—जे जीव में उपजे ते आत्म अयशे करीने  
उपजे । इहां आत्म यश ते यश नों हेतु संयम तेहने कह्यो । अने आत्म सम्बन्धी  
जे अयश नों हेतु ते असंयम ने आत्म अयश कह्यो । टीका में पिण यश नों हेतु  
संयम ते यश कह्यो । अने अयश नो हेतु संयम ते अयश कह्यो—

“यशो हेतुत्वाद्यशः संयमः—आत्मयशः”

इहां यश ना हेतु ने यशे करी ओलखायो छै । डाहा हुवे तो विचारि जोड़्यो ।

इति ६ बोल सम्पूर्णा ।

तथा उत्तराध्ययनं अ० ६ में कह्यो—ते पाठ लिखिये छै ।

आदाणं नरयं दिस्स, नाय एज्ज तणामवि  
दोगुच्छी अप्पणोपाए, दिन्नं भुंजेज्ज भोयणं ॥ना॥

( उत्तराध्ययन अ० ६ गा० ८ )

आ० अनादिक परिग्रह. न० नरक नों हेतु दि० देखा ने. ना० ग्रहण न करे. त० वृथ  
मात्र पिण. आ० आहार विना धर्म रूपियो भार निर्बोहिदा ए देह असमर्थ. हम देहो ने

दुगुन्धै निन्दे ते दुगुन्ध कश्चिदे. एहबोज साधु ते लुधावन्त भिन्नु थयूं तिवारे. अ० पा०  
पात्रा नें विषे. गि० गृहस्थीहं दीधूं अथनादिक भोजन करे.

कह्यो—धन धान्यादिक नें ना हेतु देखी नें तृण पिण  
आदरे नहीं। इहां पिण ना हेतु धन धान्यादिक नें मरक शब्दे करी ओल-  
खायो छै। तिम पुण्य ना हेतु शुभ अनुष्ठान नें पुण्य शब्दे करी ओल खायो छै।  
डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

## इति ७ बोल सम्पूर्णा ।

तथा उत्तराध्ययन अ० १ गा० ५ में तो—ते पाठ लिखिये छै।

ए कुंडगं चइत्ताणं वि भुंजइ सूयरे  
एवं सीलं चइत्ताणं दुस्सीले रमइ मिष्ट ॥५॥

( उत्तराध्ययन अ० १ गा० ५ )

क० कण (अन्न) नू कुंडो. च० छांडी नें. वि० विष्टा. सु० भोगवे. सू० सू. ए० एशी  
परे अविनीत. सी० मलो आचार नें च० छांडी नें. दु० भूँडा आचार नें विषे. र० प्रवर्त्ते.  
मि० मृग पशु सरीसृप ते अविनीत.

अथ इहां अविनीत नें मृग कह्यो—मृग जिसा मज्जाण नें मृग शब्दे करी  
ओलखायो छै। तिम पुण्य ना हेतु नें पुण्य शब्दे करी ओलखायो इत्यादिक  
एहवा पाठ अनेक ठामे छै। जिम यश नों हेतु संयम ते यश नें यश शब्दे  
करी ओलखायो। नों हेतु नें शब्दे करी ओलखायो।

ना हेतु धन धान्यादिक ते नरक शब्दे करी ओलखायो । मृग जिहा अजाण ने  
मृग शब्दे करी ओलखायो । तिम पुण्य नो हेतु शुमानु ने पुण्य शब्दे करी  
ओलखायो । झाहा हुवेतो विचारि जोइजो ।

इति ८ वो सम्पूर्णा ।

इति पुरायाधिकारः ।



## अथ आश्रवाऽधिकारः ।

केतला एक अजाण जीव आश्रव नें अजीव कहे छै । अनें रूपी कहे छै  
तेहनो उत्तर—ठाणाङ्ग ठा० ६ टीका में व नें जीव ना परिणाम छै ।  
ठाणाङ्ग ठा० ५ उ० १ आश्रव छै ते पाठ लिखिये छै ।

पंच आस्सव दारा प० तं० मिच्छतं. विरती.  
दो. कसायो. जोगो. ।

( ठाणाङ्ग ठा० ५ उ० १ समवायाङ्ग स० ५ )

प० पंच जीव रूप क्रिया तालाव नें बिषे कर्मरूप जल नूं आविवो कर्म बन्धन. दा०  
तेहनो वारणा नी परे वारणा ते उपाय कर्म आविवा नूं. प० परुष्या. तं० ते कहे छै. मि० मिथ्यात्व  
खोटा नें खरो जाणे. खरा नें खोटो जाणे. अ० अग्रती किण ही वस्तु ना पचलाय नहीं. प०  
प्रमाद ५ क० क्रोधादिक ४ योग मन वचन काया योग निरवद्य प्रवत्त.

अथ इहाँ ५ आश्रव कहा—“मिथ्यात्व” जे ऊंधी श्रद्धारूप “ ” ते  
अत्याग भावरूप “प्रमाद” ते प्रमादरूप “कपाय” ते भावे कपाय रूप “योग” ते  
भावे जीव ना व्यापार रूप, प ५ जीव ना परिणाम छै । जे  
मिथ्यात्व ऊंधी श्रद्धारूप ते मिथ्यात्व नें मिथ्या दृष्टि कही जे । अनें मिथ्या  
दृष्टि ने अरूपी कही छै ते पाठ लिखिये छै ।

कण्ह लेस्साणां भंते कइ णा पुच्छा. गोय !  
दव्व लेस्सं पडु पंच वण्णा जाव द्ढफासा पण्णात्ता व-



लेस्सं पटुच्च अवराणा एवं जाव सुक्क लेस् ॥१७॥ म्महिट्ठी  
३ चक्खुदंसणे ४ आभिणि बोहिय णाणे ५ जाव विभंगणाणे  
आहार सरणा जाव परिग्गहसरणा एयाणि अवराणाणि ।

( भगवती श० १२ उ० ५ )

क० कृष्ण लेस्या.ना. म० हे भगवन्त ! क० केतला वर्या. गो० हे गोतम ! द० द्रव्य  
लेस्या प्रति. प० आश्रो नें प० पांच वर्णा. जा० यावत्. आ० आठ स्पर्श पस्स्या. भा० भाव  
लेस्यावन्त ते अन्तरंग जीवनों परिणाम ते आश्रयी नें. अवर्ण अस्पर्श अमूर्त द्रव्य पया थीं  
ए० हम. जा० यावत्. लेस्या लगे जायावूं. स० सम्यग् दृष्टि. मिथ्या दृष्टि. सम्यङ्मिथ्या-  
दृष्टि च० चक्षु दर्शन अचक्षु दर्शन २ अवधि दर्शन. ३ केवल दर्शन. आ० मतिज्ञान. श्रुतिज्ञान.  
अवधिज्ञान. मन पर्यवज्ञान. केवल ज्ञान. मति अज्ञान. श्रुति अज्ञान. विभङ्ग अज्ञान. आ०  
आहार संज्ञा. भय संज्ञा. मैयुन संज्ञा. परिग्रह संज्ञा. ४ ए सर्व अवर्ण वर्णा रहित जायावा जीव  
ना परिणाम.

अथ इहां ६ भाव लेस्या. ३ दृष्टि. १२ उपयोग. ४ संज्ञा. ए २५ बोल  
भरूपी । तिहां ३ दृष्टि कही तिण में मिथ्यात्व दृष्टि पिण भरूपी कही । ते  
ऊंधी श्रद्धारूप उदय भाव मिथ्या दृष्टि नें मिथ्यात्व;आ कही जे । इण न्याय  
मिथ्यात्व आश्रव नें जीव कही जे, भरूपी कही जे । डाहा हुवे तो विचारि  
जोइजो ।

इति १ बोल सम्पूर्णा ।

वली ६ लेस्या नें भरूपी कही ५ आश्रव नें कृष्ण लेस्या ना  
लक्षण उत्तराध्ययन अ० ३४ में कहा—ते लिखिये छै ।

पंचा सवप्पवत्तो तिहिं अयुत्तो असु अविरज्जोय ।  
तिव्वारंभ परिणज्जो खुद्दोसाहस्सिज्जो नरो ॥२१॥

निद्धन्धस परिणामो निस्संसो अजिइंदिओ ।

एय जोग तो किण्ह लेस्सं परिणमे ॥२२॥

(उत्तराह अ० ३४ गा० २१-२२)

लेस्या ना लक्षण केहे छै. प० ५ आश्रव नों प० सेवशहार. ति० तीन मन वचन कायाइ करी. अ० अगुसो मोकलो, ६ काय नें विषे अग्रती घात नों होय. ति० तीव्र पणो. अ० आरम्भ नें. प० परिणामे करी सहित होइ. सु० सर्व जीव नें अहितकारी. सा० जीव घात करवा नें विषे साहसिक मनुष्य. ॥२१॥

ति० इह लोक परलोक ना दुःख नी शङ्का रहित. प० परिणाम छै जेहनों. नि० जीव हयता सुग रहित. अ० अयाजीता इन्द्रिय जेहने. ए० ए पूर्वे कक्षा ते. जो० योग मन वचन ना तेणो पाप व्यापारे करी. स० सहित थको. कि० कृष्ण लेस्या ना परिणामे करी. परिणामे. ते कृष्ण लेस्या ना पुत्रल रूप द्रव्य जेहने संयुक्ते करी जिम स्फटिक जेहवा द्रव्य नों संयुक्त हुइ तेहवे रूपे भजे.

अथ इहां ५ आश्रव नें कृष्ण लेस्या ना लक्षण —ते माटे जे कृष्ण लेस्या अरूपी तेहना लक्षण ५ आश्रव ते पिण अरूपी छै । वली “छसु अवि-रओ” कहितां ६ काय हणवा ना ते पिण कृष्ण लेस्या ना लक्षण ते भणी अत्रत आश्रव ते पिण अरूपी छै । ए ५ आश्रव भाव कृष्ण लेस्या ना लक्षण टीकाकार पिण छै ते अवचूरी लिखिये छै ।

“एतेन पञ्चाश्रव प्रवृत्तत्वादीनां भावकृष्ण लेस्यायाः सद्भावोपदर्शनां दासां लक्षणं मुक्तं योहि यत्सद्भाव एवस्यात् स तस्य लक्षणम्”

अथ इहां अवचूरी में कह्यो—पाँच प्रवृत्त ए आदि देह नें लेस्या ना लक्षण छै । भगवतीमें ६ लेस्या नें अरूपी कही अने इहां कृष्ण लेस्या ना लक्षण ५ ते आश्रव पिण अरूपी छै । लेस्या नी तो तेहना ण रूपी किम हुवे । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २ बोल सम्पूर्णा ।

तथा बली ठाणाङ्ग ठाणे २ उ० १ में यहवो पाठ कह्यो छै ते लिखिये छै ।

दो किरियाओ पन्नत्ता तं जहा जीव किरिया चेव  
अजीव किरिया चेव जीव किरिया दुविहा पणत्ता तं जहा  
सम्मत्त किरिया चेव मिच्छत्त किरिया चेव अजीव किरिया  
दुविहा पन्नत्ता तं जहा ईरियावहिया चेव संपराइया चेव ॥२॥

(टायाङ्ग ज० २ उ० १)

दो० वे क्रिया. प० कही. तं० ते कहे छै. जी० जीव क्रिया सांचो अने मूजे भद्वो.  
अ० अजीव क्रिया. कर्म पणे पुद्गल नों परिणामवो ते अजीव कहिपु. जी० जीव क्रिया ना २  
भेद. प० पणत्ता. तं० ते कहे छै. स० सम्यक्त्व क्रिया. मि० मिथ्यात्व क्रिया. अ० अजीव क्रिया.  
दु० वे प्रकार नी. प० कही. तं० ते कहे छै. ई० ईयां पयिक क्रिया ते योग निमित्त त्रिण गुण  
लगे. सं० कपाय छै तिहां उपनो ते साम्परायकी पुद्गल नों जीव नें कर्म पणें परिणामवो  
ते साम्परायकी क्रिया.

२ क्रिया जीव क्रिया, अजीव क्रिया, कही । जीव नों व्यापार  
ते जीव क्रिया, अने अजीव पुद्गल नों समुदाय कर्मपणे परिणामवो ते अजीव क्रिया.  
तिहां जीव क्रिया ना वे भेद कहा—सम्यक्त्व क्रिया, मिथ्यात्व क्रिया । सांचो भ्रदा  
रूप जीव नों व्यापार ते सम्यक्त्व क्रिया. ऊंधो भ्रदा रूप जीव नों व्यापार ते  
मिथ्यात्व क्रिया. । इहां पिण सम्यक्त्व अने मिथ्यात्व विहू नें जीव कहा । ए  
मिथ्यात्व क्रिया ते मिथ्यात्व आश्रव छै ते पिण जीव छै । अने सम्यक्त्व क्रिया  
भ्रदा रूप सम्वर ते पिण जीव छै । ए सम्यक्त्व अने मिथ्यात्व जीव क्रिया ना  
भेद कहा ते माटे ए सम्यक्त्व अने मिथ्यात्व जीव छै । अने इरियावहि. सम्प-  
राय, में जीव क्रिया कहीजे जो अजीव क्रिया नें अजीव क्रिया कहे तो जीव क्रिया  
नें जीव क्रिया कहिणी । जो अजीव नें अजीव क्रिया न कहे तो तिण रे लेखे जीव  
ते पिण जीव क्रिया न कहिणी । जीव क्रिया ना वे भेदां में सम्यक्त्व नें जीव कहे  
तो मिथ्यात्व नें पिण जीव कहिणो । अने मिथ्यात्व क्रिया नें जीव न कहे तो  
सम्यक्त्व क्रिया नें पिण तिण रे लेखे जीव न कहिणो । ए तो पांचरो न्याय छै ।

\* तो सम्यक्त्व, मिथ्यात्व, नें चौड़े जीव है ते माटे मिथ्यात्व जीव है । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ३ बोल सम्पूर्णा ।

मिथ्यात्वः किण नें कही जे ते मिथ्यात्व नों लक्षण ठाणाङ्ग  
ठा० १० में कह्यो है । ते लिखिये है ।

दस विहे मिच्छते प० तं० अधम्मं धम्म सन्ना धम्मं  
स उम्मंगे मग्गसन्ना मग्गे उम्मंग सन्ना जीवे-  
जीव सन्ना जीवसु अजीव सन् असाहुसु साहु सन्ना  
साहुसु असाहु सन्ना अमुत्तेसु मुत्त सन्ना मुत्तेसु त  
सन्ना ।

( ठाणाङ्ग ठा० १० )

द० दश प्रकारे मिथ्यात्व, प० पस्य्या, तं० ते कहे है, 'ने' विषे धर्म नी संज्ञा, अ० धर्म ने विषे 'नी' संज्ञा, ऊ० उन्मार्ग (खोटे मार्ग) ने विषे मार्ग (श्रेष्ठ मार्ग) नी संज्ञा, म० मार्ग ने विषे उन्मार्ग नी संज्ञा, अ० अजीव ने विषे जीव नी संज्ञा, जी० जीव ने विषे अजीव नी संज्ञा, अ० असाधु ने विषे साधु नी संज्ञा, सा० साधु ने विषे असाधु नी संज्ञा, मु० मुक्त ने विषे अमुक्त नी संज्ञा, अ० अमुक्त ने विषे मुक्त नी संज्ञा, ते मिथ्यात्व.

अथ इहां दश प्रकार मिथ्यात्व कह्यो—तिहां धर्म ने, अधर्म ने तो मिथ्यात्व विपरीत वृद्धि तेहनें मिथ्यात्व कह्यो । इम दसूइ बोल ऊंधा अद्धे ते ऊंधी श्रद्धारूप व्यापार जीवनों है, ते माटे ऊंधो अद्धे ते मिथ्यात्व नों लक्षण कह्यो । ते मिथ्यात्व आश्रव जीव है । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ४ बोल सम्पूर्णा ।

यथा भगवती श० १७ उ० २ कह्यो ते पाठ लिखिये छै ।

एवं खलु प्राणातिवाते जाव मिच्छा दंसण सल्ले वट्ट-  
माणे सच्चेव जीवे, च्चेव जीवाया.

( भगवती श० १७ उ० २ )

ए० एम ख० निश्चय. पा० प्राणातिपात ने विपे. जा० यावत्, मिथ्या दर्शन शल्य ने विपे. घ० वर्त्ततां धकां. स० तेहज. वे० निश्चय. जी० जीव. स० ते हीज जीवात्मा.

अथ इहां जे प्राणातिपातादिक १८ पाप में ते हीज जीव अने ते हीज जीवात्मा कही जे तो १८ पाप में वर्त्ते ते हीज आश्रव छै । मिथ्या दर्शन में वर्त्ते ते मिथ्यात्व आश्रव छै । जे अनेरा पाप में वर्त्ते ते अनेरा आश्रव छै । जे प्राणातिपात. मृगावाद. अदत्तादान. मैथुन. परिश्रव. में वर्त्ते ते अशुभ योग आश्रव छै । ए पिण जीव छै । क्रोध. मान. माया. लोभ. में वर्त्ते ते कपाय आश्रव छै. ते पिण जीव छै । इहां भाव कपाय. भाव योग. ते तो जीव छै । द्रव्य कपाय. द्रव्य योग. ते तो पुद्गल छै । कपाय ने अने योग ने आश्रव कह्यो । ते भाव कपाय योग आश्री ।, पिण द्रव्य कपाय द्रव्य योग ने आश्रव न कही जे । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ५ बोल सम्पूर्णा ।

तिवारे कोई कहै—कपाय योग ने अरुपी तथा जीव किहां कह्यो छै, तथा भावे योग किहां कह्यो छै । इम कहे तेहनों उत्तर—जे ठाणाङ्ग ठा० १० में जीव परिणामी रा तथा जीव परिणामी रा दश दश भेद कह्यो छै ते पाठ लिखिये छै ।

दस विहे जीव परिणामे प० तं० गइ परिणामे इंदिय परिणामे. साय परिणामे. लेस्सा परिणामे. जोग परिणामे.

उवओग परिणामे. नाण परिणामे. दंसण परिणामे. चरित्त परिणामे वेद परिणामे ॥१६॥

दस विहे अजीव परिणामे प० तं० बंधण परिणामे. गइ परिणामे. संठाण परिणामे. भेद परिणामे. वन्न परिणामे. गंधफास परिणामे. य हुय परिणामे. सद परिणामे. ॥१७॥

(आणाङ्ग ठा० १२)

द० दश प्रकारे जीव ना परिणाम परूण्या छै. ते कहे छै. ग० गति परिणाम ते ४ गति. इ० इन्द्रिय परिणाम ते ५ इन्द्रिय. क० कषाय परिणाम ते ४ कषाय. ले० लेम्बा परिणाम ते ६ लेम्बा. जो० योग परिणाम ते योग ३ उ० उपयोग परिणाम ते उपयोग २ ना० ज्ञान परिणाम ते ५. द० दर्शन ते ३. चरित्त परिणाम ते ५ वे० वेद परिणाम ते ३ वेद ॥१६॥

द० दश प्रकारे अ० अजीव परिणाम परूण्या. तं० ते कहे छै. वं० बंध परिणाम १. ग० गति परिणाम २. सं० संस्थान परिणाम ३. भे० भेद परिणाम ४ व० वर्ण परिणाम ५ र० रस परिणाम ६ गन्ध परिणाम ७ स्पर्श परिणाम. अ० अगुरु लघु परिणाम ६ शब्द परिणाम १०.

जीव परिणामी रा १० भेद कहा—तिहां गति परिणामी रा ४ भेद नरक गति. तिर्यञ्च गति. मनुष्य गति. देव गति. प भाव गति जीव परिणामी छै । अने नाम गति तथा कर्म नी ६३ प्रकृति में पिण गति कही ते द्रव्य गति छै । ते जीव परिणामी में नहीं । ( १ ) इन्द्रिय परिणामी ते पिण भाव इन्द्रिय जीव परिणामी छै. द्रव्य इन्द्रिय जीव नहीं ( २ ) परिणामी ते पिण भावे जीव परिणामी छै । द्रव्य कषाय मोहणी री प्रकृति ते तो अजीव छै । ( ३ ) लेश्या परिणामी ते पिण भाव लेश्या ते जीव रा परिणाम ते माटे जीव परिणामी छै । द्रव्य लेश्या ते तो अष्टस्पर्शो पुद्गल छै । ( ४ ) योग परिणामी ते योग जीव ना परिणाम ते माटे जीव परिणामी छै । अने द्रव्य योग पुद्गल छै. जीव परिणामी नहीं ( ५ ) उपयोग ६ ज्ञान ७ दर्शन ८ चरित्त ६ प तो प्रत्यक्ष जीव ना परिणाम ते भणी जीव परिणामी छै । वेद परिणामी ते पिण भाव वेद

ते जीव ना परिणाम ते माटे जीव परिणामी छै । द्रव्य वेद मोहनी री प्रकृति ते तो पुद्गल छै । ते जीव परिणामी में नहीं ॥१०॥ इहां तो गति परिणामी ते भावे गति नें जीव कही, भाव इन्द्रिय, भाव कषाय, भाव योग, भाव वेद, ए सर्व जीव ना परिणाम छै । ए कषाय परिणामी ते कषाय आश्रव छै । योग परिणामी ते योग आश्रव छै । ते माटे कषाय आश्रव, योग आश्रव, ते जीव छै । इहां कोई कहे

कषाय भाव योग तो इहां नहीं, समचे कषाय परिणामी, योग परिणामी, छै । इस कहे तेहनों उत्तर—इहां तो लेश्या पिण समचे कही छै । ए द्रव्य लेश्या छै के भाव लेश्या छै । द्रव्य लेश्या तो पुद्गल अष्टस्पर्शी भगवती श० १२ उ० ५ कही छै । ते तो जीव परिणामी में आवे नहीं । ते भणी ए भाव लेश्या छै । वली गति इन्द्रिय वेद परिणामी ए पिण समचे कहा—पिण द्रव्य गति, द्रव्य इन्द्रिय, द्रव्य वेद, तो पुद्गल छै, ते पिण जीव परिणामी नहीं । तिम कषाय परिणामी, योग परिणामी, कहा ते भाव कषाय, अने भाव योग छै । अने कषाय परिणामी योग परिणामी, नें अजीव कहे तो तिणरे लेखे उपयोग परिणामी, ज्ञान परिणामी, दर्शन परिणामी, चारित्र परिणामी, पिण अजीव कहिणा । अने योग, उपयोग, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, परिणामी नें जीव कहे तो कषाय परिणामी, योग परिणामी, नें पिण जीव कहिणा । श्री तीर्थङ्करे तो ए दसूँ जीव परिणामी कहा । ते माटे ए दसूँ जीव छै । तथा वली अजीव परिणामी रा दश भेदा में वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, परिणामी कहा, त्याने अजीव कहे तो कषाय परिणामी, योग परिणामी, नें जीव परिणामी कहा, त्याने जीव कहिणा । अने जीव परिणामी नें जीव न कहे तो तिणरे लेखे अजीव परिणामी नें अजीव न कहिणा । ए तो प्रत्यक्ष जीव परिणामी रा १० भेद जीव छै । इण न्याय कषाय आश्रव, योग आश्रव नें जीव कही जे । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

**इति ६ बोल सम्पूर्ण ।**

तथा भगवती श० २२ उ० १० आठ आत्मा कही । तिहां पिण कषाय आत्मा, योग आत्मा, कही छै । ते लिखिये छै ।

इ विहा गं भंते पराणत्ता, गोयमा । अ विहा  
ता पराणत्ता, तं जहा—दविया . कसायाता, जोगाया,  
उवओगाया. णाणात्ता. दंसाया. चरित्ताया. वीरि-  
याता. ॥१॥

( भगवती श० १२ उ० १० )

क० केतले प्रकारे. भ० हे भगवन्त ! आ० आत्मा. प० परुष्या. गो० हे गौतम । अ०  
आठ प्रकारे आत्मा परुष्या. तं० ते कहे छै. दं० द्रव्यात्मा. क० कषायात्मा. जो० योगात्मा.  
उ० उपयोगात्मा. णा० ज्ञानात्मा. दं० दर्शनात्मा. च० चरित्रात्मा. वी० वीर्यात्मा.

अथ अटे आत्मा में य आत्मा अने योग आत्मा कही छै । ते  
कषाय आत्मा कषाय आश्रव छै । योग आत्मा योग व छै । प इ आत्मा  
जीव छै । कोई कषाय आत्मा नें अजीव कहे तो तिण रे लेखे . दर्शन आत्मा नें  
पिण अजीव कहिणी । अने उपयोग आत्मा, ज्ञान आत्मा, दर्शन आत्मा, में जीव  
कहे तो कषाय आत्मा, योग आत्मा नें पिण जीव कहिणी । प तो इ आत्मा  
जीव छै । ते माटे . अने, योग आत्मा कही । ते भाव य, भावयोग, नें  
कहा छै । ते भाव कषाय तो आश्रव छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ७ बोल सम्पूर्णा ।

तथा अनुयोग द्वार सूत्र में अने योग-ने जीव । छै । ते  
लिखिये छै ।

से किं तं उदइए. उदइये दुविहे पराणत्ते, तं जहा  
उदइएय. उदयनिष्फन्नेय से किं तं उदइए. उदइए अट्टरहं  
क पगडीणां उदइएणां से तं उदइए । से किं तं उदय



निष्फन्ने उदय निष्फण्णे दुविहे पण्णत्ते तंजहा—जीवोदय निष्फन्नेय. अजीवोदय निष्फन्नेय । से किं तं जीवोदय निष्फन्नेय. जीवोदय निष्फन्ने अणोग विहे पण्णत्ते तंजहा—नेरइए तिरिक्ख जोणिए. गुस्से, देवे, पुढवी काइए जाव तस काइए कोह कसाइए जाव लोह कसाइए इत्थीवेदए पुरिस वेदए गणुंसक वेदए. कणहलेस्सेए जाव सुक्कलेस्से मिच्छादिट्ठी अविरए. असन्नी. अणणाणी. आहारी. छउ-मत्थे. संजोगी. संसारत्थे. असिद्धे. अकेवली से तं जीवोदय निष्फन्ने । से किं तं अजीवोदय निष्फन्ने. अजीवोदय निष्फन्ने अणोगविहे पण्णत्ते. तंजहा—ओरालिय सरीरे ओरालिय सरीरप्पयोग परिणामियं वा दब्बं, एवं वेउच्चियं वा सरीरं. वेउच्चिय सरीरप्पओग परिणामियं वा दब्बं एवं आहारग सरीरं तेअग सरीरं कम्म सरीरं च भाणियव्वं, पओग परिणामिए वणणे. गंधे. रसे. फासे. से तं अजीवोदय निष्फन्ने । से तं उदय निष्फन्ने से तं उदइए नामे ॥ ११२ ॥

( अनुयोग द्वार )

से० हिचे. किं ह्युं. तं० ते. उ० उदयिक नाम. उ० उदयिक नाम. दु० वे प्रकारे. प० परुण्या. तं० ते कहे छै. उ० उदय १ उदय करी नीपनो ते उदय निष्पन्ने. से० ते कोण उदय. तं० आ० आठ कर्म नी प्रकृति नी. उ० उदय. से० ते. उ० उदय कहिए. से० ते. किं कोण. उ० उदय निष्पन्न. उ० उदय निष्पन्न वे प्रकारे परुण्यो. तं० ते कहे छै. जी० जीवोदय निष्पन्न. अ० अनें अजीवोदय निष्पन्न. से० ते किं कोण. जी० जीवोदय निष्पन्न. जीवोदय निष्पन्न ते. अ० अनेक प्रकारे परुण्या. तं० ते कहे छै. ये० नारकी पणु. ति० तिर्यंच पणु. दे० देवता पणु. पु० पृथिवी काय पणु. जा० यावत्. त० तस काय पणु. को० कोधादिकं ४ कपाय. क० कृण्या-

दिक ६ लेख्या. इ० स्त्री वेद. पु० पुरुष वेद. श० नपुंसक वेद. मि० मिथ्यादृष्टि. अ० आश्रवतो. अ० आसंज्ञी. अ० अज्ञानी. आ० आहारिक. सं० सांसारिक पण. छ० . अ० असिद्धपण. अ० अकेवली. सं० संयोगी. से० एतले जीवोदयनिष्पन्न . से. ते कौण अजीवोदय निष्पन्न. अ० अजीवोदय निष्पन्न ते. अ० अनेक प्रकारे . तं० ते कहे छै. उ० औदारिक शरीर. उ० उ० औदारिक शरीर ने. प० प्रयोगे परिणामू जे द्रव्य बर्णादिक. इम वैक्रिय शरीर वे प्रकारे. आहारिक शरीर वे प्रकारे. ते० शरीर वे प्रकारे. कार्मण्य शरीर वे प्रकारे व० धर्मा गं० गंध. रस. स्पर्श. से० एतले अजीवोदय निष्पन्न. से० ते उदय निष्पन्न. से० ते. उदयिक नाम.

अथ इहां उदय रा २ भेद — उदय. अने उदय निष्पन्न. उदय ते ८ कर्म नी प्रकृति नो उदय; अने उदय निष्पन्न रा २ भेद. जीव उदय निष्पन्न. अने अजीवोदय निष्पन्न । तिहां जीव उदय निष्पन्न रा ३३ बोल । अजीव उदय निष्पन्न रा ३० बोल । तिहां जीव उदय निष्पन्न रा ३३ बोल ते जीव छै । तिण में ६ लेख्या कही छै । ते भावे लेख्या छै । च्यार कषाय कक्षा ते कषाय आश्रव छै, ए भाव कषाय छै । वली मिथ्यादृष्टि कह्यो ते पिण मिथ्यात्व आश्रव छै । अव्रती कह्यो ते अव्रत आश्रव छै । संयोगी कह्यो ते योग आश्रव छै ए तेती-सुंइ बोलां ने जीव उदय निष्पन्न । ते माटे तेतीसुंइ जीव छै । अने जे जीव उदय निष्पन्न रा ३३ भेदा ने जीव न कहे तो तिण रे लेखे अजीव उदय निष्पन्न रा ३० भेदां ने अजीव न कहिणा । इहां तो चौड़े ४ कषाय. मि दृष्टि, योग, यां सर्व ने जीव कक्षा छै ते माटे आश्रव छै । इण न्याय आश्रव जीव छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ८

भगवती शं० १२ उ० ५ उ० . कर्म. . वीर्य. पुरुषा परा-  
ने अरूपी छै । ते लिखिये छै ।

अह भंते ! उद्वाणे, . वले. विरिए. पुरिसकार  
पर . ए. सेणं कति वरणे तं चव अफासे एत्ते ।

( भगवती शं० १२ उ० ५ )

अ० अथ. भ० हे भगवन्त ! उ० उत्थान. क० कर्म. व० वल. वि० वीर्य. पु० पुरुषाकार पराक्रम. ए माहे केतला वर्ण. तं० ते. निश्चय. जा० यावत्. अ० वर्ण गन्ध. रस. स्पर्श. तेणे रहित.

अथ इहां. उत्थान. कर्म, वल. वीर्य पुरुषाकार पराक्रम. ने' अरूपी कहा है। अने' उत्थान. कर्म, वल, वीर्य, पुरुषाकार पराक्रम. फोडवे तेहिज भाव योग है। अने' भाव-योग ने' आश्रव कही जे। ते माटे ए योग आश्रव-अरूपी है। डाहा हुवे तो विचारि जोड्जो।

## इति ६ बोल सम्पूर्ण ।

तथा केतला एक कहे—भाव कपाय किहां कह्यो है। तेहनों उत्तर—अनुयोग द्वार में १० नाम कहा है। तिहां संयोग नाम ४ प्रकारे कहा. ते लिखिये है।

किं ते संजोगेणं संजोगेणं चउव्विहे पणत्ते,  
तं जहा---दव्व संजोगे, खेत्त संजोगे, का संजोगे, भाव  
संजोगे, से किं तं दव्व संजोगे, दव्व संजोगे ति विहे पणत्ते,  
तं जहा--- चित्ते अचित्ते, मीसए । से किं तं सचित्ते,  
सचित्ते गोमिहे गोहिं पसूहिण हिंसीए, उरणीहि उरणिण  
उट्ठीहिं उट्ठिवाले सेतं सचित्तं । से किंतं अचित्ते, अचित्ते  
छत्तेण छत्ती, दंडेण दंडी, पडेणं पडी, घडेणं घडी, सेतं  
अचित्ते । से किं तं मीसए, मीसए हलेणं हालीए गडेणं  
सागडिण, रहेण रहिण, वाए नावीए, से तं दव्व संजोगे  
॥ १२६ ॥ से किं तं खेत्त संजोगे, खेत्त संजोगे, भरहेरवए,

हेमवए, हिरणवए, हरिवासे, रम्मगवासए, देवकुरुए, उत्तर  
 रुए, पुवविदेहए अवर विदेहए अहवा मागहए, मालवए,  
 गोर ए, मरहट्टए, कणए, कोसलए, सेतं खेत्तसंजोगे  
 ॥ १३० ॥ से किं तं काल संजोगे, काल संजोगे सुसमा-  
 सुसमए, समए, सुसमदुसमए, दुसमसुसमए, दुसमए,  
 दुसमदुसमए, अहवा पावसए, वासारत्तए, सारदए, हेमंतए,  
 वसंतए, गिम्हाए, सेतं ल संजोगे ॥ १३१ ॥ किं तं  
 भाव संजोगे, भाव संजोगे दुविहे णत्ते, तंजहा---पसत्थेय,  
 अपसत्थेय, से किंतं पसत्थे पसत्थे णाणेणं णाणी, दंसणे  
 दंसणी, चरित्तेणं चरिच्ची, तं पसत्थे । से किं तं  
 सत्थे, सत्थे कोहेण कोही, माणेण, माणी, मायाए,  
 मायी लोभेणं लोभी सेतं पसत्थे, से तं भाव संजोगे, सेतं  
 संजोगेणं ॥ १३३ ॥

( अनुयोग द्वार )

से० ते. किं कौण. सं० संयोगी नाम. सं० संयोग ४ प्रकारे परुण्वा. तं० ते कहे छै.  
 द० द्रव्य संयोग. खे० क्षेत्र संयोग. का० काल संयोग. भा० भाव संयोग. से० ते. किं कौण.  
 द० द्रव्य संयोग. ते कहे छै. द० द्रव्य संयोग. ति० तीन प्रकार रा. प० परुण्वा. तं० ते कहे छै.  
 स० सचित्त. अ० अ० अचित्त. मिश्र. से० ते. किं कौण सचित्त. ते कहे छै. गो० जेणें कने गायं  
 छै. तेणें गोमान् कहे छै. प० पशु करी पशुवन्त. महिपो करी महिषीवन्त. उ० मेपादि करी  
 मेपादिवन्त. उ० उष्ट्रे करी उष्ट्रवन्त. ते सचित्त जाणवा. से० ते. किं कौण. अचित्त ते कहे  
 छै. छत्रे करी. छत्री. दं० दंढे करी. दंडी. प० वस्त्रे करी वस्त्री. घ० घटे करी. घटी से० ते. अ-  
 चित्त जाणवा. से० ते. किं कौण मिश्र. ते कहे छै. मिश्र. हस्ते करी. हाती. श० शकटे करी शा-  
 कटी. र० रथे करी रथी. ना० नावा करी नाविक. से० ते. द्रव्य संयोग. ॥ १२६ ॥ से० ते.  
 किं कौण क्षेत्र संयोग. ते कहे छै. क्षेत्र संयोग. म० भरत जोत्रे रहे ते भारती. एणोपरे. एरवती  
 हेमवयी, एरणवयी, हरिवासी. रम्मकूवासी. देव कुरुक, उत्तर कुरुक. पूर्व विदेही. मागधी. मा-

सत्री. सौराष्ट्री. महाराष्ट्री. कोकणी. कौशली. से० ते. क्षेत्र संयोग कहा. ॥ १३० ॥ से० ते. कि० कौश. का० संयोग. छपमाछपमी. छपमी. छपमदुपमी. दुपमाछसमी. दुपमी. दुपम दुपमी. अ० अथवा प्रावृट् षट् नें विषे जन्म थयो तेहनों तेहनें. पाठसी. इम. बर्पाती. शरदी. हेमन्ती. वसन्ती. ग्रीष्मी. से० ते. का० काल संयोग कहा. ॥ १३० ॥ से० ते. कि० कौन भाव संयोग. निष्पन्न भाव संयोगिक. ते. दु० वे प्रकारे. प० परूप्या. तं० ते कहे छै. प० गुण नें संयोगे नाम. अ० अप्रयस्त गुण नें संयोग नाम. से० ते. कि० कौश. प० प्रयस्त भाव नें संयोग नाम ते ना० ज्ञान छै जेहनें तेहनें ज्ञानी. द० दर्शने करी दर्शनी. च० चरित्रे करी चरित्री. से० ते. कि० कौश. अप्रयस्त भाव संयोग. ते क्रोधे करी क्रोधी. माने करी मानी. मायाइ करी मायी. लोभे करी लोभी. से० ते एतले अप्रयस्त भाव संयोग कह्यो. से० एतले भाव संयोग कह्यो. से० ते. संयोग रा नाम कहा ॥ १३२ ॥

इहां चार प्रकार ना संयोगिक नाम कहा—तिहां द्रव्य संयोग ते नें संयोगे छत्री, इत्यादिक, क्षेत्र संयोग, ते मगध देश ना ते मगध इत्यादिक क्षेत्र संयोग, काल संयोग ते आरा नों जन्मे ते सुपमासुपमी कहिये । भाव संयोग जे ज्ञानादिक ना भला भाव नें संयोगे तथा क्रोधादिक माला भाव नें संयोग नाम ते भाव संयोग कहा । तिहां भाव क्रोधादिक नें संयोगे क्रोधी. मानी. मायी. लोभी. कह्यो, ते माटे ए ज्ञानादिक नें भाव कहा ते जीव छै । तिम भाव क्रोधादिक पिण जीव छै । एतला भाव क्रोधादिक ४ कहा, ते जीव रा भाव छै ते त्रय आश्रव छै । ते माटे कपाय आश्रव ने जीव कहीजे । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १० बोल सम्पूर्णा ।

तथा वली अनुयोग द्वार में भाव लाभ कहा, ते लिखिये छै ।

से किं तं भावाए दुविहे पणत्ते, तं जहा आगम  
ओय. नो आगगओय. से किं तं आगमतो भावाए आगम-  
नो भावाए जाणए, उवऊत्ते. से तो भावाए । से

किं तं नो आगमतो भावाए. नो आगमतो भावाए दुविहे  
पराणत्ते, तं जहा पसत्थे. अप्पसत्थे से किं तं पसत्थे. पसत्थे  
तिविहे पराणत्ते. तं जहा पाणाए. दंसणाए. चरित्ताए. से तं  
पसत्थे से किं तं अप्पसत्थे, अप्पसत्थे चउविहे पराणत्ते, तं  
जहा कोहाए माणाए. मायाए. लोभाए. से तं अप्पसत्थे ।  
से तं नो आगमतो भावाए. से तं भावाए. से ते आए ॥१४॥

(अनुयोग द्वार)

से० ते. किं कौण. भा० भाव लाभ. ते कहे छै. भा० भाव लाभ. दु० वे प्रकार नों.  
प० परुणो. तं० ते कहे छै। आ० आगम सू. अने० नो० नो आगम सू. ते. किं कौण. आ०  
सू० भाव लाभ. ते कहे छै. आ० आगम सू० भाव लाभ. जे. जा० जोणी ने. उपयोग  
सहित सूत्र पढ़ै. से० ते. आ० आगम सू० भाव लाभ. से० ते. किं कौण. नो० नो आगमसे  
भाव लाभ. ते कहे छै. नो० नो आगम सू० भाव लाभ. दु० वे प्रकार नों छै प० प्रशस्त नों लाभ  
अप्रशस्त नो लाभ. से० ते. कौण. प० प्रशस्त वस्तु नों लाभ. ते कहे छै. ज्ञान नों लाभ. दर्शन  
नों लाभ. च० चारित्रि नों लाभ. से० ते. एतले प्रशस्त लाभ कछो. से० ते. कौण. अप्रशस्त वस्तु  
नों लाभ. क्रो० क्रोध नों लाभ. मा० मान नों लाभ. मा० माया नों लाभ. लो० लोभ नों लाभ.  
से० ते. एतले अप्रशस्त वस्तु नों लाभ कछो। से० ते. भाव लाभ. से० ते. लाभ.

अथ इहां भाव लाभ रा २ भेद कछा। प्रशस्त भाव नों लाभ ते ज्ञान.  
दर्शन. चारित्रि, नों अने अप्रशस्त माठा भाव नों लाभ. क्रोध. मान. माया. लोभ.  
नों लाभ. इहां क्रोधादिक नें भाव लाभ कछा छै। ते माटे ए भाव क्रोधादिक नें  
भाव कपाय कहीजे, ते भाव कपाय ने कपाय आश्रव कहीजे। तथा अनुयोग द्वार  
में इम कछो—“सावज्ज जोग विरुद्ध” ते सावद्य योग थी निवर्त्ते ते सामायक।  
इहां योगां नें सावद्य कछा। अने अजीव नें तो सावद्य पिणः न कहीजे नि य  
पिण न कहीजे। सावद्य. निरवद्य तो जीव नें इम कहीजे। इहां योगां नें सावद्य  
। ते माटे ए भाव योग जीव छै। अने योग आश्रव छै। इण न्याय योग आश्रव  
नों जीव कहीजे। डाहा दुवे तो विचारि जोइजो।

इति ११ बोलं सम्पूर्णा ।

तथा उवाई में पिण "पडिसंलिणया" तप कह्यो—तिहां प्हवा छै । ते लिखिये छै ।

से किं तं मण जोग पडिसंलिणया, मण ोग पडि-  
संलि णया. अकुसल ण निरोधोवा. कुसल मण उदरिणं वा  
से तं ण जोग पडिसंलिणया ।

( उवाई )

से० ते. किं कौण. म० मन योग मन नो व्यापार तेहनों अतिशय स्थू. सं० संलीनता. संवरिवो. अ० अकुशल मन तेहनों. नि० निरोध. रुंधिवो. कु० कुशल भलो जे मन तेहनी उदो-  
रणा प्रवर्त्ताविवो. से० ते मन जोग पडिसंलिणया.

अथ इहां अकुशल मन ते माठा मन ने रुंधवो कह्यो । कुशल प्रव-  
र्त्तावणो कह्यो । इम वचन पिण कह्यो । अकु. रुंधवो कह्यो । ते अजीव  
ने किम रुंधे. पिण ए तो जीव छै । अकुशल मन ते भावे मन रो योग छै । तेहनें  
रुंधवो कह्यो । कुशल मन ते पिण भलो भाव योग विवो ।  
अजीव नों कुशल अकुशल पणो किम हुवे । ए कुशल योग नों उदीरवो ते भाव  
योग छै. ते जीव छै । ए योग आश्रव छै । आश्रव जीव ना परिणाम छै । ते घणे  
ठामे कहा छै । ते संक्षेप थी कहे छै । ठाणाङ्ग ठा० २ उ० १ जीव क्रिया ना २  
भेद कहा । सम्भवत्व क्रिया. मिथ्यात्व क्रिया. कही । मिथ्यात्व क्रिया ते मिथ्यात्व  
आश्रव छै । तथा भगवती श० १२ उ० ५ मिथ्यादृष्टि अने ६ भाव लेश्या ने शी  
कही । तथा भगवती श० १७ उ० २ अठारह पाप में चर्त्ते तेहनें जीवात्मा कही ।  
तथा भगवती श० १२ उ० १० कषाय योगां ने आत्मा कही । तथा अनुयोग द्वार में  
६ लेश्या ४ कषाय. मिथ्यादृष्टि, अत्रती. सयोगी. ने जीव उदय निष्पन्न ।  
ठाणाङ्ग ठा० १० कषायी. मिथ्यादृष्टि, अत्रती. सजोगी. ने जीव उदय निष्पन्न  
। तथा ठाणाङ्ग ठा० १० आय अने योग ने जीव परिणामी कहा । तथा  
भगवती श० १२ उ० ५ उत्थान, कर्म, चल, वीर्य, पुरुषाकार पराक्रम, ने शी  
। तथा अनुयोग द्वार तथा आवश्यक में योगां ने सावध कहा । उवाई

में कु. 'वणो अकुशल मन रुंधवो । तथा अनुयोग  
द्वारे क्रोधादिक-ने' भाव कह्यो । तथा ठाणाङ्ग ठा० ६ टीका में नवपदार्थ में ५  
जीव ४ अजीव इम न्याय कह्यो । तथा पञ्चवणा पद १५ अर्थ में द्रव्य मन, भाव  
, '। तिहां नो इन्द्रिय नों अर्यावग्रह ते भाव मन ने' । तथा ठाणाङ्ग  
ठा० १ टीका में द्रव्ययोग । भगवती श० १३ उ० १ द्रव्य, मन, भाव  
कह्या । उत्तरा अ० ३४ गा० २१ आश्रव ने' कृष्ण लेस्या ना  
लक्षण । इत्यादिक अनेक ठामे आश्रव ने' जीव कह्यो, अरूपी कह्यो । डाहा  
हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति १२ ाल सम्पूर्ण ।

तिवारे कोई कहे—जो आश्रव जीव है तो उत्तराध्ययन अ० १८-में  
।—“ इ ऋक्विया सवे” ए गर्धभाली मुनि ध्यान ध्यावे करी खपायो है  
व । जो आश्रव जीव है तो जीव ने किम खपावो इम कहे तेहनों उत्तर—  
आश्रव खपावे इम कह्यो ते खपावणो . मेटण रो है । जे माठा परिणाम  
मे कहो भावे खपाया कहो । अनुयोग द्वारे एहवो पाठ । ते लिखिये है ।

से किं तं भावज वणां, भावज्भवणा दुविहा पराणत्ता  
तं जहा गम । नो । गमओ । से किं तं आगमओ  
भावज्भवणा, गं । नो भावज्भवणा जाणए उवओ से तं  
गमो भावज्भवणा से किं तं नो आगमओ भावज्भवणा,  
नो आगमओ भावज्भवणा, दुविहा पराणत्ता तं जहा पस-  
त्थाय, अपसत्थाय, से किं तं पसत्था, पसत्था चउव्विहा  
पराणत्ता, तं जहा--कोह ज्भवणा माणज्भवणा, मायाज्भ-  
वणा, लोभज्भवणा, से तं पसत्था । से किं ते अपसत्था,



अपसत्था तिविहा परणत्ता, तं जहा--णाणज्भवणा, दंसण  
ज्भवणा, चरित्त ज्भवणा, से तं अपसत्थो, से तं नो आग-  
मओ भावज्भवणा, से तं भाव ज्भवणा, से तं उह  
निष्फन्ने ।

( अनुयोग द्वार )

से० ते, किं कौण, भा० भाव भवणा ( ज्ञपणा ) ते कहे छै, भा० भाव भवणा, दु० वे  
प्रकार नी प० परूपी छै, तं० ते कहे छै, आ० आगम सू०, नो० नो आगम सू०, से० ते, किं कौण,  
आ० आगम सू० भाव भवणा, आ० आगम सू० भाव भवणा, जा० जाणी नें उपयोग युक्त सूत्र  
भयो, से० ते, आगम भाव भवणा कही छै, से० ते कौण, नो० नो आगम सू० भाव भवणा, नो०  
नो आगम स' भाव भवणा, दु० वे प्रकार नी प० परूपी, तं० ते कहे छै, प० प्रशस्त भाव नी  
ज्ञपणा, अ० अप्रशस्त भाव नी ज्ञपणा, से० ते कौण प्रशस्त ज्ञपणा, प० प्रशस्त ज्ञपणा ४  
प्रकार नी, परूपी छै, तं० ते कहे छै, क्रोध ज्ञपणा, मान ज्ञपणा, माया ज्ञपणा, लोभ ज्ञपणा,  
से० ते प्रशस्त ज्ञपणा कही, से० ते, किं कौण अप्रशस्त ज्ञपणा, अ० अप्रशस्त ज्ञपणा ३  
प्रकार नी परूपी छै, तं० ते कहे छै, ज्ञान ज्ञपणा, दर्शन ज्ञपणा, चरित्र ज्ञपणा, से० ते अप्रशस्त  
ज्ञपणा कही, से० ते नो आगमओ भाव ज्ञपणा, से० ते भाव ज्ञपणा कही,

अथ इहां भवणा ते खपावणा । तिहां प्रशस्त भले भावे करी क्रोध, मान,  
माया, लोभ, खपै, अने अप्रशस्त माठा भाव करी ज्ञान, दर्शन, चारित्र खपे, इम  
कह्यो । ते ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तो निज गुण छै जीव छै । ते माठा भाव थी  
खपता कह्यो ते खपे कह्यो भावे मिटे कह्यो । जे माठा भाव आयां ज्ञान खपे ते  
ज्ञान रहित हुवे, तेहनें ज्ञान खपे कह्यो । इमहिज दर्शन, चारित्र, खपे कह्यो ।  
जिम माठा भाव थी ज्ञान, दर्शन, चारित्र, खपे पिण ज्ञानादिक अजीव नहीं, तिम  
भलां भाव थी अशुभ आश्रव खपे कह्यो पिण आश्रव अजीव नहीं । अने आश्रव  
खपावे ए पाठ रो नाम लेई आश्रव-नें अजीव कहे तो तिण रे लेखे ज्ञान, दर्शन,  
चारित्र, पिण माठा भाव थी खपे इम कह्यां माटे ज्ञान, दर्शन, चारित्र, नें पिण  
अजीव कहिणा । अने ज्ञानादिक खपे कह्यो तो पिण ज्ञानादिक नें अजीव न कहे  
तो आश्रव नें खपावणो कह्यो—पहवो नाम लेई आश्रव नें पिण अजीव न कहिणो ।  
अने आश्रव नें अजीव कहे तो सम्वर पिण तिण रे लेखे अजीव कहिणो अने

र नें जीव कहे तो आश्रव नें पिण जीव कइणो । डाहा हुवे तो विचरि जोइजो ।

## इति १३ वोळ सम्पूर्णा ।

अथ आश्रव तो िं नें ग्रहे—अनें सम्वर िं नें रोके, आवा रा चारणा ते तो आश्रव छै, ते चारणा रुंधे ते संवर, ए वेहुं जीव छै । देश थी उजलो जीव निर्जरा ते पिण जीव छै । सर्व थकी उजलो जीव मोक्ष ते पिण जीव छै । पुण्य-शुभ कर्म, पाप-अशुभ कर्म बंध ते शुभाशुभ कर्म कर्म, ते पुद्गल छै । ते अजीव छै । एहवो न्याय ठाणाङ्ग ठा० ६ वडा ठव्या में कह्यो । ते पाठः लिखिये छै ।

नवसव्भावा पयस्था. प० तं० जीवा. अजीवा. पुन्न. पाव. आस्सवो. संवरो. निजरा. बंधो. मोक्खो.

( ठाणाङ्ग ठा० ६ )

न० नव सव्भाव परमार्थक पिण अपरमार्थक नहीं पदार्थ वस्तु तिहां जो छल. दुःख. रो ज्ञान. उपयोग. लक्षण ते जीव, अजीव तेहथी विपरीत पु० पुण्य शुभ प्रकृति रूप कर्म ते पुण्य. पा० तेहथी विपरीत कर्म ते पाप. आ० शुभाशुभ कर्म ग्रहे ते आश्रव. आवता नों निरोध ते सम्वर. ते गुप्तयादिके करी नें, निर्जरा ते विपाक थको अथवा तपे करी नें कर्म नों देश थकी लपा-विवू आश्रवे ग्रहा कर्म नूं. आत्मा सङ्गती योग भेलवो ते बंध. मो० सकल कर्म ना क्षय थकी जीव ना पोता ना स्वरूप नें विपे रहिवूं ते मोक्ष जीवाजीव व्यतिरेक पुण्य पापादिक न हुइ पुण्य पाप ए वेहुं कर्म छै. बंध ते पाप पुण्य नों रूप छै. अनें कर्म ते पुद्गल नों परिणाम छै. पुद्गल ते अजीव छै । आश्रव ते मिथ्या दर्शनादि जीव ना परिणाम छै. ते आत्मा नें पुद्गल नें विरह नो करणहार. आश्रव निरोध रूप ते सम्वर, ते देश थकी सर्व थकी आत्मा नो परिणाम निवृत्ति रूप ते निर्जरा. ते जीव थकी कर्म भाटकी उ जुदो करवूं. पोता नो शक्ति ते मोक्ष. ते कर्म रहित. आत्मा ते भंखी जीवाजीव पदार्थ ते सङ्गाव कहिइ. एहज भणी इहां पूर्व कह्यूं जे लोक माहि छै. ते सर्व बिहुं प्रकारे “तंजहा जीवाचेव अजीवाचेव” इहां समचे विहुं पदार्थ कहा, ते इहां विशेष थकी, नव प्रकारे करी देखाव्या.

अथ इहां आश्रव मिथ्या दर्शनादिक जीव ना परिणाम । संवर  
निर्जरा, मोक्ष, पिण जीव में घाल्या पुण्य बंध ने ल क ल ने  
अजीव । इहां तो प्रत्यक्ष नव पदार्थ में जीव, संवर, निर्जरा, मोक्ष ने जीव  
। अजीव पुण्य, पाप, बंध, ने अजीव क । तेहनी टीका में पिण  
कह्यो । ते टीका लिखिये छै ।

“नव सञ्भावेत्यादि—सञ्भावेन परमार्थेना ऽ नुपचारेणो त्यर्थः ।  
पदार्थाः वस्तूनि, सञ्भाव पदार्था स्तद्यथा—जीवाः सुख दुःख ज्ञानोपयोग  
लक्षणाः । अजीवा—स्तद्विपरीताः । पुण्यं-शुभ प्रकृति रूपं कर्म । पापं—  
तद्विपरीत कर्मैव । आश्रूयते गृह्यते कर्मा ऽ नेन इत्याश्रवः शुभाशुभ कर्मादान हेतु  
रिति भावः । सम्बरः—आश्रव निरोधो गुप्त्यादिभिः । निर्जरा विपाकात्तपसा वा  
कर्मणां देशतः क्षपणा । बन्धः—आश्रवै रात्तस्य कर्मण आत्मना संयोजः । मोक्षः—  
कृत्स्न कर्म क्षयात् आत्मनः स्वात्मन्य वस्थान मिति ।

ननु जीवा ऽ जीव व्यतिरिक्ताः पुण्यादयो न सन्ति, तथा बुध्यमान-  
त्वात् । तथाहि पुण्य पापे कर्मणी, बन्धोपि तदात्मक एव, कर्मच कर्म पुद्गल  
परिणामः, पुद्गलाश्चा ऽजीवा इति । आश्रवस्तु मिथ्या दर्शनादि रूपः परिणामो  
जीवस्य, स चात्मानं. पुद्गलांश्च विरह्य्य कोऽन्यः । सम्बरोपि आश्रव निरोध ल-  
क्षणां देश सर्व भेद आत्मनः परिणामो निवृत्ति रूपः । निर्जरा तु कर्म परिशाटो  
जीवः कर्मणां यत्पार्थक्य मापादयति स्वशक्त्या । मोक्षोऽपि आत्मा समस्त  
कर्म विरहित इति तस्मात् जीवाऽजीवौ सञ्भाव पदार्थाविति वक्तव्यम्. अत-  
एवोक्त मिहैव “जदर्थिचणं लोए तं संवं दुप्पडोयारं. तं जहा जीवाचेव अजीवा  
चेव” अत्रोच्यते सत्य मेतत् किन्तु द्वावेव जीवाऽजीव पदार्थौ सामान्ये नोक्तौ  
तावेवेह विशेषतो नवधोक्तौ-इति”

अथ इहां टीका में पिण आश्रव ने कर्म नो हेतु जो—ते माटे आश्रव ने  
कर्म न कह्यो । वली आश्रव मिथ्या दर्शनादिक जीव ना परिणाम कहा । वली

सम्बर नें पिण निवृत्ति रूप आत्मा ना परिणाम कहा । देश थकी जीव उजलो. देश थकी नों खपाविवो. ते निर्जरा कही । सर्व कर्म रहित जीव नें मोक्ष कहिई । इम आश्रव. सम्बर. निर्जरा. मोक्ष. ४ जीव में घाल्या । अने पुण्य शुभ कर्म कह्यो. पाप अशुभ कर्म कह्यो. बन्ध ते शुभाशुभ कर्म कह्यो । कर्म—पुद्गल कहा । पुद्गल नें अजीव ।। इम पुण्य. पाप. बन्ध. नें अजीव में घाल्या । इणन्याय नव पदार्था में ५ जीव. ४ अजीव. कहीजे । पाठ में पिण अनेक ठामे आश्रव. सम्बर. निर्जरा. मोक्ष. नें जीव कहा । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १४ वोल सम्पूर्णा ।

इति आश्रवाऽधिकारः ।



## अथ संवराऽधिकारः ।

केतला एक अज्ञानी संवर नें अजीव कहे छै । अने संवर नें तो घणे ठामे सूत्र में जीव कहा छै । ते पाठ लिखिये छै ।

पंच संवर द्वारा प० तं सम्मत्तं १ विरइ २ अप्प ३ अ साया ४ अजोगया ५ ।

( छायाङ्ग ठा० ५ उ० २ तथा समवायाङ्ग )

अ० प० पांच सं० सम्बर ते जीव रूप तज्ञाव नें विपे कर्म रूप जल ना आगमन रुंधवो. दा० तेहना वारणा नो परे वारणा ते रुंधवा नों उपाय. प० परुया. तं० ते कहे छै. स० क्त्व पणे करी नें रुंधे मिथ्यात्व रूप पाप नें वि० विरति २ अप्रमाद ३ अ० अकपाय. ४ अ० अजोग पणो ५ ।

अथ अठे सम्यक्त्व संवर सम्यग्दृष्टि शुद्ध श्रद्धा नें ऊंधी श्रद्धण रा त्याग ॥ १ ॥ व्रत ते सर्व चारित्त देश चारित्त रूप ॥ २ ॥ अप्रमाद ते प्रमाद रहित ॥ ३ ॥ अकपाय ते उपशान्त कपाय नें तथा क्षीण कपाय नें हुइ ॥ ४ ॥ अयोग ते मन वचन काया नों योग रुंधे चउदमे गुणठाणे हुइ ॥ ५ ॥

इहाँ सम्यक्त्व शुद्ध श्रद्धा नें ऊंधी श्रद्धण रा त्याग, ते सम्यग्दृष्टि नें सम्यक्त्व सम्बर कहा छै । तथा छायाङ्ग ठा० २ उ० १ 'जीव किरिया दुविहां प० तं० सम किरिया, मिच्छत किरिया.' इहां सम्यक्त्व मिथ्यात्व नें जीव ॥ १ ॥ मिथ्यात्व क्रिया नें मिथ्यात्व आश्रव, सम्यक्त्व क्रिया ऊंधो श्रद्धण रा त्याग, अने शुद्ध श्रद्धा रूप सम्यक्त्व संवर कहीजे । इणन्याय सम्यक्त्व संवर जीव छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १ बोल सम्पूर्ण ।

तथा उत्तराध्ययन अ० २८ गा० ११ में पढ़वो पाठ कह्यो । ते लिखिये छै ।

नाणं च दंसणं चैव, चरित्तं च तवो तेहा ।

वीरियं उवञ्जोगोय, एयं जीअस्स लक्खणं ॥११॥

सइं धयार उज्जोओ, पहा छाया तवेइ वा ।

वरण रस गंध फासा, पुग्गलाणं तु लक्खणं ॥१२॥

( उत्तराध्ययन अ० २८ गा० ११-१२ )

ना० ज्ञान अर्णे. दं० दर्शन. चे० निश्चय. च० चारित्र अर्णे. त० तप. त० तिमज. वी० वीर्य  
सामर्थ्य. ड० ज्ञान ना उपयोग. ए० पूर्वोक्त ज्ञानादिक. जी० जीव ना लक्षण छै ॥११॥ स० शब्द.  
अं० अकार. ड० उद्योत. रत्नादिक नों. प० प्रभा. कान्ति चन्द्रादिक नी. छा० शीतल छांहदी. त०  
ताप क्षयादिक ना. व० वर्ण. र० रस संवरादिक. गं० गन्ध. दुर्गन्ध. फा० स्पर्श. पु० पुद्गल नों  
लक्षण छै ।

अथ इहां ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य, उपयोग, में जीव ना लक्षण  
कह्यो । अर्णे शब्द. अन्यकार, उद्योत, प्रभा, छाया, तावडो, वर्ण, गन्ध, रस,  
स्पर्श, ए पुद्गल ना लक्षण कह्यो । इहां चारित्र में जीव ना लक्षण कह्यो । अर्णे  
चारित्र तेहीज व्रत सम्बर छै । ते भणी सम्बर में पिण जीव ना लक्षण कह्यो ।  
अर्णे जीव ना लक्षण तो जीव छै । अर्णे जे कोई चारित्र में जीव ना लक्षण कहे पिण  
जीव न कहे । तो तिण रे लेखे वर्ण, रस, गन्ध, स्पर्श, ने पिण पुद्गल ना लक्षण  
कह्यो, ते भणी पुद्गल ना लक्षण कहिणा. पिण पुद्गल न कहिणा । अर्णे पुद्गल ना  
लक्षण में पुद्गल कहे तो जीव ना लक्षण में जीव कहिणा । तथा ज्ञान, दर्शन, उप-  
योग, में जीव ना लक्षण कह्यो ए जीव छै तो चारित्र में पिण जीव ना लक्षण  
कह्यो ते चारित्र पिण जीव छै । ते तो चारित्र व्रत संवर छै । इणन्याय संवर  
ने जीव कहीजे । डाहां हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २ बोलसंपूर्ण ।

तथा अनुयोग द्वार में गुण प्रमाण ना भेद । जीव गुण  
अजीव गुण प्रमाण, ते लिखिये छै ।

किं गुण्य गो गुण्य गो दुविहे. प० तं  
जीव गुण्यमाणे, से किं अजीव गुण्यमाणे, जीव  
गुण्य गो पंच विहे पराणे, हा--वराण गुण्यमाणे.  
गंध गुण्य गो. र गुण्यमाणे, फास गुण्यमाणे. सं गु  
गुण्यमाणे ।

(अनुयोग द्वार)

से० ते. किं कौय. गु० गुण्यप्रमाण, गु० प्र . ते दु० वे रे प . तं० ते  
कहे छै । जी० जीव गुण्य प्रमाण. अ० अजीव प्रमाण. से० ते. किं कौय. अ० अजीव  
प्रमाण. अ० अजीव गुण्य प्रमाण. पं० प्रकारे पर्य्या. तं० ते कहे छै. व० गुण्य प्रमाण.  
ग० गन्ध गुण्य प्रमाण. र० रस गुण्य प्रमाण. फा० गुण्य प्रमाण. सं० सं

वली जीव गुण्यप्रमाण नो पाठ कहे ।

से दिं जीव गुण्यमाणे, जीव गुण्यमाणे. ति विहे  
पराणत्ते जहा गुण्यमाणे. दंसण गुण्यमाणे. चरि  
गुण्यमाणे !

(अनुयोग द्वार)

से० ते. किं कौय. जी० जीव गुण्य प्रमाण. जी० जीव प्रमाण. ति० त्रिविधे  
पर्य्या. तं० ते कहे छै. ना० ज्ञान गुण्य प्रमाण. दं० दर्शन गुण्य प्रमाण. चरित्र गुण्य

विहं प में ५ . २ . ५ . ८ स्पर्श. ५ सं नें  
अजीव गुण . दर्शन. चारित्र. नें जीव गुण ।

तिण में चारित ते है । ते ॐ पिण जीव गुण प्रमाण कहिहं । अने चारित्र  
ने जीव कहे पिण जीव न ॐ तो तिण रे दर्शन, ने पिण  
जीव गुण प्र कहिणा । पिण जीव न कहिणा । अने दर्शन, ने जीव  
कहे तो चारित ने पिण जीव कहिणो । धर्मादिक ने अजीव गुण  
ते ॐ अजीव कहीजे । तो न, चारित, ने जीव गुण प्र  
तेहने पिण जीव कहिय । ए तो पाधरो है । चारित, गु ण, रा  
भेद, तिहां चारित रा कही पळे कछो । “स्वत चरित गुणप्रमाणे,  
से तं जीव गुणप्रमाणे,” इम ते ते माटे पांचू इ चारित जीव है । ते चारित  
व्रत संवर है । ठाणाङ्गु ठा १० ते—“दसविहे जीव परिणामे ५० तं  
परिणामे, इन्द्रिय परिणामे, त्रय परिणामे, छेस परिणामे, जोग परिणामे,  
उद्योग परिणामे, परिणामे, द परिणामे, चरित परिणामे, वेय परि-  
णामे,” । जीव परिणामी रा १० भेदां में ज्ञान दर्शन ने जीव परिणामी ते  
जीव है । तिम चारित ने पिण जीव परिणामी कह्यो ते चारित पिण जीव है ।  
। हुवे तो बिचारि जोइनो ।

## इति ३ वो सम्पूर्णा ।

। भगवती श० १ उ० ६ संवर ने आत्मा कही । ते लिखिये है ।

तेणं कालेणं तेणं मएणं चि स-  
वेसिय पुत्ते णामं गारे, णेव थेरा न्तो तेणेव -  
गच्छइ २ थेरं भगवं एवं व सी थेरा इयंण णंति  
थेरा माइयस्स ढूं याणंति, थेरा प व णं ण याणंति.  
थेरा पच्चक्खाणस्स याणंति, थेरा याणंति.  
थेरा सं स्स ढूं ण याणंति. थेरा ण णंति. थेरा



संवरस्स अट्ठं ण याणांति. थेरा विवेगं ण याणांति. थेरा विवेगस्स अट्ठं ण याणांति. थेरा विउसग्गं ण याणांति. थेरा विउसग्गस्स अट्ठं ण याणांति. तएणं थेरा भगवंतो कालावसेविय पुत्तं अणगारं एवं वयासी जाणा रो णं अज्जो सा इयं. जाणामो णं अज्जो सामाइयस्स अट्ठं जाव जाणामो णं. विउसग्गस्स अट्ठं । तएणं से कालासवेसिय पुत्ते अणगारे ते थेरे भगवंते एवं वयासी जइणं अज्जो तुव्भे जाणह सामाइयं जाणह सामाइयस्स अट्ठं, जाव जाणह विउसग्गस्स अट्ठं, के भे अज्जो सामाइए के भे अज्जो सामाइयस्स अट्ठे जाव के भे विउसग्गस्स अट्ठे, तएणं ते थेरा भगवंतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवं वयासी आयाणे अज्जो सामाइये, आयाणे अज्जो सामाइयस्स अट्ठे. जाव विउसग्गस्स अट्ठे ।

( भगवती श० १ उ० ६ )

ते० तेणो काले. ते० तेणो समये. पा० पार्श्वनाथ ना शिष्य. का० कालासवेसिय पुत्र अणगार साधु. जे जिहां. थे० श्री महावीर ना शिष्य 'है' श्रुतवन्त है. ते० तिहां. उ० आये. आवी नें. थे० स्थविर भगवन्त नें इस कहे. थे० स्थविर सामायिक समता साव रूप नें तुम्हे न जानता. थे० सूक्ष्म पणा थी स्थविर सामायिक अर्थ. नथी तुम्हे जाणता. थे० स्थविर पचक्खाण पौरसी प्रमुख तुम्हे नथी जाणता. थे० स्थविर पचक्खाण अर्थ आश्रम नूं रुंथवूं ते नथी जाणता. थे० स्थविर संयम जाणता नथी. थे० स्थविर संयम नों अर्थ नथी जाणता. थे० स्थविर सम्बर नें नथी जाणता. थे० स्थविर सम्बर नों अर्थ नथी जाणता. थे० स्थविर विवेक नथी जाणता. थे० स्थविर विवेक नों अर्थ नथी जाणता. थे० स्थविर कायोत्सर्ग नूं करवूं नथी जाणता. थे० स्थविर कायोत्सर्ग नूं अर्थ नथी जाणता. त० तिवारे. थे० स्थविर भगवन्त. का० कालासवेसिय पुत्र अनगार नें. ए० इस कहे. जा० जाणी हूं है. अ० हे आर्य ! सा० सामायिक. जा० जाणी हूं है. अ० हे आर्य ! सामायिक नों अर्थ. जा० यांचतु. जा० जाणी हूं है. अ० हे आर्य ! त्रि० कायोत्सर्ग नों अर्थ. त० तिवारे. का० कालासवेसिया पुत्र. अ० अणगार. थे० स्थविर भगवन्त नें इस कहे. ज० जो. अ० हे आर्यो ! तुम्हे जाणो हो. सा० सामायिक नूं

यावत्. जा० जाणो छो. वि० कायोत्सर्ग नूं अर्थ. के० कुण ते. अ० आर्य ! सामायिक. के० कुण ते अ० आर्य ! सामायिक नों अर्थ. जा० यावत्. के० कुण भगवन् ! वि० कायोत्सर्ग नूं अर्थ. त० तिवारे. ते. थे० स्थविर भगवान्. का० कालासवेसिय पुत्र नामे अणगार प्रते. ए० इम कहे. आ० म्हारी आत्मा ते सामायिक. “जीवो गुण पद्धिवन्नो ते यत्तस दव्वदिस सामाइयंति गरहामि निदामि अप्पाणं वोसरामि” इति वचनात्, ए अमिप्राय जे सामायिकवन्त छांढ्या छै क्रोधादिक ते किम निन्दा करे निन्दा ते द्वेष नूं कारण छै. ए सामायिक नों अर्थ. म्हारे आत्मा ते सामायिक नों अर्थ. ते जीव ज कर्म नों अण उपजाविवो जीव ना गुणपणा थो जीव ना अण-छुदापणा थो यावत् कायोत्सर्ग नूं अर्थ काय नूं वोसरविवूं ।

अथ इहां सामायिक. पचक्खण. संयम. संवर विवेक. कायोत्सर्ग नें आत्मा कही । तिहां संवर नें आत्मा कही । ते माटे संवर जीव छै । इहां हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ४ ल सम्पूर्ण ।

तथा प्राणातिपातादिक ना वैरमण ने अरूपी कहा । ते लिखिये छै ।

ह भंते पाणाइवाय वेरमणो जाव परिग्गह वेरमणो.  
कोह विवेगे. जाव मिच्छा दंसण स विवेगे एसणं कइवणो  
जाव कइ फासे परणत्ते, गोय ! अवणो अगंधे अरसे  
अफासे परणत्ते ॥७॥

( भगवती श० १२ उ० ५ )

अ० अर्थ. अ० भगवन्त ! पा० प्राणातिपात वेरमण. जीव हिंसा थो निवर्त्तवूं यावत्.  
प० परिग्रहे वेरमण. को० क्रोध नों विवेक. ते परित्याग यावत्. मि० मिथ्या दर्शन शक्य विवेक.  
ते परित्याग एहमां केतला वर्ण. जा० यावत्. के० केतला. फा० स्पर्श. ए० पक्ष्या. गो० हे  
गौतम ! अ० अवर्ण. अ० अगन्ध. अरसः अस्पर्श. प० पक्ष्या.

૧૮ નોં વેરમણ અરૂપી કહ્યો । તે ૧૮ નોં વે  
છે । તે માટે સંવર નેં વી કહીજે । ઢાહા હુવે તો વિચારિ જોઈજો ।

इति ५ वो सम्पूर्णा ।

भगवती श० १८ उ० ४ कह्यो । ते लिखिये छै ।

एणाइवाय वेरमणे ।व मिच्छा दं विवेगे  
५ ति ।ए. ध५ तिथ ।ए ।व पर ।एणु पोगले सेलेसि  
डि ।ए ।एगारे एएणं दुविहा जीव दव्वा अजीव  
द० नी ।परिभोग ।ए एणो हव्वमागच्छंति. से ते  
द्वेणं जाव एणो ह० ।गच्छंति ।

( भगवती श० १८ उ० ४ )

પા० પ્રાજ્ઞાતિપાત વેર તે વ્રત રૂપ. જા० તૂ. મિ० મિધ્યાદર્શન વિવેક. ધ०  
ધર્માસ્તિકાય. અ० િસ્તિ . જા० યાવત્. પ० પરમાણુ પુદ્ગલ. સે० સેલેસી પ્રતિપક્ષ.  
અ० ગાર ને. ૫० પૂતલા માટે. દુ० વે પ્રકારે. જી० જીવ દ્રવ્ય. અજીવ દ્રવ્ય. જી० જીવ  
ને. ૫० પરિભોગ પદ્યે નહીં આવે.

अथ इहाँ कह्यो—१८ नो वेरमण धर्मास्तिकाय, मास्ति  
आ शास्ति . अशरीरी जीव, परमाणु पुद्गल, सलेशी साधु, ए जीव रि  
, तीव पिण छै । पिण जीवां रे भोग न आवे तो जे धर्मास्तिकाय, अधर्मास्ति-  
काय, आ त्ति . परमाणु पुद ए अजीव छै । अने १८ नों वे  
अशरीरी जीव, सलेशी धु, ए जीव द्रव्य छै । जे १८ पाप ना वेरमण नें अरूपी  
कह्यो छै, ते अजीव में तो आवे नहीं । इहां धर्मास्तिकाय अधर्मास्ति आका-  
शास्ति धकी १८ पाप नों वेरमण न्यारो । ते ते माटे १८ पाप नों वेरमण  
अजीव वी में आवे नहीं । ते भणी जीव द्रव्य छै, ते संवर छै । इण संवर

जीव है । तथा भगवती श० १२ उ० १० आत्मा में चारित आत्मा कही ते  
पिण है । अनुयोग द्वार में च्यार चारित क्षयो नि है ।  
तथा प्रश्न व्याकरण अ० ६ दया ने निज गुण कही । ते दया है ।

उत्तराध्ययन अ० २८ चारित्र रो गुण. 'रोकवा रो कह्यो । कर्मा ने रोके  
ते संवर जीव है । अजीव किम रोके, भगवती श० ६ उ० ३१ चारितावरणी  
, चारित आडो आवरण कह्यो । ते रण जीव रे आडो है अजीव आडो  
नहीं । भगवती श० ८ उ० १० जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट, चारित नी

कही, ए आराधना जीव नी है । अजीव नी १-किम इत्यादिक  
अनेक ठामे संवर ने अरूपी कह्यो । इण संवर ने जीव कहीजे । इवे  
तो विचारि जोइजो ।

इति ६ ेल सम्पूर्ण ।

इति संवराधिकारः ।



## अथ जीवभेदाधिकारः ।

केतला एक अज्ञानी, भवन पति वाणव्यन्तर, में अने प्रथम नरक में जीव रा ३ भेद कहे—सन्नी ( संज्ञी ) रो अपर्याप्त १ पर्याप्त २ अने असन्नी पंचेन्द्रिय रो अपर्याप्तो ११ मो भेद. ३, ए तीन भेद कहे । वली सूत्र रो नाम लेवी कहे देवतामें सन्नी पिण कहा, असन्नी पिण कहा । ते माटे देवता नें असन्ना रो इ ११ मो भेद पावे । इम कहे तेहनों उत्तर—ए नारकी देवता में असन्नी मरी उपजे ते अपर्याप्त पणे विभंग अज्ञान न पावे, तैतला काल मात्र ते नेइया नों असन्नी नाम छै । अने विभङ्ग तथा अवधिज्ञान पावे तेहनो सन्नी नाम छै । ए तो संज्ञा आश्री सन्नी, असन्नी. कहा । पिण जीव रा भेद आश्री न थी कहा । ए अवधि. विभङ्ग दोनु रहित नेइया नों नाम तो असन्नी छै । पिण जीव रो भेद ११ मो न थी । जीव रो भेद तो १३ मो छै । जिम पन्तवणा पद १५ उ० १ विशिष्ट अवधि ज्ञान रहित मनुष्य नें असन्नी भूत कहा छै । ते पाठ लिखिये छै ।

मणस्साणं भंते ! ते निज्जरा पोग्गले किं जाणंति ए पासंति आहारंति उदाहु ए जाणंति ए पासंति आहारेति गोयमा ! अत्थेगतियाणं जाणंति पासंति आहारेति अत्थेगतिया ए जाणंति ए पासंति आहारंति सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं बुच्चइ अत्थेगतिया जाणंति पासंति आहारंति अत्थेगतिया ए जाणंति ए पासंति ए आहारेति गोयमा ! एणस्सा दुविहा परणत्ता तं जहा—सरिण भूयाय असरिण भूयाय तत्थणं जे ते असरिण भूयाय ते ए जाणंति ए पासंति आहारंति,

तत्थं जे ते एण भूया ते दुविहा पणत्ता तं हा—उव-  
उत्ताय एउत्ताय. तत्थं जे ते एउ उत्ताय तेणं  
एणंति ए पासंति ए आहरेति. तत्थं जे ते उवउत्ता तेणं  
एणंति पासंति आहरेति से तेणद्धेणं. गोयमा ! एवं आहा-  
रेंति ।

( पञ्चव्या पद १५ उ० १ )

म० मनुष्य. भ० हे भगवन् ! शि० ते निर्जसा पुद्गल प्रते. किं स्यू जाणतां थकां.  
पा० देखतां थकां. आ० आहारे छै. के अथवा. श० स्यू अणजाणतां थकां. श० अणदेखतां थकां.  
आ० आहारे छै. गो० हे गौतम ! अ० केतला एक मनुष्य जाणतां थकां. पा० देखतां थकां.  
आ० आहारे छै. अ० अने केतला एक. म० मनुष्य अणजाणतां थकां. श० अणदेखतां थकां.  
आ० आहारे छै. से० ते सयां माटे. भ० भगवन् ! ए० इम कह्यो छै. अ० केतला एक जाणतां  
थकां. पा० देखतां थकां. आ० आहारे छै. अ० अने केतला एक मनुष्य. श० अणजाणतां थकां  
अ० अणदेखतां थकां. आ० आहारे छै. गो० हे गौतम ! म० मनुष्य. दु० वे भेद. प० परुष्या.  
तं० ते कहे छै. स० संज्ञी ते विशिष्ट अवधि ज्ञानवन्त. अ० अने असंज्ञी ते ज्ञान रहित  
त० तिहां जे तें. स० असंज्ञी भूत छै विशिष्ट अवधि ज्ञान रहित छै. त० ते तो अणजाणतां. श०  
अणदेखतां थकां. आ० आहारे छै. अने त० तिहां जे ते कर्मण्य शरीर ना पुद्गल देखे ते विशिष्ट  
अवधि ज्ञानवन्त ते संज्ञी भूत मनुष्य. दु० वे भेदे कहा छै. तं० ते कहे छै. उ० उपयोगी. अ०  
अने अनुपयोगी त० तिहां जे ते अ० अनुपयोगी छै ते अणजाणता थकां. श० अणदेखता थकां.  
आ० आहारे छै. ते० तिहां जे. ते उपयोगवन्त. जा० ते जाणता थकां. पा० देखता थकां. आ०  
आहारे छै. से० ते. एणे अथ. गौतम ! आहारे छै.

इहां कहाँ—मनुष्य ना २ भेद, सन्नी भूत ते विशिष्ट अवधिज्ञान सहित,  
असन्नी भूत ते विशिष्ट अवधि ज्ञान रहित मनुष्य ते तो निर्जसा पुद्गल न  
जाणे न देखे अने आहारे छै । अने विशिष्ट अवधि सहित ते सन्नी भूत मनुष्य रा  
२ भेद, उपयोग सहित अने उपयोग रहित । तिहां जे उपयोग रहित ते तो निर्जसा  
ल नें न जाणे न देखे पिण आहारे छै । अने उपयोग सहित मनुष्य जाणे देखे  
आहारे छै । इहां निर्जसा पुद्गल तो अवधि ज्ञाने करी जाणीइ देखीइ अवधि  
बिना निर्जसा पुद्गल दिखाइ नहि, ते माटे असन्नी भूत मनुष्य रो अर्थ विशिष्ट

धि न रहित कियो है । ते अवधि ज्ञान रहित नें असन्नी भूत । ॥ १० ॥ पिण असन्नी रो भेद न पावे, तिम नेरइया नें असन्नी भूत कहा । ॥ पिण असन्नी रो भेद न पावे । ए नेरइया अने देवता नें असन्नी क । ते सं । ची है । जे अवधि बिभङ्ग रहित नेरइया नों नाम असन्नी है जिम विशिष्ट धि रहित मनुष्य निर्जसा पुद्गल न देखे । तेहने पिण असन्नी भूत कह्यो । पिण नि । ल न देखे ते सर्व मनुष्य में असन्नी नों भेद न पावे, ति असन्नी नेरइया में असन्नी रो भेद न थी । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति १ बोल सम्पूर्णा ।

तथा पञ्चवणा पद ११ में कह्यो । ते पाठ लिखिये है ।

ह भंते ! द ु मारे वा उ मारिया वा णाति  
 णे वुय णा अहमे से यामि अहमे से बुबामिति  
 गोयमा ! णोइणट्टे स ट्टे ण णात्थ सण्णणो ॥ १० ॥  
 भंते ! द णए वा मंद कुमारियावा णाति  
 हारं हारे णे अहमेसे हार माहरे अहमेसे  
 आहार माहरे मिति गोयमा ! णोइणट्टे स ट्टे णात्थ  
 णणणो ॥ ११ ॥ अह भंते मंद कुमारए वा मंद कुमा-  
 रिया वा जाणति अयं मे अम्मा पियरो गोयमा ! णोइणट्टे  
 समट्टे णात्थ सण्णणो ॥ १२ ॥

( पञ्चवणा प ११ )

अथ भ० हे भगवन् ! म० मंद कुमार ते न्हानो वालक अथवा मन्द कुमारि का ते न्हानी  
 धासिका बोलता थका इस जाये । अ० हूँ पढ़वो, व० बोलूँ, ग० हे गोतम ! शो० पढ़वो अर्थ,

सं० नहीं है. श० विशिष्ट अवधिचिन्त जाणे शेष न जाणे. अ० अथ भ० हे भगवन् ! सं० न्हानों . अथवा. सं० न्हानी वालिका. आ० आहार करता थकां इस जाणे. अ० हूँ. एहवो आहार करूँ हूँ. हूँ आहार करूँ हूँ. गो० हे गोतम ! शो० एह अर्थ समर्थ नहीं है. श० विशिष्ट अवधिचिन्त जाणे शेष न जाणे. अ० अथ भ० हे भगवन् ! सं० न्हानों वालिका. सं० न्हानी वालिका जा० जाणे है अथ० एह. अ० म्हारा माता पिता छं. गो० हे गोतम ! शो० एहवो अर्थ नहीं है. श० विशिष्ट मति अवधिचिन्त जाणे शेष न जाणे ।

अथ अटे पिण १०—न्हाना वालिका वालिका मन पटुता पणो न पाव्यो । विशिष्ट ज्ञान रहित नें सन्नी न कह्यो । पिण जीव रो भेद तेरमों है । तिण में अ १० रो भेद न थी । तिम नेरइया नें अ १० भूत । पिण असन्नी रो भेद न थी । ए नेरइया. देवता नें कक्षा. ते संज्ञा वाची है । अवधि विभङ्ग रहित नेरइया नों नाम असंज्ञी है । तिम विशिष्ट अवधि रहित निर्जसा पुद्गल न देखे तेहनों पिण नाम असंज्ञी भूत क्यो । पिण नि । पुद्गल न देखे ते सर्व मनुष्य में असन्नी रो भेद न पावे । तथा न्हाना वालिका वालिका मन पटुता रहित नें सन्नी न १०. पिण तेहमें अक्षन्नी रो भेद न थी । तिम असन्नी नेरइया में असन्नी रो भेद न थी । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति २ ेल सम्पूर्णा ।

तथा दश वैकालिक अ० ८ गा० १५ में ८ सूक्ष्म । ते लिखिये है ।

सिणोह पुष्प सुहमंच गुत्ति गत हेवय ।

पण्णं वीय हरियंच अंडं हमं च मं ॥

( दश वैकालिक अ० ८ गा० १५ )

सि० ओस प्रमुख नों पायी सूक्ष्म १. पु० फूल सूक्ष्म वट वृक्षादिक ना. २ पा० सूक्ष्म कुंथुयादि ३. उ० कीटो नगरा प्रमुख सूक्ष्म ४ तिमज प० पांच वर्ण नी नीलण फलण



सूक्ष्म. १. वी० बीज वड प्रमुख ना सूक्ष्म ६ इ० नवी हरी दूर्वादिक. ७ अं० अंग माखी कीड़ी आदि ना ८ सूक्ष्म.

अथ इहां ८ सूक्ष्म क — धुंयर प्रमुख नौ सूक्ष्म स्नेह १ न्हाना फल २ कुंथुआ ३ उत्तिंग कीड़ी नगरा ४ नीलण फूलण ५ बीज खसखसादिकना ६ न्हाना अंकुर ७ कीड़ी प्रमुख ना अण्डा ८ सूक्ष्म ।। ते न्हाना माटे सूक्ष्म छै । पिण सूक्ष्म रो जीव रो भेद नहीं । तिम नेरइया अने देवता नें असन्नी कहा । पिण असन्नी रो भेद नहीं । जे देवता नें असन्नी कहां माटे असन्नी रो भेद कहे-तो तिण रे लेखे ए आठ बोलां नें सूक्ष्म कहा छै यां में पिण सूक्ष्म रो भेद कहिणो । यां अ में सूक्ष्म रो भेद नहीं तो देवता अने नेरइया में पिण असन्नी रो भेद न थी । डाहा हुए तो हि । रि जोइजो ।

## इति ३ बोला सम्पूर्णा ।

तथा जीवाभिगम मध्ये प्रथम प्रति पत्ति में तीन ३ स्थावर ।  
ते पाठ लिखिये छै ।

से किं थावरा, थावरा तिविहा पराणत्ता, तंजहा—  
ढवी काइया, आउकाइया, वराणस्सइ इया ।

( जीवाभिगम १ प्र० )

ते० ते. किं किंसा. था० स्थावर, था० स्थावर. ति० त्रिण प्रकारे. प० परुषा. तं० ते  
कहे छै. पु० पृथिवी काय. आ० अपकाय. व० तिकाय.

अथ ते तो. पृथिवी. अप्. वनस्पति. नें इज स्थावर । पिण तेउ.  
वाउ. नें स्थावर न । वली आगलि पाठ कहा, ते लिखिये छै ।

से किं तं तसा, तसा तिर्विहा पणत्ता तंजहा—तेउका-  
इया. वाउकाइया. उरा . तसापाणा. ।

( जीवभिगम १ प्र० )

से० ते. किं कसा. त० त्रस. ति० त्रिण प्रकारे प० परुण्या. तं० ते कहे छै. ते० तेजसकाय.  
वा० वायुकाय. उ० औदारिक त्रस प्राणी.

अथ इहां तेउ. वाउ. नें त्रस कहा चालवा आश्रो । पिण त्रस नों जीव  
नों भेद न थी । जे तेरइया अने देवता नें असन्नी कहा माटे असन्नी रो भेद कहे  
तो तिण रे लेखे तेउ. वाउ. नें पिण त्रस कहा छै । ते भणी तेउ. वाउ. में पिण  
नों जोव नों भेद कहिणो । अने जो तेउ. वाउ में नों भेद न थी तो  
देवता अने नारकी में असन्नी रो भेद न कहिवो । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

ति ४ वोला सम्पूर्णा ।

तथा अनुयोग द्वार में सम्मूर्च्छिम मनुष्य नें पर्याप्तो. अपर्याप्तो विहं कहा  
छै । ते पाठ लिखिये छै ।

अविसेसिए मणुस्से, विसेसिए सम्मूर्च्छिम मणुस्सेय,  
गढभव तिय मणुस्सेय । अविसेसिय सम्मूर्च्छिम, मणुस्से,  
विसेसिए पज्जत्तग सम्मूर्च्छिम मणुस्सेय, अपज्जत्तग स -  
च्छिम मणुस्सेय ॥

( अनुयोग द्वार )

अ० अविशेष. ते. मनुष्य. वि० विशेष. ते. सम्मूर्च्छिम. म० मनुष्य. ग० अने गभज.  
म० मनुष्य. अ० अविशेष. ते. स० सम्मूर्च्छिम. वि० विशेष. ते. प० पर्याप्तो. सम्मूर्च्छिम मनुष्य.

अथ इहां विशेष. अविशेष. ए वे नाम ।। तिण में अविशेष थी तो मनुष्य. विशेष थी. सम्मूर्च्छिम. गर्भज । अने अविशेष थी तो सम्मूर्च्छिम मनुष्य अने विशेष थी पर्याप्तो अपर्याप्तो ।। इहां सम्मूर्च्छिम मनुष्य नें पर्याप्तो अपर्याप्तो ।। ते केतलीक पर्याय बंधी ते पर्याय आश्री पर्याप्तो कह्यो । अने सम्पूर्ण न बंधी ते न्याय अपर्याप्तो कह्यो । सम्मूर्च्छिम मनुष्य नें पर्याप्तो कह्यो । पिण पर्याप्तो में जीव रा भेद ७ पावै । ते माहिलो भेद न थी । जे देवता नें असन्नी । माटे असन्नी रो जीव रो भेद कहे तो तिणरे लेखे मूर्ति म मनुष्य नें पिण पर्याप्तो । माटे पर्याप्तो रो भेद कहिणो अने सम्मूर्च्छिम मनुष्य में प । रो भेद नथी कहे, तो देवता में पिण असन्नी रो भेद न कहिणो । तथा जीवा में देवता, नारको नें संघयणी कहा । अने पन्नवणा में कह्यो देवता. केहवां छै । “दिव्येण संघयणे णं, दिव्वेण संठाणेणं” इहां देवता में दिव्य प्रधान संघयण, जिस्सा पुद्गला नें संघयण कहा । पिण संघयण माहिला संघयण न कहिवा । तिम असन्नी मरी देवता अने नारको थाय ते अन्तर्मुहूर्त्त ताई असन्नी सरीखा छै विभङ्ग अज्ञान रहित ते माटे असन्नी सरीखा नें असन्नी क । पिण असन्नी रो जीव भेद न कहिबो । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ५ बोल सम्पूर्णा ।

तथा ।। श० १३ उ० २ असुर ।। १२ में उपजे तिण समये देवता में वे वेद-खो वेद. पुर्य वेद. कहा । ते पाठ लिखिये छै ।

असुर रा वासेसु एग मएणं केवइया सुरकुमारा उववज्जंति केवइया तेउ लेस्सा उववज्जंति केवइ । कएह पक्खिया उववज्जंति एवं जहा रयरप्पभाए तहेव पुच्छा हेव वागरणं एवरं दोहिं वेदेहिं उववज्जंति, पुं गवे- । उववज्जंति सेसं तं चेव ।

अ० कुमार ना आवास माहिं ए० एक में के० केतला अ० कुमार उ० उपजे छै के० केतला ते० तेउ लेस्सावन्त उ० उपजे छै के० केतला क० कृष्ण पत्निया उ० उपजे छै ए० हम २० रत्नप्रभा आश्री पृच्छा त० तयैव अठे जायावा श० एतलो विशेष वे० वे वेदे उपजे छी वेदे पुरुष वेदे न० नपुंसक वेदे श० न उपजे ।

इहां कह्यो—असुर कुमार में उत्पत्ति य वे वेद पावे । पिण नपुं-  
वेद न पावे । अनें देवता में अलंकी रो अपर्याप्ता ११ मो भेद कह्यो । तो ११  
मो भेद तो नपुं वेदी छै । ते माटे तिण रे लेखे देवता में नपुं वेद पिण  
कहिणो । जे देवता में नपुं वेद न कहे तो ११ मो भेद पिण न कहिणो । इहां  
में चौड़े गो । जे उत्पत्ति समय पिण नपुंसक नहीं ते माटे अपर्याप्ता में ११  
मो भेद न थी । अनें जे उत्पत्ति समय थी आगे आखा भव में देवता में वे वेद  
छै । ते पाठ लिखिये छै ।

पणत्ताएसु तहेव एवरं संजगा इत्थी वेदगा पणत्ता ।  
एवं पुरिस वेदगाविः एपुंसग वेदगाणत्थि ।

( भगवती श० १३ उ० २ )

प० पन्नवणा सूत्र में विषे कह्यो त० तिमज जायावो श० एतलो विशेष सं संख्याता  
ह० स्त्री वेदिया पिण कहा । ए० हम पुरुष वेदिया पिण संख्याता कहा । न० नपुंसक वेदिया  
न थी ।

अथ अठे असुरकुमार में बीजा समय थी लेई नें आखा भव में वे वेद  
। । पिण नपुंसक वेद न पावे । तो जे नपुंसक रो ११ मो भेद देवता में किम  
पावे । जो देवता में ३ जीव रा भेद कहे तो तिण रे लेखे वेद पिण ३ कहिणा ।  
अनें जे वेद २ कहे नपुंसक वेद न कहे तो जीव रा भेद पिण दोय कहिणा । ११ मो  
भेद न कहिणो । तथा ५६३ जीव रा भेद कहे तिण में पिण ७ नारकी रा १४ भेद  
कहे छै । जे पहिली नारकी में जीव रा भेद ३ कहे तो तिण रे लेखे ७ नारकी रा  
१५ भेद कहिणा । बली १० भवनपति रा भेद २० कहे । अनें जे भवनपति में ३  
भेद कहे तिण रे लेखे १० भवनपति रा २० भेद कहिणा । वासडिया में तो नारकी

देवता में ३ भेद कहे । अने नव तत्व में ५६३ भेदां में नारकी में देवता में जीव रा भेद २ कहे । एहवो अजाणपणो जेहनें छै । तिण नें शुद्ध श्रद्धा आवणी परम दुर्लभ छै । जे सूक्ष्म एकैन्द्रिय रो अपर्याप्तो प्रथम जीव रो भेद ते पर्याय वं बीजो भेद हुवे । तीजो भेद पर्याय बंध्यां, चौथो हुवे । पांचमो भेद पर्याय बंध्यां छउो हुवे । सातमो भेद पर्याय बंध्यां आठमो हुवे । चतुरिन्द्रिय नों अपर्याप्तो नवमो भेद पर्याय बंध्यां दशमो हुवे । ११ मो भेद अ ी पंचेन्द्रिय रो अपर्याप्तो पर्याय बंध्यां असन्नी पंचेन्द्रिय रो पर्याप्तो १२ मो भेद हुवे । पिण असन्नी रो र्याप्तो ११ मो भेद पर्याय बंध्यां चउदमों भेद सन्नी रो पर्याप्तो हुवे नहीं ए तो सन्नी रो अपर्याप्तो १३ मों भेद पर्याय बंध्यां १४ मों भेद ी रो पर्याप्तो हुवे । इणन्याय नारकी, देवता में असन्नी रो अपर्याप्तो ११ मों भेद नयी । ए तो १३ मों भेद छै ते पर्याय बंध्यां १४ मों होसी । ते माटे ए सन्नी रो अपर्याप्तो १३ मों भेद छै । पिण असन्नी रो अपर्याप्तो नहीं । जे अपर्याप्ता पणे तो असन्नी अने पर्याय बंध्यां सन्नी हुवे । ए तो बात प्रत्यक्ष मिले नहीं । ए देवता में अने नारकी में असन्नी मरी जाय तेहनों नाम असन्नी छै । ते पिण विमङ्ग न पामे तेतला काल मात्र इज धि दर्शन सहित नेरइया अने देवता नों नाम सन्नी छै । अने अवधि दर्शन रहित नेरइया अने देवता नों नाम अ ी छै । ते संज्ञा मात्र अ ी छै । पिण असन्नी रो भेद नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ६ बोल सम्पूर्णा ।

इति जीवभेदाऽधिकारः ।

## अथ आज्ञाधिकारः ।



केतला एक अज्ञाण जिन आज्ञा बाहिरे धर्म कहे । अने आज्ञा माही पाप कहे । अने साधु आहार करे, उपकरण राखे, निद्रा लेवे, लघु नीति, बड़ी नीति परछे, नदी उतरे, इत्यादिक कार्य जिन आज्ञा सहित करे तिण में पाप कहे । अने कहे—साधु नदी उतरे तिहां जीव री घात हुवे ते माटे नदी उतरे तेहनों साधु ने पाप लागे छै । इम जीव री घात नों नाम लेइ जिन आज्ञा में पाप कहे । अने भगवन्त तो कश्यो श्री घातराग थी पिण जीव री घात हुवे पिण पाप लागे नहीं । ते पाठ लिखिये छै ।

रायणिहे जाव एवं वयासी, अणगारस्स रां भंते !  
भावियप्पणो पुरओ दुहओ मायाए पेहाए रीयं रीय माणस्स  
पायस्स अहे कुक्कड पोतेवा वट्ठा पोतेवा कुलिंग च्छाएवा  
परियावज्जेवा तस्सरां भंते ! किं इरिया वहिया किरिया  
कज्जइ. संपराइया किरिया कज्जइ. गोयमा ! अणगारस्सरां  
भावियप्पणो जाव तस्सरां इरियावहिया किरिया कज्जइ.  
णो संपराइया किरिया कज्जइ. केणट्ठेणं भंते ! एवं  
वुच्चइ जहा सत्तमसए संवुडुद्देसए जाव अट्ठो णिक्खत्तो ।  
सेवं भंते ! भंतेत्ति जाव विहरइ ।

( भगवती धं० १२ उ० ८ )

री० राजग्रही नगरी ने विर्षे. जा० यावत्तं गौतमं भगवान् ने हमे कहे. अ० अणगार ने भगवन् ! भा० भावितात्मा ने. पु० आगल. दु० ४ हाथ प्रमाणे भूमिका ने. प० जोई ने. री०

गमन करतां नै प० पग नै हेठे. कु० कुक्कुट ना न्हाना वालक अथवा अण्डा. व० वटेरा ना वालक अथवा अण्डा. कु० कीड़ी अथवा कीड़ी ना अण्डा. प० परितापना पावे. तो. त० तेहनें. भ० हे भगवन् ! किं स्यू. इ० इरियावहिकी क्रिया उपजे. सं० वा सम्पराय क्रिया उपजे. गो० हे गोतम ! अ० अण्णार नै. भा० भावितात्म नै. जा० यावत्. त० तेहनें. ई० ईरियावहिकी क्रिया उपजे. यो० नहीं साम्परायिकी क्रिया. जा० यावत् क० उपजे. से० ते. के० केणो अर्थे. भ० हे भगवन् ! ए० इम कहिहं. ज० जिम सातमा नै विषे. सं० सम्भृत ना उद्देश्य नै विषे. जा० यावत् अ० अर्थ कहिउं तिम जाणवो से० ते सत्य भ० भगवन् ! भ० भगवान् जा० यावत्. वि० विहरे छै.

अथ इहां कह्यो—जे मान. मायां. लोभ. विच्छेद गया ते साधु ईर्याई. जीव चाले तेहने पग हेठे कुक्कुट ना अण्डा तथा वटेर पक्षी ना अण्डा तथा कीड़ी सरीखा जीव मरे तो तेहनें ईरियावहि की क्रिया लागे। सम्पराय न लागे। इहां ईर्याई चाले ते वीतराग ना पग थी जीव मरे तेहनें ईरियावहिया क्रिया ते पुण्य नी क्रिया लागती कही। ते वीतराग नी आज्ञाई चाले ते माटे पुण्य रूप क्रिया लागती कही। अने साधु आज्ञा सहित नदी उतरे। तिण में पाप कहे जीव मुआ ते माटे। तो जे आज्ञा सहित चालतां पग नै हेठे कुक्कुटादिक ना अण्डादिक मुआ तेहनें पिण तिण रे लेखे पाप कहिणो। इहां पिण जीव मुआ छै। अने जे इहां पाप तहीं तो नदी उतरे. तिण में पिण पाप नहीं, श्री तीर्थङ्कर नी आज्ञा छै ते माटे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

## इति १ बोल सम्पूर्णा ।

तिवारे कोई कहे—ए वीतराग थी जीव मरे तेहनें पाप न लागे। पिण सरागी थी जीव मरे तेहनें पाप लागे इम कहे—तेहनों उत्तर—जो वीतराग पग थी जीव मुआ तेहने पाप न लागे तो वीतराग री आज्ञा सहित सरागी कार्य करता जीव मुआ तेहनें पाप किम लागे। आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ५ कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

समियन्ति मरणमाणस्स समियावा असमिया समिया  
होति उवेहाए आसमियन्ति मरणमाणस्स समियावा अस-  
मियावा असमिया होति उवेहाए ।

( आचाराङ्ग अ० १ अ० ५ उ० ५ )

स० सम्यक्. एहवो. स० मानतो थको. सं० शंका रहितं पणं जे भावना चित्तं सँ भावतो.  
सं० सम्यग् वा. अ० असम्यक् तो पिण तेहने निशंकपणो स० सम्यक् इज्ज हुइ. उ० आलोचो ने-  
जिम ईयां पथिक् युक्तं ने किवारे प्राप्तिना नो घात थाइ परं तेहने घाती न कहिवाइ. तिम  
इहां पिण जाणवो. तथा पहिलां अ० असम्यक् ए वचन असत्य एहवो माने तेहने स० सम्यक्  
तथा अ० असम्यक् छे तो पिण तेहने विपरीत. उ० आलोचने. अ० कृ इज्ज. हो० हुइ  
पुतावता जिम भावै तेहने तिमज संपजे.

अथ इहां इम कह्यो । सम्यक् प्रकारे मानता नें “समिया” कहितां सम्यक्  
छै. ते तथा “असमिया” कहितां असम्यक् छै । पिण सम्यक् पणे आलोची करतां  
ते असम्यक् पिण सम्यक् कहिइ । एतले जिन आज्ञा सहित ोची करता  
कोई विपरीत थयो ते पिण ते शुद्ध व्यवहार जाणी आ ो । ते माटे तेहने शुद्ध  
कहिए । ते केहनी परे जिम ईयां सहित साधु चालतां जीव हणाइ तो पिण तेहने  
पाप न लगे । तिहां शीलाङ्गाचार्य कृत टीका में पिण इम कह्यो । ते टीका  
लिखिये छै ।

“समिय मित्यादि सम्यगित्येवं मन्यमानस्य शंका विचिकित्सादि रहितस्य  
सत स्तद्वस्तु यत्नेन तथा रूपतयैव भावितं तत्सम्यग्वास्या दसम्यग्वास्यात् ।  
तथापि तस्य तल्ल तल्ल सम्यक् प्रेक्षया पर्यालोचनया सम्यगेव भवती यपिथोपयुत्तरं  
क्वचित् प्राणयुपमर्दवत्”

अथ इहां कंशो—सम्यक् जाणी करतां असम्यक् पिण सम्यक् हुवें । ईयां-  
युक्त साधु थी जीव हणाइ पिण तेहने पाप न लगे ते माटे सम्यक् कहिइ । अने  
असम्यक् जाणी करे तेहने असम्यक् तथा सम्यक् पिण असम्यक् हुवे । जे जोयां



बिना चालेऽने एकः पिण जीव न दृणाद् तो पिण ६ काय नों घाती आज्ञा लोपी ते माटे कहंजे । अने आज्ञा सहित चालनां साधु थी जीव मरे तो पिण तेहने पाप न लागे । एइयूं कइयूं । ते माटे सरागो साधु नें पिण आज्ञा सहित कार्य करतां जीव घात रो पाप न लागे तो आज्ञा सहित नदी उतसां पाप किम लागे । तिवारे कोई कहे नदी उतरवा नी आज्ञा किहां दीयी छै । जे १ मांस में ३ माया ना से सबलो दोष कह्यो तो दोय सेव्यां थोड़ो दोप तो लागे । तिम १ मास में ३ नदी ना लेप लगायां सबलो दोष कह्यो छै । तो दोय नदी ना लेप लगायां थोड़ो दोष छै, पिण धर्म नहीं । एइवो कुइतु लगावो नदी उतसां दोप कहे । तेहनों उत्तर—जे २१ सबलां दोपां में कह्यो—३ लेप ते नामि प्रमाण पाणी एइवो १ मासमें ३ लेप लगायां सबलो दोष कह्यो । जे नामि प्रमाण एइवो मोटी नदी एक मासमें एक हीज उतरवी कल्पे छै । ते माटे एहवी मोटी नदी बे उतसां थोड़ो दोप, ३ उतसां सबलो दोप छै । ए नामि प्रमाण पाणी तेहने लेप कहिए । ते नदी एक मास में १ कल्पे, गोडा प्रमाणे २ कल्पे, अर्थ जङ्घा ते पिण्डो प्रमाण पाणी हुवे ते नदी १ मास में ३ कल्पे । अने नामि प्रमाण लेप नदी एक मास में ३ उतसां सबलो दोष छै । ते एक मास में एकहिज कल्पे, ते माटे दोय नों थोड़ो दोष छै । ठाणाङ्ग ठा ५ उ० २ एक मास में घणो पाणी एहवी ५ मोटी नदी बे चार ३ बार उतरवी वर्जो । पिण एक बार उतरवी वर्जो नथी । ते मोटी नदी एक मास में नावादिके करी तथा जङ्घादिके करी १ बार उतरवी कल्पे । पिण बे चार न कल्पे तं बे चार रो थोड़ो दोष अने जे १ बार उतरवी १ मास में ते नदी ३ बार उतसां सबलो दोष लागे । ते पाठ लिखिये छै ।

अन्तो मासस्त तच्चो उदग लेव करेमारो सबले ।

( दशाश्रुतस्कंध, अ० २ )

अ० एक माहे, त० तीन उ० पाणी ना लेप लगाने, लेप ते नामि प्रमाण जल भव-  
माहे ते लेप कहिए नवमो सबलो दोष कह्यो ।

अथ इहां १ मास में ३ उदक लेप । ते उदक लेप नों नामि  
। अथगाहे ते लेप कहिये । एइवो अर्थ कियो छै । तथा ठाणाङ्ग ठा ५

उ० २ उदक लेप नों अर्थ नामि प्रमाण जल अवगाहे ते लेप कहिये । एइवो अर्थ कियो छै । तथा ठाणाङ्क ठा० ५ उ० २ टीका में २ लेप नों अर्थ नामि प्रमाण जल अवगाहे तेहनें लेप कह्यो । ते टीका में लिखिये छै ।

उदक लेपो नामि प्रमाण जलावतरणम् इति”

अथ इहां नामि प्रमाणे जल अवगाहे छे लेप कह्यो । ते माटे ए उदक लेप एक मास में एक चार कल्पे पिण वे चार ३ चार न कल्पे । ते भणी वे चार रो थोड़ो दोप, अने ३ चार रो सबलो दोप छै । इण एक मास मे ३ उदक लेप नों सबलो दोप छै । अने आठ मास में आठ चार कल्पे, नव चार रो थोड़ो दोप १० चार रो सबलो दोप छै । अने जे कुहेतु लगावी कहे—जे एक में ३ माया ना स्थानक सेव्यां सबलो दोप तो एक तथा दोप सेव्यां थोड़ो दोप लागे । तिम नदी रा णि १ तथा २ लेप लगायां थोड़ो दोप कहे तो तिण रे लेखे राति भाजन करे तो सबलो दोप कह्यो छै । अने दिन रा भोजन १ में थोड़ो दोप कहिणो । रात्रि भोजन रो सबलो दोप कह्यो ते माटे । तथा राजा पिण्ड भोगव्यां सबलो दोप कह्यो छै । तो तिण रे लेखे और आहार भोगव्यां थोड़ो दोप कहिणो । तथा ६ मास में एक गण थी बीजे संघाड़े गयां सबलो दोप कह्यो छै, तो तिण रे लेखे ६ मास पछे एक संघाड़ा थी बीजे संघाड़े गयां थोड़ो दोप कहिणो ।

अथ्यान्तर पिण्ड भोगव्यां सबलो दोप कह्यो छै । तो अथ्यान्तर बिना और रो आहार भोगव्यां पिण तिण रे लेखे थोड़ो दोप कहिणो । जो माया ना स्थानक नों नदी ऊपर न्याय मिलाय ते दोष कहे तो यां सर्व में दोष कहिणो । इम पिण नहीं ए माया नों स्थानक तो एक पिण सेवण री आज्ञा नहीं, ते माटे तेहनो तो दोष कहीजे । अने नदी उतारवा नों तो श्री वीतराग द्वच आज्ञा दीधी छै । ते माटे जिन आज्ञा सहित नदी उतरे तिण में दोष नहीं । ते भणी माया ना स्थानक नों अने नदी नों एक सरीखो हंतु मिले नहीं । डाहा हुवे तो बिचारि जोइजो ।

इति २ बोल सम्पूर्ण ।

तिवारे कोई कहे—भगवान् तो कह्यो जे १ मास में ३ नदी उतरवी नहीं । इम कह्यो । पिण जे २ नदी उतरवी एहवो किहां कह्यो छै । तेहनों उत्तर—सूत्र  
बृहत्कल्प उ० ४ एहवो कह्यो छै, ते पाठ लिखिये छै ।

नो कप्पइ निगंथाणवा, इ आओ पंच महा नइओ.  
उदिट्ठाओ गणियाओ वंजियाओ अंतो मासस्स दुक्खुत्तोवा  
तिक्खुत्तोवा उवत्तरित्तए वा संतरित्तए वा. तंजहा---  
गंगा. जउणा. सरयू. कोसिया. मही. अह पुण. एवं जा-  
शोजा एरवइ कुणालाए, जत्थ चक्रिया एगं पायंजले किच्चा  
एगं पायं थले किच्चा एवं से कप्पइ. अंतोमासस्स दुक्खुत्तो  
वा तिक्खुत्तो वा उवत्तरित्तएवा. संतरित्तएवा, जत्थ नो एवं  
चक्रिया एवं से नो कप्पइ अंतो मासस्स दुक्खु गो वा ति-  
खुत्तो वा उत्तरित्तएवा संतरित्तएवा ॥ २७ ॥

( बृहत्कल्प उ० ४ )

यो० न कल्पे. नि० साधु ने अथवा साधवी ने इ० आगले कहिल्ये ते. प० पंच. म०  
महानदी. मोटी नदी. उ० सामान्य पण्ये कही. ग० संख्या ५. वि० नाम करी ने प्रकट जाणोई  
छै. अ० एक मास माही. दु० बे बार. ति० तीन बार. उ० उतरवो. संतरवो. सं० ते जिम छै ते  
कहे छै. ग० गंगा. ज० यमुना. स० सरयू. को० कोसिया. म० मही नदी. घणा पाणी प्रते तिरतां  
दोहिला हिवे. ए० इम जाणी ने ए० एरावती नदी. कु० कुडाला नगरी ने समोपे बहे छै. अर्ध  
जङ्घा प्रमाण उंडी अथवा बीजी पिण एहवी हुवे जिहां. ख० इम करो सके. ए० एक पग जल ने  
विपे. करो ने. ए० एक पग ऊंचो राखी ने. ए० इम करो ने कल्पे. अ० एक मास माहि. दु० बे  
बार अथवा. ति० त्रिण बार उ० उतरवो. स० बार बार उतरवी.

अथ अठे कह्यो छै, ए पांच मोटी नदी एक मास में बे बार अथवा तीन  
बार न कल्पे । “उत्तरित्तएवा” कहितां नावादिके करी तथा “संतरित्तएवा”  
कहितां जङ्घादिके करी उतरवी न कल्पे । ए मोटी नदी नाभि प्रमाण छै ते माटे

इहां वे बार उतरवी वज्रीं । पिण एक बार न वज्रीं । ए नामि प्रमाण किम जाणिइ । “संतरित्तएवा” कहिता बाहि तथा जंघादिके करीने न उतरवी कही । ते माटे ए नामिप्रमाण छै । तथा घणौ पाणी छै ते माटे नावाइ करी कही । वे बार वज्रीं ते माटे नामि प्रमाण तथा नावा पिण एक मासमें एक बार उतरवी कल्पै । अने अर्ध जङ्घा पींडी प्रमाण कुञ्जला नगरी समीपे एरावती नदी वहै ते सरीखी नदी तिहां एक पग जल नें विपे एक पग सल ते आकाश नें विषे इम एक मासमें ये बार त्रिण बार उतरवी । “संतरित्तएवा” कहितां बार बार उतरवी कल्पे इहां अर्द्ध जङ्घा पिण्डी प्रमाण नदी १ मास में ३ बार उतरवी कही । ए नदी उतरवा नी श्री तीर्थद्वरे आज्ञा दीधी ते माटे जिन आज्ञा में पाप नहीं । अने नदी उतरे तिण में पाप हुवे तो आज्ञा देवा वालां ने पिण पाप हुवे । अने जो आज्ञा देणवालां नें पाप नहीं तो उतरणवाला ने पिण पाप नहीं । मुहे तो साधु ने जिन आज्ञा पालवी । किणहिक कार्य में जीव री घात छै । पिण ते कार्य री जिण आज्ञा छै तिहां पाप नहीं । किणहिक कार्य में जीव री घात नहीं पिण तिण कार्य में जिन आज्ञा नहीं ते माटे तिहां पाप छै । तिम नदी उतलां में जिन आज्ञा छै ते माटे पाप नहीं । तिवारे कोई कहे । जो नदी उतलां पाप न हुवे तो प्रायश्चित्त क्युं लेवे । तेहनों उत्तर—ए प्रायश्चित्त लेवे ते नदी उतरवा रा कार्य रो नहीं छै । जिम भगवन्ते कह्यो । “एग पायं जले किच्चा” “एगं पायं थले किच्चा” इम उतरणी आयो नहीं हुवे, कदाचित् उपयोग में खामी पड़ी हुवे ते अजाण पणा रूप दोष रो प्रायश्चित्त इरिया वहिरी थाप छै । जो इरिया सुमति में विशेष खामी जाणे तो वेलो तथा तेलो पिण लेवे, ए तो खामी रो प्रायश्चित्त छै पिण नदी रा कार्य रो प्रायश्चित्त नहीं । जिम गोचरी जाय पाछो आय साधु इरियावहि गुणे, दिशा जाय पाछो आय ने इरियावहि गुणे, पडिलेहन करी नें इरियावहि गुणे, पिण ते गोचरी दिशा, पडिलेहण, रा कार्य रो प्रायश्चित्त नहीं । ए प्रायश्चित्त तो कार्य करतां कोई आज्ञा उल्लङ्घ नें अजाण पणे दोष लागो हुवे तेहनों छै । जिम भगवान् कह्यो तिम करणी न आयो हुवे ते खामी नी इरियावहि छै । पिण ते कार्य रो प्रायश्चित्त

नहीं तिम नदी रा कार्य रो प्रायश्चित्त नहीं । ए तो भगवान् कह्यो ते रीति उतरणी न आयो हुवे ते खामी रो प्रायश्चित्त छै । आगे अनन्ता साधु नदी उतरतां मोक्ष गया छै । जो पाप लागे तो मोक्ष किम जाय । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इ ३ लेखसंपूर्ण ।

बली कोई कहे—जिहां जीव रो घात छै तिहां जिन आत्मा नहीं ते नृपा-वादी छै । ए तो प्रत्यक्ष नदी में जीव घात छै, तिहां भगवन्त आत्मा दीयो छै । ते पाठ लिखिये छै ।

से भिक्षू वा ( २ ) गामा एगामं दूइजमाणे अंतरा से जंघा संतारिमे उदए सिया से पुंवामेव से सीसोवरियं कायं पादेय पमज्जेजा से पुंवामेव पमज्जेत्ता एगं पायं जले किंवाः एगं पायं थले किं । तओ संजया मेव जंघा संतारिमे उदए आहारियं रियेजा ॥ ६ ॥ से भिक्षू वा ( २ ) जंघा संतारिमे उदगे आहारियं रीयमाणे एो हत्थेण वा हत्थं, पादेण वापादं, काएण वा कायं, आसाएजा से अणासादए अणासादमाणे. तओ संजया मेव जंघा संतारिमे उदए हारियं रियेजा ॥ १० ॥

( आचारारण्य श्रु० २ आ० ३ उ० २ )

से० ते. भि० साधु. साध्वी. ग्रा० ग्रामानुग्राम प्रते. दु० विहार करतां थकां हम जाणें सि० विचाले. जं० जहुवा सन्तारिम. उ० पाणी छै. से० साधु. प० पहिलां. म० मस्तक. का० शरीर. पा० पग लगे शरीर. ने० पु० पहिलां. प० प्रमाजी ने०. जा० यावत्. ए० एक पग जले करी. ए० एक पग करी. एतावता चालतां जिम पाणी बुहलाइ नहीं तिम जालवो. त० तिवारे पले. अ० जयन्ता रहित. जं० जंघा सन्तारिम. उ० उरक ने० बिषे. ओ जगन्नाथे जिम ईयां कही

तिम रीति चाले ॥६॥ द्विवे बली विरोध कहे छै. से०ति. सा० साधु. साध्वी. जं० जङ्घा प्रमाण उतरवो. उ० उदक पायो. आ० जिम, ओ जगन्नाये ईयां कही छै, तिम चालतो थको. यो० नहीं हाथ सू. ह० हाथ. प० पग सू पग. का० काया सू काया. अ० अङ्गोपाङ्ग महोमाही अण फर-सतो थको. त० तिशरे पछे. सं० जयणा सहित. जं० जंघा प्रमाण उतरे. उ० उदक ने विषे. आ० जिम जगन्नाये ईयां कही तिम चाले.

अथ इहां पिण काया. पग. नें पूजो एक पग जल में एक स्थले में पग ते ऊंचो उपाड़ी इम जङ्घा ते पिण्डो प्रमाण नदी उतरवी कही । इहां तो प्रत्यक्ष नदी उतरवा री आज्ञा दीधी छै । इहां नावा नों घणो विस्तार कह्यो छै । ते नावा नी पिण आज्ञा दोत्री छे । तो जिन आज्ञा में पाप किम कहिये । इहां नदी तथा नावा उतहां जीव री हुवे, पिण जिन आज्ञा छै ते माटे पाप नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ४ बोल सम्पूर्ण ।

बली अनेक ठामे जीव री छे ते कार्य री जिन आज्ञा छै, तिहां पाप नहीं । ते पाठ लिखिये छै ।

निगंथे निगंथी सेयंसिवा पंकंसिवा वरागंसिवा.  
उदयंसिवा ओक समाणिव ओबुब्भ माणिव गेणहमाणे वा  
अवलंबमाणेवा नाइक्कमइ ॥ १० ॥

( बुद्धकल्प उ० ६ )

नि० साधु. नि० साध्वी नें. से० पाणी सहित जे कादो तिहां बूझती. प० जल रहित कादा नें विषे बूझती. प० अनेरा ठाम नों कादो आब्यो पासलो ते डीलो अथवा नीलण फूजण. उ० नदी प्रमुख वा पाणी माहि. उ० उदक पाणी माहि ते पाणीये करी साणीजली बकी नें. नि० ग्रहतां यकां पूर्ववत्. आ० आधार देतां बकां. ना० आज्ञा अतिक्रमे नहीं.

अथ ७ कह्यो—साध्वी पाणी में डूबती नें साधु बाहिरें काढे तो माझा उल्लंघे नहीं । जे पाणो में डूबती साध्वी नें पिण साधु बाहिरें काढे तेहमें एक तो पाणी ना जीव मरे. बीजो साध्वी रो पिण :संघटो. ए विहू में जिन आझा छै ते माटे तिण में पाप नहीं । ए तिम नदी उतरे तिहां जीव रो घात छै, पिण जिन आझा छै ते माटे पाप नहीं । अनें जे नदी में पाप कहे तिण रे लेखे नदी में डूबती साध्वी नें पाणी माहि थी बाहिरें काढे तिण में पिण पाप कहिणो । अनें साध्वी पाणो माहि थी बाहिरें काढ्यां पाप नहीं तो नदी उतसां पिण पाप नहीं छै । अनें पाणी माहि थी साध्वी नें बाहिरें काढे अनें नदी उतरे. ए विहू ठिकाने जीव नी घात छै, अनें विहू ठिकाणे जिन आझा छै । ते माटे विहू ठिकाणे पाप नहीं । डाहा हुवे तो विचारि. जोड़ो ।

## इति ५ बोल सम्पूर्णा ।

तथा बली बृहत्कल्पः ३० १ कह्यो ते पाठ लिखिये छै ।

नो कप्पइ निगंथस्स एगणियस्स राओवा वियाले वा वहिया वियार भूमिं वा विहार भूमिं वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा कप्पइ से अप्पविइयस्स वा अप्प तईयस्स वा राओवा वियाले वा वहिया वियाद भूमिं वा विहार भूमिं वा निक्खमित्तए वा । पविसित्तए वा ॥ ४७ ॥

( बृहत्कल्प ३० १ )

नो० न कल्पे. नि० निर्गन्थ साधु नें. ए० एकलो उठवो जायवो. रा० रात्रि नें विपे. व० बाहिर. वि० स्थण्डिल भूमिका नें विपे. रि० स्वाध्याय भूमिका नें विपे. नि० स्थानक थी बाहर निकलवो स्वाध्याय प्रमुख करवा. प० पेलवो. क० कल्पे से० ते. साधु नें अ० पोता सहित बीजो. अ० पोता सहित तीजो. रा० रात्रि नें विपे. दि० सन्ध्या नें विपे.

च० बाहिर. वि० स्थंडिले जाइवो. वि० स्वाध्याय करिवा नी भूमिका नें विप्रे जायवो. पा० पेसवो.

अथ अडे पिण कह्यो—रात्रि तथा विकाले “विकाल ते सन्ध्यादिक केत-  
लीक वेला ताई” विकाल कहिई ) न कल्पे एकला साधु नें स्थानक बाहिरे दिशा  
जाइवो तथा स्थानक बाहिरे स्वाध्याय करवा जाइवो । अने आप सहित वे जणा  
नें तथा तीन जणा नें स्थानक बाहिरे दिशा जाइवौ तथा स्वाध्याय करवा जायवो  
कल्पे । इहां पिण रात्रिनें विप्रे स्थानक बाहिरे दिश जावा री तथा स्वाध्याय करवारी  
आज्ञा दीधी । तिहां रात्रिमें अप्काय वर्ये ते माटे इहां पिण जीव री घात छै । जो नदी  
उतखां जीव मरे तिण रो पाप कहै तौ रात्रिमें स्थानक बाहिरे दिशा जावै तथा  
स्वाध्याय करवा जावै तिहां पिण तिण रे लेखे पाप कहिणौ । अने रात्रिमें दिशा  
जाय तथा स्वाध्याय करवा जाय तिहां पाप नहीं तो नदी उतखां पिण पाप नहीं ।  
तथा स्थानक बाहिरे दिशा जाय तथा स्वाध्याय करवा जाय ए विहूँ डिकाणे जीव  
री घात छै अने विहूँ डिकाणे जिन आज्ञा छै । जो इण कार्य में पाप हुवे तो उदेरी  
नें स्वाध्याय करवा क्यूं जाय, पिण इहां जिन आज्ञा छै ते माटे पाप नहीं । तिम  
नदी उतखां पिण पाप नहीं । जो चीतराग री आज्ञा में पाप हुवे तो किण री आज्ञा  
में धर्म हुवे । अने जे कार्य में पाप हुवे तिण री केवली आज्ञा किम देवे । डाहा  
हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ६ वोत सम्पूर्णा ।

इति आज्ञाधिकारः ।



## अथ शीतल-आहार अधिकारः ।

के            कहे—वासी ठण्डा आहार में द्वीन्द्रिय जीव है ।    कहे ते  
सूत्र ना अजाण है ।    भगवन्त तो    २ सूत्र में ठण्डो आहार लेणो कह्यो  
। ते पाठ लिखिये ।

पं णि चैव सेवेज्जा सीय पिण्डं पुराणं म्मासं ।  
अदुवक्कसं पुलागं वा जवणट्ठाए निसेवए थुं ॥१२॥

( उत्तराध्ययन अ० ८ गा० १२ )

पं० निरस अयनादिक. से० भोगवे. सी० शीतल पियड. आ० आहार घणावर्ष नू जूनों  
धान कु० अम्यन्तर नीरस. उदद. अ० अथवा. व० मूंग उददादिक. पु० असार वालचनादिक.  
ज० शरीर ने निर्वाह यावा ने अर्थे. नि० भोगवे. म० चोरनू चूर्ण.

अथ इहां पिण शीतल ठण्डो आहार लेणो कह्यो । जे ठण्डा आहार में  
द्वीन्द्रिय जीव हुवे तो वान् ठण्डा आहार भोगवण री आज्ञा क्यूं दीधी । डाहा  
हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १ बोल सम्पूर्णा ।

तथा घली आचाराङ्ग में कह्यो—ते पाठ लिखिये है ।

अविसूइयं व । सीय पिंडं पुराण कुम्मासं ।

अदु वुक्सं पुलागं लद्धे पिंडे अलद्धए दविए ॥१३॥

( आचाराङ्ग शु० ११ अ० ६ उ० ४ )

अ० डीलो द्रव्य. छ० ल सरीलो सुखो. सी० शीतल. पि० आहार. पु० जूना घणा दिवसना नीपवा. कु० उड्ढां नूं भात अ० अथवा. वु० जूना धान नों पु० चयणा नूं धान. लाथे थके पि० आहार. अ० अणलाथे थके. रागद्वेष रहित. द० एहवो थको. मुक्ति गामो पाय.

अथ इहां पिण भग ओल्यो ( उण्डो आहार विशेष ) लीधो कह्यो । वली शीतल पिण्ड ते वासी आहार पिण भगवान् लीधो एहवो कह्यो । तिहां टीका में पिण “सीयपिण्ड” प नों वासी कह्यो । तिहां टीका लिखिये छै ।

“शीत पिंडं वा पर्युषित भक्तंवा तथा पुराण कुत्माषं वा बहुदिवस सिद्ध स्थित कुत्माषंवा”

इहां टीका में पिण ते—शीतल पिण्ड ते रात्रि नों रह्यो वासी भात, पुराणा उड्ढा नो भात, तथा घणा दिवस ना नीपना उड्ढा नों भात भगवान् लीधो, ते माटे उण्डा वासी आहार में जोव नहीं । डाहां हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २ बोल सम्पूर्णा ।

तथा अनुत्तरोवाहं में कह्यो—घन्ने अणगार एहवो अभिग्रह धासो, ते पाठ लिखिये छै ।

तएणं से धरणे अणगारे जंचेव दिवसे ७ भवित्ता जाव पव्वइयाए तं चेव दिवसेणं समणं भगवं महावीरं वंदइ नमं-

सइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी एवं खलु इच्छामिणं  
 भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुणाए समाणे जाव जीवाए छं  
 छट्ठेणं अणिवित्तेणं ।यंवि परिगहिणं तवो कस्मेणं  
 अप्पाणं भाव माणस्स विहरित्ताए छट्ठस्स वियणं पारणयंसि  
 कप्पइ, से आयंवलस्स पडिगाहित्ताए णो चेवणं अणायं  
 विलेतं पिय संसं णो चेवणं असंसद्धं तं पिय णं उब्भिय  
 धम्मियणो चेवणं अणज्झिय धमि यं तं पिययणं अणो वहवे  
 समण. माहण. अतिथी. वि वण वणी मग्ग नाव कंखंति  
 अहासुहं देवाणुप्पिया मा पडिवंधं रेह ।

( अनुत्तर उवाह )

त० तिवारे. से० ते. ध० धन्नो अणगार. जे० जि० जिन दिन मुंडितहुवो. प० दीक्षा  
 दीधी तिण ही, स० अमण भगवान् महावीर नें. वं० वांढे नमस्कार करीने. ए० इम बोल्पी  
 ए० इम निश्चय इ० माहरी इच्छा छै. मं० हे भगवन् ! तु० तुम्हारी. अ० आज्ञा हुइ थके. जा०  
 यावत् जीव लगे. छ० वेले २ पारणो. अ० आंतरा रहित. आ० आंवलिक रुं. प० एहवो अभि-  
 ग्रहो करी नें. त० तप कर्म ते १२ भेदे तिण सूं. अ० आपणी आत्मा नें मा० भावतो थको विचरूं  
 छ० जिवारे बेला रो. पा० पारणो आवे तिवारे. क० कल्पे. म० मुक्त नें. आ० आंवल योग्य  
 ओदनादिक. प० एहवो अभिग्रह करूं. णो० नहीं. 'चे० निश्चय करी नें'. आ० आंवल योग्य  
 ओदनादिक न हुइ ते न लेउं. त० ते पिण सं० खरड्या हस्तादिक लेस्यूं. णो० नहीं चे० निश्चय  
 करी नें. अ० अण खरड्यो न लेस्यूं. त० ते पिण. उ० नाखीतो आहार लेस्यूं. ध० स्वभाव  
 छै. णो० नहीं चे० निश्चय करी नें. अ० अणनाखीतो आहार न लेस्यूं. ध० स्वभावे. त० ते  
 पिण. अ० अनेरां. व० घणा. स० अमण शाक्यादिक. मा० ब्राह्मणादिक. अ० अतिथि.  
 किं० कृपण दरिद्री. व० वणीमग रांक. ते न बांछे ते लेस्यूं. ( भगवान् बोल्या ) आ० जिम  
 तुम्हा नें छल हुइ तिम करो. दे० हे देव! नुप्रिय. मा० ए तप करवा नें विपे डील मत करो.

अथ धन्ने अणगार अभिग्रह लियो वेले २ पारणे आंवल. खरड्ये हाथे  
 लेणो, ते पिण नाखीतो आहार वणीमग भिख्यारी बांछे नहि तेहवो आहार लेणो

कह्यो । ते तो अत्यन्त नीरस ठण्डो स्वाद रहित. घणीमग रांक वांछे नहिं ते लेणो कह्यो । अने ठण्डा में जीव हुवे तो किम लेवे । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ३ बोल सम्पूर्ण ।

तथा प्रश्न व्याकरण अ० १० में कह्यो । ते लिखिये छै ।

पुणरवि जिन्मिंदिएण साइयरसाइं अमणुणण पावगाइं  
किंते अरस विरस सीय लुक्ख निजप्प पाण भोयणाइं  
दोसीय वावणण कुहिय-पूहिय अमणुणण विण्णु सुय २ बहु  
दुब्बिगंधाइ तित्तकडुअ कसाय अं विल रस लिंद नी रसाइं  
अणुणसुय एव माइएसु अमणुणण पावएसु तेसु समणेण रु  
सियव्वं जाव चरेज धम्मं ॥ १८ ॥

( प्रसव्याकरण अ० १० )

उ० वली. जि० जिह्वा इन्द्रिये करी. सा० अस्वादय रस. अ० अमनोज्ञ. पा० पाहु-  
आरस अस्वादो चारित्र्या ने द्वेष न आणिवो. कि० ते केहनो. अ० गुललचनादिक लूखो  
चांपर रहित. रस रहित. वि० पुराना. भावे करी विगतंरस. सी० ताड़ा जेह थकी शरीर नी थाप  
नी न थाई एतावता निर्वल रस. भोजन तथा एहवा. पाणी ने दो० वासी अन्नादिक. व० वनिष्ट  
कं० कह्यो. पु० अपवित्त अत्यन्त कुह्यो. अ० अमनोज्ञ. वि० विण्णारस. व० घणा दु० दुर्गन्ध  
ति० नीत्र सरीखो. क० सूठ मिरच सरीखो. क० कपायलो बहेड़ा सरीखो. अ० अविल रस तक्र  
सरीखो. लि० शैवाल सरीखो नी० पुरातन पाणो सरीखो. नीरस रस सहित. एहवी रस अस्वाद  
द्वेष न आणिवो. अ० अनैरा. इत्यादिक रसने विषे. अ० अमनोज्ञ. पा० पाहुआ. तेहनं विषे.  
या० रिसवो नहई. जा० इत्यादिक पूर्ववत्. चे० धर्म चारित्र जलक्षण रूप निरतिचार प०चे, चौथो  
भावना कही.

अटे पिण शीतल आहार लेणो कह्यो। चली “दोसीण” कहितां वासी अन्नादिक वाचण कहितां विमष्ट कह्यो न्त नोण विणडो रस पहवो आहार भोगवी चारित्तया नें द्वेष न आणवो कह्यो। ते माटे ठण्डा आहार में विणस्यां पुद्गल कहीजे। पिण जीव न कहीजे। जे किणहिक काल में ठण्डो आहार नीलण फूलण सहित देखे ते तो लेवो नहीं। तथा उन्हाला में १२ मुहूर्त्त नी रात्रि १८ मुहूर्त्त नों दिन हुवे जो सन्ध्या नी कीधी रोटी प्रभाते न लेवे वासी में जीव श्रद्धे ते माटे। तो तिण में बीचमें मुहूर्त्त १२ बीत्यां जीव श्रद्धे तो जे प्रभात री कीधी रोटी ते आथण रा वि लेवी। तिण बीच में तो १७-१८ मुहूर्त्त बीत्यां तिण में जीव उ क्यून श्रद्धे। रात्रि में जीव उपजे दिन में जीव न उपजे, एइवो तो सूत्र में बाल्यो नहीं। जे प्रभात री कीधी रोटी में आथण रा जीव श्रद्धे न कहे तो सन्ध्या नी कीधी रोटी में पिण प्रभाते जीव न कहिणा। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ४ बोल सम्पूर्णा ।

इति शीतल-आहाराधिकारः ।



## अथ सूत्रप नाऽधिकारः ।



केतला एक कहे—गृहस्थ सूत्रं भणे तेहनी जिन आज्ञा छै । ते सूत्र ना अजाण छै अने भगवन्त नी आज्ञा तो साधु नै इज्जु छै । पिण सूत्र भणवा री गृहस्थ नै आज्ञा दीधी न थी । जे प्रश्न व्याकरण अ० ७ कइयो ते पाठ लिखिये छै ।

महारिसीण्य समय्य दिणं देविंद नरिंद भायियत्थ ।

( प्रश्न व्याकरण अ० ७ )

म० महर्षि उत्तम साधु तेहनें स० समय्य रुणिये सिद्धान्त तेणे करी. प० दोधी श्री वीतरागे दीधो सिद्धान्त साधु होज भणी सत्य वचन जाणे भापे पुणे अक्षरे हम जाणिये. श्री वीतराग नी आज्ञाई सिद्धान्त भणियां. साधु होज नै छे. दीजा गृहस्थ नै दीधां हम न कइयो । ते भणी बली गीतार्थ कहे. ते प्रमाण. दे० देव सौवर्म हन्दादि<sup>६</sup> न० नरेन्द्र राजादिक तेहनें. भा० भाष्या. प० परूषा. अर्थ जेहना एतावता नरेन्द्र देवेन्द्रादिक सिद्धान्तार्थ सांभली सत्य वचन जाणे.

अथ इहां कइयो—उत्तम महर्षि साधु नै इज्ज सूत्र भणवा री आज्ञा दीधी । ते साधु सिद्धान्त भणी नै सत्य वचन जाणे भापे । अने देवेन्द्र नरेन्द्रादिक नै भाष्या अर्थ ते सांभली सत्य वचन जाणे । ए तो प्रत्यक्ष साधु नै इज्ज सूत्र भणवा री आज्ञा कही । पिण गृहस्थ नै सूत्र भणवा री आज्ञा नहीं । ते माटे आवक सूत्र मणे ते भाप रे छांदे पिण जिन आज्ञा नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १ बोल सम्पूर्ण ।

तथा व्यवहार उद्देश्य १० जे साधु सूत्र भणे तेहनी पिण मर्यादा कही  
छै । ते पाठ लिखिये छै ।

तिवास परियाए समणस्स निग्गंथस्स कप्पति आचार  
कप्पे नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए वा चउवास परियाए समण  
णिग्गंथस्स कप्पति सुयगड एणमं अंगं उद्दिसित्तए वा ।  
पंचवास परियायस्स समणस्स निग्गंथस्स कप्पति दसाकप्प-  
ववहार नामं अज्झयणे उद्दिसित्तएवा । अट्ठवास परियायस्स  
समणस्स निग्गंथस्स कप्पति ठाण समवाए एणमं अङ्ग उद्दि-  
सित्तए । दसवास परियायस्स समणस्स निग्गंथस्स कप्पति  
विवाहे नाम अंगे उद्दिसित्तए ।

( व्यवहार-१० उ० )

ति० ३ वर्ष नी प्रवज्या ना धणी नें. स० अमण. नि० निर्प्रन्य नें. आ० आचार. कल्प.  
नाम. अ० अ०प्रयत्न. उ० भणवो. च० ४ वर्ष नी प्रवज्या ना धणी नें. स० अमण. नि० निर्प्रन्य  
नें. स० अमण. नि० निर्प्रन्य नें. क० कल्पे. छ० सुयगडाङ्ग. उ० भणवो. प० ५ वर्ष नी प्रवज्या  
ना धणी नें. स० अमण. नि० निर्प्रन्य नें. द० दशाश्रुत स्कन्ध व० बृहत्कल्प. व० व्यवहार  
नामे अध्ययन. उ० भणवो. अ० आठ वर्ष नी प्रवज्या ना धणी नें. स० अमण. नि० निर्प्रन्य नें.  
क० कल्पे. ठा० ठाणाङ्ग अने. समवायाङ्ग. उ० भणवो. १० वर्ष नी प्रवज्या ना धणी नें. स०  
अमण. नि० निर्प्रन्य नें. क० कल्पे. त्रि० विवाह पणत्ति नाम अंग. उ० भणवो.

अथ अठे कह्यो—तीन वर्ष दीक्षा लियां नें थया ते साधु नें आचार.  
कल्प ते निशीथ. सूत्र भणवो कल्पे । चार वर्ष दीक्षा लियां साधु ने कल्पे सूय-  
गडाङ्ग भणवो । ५ वर्ष दीक्षा लियां साधु नें कल्पे दशाश्रुतस्कंध. बृहत्कल्प.  
अने व्यवहार सूत्र भणवो । अने आठ वर्ष दीक्षा लियां साधु नें कल्पे ठाणाङ्ग सम-  
वायाङ्ग. भणवो । १० वर्ष दीक्षा लिया साधु नें कल्पे भगवती सूत्र भणवो ।  
४ साधु नें पिण मर्यादा सूत्र भणवा रो कही । जे ३ वर्ष दीक्षा लियां पछे निशीथ

सूत्र भणवो कल्पे । अने ३ वर्ष दीक्षा लियां पहिलां तो साधु ने पिण निशीथ सूत्र भणवो न कल्पे । अने ३ वर्ष पहिलां साधु निशीथ सूत्र भणे तेहनी जिन आक्षा नहीं । तो गृहस्थ सूत्र भणे तेहनी आक्षा किम देवे । जे ३ वर्षां पहिलां साधु सूत्र भणे ते पिण आक्षा बाहिरे छै तो जे गृहस्थ सूत्र भणे ते तो प्रत्यक्ष बाहिरे छै । जे निशीथ आदि दे ० भणे ते जिन आक्षा में छै तो जे साधु ने ३ वर्षां पहिलां निशीथ भणवा री आक्षा क्युं न दीधी । अने साधु ने पिण ३ वर्ष पहिलां आक्षा न देवे तो श्रावक सूत्र भणे तेहने आक्षा किम देवे । ए तो प्रत्यक्ष श्रावक कालिक उत्कालिक सूत्र भणे ते आक्षा बाहिरे छै । पोता नै छादे भणे छै तेहमें धर्म नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोड़जो ।

## इति २ बोल सम्पूर्ण ।

तथा निशीथ उ० १६ कहाँ—ते पाठ लिखिये छै ।

जे भिक्षु अण उत्थियंवा गारत्थियं वा वायतिवायं तं  
वा साइज्जइ ॥ २७ ॥

( निशीथ उ० १६ )

जे० जे कोई साधु साध्वी. अ० अन्यतीर्थी ने. गा० गृहस्थ ने. बा० वाचणी दे. वा० वाचणी देता ने अनुमोदे तो पूर्ववत् प्रायश्चित्त कछो.

अथ इहां कहाँ—अन्यतीर्थी ने तथा गृहस्थ ने साधु णी देवे तथा वाचणी देता ने अनुमोदे तो प्रायश्चित्त आवे । ते माटे साधु वाचणी देवे नहीं वाचणी देता ने अनुमोदे नहीं तो गृहस्थ सूत्र भणे तेहने धर्म किम हुवे । जे श्रावक ने सूत्र नी वाचणी देता ने साधु अनुमोदना करे तो पिण चौमासी-दण्ड आवे तो



ગૃહસ્થ આચરે મતે સૂત્ર ની વાંચણી માંહો માહિ દેવે તેહ મેં ધર્મ કિમ હુવે હુવે । ડાહ્યા હુવે તો વિચારિ જોડજો ।

## इति ३ ेल सम्पूर्णा ।

ચલી તિળ હીજ ઠામે નિશીય ૩૦ ૧૬ કહ્યો—તે પાઠ લિખિયે છે ।

जे भिक्षू आयरिय उवज्झाएहिं अविदिन्नं गिरं आइ-  
यइ आइयंतं वा साइज्जइ. ॥ २६ ॥

( નિશીય ૩૦ ૧૬ )

જે० જે કોઈ સાધુ. સાધ્વી. આ० આચાર્ય. ૩૦ ઉપાધ્યાય ની. અ० અણદીધી. ગિ० ગાણદિ  
થા० આચરે ભણે વાંચે. આ० આચરતાં ને વાંચતા ને અનુમોદે તો પૂર્વવત્ પ્રાયશ્ચિત્ત.

મઠે હમ કહ્યો—જે ાર્ય ઉપાધ્યાય ની અણ દીધી વાચણી આચરે  
। આચરતાને અનુમોદે તો ચૌમાસી દંડ આવે । તે ગૃહસ્થ આપરે મતે સૂત્ર ભણે  
તે તો આચાર્ય રી અણ દીધી વાચણી છે । તેહની અનુમોદના કિયાં ચૌમાસી દંડ  
આવે તો જે અણદીધાં વાચણી ગૃહસ્થ આચરે તેહને ધર્મ કિમ કહિયે । શ્રાવક સૂત્ર  
ભણે તેહની અનુમોદના કરણ ચાલા ને ધર્મ નહિ તો શ્રાવક સૂત્ર ભણે તેહને ધર્મ  
કિમ કહિયે । ડાહ્યા હુવે તો વિચારિ જોડજો ।

## इति ४ वोला सम्पूर्णा ।

તથા ઠાળાઝૂ ઠાળે ૩ ૩૦ ૪ કહ્યો—તે લિખિયે છે ।

तउ अवायगिज्जा प० तं०—आविणीए विगइ पांडवच्चे  
वि गो सियया हुडे ।

( ठाणांग ठा० १ उ० ४ )

त० त्रिण प्रकारे वाचना नें अयोग्य. प० परुष्या. तं० ते कहे छै. अ० सूर्यार्यना देणहार  
नें बंदना न करे ते अविनीत. वि० घृतादिक रस नें विषे गृध्र. अ० क्रोध जेणे उपयमान्यो नथो.  
ति नें बली २ उदेरे.

इहां कह्यो—प ३ णी देवा योग्य नहीं। अविनीत १ विघे ना  
लोलुपी २ क्रोधी रवमावी बली २ उदेरे ३ प तीन नें पिण वाचणी देणी नहीं  
तो गृहस्थ तो क्रोधी. मानी. पिण हुवे अविनीत पिण हुवे। विघे नों गृध्र लो  
आदिक नों गृध्र पिण हुवे। ते माटे श्रावक नें वाचणी देणी नहीं। अनं साधां री  
आज्ञा बिना कोई गृहस्थ सूत्र वांचे तो पोता नो छांदो छै। तेहनें साधु अनुमोदे  
पिण नहीं, तो गृहस्थ सूत्र वांचे तेहनें धर्म किम हुवे। डाहा हुवे तो विचारि  
जोइजो ।

इति ५ बोल सम्पूर्णा ।

तथा उवाहं प्रश्न २० श्रावकां रे अधिकारे एहवो तो । ते पाठ लिखिये छै ।

निगंथे पावयणे निस्संकिया णिवकंखिया निव्विति-  
गिच्छा लङ्घट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा विणिच्छियट्ठा  
अट्ठिमिज पेमाणु रागरत्ता ॥ ६७ ॥

( उवाहं प्रश्न २० )

नि० निग्रंथ श्री भगवन्त नों भाष्यो. पा० श्री जिन धर्म जिन शासन ना भाव भेद नें  
विषे. वि० शंका रहित. नि० निरन्तर अतिशय सं कांक्षा अनेरा धर्म नी बांछा रहित. णि० नि-

रन्तर अतिशय सू त्तिगिच्छा धर्म ना फल नों संदेह तिणे रहित. ल० लाघा छै सूत्र ना अर्थ वार वार सांभलवा थकी. अ० ग्रहण बुद्धिई ग्रहा छै मन नें विषे धारया छै. पु० पूछा छं अर्थ संशय ऊपने. वार २ पूछवा थकी. अ० वार २ पूछयां थकां अतिशय सू पाम्या अर्थ निर्याय करी धारया अ० जेहनी अस्थि सीजी पिण प्रेमानुराग रक्त छै. धर्म नें विषे.

अथ इहां गो—अर्थ लाघा छै. अर्थ । छै. अर्थ पू । छै. अर्थ जाण्या छै. इहां श्रावकां नें अर्थां रा जाण ।। पिण इम न कह्यो “लद्धासुत्ता” जे लाघा भण्या छै सूत्र न कह्यो ते माटे सिद्धान्त भणवा नी आज्ञा साधु नें इज छै । पिण श्रावक नें नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ६ बोल सम्पूर्णा ।

। वली सुयगडाङ्ग में श्रावकां रे अधिकारे एहवो कह्यो ते लिखिये छै ।

इणमं निग्गंथे पा णे निस्सेकिया णिकंखिया निठि-  
तिगिच्छा द्वा गहिय । पुच्छि । विणिच्छियट्ठा भिग-  
गयट् । ट्ठि मिं पेमाणु रागरत्ता ।

( सुयगडांग अ० १८ )

इ० एह० नि० निग्रन्थ श्री भगवन्त नों भण्यो. पा० श्री जिल धर्म जिन शासन ना भाव मेइ नें विरे. नि० शं हा रहित. नि० निरन्तर अतिशय सू कांक्षा अनेरा धर्म नी बांछा रहित. णि० निरन्तर अतिशय सू त्तिगिच्छा धर्म ना फल नों संदेह तिणे रहित. ल० लाघा छै सूत्र ना वार वार सांभलवा थकी. अ० ग्रहण बुद्धिई ग्रहा छै. मन नें विषे धारया छै. पु० पूछा छै अर्थ संशय ऊपने. वार २ पूछवा थकी. अ० वार २ पूछयां थकां अतिशय सू पाम्या अर्थ निर्याय करी धारया. अ० जेहनी अस्थि सीजी पिण प्रेमानुराग रक्त छै. धर्म नें विषे.

इहां पिण निर्ग्रन्थ ना प्रवचन ते सिद्धान्त कहा । जे सिद्धान्त भणवारी  
आज्ञा साधु नें इज छै । ते माटे निर्ग्रन्थ ना प्रवचन । सग्रन्थ ना प्रवचन न  
कहा । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ७ बोल सम्पूर्णा

तथा सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ११ में कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

आयगुत्ते सयादत्ते छिन्न सोए अणासवे ।

ते धम्म सुधम्म इं पडिपुण मणे लिसं ॥२४॥

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ११ गा० २४)

आ० मन. वचन कायाइ' करी जेहनी आत्मा गुप्त छै. ते आत्मा गुप्त छै. सदा इ' काले  
इन्द्रिय नों दमणहार. छि० छेया छै संसार स्रोत जेणे. अ० अना अवण प्राणातिपातादिक कर्म  
प्रवेश द्वार रूप राख्या ते आश्रय रहित. ते जेहवो शुद्ध धर्म कहे ते धर्म केहवो छै. प० पूतिपूर्ण  
सर्व व्रति रूप. म० निरुपम. अन्य दर्शन नें विषे किहाइ' नथी.

तथा इहां कह्यो—जे आत्मा गुप्त साधु इज शुद्ध धर्म नों परुपणहार छै ।  
डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ८ बोल सम्पूर्णा

तथा सूर्य प्रहसि में कह्यो—ते पाठ लिखिये छै ।

सद्धाद्विइ उट्ठाणुच्छाह कम्म बल बीरिए पुरिस करे-  
हिं । जो सिक्खि उवसंतो अभायणे पक्खिवेजाहिं ॥ ३ ॥

સોપ વયણ કુલ સંઘવાહિ રો નાણ વિણય પરિહીણા । અરિ-  
હન્ત થેર ગણહર મડ ફિરહોંતિ વાલિંણો ॥ ૪ ॥

( સૂય પ્રજ્ઞસિ ૨૦ પાટુડા )

જે. કોઈ. શ્રદ્ધા. ધૃતિ. ઉત્થાન. ઉત્સાહ. કર્મ. વલ. વીર્ય. પુરુષકાર ( પરાક્રમ ) કરી.  
અ સૂયજ્ઞાન નેં દેશી. તો દેન । નેં હાનિ હોસી. ॥ ૩ ॥ પ્રકારે અમાજન નેં જ્ઞાન  
દેશવાલા સાધુ પ્રવચન. ગણ. સંઘ. સું. વાહિર જાણવા. જ્ઞાન. વિનય રહિત. અરિ તથા  
ગણધરાં સી મર્યાદા ના ઉલ્લંઘન હાર જાણવા. ॥ ૪ ॥

અથ इहां कह्यो—ए सूत्र अभाजन नें सिखावे ते कुल, गण, संघ वाहिरे  
ज्ञानादिक रहित कह्यो । अरिहन्त, गणधर, स्थविर, नी. मर्यादा नों लोपहार  
कह्यो । जो साधु अभाजन नें पिण न सिखावणो तो गृहस्थ तो प्रत्यक्ष पञ्च  
आश्रय नों सेवणहार अभाजन इज छै । तेहन सिखायां धर्म किम हुवे । इत्यादिक  
अनेक ठामे सूत्र भणवा सौ आज्ञा साधु न इज छै । तिवारे कोई कहे—जो सूत्र  
भणवारी आज्ञा अ । ने नहीं तो जिम नन्दी समचायांगे साधा नें “सुय-  
परिगहिया” कहा तिम हिज श्रावकां ने पिण “सुयपरिगहिया” तिण न्याय  
जो साधां ने सूत्र भणवो कल्पे तो श्रावकां ने बि न कल्पे विहं ठिकाणे पाठ एक  
सरीखो छै, एहवी कुयुक्ति लगावी श्रावकां ने सूत्र भणवो थापे तेहनो उत्तर—

जे नन्दी ।यांगे साधां नें “सुयपरिगहिया” कहा ने तो सूत्र श्रुत  
अने अर्थ श्रुत विहंनं ग्रहण करवा थकी । छै । अने श्रावकां ने “सुयपरिग-  
हिया” कहा ते अर्थ श्रुत ना हिज ग्रहण करणहार माटे जाणवा । उवाई तथा सूय-  
गडांग आदि अनेक सूत्रां में श्रावकां ने अर्थ ना जाण पिण सूत्र ना जाण  
किहां ही । नथी । अने केई वाल अज्ञानी “सुय परिगहिया” नो नाम लेई ने  
श्रावकां नें सूत्र भणवो थापे ते जिनागम ना अनभिज्ञ जाणवा । सुय शब्द नो अर्थ  
श्रुत छै पिण सूत्र न थी । डाहा हुवे तो विचारि जोई जो ।

ति ६ बोल सम्पूर्णा

रि । रे कोई कहे जे “सुय” शब्द नों अर्थ श्रुत छै सूत्र न थी तो नाम तो  
ज्ञान नो छै । अने तमे सूत्र श्रुत अने अर्थ श्रुत ए. वे भेद करो छो ते बि सूत्र ना

अनुसारं थी करो छो । इमं कहै तेहनो उत्तर—ठाणाङ्गठाणे २ उद्देश्ये १ । ते ते पाठ लिखिये छै ।

दुविहे धम्ममे पणणत्ते तं जहा—सुअ धम्ममे चेव. चरित्त धम्ममे चेव. । सुअ धम्ममे दुविहे पणणत्ते तं—सुत्त सु धम्ममे चेव अत्थ सुअ धम्ममे चेव. । चरित्त धम्ममे दुविहे पणणत्ते तं—आगार चरित्त धम्ममे चेव. अणगार चरित्त धम्ममे चेव ।

( ठाणाङ्ग ठा० २ उ० १ )

दु० वे प्रकारे. ध० धम. प० परुप्यो. तं० ते कहे छै । सु० श्रुतधर्म चे० निश्चय. अने च० चारित्र धर्म. च० निश्चय. । सु० श्रुतधर्म. दु० वे प्रकारे. प० परुप्यो. तं० ते कहे छै. सु० सूत्र श्रुत धर्म. चे० निश्चय. अ० अर्थ श्रुतधर्म. । चे० निश्चय च० चारित्र धर्म. दु० वे प्रकारे प० परुप्यो. तं० ते कहे छै आ० आगार चारित्र धर्म ते बारह व्रत रूप अने चे० निश्चय. अ० अणगार चारित्र धर्म ते पांच महाव्रत रूप. चे० निश्चय.

अथ इहां श्रुत धर्म ना वे भेद कहा—एक तो सूत्र श्रुत धर्म बीजो अर्थ श्रुत धर्म ते अर्थ श्रुत धर्म ना जाण आवक हुवे तेणे कारणे आवकां ने ‘सुयपरिग्राहिया’ कहा । पिण सूत्र आश्री कह्यो न थी । डाहा हुवे तो चिचारि जोइजो ।

## इति १० बोल सम्पूर्ण

तथा वली भगवती श० ८-उ० ८ अर्थ ने श्रुत कह्यो ते पाठ लिखिये छै ।

सुयं पडु तन्नो पडिणीया प० तं०—सुत्त पडिणीया अत्थ पडिणीया तदुभय तदुभय पडिणीया ।

( भगवती श० ८ उ० ८ )

सु० श्रुत ने प० आश्री. त० त्रिण. प० प्रत्यनीक. प० परूप्या. तं०—ते कहे छे. सु० सूत्र ना प्रत्यनीक. अ० अर्थ ना प्रत्यनीक. खोटा अर्थ नू भणवू हत्यादिक. त० सूत्र अने अर्थ ते बिहूना प्रत्यनीक बेरी.

अथ इहां पिण श्रुत आश्री तीन प्रत्यनीक कहा। सूत्र ना १ अर्थना २ अने बिहूना ३। तिण में अर्थ ना प्रत्यनीक नें श्रुत प्रत्यनीक कह्यो. ठाणाङ्ग ठाणे ३ पिण इम हिज श्रुत आश्री तीन प्रत्यनीक कहा तिहां पिण अर्थ ने श्रुत कह्यो इत्यादिक अनेक ठामे अर्थ ने श्रुत कह्यो छे। तेणे कारणे अर्थ ना जाण होवा माटे श्रावक नें “श्रुत परिग्रहीता” कह्यो पिण “सूत्र परिग्रहीता” किहां ही कह्यो न थी। डाहा हुवे तो चिचारि जोईजो।

## इति ११ बोल सम्पूर्णा

तथा वली पन्नवणा पद २३ उ० २ पंचेन्द्रिय ना उपयोग नें श्रुत कह्यो छे ते पाठ लिखिये छे।

केरिसएणं नेरइये उक्कोस कालद्वितीयं णाणावरणिज्जं  
म्म बंधति गोयसा । सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जती हिं-  
पज्जत्ते सागारे जागरे सूत्तो वडते मिच्छादिह्वी कएह लेसे  
उक्कोस संकिलिट्ठ परिणामे ईसि मज्झिम परिणामे वा एरि  
एणं गोयसा । गेरइए उक्कोस काल द्वितीयं णाणा वरणिज्जं  
कम्मं बंधति ॥ २५ ॥

( पञ्चवणा पद २३ उ० २ )

के० केहवो थको. शो० नारकी. स० उत्कृष्ट काल स्थिति नूं. ण० ज्ञाना नरणीय कर्म बांधे. गो० हे गोतम ! स० संज्ञी पंचेन्द्रिय. स० सर्व पर्याप्तो. साकारोप योगवन्त जा० जागतो निद्रा रहित नारकी नें पिण कितारेक निद्रा नो अनुभव हुषं ते माटे जागृत कह्यो. स० श्रुतोयुक्त

पंचेन्द्रिय ना उपयोगवन्तः मि० मिथ्या दृष्टिः क० कृष्ण लेखावन्तः उ० उत्कृष्ट आकारः संक्लिष्ट परिणामवन्त इ० अथवा लिङ्गारेक मध्यम परिणाम वन्तः ए० एहो यको गो० हे गोतम ! यो० नारको उ० उत्कृष्ट काल नी स्थिति नू० ज्ञाना वरणीय कर्म व० बांधे ।

अथ इहां कह्यो—जे सन्नी पंचेन्द्रिय “पर्याप्तो जागरे सुत्तो वडत्ते” कहितं जागतो थको श्रुतोपयुक्त अर्थात् उपयोगवन्त ते मिथ्या दृष्टि कृष्ण लेखी उत्कृष्ट संक्लिष्ट परिणाम ना धनी तथा किञ्चित मध्यम परिणाम ना धणी उत्कृष्ट स्थिति नों ज्ञाना वरणीय कर्म बांधे । इहां पंचेन्द्रिय ना अर्थना उपयोग ने श्रुत कह्यो ते श्रुत नाम अनेक ठिकाणे अर्थनो छै । ते अर्थ ना जाण श्रावक होवा थो “सुय परिगहिया” कहा छै । डाहा हुवे तो विचारि जोई जो ।

## इति १२ बोल सम्पूर्णा

तथा बली आवश्यक सूत्र मा अर्थ ने आगम कह्यो अने अनुयोग द्वार मा भावश्रुत ना दश नाम परूष्या तिहां आगम नाम श्रुत नो कह्यो छै ते पाठ लिखिय छै ।

सेतं भाव सुयं तत्सखं इमे एगद्विया णाणा घोसा  
णाणा वंजणा नाम धेज्जा भवंति तं जहा—

सुयं सुत्तं गथं सिद्धंति सासखं आणत्ति वयण उव-  
एसो । परणवणे आगमेऽविय एगद्धा पज्जवासुत्ते । से तं सुयं  
॥ ४२ ॥

( अनुयोगद्वार )

से० ते सा० भावश्रुत कहियः त० ते भावश्रुत ने इ० एप्रत्यक्ष ए० एकार्यक ना० जुदा जुदा बोय उदात्तादिकः ना० जुदा जुदा व्यंजनाकारः णा० नाम पर्यायः ए० परूष्याः तं० ते कहे छे—  
सु० श्रुतः सु० सूत्रः गं० ग्रन्थः सि० सिद्धान्तः सा० शास्त्रः आ० आज्ञाः व० प्रवचनः उ० उपदेशः  
ए० पूजापन आ० आगम ए० एकार्य ए० पर्याय नाम सूत्र ने त्रिसे से० ते० सु० सूत्र कहिये ।



इहां श्रुत ना दश नाम कहा तिण में आगम नाम श्रुत नो कह्यो । अने अनुयोग द्वार मा अर्थ ने आगम कह्यो ते कहे छै । “तिविहे आगमे प० तं०—सुत्ता-गमे अत्यागमे तदुभयागमे” ए अर्थ रूप आगम कहो भावे अर्थ रूप श्रुत कहो आगम नाम श्रुत नों हीज छै । इत्यादिक अनेक ठामे अर्थ ने श्रुत कह्यो ते माटे आ । ने अर्थ रूप श्रुत ना जाण कहीजे ।

तिवारे कोई कहे—जे तमे कहो छो श्रावकां ने सूत्र भणवो नहीं तो आवश्यक अ० ४ श्रावक पिण तीन आगम ना चवदे अतीचार आलोवे तो जे आ । सूत्र भणे इज नहीं तो अतीचार किण रा आलोवे तेहनों उत्तर—ए सूत्र रूप आगम तो श्रावक रे आवश्यक सूत्र अर्थात् प्रतिक्रमण सूत्र आश्रयी छै । तिवारे कोई कहे—जे श्रावक नें सूत्र भणवो इज नहीं तो आवश्यक अर्थात् प्रतिक्रमण क्यूं करे तेहनों उत्तर—आवश्यक सूत्र भणवारी तो श्रावक नें अनुयोग द्वार सूत्र में भगवान् नो आज्ञा छै । ते पाठ कहे छै ।

“समणे णं सावणय अवस्सं कायव्वे हवइ जम्हा अन्तो अहो निस-स्साय तम्हा आव वस्सयं नाम०” साधु तथा श्रावक नें वेहूँ टंक अवश्य करवो तेह थो आवश्यक नाम कहिए । तेणे कारणे आवश्यक सूत्र आश्रयी सूत्रागम ना अतीचार आलोवे पिण अनेरा सूत्र आश्रयी न थी । तथा अनेरा सूत्र पाठना रसा कसा वैराग्य रूप केई एक गाथा श्रावक भणे तो पिण आज्ञा बाहिर जगाता न थी । ते किम तेह नों न्याय कहे छै । साधु नें अकाल में सूत्र नहीं बांचवो पिण रसा कसा रूप एक दोय तीन गाथा बांचवारी आज्ञा निशीथ उद्देश्ये १६ दीनी छै । तिम श्रावक पिण रसा कसा रूप सूत्र नी गाथा तथा बोल बांचे तो आज्ञा बाहिर दीसे नहीं । तथा ज्ञान ना दे अतीचार मा कह्यो “अकाले कओ सिज्झाओ काले न कओ सिज्झाओ” ते पिण आवश्यक सूत्र आश्रयी जणाय छै ।

तिवारे कोई कोई कहे—श्रावक न सूत्र नहीं भणवो तो राजमती ने बहु-श्रुति क्यूं कही अने पालित श्रावक नें पण्डित क्यूं कह्यो इम कहे तेहनों उत्तर—ए पिण अर्थ रूप श्रुत आश्रयी बहुश्रुति तथा पण्डित कह्यो दीसे छै । पिण सूत्र आश्रयी कह्यो दीसे नहीं । क्यूं कि कालिक उत्कालिक सूत्र अनुक्रम भणवो तो साधु ने हीज कह्यो छै पिण श्रावक नें कह्यो न थी । अने गौतमादिक साधां में कोई चवदे पूर्व

મળ્યો કોઈ ઇગ્યાર અઢ્ઢ મળ્યો ઇહવા અનેક ઠામે પાઠ છે । પિળ અમુક શ્રાવક  
 ઇતલા સૂત્ર મળ્યો ઇહવો પાઠ કિહાં હી ચાલ્યો ન થી । તે માટે સિદ્ધાન્ત મળવારી  
 આજ્ઞા સાધુ ને હીજ છે । પિળ અનેરા ગૃહસ્થ પાસત્યાદિક ને સિદ્ધાન્ત મળવાર  
 આજ્ઞા શ્રી વીતરાગ ની ન થી । ડાહા હુવે તો વિચારિ જોઈ જો ।

इति १३ बोल सम्पूर्णा

इति सूत्र पठनाऽधिकारः



## अथ निरवद्य क्रियाधिकारः ।



केतला एक अज्ञाण आज्ञा बाहिरली करणी थी पुण्य बंधतो कहे । ते सूत्र ना जाणणहार नहीं । भगवन्त तो ठाम २ अज्ञा माहिली करणी थी पुण्य बंधतो कह्यो । ते निर्जरा री करणी करतां नाम कर्म उदय थी शुभ योग प्रवर्त्तें तिहां इज पुण्य बंधे छै । ते करणी शुद्ध निरवद्य आज्ञा माहिली छै । पुण्य बंधे तिहां निर्जरा री नियमा छै । ते संक्षेप मात्र सूत्र पाठ लिखिये छै ।

कहरणं भंते ! जीवाणं कक्षाणं कम्मा कज्जंति । लो-  
दाई ! से जहा नामए केइ पुद्दिसे मणुगणं थाली पाप  
सुद्धं अट्टारस वंजणा उलं ओसह मिससं भोयणं भुंजेज्जा  
तस्सणं भोयणस्स आवाए नो भदए भवइ तओपच्छा परि-  
ण । एणे २ सुरूवत्ताए सुवणत्ताए जाव सुहत्ताए नो दुक्ख-  
त्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमइ एवामेव । लोदाई ! जीवाणं  
प्राणाइ वाय वेरमणे जाव परिगाह वेर एणे कोह विवेगे जाव  
िच्छा दंसणं स विवेगे तस्सणं आवाए नो भदए वइ  
गोपच्छा परिणममाणे २ सुरूव । ए जाव नो दुक्ख । ए  
भुज्जो २ परिणमइ । एवंखलुं । लोदाई जीवाणं । एण  
कम् । जाव कज्जंति ।

क० किम. स० भगवन्त ! जी० जीव नें. क० कल्याण फल त्रिपाक संयुक्त. क० कर्म. क० हुइं का० हे कालोदायी ! से० ते. यथानामे यथा दृष्टीते. के० कोइक पुरुष. स० मनोदा. था० हांइली पाके करी शुद्ध निर्दोष. अ० १८ भेद व्यञ्जन शाक तक्रादिक तेयें करी युक्त. उ० औषध महालुक्त घृतादिक तिणें मिश्र. भो० भोजन प्रति. भोगवे. ते भोजन नो. आ० आपात कहितो. ते रुइं न लागे. त० तिवारे पछे औषध परिणामता छते छरूप पणें. छ० छवर्ण पणें यावत्. छ० छल पणें. शो० नहीं. दु० दुःख पणें. मु० वार २ परिणामे. ते० प० औषध मिश्रित भोजन नी परे. का० कालोदाई. जी० जीव नें. पा० प्राणातिपात वे० वेरमण थकी. जा० यावत्. प० परिग्रह वेरमण थकी. को० क्रोध विवेक थकी. यावत्. मि० मिथ्यादर्शन शल्य विवेक थकी. त० तेहनें प्रथम न हुइं छल नें अयें हृन्दिन्य में प्रतिकूल पणा थी. त० तिवारे पछे. प्राणातिपात. वेरमण थी. उपनं जे० पुण्य कर्म ते परिणामते छते शु० छरूप पणें. जा० यावत्. शो० नहीं दुःख पणें परिणामे. प० हम रिक्कय. का० कालोदाई. जी० जीव नें क० कल्याण फल. जा० यावत्. क० हुइं.

अथ इहां कह्यो १८ पाप न सेव्यां कल्याणकारी कर्म वंछी । ले -  
वे १८ पाप सेव्यां पाप कर्म नो वन्ध तो । ते पाप नों प्रतिपक्ष पुण्य कह्यो.  
भावे कल्याणकारी कर्म कह्यो । ते १८ पाप न सेव्यां पुण्य बंधतो कह्यो । ते  
माटे १८ पाप न सेवे ते करणी निरवद्य आह्वा मांइली छै ते करणी सूं इज पुण्य रो  
बन्ध कह्यो । तथा समवायाङ्क ५ मे समवाये कह्यो ।

“पञ्च निज्जरट्ठाणा. प० पाणाइवाया रो वेरमणं  
मुसावायाओ अदिन्ना दाणाओ, मेहुणओ वेरमणं परिग-  
हाओ वेरमणं”

इहां ५ आश्रव थी निवर्त्त ते निर्जरा ए वद्धा । जे त्याग विनाइ  
पांच आश्रव टाले ते निर्जरा स्थानक ते निर्जरा री करणी छै । अनें भगवान् पिण  
कालोदाई नें इण निर्जरा री करणी थी पुण्य बंधतो कह्यो छै । पिण आह्वा  
वाहिर ली करणी थी पुण्य बंधतो न कह्यो । डाहा हुंवे तो विचारि जोइजो ।

इति १ बोल सम्पूर्णा

तथा उत्तराध्ययन अ० २६ कह्यो ते पाठ लिखिये छै ।

वंदण एणं भंते ! जीवे किं जणयइ वंदणएणं नीया-  
गोथं म्मं वेइ उच्चागोसं कम्मं निबंघइ, सोहग्गंच णं प-  
डिहयं आणा फलं गिवत्तेइ दाहिणा भावं चणं जणयइ ॥१०॥

( उत्तराध्ययन अ० २६ )

व० गुरु ने वन्दना करवे करी. भ० हे पूज्य ! जी० जीव. कि० नि० फल उपाजै. इस शिष्य पृष्ठधां थका. गुरु बहे छै. वे० गुरु ने वंदना करवे करी करी ने. नी० नीचा गोस नीचा कुल. पामवाना कर्म. ख० खपावे. ज० जंचा कुल पामवाना. कर्म. पि० बांधे. सौभाग्य अने अ० तिण री. अप्रतिहत. आ० आज्ञा रो फल. नि० प्रवर्त्ते. दा० दाहिणय भाव उपाजै.

अथ इहां कह्यो—वन्दना इ करी नीच गोत्र कर्म खपावे ए तो निर्जरा कही अने जंच गोत्र कर्म बांधे, ए पुण्य नों दन्ध कह्यो । ते पिण आज्ञा माहिली निर्जरा री करणी सूं पुण्य नों दन्ध कह्यो । डाहा हुवे तो विचारे जोइजो ।

## इति २ बोल सम्पूर्णा

तथा उत्तराध्ययन अ० २६ वो० २३ कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

धम कहाएणं भंते । जावे किं जणयइ. धम क १-  
एणं निज्जरं जणयइ. धम्म कहाएणं पयणं पभावेइ. पवयणं  
पभावे जीवे आगमेसस्स भदत्ताए कम्मं निबंघइ. ॥२३॥

( उत्तराध्ययन अ० २६ )

ध० धर्म कथा कहिये करी. भ० हे आगवन् ! जीव किसोफल. ज० उपाजै. इस शिष्य पृष्ठे अने गुरु बहे छै. ध० धर्म कथा कहिये करी. नि० निर्जरा करवा नो विधि उपाजै. ध० धर्म कथा

कहवे करी. सि० सिद्धांत नी प्रभावना करे. सिद्धांत ना गुण दिपावे सिद्धांत ना गुण दिपावे करी. जो० जीव. आ० आगले. म० कल्याण पणे शुभ पणे. क० कर्म बांधे.

अथ इहां पिण धर्म कथाई करी शुभ कर्म नों वन्ध कह्यो । ए धर्म कथा पिण निर्जरा ना भेदां में तिहां जे शुभ कर्म नों वंध है । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ३ बोल सम्पूर्ण

उत्तराध्ययन अ० २६ कह्यो । ते पाठ लिखिये है ।

वेयावच्चेणं भंते ! जीवे किं जणइय. वेयावच्चेणं  
तिथ्यर णाम गोसं मम निबन्धइ ॥४३॥

( उत्तराध्ययन अ० २६ )

वे० आचार्यादिक नो वेयावच करवे करी. म० हे पूज्य ! जो० जीव. कि० कितो ज० फल उपार्जे. इस शिष्य पूछे छते गुरु कहे छै. वे० आचार्यादिक नी वेयावच करवे करी. ति० तीर्थ कर नाम गोत्र कर्म. नि० बांधे.

अथ इहां गुरु नी व्यावच क्रियां तीर्थद्वर गोत्र कर्म नों वन्ध कह्यो । ए व्यावच निर्जरा ना १२ भेदां माहि छै । तेह थी तीर्थद्वर गोत्र पुण्य वंधे कह्यो, ए पिण आक्षा माहिली करणी छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ४ बोल सम्पूर्णा ।

तथा भगवती श० ५ उ० ६ कह्यो ते लिखिये छै ।

कहणं भंते ! जीवा भ दीहाउ ।ए पकरंति  
 गोयमा ! नो पाणे अइवाएत्ता नो मुसं वइत्ता तहा रूवं  
 समणं वा माहणं वा वंदि । जाव पज्जुवासे । अणणयरेणं  
 मणुण्णोणं पीइ ।एणं असणं पाणं ।इ साइ पडिला-  
 मि । एवं जीवा प रंति ॥४४॥

( भगवती श० ५ उ० ६ )

क० किम. जी० जीव. भ० भगवन् ! शु० शुभ दीर्घ आयुषा नों बांधे. गो० हे  
 गौतम ! यो० नहीं जीव प्रति इण्णे. यो० नहीं. प्रति बोले. त० रूप. स० भ्रमणप्रति.  
 मा० माहण प्रति. वं० बांदी ने. त्र. प० सेवा करी ने. अ० अनेरो म० मनोज्ञ. पी० प्रीति  
 कारी इ भजे भावे करी. अ० अयन पान खादिम स्वादिमे. करी ने प्रतिभांभे. ए० इस. निश्चय  
 जीव यावत् शुभ दीर्घायुषो बांधे.

अथ । जीव न हणया. न चोलयां. ण माहण. नें वन्ध-  
 नादिक करी. नादिक दियां. शुभ दीर्घ आयुषा नों वन्ध कह्यो । शुभ दीर्घ आयुषो  
 ते तीन बोल निरवय यो बंधतो कह्यो । । ठाणाङ्ग ठा० ६ साधु नें दिक  
 दियां पुण्य कह्यो । भगवती श० ८ उ० ६ साधु नें दीर्घां निर्जरा कही ।  
 ते आज्ञा माहिली करणी छै । डाहा हुप तो विचारि जोइजो ।

इति ५ बोल सम्पूर्णा ।

तथा ठाणाङ्ग ठा० १० बोल दश करी नें प्राणकारी कर्म नों वन्ध कह्यो ।  
 ते पाठ लिखिये छै ।

दसहिं ।एहिं जीवा आगमेसि भइत्ताए कम्मं पग-  
 रंति ० ति दाणयाए दिदि संपन्नयाए. जोग वहिययाए.

खंति खमण्याए. जीइंदियाए. अमाइल्लयाए. पास्तथयाए.  
सुसामन्नयाए. पवयणा वच्छल्लयाएः पवयणा उज्झावणा-  
याए ॥११४॥

( आख्यां ४० १० )

आगमीइं भवांतरे रूइं देव पणो तदनंतर रूइं मनुष्य पण पामवूं दे० दश स्थानके  
करी जीव अने मोक्ष ने पामवे कल्याण है तेइने पणो अर्थे. क० कर्म शुभ प्रकृति रूप. प० बांधे  
त० ते कहे है. ए दश बोल भद्र कर्म जोइवूं. अ० छेदे जेणे करी आनन्द सहित मोक्ष फलवर्ती  
ज्ञानादिक नी आराधना रूप लता, देवेन्द्रादिक नी बुद्धि नूं प्रार्थना रूप अध्यवसाय ते रूप  
कुहाड़े करी ते नियाणु ते नयी जेहने ते अनिदान तेणो करी १ स इष्टि पणो करी २ जो  
सिद्धान्त ना योग नें वहिवे अथवा सगले । उद्धरङ्ग पणा रहित जे समाधि योग. तेइने. करवे करी  
ख० जमाइं करी परिपह खमवे करी क्षमातुं ग्रहण कहिउं ते असमर्थ पणो नूं निषेध भणो  
पणो खमे. इ० इन्द्रिय नें निग्रहवे करी. अ० मायवी पणा रहित. अ० ज्ञानादिक नें देश थकी  
सर्व थकी बाहिर तिष्ठे ते पारवर्त्य देश थकी ते पियड अनिहड नित्यपियड अप्रपियड  
निकारणे भोगवे. छ० पार्थक्यादिक ने. दोष नें वर्जवे करी शोभन श्रमण पणु तेणो करी भद्र.  
प० पवयण प्रकृष्ट ते प्रवचन द्वादशाङ्गी तेहनों आचार सङ्ग  
तेहनों हितकारी पणो करी प्रत्यनीक पणु टालिवूं तेणो करी भद्र. प० द्वादशांगी नूं प्रभाव  
वूं. ते० चर्म कथावाद नी लठिच करी उपजावि वूं. तेणो करी भद्र कर्म करे. ए भद्र कल्याण  
कर्म कारणहार ने.

अथ-अटे १० प्रकारे कल्याणकारी कर्म बंधता —ते दसुंइ बोल  
निरवच है । आह्वा माहि है । पिण करणी आह्वा बाहिर ली करणी थी  
पुण्य बंध कह्यो न थी । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति, ६ बो सम्पूर्णा ।

सथा भगवती श० ७ उ० ६ अठारह पाप सेव्यां कर्कश वेदनी बंधे, अने  
१८. पाप न सेव्यां अकर्कश वेद नी बंधे इम कह्यो । ते पाठ लिखिये है ।



कहरणं भंते ! जीवाणं कक्कस वेयणिज्जा कम्मा  
कज्जंति गोयमा ! पाणाइवाए णं जाव मिच्छा दंसण सल्लेणं  
एवं खलु गोयमा जीवाणं कक्कस वेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ।

( भगवती श० ७ उ० ६ )

क० किम. भ० हे भगवन् ! जी० जीव. क० कर्कश वेदनीय कर्म प्रति उपाजें छै हे गोतम !  
पा० प्राणातिपाते करी. यावत्. मि० मिथ्या दर्शन शरये करी ने' १८ पाप स्थानके ए० इस  
मिश्रय. गो० हे गोतम ! जीव ने' कर्कश वेदनी कर्म हुये छै.

अथ इहां १८ पाप सेव्यां कर्कश वेद नी नों बन्ध कह्यो । ते करणी  
सावध आक्षा चाहिर ली छै । आहा हुये तो विचारि जोइजो ।

इति ७ वोल सम्पूर्णा ।

तथा अर्ककश वेदनी आक्षा माहि. ली करणी थी बंधे इस कह्यो । ते  
लिखिये छै ।

कहरणं भंते ! जीवाणं अकक्कस वेयणिज्जा कम्मा  
कज्जन्ति गोयमा ! पाणाइवाय वेरमणेणं जाव परि ह वेरम-  
णेणं कोह विवेगेणं जाव मिच्छा दंसण सल्ल विवेगेणं एवं  
खलु गोयमा ! जीवाणं अकक्कस वेयणिज्जा कम्मा कज्जन्ति ।

( भगवती श० ६ उ० ७ )

क० किम. भ० भगवन्त ! जीव अर्ककश वेदनी कर्म प्रति उपाजें छै. गो० हे गोतम !  
पा० प्राणातिपात वेरमणे करी ने' संयम हं करी यावत् परिग्रह वेरमणे करी ने' क्रोध ने' वेरमणे

करी नें. जा० यावत् मिथ्या दर्शन शक्य प्रेमणो करी नें १८ पाप स्थानक वर्जवे करी ए० ए निश्चय गो० हे गोतम ! जीव नें. अ० वेदनीय कर्म उपजे हैं.

अथ इहां १८ पाप न सेव्यां अकर्कश वेद नी पुण्य कर्म नों कह्यो ।  
ते करणी निरवध आक्षा माहि ली छै । पिण सावध आक्षा बाहर ली सूं पुण्य नों  
न ॥ डाहा हुवे तो रि जोइजो ।

## इति ८ बोला सम्पूर्ण ।

तथा २० बोलां करी तीर्थङ्कर गोत्र बंधतो कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

इमे हियाणं वीसाहिय ारणोहिं विय बहुलीक-  
एहिं तित्थयर ण गोयं कम्मं निव्वत्तेसु तंजहा—

रिहंत सिद्धं पवयण, गुरु थेरे बहुस्सुए स्सीसु ।  
वच्छलयाय तेसिं, अभिक्ख णाणोवओगेह ॥ १ ॥  
दंसण विणाय आवस्सएय, सीलव्वए यणिरवइयारे ।  
णालव च्चियाए, वेयावच्चे समाहीयं ॥ २ ॥  
अपुव्वणाणा गहणे, सुयभत्ती पवयणेप्पभावणया ।  
एएहिं कारणेहिं, तित्थयरत्तं लहइ जीवो ॥ ३ ॥

( ज्ञाता अ० ८ )

इ० ए प्रत्यक्ष आगले. वी० वीस २० भेदां करी नें, ते भेद केहवा छै. आ० आसेवित  
छै. मर्यादा करी नें एक बार करवा थकी सेव्या छै. व० घणी बार करवा थकी घणी बार सेव्या.  
वीस स्थानक. तेणो करी. तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म. नि० उपार्जन करे. बांधे. ते महाबल अण-  
गार सेव्या ते स्थानक केहवा छै. अ० अरिहन्त नी आराधना तेसेवा भक्ति करे. सि० सिद्ध. वी

आराधना ते गुणग्राम करवो. प० प्रवचन. छ० श्रुत. ज्ञान. सिद्धान्त नों वखाणवो. गु० धर्मो-  
पदेश गुरु नों विनय करे. धि० स्थविरां नों विनय करे. बहुश्रुति घणा आगम नों भयानहार.  
एक २ अपेक्षाय करी नें जाणवो. त० तपस्वी एक उपवास आदि देई घणा तप सहित साधु  
तेहनी सेवा भक्ति व० अरिहन्त. सिद्ध. प्रवचन. गुरु. स्थविर. बहुश्रुति. तपस्वी. ए पदा-  
नी वत्सलता पणो. भक्ति करी नें अने जे अनुरागी छतां ज्ञान नों उपयोग हुन्तो तीर्थकर कर्म  
बांधे. दं० दर्शन ते त्व निर्मली पालतो, ज्ञान नों विनय. भा० आवश्यक नों करवो  
पदक्रमणो करवो. नि० निरतिचार पणो करिये. सी० मूल गुण उत्तर गुण नें निरतिचार पालतो  
थको तीर्थकर नाम कर्म बांधे. ख० क्षीणलवादिक काल नें विपे सम्भेग भाव ना ध्यान रा सेवा  
थको बंध. त० तप एक उपवासादिक. तप सूरक पणा करी. चि० साधु नें शुद्ध दान देई नें. वे०  
१० विप्र व्यावच करतो थको. गु० गुणादिक ना कार्य करके गुरु नें सन्तोष उपजावे करी नें तीर्थ-  
कर. गोत्र बांधे. अ० अपूर्व ज्ञान भणतो थको जीव तीर्थकर नाम गोत्र बांधे. छ० सूत्र ना  
भक्ति सिद्धान्त नी भक्ति करतो थको. तीर्थकर नाम कर्म बांधे प० यथाशक्ति साधु मार्ग नें देखा-  
इवे करी. प्र० चन नी प्र तीर्थकर ना मार्ग नें दीपावे करी. ए तीर्थकर पणा ना कारण  
थकी २० भेदी बंधतो कणो.

अठे वीसुंइ चोलां नों विचार कर.लेवो । तीर्थङ्कर १ ए पुण्य  
। ए पिण शुभ योग प्रवर्त्ततां बंधे छै । ए वीसुंइ चोल सेवण री भगवन्त नी  
छै । हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ६ बोल सम्पूर्णा ।

तथा विपाक सूत्र में सुमुख गाथा पति साधु नें दान देई प्रति संसार करी  
मनुष्य नों आयुषो बांध्यो कह्यो छै । ते करणी आत्मा महिली छै । इम दसुंइ जणा  
सुपात्र दान थी प्रति संसार कियो. अने मनुष्य नों आयुषो बांध्यो. ते करणी निर-  
छै । सावध करणी थी पुण्य बंधे नहीं । तथा भगवती श० ७ उ० ६ प्राण.  
भूत. जीव. सत्व. नें दुःख न दियां साता वेद नी रो वन्ध कह्यो । ते पाठ लिखिये

अस्थिणं भंते । जीवाणं सायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति, हंता स्थि । कहणं भंते । साया वेयणिज्जा कम्मा कज्जंति, गोयमा । पाणाणुकंपयाए. भूयाणुकंपयाए. जीवाणुकंपयाए. सत्ताणुकंपयाए. बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं अदुक्खणयाए. असोयणयाए. अजूरणयाए. तिप्पणयाए. पिट्ठण ए. अपरियावणयाए. एवं गोय । जीवाणं वेयणिज्जा कम्मा ज्जंति एवं नेरइया णवि जाव वेमाणियाणं । स्थिणं भंते । जीवा साया वेयणिज्जा मा कज्जंति, हंता अस्थि । ह भंते । जीवाणं असायावेयणिज्जा मा कज्जन्ति, गोयमा । परदुक्ख णयाए. परसोयणयाए. परजूरणयाए. परतिप्पणयाए. परपिट्ठणयाए. परपरितावणयाए, बहूणं पाणाणं भूया जीवाणं. सत्ताणं. दुक्ख णयाए. सोयणयाए. जाव परियावणयाए, एवं खलु गोयमा । जीवाणं असाया वेयणिज्जा कम्मा न्ति. एवं नेरइयाणवि. जाव वेमाणियाणं. ॥ १० ॥

( भगवती श० ७ उ० ६ )

अ० अहो भगवन् ! जीव वेदनीय कर्म करे छै. हं० हां गोतम ! जीव साता वेदनीय कर्म करे छै. क० किम. भ० भगवन् ! जीव. सा० वेदनीय कर्म बांधे. ( भगवान् कहे ) गो० हे गोतम ! पा० प्राणी नी अनुकम्पा करी नें. भू० भूत नी अनुकम्पा करी. जी० जीवनी अनुकम्पा करी. स० सत्त्व नी अनुकम्पा करी. व० ज्ञाणा प्राणी भूत. जीव स्तः नें दुःख न करवे करी. अ० शोक न उपजावे. अ० भुरावे नहीं. अ० आंसूपात न करावे. अ० तादना न फरे. अ० पर धरोर नें ताप न उपजावे. दुःख न देवे. हम निश्चय. गो० हे गोतम ! जी० जीव साता वेदनी कर्म उपजावे. ए० एणे प्रकार नारकी सूं वैमानिक पर्यन्त चौवीसुं दुगडक लाणवा. अ० अहो भ० भगवन् ! जी० जीव अ वेदनी कर्म उपाजें छै. हं० ( भगवान् बोल्या ) हां उपाजें. क०

કિમ્. ય૦ ભગવન્ ! જી૦ જીવ અસાતા વેદની કર્મ ઉપજાવે. ગો૦ ગોતમ ! ૫૦ પર નેં દુઃખ કરી. ૫૦ પરનેં શોક કરી. ૫૦ પર નેં મુરાવે કરી. ૫૦ પરનેં અશ્રુપાત કરાવે કરી. ૫૦ પરનેં પીટણ કરી પર નેં પરિતાપ ના ઉપજાવે કરી. ય૦ ઘણા પ્રાણી નેં યાવત્. સ૦ સત્ત્વ નેં. દુઃખ ઉપજાવે કરી. સ૦ શોક ઉપજાવે કરી. જીવ નેં પરિતાપ ના ઉપજાવે કરી. ૫૦ હમ નિશ્ચય કરી નેં ગો૦ ગોતમ ! જીવ આતા વેદનો કર્મ ઉપજાવે છે. ૫૦ હમજ નારકી નેં પણ યાવત્ વૈમાનિક લાગે.

અથ હહાં કહ્યો—સાતા વેદની પુણ્ય છે તે પ્રાણી ની અનુકમ્પા કરી. ભૂત ની અનુકમ્પા કરી, જીવ ની સત્ત્વ ની અનુકમ્પા કરી. ઘણા પ્રાણી ભૂત, જીવ સત્ત્વ નેં દુઃખ ન દેવે કરી. इत्यादिक निरवद्य करणी सूं नीपजे છે । તે નિરવચ્ચ કરણી આજ્ઞા માહિલી રૂજ છે । અને અસાતા વેદની કહી તે પર નેં દુઃખ દેવે કરી. इत्यादिक सावद्य करणी .सूं नीपजे છે । તે આજ્ઞા વાહિર જાણવી । તે માટે પુણ્ય ની કરણી આજ્ઞા માહિલી છે । હાહા હુવે તો વિચારિ જોરૂજો ।

## इति १० बोल सम्पूर्णा ।

ઘલી આઠોં હ કર્મ વંધવા રી કરણી રે અધિકારે પહવા પાઠ છે । તે પાઠ લિખિયે છે ।

કમ્મા શરીરપ્પઓગ વંધેણં મંતે ! કઙ્કિહિ પણણતે ગોયમા ! અટ્ટ વિહે પણણત્તે તં જહા—નાણા વરણિજ્જ કમ્મા શરીરપ્પઓગ વંધે જાવ, અંતરાઇયં કમ્મા શરીરપ્પઓગ વંધે । ણાણા વરણિજ્જ કમ્મા સરીર પ્પઓગ વંધે ણં મંતે ! કસ્સ કમ્ સ્સ ઉદણં ગોય । ! નાણ પડિણીયયાણ નાણ નિણ વગયાણ નાણંતરાણં નાણપ્પદોસે નાણાચ્ચાસાય ણં ણ વિસંવાદણા મોમેણં નાણાવરણિ જ્જ કમ્મા સરીરપ્પ યોગ

नामाए कम्मस्स उदएणं नाणावरज्जि कम्मा सरीरप्पओग बंधे ॥ ३७ ॥ दरिसणा वरणिज्जं कम्मा सरीरप्पओग बंधेणं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं गोयमा ! दंसण पडिणीययाए एवं जहा नाणावरणिज्जं नवरं दंसण नाम धेयव्वं जाव दंसण विसंवायणा जोगेणं दंसणावरणिज्ज कम्मा सरीरप्पओगं णामाए कम्मस उदएणं वप्पओग बंधे ॥ ३८ ॥

साया वेयणिज्ज कम्मा सरीरप्पओग बंधेणं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं गोयमा ! पाणाणुकंपयाए भूयाणु कंपयाए एवं जहा सत्तमसए दुस्समाउद्देसए जाव अपरिथावणयाए । सायावेयणिज्ज कम्मा सरीरप्पओग नामाए कम्मस्स उदएणं साया वेयणिज्ज जाव बंधे । असाया वेयणिज्ज पुच्छा गोयमा ! पर दुःखणयाए परसोयणयाए जहा सत्तमसए दुस्समाउद्देसए जाव परितापणयाए असाया वेयणिज्ज कम्मा जावप्पओग बंधे ॥ ३९ ॥

मोहणिज्ज कम्मा सरीर पुच्छा गोयमा ! तिव्व कोहयाए तिव्वमाणयाए तिव्वमाययाए तिव्वलोहयाए ति-  
व्वदंसण मोहणिज्जयाए तिव्वचरित्तमोहणिज्जयाए मोहणिज्ज कम्मा सरीरप्पओग जाप्पओग बंधे ॥ ४० ॥

शेरइया उयकम्मा सरीरप्पओग बंधेणं भंते ! पुच्छा गोयमा ! महारंभयाए महा परिग्गहियाए पंचिंदिय वहेणं कुणिमाहारेणं शेरइया उयकम्मा सरीरप्पओग णामाए कम्मस्स उदएणं शेरइया उपकम्मा सरीरप्पओग

जाव बंधे । तिरिक् जोणिया उयकम्मा सरीरपुच्छा गोयमा ।  
 इल्लयाए. निवडिल्लयाए. अलियवयणेणं कूड तुल्ल कूड  
 माणेणं तिरिक् जोणियाउय । वप्प मोग बंधे ।  
 मणस्सा उयं कम्मा सरीर पुच्छा गोयमा ! पंगइ भइयाए  
 पंगइ विणीययाए. । णक्को णयाए. अमच्छरियत्ताए. -  
 णस्सा उयकम्मा जावप्पओग बंधे । देवा उयकम्मा रीर  
 पुच्छा गोयमा । सराग मेणं संजमासंजमेणं वा तवो  
 कम्मेणं अकाम णिज्जराए देवाउय कम्मा सरीर जावप्प  
 ओग बंधे ॥ ४१ ॥

सुभ नाभ कम्मा सरीर च्छा गोयमा । काउज्जुययाए  
 भाबुज्जुययाए भासुज्जुययाए. अविसंवादणा जोगेणं सुभ  
 णाम कम्मा सरीर जावप्पओग बंधे असुभ । म कम्मा  
 सरीर पुच्छा गोयमा । । य णजुययाए जाव विसंवादणा  
 जोगेणं असुभणाम कम्मा सरीर जावप्प ओग बंधे ॥ ४२ ॥

उच्चा गौयं कम्मा सरीर पुच्छा गोयमा । जाति अम-  
 देणं. कुल देणं. अ देणं. रूव देणं. व  
 देणं. । म मदेणं. देणं. इस्सरिय अमदेणं.  
 उच्चा गो सरीर जावप्प मोग बंधे णीणा गोय  
 । सरीर पुच्छा गोयमा । । ति मदेणं. कुल मदेणं.  
 मदेणं. । व इस्सरिय दे. णीयागोय कम्मा रीर-  
 जावप्पओ बंधे ॥ ४३ ॥

इ सरीर च्छा गोयमा । दाखंतराएणं.

लाभंतराण्यं. भोगंतराण्यं. भोगंतराण्यं. वीरियंत  
राण्यं. अन्तराण्यं मा सरीरप्यञ्चोग णामाण्यं. कम्मस्स  
उदण्यं अन्तराण्यं मा सरीरप्यञ्चोग बंधे ॥ ४४ ॥

( ती श० ८ उ० ६ )

हिवें शरीर प्रयोग बन्ध अधिकारे करो कहे. क० कर्मण्य शरीर प्रयोगबन्ध  
अ० हे भगवन्त ! केतला प्रकारे. प० पळ्ळो. गो० हे गौतम ! अ० आठ प्रकारे कष्टो । ना०  
ज्ञानावरणीय कर्म. शरीर प्रयोग बंधे. जाव० अ० अन्तराय कर्म शरीर प्रयोग करी  
बांधे. या० ज्ञानावरणीय कर्म शरीर प्रयोग बंधे अ० भगवन्त ! क० कुण कर्म ना उदय  
थी. गो० हे गौतम ! या० ज्ञान तथा ज्ञानवन्त सूत्र प्रतिकूल तिथे करी. ज्ञान नों गोपवो ते  
निदवो. या० ज्ञान भगवतो होय तेहने अंतराय करे तथा ज्ञानवन्त सू० द्वेष करे. ज्ञान तथा  
ज्ञानवन्त नी करी ने. या० ज्ञान तथा ज्ञानवन्त ना. वि० अवशांवाद् तेयो करी ने.  
ज्ञानावरणीय कर्म शरीर प्रयोगबन्ध नाम कर्म ने उदय करी. या० ज्ञानावरणीय २ कर्म शरीर  
प्रयोग बंधे । द० दर्शना वरणीय कर्म शरीर प्रयोग बंधे. अ० हे भगवन्त ! कुण कर्म ने उदय  
करी. गो० हे गौतम ! द० दर्शन ते. द० ज्ञाना वरणी नी परे जाणवो । न० पतलो विशेष. द०  
दर्शन पहवो नाम की ने जाणवो. जा० यावत् ज्ञाना वरणी नी परे. द० दर्शन ना. वि० विसम्वाद्  
योगेकरी. द० दर्शना वरणीय कर्म शरीर प्रयोग बंधे ॥३८॥ सा० वेदनी कर्म बंधे शरीर  
प्रयोग बंधे. अ० भगवन्त ! कुण कर्म ने उदय थी. गो० हे गौतम ! पा० प्राणी नी अजुकम्पा  
करी. सु० भूत नी दया करी. प० इम जिम सातमे शतके दुःखम नासा छे उदये कष्टो तिम  
जाणवो. जा० यावत् अ० अपरित्यापे करी ने. सा० वेदनी कर्म शरीर प्रयोग कर्म ना  
उदय थी सा० वेदनी कर्म. जा० यावत्. व० बंधे । अ० वेदनी कर्म नी पृच्छा. प०  
पर ने दुःख पर्मडावे करी. प० पर ने शोक पमादवे करी. ज० जिम सातमे शतके दुःख उदये  
कष्टो तिमज जाणवो. जा० यावत् पर ने परित्याप उपजावे तिवारे. अ० अ वेदनी कर्म नो  
यावत् प्रयोग बंध हुवे ॥३९॥ मो० मोह नी कर्म शरीर प्रयोग नी पृच्छा. ग० हे गौतम ! ति०  
तीक्ष्ण लाभे करी. ति० तीक्ष्ण दर्शन मोहनीय करी. ति० तीक्ष्ण चारित्र मोहनी. अने नौ नों  
सत्तण इहं चारित्र मोहनी कर्म शरीर प्रयोग बन्ध होय. ॥४०॥ ने० चारकी नों आयुपो कर्म  
शरीर प्रयोग बन्ध किम होय. पृच्छा. गो० हे गौतम ! म० महा म कर्मादिक करी. म०  
महा परिहवन्त लुण्णा तेथे करी. पं० पंचेन्द्रिय नी घात करी ने. कु० मांस नों सत्तण करे  
करी. ने० चारकी नों आयुपो कर्म शरीर प्रयोग बन्ध नाम कर्म ने उदय करी चारकी नों आयु  
कर्म शरीर प्रयोग बन्ध होय । ति० तीक्ष्ण योनि कर्म शरीर नी पृच्छा. गो० हे गौतम ! मा०



माया कपटाई करी नैं. ति० पर नैं वञ्चवे करी गूढ़ माया करी. अ० मूठ वचन बोले करी. कु० कूड़ा तोला कूड़ा मापा करी नैं. ति० तिर्यञ्च नों आयु कर्म वन्ध होय. म० मनुष्य नों आयु कर्म नी पृच्छा. गो० हे गोतम ! प० प्रकृति भद्रीक. प० प्रकृति नों विनीत. सा० दया ना परिणामे करी. अ० अणामत्सरता करी नैं. म० मनुष्य नों आयुषो. जा० यावत् कर्म प्रयोग वंधे । दे० देवता ना आयु कर्म शरीर नी पृच्छा. गो० हे गोतम ! स० संयम ते सराग संयमे करी. संयमा संयम ते श्रावक पणो करी बाल तप करी तापसादिक. अ० निर्जरा करी. दे० देवता नों आयु कर्म ना शरीर प्रयोग वंधे. ॥४१॥ छ० शुभ कर्म पृच्छा. गो० हे गोतम ! का० काया ना सरल पणो करी. भा० भावणा सरल पणो करी भा० मापा नों सरल पणो. अ० गीतार्थ कहे तेहवो करवो अविस्मवाद कह्यो तेणो करी. छ० शुभ नाम कर्म शरीर. जा० यावत् प्रयोग वंधे. अ० अशुभ नाम कर्म री. पु० पृच्छा. गो० हे गोतम ! का० काया नों वक्र पणो. भा० भात्र रो वक्र पणो. भा० भापा रो वक्र पणो. वि० विस्मवाद ते विपरीत करवो. अ० अशुभ नाम कर्म. जा० यावत् प्रयोग वंधे ॥४२॥ ड० उच्च गोत्र कर्म शरीर नी पृच्छा. गो० गोतम ! जा० जाति नों मद वहाँ करे. कु० कुल नों मद नहीं करे. थ० चलनों मद नहीं करे. त० तप नों मद नहीं करे. छ० सुत्र नों मद न करे. ई० ईश्वर मद ते ठकुराई नों मद न करे. या० ज्ञान ते भगवा नों मद नहीं करे. ड० एतला बोले करी ऊंच गोत्र वंधे. नी० नीच गोत्र कर्म शरीर. जा० यावत्. प० प्रयोग वंधे ॥४३॥ अ० अन्तराय कर्म नी पृच्छा. गो० हे गोतम ! दा० दान नी अन्तराय करी. ला० लाभ नी अन्तराय करी. भो० भोग नी अन्तराय करी. ड० डपभोग नी अन्तराय करी. वी० वीर्य अन्तराय करी. अ० अन्तराय कर्म शरीर प्रयोग नाम कर्म नैं. ड० उदय करी. अ० अन्तराय कर्म शरीर प्रयोग वंधे. ॥४४॥

अथ ३६ निपजावा री करणी सर्व जुदी २ कही है । तिणमें ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनी, अन्तराय, ४ प कर्म तो घण घातिया है. एकान्त पाप है । एकान्त सावद्य करणी थी निपजे है । तिण करणी री तीर्थङ्कर नी आक्षा नहीं । असाता वेदनी, अशुभ आयुषो, अशुभ नाम, नीच गोत्र, ५ प ४ पिण एकान्त पाप है. ५ पिण एकान्त सावद्य करणी सू निपजे है । ते सर्व पाप कर्म जाणवा । ते तो १८ पाप स्थानकसेव्यां लागे है । अनैं साता वेदनी, शुभायुषो, शुभ नाम ऊंच गोत्र, ५ ४ कर्म पुण्य है । शुभ योग प्रवर्त्त्यां लागे है । ते करणी निर्जरा री है । जे करतां पाप कटे तिण करणी नैं तो शुभ योग निर्जरा कहीजे । ते शुभ योग प्रवर्त्ततां नाम कर्म रा उदय सू सहजे जोरी दावे पुण्य वंधे छे । जिम गेहूँ निपजतां खा गे सहजे निपजे छे । तिम दयादिक भली करणी करतां शुभ योग प्रवर्त्ततां पुण्य सहजे लागे छे । तिम निर्जरा री करणी

करतां कर्म कटे अने पुण्य बंधे । पिण सावध करणी करतां पुण्य निपजे नहीं ।  
ठाम २ सूत्र में निरवध करणी सम्बर, निर्जरा नी कही छै । पुण्य तो जोरी दावे  
विना वाञ्छा लागे छै । ते किम शुद्ध साधु नें अनादिक दीधो तिवारे अत्रत माहि  
सूं काढ्यो व्रत में घाल्यो । तेहथी व्रत नीपन्यो, शुभयोग प्रवर्त्या, तिण सूं निर्जरा  
हुवे । अने शुभयोग प्रवर्त्तें तठे पुण्य आपेही लागे छै । तिण सूं आठ कर्म अने ८  
कर्म नी करणी उत्तम हुवे । ते ओ नें निर्णय करे । सूत्र में अनेक ठामे निर्जरा  
सूं इज पुण्य रो बन्ध कह्यो ते करणी निरवध आज्ञा माहि छै । पिण द्य  
वाहिर ली करणी थी पुण्य बंधतो किहां इज कह्यो नथी । जे धनो भणगार  
वि तप करी सर्वार्थ सिद्ध ऊपन्यो । एतला पुण्य उपाया । ए पुण्य भली  
करणी थी बंध्या के आज्ञा वाहिर ली करणी थी बंध्या । डाहा हुवे तो विचारि  
जोइजो ।

## इति ११ बोल सम्पूर्णा ।

केतला एक आज्ञा बाहिर धर्म ना थापणहार कहे जो आज्ञा बाहिर धर्म  
न हुवे तो धर्म रुचि नें गुरां तो कडुवो तुम्हो परठण री आज्ञा दीधी । अने धर्म  
रुचि पीगया । ए आज्ञा बाहिर लो काम कीधो तो पिण र्थ सिद्ध आरा-  
धया, ते माटे आज्ञा बाहिर पिण धर्म छै । ततोत्तरम्—

धर्म रुचि तो आज्ञा लोपी नहीं, ते आज्ञा माहिज छै । ते किम् गुरां  
कह्यो ए तुम्हो पीधो तो अकाले मरण पामसी । ते माटे परठो इम मरवा  
नो भय बतायो । पिण इम न कह्यो । जे तुम्हो पीधो तो विराधक थास्यो । इम-तो  
कह्यो नहीं । गुरां तो मरवा नो कारण कही परठण री आज्ञा दीधी छै । ते पाठ  
लिखिये छै ।

ततेणं धम्मघोसे थेरे तस्स सालत्तियस्स गोहाव-  
गाढस्स गंधेणं अभि भूय समाणा ततो सालाइयातो

रोहावगाढा १ एकग विंदुयं गहाय करयलंसि आसादेइ  
 तित्तगं रं कडुयं अखज्जं अभोज्जं वि भूतिं जाणि  
 धम्मरुइं एगारं एवं वयासी—जतिणं देवाणुप्पिया !  
 एयं तियं जाव रोहावगाढं आहारेसि तेणं तुमं अकाले  
 चेव जीवियाओ ववरो विज्जसि, तंमाणं तु देवाणुप्पिया !  
 इ लइयं जाव आहारेसि माणं तुमं अका चेव जीवि-  
 याओ ववरो विज्जसि तं गच्छहणं तुमं देवाणुप्पिया ! इ  
 तियं एगंत मणवाते अचित्ते थंडिले परि वेति २ एणं  
 सुयं एसण्णज्जं सणं ४ पडिगाहेत्ता आहारं हारेति  
 ॥ १५ ॥

(जाता अ० १६)

त० ति० रे. अ० धर्म ० थ० स्थविर. स० ते सा० थ० स्नेह छै मिलयो थको  
 ० नें विपे. तिथरी. ग० गंधे करी. अ० पराभूत हुवो थको. ति० तिथ. सा० शाक नों थो.  
 स्नेह छै मिलयो थको जेहनें विपे. तिथ मूं ए० एक विन्दु. ग० ग्रहो नें. क० हाय नें विपे. आ०  
 आ १ कोथो. ति० तित्तक. तार. क० कडुवो. अ० अ० अभोज्य. वि० विव  
 पृहवो. जा० जाणी नें. ध० धर्मरुचि अणगार नें. ए० इस को. ज० जो हे धर्म रुचि साधु देवानु-  
 प्रिय ! ए० ए तार रस युक्त वधारथो वीगरथो आहार जीमसी तो. तो० तू. अ० अकालेज जीव-  
 तन्य थी रहित थासी. त० ते माटे मा० रखे तूहे देवानुप्रिय इया नों आहार करसी मा० रखे  
 अकाले जीवितन्य थी रहित थासी ते मांटे. ज० जाठ तु० तुम्ह देवानुप्रिय ! ए० ए तार रसयुक्त  
 व्यञ्जन. ए० एकान्त कोई नो दृष्टि पडे नहीं ए हवे निर्जीव स्थंडिले परिलवो २ अ० फा०  
 प्रायुक्त. ए० पुण्यीय आ० आहार प्राणी नें. आहार करो.

अथ ० तो मरवा रो कारण कही परठण री आत्मा दीधी छै । अने  
 तुम्हो स्त्रावो वज्यो ते पिण मरण रा भय माटे वज्यो छै । पिण विराधक रे कारण  
 वज्यो न थी । जे गुरां तो मरण रो कारण कही तुम्हो पीणो वज्यो । धर्मरुचि  
 पंडित मरण आरे करी नें विशेष निर्जरा जाणी नें पी गया । तिण सूं आत्मा मांदिज

छै । ए तो उत्कृष्टा ई कीधी छै । पिण आह्वा लोपी नहीं । अनैं जो बाहिरे ए कार्य हुवे तो विराधक कहिता अविनीत, कहिता अनैं गुरां तो धर्म रुचि नें विनीत कह्यो । ते लिखिये छै ।

ततेणं धम्मघोषा थेरा पुव्वगए ओगं गच्छति  
उवओगं गच्छित्ता समणे णिगंग्थे णिगंग्थीओय सदावेति २  
त्ता एवं वयासी—एवं अज्जो मम अंतेवासी धम्मरुई  
णामं णगारे पगइ भइए जाव विणीए सं सेण  
णिक्खत्तेणं तवो कम्मेणं जाव नागसिरीए माहणीए  
गिहे गुपविट्ठे । ततेणं सा नागसिरी माहणी जाव णिसि-  
रइ । तएणं धम्मरुई णगारे अहपज्जत्तमितिकट्ठु जाव  
लं एवकंखमाणा विहरति । सेणं धम्मरुई णगारे  
वहूणि वात्ताणि सामणए परियागं पाउणित्ता । आलोइय  
पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे लं वि उड्डंजाव  
सव्व सिद्धि महा विमाणे देवताए उव णे ।

( ज्ञाता अ० १६ )

तिवारे ते. ध० धर्म घोष स्थविर. पू० चउदे पूव माहे उपयोग दीधो ज्ञाने करी जाययो.  
स० श्रमण. नि० निर्ग्रन्थ नें. आधवीया नें. स० तेहावे तेहावी नें. ए० इम कहे. ख० निश्रय हे  
आप्यौ माहरो शिष्य अंतेवासी. धर्म रुचि नामे साधु. अ० अणगार प० प्रकृति करी.  
अ० भद्रोक्त. प० परिणाम नों धर्या जा० तपस्वी. वि० विजयवन्त मा० मास निरं-  
न्तर तप करतो. त० तप करी नें. जा० यावत्. ना० नागश्री ब्राह्मणी रे घरे आहारार्थ. अ० गयो.  
स० तिवारे. ना० नागश्री णो आहार आप्यौ. जा० यावत् ग्रही नें नितरे. त० तिवारे. घ०  
धर्म रुचि. अ० अथ पर्याप्त. जाय्यो नें. का० काल की अपेक्षा रहित विहलो. ध०  
धर्म रुचि गार. व० बहु वर्ष. साधु पण्यो. पाली नें आ० आलोचना प्रतिक्रमण करी  
नें समाधि सदित. ना नें विषे. करके ( पामी नें ) उ० स्वायं  
सिद्धि नि नें विषे देवता पण्ये उपण्ये.

इहां धर्म घोष स्थविर धर्मरुचि नें भद्रीक विनीत कह्यो छै । इन न्याय रुचि तुम्हो पीधो ते आज्ञा माहि छै, पिण बाहिर नहीं । डाहा हुवे तो चिचारि जोइजो ।

## इति १२ बोल सम्पूर्णा ।

इमहिज सर्वावुभूति सुनक्षत्र नें बोलवो बज्यो । ते पिण बोलवा रा कारणें भाटे दोनू साधु पंडित मरण आरे कर लीधो ते माटे आज्ञा माहि छै । कोई कहे—वालवा रो कारण तो कह्यो नहीं तो वालवा रो कारण किम जाणिये इम कहे तेहनों र—जिवारे आनन्द स्थविर गोचरी गया गोशाले पाणिया पो दृष्टान्त देइ आनन्द स्थविर ने कह्यो । तू वीर नें जाय नें कहीजे जे म्हारी करसी ते हूँ बाल ना खस्यूं । अनें तू जाय वीर नें कहिसी तो तोनें बालूँ नहीं । तिवारे आनन्द स्थविर वीर नें आवी कह्यो । भगवान् कह्यो हे आनन्द ! गौतमादिक साधां नें जाय नें कह्यो । गोश सूँ धर्मचोयणा कोई कीजो मती गोशाले साधां सूँ मिथ्यात्व पड़िवज्जो छै । ते भणी तिवारे आनन्द गौतमादिक साधां नें कह्यो । जे गोशाले कह्यो म्हारी कीधी, तो बाल नाखस्यूं । ते भणी भगवान् कह्यो छै । गोशाला थी धर्मचोयणा करज्यो मती । गोशाले साधां सूँ मिथ्यात्व पड़िवज्जो छै ते माटे इहां गोशाले कह्यूं हूँ बाल नाखस्यूं । ते वालवा रा कारण माटे बान् बज्यो छै । पछे गोशालो आयो लेश्या थी खाली २यो पछे बलवा रो भंय मिट गयो । तिवारे भगवान् साधां नें पहचो कह्यो छै । ते पाठ लिखिये छै ।

ए मेव गोशाला वि मंखलिपुत्ते म वहाए सरीरगंसि  
गेयं णिसिरित्ता हततेये जाव विणट्ठ तेये तच्छंदेणं अज्जो-  
ब्भे गोसा मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडि-  
चोएह ।

श० इय पूर्वले दृष्टते. गो० गोशालो. सं० मंखलिपुत्र. म० माहुरा. व० वध नें श्रयें.  
स० शरीर नें विपे ते० तेजू लेश्या प्रति सूकी नें. ह० हत तेज ययो. जा० यावत्. वि० विनष्ट तेज  
ययो. त० ते मणो. छा० छांदे. स्वाभिप्राये करो नें यथेच्छाई करो नें. तु० तुम्हें. गो० गोशाला.  
सं० मंखलीपुत्र प्रति. ध० धर्मचोयणा तिणें करी नें प० पदिचोयणा यो ।

अथ इहां भगवान् साधां ने कह्यो—जे गोशाले मोनें हणवा नें तेजू लेश्या  
शरीर थी काढी. ते माटे हिवे तेजू लेश्या रहित ययो छै । तिण सूं तुमारे छांदे  
छै । हे साधो ! गोशाला सूं धर्मचोयणा करो तेजू लेश्या रो भय मिट्यो । जद  
धर्म चोयणा रो उदेरी नें कह्यो । अनें पहिलां बज्यां ते बालवा रा कारण माटे ।  
पिण गोशाला सूं बोल्यां चिराधक थास्यो इम कह्यो नहीं । ते माटे सर्वावभूति  
सुनक्ष्ण पिण पंडित मरण आरे करी नें बोल्या छै । अनें जो आह्वा बाहिरे हुवे तो  
भगवान् तो पहिलां जाणता हुन्ता, जे ईं वरजूं छूं । पिण प तो बोलसी तो आह्वा  
बाहिरे थासी, इम बोल्यां आह्वा बाहिरे जाणे तो भगवान् बोलवा रो ना क्यां नें  
फहे । जो आह्वा बाहिरे हुन्ता जाणे, तो भगवान् साधां नें आह्वा बाहिरे ध्यू  
कीथा । तथा बली बोल्यां पळे निपेधता । जे म्हारी आह्वा बाहिरे बोल्या. इसो  
काम कोई साधु करज्यो मती । इम कहिता, इम पिण कह्यो नहीं । भगवन्त तो  
अपूजा दोनूं साधां ने सराया विनीत फह्या छै । ते पाठ लिखिये छै ।

एवं खलु गोयमा ! मम अंतेवासी पाईए जाणवए  
सत्वाणुभूर्दे गामं अणगारे पगइ भदए जाव विणीए सेणं  
तदा गोशालेणं मंखलिपुत्तेणं भासरासी करेमारो उड्डं  
चंदिस सूरिय जाव वंभलंतग महा सुक्के कप्पे वीई वइत्ता  
सहस्सारे कप्पे देवत्ताए उव्वरणे ।

( भगवती श० १५ )

प० इम. ख० निश्चय. गो० हे गौतम ! म० माहरो. अ० अन्तेवासी ( शिष्य प्राचीन  
जानपदी स० सर्वानुभूति नामे अणुगार. प० प्रकृति भद्रीक. जा० यावत् वि० विनीत. से० ते.  
स० तिवारे गो मंखलि पुत्रे करी. म० हुवो थको. उ० ऊर्ध्व चन्द्र. सूर्य यावत्.  
संतत. विमान ने. बी० उरसंधी ने. स० कण दे ने विषे. उ० उर  
हुवो.

इहां वन्ते सर्वानुभूति ने प्रशंस्यो घणो विनीत कह्यो ।  
धली सुनक्षत्र मुनि ने पिण विनीत कह्यो । जो आक्षा बाहिरे  
तो अविनीत कहिता । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति १३ बोल सम्पूर्णा ।

तथा मैं प्रमाणे 'करे ते शिष्य ने' विनीत कह्यो ।  
अने लोपे तेहने अविनीत कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

या निह्देश करे रुण मुदवाय कारण ।  
इंगि गांर परणे से विणीएत्ति वुच्चइ ॥

( उत्तराध्ययन अ० १ गा० २ )

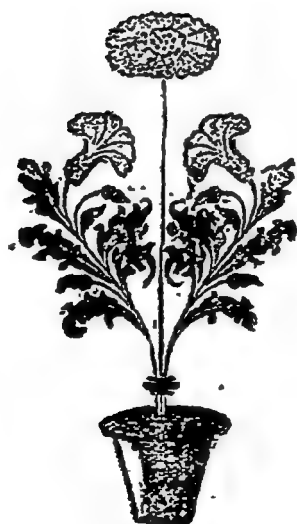
आ० गुरु नी आक्षा. नि० प्रमाण नू करणहार. गु० गुरु नी दृष्टि तेहने विषे.  
रहिषो पृहवा 'नू करणहार. इ० सूक्ष्म अङ्ग असुरादिक. अवलोचना चेष्टा ना जाणपण  
सहित. पृहवू 'तेहने' विनीत कहिये.

इहां गुरु नी प्रमाणे 'करे गुरु नी अङ्ग चेष्टा' ने वसें ते  
विनीत कहिये । प विनीत रा लक्षण । अने अनुभूति मुनि ने

भगवन्तं विनीतं कथ्यो । ते े प बोल्या ते आह्वा माहिज छै । आह्वा लोपी ने न बोल्या । आह्वा लोपी ने बोल्या हुवे तो विनीत न कहिता । डाहा हुवे तो विचारि नोइजो ।

इति १४ बोल सम्पूर्णा ।

इति निरवद्य क्रियाधिकारः ।





## अथ निर्ग्रन्थाऽऽहाराधिकारः ।



केतला एक अजाण जीव—साधु आहार. उपकरणादिक भोगवे तेहमें प्रमाद तथा अत्रत. कहे छै । पाप लागो अद्वे छै । अने साधु. आहार. उपकरण. आदिक भोगवे ते सूत्र में तो निर्जरा धर्म कह्यो छै । भगवती श० १ उ० ६ कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

फासु एसणिज्जं अंते ! भुंजमाणो किं वंधइ. जाव उवचिणाइ. गोय ।। फासु एसणिज्जं भुंजमाणो उय वज्जाओ सत्तकम्म पगडीओ धणियबंधन वद्धाओ । सिढिल वंधण वद्धाओ पकरेइ. जहा से संवुडेयां एवरं आउयं चणं कम्मंसि बन्धइ. सिय नो बन्धइ. सेसं तहेव जाव वीई वयइ ॥

( भगवती श० १ उ० ६ )

फा० प्राशुक. ए० एषणीय निर्दोष. भुं० हे भगवन् ! भुं० आहार करतो थको. स्युं बांध. जा० यावत् स्युं उ० संचय करे. गो० हे गोतम ! फा० प्राशुक एषणी भोगवतो आहार करतो. आ० आयुषा वर्जित ७ कर्म नी प्रकृति ध० गाढा बन्धन बांधी होइ. ते. सि० शिथिल बन्ध ने करी करे. ज० जिम सम्भृत अणगार नों. अधिकार. तिमज जाणवो. न० एतलो विशेष. आ० आयुषो कर्म बांधे कदाचित्. सि० कदाचित् न बांधे. से० शेष तिमज जाणवो. जा० यावत् संसार धी दृष्टे मोक्ष जावे.

अथ इहां साधु प्राशुकं पणणीक आहार भोगवतो ७ कर्म गाढा धंध्या हुवे तो ढीला करे । संसार नें अतिक्रामी मोक्ष जाय, कह्यो । पिण पाप न कह्यो । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो

## इति १ बोल सम्पूर्णा ।

ज्ञाता अ० २ कह्यो ते पाठ लिखिये छै ।

एतामेव जंवू ! जेयां अमहं शिगंधो वा शिगंधी वा जाव पठ्यति ते समारो ववगय गहाण भदण पुप्फगंध मल्लालं-कारे विभूसे इमस्स ओरालियस्स सरीरस्स नो वल्ल हेउंवा रुवं हेउंवा विसय हेउंवा तं विपुलं असयां यायां खाइमं साइमं आहार माहारेति, नल्लत्थ याया दंसया चरित्तायां वहणद्धयाय ।

( ज्ञाता अ० २ )

५० पृथी प्रकारे, एवं ते इष्टान्त, ज० हे जम्बु ! अ० म्हात्ता, शि० साधु, शि० साध्वी, जा० पावत्, ५० प्रश्नया प्रही नें, व० त्याग्यो छै, गहा० स्तान, मर्दन, पुण्य, गन्ध, माल्य, अलङ्कार विभूषा, जेहनें एइवा थका, इ० एह औदारिक बरोर नें, नो० नहीं, बणं निमित्तो, रु० नहीं रूप निमित्तो, वि० नहीं विषय निमित्तो, वि० बण्यो पान, खादिम, स्वादिम, आहार देवे छै, त० केवल ज्ञान, दर्शन, चारित्र पालवा नें काजे आहार को छै,

अथ इहां वर्ण, रूप, नें अर्थ आहार न करियो, ज्ञान, दर्शन, चारित्र वहवानें अर्थ आहार करणो कह्यो । ते ज्ञानादिक वहण रो उपाय ते निरवध निर्जरा सी करणी छै । पिण सावेंध पाप नो हेतु नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति २ ल सम्पूर्णा ।

ज्ञाता अ० १८ कथ्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

एवामेव मण रो म्ह शिगंगंथी वा इमस्स ओरा-  
लि रीरस् वं । वस् पि । वस् सु । वस्स शोणिया-  
स । व वस् विप्प हियस्स णो वण्ण हेउंवा णो  
रूव हेउंवा णो व हेउं वा णो वि य हेउंवा आहारं आहा-  
रेति त्थ एगाए सिद्धिग गां संपावणट्ठाए ।

( ज्ञाता अ० १८ )

प० रो प्रकारे पूर्वज्ञे दृष्टोते स० हे आयुष्यवंत भ्रमणो ! अ० महारा शि०  
शि० साधवो. इ० एह आदारिक शरीर नें, वन्ताभव. पिताभव. शुक्राभव. शोयिताभव. एहवा  
नं. जा० यावत्. अ० अवश्य त्यागवा योग्य नें. शो० नहीं धर्म निमित्ते. 'शो०'  
निमित्ते. शो० नहीं बल निमित्ते. शो० नहीं. वि० विषय निमित्ते. देवे छै. न० केवल.  
प० एक सि० मोक्ष प्राप्ति निमित्ते देवे छै.

इहाँ रो—जे ' . , बल. विषय. हेते आहार न करिवो ।  
सिद्धि ते मोक्ष जावा नें ' आहार करिवो । जो साधु रे आहार कियां में प्रमाद,  
पाप. त. हुवे तो मोक्ष क्यूं कही । ए तो कार्य निरवद्य छै. शुभ योग निर्जरा सी  
करणी छै । ते माटे कि ज ' आहार करिवो कहाँ । हुवे तो विचारि  
जोइजो ।

इति ३ बोल सम्पूर्ण ।

जयंचरे जयं चिट्ठे जयमासे जयंसण ।  
जयंभुज्जंतो भासंतो पाव न बंधइ ॥

( दशवैकालिक अ० ४ गा० ८ )

हिचै गुरु शिष्य प्रते कहे छै. ज० जयणाइ. अ० चाले ज० जयणाइ कमो रहे. ज० जयणाइ  
बैसे. ज० जयणाइ सुते. ज० जयणाइ जीमे. ज० . भा० बोले तो. पा० पाप कर्म न  
बंधे.

अथ इहां जयणा खूं भोजन करे तो कर्म न बंधे एहवूं कह्यो तो  
आहार कियां प्रमाद. अत्रत. किम कहिय. प्रमाद थी तो पाप बंधे अने साधु  
वि न बंधे कह्यो ते माटे । झाहा हूए तो विचारि जोइजो ।

इति ४ सम्पूर्णा ।

दश वैकालि अ० ५ कह्यो. ते छै ।

अहो जियोहिं असावज्जा वित्ती साहूण देसिया ।  
मोक्ख साहूण हेउस्स साहु देहस्स धारणा ॥

( दशवैकालिक अ० ५ उ० १ गा० १२ )

अ० क्षीर्यहू अ ते पाप रहित. वि० वृत्ति आजीविका. सा० साधु ने देलाइ कहे  
छ. मो० मोक्ष साधवा ने निमित्ते. स० साधु नी देह री धारणा छै.

अथ इहां कह्यो—साधु नी आहार नी वृत्ति मोक्ष साधवा नी  
हेतु श्री जिनेश्वर कही । ते असावद्य मोक्ष ना हेतु नें पाप वि कहिय । ए आहार  
नी वृत्ति निरवद्य छै । ते माटे असावद्य मोक्ष नी हेतु कही छै । झाहा हूवे तो विचारि  
जोइजो ।

इति ५ बोल सम्पूर्णा ।

तथा दश वैकालिक अ० ५ उ० १ कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

दुल्लहाओ मुहादाई मुहाजीवीवि दुल्लहा ।  
मुहादाई मुहाजीवी दोवि गच्छति सुगइ ॥१००॥

( दशवैकालिक अ० ५ उ० १ गा० १०० )

हु० दुर्लभ निर्दोष आहार ना दातार. सु० निर्दोष आहारे करी जीवे ते पिण साधु दुर्लभ.  
सु० निर्दोष आहार ना दातार. सु० अने निर्दोष आहार ना भोक्ता ए दोनूं. ग० जावे छै. सु०  
सोन्न नैं विषे.

इहां कह्यो—निर्दोष आहार ना लेणहार. अने निर्दोष आहार ना  
दातार. ए दोनूं मरी शुद्ध गति नैं विषे जावे छै । निर्दोष आहार ना भोगवण चाला  
नैं सद्गति कही, ते माटे साधु नों आहार पाप में नहीं । परं मोक्ष नों मार्ग छै । पाप  
नों फल तो कहुवा हुवे छै । अने इहां निर्दोष आहार भोगव्यां सद्गति कही, ते माटे  
निर्जरा री करणी निरवद्य आज्ञा माहि छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ६ बोल सम्पूर्णा ।

तथा ठाणाङ्ग ठा० ६ कह्यो ते पाठ लिखिये छै ।

छहिं गोहिं समणे निग्गंथे आहार माहारेमाणे गाइ-  
क्कसइ तं वेयण वेयावच्चे. इरियट्ठाए. य संजमट्ठाए. तह-  
पाणवत्तियाए. छट्ठ पुण धम्म चिन्ताए.

( ठाणांग ठा० ६ उ० १ )

छ० ६ स्थान के करी नैं. स० अमण. नि० निग्रय. आ० प्रते. मा० करतो धर्को.  
या० आज्ञा अतिक्रमे नहिं. तं ते ह कहे छै. वे० वेदनी री शांति रे निमित्त. वे०

निमित्त. इ० ईयांछमति निमित्त. स० संयम निमित्त. त० प्राण रक्षा निमित्त. छ० छटो. धर्म चिंतवना निमित्त.

अथ इहां कह्यो । ई स्थानकै करी श्रमण निरञ्ज्य आहार करतो आहां अतिक्रमे नहीं । तथा उत्तराध्ययन अ० ८ गा० ११-१२ में संयम यात्रा नें अर्थ. तथा शरीर निर्वाहवा नें अर्थ आहार भोगविचो कह्यो । तथा आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ३ उ० २ संयम यात्रा निर्वाहवा आहार भोगविचो कह्यो । तथा प्रश्न व्याकरण अ० १० धर्म उपकरण अपरिग्रह कह्या । पिण धर्म उपकरण नें परिग्रह में कह्यो न थी । साधु उपकरण राखे, ते पिण ममता नें अभावे परिग्रह रहित कह्या । तथा दश वैकालिक अ० ६ गा० २१ वस्त्र पात्रादिक साधु राखे मूर्च्छा रहित पणे, ते परिग्रह नहीं. पहुँच कह्यो । तथा ठाणाङ्ग ठा० ४ उ० २ साधु ना उपकरण निष्परिग्रह कह्या । चार अकिंचण्या ते मन. वचन. काया. अने उपकरण. कह्या ते माटे । तथा ठाणाङ्ग ठा० ४ उ० १ चार सु प्रणिधान ते भला व्यापार कह्या । मन. वचन. काया. सु प्रणिधान अने उपकरण सु प्रणिधान प ४ भला व्यापार साधु नें इज कह्या । पिण अनेरा नें भला न कह्या । तथा उत्तराध्ययन अ० २४ साधु आहार भोगवे ते परणा तीजी सुमति कही । अने प्रमाद हुवे तो सुमति किम कहिये । इत्यादिक अनेक ठामे साधु उपकरण राखे तथा आहार भोगवे तेहनों धर्म कह्यो, पिण पाप न कह्यो । तिवारे कोई कहे जो आहार किया धर्म छै तो आहार ना पचक्खान क्यूं करे । आहार किया पाप जाणे छै । तिण सू आहार ना त्याग करे छै । इम कहे—तिण रे लेखे साधु काउसग्ग में चालवा रा. निरवच वोलवारा. त्याग करे तो प पिण पाप रा त्याग कहिणा । कोई साधु वोलवारा. वखाणरा. शिष्य करणरा. साधु री व्यावच करणरा. अने करावण रा. कोई साधु नें आहार दे. १ रा. अने तिण कने लेवारा. त्याग करे तो प पिण तिणरे लेखे पाप रा त्याग कहिणा । पिण प पाप रा त्याग नहीं । प आहारादिक भोगवण रा त्याग करे ते विशेष निर्जरा नें अर्थ शुभ योग रा त्याग करे छै । केवली पिण आहार करे छै । त्याने तो पाप. लागे इज नहीं । ते पिण सन्धारो करे छै । नरत केवली आदि सन्धारा किया ते विशेष निर्जरा नें अर्थ, पिण पाप जाण नें आहार ना त्याग न कीधा । तथा कोई कहे आहार किया धर्म छै तो घणो खायां घणो धर्म होसी । इम कहे तेहनों उत्तर—साधु नें १ ग्रहर तांइ ऊंचे शब्दे वखाण दियां धर्म छै

तो तिण रे लेखे आखी रात रो वखाण दियां ' कहिणो । तथा पडिले-  
लेहन कियां ' छै तो तिण रे लेखे आखोइ दिन पडिलेहन ' धर्म कहिणो ।  
जो दा : वखाण दियां तथा पडिलेहन कियां धर्म छै तो आहार पिण  
दा सूं कियां धर्म । पिण मर्यादा उपरान्त आहार कियां धर्म नहीं । अने  
साधु आहार कियां 'द हुवे तो दातार ने ' हुवे । डाहा हुवे तो विचारि  
जोइजो ।

इति ७ वोल सम्पूर्णा ।

इति निर्ग्रन्थाऽऽहाराधिकारः ।



## निर्ग्रन्थ निद्राऽधिकारः

केतला अहानी—साधु नींद लेवे तिण नें प्रमाद कहे—आज्ञा बाहिर कहे। तिण नें प्रमाद री ओलखणा नहीं। प्रमाद तो मोहनी कर्म रा उदय थी निद्रा छै। ए द्रव्य निद्रा तो दर्शनावरणीय रा उदय थी छै। ते माटे प्रमाद नहीं प्रमाद तो आज्ञा बाहिर छै। अने साधु निद्रा लेवे तेहनी-घणे ठामे त दीधी छै। दश वैकालिक अ० ४ गा० ८ में ते लिखिये छै।

जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयंसये ।

जयं भुज्जंतो भासंतो पाव कम्मं न बंधइ ॥ ८ ॥

( दश वैकालिक अ० ४ गा० ८ )

ज० जयणाइ चाले. ज० जयणाइ कमौरहे. ज० जयणाइ येडे. ज० जयणाइ छवे. ज० जयणाइ जीमे. ज० जयणाइ बोले तो ते साधु नें पाप कर्म न बंधे.

जयणा थी सूता पाप न बंधे इम कह्यो। ए द्रव्य निद्रा हुवे तो सोवण री आज्ञा किम दीधी। अने न बंधे इम क्यूं कह्यो। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १

पूर्ण ।

तिवारे कोई कहे ए तो सोवण री आज्ञा दीधी पिण निद्रा रो न कह्यो तेहनों उत्तर—ए सूता कह्यो भावे द्रव्य निद्रा कह्यो एकहिज छै। दशवैकालि अ० ४ कह्यो ते लिखिये छै।



से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजय विरय पडिहय पव-  
क्खए पावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ परिसाग गो  
वा सुत्ते वा ।गरमाणो वा ।

( दश वैकालिक अ० ४ )

से० ते. पूर्व कक्षा ५ महाव्रत सहित. भि० साधु अथवा. भि० साध्वी. सं० संयमवन्त  
वि० निवर्त्या द्वै सर्व सावद्य थकी. प० पक्कखाणे करो पाप कर्म आवता रोक्या है. दि० दिवस  
में विपे. रात्रि में विपे. अथवा. ए० एकाकी थको. अथवा. प० परपद माही बैठो थको अथवा.  
सु० रात्रि में विपे सुतो थको. जा० जागतो थको.

अथ इहां “सुत्ते” ते निद्रालेता. “जागरमाणे” ते जागता कक्षा । ते  
“सुत्ते” नाम निद्रावन्त नों छै । साधु निद्रा लेवे ते आक्षा माहि छै । ते माटे पाप  
नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति २ वोल् सम्पूर्णा ।

तथा भगवती श० १६ उ० ६ कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

सुत्तेणं भंते ! सुविणं पासइ जागरे सुविणं पासइ सुत्त-  
जागरे सुविणं पासइ गोयसा ! एणो सुत्ते सुविणं पासइ एणो  
जागरे सुविणं पासइ सुत्त जागरे सुविणं पासइ ॥ २ ॥

( भगवती श० १६ उ० ६ )

सु० सुत्तो. भ० हे भगवन् ! सु० स्वप्न. पा० देखे. जा० जागतो स्वप्नो देखे. सु० अथवा  
काई सुतो. काई जागतो स्वप्नो देखे. गो० हे गोतम ! एणो० नहीं सुतो स्वप्न देखे. एणो० नहीं जागतो  
स्वप्न देखे. सु० काइक सुतो काइक जागतो स्वप्न देखे.

अथ इहाँ कह्यो—सुतो स्वप्नो न देखे जागतो पिण न देखे । कांइक सुनो कांइक जागतो स्वप्नो देखतो । ते “सुत्ते” नाम निद्रा नों “जागरे” नाम नाम जागता नों छै । पिण भाव निद्रा नी अपेक्षाय ए “सुत्ते” न कह्यो । द्रव्य निद्रा नी अपेक्षाय इज । तेहनी टीका में पिण इम कह्यो ते टीका लिखिये छै ।

“नाति सुतो नाति जाग्रदित्यर्थः ।” इह सुतो जागरश्च द्रव्यभावाम्नां स्यात् तत्र द्रव्य निद्रापेक्षया भावतश्चा विरत्यपेक्षया । तत्र स्वप्न व्यतिकरो निद्रापेक्ष उक्तः ।

इहाँ पिण द्रव्य निद्रा निद्रा कह्यो छै । ते भाव निद्राधी पाप लागे पिण द्रव्य निद्रा थो पाप न लागे । अनेक ठामे सुवणो ते निद्रा नों नाम कह्यो छै । ते माटे जयणा थी सूतां पाप न लागे, सुवण री आह्वा छै ते माटे । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ३ वो सम्पूर्णा ।

उत्तराध्ययन अ० २६ । ते पाठ लिखिये छै ।

पढमं पोरिसि सज्झायं वीतियं भाणं भित्तायई ।  
तइयाए निदमोक्खंतु चउत्थी भुज्जो वि सज्झायं ॥

( उत्तराध्ययन अ० २६ गा० १८ )

प० पहिली पौरसी में, स० स्वाध्याय करे, वि० बीजी पौरसी में ध्यान ध्यावे, त० तीजी पौरसी में, नि० निद्रा सूके, च० चौथी पौरसी में भु० बली स० स्वाध्याय करे.

अथ इहाँ अभिग्रह घारी साधु पिण तीजी पौरसी में निद्रा सूके कह्यो । ते देशो भाषाई क्करी किहांइ निद्रा किहांइ निद्रा लेवे कहे । किहांइ निद्रा सूके

कहे । ए तीजी पौरसीइ निद्रा नी आक्षा अरि हधारी नैं पिण दीधी ।  
 प्रमाद नी तो एक मात्र पिण । नहीं । “ यं गोयमा ! मापमायए”  
 उत्तराध्ययने कह्यो ते माटे ए द्रव्य निद्रा प्रमाद नहीं । परं माहि ।  
 । हुवे तो विचारि जो ते ।

## इति ४ बोला सम्पूर्णा ।

५ उ० १ कह्यो ते पाठ लिखिये छे ।

नो ष्पइ निगंथाणं वा निगंथीणं वा दगतीरंसी—  
 चिट्ठि एवा. निसीइत्तएवा. तुयट्ठि एवा. निदाइत्तएवा.  
 इत्तएवा. असणंवा. पाणंवा. खाइं वा. इमंवा.  
 आहार माहारेत्तए. उ रंवा. पासवणंवा. . सिद्धाणं  
 . परिद्वेत्तए. सज्झायंवा. रत्तए. भाणंवा भाइत्तए  
 ।उसगंवा द्वाणं द्वाइत्तए ॥ १८ ॥

(बृहत्कल्प उ० १)

नो० नहीं कल्पे. नि० साधु नैं. तथा. नि० साध्वी नैं. द० पाणी नैं तीरे । त्रु नदी  
 व नैं तीरे कमौ रहिवौ. नि० वा वैसवो. तु० अ करवो. नि०  
 थोड़ी निद्रा लेवी. प० अथवा विशेष निद्रा लेवी. अ० अशन. पा० पान. खा० खादिस. सा०  
 स्वादिस. आ० आ खावो. उ० बड़ी नीत. पा० छोटी नीत. खे० खेल कहितां बलखादिक.  
 सि० नासिका नों . प० परिद्वो न कल्पे. स० स्वाध्याय करवी न कल्पे. भा० ध्यान ध्यावो  
 न . का० कायोत्सर्ग करवो. ठा० तिहां पाणी नैं तीरे साधु साध्वी न रहे तिहां पाणी पीवा  
 नों मन जाणे जे पाणी पीवा वैडो छै जीव माहिता  
 पासे. से न .

इहां कह्यो—पाणी ना तोरे ऊँओ रहिवो. वैसवो. निद्रादि लेवी  
ध्यानादिक न कल्पे । ए सर्व पाणी ना तोरे वर्ज्या । पिण और  
ए बोल वर्ज्या नहीं । जिम अनेरी स्वाध्याय, ध्यान, अशनादिक करणा  
कल्पे । तिम अनेरी जगां निद्रा पिण लेवी कल्पे । ए तो सर्व बोलां री जिम आक्षा  
छै, तिण में प्रमाद नहीं । जिम स्वाध्याय, ध्यान, नादिक में नहीं तो  
निद्रा में पाप किम कहिए । ए बोलां री आक्षा छै ते माटे बृहत्कल्प उ०  
३ कह्यो । न कल्पे साधु न साध्वी न वि वेलाइ स्वाध्यायादिक करवी,  
निद्रा लेवी. इम कह्यो । पिण अनेरे ठामे स्वाध्याय निद्रादिक वर्ज्यो नथी । हाहा  
हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ५ बोल सम्पूर्णा ।

बृहत्कल्प उ० ३ कह्यो ते लिखिये छै ।

नो कप्पइ निगंथाणं निगंथीणं गिहंसि  
आसइत्तएवा चिट्ठित्तएवा निसीइत्तएवा तुयहित्तए निदा-  
इ एवा पयलाइत्तए असणंवा पाणं इ इ ।  
आहार माहारित्तए उच्चारं पासवणंवा लेलं सिंघाणं  
वा परिट्ठवेत्तए सज रत्तए भाणंवा भाइत्तए काउ-  
सगं रित्तए णं ठाइत्तए अहपुण एवं शेज्जा जरा-  
जुणणे वाहिए. स्सी दुब्बले किलं ते मुच्छेज्ज पवडेज्जवा  
एवं से कप्पइ तरागिहंसि । सइत्तए जाव ठाणं  
इत्तए ॥ २२ ॥

नो० न कल्पे. नि० साधु नें. नि० साधवी नें. अ० गृहस्थ ना अन्तर घर नें विषे,  
 चि० ऊभो रहवो. नि० बैठवो. तु० छयवो. नि० थोड़ी निद्रा करवो. प० विशेष निद्रा करवो. अ०  
 अशन. पान. खादिम. दिम. आहार खावो. तथा. उ० वड़ी नीति. पा० छोटी नीति. से०  
 वेलखादिक. सि० नासिका नों मल परिठवो. तथा. सा० स्वाध्याय करवो. भा० ध्यान ध्यावो.  
 का० कथोत्सर्ग करवो. ठा० स्थान ठावो. नाकल्पे. अ० हिवे. पु० वली. ए० हम जाणवा. ज०  
 जरा जोर्या वा० रोगियो. थे०. त० तपस्वो. दु० दुर्बल. कि० छामना पाम्यो थको. मु० दूच्छा  
 पाम्यो. प० पदतो थको. ए० एहवा नें. क० कल्पे. अ० गृहस्थ ना घर नें विचाले. आ० वेंसवो  
 छयवो जाव कहितां योवतू ठायवो.

अथ इहां कह्यो—गृहस्थ ना घर नें विषे साधु नें स्वाध्यायादिक  
 निद्रा पिण न कल्पे । जे अन्तर घर नें विषे न कल्पे तो अन्तर घर बिना अनैरा घर  
 नें विषे तो स्वाध्यायादिक निद्रादिक कल्पे छै । ते माटे अन्तर गृह में ए वोल  
 वर्ज्या छै । जिस अध्याय ध्यानादिक और जगां कल्पे तिम निद्रा पिण कल्पे छै ।  
 अने जे व्याधिवन्त. स्थविर ( वृद्ध ) तपस्वी छै, तेहने ए सब वोल अन्तर घर नें  
 विषे पिण कल्पे छै । तिण में निद्रा पिण लेणी कही, तो जे निद्रा प्रमाद हुवे तो  
 प्रमाद नी तो रोगी. तपस्वी. वृद्ध नें पिण आह्वा देवे नहीं । ते माटे ए द्रव्य निद्रा  
 प्रमाद नहीं । अन्तर घर ते रसोढ़ादिक घर विचाले जगां नें कह्यो छै । अन्तर शब्द  
 मध्यवाची छै । ते घरे रोगियादिक नें पिण निद्रा लेवी कही । ते माटे ए द्रव्य  
 निद्रा प्रमाद नहीं, प्रमाद तो भाव निद्रा छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ६ ल सम्पूर्णा ।

तिवारे कोई कहे—द्रव्य निद्रा किहाँ पही. तेहनी उत्तर—सूत्र पाठ थी  
 कहे छै ।

॥ गीसया । मुण्णिणो सया जागरंति ॥ १ ॥

( भावाराधु अ० ३ उ० १ )

स० मिथ्यात्व अज्ञान रूप मोह निद्राई करी "सुप्ता" ते. अ० मिथ्यादृष्टि जाणवो. सुणी. तत्त्व ज्ञान ना जाणवहार सुखि मार्ग नों गवेष्क. स० सदा निरन्तर. जा० जागे हित समाचरे अहित परिहरे. यदपि बीजी पौरसी आदि निद्रा करे तथापि भाव निद्रा ने अभावे ते जागता इज कहिई.

अथ इहां कह्यो—मिथ्यात्व अज्ञान रूप मोह निद्रा करी सुप्ता अमुणी मिथ्यादृष्टि । अने साधु ने जा कहा । ते निद्रा लेवे तो पिण भाव निद्रा ने अभावे जागता कहा । ते भाव निद्रा थी अहेत कह्यो । पिण द्रव्य निद्रा थी अहित न कह्यो । ते माटे द्रव्य निद्रा थी अहित नथी । तथा भगवती श० १६ उ० ६ "सुप्ताजागरा" ने अधिकारे अर्थ में द्रव्य निद्रा भाव निद्रा कही छै । तिहां भाव निद्रा थी तो पाप लागे छे । अने द्रव्य निद्रा थी तो जीव दवे छे । पिण पाप न लागे । एक मोहनी रा उदय विना और कर्म रा उदय थी पाप न लागे । निद्रा में स्वप्नो आवे ते मोहनी रा उदय थी, ते भाव निद्रा छै, तेहथी पाप लागे । "यिणद्धि" निद्रा तो दर्शनावरणी रे उदय । अर्द्ध वासुदेव नों बल ते अन्तराय कर्म ना क्षयोपशम थी, । कार्य करे ते मोहनी रा उदय थी, जेतला मोह कर्म ना उदय थी कार्य करे ते सर्व भाव निद्रा छै कर्म बन्ध नों कारण छै । पिण द्रव्य निद्रा पाप नों कारण नथी । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ७ बोल संपूर्ण ।

इति निर्ग्रन्थ निद्राऽधिकारः ।

## अथ एकाकिसाधुअधिकारः ।

केतला एक अन्नानी कहे—कारण बिना पिण साधु नें लो विचरणो कल्पे इम कहे ते सूत्र ना अजाण छै । कारण बिना एकलो फिरे तिण नें तो भगवन्त सूत्र में ठाम २ निपेध्यो छै । तथा व्यवहार उ० ६ कह्यो ते पाठ लिखिये छै ।

से गा 'सिवा जाव संनिवेसंसि वा अभिणिणवगडाए.  
भिणिण दुवाराए अभि णिक्खमण पेसवाए नोकप्पति बहु-  
सुयस्स वज्झागं स्स एगाणियस्स भिक्खुस्सवत्थए. किमं  
गपुण अप्पसुयस्स अप्पागमस्स ॥१४॥

( व्यवहार उ० ६ )

सं० ते ग्राम नें विपे. जा० यावत्. सं० सन्निवेश सराय प्रमुख नें विपे. अ० प्रत्येक कोठ में वादी वरंडो हुवे. अ० जुआ २ वारणाहुइ' प्रत्येक जुदा २ निकलवा ना मार्ग छै. प० प्रवेश करवा ना मार्ग छै. तिहां. नो० न कल्पे. व० बहुश्रुति नें. व० घणा आगम ना जाण नें. ए० एकाकी पणो. भि० साधु नें व० रहिवो. जो बहुश्रुति नें एकलो रहिवो. तो. कि० किस्सू कहिवो. पु० वली अल्प आगम ना जाण. भि० साधु नें जे ग्रामादिके घणा जुदा २ वारणा जुदा २ ठाम होय घणा फेर मा होय. तिहां एककी बहुश्रुति थको पिण पाप अनाचार सेवा तहे अने जो एक ठां हुइ ता बहुश्रुति तिहां बसतो थको पाप अनाचार लज्जाइ न सेवो सके.

अथ इहां कह्यो—जे ग्रामादिक ना घणा निकाल पैसार हुवे । तिहां बहुश्रुति घणा म ना नें पिण १की पणे न कल्पे तो किस्सू कहिवो अल्प आगम ना जाण नें इहां तो १ एकलो रहिवो वज्यों छै । ते माटे एकलो रहे तेहने साधु किम कहिये । डाहा हुवे तो विचारि जो ते ।

ति १ बोल सम्पूर्णा ।

तिवारे कोई कहे—ए तो एक जगां स्थानक ना घणा निकाल पैसार हुवें तिहां ए रहिवो वज्यों छै । तेहनों उत्तर—जे ग्रामादिक ना घणा निकाल पैसार हुवे तिहां “अगडसुया” साधु नें रहिवो न कल्पे । तिहां पिण पहवो इज कह्यो छै । ते पाठ लिखिये छै ।

से ग सिवा जाव सन्निवेसंसिवा. अभिणिणवगडाए  
अभिनिदुवाराए. अभिनि ण पवेसणाए नोकप्पति  
वहुणं अगड सुयाणं एगयओवत्थए ॥१३॥

( व्यवहार उ० ६ )

से० ते ग्राम नें विपे, जा० यावत्, स० सन्निवेस सराय प्रमुख नें विपे, अ० प्रत्येक २ जुदा २ कोटादिक होइ जुदा २ परिचोर हुइ स्थापना घणा निकलवा ना मार्ग छै. घणा पेसवा मार्ग छै तिहां. नो० न कल्पे. घणा अगोतार्य नें एकला रहिवो.

अथ इहां पिण ग्रामादिक ना घणा दरवाजा हुवे, तिहां घणा अगडसुया ते निशीथ ना अजाण तेहनें न कल्पे, इम कह्यो । तो तेहने लेखे ए पिण एक जगां घणा वारणा कहिवा । अनें जो ग्रामादिक ना घणा वारण छै । तिण ग्रामादिक में अगडसुया नें न कल्पे तो तिहां एकला बहुश्रुति नें पिण वज्यों छै । ते माटे ते ग्रामादिक ना घणा वारणा छै ते ग्रामादिक में बहुश्रुति नें एकलो रहिवो नहीं । एक निकाल ते ग्रामादिक में पिण अगडसुया न वज्यों छै । अनें बहुश्रुति एकला नें अहोरात्र सावधान पणे रहिवूं तो छै । ते ग्रामादिक आश्री छै । पिण स्थान आश्री नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २ बोल सम्पूर्ण ।

तथा बृहत् उ० १ १०—जे ग्रामादिक ना एक निकाल तिहां साधु साध्वी नें एकठा न रहिवा । अनें घणा वारणा तिहां रहिवो कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।



से गामंसि वा जाव राय हाणिसिवा अभिनिवगडाए.  
अभिनिदुवाराए. अभिनिक्खमण पवेसाए. कप्पइ निगं-  
थाणय निगंथीणय एकत्तउवत्थए ।

( बृहत्काल उ० १ वो० ११ )

से० ते गा० ग्रामादिक नें विषे जा० यावत् पाछला बोल लेवा. राजधानी. तिहां अ०  
सुदा २ गढ़ हुवे. अ० सुदा २ वारणा हुवे. सुदा २ निकलवा ना पसवा ना मार्ग हुवे. तिहां. कल्पे  
साधु नें साध्वी नें एकठा बसवा.

अथ इहां घणा वारणा ते ग्रामादिक में साधु साध्वी नें रहिवा कहा ।  
ने ग्रामादिक ना घणा निकाल आश्री पिण स्थानक ना घणा वारणा आश्री नहीं ।  
तिम बहुश्रुति एकला नें घणा वारणा निकाल पैसार हुवे .ते .ग्रामादिक में न  
रहिवो । ए पिण ना घणा निकाल आश्री कहा । . पिण स्थानक आश्री नहीं ।  
अने जे एक स्थानक ना घणा वारणा हुवे तिहां एकल बहुश्रुति नें न रहिवूं इम कहें  
तिण रे लेखे , एक स्थानक ना घणा निकाल हुवे ते स्थानक साधु साध्वी नें पिण  
भेलो रहिवूं । पिण ए तो ग्रामादिक ना घणा दरवाजा तिहां बहुश्रुति नें एकलो  
रहिवूं वज्यो छै, तो अल्पश्रुति नें किम रहिवो । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ३ बोल सम्पूर्ण ।

तथा एकलो रहे तेहमें ८ गुण कहा ते लिखिये छै ।

पासह एगे रुवेषु गिद्धे परिणिज्जमाणे एत्थ फासे पुणो  
पुणो. आवंतिकेआवन्ति लोयंसी आरंभजीवी ॥७॥ एएसु  
चेव आरंभजीवी एत्थविवाले परिपच्चमाणे रसति पावेहिं  
कम्मेहिं असरणं सरणंति सरणमाणे ॥८॥ इह मेगेसि एग

चरिया भवति । से बहु कोहे बहुमाणे बहुमाए बहुलोहेबहु-  
रण बहुननेड बहुसढे बहुसंकपे आसव सकी पलिओछन्ने  
उट्टिय वायं पवयमाणो “मा मेकेइ अदक्खू” अन्नाण पमाय  
दोसेणं सततं मूढे धम्मं णाभिजाणाति ॥६॥ अट्ठापया माणव  
कम्मकोविया जे अणुवर या अविजाए पलिमोक्खमाहु अव-  
ट्ठमेव सणुपरियट्ठंति त्तिवेमि ।

( आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ५ उ० १ )

पा० देलो. ए० केतलाक. रु० रूप ने विषे बूढ़. प० परिणमता थका. ए० इहा. फ० स्पष्ट  
पु० चारम्बार. आ० जेतला. के० ते माहि थकी केइ. लो० लोक मनुष्य लोक ने विषे. आ०  
सावद्य अनुष्ठाने करी. जी० आजीविका करे ते दुःख भोगवे. एतले गृहस्थ देखाव्या बली अनेरा  
ने देखावे छै. ए० पु सावद्य आरम्भ ने विषे प्रवर्तता गृहस्थ तेहने विषे शरीर निर्वाह ने काजे  
प्रवर्ततो. अनय तोर्या तथा पासव्यादिक द्रव्य लिंगी थई आरम्भ जीवी थाइ. सावद्य अनु-  
ष्ठाने बर्त्ते ते पिण पृहवा दुःख पामे तथा. गृहस्थ पिण वेगला रहो. तीर्थिक अने दर्शनी ते  
पिण वेगला रहो जे संसार समुद्र ने तोर सम्यक्त्व पामी वीर परिश्रम लही कर्म ने उदय ते  
पिण सावद्य अनुष्ठान ने विषे प्रवर्त्ते तो. अनेरा नो कियूं कहियो इम देखावे छै. ए० एणे  
अरिइन्त मापिष्ठ संयम ने विषे. बा० बाल अज्ञानो राग द्वेष व्याकुल चित्त विषय वृष्णाइ  
पीडातां छतो. २० रमे रति करे. पा० पाप कर्म करी सावद्य अनुष्ठान ने स्पू जागतो छतो करे.  
ते कहे छै । अ० जे जीवां ने दुर्गति पडतां गरण न थाइ ते अशरणक सावद्य अनुष्ठान तेहिज.  
स० गरण सुख नू कारण. म० मानतो थको. अनेक वेदना नारकादिक ने विषे भोगवे. बली  
एहिज नो विशेष कहे छै. इण मनुष्य लोक ने विषे. एकएक विषय. कपार्य निमित्ते. ए०  
पुकाकी पवो भ्रमवो थाइ. घणा परिवार माहि रहिता परिवार नी शंकाइ विषय लेवी न सके  
ते नणी एकलो होइ. स्वेच्छाचारी थाइ. केहवो हुवे. ते कहे छै. से० ते विषय गृध्र एकलो  
अनतो अकालचारी देखी लोके पराभवतो. व० घणो क्रोध बर्त्ते. व० अशाचांदतो मानव है  
तं कियूं बांझो मुक ने घणाइ थाइ छं इम माने वर्त्ते. व० तप अकरवे तप कहे. तथा रोगा-  
दिक कारण बिना इ कहि लावे वणी नाया कर्म. व० सर्व आहार शुद्ध अशुद्ध ने लेवे बहुलोभ  
पृहवो छतो. व० बड़ पाप जाणवो तथा ३ घणा आरम्भ ने विषे रत. न० नजो परे भोग नो  
अर्थो थको बहु वेव धरे. व० घणो प्रकारे करी मूर्ख. व० घणा मन ना अवचवसाय ने विषे बर्त्ते  
पृहवो छतो हिंसादिक आश्रव ने विषे. स० आ०क तथा. ए० कर्म करी आच्छायो पृहवो

पिण्णं वौले ते कहे छै. स० आपणणे धर्म आचरण ने विषे उठ्यो उद्यमवन्त. इस वाद बोलतो पतावता हूँ “चरित्रियो हूँ” एहवो बोलतो परं अशुद्ध वर्त्ते इस करतो आजीविकाय नों बहितो किम प्रवर्त्ते. ते कहे छै. मा० मुफने. के० केह अकार्य करता देखे एह मणी छानों करे. अ० अज्ञान प्रमाद ने दा० दोषे करो. स० निरन्तर मू० मूढ मूर्ख मोह्यो छतो. ध० धर्म न जाणो अधर्मे प्रवर्त्ते. अ० विषय कपायादिक री आर्त्त व्याकुल एहवा यथा जीव. भा० अहो ! क० ते कर्म अष्ट प्रकार बांधवा ने विषे. का० परिडित परं धम अनुष्ठान ने विषे परिडित न थी. जे० पाप अनुष्ठान थकी अनिवृत्त. अ० ज्ञान चारित्र थकी विपरीत मार्गे. प० संसार नों उत्तरण मोक्ष. मा० कहे ते पर सत्य धर्म न ज्ञाणो. ते धर्म अजाण तो स्पू पाये. ते भाव कहे छै. आ० संसार तेहने विषे अ घटिका ने न्याय अणु तेणो नरकादि गति ते विषे बली २. अमण करे. श्री सुधर्मा स्वामी जम्बू स्वामी प्रति कहे छै.

अथ इहां पिण एकलो रहे तिण में आठ दोष कहा। बहुक्रोधी. मानी. मायी. लोभी. कहा। घणो पाप करवे रक्त घणो नटनी परे वेप धरे. घणो धूर्त. ते सङ्कल्प. क्लेश. घणो कहा। बली पाप कर्म बांधण ने परिडित कहा। कदाचित् कोई माहरो अकार्य देखे इस जाणो ने छाने २ अकार्य करे। इत्यादिक एकला में अनेक अवगुण कहा। ते माटे एकलो रहे तिण न साधु किम कहिय। डाहा हुवे तो विचारि जोड़जो।

## इति ४ बोल सम्पूर्णा ।

तथा आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ५ कहा। ते पाठ लिखिये छै ।

गामाणु ग दूइज्ज । एणस्स दुज्जातं दुप्परिक्कतं भवति  
विय ६ भिक्खुणो ॥१॥ वयसावि एग चोइया कुप्पंति  
माणवा उ य । णोय एणे महता मोहेण मुज्झति संवाह  
बहवो भुज्जो दुरतिक्रमा अजाणतो अपासतो एयंते माउ होउ  
एयं कुस स दं ॥२॥ तद्दिट्ठीए तम्मुत्तोए तपुरक्कारे  
तस्सनी तन्नोवेसणे यं विहारो चित्त णिवाति पंथ णि-

उभाती बलि बाहिरे पासिय पाणे गच्छेजा । से अभिं  
माणे संकुंच माणे पसारे माणे विणियट्ट माणे संपलिमज्ज  
माणे ॥३॥

( आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ५ उ० ४ )

गा० ग्रामानुग्राम विचरता एकाकी साधु ने. दु० दुष्ट मन थाई जावता अश-  
गमतां उपसर्ग ते उपजे. अरहज्जक नी परे अलौ न थाई. तथा. दु० दुष्ट पराक्रम नो स्थानक.  
एकाएकी ने भ० थाई एतावता एकाकी स्थानक न पामे स्थूल भद्र वेरया ने बरे गया साधु नी परे  
इम ने थाई किन्तु जेहवा न होई ते कहे छै. अ० साधु ने जे सूत्रे करी अव्यक्त  
तथा वय करी अव्यक्त सूत्रे करो ते कहिई. जिण आचाराङ्ग पुरो सूत्र थकी भय्यो न हुवे  
गच्छ में रखा साधु नी स्थिति अने गच्छ थकी निकल्या ने नवमा पूर्व नी तीजी बत्थु भणी न  
होई ते सूत्र अव्यक्त तथा वय करी ते कहिये जे गच्छ माहि रखा १६ वर्ष में वर्त्ते अने  
गच्छ बाहिर २० वर्ष माहि ते वय अव्यक्त हुई. इहां अव्यक्त नी चढमङ्गी छै. सूत्र अने वये करी  
जे अव्यक्त तेहने एकलो रहियो न कल्पे. संयम अने आत्मा नी विराधना थाई ते भणी पहिलो  
भांगो थाई. तथा सूत्रे करी अव्यक्त वये करी व्यक्त तेहने पिण एकल पणो न कल्पे. अगीतार्थ  
पणे संयम अने आत्मा नी विराधना थाई. ए बीजो भांगो. तथा सूत्रे करी व्यक्त अने वय  
करी अव्यक्त तेहने पिण एकलो न कल्पे बाल पणा ने भावे सर्व लोक पराभववानो ठाम थाई  
तीजो भांगा तथा सूत्र अने वये करी व्यक्त एहने गुरु ने आदेशे एकलचर्या कल्पे. पिण आदेश  
विना न कल्पे. जे भणी गुरु आज्ञा विना एकलो रहे तेहवा ने पिण घणा दोष उपजे. परं ते  
दोष गच्छ माहि रखा ने न उपजे गुरु ने आदेशे प्रवर्त्ततां भणा गुण उपजे. तिणे दोष नहीं.  
मि० साधु ने बली कर्म वधी एक गुरु नो पिण वचन न माने ते कहे छै. व० किणहि एक तप  
संयम ने विषे सोदावता हुंता श्री गुरु धर्मवचने. ए० एक अज्ञानी चोया प्रेरया हुंता. कु० क्रोध  
ने वयो हुवे. म० मनुष्य इम कहे हुं घणा एतला साधु माहि रहि न सकूं कोई में स्यू करस्यो  
अनेरा पिण सहू इमज वर्त्ते छै तेहने स्यू न कहो पणी परे ते. उ० अभिमान ने आपणपो  
मोटो मानतो. न० मनुष्य. मो० प्रवल मोहनीय ने उदय मूरभो कार्य विवेक विकल  
थाई ते मोहे माहितो छतां मान पवते चढ्या अति क्रांथे करी गच्छ थकी निकले तेहने ग्रामानु-  
ग्राम एकाकी पणे हिंडता जे हुई ते कहे छै. स० जे अव्यक्त एकाकी हिंडता ने बाधा पीडा ते  
उपसर्ग थकी ऊपनी वधी थाई. सु० बली २ उल्लंघता दोहिली. केहवा ने दुरतिक्रम कहिये  
ए अर्थ. अ० ते पीडा अहियासवा नो अणजसात्ता अणदेवता ने पीडा लांघता दोहिली  
होई एहवो देखादी भग वानू बली शिष्य प्रते कहे छै. ए० एकला रखा ने आवाधा अतिक्रमतां

दुर्लभ पणो माहरे उपदेशे वर्त्तातां ते तुक्त नें. मा० मा दुज्यो आगमांनुसारे सदागच्छ मध्यवर्त्ती थाइ श्री वर्धमान स्वामी कहे छै. ए पूर्वे कह्यो ते. कु० श्री वर्द्धमान स्वामी नों दर्शन अभिप्राय जाणवो एकलो विचरे तेहने घणा दोष. इम जाणी सदा आचार्य गुरु समीपे. वत्तातां नें घणा गुण छै. हिचे आचार्य समीपे किम प्रवर्त्ते ते कहे छै. त० ते आचार्य गुरु नें दृष्टि अभिप्राय चाले प्रवर्त्ते. त० मुक्त सर्व संग विरति तेणे करी सदा यत्न करवो. एतावता लोभ रहित. त० ते आचार्य नों पुरस्कार सर्व धर्मकार्य नें विषे आगिल स्थापवी एहवो छते प्रवर्त्तवो. त० ते आचार्य नी. सं० संज्ञा ज्ञान तेणे वर्त्ते मनु आपणी मति प्रवर्त्तावी नें कार्य करवो. त० ते आचार्य नों स्थानक छै. जेहने एतावता गुरुकुल वासे बसिवो. तिहां वसतो केहवों थाइ ते कहे छै. ज० जयणाइ. वि० विचरे. एतावता जीव हिंसा टालतो पडिलेहयादि क्रिया करे. वि० आचार्य ना चिन्ता नें अभिप्राये वर्त्ते तथा प० गुरु किहांइ पोहता हुइ तेहनों पन्थ जोवे तथा ध्यान करवा बांछतो जाणी संथारो करे तथा बुधा जाणी आहार गवेपे. इत्यादिक गुरु नों आराधक थाइ. प० गुरु नी अवग्रह थकी कार्य विना बाहिर न रहे. अवग्रह मांहि रहतां सदाइ वन्दना वेयावचादि कार्य विना बाहिर असातना थाइ. इत्यो जाणी अवग्रह बाहिर न रहे पा० गुरु किहांइ मोकल्यो हुवे तो भूसर प्रमाणो पन्थ नें विषे. पा० प्राणी जीव. पा० दृष्ट जोवतो. ग० नाइ पर विध्वंस पणो न होंडे. ईयांसमति सूं चाले. से० ते. अ० आवे. प० जावे. स० संकोचन करे. प० प्रसार करे. वि० निवर्त्ते. प० प्रमार्जन करे.

इहां अ० दुष्ट रहिवो ने विषे अने दुष्ट गमन विचरवो  
पिण दुष्ट कह्यो ते अव्यक्त नों अर्थ इम कह्यो छै । जे १६ वर्ष मांहि ते वय अव्यक्त,  
निशीथ नों अजाण ते सूत्र अव्यक्त, ए तो माहि रह्या नी स्थिति । अने  
गच्छ माहि थी निकल्या नें ३० वर्ष माहि वय अव्यक्त अने नवमा पूर्व नी तीजी  
वत्थु भण्यो नहीं ते सूत्र अव्यक्त । ते व्यक्त अव्यक्त नींचो भंगी श्रुत अव्यक्त.  
व्यक्त. तेहने एकलो रहिवो न कल्पे । तथा वय अव्यक्त अने सूत्र व्यक्त तेहने पिण  
एकल पणो न कहपे । तथा सूत्र अव्यक्त वय अव्यक्त नें पिण एकल पणो न  
कल्पे । अने सूत्र करी व्यक्त अने वय करी व्यक्त गुरु ने आदेशे तेहने एकल पणो  
कल्पे । इहां पिण नवमा पूर्व नी तीजी वत्थु भण्या विना अव्यक्त नें एकल रहिवो  
विचरवो बज्यो । तो जे श्री वीतराग नी आक्षा लोपी नें एकल रहे त्यां नें साधु  
किम कहिये । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ५ बोल सम्पूर्णा ।

तथा ठाणाङ्ग ठा० ८ कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

अद्दुहिं ठाणोहिं सम्पन्ने अणगारे अरिहइ एगल्ल विहार  
पडिमं उवसंपजित्ताणं विहरित्तए तं० सड्ढी पुरिस जाए,  
सच्चे पुरिसजाए. मेहावी पुरिसजाए. बहुस्सुए पुरिसजाए  
सत्तिमं अप्पाहिगरणे धिइमं वीरियं संपन्ने ॥१॥

( ठाणांग ठा० ८ )

अ० आठ ठा० स्थानक गुण विशेष करी संयुक्त. अ० अणगार अहं योग्य थाहं. ए०  
एकाकी नूं. वि० ग्रामादिक नें विपे जाबूं. ते. प० प्रतिमा अभिप्रह ते एकाकी विहार प्रतिमा  
अथवा जिन कल्पक नें प्रतिमा अथवा मासादिक भिक्खू नी प्रतिमा पडिबजी ने. वि० ग्रामा-  
दिक नें विपे विचरवा योग्य थाहं. ते कहे छै. अद्दा उत्त्व अद्दवी अथवा अनुष्ठान नें विपे अभि-  
लाष. ते सहित. स० सर्व इन्द्रादिक पिण चाली न सके सम्मत्स्व चोर धकी, पुरुष जाति ते  
पुरुष प्रकार ए अर्थ. स० सत्यवादी प्रतिज्ञा शूर पणा थकी. मेहावी श्रुत ग्रहवानी शक्ति सहित.  
अथवा मर्यादावर्ती एहिज भण्णी. व० सूत्र अर्थ थकी आगम भाग्यो छै जेहने जघन्य तो नवमा  
पूर्व नी तीजी वत्थु नों जाण उत्कृष्टो असम्पूर्ण दश पूर्वधर. स० समर्थ ५ विपे तुलना कीचो  
सप. श्रुत. एकल पणु सत्वे करी अने शरीर नी समथाहं करी जिन कल्पो नें ए ५ प्रकार नी  
तुल्यता करवी. अ० कलहकारी नहीं चित्तना स्यात्थ पणा सहित अरति रति अनुलोम प्रति-  
लोम उपसर्ग नूं सइयाहार. अधिक उत्साह सहित इहां जे ब्रह्मा ४ शब्द ने पुरुष जाति शब्द  
कथो. पिण धुरला चौकडा नें विपे छै. तेह भयो इहां पिण जाणबूं.

अथ इहां आठ गुणा सहित नें एकल पडिमा योग्य कह्यो ते आठ गुण,  
अद्दा में सैंडो देव डिगायो डिगे नहीं. सत्यवादी. मेहावी ते मर्यादावान् "बहु-  
स्सुए" नों अर्थ इम कह्यो—जे जघन्य नवमा पूर्व नी तीजी वत्थु नों जाण. शक्ति-  
वान्, कलहकारी नहीं. धैर्यवन्त. उत्साह वीर्यवान्. ए आठ गुणा में नवमी पूर्व  
नी तीजी वत्थु ना जाण ने सकल पडिमा योग्य रहिवे कह्यो । ते माटे नवमा पूर्व  
तीजी वत्थु भण्णी बिना एकल फिरे ते जिन आज्ञा बाहिरे छै । तिवारे कोई ६ गुणा  
भा धणी नें गण धारणो कह्यो तिण में पिण "बहुस्सुएवा" पाठ कह्यो छै । ते माटे  
नवमा पूर्व नी तीजी वत्थु भण्णी बिना एकल पणो न कल्पे । तो नवमा पूर्व नी

तीजी वस्तु भण्या बिना गण धारवा योग न । ते माटे टोलो करणो पिण न कल्पे । इम कहें तेहनों उत्तर—छ गुणा सहि साधु नें गण धरवो कहाँ ते “ गच्छं धारयितुं ” ते गण नों धारवो ते पालवो ८ ति १० छै । ते गण ग नों स्वामी ६ गुणा रा घणी नें १० । तिहां ६ गुणा में “वहुस्सुए” नों अर्थ घणा सूत्र नों जाण एइवू अर्थ कियो पिण नवमा पूर्व नों नाम न थी चाल्यो । अने ८ गुण एकला ना । तिण में “वहुस्सुए” नों “नवमा पूर्व नी तीजी वस्तु कही छै । ते माटे ग ना स्वामी नें नवमा पूर्व नों नियम न थी । डाहा हुए तो विचारि जोइजो ।

## इति ६ बोल सम्पूर्णा ।

तिवारे कोई कहे—६ गुणामें आठ गुणा में पाठ तो एक सरीखो छै । अने अर्थ में ८ गुणा में तो नवमा पूर्व नों जाण ते बहुस्सुए ६ गुणा में घणा सूत्र नों जाण ते बहुस्सुए पिण पूर्व न । एहवो अर्थ में फेर क्यूँ एक सरीखा पाठ नों अर्थ पिण एक सरीखो कहिणो । इम कहें तेहनों उत्तर उवाई में २० २१ में साधु नें आ नें पाठ एक सरीखा कहा । ते लिखिये ।

धम्मिया धम् । गुया धम्मिह्वा धम्मक्खाई धम्मप ।  
धम् पा णा धम् दायरा धम्मेणं चैव वित्ति प्ये-  
माणा सी सुखया सुपडियाणंदा साहु ॥ ६४ ॥

( उवाई प्रश्न २०-२१ )

ध० धर्मश्रुत चारित्र रूप ना करणहार, ध० धर्मश्रुत चारित्र रूप नें कैडे चाले छै, ध० धर्मिष्ठ धर्म नी चेष्टा रूढो छै, ध० धर्मश्रुत, चारित्र, रूप नें संभलावे ते धर्मख्यात कहिवूँ, ध० धर्मश्रुत, चारित्र, रूप नें ग्रहवा योग्य जाणी बार बार तिहां दृष्टि प्रवत्तये, ध० धर्मश्रुत चारित्र नें विषे सावधान छै अथवा धर्म नें रागे रंगाया छै, ध० धर्म नें विषे प्रसाद रहित छै अथवा जेहना, ध० धर्मश्रुत, चारित्र नें अखंड पालवे, श्रुत नें आराधवे इज, वि० आजीविका

कल्पना थका. सु० भला शील आचार छै जेहनों. सु० भला मत. दृश्य. रूप जेहनों  
सु० साद हर्ष सहित चित्त छै. साधु नें विषे जेहना. सा० साधु श्रेष्ठ वृत्तिवन्त.

“साधु, आवक. विह्वं नें धर्म ना करणहार । ते साधु सर्व  
धर्म ना करणहार अनें थ देश थकी नों करणहार । वली साधु अनें  
अ नें “सुव्वया” ।। ते व्रत ना धणी ।। ते साधु सर्व व्रती ते  
माटे ती. अनें क देश थकी व्रती ते माटे सुव्रती. ए साधु अ नों पाठ  
सरीखो पिण एक सरीखो नहिं तिम ६ गुणा में “बहुस्सुए” ते घणा सूत्र  
नों अनें ना ८ गुणा में “बहुस्सुए” ते नवमा पूर्व नी तीजी नों  
जाण एहवो अर्थ कियो ते मानवा योग्य छै । ते माटे बीजा साधु छतां नवमा पूर्व  
नी तीजी वत्थु भण्या बिना एकल फिरे । ते वीतराग नी आम्हा बाहिर छै । डाहा  
हुवे तो विचारि जोड़ो ।

## इति ७ बोला सम्पूर्णा ।

बृहत्कल्प उ० १ कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

नो कप्पइ निगंथस्स ए गियस्स राओ वा वियाले  
बहिया वियार भूमिं विहार भूमिं निक्खमि ए वा  
पविसित्तएवा ॥

( बृहत्कल्प उ० १ बो० ४७ )

न० न कल्पे. नि० साधु नें. ए० एकलो उठवो. जायवो. रा० रात्रि नें विषे. वि० सूत्र  
पामते छते. संख्या नें विषे. व० बाहिर. स्थंडिल भूमिका नें विषे. वि० ज्ञाय भूमि  
नं विषे नि० स्थानक थकी बाहिर निकलवो. स्वाध्याय प्रमुख करवा नें पेसवो न कल्पे ।

अथ पिण ।। घणा साधां में पिण रात्रि में बिकाल नें विषे  
एकला नें दिशा न जाणो, तो जे एकलो इज रहे ते किण नें साथे ले जावे । ते माटे



कारण चिन्ता एकलो रहिवो नहीं. एहवी आन्ना छै । डाहा हुए तो विचारि जोइजो ।

इति ८ बोल सम्पूर्ण ।

तथा केतला एक उत्तराध्ययन अ० ३२ मा रो नाम लेई कहे, जे चेलो न मिले तो एकलो इज विचरणो, इम कहे. ते गाथा लिखिये छै ।

आहार मिच्छे मियमेसणिज्जं,  
सहाय मिच्छे निउणत्थ बुद्धिं ।  
निकेय मिच्छेज्ज विवे जोगां,  
समाहि कामे समणे तवस्सी ॥४॥

न वा लभेज्जा निउणं सहायं,  
गुणाहियं वा गुणओ समंवा ।  
एगो विपावाइ विवज्जयंतो,  
विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणे ॥५॥

( उत्तराध्ययन अ० ३२ )

आ० ते साधु एहवो आहार. मि० बांछे. मात्राई मानोपेत. ए० एपणीक ४२ दोष रहित. निर्दोष. वली मध्यवर्त्ती छतो. स० सखाया नें बांछे. केहवा नें निपुण भली छै. उ० जीवादिक अर्थ नें विवे बुद्धि जेहनी एहवा नें., वलो ते साधु. नि० उपाध्यय नें बांछे. केहवा नें. स्त्री संसर्गादिक ना अभाव नें योग्य एतले तेहना आतापादिक नें असम्भव करी. केहवो हुंवे ते कहे छै. सं० ज्ञानादिक समाधि पामवा नों कामी बांछुक. स० भ्रमण चारित्रियो. त० तपस्वी एहवो छतो ॥४॥

न० अथवा कदाचन न पामे निपुण बुद्धिवन्त. स० सखाइयो. वली केहवो गु० ज्ञानादिक गुण करी अधिक वा० अथवा पोता ना गुण आओ. स० सम तुल्य एहवो. एहवो न पामे तो. स्थूंक करिवो. एकलो सखाइया रहित पिण पाप हेतु अनुष्ठान नें वर्जतो परिहरतो. वि० विहरे. संयम मार्ग नें विवे. केहवो. काम भोग नें विवे. प्रतिबन्ध अण्णकरतो.

अथ अठे तो कह्यो । जे ज्ञानादिक नैं अर्थ गुर्वादिक नी सेवा करे ते गच्छ मध्यवर्ती साधु निपुण सखाइयो बांछै । ते सहाय नों देणहार सखाइयो मिलतो न जाणे तो पाप कर्म वर्जतो थको एकलोइ विचरे । इहां मध्यवर्ती थको एहवो चेलो बांछै, इम ॥ १० ॥ न मिले तो एकलो रहे । ते चेला नैं अभावे एकलो कह्यो । परं मध्य कक्षां माटे गुरु, गुरुभाई आदि समुदाय सहित जणाय छै । तिवारे कोई कहे गच्छ मध्यवर्ती ए तो अर्थ में कह्यो, पिण में नहीं । इम कहे तेहनों उत्तर—ए अर्थ सूं मिलतो छै । ते माटे मानवा योग्य छै । जिम श्यक सूत्रे पाठ में तो कह्यो छै “छप्पइ संघट्टणयाए” छप्पइ कहितां जू तेहनों संघटो करणो नहीं, इहां पाठ में तो जू नों संघटो किम न करे । अने एहनों अर्थ इम कियो जे जू नों अविधे संघटो करणो नहीं । ए अविध रो तो अर्थ में छै ते मिलतो छै । तिम ए पिण अर्थ मिलतो छै । तथा आवश्यक अ० ४ ॥ “पडिक्कमामि पंचहिं महव्वएहिं” इहां पञ्च महाव्रत थी निवर्त्तवो कह्यो । ते महाव्रत थी किम निवर्त्ते । महाव्रत तो आदरवा योग्य छै । एहनों १ पिण इम कियो छै । ते पंच महा १ मे अतीचारादिक दोष थी निवर्त्तवो । ए पिण अर्थ मिलतो छै । इत्यादिक अनेक अर्थ मिलता मानवा योग्य छै । एहनी ज अवचूरी में एहवो कह्यो । ते अवचूरी लिखिये छै ।

आहार मशनादिवम् अपे रम्यत्वा दिच्छे दभिलपे दपिमित मेषणीय मेवा दान भोजने तद्दूरा पास्ते. एवं विधाहार एवहि प्रागुक्त गुरु वृद्ध सेवादिज्ञान कारणान्याराधयितुं क्षमः । तथा सहायं सहचरमिच्छेद्गच्छान्तर्वर्ती सन् शत रम्यं । निपुण्याः कुशलाः अर्थेषु जीवादिषु बुद्धि रस्येति निपुणार्थ बुद्धिस्ते अतिदृशोहि स यः स्वाच्छन्द्योपदेशादिना ज्ञानादि हेतु गुरु वद्ध सेवादि अंशमेव कुर्यात् । निकेतनाश्रय मिच्छेत् । विवेकः स्तथादि संसर्गमाव स्तस्मैव योग्य मुचितं तदा पाताद्य संभवेन विवेक योग्यं अविचिका अयोहि स्तथादि संसर्गाच्चित्त विल्लवोत्पत्तौ कुतो गुरु वृद्ध सेवादि ज्ञानादि कारण संभवः समाधि-ज्ञानादीनां परस्पर मवाधनया वस्थानं तं कामयतेऽभिलषति समाधिकामो ज्ञानाद्या वाप्तु काम इत्यर्थः श्रमण स्तपस्त्री ।

अवचूरी में पिण कह्यो । निर्दोष मर्यादा सहित आहार वांछे ।  
 एहवे आहार लाधे छते गुरु वृद्ध नी सेवा ज्ञानादिक नों कारण छै । ते आराधवा  
 स 'हुई । तथा ग मध्ये रह्यो छतो निपुण सखाइयो वांछे । एहवो सखाइयो  
 मिल्ये छतै ज्ञानादिक ना हेतु गुरु वृद्ध नी सेवा छै । ते अति ही करणी आवे  
 यादिक संसर्ग रहित उपा वांछे जो स्त्रियादिक सहित उपाश्रये रहे तो तेहनों  
 चित्त ना विप्लव नी उत्पत्ति थकी गुरुवृद्ध नी सेवा ज्ञानादिक ना का  
 किहां थकी निपजे । इहां गुरु वृद्ध नी सेवा नें अर्थे शिष्य सहाय नों देणहार  
 णो कह्यो । ए तो ग माही साधु नी विधि कही । पिण बाहिर  
 नि नी विधि कही न दीसे । एहवो शिष्य न मिले तो एकलो पाप रहित  
 हि तो तो । ते चेलां नें अभावे गुरु गुरु भाई सहित नें पिण एकलो कह्यो ।  
 तथा राग द्वेष नें अभावे एकलो कहोजे । राग द्वेष रूप बीजा पक्ष में न वर्त्ते ते घना  
 में रहितो पिण एकलो कहिई ।

तथा उत्तराध्ययन अ० ३२ वे गाथा कही, ते लिखिये छै ।

नाणस्स सब्ब पगासणाए,  
 अन्नाण मोहस्स विवज्जणाए ।  
 रा र दोसर य संखएणां,  
 एगंत गो मुवेइ मोक्खं ॥२॥  
 स्से भगो रुवि सेवा,  
 वि ज्जणा वा ए दूरा ।  
 सज्झाय ए निसेवणाय,  
 सुतत्थ संघिणयाधि ई ॥३॥

( उत्तराध्ययन अ० ३२ )

ना० मतिज्ञानादिक. स० सर्व ज्ञान ने विवे. प० निर्मल करो नें अ० मति अज्ञा-  
 नादिक. मो० वर्णन मोहनी नें. वि० विशेषे. ब० वर्जवे करो. रा० राग. दो० द्वेष  
 तेहनें साचे मन ज्ञय करो ने. ए० एकान्ती छल सम्यक् प्रकारे पामें सु० मोक्ष ॥२॥ त० ते

मोक्ष पामवानों. ए० आगलि कहिन्हे. म० ते मार्ग गु० गुरु ज्ञानादिके के करी गुण बढ़ा तेहनी. से० सेवा करवी. वि० वि० करवी पासत्यादिक अज्ञानिबानी दु० दूर थकी स० स्वाध्याय एकान्त स्थान के नि० करवी सु० सूत्र अने सूत्रार्थ साधे मने करी चिन्तविबो एकत्र चित्त पणे.

अठे कह्यो—ज्ञान. दर्शन. चारित्र. ए मोक्ष ना उपाय । ते ज्ञानादिक पामवा नों गुरु ते ज्ञान वृद्ध दीक्षा साधु नी सेवा । ते शुद्ध आहार शिष्य वां कह्यो । ए गुरु वृद्ध घणा साधु नी समुदाय रूप गच्छ छै ते माहे रह्यो थकी ज निपुण सखायो बांछणो कह्यो । पिण गच्छ बाहिरे निकलवो न ।

## इति ६ बोल सम्पूर्णा ।

तथा राग द्वेष ने अभावे एकलो तो घणे ठामे कह्यो ते कैतला एक लिखिये छै ।

चं लियं सी बहुयं ल लवे ।  
कालेण्य अहिजिता तंओ भाइज एगओ ॥१०॥

( उक्त १० अध्याय अ० १ )

मा० कदाचित् क्रोधादिक ने बने हिसादिक ओर कार्य न करिवो. ज० अर्थ १ छी कथा-दिक न बोलवो. का० प्रथम पौरसी प्रमुख सिद्धान्त अर्था ने गुरु समीपे तिवारे पछे धर्म ध्यानादिक ध्यावो. ए० एकलो राग द्वेष रहित ह्यो.

अथ अठे पिण । ते ध्यान ध्यावे एगुरां समीपे ते पिण एकलो कह्यो ते भाव थी राग द्वेष ने अभावे । ते एहवो अर्थ कियो । झाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति १० बोल सम्पूर्णा ।

तथा उत्तराध्ययन अ० १ कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

नाइदूर एासन्ने नन्नेसिं चक्खु फासओ ।

एगो चिट्ठेज्जा भत्तट्ठा लंघित्ता तं नाइकम्मे ॥३३॥

( उत्तराध्ययन अ० १ )

ना० भिक्षाचर ऊभा हुइं तिहां अति दूर ऊभो न रहे. म० अति समीप ऊभो न रहे. जिहां गोचरी जाय तिहां. न० नहीं ऊभो रहे भिक्षारी नो तथा गृहस्थ नी दृष्टिगोचर आवे तिहां ए० एकलो राग द्वेष रहित. चि० ऊभो रहे अश्वनादिक नें अर्थे. लं० अनेरा भिक्षारी नें उल्लङ्घी नें प्रवेश न करे. ते दातार नें अप्रतीत उपजे ते भणी.

अथ इहां पिण कह्यो । राग द्वेष नें अमावे एकलो ऊभो रहे पिण भिख्यात्तां नें उल्लङ्घी न जाय इम कह्यो । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ११ वोला सम्पूर्णा ।

तथा सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ४ उ० १ कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

जे मायरं च पियरं च विप्पजहा य पुब्ब संयागं

एगे सहिए चरिस्सामि आरत मेहुणो त्रिवित्तेसी ॥१॥

( सूयगडांग अ० ४ उ० १ गा० १ )

जे मा० हूँ माता ना पिता ना पूर्व संयोग छांडी नें. ए० एकलो ही राग द्वेष रहित ज्ञानादि सहित छांड्या छै मैथुन जेणो. वि० श्री पुरुष पुंडग पशु रहित स्थान नो गवेपयहार.

अथ इहां ॥—जे हूं राग द्वेष नें अभावे शानादि सहित एकलो विचरस्यूं ।  
इम विचारि दीक्षा ले इहां पिण राग द्वेष नों भाव नथी ते माटे एकलो ॥  
डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति १२ बोल सम्पूर्णा ।

तथा उत्तराध्ययन अ० १५ पिण राग द्वेष नें अभावे एकलो विचरणो कह्यो  
ते पाठ लिखिये छै ।

असिप्प जीवी गिहे अमित्ते,

जिइंदिए सव्वओ विप्प मुक्को ।

अणुक्कसाई लहुअप्प भक्खो,

चिच्चागिहं एक चरे स भिक्खू ॥

(उत्तराध्ययन अ० १५)

अ० चित्रकार नी कसाइ न जीवे. गृध्र पया रहित. अ० शत्रु मित्र नहीं छै जेहनो एहवो  
थको. जि० जितेन्द्रिय. स० सर्वबादा आस्यन्तर परिग्रह थी मुकाणा छै. अ० थोड़ी कपाय  
अथवा रहित. लघु आहारी. चि० छांडी नें. गृ० घर. ए० एकलो. राग द्वेष रहित.  
विचरे. भि० साधु.

अथ इहां .पिण कह्यो—घर छांडी राग द्वेष नें अभावे एकलो विचरे ।  
इत्यादिक अनेक ठामे घणा में रहिता पिण राग द्वेष नें अभावे भाव-थी  
एकलो ॥ चेला न मिलें तो ते साधु चेलां नें अभावे राग द्वेष नें अभावे  
एकलो विचरे एहवूं कह्यो दीसे छै । पिण एकलो अव्यक्त रहे तिण नें साधु किम  
कहिण । तिवारे कोई कहे—जे ३ मनोरथ में चिन्तवे जे किधारे हूं एकलो थइ दश  
विध यति धर्मधारी विचरस्यूं इम क्यूं कह्यो । इम कहें तेहनों उत्तर—

इहां एकलो कह्यो ते पड़िमा धारवा नी भावना भावे कह्यो ते ल पड़िमा तो नवमा पूर्व नी तीजी वत्थु ना जाण नें कल्पे । ठाणाङ्ग ठा० ८ कह्यो छै ते पूर्व नों ज्ञान अने एकल पड़िमा वेहु हिवड़ा नथी । अने पूर्व नों ज्ञान विच्छेद अने पूर्व ना जाण विना एकल पड़िमा पिण विच्छेद छै । ए साधु ना ३ मनोरथ में प्र मनोरथ कह्यो । जे किंवारे हूं थोड़ो घणो सूत्र भणसूं । दूजो मनोरथ जे किंवारे हूं ए पड़िमा अङ्गीकार करसूं । तीजो मनोरथ किंवारे हूं सन्धारो । म तो सिद्धान्त भणवा नी भावना भावे ते पिण मर्यादा व्यवहार सूत्रे कही ते रीते भणे पिण मर्यादा लोपी न भणे मर्यादा सहित सूत्र भणी नें पछे दूजो मर्यादा एकल विहार पड़िमा नी भावना कही । ते पि ठाणाङ्ग ठा० ८ कही ते प्रमाणे पूर्व भणी नें एकल पड़िमा पिण अङ्गीकार करे । जिम सूत्र नों मनोरथ कह्यो । पि १० वर्ष दीक्षा पाल्यां पछे सि सूत्र भणवो कल्पे पहिलां न कल्पे । इम सूत्र पिण मर्यादा प्रमाणे भणवो कल्पे । तिम एकल पड़िमा रो मनोरथ कह्यो । ते पड़िमा पिण नवमा पूर्व नी तीजी वत्थु भण्या पछे कल्पे पहिलां न कल्पे । हिज आचारांग में पिण नवमा पूर्व नी तीजी वत्थु भण्या विना ल पड़ि न कल्पे कह्यो । ते माटे ३ मर्यादा रो लेइ एकल पड़ि थापे ते पिण न मिले जिम सूत्र भणवा ना मनो- नों नाम लेइ १० पहिलां भगवती भणवो थापे तो न मिले तिम नवमा पूर्व तीजी वत्थु भणवा विना एकल पड़िमा थापे ते पिण न मिले । तथा कोई कहे दश वैकालिक अ० ४ कह्यो । “से भिक्खू वा भिक्खुणीवा एगोवा परिसाग-ओवा” इहां साधु नें एकलो गो, कहे ते ओ उत्तर—इहां साधु नें ध्वी ने वेहूं नें ए छै । “भिक्खूवा भिक्खुणीवा” ए पाठ कहाँ माटे जो छै तो साध्वी एकली बि रहे । वली “एगोवा परिसागओवा” कह्यो छै । परिषदा में रह्यो थको । परिषदा नें अभावे एकलो रह्यो थको इहां साधु साध्वी नें परिषदा नें अभावे एकला छै । पिण पणो विचरवो पाठ में कह्यो नथी । तिवारे कोई कहे और साधु तां २ एकलो रहि य तिण में पणो हुवे नहीं । और हुवे ते माहि थी कोई न्यारो साधु पणो पाले तिण नें शु किम न कहिए । कहे तेहनों —

ति मर्यादा २ साध्वी एकली रहे तो करे । घणा माहि थी एकली साध्वी न्यारी हुवे तेहनें साधु पणो निपजे के नहीं । पूछ्या

देवा असमर्थ जद अकवक बोले पिण अन्यायी हुवे ते लीधी टेक छोडे नहीं । अने जे कारण एकल पणे रहे तो जिम पोता नों पले तिम करे । उत्तम जीव हुवे ते थोड़ा दिन में आत्मा नों कार्य सवारे पिण किञ्चित् दोष लगावे नहीं । तिवारे कोई कहे—कारण. तो एकला में पिण साधु पणो पावे छै तो एकल रहे ते पृथ्वी परूपणा किम करो छो । इम कहे तेहनों उत्तर— स नें घरे वैसे तेहनें भ्रष्ट कहीजे । मास चौ उपरान्त रहे तिण नें भ्रष्ट कहीजे । पहिला प्रहर रो आपणो बाहार छेहले प्रहर भोगवे तेहनें पिण कहीजे । मर्दन करे तेहनें पिण कहीजे । इत्यादिक अनेक दोष सेवे तिण नें कह्यो । अने कारण । पाछे कहा ते बोल सेवणा तिण में दोष नहीं तो पिण धोक मार्ग में परूपणा तो ए बोल न सेवण री ज करे, कारणे सेवे तो ए बोला री धोक मार्ग में नहीं । धोक मार्ग में तो ते बोल सेव्यां दोष इज कहे । कारण री पूछे जव कारण रो जवाव देवे मर्दन किया अनाचारी दशवैकालिक में कह्यो । अने वृहत्कल्प में कारणे मर्दन करणो कह्यो । ते तो न्यारी, पिण मर्दन किया अनाचारी ए परूपणा तो विगटे नहीं तिम सकल पणे विचरे तिण नें कहीजे । ए धोक मार्ग में परूपणा छै । अने कारण में ए पणे ते उठे नहीं । एकली साधवी विचरे तिण नें कहीजे । एकली गोचरी दिशा ते पिण . एकलो साधु बाहिरे राति दिशा ते पिण भ्रष्ट कहीजे । अने कारणे ए सर्व एकल पणे संयम निर्वहे तो धोक मार्ग में तेहनी थाप नहीं । ते । में दोष नहीं । तिम नें धोक में कहीजे । अने कारण री बात न्यारी छै । ण भगवन्त कह्यो ते प्रमाणे विचसां दोष नहीं । अने केतला एक एकल अपछन्दा कहे छै ते साधु ए विचसां दोष नहीं । पृथ्वी परूपणा करे छै ते सिद्धान्त ना ण छै । सिद्धान्त में तो एकल पणे विचरवो घणे ठामे वर्ज्यो छै । तो व्यवहार ७० ६ घणा निकाल पैसारे हुवे ते ग्रामादिक में एकला बहुश्रुति नें रहिवो न कल्पे कह्यो । तथा आचारंग श्रु० १ अ० ५ उ० १ प में अवगुण । तथा ३ श्रु० १ अ० ५ उ० ४



अव्यक्त नै एकलो बिचरखो रहिवो बज्यो । ठाणाङ्ग डा० ८ गुण विना  
 एकलू रहिवू नहीं । राङ्ग धु० १ अ० ५ उ० ४ कहे हे शिष्य !  
 तोने ल पणो मा होईजो । तथा उ० १ रात्रि विकाले नक बाहिरे  
 एकला नै दिशा जायवो न कल्ये । दिक् अनेक ठामे एकलो रहिवो  
 कारण विन बज्यो । ते माटे ल रहे तिण नै बि कहिये । डाहा हुवे  
 तो ति रि जोईजो ।

इति १३ बोल सम्पूर्ण ।

इति एकाकी साधु-अधिकारः ।



## अथ उच्चार पास गाऽधिकारः ।

केतला एक पाषंडी कहे—साधु न गृहस्थ देखतां मातो परठणो नहीं ।  
 धनें ते कहे—जे सूत्र निशीथ उ० १५ कह्यो “वाजार में उच्चार. ( बड़ी नीति )  
 पासवण. ( छोटी नीति )-प ँ चौमासी प्रायश्चित्त आवे” ते माटे गृहस्थ देखतां  
 मात्रो परठणो नहीं । इम कहे, तेहनों उत्तर—

प. पासवण. रो बज्यो ते र आश्री बज्यो छै । पासवण  
 तो उच्चार रे सहचर हुवे ते माटे मेलो शब्द गो छै । ते पाठ लिखिये छै ।

जे भिक्खू ।र पासवणं परिट्टवेत्ता न पुच्छेइ न  
 पुच्छन्तं वा साइज्जइ ॥१६१॥

( निशीथ उ० ४ )

जे० जे कोई साधु साध्वी. उ० बड़ी नीति पा० लघु नीति. प० परिट्ठी नें. न० नहीं  
 वस्त्रे करी. पू० पूछे. न० नहीं. करी. पू० पूछता नें अनुमोदे तो पूर्ववत् प्रायश्चित्त.

अथ इहां कह्यो—उच्चार ( बड़ी नीति ) पासवण ( छोटी नीति ) परिट्ठी.  
 ( करी ) नें वस्त्रे करी न पूछे तो इ कह्यो । तो ण रो कांई पूछे.  
 प तो उच्चार नों पूछणो कह्यो छै । पासवण हुवे ते माटे वेहं मेलो  
 कहा छै । परं पूछे ते उच्चार नें, पा ण नें पूछे नहीं । डाहा हुवे तो विचारि  
 जोइजो ।

ति १ सम्पूर्णा ।

तथा तिणहिज उद्देश्ये एहवा छै । ते लिखिये छै ।

जे भि ू उ र पासवणं परि वे ेण वा कवि-  
लेण वा अंगुलियाए वा सि गण वा च्छइ पुच्छंतं वा साइ-  
ज्जइ ॥१६२॥

( निशीथ उ० ४ )

जे० जे कोई साध्वी. उ० बड़ी नीति. पा० लघु नीति. प० परितवी नें. का०  
करी. क० नी खांपटी करो नें. अं० अंगुलिहं करी वा. सि० अनेरा नी करी नें.  
पु० पूंछे वा. पू० पूंछता नें अनुमोदे तो पूर्ववत् प्रायश्चित्त.

इहां . वण. परछी काष्ठादिके करी पूं । इ कह्यो ।  
ते पिण र आश्री, पिण पा आश्री नहीं । तिम बाजार में  
पासवण. पर । प्रायश्चित्त कह्यो । ते पिण आश्री छै, पासवण आश्री  
नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २ बोल सम्पूर्णा ।

तिणहिज उद्देश्ये पहवा

—ते लिखिये ।

भिक्षू र पा व परिट्टवे . इ. णा -  
वा इ इ ॥१६३॥

जे भिक्षू वणं परि वे तत्थेव आयमंति.

इज्ज ॥१६४॥

भिक्षू पा रि वेत्ता इदूरे इ.  
इदूरे . साइज्ज ॥१६५॥

( निशीथ उ० ४ )

जे० जे कोई. मि० साध्वी. उ० बड़ी नीति. पा० लघु नीति. प० परठी ( करी ) नें  
या० शुचि न लेवे. या० शुचि न लेतां नें अनुमोदे तो पूर्ववत्. प्रायश्चित्त ॥१६३॥

जे० जे कोई. मि० साध्वी. उ० बड़ी नीति. पा० छोटी नीति. प० परठी नें. त०  
तठेई ( तिण ऊपरेइज ) आ० शुचिदेवे. वा. आ० शुचि लेता नें अनुमोदे तो पूर्ववत् प्राय-  
श्चित्त ॥१६४॥

जे० जे कोई. साध्वी. उ० बड़ी नीति. पा० लघु नीति. प० परठी नें. अ० अति दूरे  
आ० शुचि लेवे. अथवा अतिदूरे शुचि लेतां नें अनुमोदे तो पूर्ववत् प्रायश्चित्त ॥१६५॥

इहां कह्यो—उच्चार. पासवण. परठी ( करी ) नें शुचि न लेवे, वा  
तठेई । र रे ऊपरे इज शुचि लेवे. अ अति दूर जाई नें शुचि लेवे तो प्राय-  
श्चित्त आवे । ते पिण उच्चार आश्री शुचि लेणों कह्यो । पासवण तो पोतेइ शुचि  
छै तेहनी शुचि लेवे । इहां । र. पासवण. णो करवा नो छै ।  
जिम दिशा नें शुचि न लेवे तो दण्ड कह्यो, तिम स दण्डतां दिशा  
तो दण्ड जाणवो । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ३ बोल म्पूर्ण ।

निशीथ उ० ३ कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

जे भिक्षु पायंसि परपायंसि वा, दियावा.  
राओवा. वि ले वा । हिमाणे सप गहाय इत्ता  
उच्चार पासवणं परि । अणुगए सूरिए एडेइ. एडंत  
साइज्जइ ॥८२॥ तं सेवमाणे आ इ मासियं परिहार णं  
ओग्घाइयं ॥

( निशीथ उ० ३ )

जे० जे कोई साधु साध्वी नें. स० आपणा ते पात्रिया नें धिये. प०  
वासा नें धिये. दि० दिन नें धिये. रा० रात्रि नें धिये. वि० वि नें धिये. उ०  
यखे वला-

त्कारे उच्चार वाधा करी पोड्यो थको. सं० पोता नों पात्रो ग्रही नें तथा प० पर पात्रो थाची नें उ० बड़ी नीति. पा० छोटी नीति. प० ते करी नें. अ० सूर्य नों ताप न पहुंचे तिहां ए परिठवे. न्हांखे. ए परिठवता नें अनुमोदे तो मांसिक प्रायश्चित्त आवे.

इहां कह्यो—दिवसे रात्रि तथा विकाले पोतारे पात्रे अनेरा साधु ने पात्रे एर पा ण परठवी नें सूर्य रो ताप न पहुंचे तिहां न्हांखे तो दण्ड आवे । इहां उच्चार. पासवण. णो नाम करवा नों कह्यो छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

## इति ४ ले म्पूर्या ।

ज्ञाता अ० २ कह्यो ते लिखिये छै ।

तत्तेणं से धरणे विजयणं सद्धिं एगंते अवक्रमइ २  
। उच्चार पासवणं परिठवेइ ।

( ज्ञाता अ० २ )

त० तिवारे. धन्नो सार्थवाह विचेय सहुते. ए० एकान्ते. अ० जावे. जावी नें. उ० बड़ी नीति. पा० लघुनीति. मात्रो. प० परिठवे.

इहां धन्नो सार्थवाह विजय चोर साथे एकान्ते जाइ उच्चार पास-परठयो कह्यो । इहां पिण एर. पासवण. परठणो नाम करवा रो कह्यो छै । इत्यादिक अनेक ठामे परठणो नाम करवा नों कह्यो छै । ते माटे गृहस्थ देखतां अङ्ग उपाङ्ग उघाड़ा करी नें उच्चार पासवण परठणो ते करणो नहीं । तथा उत्तराध्ययन अ० २४ कह्यो । अच्चार. पासवण. खेल ते बलखो. संघाण ते नाक नों अश-नादिक ४ आहार. जीव रहित शरीर. इत्यादिक द्रव्य कोई आवे नहीं देखे नहीं, तिहां परठणा क । ते पिण ि हिक द्रव्य आश्री कह्यो छै । पिण सर्व द्रव्य आश्री नहीं । जिम मनुष्य में उपयोग १२ पावे पिण एक मनुष्य में १२ नहीं ।

जिम साधु में लेख्या ६ पावे पिण सर्व साधु में नहीं । तिम कोई आवे नहीं देखे नहीं तिहाँ उच्चारादिक परठे कहा । ते पिण किणहिक द्रव्य आश्री छै । बली १० दोष रहित क्षेत्र में परठणो कह्यो छै । कोई आवे नहीं देखे नहीं. संयम प्रवचन री विराधना न हुवे. सम वरोवर भूमि. तृणादिक रहित. बहु काल थयो भूमि नें अचित्त थया नें. विस्तीर्ण भूमि. ४ अंगुल ऊपरली अचित्त. ग्रामादिक थी दूर. ऊँदरादिक ना विल ऊँधावे नहीं. त्रस बीजादिक रहित. ए १० बोल हुवे तिहां

णो कह्यो । ते समचे द्रव्य परठण रा १० बोल कहा । पिण १-१ द्रव्य परठे ते ऊपर १० बोल रो नियम नहीं । तिम उच्चार पासवण परटी न पूछे तो प्रायश्चित्त कह्यो ते उच्चार नें पूछणो छै । पिण पासवण रो पाठ कह्यो ते तो उच्चार रे सहचर हुवे ते माटे भेलो पाठ कह्यो छै । तिम १० दोष रहित क्षेत्र में उच्चारादिक द्रव्य परठणा । ते पिण किणहिक द्रव्य आश्री दश दोष रहित क्षेत्र कह्यो । पिण सर्व द्रव्यां ऊपर १० बोल नहीं । बृहत्कल्प ३१ कह्यो साधु नें बाजार में उतरणो ते माटे बाजार में उतरसी. तो मातादिक किम न परठसी । अनें जो गृहस्थ देखतां मात्रो न परठणो तो पाणी रो कड़दो. रेत. राख. भाटो. ढलियो. लूहणादिक नों धोवण. पगारे गोवरादिक लागो. इत्यादिक सीत मात काई परठणो नहीं । तिहां तो द्रव्य वर्ज्या छै । जिम एक सीत मात्र परठे ते ऊपर १० दोष रहित क्षेत्र न मिले । तिम मात्रो परठे तिहां पिण १० दोष रहित क्षेत्र नें नियम नयी । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ५ बोल सम्पूर्णा ।

इति उच्चार पासवणाऽधिकारः ।



## अथ कविताधिकारः ।

केतला एक अज्ञानी कहे—साधु नें जोड़ करणी नहीं । जोड़ किया मृषा भाषां लागे, इम कहे—तो तेहने लेखे साधु नें वखाण देणो नहीं । जो जोड़ किया मृषा लागे तो वखाण दियां पिण मृषा लागे । वली धर्मचर्चा करतां, ज्ञान सीखतां, पिण उपयोग चूक नें जावे तो तिण रे लेखे साधु नें बोलणो इज नहीं । अने जो वखाण दियां, धर्मचर्चा कियां, दोष नहीं तो निरवघ जोड़ कियां पिण दोष नहीं । अने जे कहे जोड़ न करणी तेहनों जबाब कहे छै । नन्दी सूत्र में जोड़ करण रो न्याय कह्यो छै । ते लिखिये छै ।

एव माइ याइं चउरासिइं पइन्नग सहस्साइं भगवओ  
अरहओ उसह सासियस्स आइतित्थयरस्स तहा संखिजाइं  
पइण्णग सहस्साइ मज्झिमगाणं जिणवराणं चोदस पइन्नग  
सहस्साणि भगवओ वद्धमान सामिस्स अहवा जस्स जत्ति-  
यासोसा उप्पत्तियाए विणइयाए कम्मियाए परिणामियाए  
चउव्विहीए बुद्धिए उववाए तस्स तत्तियाइं पन्नग सहस्साइं  
पत्तेय बुद्धावि तत्तिया चेव । से तं कालिय ।

( नन्दी-पञ्चज्ञानवर्णन )

च० चौरासी हजार. प० पइन्ना कालिक सूत्र. भ० भगवन्त. अ० अरिहन्त. उ० क्षुषमे देव स्वामी नें होइ. आ० धर्म नी आदि ना करणहार. त० तथा संख्यात्त हजार प० पइन्ना कालिक सूत्र. म० मध्यम. जि० जनवर तीर्थङ्कर नें होइ. च० १४ हजार. प० पइन्ना कालिक सूत्र. भ० भगवन्त. च० वर्द्धमान स्वामी नें होइ. ज० जेहना जेतला शिष्य हुवा. ते. उ० छौत्पातिक रुद्धि करी. वि० विनय बुद्धि करी. क० कर्मिक बुद्धि करी. प० परिणामिक बुद्धि करी. च०

च्यारुं प्रकार नी बुद्धि करी. तं तेहना तेतला हजार इज पइन्ना हुवे. प० प्रत्येक बुद्धि पिण जेतला हुइं. तेतलापइन्ना करे ते कालिक सूत्र.

अथ इहां कह्यो—तीर्थङ्कर ना जेतला साधु हुइं ते ४ बुद्धिं करी तेतला पइन्ना करे, तो साधु नें जोड़ न करणी तो ते साधां पइन्ना नी जोड़ क्यूं कीधी । अनें जो पइन्ना जो तेहनें दोष न लागे । तो अनेरा साधु निरवद्य जोड़ करे तेहनें दोष किम लागे । डाहा हुवे तो विचारि जोड़ो ।

## ति १ गोल सम्पूर्णा ।

वलो नन्दी सूत्र में कह्यो ते पाठ लिखिये छै ।

से किं तं आभिणिबोहियणाणं, आभिणिबोहियणाणं  
दुबिहं पणत्तं तं जहा सुयं निस्सयं च असुय निस्सियं च ।  
से किंतं असुय निस्सियं असुय निस्सियं चउव्विहं पणत्तं ।

उप्पत्तिया. वेणइया, कम्मया. पारिणामिया ।

बुद्धि चउव्विहावुत्ता, पंचमा नोवल्लभइ ॥१॥

पुव्व मद्दिट्ठमूसुयं मवेइ तत्रखण विशुद्ध गहिअत्था ।

अव्वाहय फल जोगा बुद्धि ओप्पत्तिया नाम ॥२॥

( नन्दी )

से० ते. भगवान्. किं केतला प्रकारे. आ० मतिज्ञान. ( भगवान् कहे छै ) आ० मतिज्ञान. हु० वे प्रकारे. प० परुण्णा. तं० ते कहे छै. छु० श्रुत निश्चित. अनें. अ० अश्रुत निश्चित. भगवान्. किं० केतला प्रकारे. अ० अश्रुत निश्चित. ( भगवान् कहे छै ) अ० अश्रुत निश्चित. च० ४ प्रकारे. प० परुण्णा. यथा—उ० ओत्पत्तिक बुद्धि. वि० वैतयिक बुद्धि. क० कार्मिक बुद्धि. पा० परिणामिक बुद्धि. च० ४ प्रकारे. हु० कही. प० पञ्चम बुद्धि. नो० नहीं छै. पु० पहिलां. म० देख्या न होइ. अ० न होइ. म० वेया न हो तथापि. म० जायें त० तत्काल. त्रि० निर्मल भावार्थ अ० नहीं ह्यवा योग्य छै फलयोग जेहनों ह्यवी. हु० ओत्पत्तिकी बुद्धि छै ।



अथ इहां मतिज्ञान ना बे भेद किया । निश्चित. अश्रुत निश्चित. तिहां जे सूत्र बिना ही ४ बुद्धि करी सूत्र सूं मिलतो अर्थ ग्रहण करे । सूत्र बिना ही बुद्धि फैलावे । ते अश्रुत निश्चित मतिज्ञान नो भेद कह्यो छै । वली कह्यो—पूर्वे दीठो नहीं सुण्यो नहीं ते अर्थ तत्काल ग्रहण करे ते उत्पात नी बुद्धि अश्रुत निश्चित मतिज्ञान नो भेद कह्यो । तो जोड़ सूत्र सूं मिलती करे ते तो उत्पात नी बुद्धि छै । अश्रुत निश्चित भेद में छै । तो ते जोड़ नें खोटी किम कहिये । तथा “सम्मदिट्ठिस्सम्मइमइ नाणं” ए पिण नन्दी सूत्रे कह्यो । सम्मदृष्टि नी मति नें मति-ज्ञान कह्यो तो जे साधु मतिज्ञान थी विचारी निरवध जोड़ करे तेहने दोष किम कहिये । डाहा हुवे तो विचारि जोड़जो ।

## इति २ बोल सम्पूर्ण ।

तथा वली नन्दी सूत्र में कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

से किं तं मिच्छ सुयं, मिच्छ सुयं जं इ एणाणि  
एहिं मिच्छ दिट्ठि एहिं. सच्छंद बुद्धि मइ विगगप्पियं जहा  
भारहं रामायणं. भीमा. सुखं कोडिल्लयं. गडं भदि-  
याओ. भगंदियाओ. खंडामुहं. कप्पासियं. ना सुहुमं  
एण त्तरी वइसासियं बुद्ध वयणं तेसियं वेसियं लोगाययं  
द्वितं तं ठरं पुराणं वागरणं भागवयं पायपुंजली पुस्स  
देवयं लेहं गणियं सउण रुयं नडयाइं अ वा वावत्तरिं  
।ओ चत्तारिवैया संगो वंगाए याइं मिच्छदिट्ठिस्स मिच्छत्त  
परिगगहियाइ. मिच्छसुयं एयाइं चेव. सम्मदिट्ठिस्स  
परिगाहिया सम्मदिट्ठी सम्मसुयं ।

( नन्दी सूत्र )

से० ते. कि० कैहो. मि० मिथ्यात्व श्रुत. ज० जे प्रत्यक्ष. अ० अज्ञानी ना कीधा. मि० मिथ्यात्वी ना कीधा. स० आपणी कल्पना करी. बुद्धिमति ई निपाया. तं० ते कहे छै भा० भारत. रा० रायायण. भो० भोम स्वरूप. को० कोडिलीय. स० सगड़ भद्र कल्पनीक शास्त्र. ख० खंडा सुख. क० कपासीय. ना० नाम सूत्र. क० कणग सतरी. व० वैशेषिक. बु० बुद्धि वचन शब्द. वि० विशेष का० कायिक शास्त्र. लोगापाय. सं० साठितंत शास्त्र. म० माठर पुराण. वा० व्याकरण भा० भागवत. पा० पाय पूंजली. पु० पुरुष देवता. ले० लिखवानी कला. ग० गणित कला. स० शकुल. शास्त्र. ना० नाटक विधि शास्त्र. अ० अथवा ७२ कला. च० च्यारवेद. स० अज्ञोपाङ्ग संहित. भारतादिक. ए जे. मि० मिथ्यात्वी ने मिथ्यात्व पढोयह्या थका. मि० मिथ्यात्व होय परिणामे ए० भारतादिक शास्त्र सम्यग् दृष्टि नै सांभलतां मण्णतां सम्यक्त्व भावथको परिणामे.

अथ इहां कह्यो—जे भारत रामायणादिक ४ वेद मिथ्यादृष्टि रा कीधा मिथ्यादृष्टि रे मिथ्यात्व पणे ग्रहा मिथ्या सूत्र अने एहिज भारत रामायणादिक सम्यग्दृष्टि रे सम्यक्त्व पणे ग्रहा छै ते माटे सम्यक्त्व सूत्र छै । जे सम्यग्दृष्टि ते खरां नै खरो जाणे खोटाने खोटो जाणे, ते माटे भारतादिक तेहनें सम्यक् सूत्र कह्यो । इहां मिथ्यात्वी रा कीधा ग्रन्थ पिणसम्यग्दृष्टि रे सम्यक् सूत्र कह्या जेहवां छै तेहवा जाणे ते माटे तो बहुत विचारी जोड़ करे तेहमें सावध किम आणे । अनेरा ना कीधा पिण सम पणे परिणमे तो पोते निरवध जोड़ करे तेहनें दोष किम कहिये । खोटी जोड़ किम कहिये । डाहा हुए तो विचारि जोड़जो ।

## इति ३ बोल सम्पूर्णा ।

तथा केतला एक कहे—साधु नै राग काढी गावणो नहीं । ते सूत्र ना अजाण छै । ठाणाङ्ग ठा० ४ उ० ४ कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

चउत्विहे कव्वे पण्णत्ते गद्दे. पद्दे. कत्थे. गेए. ।

( ठाणाङ्ग ठा० ४ उ० ४ )

च० ४ प्रकारे कान्य ते ग्रन्थ परुण्यो. ग० गद्य छन्द विना बांध्यो, शास्त्र परिज्ञाध्ययन नी परे. पद्य छन्दे करी बांध्यो विमुक्ताध्ययन नी परे. क० कथा करी बांध्यो ज्ञाताध्ययन नी परे. गे० गान योग्य पत्ते गावाथोग्य.

અથ હાં ૪ પ્રકાર ના કાવ્ય કહ્યા । ગદ્ય વન્ધ, પદ્યવન્ધ, કથા કરી, ગાયત્રી કરી. ૫ ૪ નિરવધ કાવ્ય કરી .માર્ગ દિપાયાં દોષ નહીં । તથા ભગવાન્ રા ૩૫ વચ્ચ ના અતિશય મેં રાગ સહિત તીર્થઢ્ઢર ની વાણી કહી છે । અને ગાયાં દોષ છે તો સૂત્રાદિક ની ગાથા કાવ્ય મેં રાગ છે । તે માટે ૫ પિણ કહિણી નહીં । અને જો સૂત્ર ની ગાથા કાવ્યાદિક રાગ સહિત ગાયાં દોષ નહીં તો ઓર નિરવધ વાણી પિણ રાગ સહિત ગાયાં દોષ નહીં । હે દેવાનુપ્રિયા ! પદ્મા કોમલ આમન્ત્રણ મેં દોષ નહીં । તિમ રાગ મેં પિણ દોષ નહીં ઉત્તમ ઝીવ વિચારિ જોડજો । કેતલા પક કહે ચ્યાર કાવ્ય સમચે । પિણ સાધુ નેં આદરવા પદ્મા ન કહ્યો । ઇમ કહે તેહનોં ઉત્તર—૫ ચ્યાર કાવ્ય નોં પદ્મા અર્થ કિયો છે । “ગદ્ય” કહિતાં તે છન્દ વિના “શાસ્ત્ર પરિજ્ઞાધ્યયન” ની પરે । “પદ્ય” કહિતાં પદ્ય તે વદ કરિ વાંધ્યો તે ગાથા વન્ધ “ વિમુક્ત અધ્યયન” ની પરે । “કથા” કહિતાં સાધુ ની “જ્ઞાતા-ધ્યયન” ની પરે । “ગેય” કહિતાં ગાવા યોગ્ય, પદ્મા કિયો છે । તે માટે ચ્યાર નિરવધ કાવ્ય સાધુ નેં આદરવા યોગ્ય છે । તિવારે કોઈ કહે ૫ “ગદ્ય, પદ્ય, કથા.” તો આદરવા યોગ્ય છે । પિણ “ગેય” આદરવા યોગ્ય નહીં । ઇમ કહે તેહનોં ઉત્તર— ૫ ગદ્ય, પદ્ય, કે કાવ્ય નેં અનામૂત કથા, અને ગેય । છે । વિશિષ્ટ ધર્મ માટે જુદા કહ્યા જણાય છે । પિણ ગદ્ય પદ્ય નેં અન્તર ઇજ છે । તિહાં ટીકાંકાર પિણ ઇમ કહ્યો તે ટીકા લિખિયે છે ।

“કાવ્યં ગ્રન્થઃ—ગદ્ય મચ્છન્દોનિવદ્ધં, શાસ્ત્રપરિજ્ઞાધ્યયન વત્ । પદ્યં છન્દો નિવદ્ધં, વિમુક્તાધ્યયનવત્ કથાયાં સાધુ કથ્યં, જ્ઞાતાધ્યયનાદિવત્ । ગેયં ગાન યોગ્યમ્ । ઇહ ગદ્ય પદ્યાન્તર માત્રે િ કથા ગાનયોર્ધર્મ વિશિષ્ટતયા વિશેષો વિવ-ક્તિઃ”

હાં ટીકા મેં “કથા-ગેય” ૫ ગદ્ય પદ્ય નેં અન્તર કહ્યા । અને ગદ્ય તે શાસ્ત્ર પરિજ્ઞાધ્યયન ની પરે । પદ્ય તે વિમુક્તાધ્યયન ની પરે કહ્યા છે । તે માટે “કથા ગેય” પિણ નિરવધ આદરવા યોગ્ય । તિવારે કોઈ કહે ૫ તો ચ્યાર કાવ્ય સૂત્ર ની ભાષાઈ કહ્યા છે । તે માટે “ગેય” પિણ સૂત્ર ની ભાષાઈ કહિવું । પિણ અનેરી ભાષાઈ ઢાલ રૂપ રાગ કહિવો ન થી । ઇમ કહે તેહનોં ઉત્તર—જે ગેય અનેરી ભાષાઈ કહિવું નહીં તો ગદ્ય, પદ્ય, કથા, પિણ અનેરી

भाषाई कहिची नहिं । जे सूत्र नो अर्थ छन्द विना कहिचो तेहनें गद्य कहिई । तो तेहनें लेखे अर्थ पिण कहिचो नथी । तथा सूत्र ना अर्थ किणहि छन्द रूप भाषाई रच्या ते पद्य कहिई तो तेहनें लेखे वे निरवद्य पद्य पिण कहिवा नथी । तथा अनेरी नन्दी सूत्र नी कथा तथा ज्ञातादिक में ए जो साधु नी कथा ते पिण पाठ थी कहिणी पिण अनेरी भाषाई कथा रूप कहिणी नथी । जे अनेरी भाषाई "गेय" कहिणी नथी । तो अनेरी भाषाई गद्य, पद्य, कथा, पिण कहिणी न थी । अनें जो सूत्र नो भाषा थी अनेरी भाषाई गद्य पद्य शुद्ध कथा कहिणी तो अनेरी भाषाई पिण गांवा योग्य निरवद्य कहिचूं । इहां गद्य ते शास्त्रपरिज्ञाध्ययन नी परे कहा छै । ते भणी शास्त्र परिज्ञा ध्ययन पिण गद्य छै, अनें तेहनी परे माटे अनेरी भाषाई निरवद्य छन्द विना सर्व गद्य में आयो, पद्य ते विमुक्त अध्ययन नी परे माटे विमुक्त अऽ पिण पद्य में आयो । अनें तेहनी परे माटे ते अनेरी छन्द रूप भाषा में पद्य में निरवद्य जोड़ पिण पद्य में कहिये । अनें कथा, गेय, ए वे भेद छै ते तो गद्य में अनें गेय ते पद्य में, इम कथा, गेय, ए वे हूं गद्य, पद्य, में आवे । ते माटे सूत्र नी भाषाई सूत्र विना अनेरी भाषाई, पद्य, गेय कहां दोष नहीं । स गद्य, पद्य, कथा, गेय, कहिणा नहीं । अनें जे सूत्र विना अनेरी भाषाई गद्य, पद्य, कथा, गेय, न कहिवा, तो नन्दी सूत्र में मतिज्ञान ना वे भेद करूं कहा । श्रुत निधि, अनें अश्रुत निश्चित, ए वे भेद किया छै । तिहां जे श्रुत निश्चित विना बुद्धि फैलावे ते मतिज्ञान रो अश्रुत निश्चित भेद कहा छै । ते पिण साधु ने आदरवा योग्य कहा छै । तथा अश्रुत निश्चित ना ४ भेदां में ओत्पातिक बुद्धि जे अणदीठो, अणसं, ते, तत्काल मन थी उपजावी शुद्ध व दवे, ते पिण मतिज्ञान रो भेद श्रुत निधि विना कहा छै । ए पिण साधु ने आदरवा योग्य छै । ते माटे सूत्र नी भाषा थी अनेरी भाषाई पिण गद्य, पद्य, कथा, गेय, कहां दोष न थी । ते माटे अनेरी भाषाई गेय ते गायवा-योग्य ते शुद्ध आदरवा योग्य छै । डाहा हुए तो विचारि जोड़जो ।

इति ४ लेख संपूर्ण ।

तथा उत्तराध्ययन ते ते पाठ लिखिये छै ।

मयत्थ रूवा वयणप्प भूया गाहाण्णीया नर संघ मज्झे ।  
जंभिक्खणो सील गुणेत्रवेया इहज्जयंते समणो मिजाओ ॥

( उत्तराध्ययन अ० १३ गा० १२ )

म० मोटो घणो अर्थ द्रव्य. पर्याय रूप. व० वचन अल्प मात्र. गा० धर्म-कहिवा रूप गाथा. आ० कहिहं स्थविर मनुष्य ना समुदाय माही जे गाथा सांभली नें. भि० चारित्र अने ज्ञानादि गुणें करो ए चे हूं गुणें करो. व० सहित साधु. इ० जग माहीं अथवा जिन वचन नें निपे. ज० यत्नवन्त हुआ अथवा भगवें करी. अ० अनुष्ठान कर वें करी लाम ना उपजावणहार. स० हूं तपस्वी. साधु. जा० हुयो.

अथ गांधाई करी वाणी करी वाणी कयी पहवूं कहूं. ते गाथा तो छन्द रूप जोड़ छै । तिहां ठीका में गाथा नो शब्दार्थ इम कियो छै 'गोयत इतिगाथा' गावी जाय ते गाथा इम कह्यो । ते माटे निरवद्य गेय नें दोष नहीं । डाहा हुवे तो निरि जोड़जो ।

## इति ५ बोल सम्पूर्णा ।

तिवारे कोई कहे—जो राग संयुक्त गायान दोष नहीं तो निशीथ में साधु नें गावणो कयूं निषेध्यो, इम कहे तेहनों उत्तर—निशीथ में तो वाजारे लारे गावें तेहनों दोष कह्यो छै, ते लिखिये छै ।

जे भि गाएज्जा. वाएज्जवा. नच्चेज्जवा. अभिणच्चे-  
ज्जवा. हय हिंसेज्जवा. हत्थि गुलगुलायंतं उक्किट्ट सीहणायं  
रेइ. करंतं वा साइज्जइ ।

( निशीथ अ० १७ वो० १४० )

जे जे कोई. भि० साधु साध्वी. गा० गावें गीत राग अलापी नें. वा० वजावें वीणा  
छांल तालादिक. न० नाचे येह २ करे. अ० अत्यन्त नाचे. इ० घोड़ा नी परें हींसे. हयंहयाहद करे

कोई विषय पीड़ितो थको, ह० हाथी नी परे. गृ० गुलगुलाहट करे. विषय पीड्यो थको. ते उत्कृष्ट सिहनाद करे. विषय पीड्यो थको. क० करता नें अनुमोदे तो पूर्ववत् प्रायश्चित्त.

अथ इहां तो बाजारे लारे ताल मेली गायां दण्ड कह्यो छै । गावे वा बजावे ए नाटक नों प्रायश्चित्त कह्यो छै । पिण एकलो निरवद्य गायवो नथी वज्यो । ए तो नाटक में गावे तेहनों दण्ड कह्यो छै । जिम निशीथ उ० ४ कह्यो । उच्चार पासवण परठी शुचि न लेवे तो प्रायश्चित्त आवे ते .पासवण परठी नै शुचि किम लेवे ते पासवण तो पोतेइ शुचि छै ते शुचि तो उच्चार री छै । पिण उच्चार करे तिवारे पासवण पिण लारे हुवे ते माटे वेहूं पाठ भेला कह्यो छै । ते उच्चार. पासवण. वेहूं करी नें उच्चार री शुचि न लेवे तो प्रायश्चित्त छै । पिण एकलो पासवण परठवी ( करी ) नें शुचि न लेवे तो प्रायश्चित्त नहीं । तिम गावे बजावे नाचे तो प्रायश्चित्त कह्यो । ते पिण बाजारे लारे तान मेली गावे तेहनों प्रायश्चित्त छै । तथा सावद्य गावा रो प्रायश्चित्त छै पिण निरवद्य गावा रो प्रायश्चित्त नहीं । तथा भगवती श० १ उ० २ तेजू लेशी नै “सरागी वीतरागी न भाणिपव्वा” एहवूं कह्यूं तो तेजू लेशी नें सरागी किम न कहिई । पिण इहां तो कह्यो—तेजू. पद्म. लेशी रा सरागी. वीतरागी. ए वे भेद न करिवा, ते किम—तेजू. पद्म. सरागी में में छै, वीतरागी में नथी । ते माटे सरागी. वीतरागी. ए वे भेद भेला बज्यो । पिण एकलो सरागी बज्यो नहीं । तिम गावे बजावे तो दण्ड कह्यो, ते पिण नाटक में बाजारे लारे गावणो संलग्न छै । ते माटे गायां बजायां दण्ड कह्यो छै । पिण एकलो गावणो न बज्यो । तिण सूं निरवद्य गायां दोष नहीं । इम संलग्न पाठ घणे ठिकाणे कह्यो । तेहनों न्याय तो उत्तम जीव विचारे । अने जो निशीथ रो नम लेई नें सर्व गावणो निषेधे—तेहने लेखे .तो सूत्र नी गाथा, काव्य, पिण गायने न कहिणा । जो घणी राग में घणो दोष कहे तो थोड़ी राग में थोड़ो दोष कहिणो । जो इम हुवे तो श्री गणधरे गाथा काव्य छन्द रूप सूत्र क्यूं रच्यो । निशीथ में इम तो न कह्यो जे सूत्र री गाथा काव्य राग सहित कहिणा । अने अनेरो न कहिणो । इम तो न कह्यो । जे नावक गावण नें निषेधे तेहने लेखे तो किञ्चिमात्र पिण राग सहित गाथा कहिणी नहीं—इम कहां शुद्ध जवाब देवा असमर्थ जब अकचक अव्यक्त बोले, पिण मत पक्षी लीधी ट्रेक छोड़े नहीं । अने न्यायवादी सिद्धान्त से न्याय मेली शुद्ध श्रद्धा धारे ते वचन में दोष जाणे

पिण निरवद्य वचन में दोष श्रद्धे नहीं । ते निरवद्य वाणी न मात कहो—भावे छन्द जोड़ी राग सहित कहो ते राग में दोष नहीं । तों समवायाङ्ग ३५ सम-वाय नी टीकामें तीर्थङ्कर वाणी राग सहित कही, ग्राम युक्त कही—ते टीका लिखिये छै ।

उपनीत रागत्वं मालवा केशिक्यादि ग्रामयय युक्तता

इहां राग सहित मालवा केशिक्यादि ग्राम सहित तीर्थङ्कर नी वाणी नो तमो अतिशय । ते माटे निरवद्य वाणी राग सहित गाया दोष नहीं १ । तथा ठाणाङ्ग ठा० ४ च्यार काव्य-कह्या गद्य, पद्य, कथ्य, गेय, इहां पिण गेय कहितं गावा योग्य कह्यो २ । । उत्तराध्ययन अ० १३ गा० १२ कह्यो—मुनीश्वर गाथाई करी देशना दीधी पढ़वूं कह्यो । ते गाथा कहिये जोड़ अने राग बेहूं आवे तिहां टीका में “गावे ते गाथा इम । ते ३ । नन्दी सूत्र में सूत्र नी नैश्राय बिना बुद्धि फेलावे ते मतिज्ञान रो भेद । ते । तथा अणदीठ्यो अणसंभल्यो जवाव तत जावी देवे ते औत्पातिकी बुद्धि मतिज्ञान रो भेद कह्यो ४ । तथा उत्तराध्ययन अ० २६ वो० २२ अर्थ में कवि पणो करी मार्ग दीपा । ते कह्यो ५ । तथा नन्दी सूत्र में कह्यो—महावीर रा साधु रा १४ हजार पइन्ना कीधा । तथा अनेरा तीर्थङ्कर रा जेतला साधु थया त्यां पोता नी ४ बुद्धिई करी ते । पइन्ना कीधा ६ । तथा मिथ्यात्वी रा पिण कीधा ग्रन्थ सम्यग्दृष्टि रे श्रुत क तो साधु पोते जोड़े तेहने मिथ्या श्रुत किम कहिये ७ । । गणधरे पिण सूत्र नी जोड़ कीधी तेहमें छन्द काव्यादिक राग सहित छै ८ । इत्यादिक अनेक ठिकाणे जोड़ अने राग सहित वाणी निरवद्य कही । बाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ६ वो सम्पूर्णा ।

इति कविताऽधिकारः ।

# अथ अल्पपाप बहु निर्जराधिकारः !



केतला एक अज्ञानी कहे—साधु नें असूजतो अशनादिक जाणी नें श्रावक देवे तेहनों पाप थोडो अने निर्जरा घणी निपजे । ते अनेक कुयुक्ति लगावी अशुद्ध आहार री थाप करे । वली भगवती रो नाम लेई विपरीत कहे छै । ते पाठ लिखिये छै ।

समणोवासगस्स णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा अफासुणं अणिसणिज्जेणं असण पाणं खाइम साइमेणं पडिलाभेमाणस्स किं कज्जइ गोयमा ! बहुतरिया से निजरा कज्जइ. अप्पतराए से पावे कम्मे कज्जइ ।

( भगवती श० = उ० ६ )

स० श्रमणोपासक नें भ० भगवन् ! त० तथारूप, श्रमण प्रते. मा० ब्रह्मचारी प्रते. अ० अप्राशुक सचित्त, अ० अनेपणीक दोष सहित्त, अ० . पान, खादिम, स्वादिम. प० प्रतिलाभता नें. कि० स्यूं फल हुइ. गो० गोतम ! घ० घणी निर्जरा हुइ. अ० अल्प थोडूं पाप कर्म हुइ.

अथ इहां इम कह्यो—जे श्रावक साधु नें सचित्त, अने असूजतो देवे-तो अल्प पाप बहु निर्जरा हुवे । ए नों न्याय टी १२ पिण केवली नें भलायो छै । तो ए अशुद्ध आहार री थाप किम करणी । शुद्ध आहार री थाप कियं २ सूत्र उत्थपता दीसे छै । सूत्र में तो अशुद्ध आहार नें निषेध्यो छै । ते माटे शुद्ध आहार नी थाप न करणी । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १ बोल सम्पूर्णा ।



तथा भगवती श० ५ उ० ६ साधु नें अप्राशुक अने' अनेपणीक आहार  
दियां अल्प आयुषो बंधतो कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

कहण्णं भंते ! जीवा अप्पाउयत्तए कम्मं पकरेंति.  
गोयमा ! तिहिं ठारोहिं जीवा अप्पा उयत्तए कम्मं पकरेंति ।  
तंजहा—पाणे अइवाइत्ता. सुसं वदित्ता. तहारूवं समणं वा  
माहणं वा अप्पासुएणं अणेसणिज्जेणं असणं पाणं. खाइमं.  
साइमं. पडिलाभित्ता भवइ. एवं खलु जीवा अप्पा उय-  
त्ताए कम्मं पकरेंति ।

( भगवती श० ५ उ० ६ )

क० किम. भ० भगवन्त ! जीव. अ० अल्प थोड़ो आयुषो कर्म बांधे. गो० हे गोतम !  
ति० त्रिण स्थानके करी नें. जी० जीव. अ० अल्प थोड़ो आयुः कर्म बांधे. तं० ते कहे छै. पा०  
प्राणी जीव नें हण्णी नें. सु० मृपाबाद बोली नें. तं० तथा रूप दान योग्य पात्र श्रमण नें माहण नें  
अ० अप्राशुक सचित्त. अ० असूक्तो. अ० अचन. पान. खादिम स्वादिम. प० प्रतिलाभी नें, ए०  
इम निश्चय. जीव. अ० अल्प आयुः कर्म बांधे.

अथ इहां तो साधु नें अप्राशुक. अनेपणीक आहार दीर्घां अल्पायुष बांधे  
कह्यो इहां तो जे असूजतो देवे ते जीव हिंसा अने' भूठ रे वरोवर कह्यो छै । अल्प  
आयुषो ते निगोद रो छै । जे जीव हणया. भूठ बोल्यां. साधु नें अशुद्ध अशनादिक  
दीर्घां. बंधतो कह्यो । इम हिज ठाणाङ्ग ठा० ३ अशुद्ध दियां अल्पआयुषो बंधतो  
कह्यो । तो अशुद्ध दियां थोड़ो पाप घणी निर्जरा किम हुवे । डाहा हुवे तो विचारि  
जोइजो ।

इति २ बोल सम्पूर्ण ।

तथा वली भगवती श० १८ कह्यो जे साधु नें अशुद्ध आहार तो अभक्ष्य  
छै । ते पाठ लिखिये छै

धरणा सरिसवा ते दुविहा परणत्ता. तंजहा--सत्थ  
परिणाय. असत्थ परिणाय. तत्थणं जेतै असत्थ परिणया  
तेणं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया, तत्थणं जेतै सत्थ  
परिणया ते दुविहा परणत्ता, तंजहा--एसणिज्जाय, अरोस-  
णिज्जाय । तत्थणं जेतै अरोसणिज्जा तेणं समणाणं निग्गं-  
थाणं अभक्खेया । तत्थणं जेतै एसणिज्जा ते दुविहा परणत्ता,  
तंजहा--जातियाय अजातियाय । तत्थणं जेतै अजाइया तेणं  
समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया । तत्थणं जेतै जाइया ते  
दुविहा परणत्ता, तंजहा. लद्धाय. अलद्धाय. तत्थणं जेतै  
अलद्धा तेणं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया । तत्थणं जेतै  
लद्धा तेणं समणाणं निग्गंथाणं भक्खेया, से तेणद्धेणं  
सोमिला ! एवं वुच्चइ जाव अभक्खेयावि ॥ ६ ॥

( भगवती श० १८ उ० १० )

ध० धान सरिसव ते. दु० वे प्रकारे. प० परुण्या. तं० ते कहे छै स० शस्त्र परिणत. अ०  
अशस्त्र परिणत. त० तिहां जेतै. अ० अशस्त्र परिणत. त० ते श्रमण ने' नि० निर्ग्रन्थ ने'. अ०  
अभक्ष्य कइया. त० तिहां जे ते. स० शस्त्र परिणत. ते० ते वे प्रकारे परुण्या. तं० ते कहे छै. ए० एष-  
णीक. अ० अनेपणीक. त० तिहां जेतै. अ० अनेपणीक ते. स० श्रमण ने'. नि० निर्ग्रन्थ ने'  
अ० अभक्ष्य कइया. त० तिहां जेतै. ए० एषणीक तं वे प्रकारे परुण्या. तं० ते कहे छै. जा० याच्या  
अने'. अ० अयाच्या. त० तिहां जे अयाच्या. ते० ते श्रमण ने निर्ग्रन्थ ने'. अ० अभक्ष्य कइया.  
त० तिहां जेतै. जा० याच्या. ते दु० वे प्रकारे परुण्या. तं० ते कहे छै. ल० लाधा. अ० अयालाधा  
त० तिहां जेतै अयालाधा. ते स० श्रमण निर्ग्रन्थ ने' अ० अभक्ष्य कइया. त० तिहां जेतै लाधया  
ते श्रमण ने' निर्ग्रन्थ ने'. भ० भक्ष्य जाणवा. ते० तिण कारणे. सो० सोमिल ! प० इम कइया.  
जा० यावत सरिसव भक्ष्य पिण अभक्ष्य पिण.

अथ इहां श्री महावीर स्वामी सोमिल ने' कह्यो । धान सरसव ( सपप )  
ना वे भेद कइया । शस्त्र परिणत अने अशस्त्र परिणत । अशस्त्र परिणत ते सच्चित्त

ते तो अभक्ष्य है । अने' अशस्त्र परिणत रा वे भेद कहा । एपणीक, अनेपणीक । अनेपणीक ते असूक्तो ते तो अभक्ष्य । एपणीक रा वे भेद कहा । याच्यो, अण-याच्यो । अणयाच्यो तो अभक्ष्य है । याच्या रा वे भेद कहा । लाधो. अणलाधो. । अणलाधो अभक्ष्य, है अने' लाधो ते भक्ष्य, इम हिज मासा कुलथा. पिण अप्राशुक अनेपणीक. अभक्ष्य. कहा है । ए तो प्रत्यक्ष सचित्त अने' असूजतो आहार तो साधु ने' अभक्ष्य कह्यो । ते अभक्ष्य आहार साधु ने' दीधां बहुत निर्जरा किम होवे । तथा ज्ञाता अ० ५ में सुखदेवजी ने' स्थावर्चा पुत्रे पिण इम अनेपणीक आहार अभक्ष्य कह्यो । तथा निरावलिया वर्ग ३ सोमिल ने' पार्श्वनाथ भगवान् पिण अप्रा-शुक, अनेपणीक आहार साधु ने' अभक्ष्य कह्यो तो अभक्ष्य साधु ने' दियां धणी निर्जरा किम हुवे अने' तिहां देवा वालो समणोंपासक कह्यो है । ते माटे श्रावक अप्राशुक अनेपणीक अभक्ष्य आहार जाणी ने साधु ने किम बहिरावे डाहा हुवे तो विचारि जोडजो ।

## इति ३ बोल सम्पूर्णा ।

तथा उवाइ प्रश्न २० श्रावकां रा गुण वर्णन में पहचो पाठ कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

समणो णिग्गंथे फासुए एसणिज्जेणं असणं पाणं खादिमं  
सादिमेणं वत्थ परिग्रह कंवल पायपुच्छणेणं उसह भेसजेणं  
पडिहारिणं पीढ फलग सेज्जा संथारणं पडिलाभेमाणे  
विहरंति ।

( उवाइ प्रश्न २० )

स० श्रमण. तपस्वी ने' निर्ग्रन्थ ने'. फा० प्राशुक. ए० एपणीक. अ० अशस्त्र. पान. खादिम.  
स्वादिम. ध० वस्त्र परिग्रह. कं० कम्बल. प० पाय पूछणो. उ० औषध. श्रुत्यादिक. भे० बूटी  
वादी. प० पाडिहारो ते धणी ने पाडो-सूप्. पीढ. फलगशय्या. संथारा. प० बहिरावतां धकां  
वि० विचरे.

अथ इहां श्रावकां रा गुण वर्णन में प्राशुक. एषणीक. नों देवो कह्यो । तो जाणी नें अप्राशुक ते सचित्त असूक्तो आहार साधु नें श्रावक किम वहिरावे तथा भगवती श० २ उ० ५ तुंगिया नगरी ना श्रावक पिण साधु नें प्राशुक. एषणीक. आहार वहिरावे इम कह्यो । तथा राय प्रसेणी में चित्त अने प्रदेशी पिण साधु नें प्राशुक. एषणीक. आहार प्रतिलाभतो विचरे इम कह्यो तो श्रावक जाणी नें असूक्तो आहार साधु नें किम विहरावे । डाहा हुए तो विचारि जोइजों ।

## इति ४ बोल सम्पूर्णा ।

तथा उपा दशा अ० १ आनन्द श्रावक । ते लिखिये छै ।

कप्पइ मे ए निगंथे फासुए एसणिज्जेणं असणं पाणं खादिमं सादिमेणं वत्थ परिग्गह कंवल पाय पुच्छणेणं पीढ फलक सेज्जा संथारएणं उसह भेसजेणं पडिलाभेमाणस्स विहरित्तए तिकट्टु इमं एयारूवं अभिग्गह अभिगिगिहत्ता पसिणाइं पुच्छति ।

( उपाशक दशा उ० १ )

क० कल्पे. मे० मुक्त नें, स० अमण नें. नि० निर्ग्रन्थ नें. फा० प्राशुक. ए० एषणीक. अशन. पान. खादिम. स्वादिम. व० वस्त्र परिग्रह. क० कम्यल. पा० पाय पूँछणो. पी० पीढ फलक ग्रथ्या. सन्यारो. क० औपघ मे० भेषज. प० दान देतो थको वि० विवरुं. ति० इस करी नें. इ० एहवो. अ० अभिग्रह ग्रहो. ग्रही नें प्रभ पूछे छै.

अथ इहां आनन्द श्रावक कह्यो । कल्पे मुक्त नै— ण निर्ग्रन्थ नें प्राशुक. एषणीक. अशनादिक देवो । तो अप्राशुक अनेषणीक. जाण नें साधु नें देवे ते नें किम कल्पे । इत्यादिक २ सूत्र में साधु नें प्राशुक. एषणीक.

अशनादिक ना दातार श्रावक नें कहा । श्रावक नें तो असूक्तो देणो न कल्पे । अने असूक्तो लेणो साधु नें न कल्पे, तो असूक्तो दियां अल्प पाप बहु निर्जरा किम हुवे । भगवती श० ५ उ० ६ कह्यो आधाकर्मों आदिक असूक्तो आहारा प निरवद्य छै । पहवो मन में धाटे तथा परूपे ते विना आलोयां मरे तो विराधक कह्यो । तो सचित्त अने असूक्तो जाण नें साधु नें दियां बहुत निर्जरा पहवी थाप उत्तम जीव किम करे । तथा बली भगवती श० ७ उ० १ कह्यो जे श्रावक प्राशुक एषणीक अशनादिक साधु नें देई समाधि उपजावे तो पाछो समाधि पामे इम कह्यो । पिण अप्राशुक अनेषणीक दियां समाधि पामती न कही । तो अप्राशुक अनेषणीक जाण नें दियां बहुत निर्जरा किम हुवे । केतला एक कहे— कारण पड्यां श्रावक अप्राशुक, अनेषणीक, साधु नें वहिरावे तो अल्प पाप, बहुत निर्जरा हुवे । ते पिण विपरीत कहे छै । साधु नें असूक्तो देणो श्रावक नें तो कल्पे नहीं । तो ते असूक्तो किम देवे । अने कारण पड्यां पिण साधु नें असूक्तो न कल्पे ते किम लेवे । अने कारण पड्यां ई असूक्तो लेसी तो सेठो कद रहसी । भगवान् तो कह्यो—कारण पड्यां सेठो रहिणो पोड़ा अङ्गीकार करणी । पिण कारण पड्यां दोष न लगावे । राजपूत रो पुत्र संप्राम में कारण प भागे तो ते शूर किम कहिय । सती वाजे ते कारण पड्यां शील खंडे तो ते सती किम कहिये । तिम कारण पड्यां अशुद्ध लेवारी थाप करे तेहनें साधु किम कहिय । अने तिहां “अफासु अणेसणिज्जेण” पहवो पाठ कह्यो छै । ते “अफासु” कहितां सचित्त अने “अणेसणिज्जेण” कहितां असूक्तो ते तो श्रावक शङ्का पड्यां कोई साधुनें न देवे । तो जाण नें अप्राशुक, असूक्तो साधु नें किम देवे । अने साधु जाणनें सचित्त असूक्तो किम लेवे । ते भणी कारण पड्यां अशुद्ध लेवारी थाप करणी नहीं । टीकाकार पिण केवली ने भलायो छै । ते टीका लिखिये छै ।

“यत्पुनरिह तत्त्वं तत्केवलि गम्यमिति”

अथ इहां पिण टीका में ए पाठ नों न्याय केवली नें भलायो ते माटे अशुद्ध लेवारी थाप करणी नहीं । ज्ञानी नें भलावणो तथा कोई बुद्धिमान इण पाठरो अनुमान थी न्याय मिलावे पिण निश्चय थाप किम करै, जे अनेरा सूत पाठ न उत्थपै । अने ए पिण पाठ न्याये करी थापै पहवूं न्याय तो म जीव मिलावे । तिवारे कोई कहै-पहवूं न्याय किम मिलै । तेहनों उत्तर-जे-

रात्रि नों वासी पाणी स्त्री आदिक ना । खूं क जाणतो हुन्तो ते वासी  
पाणी नें किणही अनेरे वावरी लीधो अने ते में काचो पाणी ॥, पिण ते  
श्रावक नें काचा पाणीरी खवर नहीं ते तो वासी पाणी जाणै है । एतले साधु  
आव्या तिवारे तेणे श्रावक ते वासी पाणी जाणी नें पोता नों व्यवहार शुद्ध निर्दोष  
चौकस करी नें साधु नें वहिरायो । पाणी तो अप्राशुक, अने तेहनी पागडी में  
पक्षी आदिक सचित्त न्हाव्यो सचित्त रजादिक शरीर रे लासी तेहनी पिण  
श्रावक नें खवर नहीं, ए अनेपणीक ते असूक्तो है, पिणआपरा व्यवहार में प्राशुक  
एपणीक, जाणीः न्त चौकस करी घणूं हर्ष आणीनें साधुनें वहिरायो, तेहनें  
अल्प पाप. ते पाप तौ नहिज छै । अने हर्ष करी दीधो बहुत घणी निर्जरा हुवै ।  
ए न्याय करी पाठ कछो हुवे तो पिण केवली जाणै ते सत्य । इम हिज भूंगडा में  
घाणी में कोरो अन्न छै, अचित्त दाकां में सचित्त दाका छै । अति स्वादिम में  
सचित्त स्वादिम छै । इम व्याक माहार सचित्त असूक्तो छै, पिण श्रावक तो  
शुद्ध व्यवहार करी देवे तो अल्प पाप ते पाप न थो अने बहुत निर्जरा । ते पिण  
अचित्त सूक्तो जाणी जाणै ए न्याय करी मिलतो वीसै छै ।

## इति ५ बोल सम्पूर्णा ।

तथा इण हिज न्याय पर गाथा लिखिये छै ।

अहा कडाणि भुंजति एण मन्नेस म्मुणा ।  
उवलित्तिय जाणिजा गुवलित्तेतिवा पुणो ॥८॥  
एते हिं दोहिं ठाणेहिं ववहारो न विज्जइ ।  
एएहिं दोहिं एहिं णायारंतु एए ॥९॥

( सूयगदाङ्ग भु० २ उ० ५ गा० ८६ )

आ० जे—साधु आश्री ई काय मंदी नें वस्त्र भोजन. उपाध्यादिक. कोथा एतला. भु० उपभोग  
करे. ते. अ० माहोमाहो. स० आपण कर्म उपसिप्त जाणीया. इसो एकान्त न बोले. अथवा कर्म

करी उपलिप्त न हुयो इसो पिण न बोले. जिण कारण आधा कम्मो आदिक आहार पिण सूत्र ने उपदेशे शुद्ध निश्चय करी ने निर्दोष जाणी जीमतो कर्मे न लिपाइ. अथवा सूक्तो आहार पिण शंका सहित जीमतो कर्मे करी लिपाइ. इस्यो ते एकान्त वचन न बोले. ए विहु स्थानके करी. ए० व्यवहार न थी । ए० विहु स्थानके करी अनाचार जाणे.

इहां कह्यो—शुद्ध व्यवहार करी ने आधा कम्मो लियो निर्दोष जाणी ने तो पाप न लागे । ति आ पिण शुद्ध निर्दोष कु. एवणीक जाण ने अप्रा-  
शुक अनेवणीक दियो तेहने पिण पाप न लागे । तथा भगवती श० ८८ उ० ८ कह्यो  
चीतराग जोय २ चालै तेहथो कुक्कुटादिक ना अण्डादिक जीव हणीजे तेहने पिण  
पाप न लागे । पुण्य नी क्रिया लागे शुद्ध उपयोग माटे । तथा आचाराङ्ग श्रु० १  
अ० ४ उ० ५ कह्यो जो कोई साधु ईर्याई चालता जीव हणीजे तो तेहने पाप न  
लागे हणवारो कामी नहीं ते माटे । तिम श्रावक पिण शुद्ध व्यवहार करी  
शुक अनेवणीक दियो तेहने पिण पाप न लागे । ण पणे तो साधु भेलो  
अभव्य पिण रहे चौथा रो भागल पिण अजाण पणे भेलो रहे पिण तेहनों  
शुद्ध व्यवहार जाणी अमेरा साधु वादै व्यावच करे. द्यानि पाप न लागे । अने  
अभव्य तथा भागल ने जाण ने भेलो राखे तो दोष लागे, तिम श्रावक पिण शुद्ध  
व्यवहार करी अणजाण्ये अशुद्ध अशनादिक देवे साधु ने, तो ते श्रावक ने पिण  
पाप न लागे । अने जाण ने अशुद्ध दियां पाप लागे छै । डाहा हुवे तो विचारि  
जोइजो ।

## इति ६ बोल सम्पूर्णा ।

तिवारे कोई कहे— पाप कह्यो ते शब्द थोड़ो अर्थ वाची  
कहिई पिण अल्प अभाव वाची किहां कह्यो छै, कहितां नथी एहवूं पाठ  
किहांई कह्यो हुवे तो बतावो इम कहे तेहनों उत्तर—पाठे करी लिखिये छै ।

ततेणं अहं गोयमा ! एया यायी पढम सरद  
कालसमयंसि अप्पबुद्धिं यंसि गोसाले णं मंखलिपुत्ते णं

सद्धिं सिद्धत्थगामाओ नगराओ कुम्भ गामं नगरं संपा ए  
विहाराए ॥

( भगवती श० १५ )

त० तिवारे. अ० हू गोतम ! अ० एकदा प्रस्तावे . प० शरत्काल समय नें विपे माग  
शीष. अ० अविद्यमान वृष्टि छत्ते. गो० गोशाला . ती पुत्र साथे. सि० सिद्धार्थ ग्राम. न० नगर  
थकी. कु० कूर्म ग्राम नगर प्रते. सं० चाल्या विहार नें अर्थे.

अथ इहां कह्यो वर्षा में भगवान् विहार कियो । तो थोड़ी वर्षा में  
तो विहार करणो नहीं । पिण इहां शब्द वाची छै । वर्षा ते  
वर्षा न थी ते समय विहार कीधो । तिहां भगवती री टीका में पिण अल्प शब्द  
अभाव वाची पहवो अर्थ कियो छै ते टीका लिखिये छै ।

“अप्यवुष्टि कायंसिति-अल्पशब्दस्याऽभाववचनत्वादविद्यमान वर्षेत्यर्थः”

अथ पिण शब्द नों अर्थ अभाव कियो । वर्षा ते अविद्य-  
वर्षा ( वर्षा नहीं ) इस टीका में अर्थ कियो छै । डाहा हुवे तो विचारि  
जोइजो ।

इति ७ बोल सम्पूर्ण ।

तथा पाठ लिखिये छै ।

अप्य प्पाण प्पबीजंमि पडिच्छन्न वुडेम्मिसं समयं  
संजए भुज्जे, जयं अपरिसाडियं ॥३५॥

( उत्तराध्यायन अ० ६ गा० ३५ )

अ० अल्प ( न थी ) प्राणी द्वीन्द्रियाविक्र अ० अल्प ( नहीं ) बीज. अन्नादिक ना, प०  
वृक्षयोड़ी. पहवी भूमि नें विपे. सं० आचार वन्त. सं० साधु. भु० खावै. ज० यत्ता सहित. अ०  
आहार नें अणु ज्ञाखतौ थकौ.



इहां पिण कह्यो—अल्प प्राणी वीज है जिहां ते स्थानके साधु ने  
आहार करवो । तिहां टीका में अल्प शब्द अभाव वाची इम अर्थ कियो है । प्राण  
वीज न हुवे ते स्थानके आहार करवो । “अविद्यमानानिवीजानि” इति टीका । इहां  
टीका में पिण नहीं है वीज जिहां पढ़वो कियो । डाहा हुवे तो विचारि  
जोइजो ।

## इति ८ बोल सम्पूर्णा ।

आचाराङ्ग में पिण शब्द अभाववाची कहाँ—ते लिखि है ।

से आहच्च पड़िगाहिण सिया. से आयाए एगंत  
व मेजा एगंत मवक्कमिक्ता अहे आरामंसिवा अहे उवस्स-  
यंसिवा अप्पंडे प्पपाणे अप्पबीए. अप्प रीए. अप्पोत्ते  
प्पोदए. प्पुत्तिंग-पणग. दग. मट्ठि . मक्कडा. संताणए.  
विगिंचिय. २ उम्मीसं विसोहिय २ ओ या मेव भुंजि-  
ज्जवा पीइज्जवा.

( आचाराङ्ग-श्रु० २ अ० १ उ० १ )

से० ते. आ० अकस्मात्. प० अजाणपणो सचित्त आहार ने प० ग्रहण करै . सि० कदाचित्.  
से० ते. तं० त्रिण आहार ने. आ० ग्रहण करी ने. प० निर्जन स्थान ने विषे. म० जावै. प० पृकान्त  
में. जावी ने. अ० हेठे. आ० वाग ने विषे. अ० हेठे उपाश्रय ने विषे. अ० अल्प न थी अयहा. अल्प  
न थी. प्राणी. अल्प न थी वीज. अ० अल्प न थी लीलौती. अल्प न थी ओल. न थी जल.  
अल्प न थी तृणस्थित जल. प० तथा फूलन. द० पानी. म० मिट्टो. म० सांकड़ी रा. सं०  
पृहवा ने विषे. वि० काढी काढी ने. मि० मित्था डुवा ने. वि० शोषी ने. त० तिवारे. स०  
साधु. खावे पीवे.

इहां पिण शब्द अभाववाची कहाँ । प्राण वीजादिक नहीं  
होवे, ते के शुद्ध करी आहार करवो । टीका में पिण इहां अल्प शब्द अभाव-

वाची कह्यो छै । इम अनेक ठामे अल्प कहितां न थी इम कह्यो छै । तिम साधु नें सच्चित्त असूक्तो अजाण्ये देवै पिण पोता नों हार शुद्ध करी नें दियो ते मटे तेहनें पिण ते न थी पाप अने घणा हर्ष थी शुद्ध व्यवहार करी दियां बहुत निर्जरा हुवै । पहवो सम्भविये छै । शुभ योगां थी तो निर्जरा अने पुण्य बंधे पिण शुभ योगां थी पाप न बंधै । अने थोड़ो घणी निर्जरा बतावे तिन ने पूछी जे—ए किसा योगां थी हुवै । वली च्यारु आहार सूक्तता छै । पिण शङ्का सहित द्रियां पाप बंधै । तिम च्यारु आहार असूक्तता छै । पिण शुद्ध व्यवहार करी सूक्तता जाणी दीधां पाप न बंधै ।

## इ ६ ोल संपू ।

तिवारे कोई कहै—अल्प शब्द अभाव वाची पिण छै । अने अल्प थोड़ा नों पिण छै । अटे अल्प पाप बहुत निर्जरा कही ते बहुत नी अपेक्षाय अल्प थोड़ों सम्भवै । पिण शब्द अभाववाची न सम्भवे इम कहै तेहनों उत्तर पाठे करी लिखिये छै ।

इह खलु पाईणं वा जाव उदीणं वा संते गतियां सद्धा भवन्ति तंजहा गाहा वर्डवा व कम्म करीवा ते सिंचणं आचार गोयरे णो सुणिसंते भवति जाव तं रोष भाणे हिं एक्कं समण जायं समुद्दिस्स तत्थ २ आगारीहिं आगाराइं चेइयाइं भवन्ति, तंजहा आपसणाणिवा जाव भवण गिहाणिवा महयापुढविकाय समारंभेणं एवं महया

उ. तेउ. वाउ. वणस्सइ तसकाय समारंभेणं महया आरंभेणं महया विरुव रुवेहिं पाव कम्मेहिं तंजहा चायणओ लेवणओ संथार दुवार पिहण गो सीतोदए परि विये

पुर्वे भवति, गणिकाए वा उज्जलिय पुर्वे भवति जे भयं-  
तारो तहप्प गाराइं आपस गणिवा जाव भवण गिहाणिवा  
उवांगच्छति इतरा तरेहिं पाहुडेहिं वटंति दुपक्खं ते कम्मं  
सेवंति अयमाउसो महा सावज्ज किरिया वि भवइ ॥१५॥

इह खलु पाईणं वा जाव तंरोयमाणेहिं अप्पणो सय-  
ट्ठाए तत्थ २ आगारीहिं आगाराइं चेइयाइं भवंति तंजहा  
आएसणाणिवा जाव भवण गिहाणि वा हया पुढविकाया  
समारंभेण जाव अगणिकाय वा उज्जालिय पुर्वे भवति जे भयं  
तारो तहप्प गाराइं आपसणाणिवा जाव भवण गिहाणि व  
वागच्छति इतरातरेहिं पाउडेहिं वटंति एगपक्खं ते कम्मं  
सेवंति अयमाउसो अप्पसावज्जा किरिया वि भवति ॥१६॥

( आचाराङ्ग श्रु० २ अ० २ उ० २ )

इ० इहां. ख० निश्चय. पा० पूर्व दिशा में विपे. जा० यावत्. उ० उत्तर दिशा में विपे. हा०  
कैश्यकं. स० श्रद्धावन्त हुये छे. तं० ते कहे छै. गा० गृहस्थ. जा० यावत्. क० नौकरनी. तं० तिष्ठ.  
आ० आचार. गो० गोचर. शो० नहीं. स० छया हुइ. जा० यावत्. तं० ते. रो० रुचिदन्त थई. ए०  
एक. सा० साधु नें. सा० स० बड़ेस्य करी नें. ता० तढे. अ० गृहस्थ. अ० घर. चे० वनाब्धो  
इ. तं० ते कहे छै. आ० लोहारशाला. पा० यावत्. भ० भवन घर. म० महा. पु० पृथिवी कायना.  
आ० आरंभ करी. म० महा. पानी. ते० अग्नि. वा० वायु. व० वनस्पति. तं० व्रस कायाना. हा०  
आरम्भ करी नें. म० मोटो. हा० चिन्तवन. म० मोटो आरम्भ. म० महा. वि० विविध प्रकार  
पा० पाप कर्म करी. छ० छपावे. ले० लेपावे. हा० विद्याया फरे. दु० द्वार करे. सी० शीतल पाणी  
झंटे. पु० पहिले. भ० हुइ. अ० अग्नि प्रज्वालै. पु० हुइ. जे० जे. भ० साधु. तं० तथा प्रकार.  
आ० लोहारशाला. जा० यावत्. भ० भवन घर. उ० आवे. इ० इस प्रकार. पा० उक्या सकान नें  
विपे. व० वसै. दु० दोनूं पक्ष सम्बन्धी. क० कर्म. सोवे. तो. आ० हे आयुष्मन् ! म० महा  
क्रिया. भ० हुइ ॥ १५ ॥

इ० इहां. ख० निश्चय. पा० पूर्व दिशा में विपे. जा० यावत्. तं० ते. रुचिकर्ता. अ०  
गे. स० स्वाथ. तं० तिहां. अ० गृहस्थ. अ० घर. चे० कराज्या. भ० हुइ तं० ते कहे छै. आ०

आ० लोहारखाला यावत्. भ० भवन घर. म० महा. पु० पृथ्वी कायना आरम्भ करो. जा० यावत्  
अ० अग्निकाय. पु० पहिलां. प्रज्वालित. भ० हुइं. जे० जे साधु. त० तथा प्रकार. आ० लोहार-  
खाला. यावत्. भ० भवन घर. उ० जावे. इ० इस पा० ढक्या मकान नें विपे. व० रखां थकां. ए०  
एक पक्ष कर्म. हो० होवै तो. आ० आयुष्मन् ! अ० अल्प ( नहीं ), सा० क्रिया भ०  
हुइं. ॥ १६ ॥

अथ इहां कह्यो—साधु रे अर्थ कियो उपाश्रयो भोगवै तो महासावध क्रिया  
लागे । दोय पक्ष रो सेवणहार कह्यो । अनें गृहस्थ पोता नें अर्थ कीधा उपाश्रय  
साधु भोगवै तो एक शुद्ध पक्ष रो सेवणहार कह्यो । अनें अल्प सावध क्रिया कही ।  
ते सावध क्रिया नहीं इम कह्यो । जे बहुत निर्जरा नी अपेक्षाय अल्प थोड़ो पाप कहे  
त्यांरे लेखे इहां आधा कर्मों क भोगव्यां महा सावध क्रिया कही । तिम महा  
नी अपेक्षाय शुद्ध उपाश्रय भोगव्यां अल्प सावध ते थोड़ी सावध क्रिया तिणरे  
लेखे कहिणी । अनें इहां अल्प थोड़ो न सम्भवै, तो तिहां पिण अल्प थोड़ो  
पाप न सम्भवै अनें निर्दोष अथ भोगव्यां थोड़ो सावध लागे तो किस्थो  
उपाश्रय भोगव्यां सावध न लागे । तिहां टीकाकार पिण, अल्प सावध ते “सावध  
न थी” इम कह्यो । पिण महा ध नी अपेक्षाय थोड़ो सावध इम न कह्यो ।  
तिम बहुत निर्जरा रे ठामे थोड़ो न सम्भवै । बहुत निर्जरा नी अपेक्षा  
य अल्प थोड़ो पाप कहे ए अर्थ मिलतो वै छै । ते माटे अ क अने-  
पणीक आहार अण जानतां दियां बहुत निर्जरा हुवै अनें पाप न । ए अर्थ,  
सूं मिलतो छै । वली ए नों अर्थ केवली कहै ते सत्य छै । डाहा हुवे तो  
विचारी जोइ जो ।

इति १० वो सम्पूर्णा ।

इति अल्पपाप बहु निर्जराऽधिकारः !

श्रीमिक्षु महामुनिराज कृत

## अथ कपाटाधिकारः ।

केई पापएडी साधु नाम धराय नें पोते हाथ थकी किमाड़. जड़े उघाड़ै, अने सूत्र  
ना नाम भूटा लेई नें किमाड़ जड़वानी उघाड़वानी अणहुँती थाप करैछै ।  
पिण सूत्र में तो २ साधु नें किमाड़ जड़णो तथा उघाड़णो वज्यौं छै । ते सूत्र  
ना सवि यथातथ्य लिखिये छै ।

मनोहरं चित्त हरं म धूवेण वासियं ।

वाडं पंडुरुल्लोवं मणसावि न पत्थए ॥४॥

( उत्तराध्ययन अ० ३५ )

म० छन्दर. चि० चित्रघर. श्री आदिक भा चित्र युक्त . म० मास्य. पुण्यादिके करी  
तथा धू० धूये करी छगन्धित स० किमाड सहित. पं० श्वेत करी वांक्यो एहवा म नें  
साधु. म० मन करी पिण न० नहीं. प० वाल्म्वै ।

तो—कि आ सहित स्थानक करी नें पिण वांछणो नहीं ।  
तो तो किहां थकी । केई एक पापएडी इम कहै छै । ए तो विषय कारी  
स्थानक वज्यौं छै । पिण कि जड़णो वज्यौं नहीं । तेहनों उत्तर—मनोहर चित्तम  
सहित घर-रहिवा नें देखवा नें आवै । तथा फूल आदिक सूँघवानें अने  
देखवा नें आवै । इम इज किमाड़-ज उघाड़वा २ काम आवै छै । ते  
माटे साधु नें किमाड़ मने करी पिण जड़णो. उघाड़णो. न वांछणो । तो किमाड़  
ते तेहने साधु किम कहिये । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

ति १ बोल सम्पूर्णा ।

तथा वली आवश्यक अ० ४ गोचरिया नी पाटी में कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

**पडिक्कमामि गोचर चरियाए भिक्खायरियाए उघाड  
कमाड उघाडणाए ।**

(आवश्यक सूत्र आ० ४)

प० प्रति क्रमण करूं छूं. गो० गौ जिम स्थाने २ वास चरे छै तिम हिज स्थाने स्थाने जे भित्ता ग्रहण किये तिण ने गोचरी कहीइ ते गोचरी ने विषे दोष हुइ ते उ० थोड़ो उघाड़ो विशेष उघाड़ो किमाड़ ने पिण न हुइ तेहनों उघाड़ो ते अजयणा तेहथी प्रतिक्रमूं छूं ।

अथ अटे कह्यो । थोड़ो डणो पिण किमाड़ घणो उघाड़यो हुवे तेहनो पिण “मिच्छामि दुक्कडं” देवे तो पूरो जडणो उघाड़णो किहां थकी । साधु थई ते रात्रि में अनेक बार किमाड़ जडै उघाड़ै, अने दिन रा पिण आहारादिक करतां किमाड़ जडै उघाड़ै तिण में केइएक तो दोष अद्वै, अने केइ एक दोष अद्वै नहीं । एहवो अन्धारो घेप में छै । गृहस्थ किमाड़ उघाड़ी ने आहारादिक बहिरावे तो जद तो दोष अद्वै, अने हाथां सूं जडै उघाड़ै जद दोष न जाणे । जिम कोई मूर्ख भङ्गी अर्थात् चाण रा घरनी रोटी तो खावे, पिण भङ्गी री दीधी रोटी न खावे । तिम हिज अन्नानी पोते किमाड़ जडे. खोले, अने गृहस्थ खोली ने बहिरावे तो दोष अद्वै । ते पिण तेहवा मूर्ख जाणवा । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

**इति २ ओ सम्पूर्णा ।**

तथा सूयगडाङ्ग में एहवी गाथा कही छै । ते लिखिये छै ।

**णो पिहेणाव पंगुणे दारं सुन्न घरस्स संजए ।  
पुहेण उदाहरे वायं ए समुत्थे णो संथरे तणं ॥**

(सूयगडाङ्ग)

ओ० कियहिक कोरणे साधु. सूने घर रह्यो ते घर नो बारणो ढाकै नहीं. थो० किमाड़ उघाड़े पिण नहीं. दा० बारणो पिण सूना घर नो न उघाड़े. कियहिक धर्म पुङ्गवो अथवा मार्गा-

दिक पृष्ठ्यां . श० न बोले. जिन कल्पी निरवद्य पिण न बोले. श० तिहां  
रहितो तृण कचरादि न प्रमार्जे. श० तृणादिक पाथरे नहीं. ए जिन कल्पी नों हैं.

अथ अठे इस कह्यो और जगों न मिले तो सूना घर नें विपे रह्यो साधु  
पिण किमाड़ जड़े उघाड़ें नहीं तो ग्रामादिक में रह्यो किमाड़ किम जड़े उघाड़ें  
ए तो मोटो दोष है। तिवारे केई अज्ञानी इस कहे। ए आचार तो जिन कल्पी नों  
हैं। स्वविर ।। नों नहीं। इस कहे तेहनों उत्तर—इहां पाठ में तो जिन कल्पी नों  
नाम कह्यो न थी। अने अर्थ में ३ पदां में जिन ।। अने स्वविर कल्पी नों भेलो  
आचार कह्यो है। अने चौथा पद में जिन कल्पी नों आचार कह्यो है।  
शीलाङ्गाचार्य कृत टीका में पिण हिज कह्यो। ते टीका लिखिये है।

“केन चिच्छयनादि निमित्तेन शून्यगृह माश्रितो भिक्षु स्तद्द्वारं कपाटादिना  
स्थगयेन्नापि तच्चालयेत्-यावत्. “शावपंगुशेति” नोद्धाटयेत्तत्रस्थो न्यत्र वा केन-  
चिज्जमादिकं मार्गादिकं पृष्टः सन् सावधां वाचं नोदाहरेत्। आभिग्राहिको जिन  
कल्पिकादि निरवधामपि न ब्रूयात्। तथा न समुच्छिन्धात् तृणानि कचवरं वा  
प्रमार्जनेन नापनयेत्। नापि शयनार्थं कश्चि दाभिग्रहिकस्तृणादिकं संस्तरेत्।  
तृणैरपि संस्तारं न कुर्यात्। कम्वलादिना न्योवा सुपिरतृणं न संस्तारेदिति।

अथ इहां कह्यो शयनादिक नें कारणे सूना घर में रह्यो साधु ते  
किमाड़ जड़े उघाड़ें नहीं। कोई धर्म नी बात पूछै तो पू  
पाप कारी वचन बोले नहीं। ए आचार स्वविरकल्पी नों जाणवो। अने बली वि  
कल्पी तो निरवद्य वचन पिण नहीं बोले। तृणादिक कचरो पिण बुहारे नहीं।  
ए र वि कल्पिकादिक अभिग्रहकारी नो जाणवो। जे पूर्वे ३ पद ।, तिण  
में जिन कल्पी स्वविर कल्पी नों आचार भेलो कह्यो। अने चौथा पद में केवल जिन  
कल्पी नों आचार ।। ते माटे इहां सगली गाथा में जिन कल्पी नों लेई  
स्वविर कल्पी ने वि ।। जड़ जड़णो उघाड़णो थापे ते जिन मार्ग ना अजाण एकान्त  
मृषावादी अन्यायी है। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३ बोला सम्पूर्णा ।

बली मूर्ख कोई अज्ञानी आचाराङ्ग सूत्र में वोदिया नों  
लेई साधु नें । इ जड़णो तथा णो थापे । ते लिखिये छै ।

से भिक्खू वा गाहावति कुलस्स दुवार वाहं कंटक  
वोंदियाए पडि पिहियं पेहाए तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणुणु-  
न्नविय अपडिलेहिय पमज्जिय णो अब गुणेज्जवा पविसेज्जवा  
णिकखमेज्जवा तेसिंपुव्वामेव उग्गहं अणुन्नविय पडिलेहिय २  
पमज्जिय २ ततो संजया मेव अब गुणेज्जवा पविसेज्जवा णिकख-  
मेज्जवा ॥ ६ ॥

( आचाराङ्ग शु० २ अ० १ उ० ५ )

से० ते. नि० साधु साध्वी. ग० गृहस्थ ना घरना वारणा. कं० कांटा नी डाली सूं प० ढंक्को  
थको. पे० देखी नें. तं० तिण नें. पु० पहिलां. उ० अवग्रह विना लियां अ० विना देख्यां. अ० विना  
पूज्यां. शो० नहीं. वो. प० नहीं प्रवेश करवो. शि० नहीं निकलवो. ते० तिण री. पु० पहिलां.  
उ० आज्ञा. अ० मागी नें. प० देख २ प० पूज २ त० बली. स० साधु. अ० उघाड़ै. प० प्रवेश करे.  
शि० निकले.

अथ अठै इम कह्यो । कण्टकवोंदिया. ते कांटा नी शाखा करी वारणो  
ढंक्को हुवे तो घणी नी आहा मागी नें पूजकर द्वार उघाड़णो । अनें कैइएक पावण्डी  
इम कहै वोदिया ते फलसो छै । इम झूठ बोले छै पिण वोदिया  
नों सो तो किहां ही कह्यो न थी अभयदेवसूरि टीका में पिण  
नी कह्यो । ते टीका लिखिये छै ।

से भिक्खू वेत्यादि-भिच्छुर्भिन्नार्थं प्रविष्टः सन् गृहपति कुलस्य “दुवार  
वाहन्ति” द्वारभागं सकण्टकादि शाखया पिहितं प्रेक्ष्य”

पिण कांटानी ते डाली कह्यो । पिण सो कह्यो नहीं । ते  
माटे कण्टक वोदिया नें फलसो थापे ते ना अजाण जीवघातक जाणवा ।  
हवे तो विचारि जोई जो ।

इति ४ बोल सम्पूर्णा ।



तथा चली कैहें वाल अज्ञानी आचाराङ्ग नों नाम छेई नें साधु ने किमाड़ जड़णो उघाड़णो थापे, ते जिनागम नी शैलीना अजाण-सूखें थका अण हुन्ती थाप करे छै। पिण तिहां तो किमाड़ उघाड़वो पड़े एहवी जायगां में साधु नें रहिवो वज्यौ छै। ते पाठ लिखिये छै।

से भिक्खू २ वा उच्चार पासवणेणं हिज्जमाणे राओ वा वियालेवा गाहवति कुलस्स दुवार वाहं अवगुणेजा तेणेय तस्संधियारि अणुपविसेजा तस्स भिक्खूस्स णो कप्पति एवं वदित्तए “अयं तेणे पविसइवा” णोवा पविसइ उवलियति णोवा उवलियति आयवतिव णोवा आयवति वदतिवा णोवा वदति तेण हडं अणेण हडं तस्स हडं अणस्स हडं अयं तेणे अयं उवयरए अयं हंता अयं एत्थ मकासी तं त-वस्सिं भिक्खुं अतेणं तेणंति संकति अहभिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा जावणो चैतेजा ॥ ४ ॥

(आचाराङ्ग धु० २ अ० २ उ० २.)

ते० ते. भि० साधु साध्वी. उ० बड़ी नीति. पा० छोटी नीति नी. उ० बाधा हुवे. रा० रात्रि नें विवे. वि० सन्ध्या नें विवे. गा० गृहस्थ ना. कु० घर ना. दु० वारणा अ० उघाड़े. ते० चोर. त० तिहां अन्धकार में. अ० प्रवेश करे. त० ते. भि० साधु नें. या० नहीं. क० कल्पे. ए० हम बोलवो. “अ० ए तिवारे. ते० चोर. प० प्रवेश करे. छै” या० नहीं प्रवेश करे. छै. उ० छिपावे छै. शो० नहीं छिपावे छै. आ० पड़यो छै. या० नहीं पड़यो छै. व० बोले छै. या० नहीं बोले छै. ते० चोर हरयो. अ० अनेरो हरयो. अ० एह चोर. उ० सहायक अ० ए मारणे वालो. अ० एह अडे इम किधो. ते० ते. भि० तपस्वी साधु नें. अचोर नें चोर इस बाङ्गा हुवे. अ० भि० साधु. पु० पहिलां, उपदेश यावत्. या० नहीं. चे० करे.

अथ इहां कह्यो। एहवे स्थानके साधु नें नहीं रहियो। तेहनों ए पर-मार्थ जे उपाश्रय मांही लघुनीति तथा बड़ी नीति परठण री जगां नहीं हुवे, अने गृहस्थ बाहिरला किमाड़ जड़ता हुवे तिवारे

रात्रि नें विषे अथवा विकाल नें विषे आवाधा पीड़तां किमाड़ खोलणा पड़े । ते खुलो देखी माहे र आवे, वतायां-न वंतायां अवगुण उपजता । सर्व दोषां में प्रथम दोष किमाड़ खोलवा नों कह्यो । तिण कारण थी नें किमाड़ खोलतो पड़े एहवे स्थानके रहिवो नहीं । तिवारे कोई कहे इहां तो साधु साध्वी वेहें नें रहिवो वज्यों छै । जो साधु नें किमाड़ खोल्यां दोष उपजे तो साध्वी नें पिण किमाड़ न खोलणा । इम कहे— तेहनों उत्तर ।

इहां "से भिक्षू भिक्षुणीवा" ए साधु रे संलग्न साध्वी रो पाठ कह्यो छै । पिण इहां अभिप्राय साधु नों इज छै । साध्वी नों न सम्भवे । कारण कि इण हिज पाठ में आगल कहा "तंतवस्सिं भिक्षुं अतेणं तेणं तिसंकत्ति" इहां तपस्वी भिक्षु अचोर प्रति चोर नी शङ्क उपजै, ए साधु नों इज पाठ कह्यो । अने साधु रे साथे साध्वी रो पाठ कह्यो ते उच्चारण साथ आयो छै । जिम आचाराङ्ग श्रु० २ अ० १ उ० ३ में कह्यो—साधु साध्वी नें सर्व भण्डोपकरण ग्रही गोचरी, विहार, दिशा जावणो कह्यो तिहां अर्थ में जिन कल्पिकादिक कह्यो । तो साध्वी ने तो जिन कल्पिक अवस्था न हुइ; पिण साधु रे संलग्न साध्वी रो पाठ कयो छै । तिम इहां पिण साधु रे संलग्न साध्वी रो पाठ आयो जणाय छै । तथा वली आचारांग श्रु० २ अ० २ उ० ३ एहवो कह्यो—गृहस्थ ना घर मे थई नें जाणो पड़े ते उपाश्रय नें विषे साध्वी ने तो रहिवो कल्ये, अने साधु नें न कल्ये । ते माटे इहां आचाराङ्ग में एह वी जगां रहिवो वज्यों ते साधु नी अपेक्षाय सम्भवे छै । अने साध्वी नों पाठ तो ते साधु रे संलग्न माटे जणाय छै । तिम इहां पिण "से भिक्षूवा भिक्षुणीवा" ए साधु रे संलग्न साध्वी रो पाठ कह्यो सम्भवे छै । पिण इहां साध्वी ने नहीं जाणवो । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो

इति ५ बोल सम्पूर्णा ।

तथा वली वृहत् उ० १ कह्यो साध्वी नें तो अभंग दुवार रहिवो कल्ये नहीं । अने साधु नें कल्ये कह्यो ते लिखिये छै

नो कप्पड़ निगंथीणं अवंगुणं दुवारिणं उवस्सए  
 वत्थए, एगं पत्थारं अंतोकिच्चा, एगं पत्थारं वाहिं किच्चा  
 गोहाडिय चल मिलियागंसि एवएहं कप्पड़ वत्थए ॥ १४ ॥  
 प्पड़ निगंथाणं अवंगुणं दुवारिणं उवस्सए वत्थए ॥ १५ ॥

(बृहत्कल्प उ० १)

नो० नहीं. क० कल्पे. नि० साध्वी नें. अ० किमाड़ रहित. उ० उपाश्रय नें विपे. व०  
 रहिवो. (कदाचित् रहिवो पड़े तो) ए० एक. प० पड़दो. अ० माहि नें जठे सूवे बटे. कि० बांधी  
 नें. ए० एक. प० पड़दो. वा० वाहिर. कि० बांधी नें. चि० पछेवड़ी प्रमुख बांधी नें मझार्य यत्त  
 निमित्तो. उ० उपाश्रय में. व० रहिवो. क० कल्पे छै. नि० साधु नें. अ० किमाड़ रहित. पिण उ०  
 नें विपे. व० रहिवो ।

अथ अठे इम कह्यो । साध्वी नें उघाड़े वारणे रहणो नहीं । किमाड़ न  
 हुवै तो चिलमिली (पछेवड़ी) बांधी नें रहिणो । पिण उघाड़े वारणे रहिवो न कल्पे  
 तिणरो ए परमार्थ शीलादिक राखवा निमित्तो किमाड़ जड़नों । पिण शीलादिक  
 कारण विना जड़नों उघाड़नों नहीं । अने साधु ने तो उघाड़े द्वारे इज रहिवो कल्पे  
 कह्यो । धर्मसिंह कृत भगवती ना ट्वा में १३ आंतरा में आठमां आं नों

कियो । „मगंतरे हि ” कहित्ता साधु साध्वी नें ५ महाव्रत सरीखा छते साधुनें  
 ३ पछेवड़ी अने साध्वी नें ४ पछेवड़ी, साधु तो किमाड़ देखै न रहै । अने  
 साध्वी किमाड़ विना उघाड़े किमाड़ न सूवे । तो मार्गमांही पवड़ो स्यूँ । १०  
 साध्वी तो ४ पछेवड़ी अने सकिमाड़ रहै ते स्त्री ना खोलिया वोतराग नी  
 । ते मार्ग मुक्ति नों छै । धर्मसिंह कृत १३ आंतरा में नें किमाड़ जड़वो  
 कह्यो । अने साधु ने किमाड़ जड़णो वज्यो । ते भणी आवश्यक सूयगडाङ्ग आचाराङ्ग  
 बृहत्कल्प आदि अनेक सूत्रां में साधु नें किमाड़ जड़वो उघाड़वो खुलासा वज्यो  
 छतां जे द्रव्यलिङ्गो पेट भरा जिनागम ना रहस्य ना अज्ञाण पोता नों थापवानें

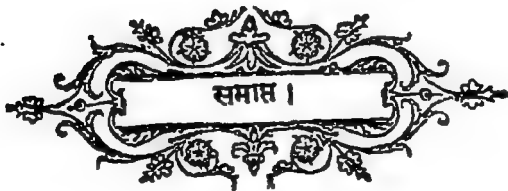
काजे अनेक कपोल कल्पित कुयुक्ति लगावी नें साधु नें किमाड जडघो तथा उघा-  
डवो थापे ते महा मृषावादी अन्यायी संसार रा बधावणहार जाणवा ।  
डाहा हुवे तो विचारि जोडजो ।

इति ६ बोल सम्पूर्ण ।

इति कपाटाधिकारः ।

इति श्री जयगणि विरचितं

भ्रमविध्वंसनम् ।







प्राप्तिस्थान—

(१) भैरूंदान ईसरचन्द चोपड़ा ।

नं० १ पोच्युर्गाज चर्च स्ट्रीट,

कलकत्ता ।



(२) भैरूंदान ईसरचन्द चोपड़ा ।

मु० गंगाशहर ।

जिला बीकानेर ।

